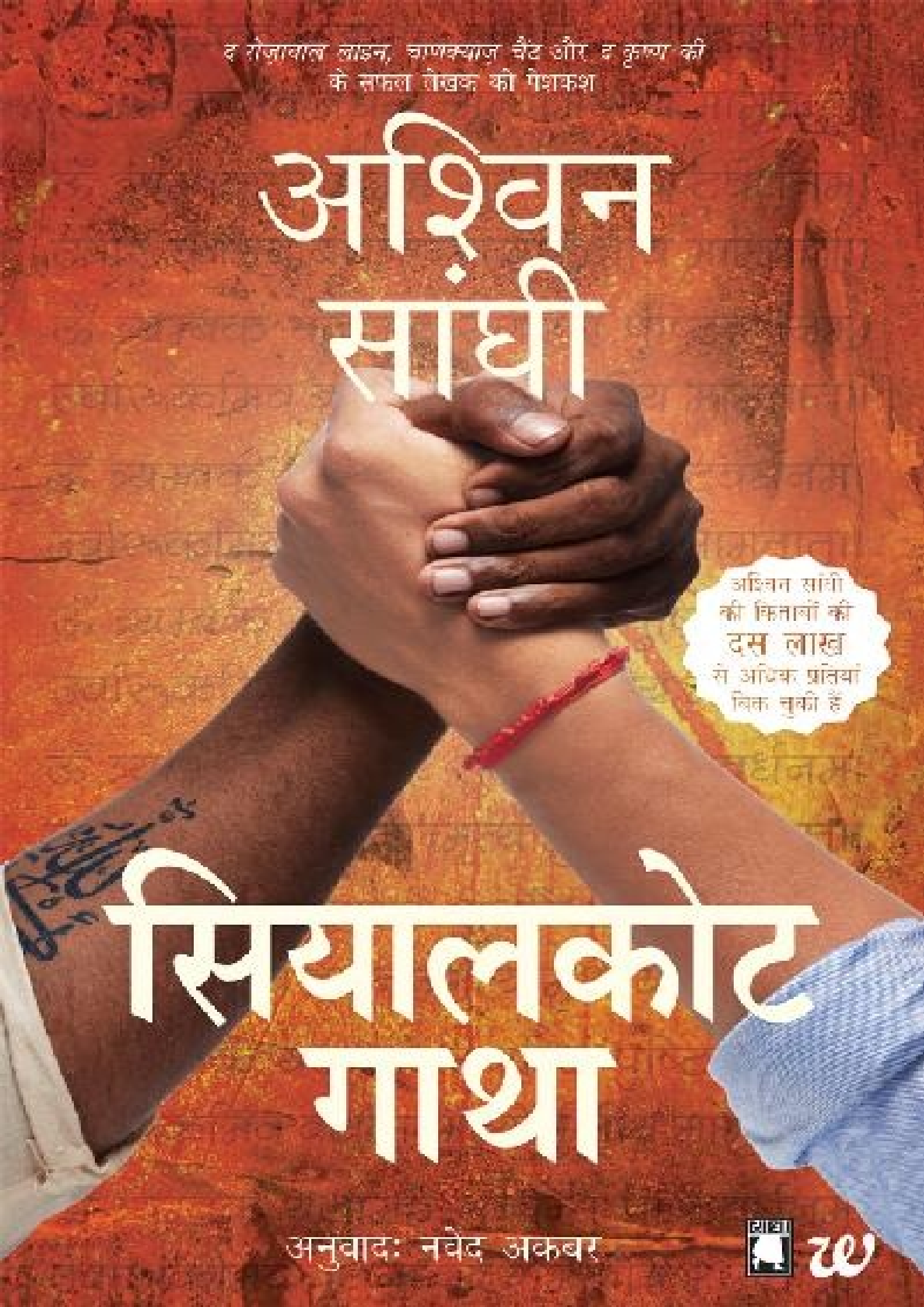
द रोज़ावाल लाइन, चाणक्याज़ चैंट और द कृष्ण की के सफल लेखक की पेशकश

अश्विन सांघी



अश्विन सांघी की किताबों की दस लाख से अधिक प्रतियां बिक चुकी हैं

सियालकोट गाथा

अनुवादः नवेद अकबर

राधा

वैस्टलैंड

सियालकोट गाथा

अश्विन सांघी की गिनती भारत में अंग्रेज़ी उपन्यास के सबसे अधिक बिकने वाले लेखकों में होती है। आपने कई बैस्टसैलर (द रोज़ाबाल लाइन, चाणक्या'ज़ चैंट, द कृष्णा की) और जेम्स पैटरसन के साथ मिलकर एक न्यूयॉर्क टाइम्स बैस्टसैलर प्राइवेट इंडिया लिखा है। आपने एक कथेतर पुस्तक *13* स्टैप्स टू ब्लडी गुड लक की रचना भी की है।

आपको फ़ोर्ब्स इंडिया ने अपने सेलिब्रिटी *100* में शामिल किया था और आप क्रॉसवर्ड पॉपुलर चॉयस पुरस्कार के भी विजेता हैं। आपकी शिक्षा कैथीड्रल एंड जॉन कॉनन स्कूल, मुंबई और सेंट ज़ेवियर्स कॉलेज, मुंबई में हुई। आपने येल यूनिवर्सिटी से बिज़नेस मैनेजमेंट में मास्टर्स डिग्री प्राप्त की है। अश्विन सांघी मुंबई में अपनी पत्नी अनुशिका और बेटे रघुवीर के साथ रहते हैं।

आप निम्नलिखित माध्यमों से सांघी से संपर्क कर सकते हैं:

Website: www.sanghi.in

Facebook: www.facebook.com/shawnhaigins

Twitter: www.twitter.com/ashwinsanghi

YouTube: http://www.youtube.com/user/ashwinsanghi

Instagram: http://instagram.com/ashwin.sanghi

LinkedIn: http://www.linkedin.com/in/ashwinsanghi

नवेद अकबर अनुवाद से काफी लंबे अरसे से जुड़े हुए हैं। आपने पैराडाइज़ (खुशवंत सिंह), माई डेज़ इन प्रिजन (इफ़्तिखार गीलानी), सी ऑफ़ पॉपीज, रीवर ऑफ़ स्मोक, फ़्लड ऑफ़ फ़ायर (अमिताभ घोष), बियॉन्ड *2020* (ए.पी.जे. अब्दुल कलाम व वाई. एस राजन), ब्लैक बुक (ओरहान पामुक), एसेंट ऑफ़ मनी (निएल फ़र्ग्यसन) मास्क ऑफ़ अफ़्रीका, ए हाउस फ़ॉर मि. बिस्वास, बियॉन्ड बिलीफ़ (वी. एस. नायपॉल), अश्विन सांघी की चाणक्या'ज़ चैंट, द कृष्ण की और द रोज़ाबाल लाइन का अनुवाद भी आपने ही किया है। आप स्वतंत्र रूप से अनुवाद कार्य से जुड़े हुए हैं।

सियालकोट गाथा

अश्विन सांघी

अनुवाद
नवेद अकबर

Westland Ltd

westland ltd.

61, II Floor, Silverline Building, Alapakkam Main Road, Maduravoyal, Chennai 600095

93,I Floor, Sham Lal Road, Daryaganj, New Delhi 110002

www.westlandbooks.in

First Published in English as *Sialkot Saga* by westland ltd 2016
First published in Hindi as *Sialkot Gatha* by westland ltd, in association with Yatra Books, 2016

First e-pub edition: 2016

Copyright © Ashwin Sanghi 2016

All rights reserved
10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

ISBN: 978-93-85724-33-6

Ashwin Sanghi asserts the moral right to be identified as the author of this work.

Typesetting by Archana printers, East Ramnagar, Shahdara Delhi 110032

This book is sold subject to the condition that it shall not, by any way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the author's prior written consent, in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser and without limiting the rights under copyright reserved above, no part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted in any form or by any means (electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise), without the prior written permission of the copyright owner, except in the case of brief quotations embodied in critical articles or reviews with appropriate citations.

आभार

अनेक लोगों से प्राप्त सहायता और जानकारी के बिना अपनी पुस्तकों को लिख पाना मेरे लिए असंभव होता। ये उन कुछ लोगों के नाम हैं जिन्हें मैं ख़ासतौर से धन्यवाद देना चाहता हूं, हालांकि अभी भी ऐसे अनेक लोग हैं जो दुखद रूप से अनाम रह जाएंगे।

मां शक्तिः जिन्होंने मेरी क़लम को शक्ति दी। जब मैं लिखने बैठता हूं तो दिमाग से इस तरह शब्द प्रवाहित होते हैं जैसे वो मेरे न होकर महज़ मुझसे होकर जा रहे हों।

गौतम पद्मनाभनः मेरे प्रकाशक, जो लंबे समय से मेरे मित्र, फ़िलॉसफ़र और गाइड रहे हैं और प्रकाशन के क्षेत्र में मुझे मेरा पहला ब्रेक देने के लिए ज़िम्मेदार हैं।

प्रीता मैत्राः मेरी संपादक, जो एक बहुत बड़ा कारण हैं कि मेरी पुस्तकों में मेरी आवाज़ गूंजती है।

वैस्टलैंड टीमः कृष्ण कुमार, सतीश सुंदरम, सुधा सदानंद, प्रीति कुमार, दीप्ति तलवार, वर्षा वेणुगोपाल, जयंती रमेश, संयोग दल्वी, गुरुराज, वी. सैंथिल कुमार, सरिता प्रसाद, नवीन मिश्रा, शत्रुघ्न पांडे, नेहा खन्ना एवं अवनि डेढ़िया, जिन्होंने अनथक रूप से मेरी पुस्तकों के प्रकाशन और प्रमोशन के लिए काम किया है।

सेमी हैतेन्लो एवं विपिन विजयः मेरे कवर डिज़ाइनर जिन्होंने पुस्तक को सजाने के लिए हमें इतनी ख़ूबसूरत छवि प्रदान की, और विपिन विजय जिन्होंने बाक़ी सब कुछ को इतनी सटीकता के साथ अंजाम दिया।

अमीय नायक और राजेश सावंतः प्रतिभाशाली कंपोज़रर एवं गायक जो इस पुस्तक के वीडियो ट्रेलर के संगीत की रचनात्मक टीम हैं।

टीम आक्टोबज़, हेमल मजीठिया, नेहा मजीठिया और अंकिता भटनागर, जिन्होंने उत्साह और धैर्य के साथ सोशल मीडिया के मेरे सभी प्रयासों को सहयोग दिया।

टीम थिंकव्हाईनॉटः विशेषकर सौरभ शर्मा को, उस ख़ूबसूरत वीडियो ट्रेलर के लिए जो इस पुस्तक के साथ उपलब्ध है।

टीम क्ली को, इस पुस्तक को प्रमोट करने में उनके प्रयास और सुझावों के लिए।

डॉ. आनंद श्रॉफ़ एवं डॉ. शैलेंद्र भंडारे को, मुद्राशास्त्र के क्षेत्र में जिनकी सलाह अनमोल थीं।

अनीता एवं संजीव माल्वी को, जिन्होंने फ़िज़िक्स और आध्यात्मिकता पर बार-बार अपना ज्ञान, दृष्टिकोण, अंतर्दृष्टि और सामग्री मेरे साथ बांटे।

दीपाली सिंह, कार्तिक वेंकटेश और मालविका मेहरा को, फ़ाइनल पांडुलिपि को सुगठित और त्रुटिमुक्त बनाने में उनके प्रयासों के लिए।

अपर्णा गुप्ताः मेरी आंट, जो अक्सर लिखे जाने के दौरान मेरी पुस्तकों को पढ़ने

वाली पहली व्यक्ति होती हैं। यह पुस्तक भी अपवाद नहीं रही।

मोहन विजयन को, मेरे वक्तव्यों के टूर और आयोजनों पर अपनी सलाह और इनपुट देने के लिए।

आशु नायक, उनकी बेहतरीन सलाह के लिए कि मेरी कहानियों को किस तरह नए तरीक़ों से कहा जा सकता है।

नमिता गोखले और मेरू गोखले: मां और बेटी की अद्भुत जोड़ी, जिन्होंने अछूते क्षेत्रों में जाने के लिए हमेशा मेरा हौसला बढ़ाया है, प्रेरित किया है (और अक्सर धकेला है)।

महामहिम आशी दोरजी वांग्मो वांग्चुक: भूटान की रानी मां, जिनका संक्रमणकारी उत्साह इस पुस्तक के कुछ अंशों के लिए प्रेरक बना।

काजोल देवगन को, इस पुस्तक को प्रमोट करने के मेरे प्रयासों में अमूल्य योगदान के लिए।

रामप्रसाद और रामगोपाल गुप्ता: मेरे नाना और उनके भाई, जिन्होंने जब मैं बच्चा था तब कहानियों और किताबों से मुझे प्रेरित किया था। उनके आशीर्वाद मेरे कलम की स्याही को सूखने नहीं देते।

महेंद्र, मंजू, विधि और वैभव: मेरे पिता, मां, बहन और भाई जिन्होंने हमेशा मुझे प्रेरित किया है कि मैं अपने सपनों को पूरा करूं।

अनुशिका और रघुवीर: मेरी पत्नी और बेटा जो मेरे लेखन के उद्यमों में मेरा सतत संबल रहे हैं। तुम मेरी प्रेरणा का सबसे बड़ा स्रोत हो।

हारून ख़ालिद और शोएब डैनियल की विशिष्ट मदद के लिए उनको शुक्रिया।

और मेरे पाठकों, प्रशंसकों, मित्रों और शुभचिंतकों समेत असंख्य दूसरे लोगों को।

इतिहास की पृष्ठभूमि में लिखी गई यह काल्पनिक कहानी है। सार्वजनिक रूप से विख्यात व्यक्ति, जीवित या मृत, कहानी में अपने वास्तविक नामों से आ सकते हैं। उनसे जुड़े दृश्य और संवाद कल्पनाजनित हैं। वास्तविक व्यक्तियों के नामों का अन्य कोई प्रयोग संयोगमात्र है। वास्तविक व्यक्तियों, जीवित या मृत, के साथ काल्पनिक पात्रों की कोई भी समानता पूर्णतया संयोगमात्र है। ऐतिहासिक यथार्थता से जुड़ा कोई भी दावा न तो किया गया है, न ही निहित है। ऐतिहासिक, धार्मिक या पौराणिक पात्रों, घटनाओं या स्थानों को हमेशा काल्पनिक रूप से इस्तेमाल किया गया है।

असतो मा सदगमय

मुझे अवास्तविक से वास्तविक की ओर ले जाएं

तमसो मा ज्योतिर्गमय

मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाएं

मृत्योर्मामृतम गमय

मुझे मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाएं

— **पावमन मंत्र, बृहदरण्यक उपनिषद**

सामग्री

अध्याय 1

अध्याय 2

अध्याय 3

अध्याय 4

अध्याय 5

अध्याय 6

अध्याय 7

अध्याय 8

अध्याय 9

अध्याय 10

अध्याय 11

अध्याय 12

अध्याय 13

अध्याय 14

अध्याय 15

अध्याय 16

प्रस्तावना

ट्रेन ख़ून टपकाती अमृतसर पहुंची। इसने जब सीमा की पाकिस्तानी साइड पर सियालकोट में अपना सफ़र शुरू किया था तो ये हिंदू और सिख शरणार्थियों से ठुंसी हुई थी। तीन घंटे बाद इसने घरघराते हुए अमृतसर जंक्शन में प्रवेश किया।

रेलवे कांस्टेबल सुखबीर सिंह एक भयानक डर के साथ ट्रेन पर सवार हुआ था। वहां न तो कोई हाथ हिलाने वाले थे, न सिर हिलाने वाले, न रोते हुए बच्चे और न ही उत्साह भरी चीख़ें। वहां तो दरअसल केई आवाज़ थी ही नहीं। वो भयंकर ख़ामोशी आने वाली चीज़ों का पहला संकेत थी। अंदर जो कुछ था, उसका दूसरा संकेत था भिनभिनाती मक्खियों के झुंड।

एक के बाद एक डिब्बों में क़त्ल कर दिए गए लोगों के शरीर घिनौने ढंग से आपस में उलझे पड़े थे, जैसे इंसानी लाशों का सलाद बनाकर डाल दिया गया हो। धारदार हथियारों से काटे गए, सिर कटे, क्षत-विक्षत या गले कटे शरीर, एक के ऊपर एक ढेर की शक्ल में, खिड़कियों से बाहर लटकते। मर्द, औरत और बच्चे-किसी को नहीं बख़्शा गया था।

जब ट्रेन सियालकोट जंक्शन से चली थी, तो ट्रेन पर सवार लोगों ने राहत की एक मूर्खतापूर्ण सांस ली थी। वो इस बात से अनजान थे कि बदला लेने वालों की जल्दी-जल्दी बनाई गई एक टुकड़ी रावी नदी के ऊपर पुल पर ट्रेन के आने का इंतज़ार कर रही है। जब ट्रेन पुल से चली, तो इस पर माल के रूप में इंसानी मौत मौजूद थी। पुल के नीचे नदी उन ख़ून से सनी लाशों से गुलाबी हो चुकी थी जो ऊपर ट्रेन से इसमें बरसी थीं। जल्दी-जल्दी खींची गई सीमा के दोनों ओर हर समुदाय—हिंदू, मुस्लिम और सिख—ने क्रूरता और नीचता का प्रदर्शन किया था। भयानक क़िस्म के दूसरे ज़ुल्मों की फ़हरिस्त को देखते हुए, पीड़ितों को गोली या चाक़ू मारना तो लगभग एक मानवतापूर्ण कृत्य सा लगता था। भारत के बंटवारे के दौरान जो अभूतपूर्व क्रूरता दिखाई गई थी, उसकी तुलना में पिछले तमाम सांप्रदायिक दंगे फीके पड़ गए थे। मुसलमानों के भारत छोड़कर पाकिस्तान भागने और हिंदुओं व सिखों के पाकिस्तान छोड़कर भारत भागने के नतीजे में डेढ़ लाख से ज़्यादा लोग बेघर हो गए थे। भारत के बंटवारे में होने वाली मौतों की कुल संख्या दस लाख से ऊपर जा पहुंची थी।

कांस्टेबल सुखबीर सिंह ने अपने सहयोगियों को मदद के लिए पुकारते हुए अमृतसर में मौत की ट्रेन में प्रवेश किया। उसने ज़िंदा बच गए लोगों की तलाश की प्रक्रिया शुरू की, हालांकि उसका अंदाज़ा था कि कोई ज़िंदा नहीं बचा होगा।

सौभाग्य से, सुखबीर सिंह का अंदाज़ा अक्सर ग़लत होता था।

कुछ ही मिनटों में, उसके हाथ ख़ज़ाना लग गया। ये आवाज़ कैसी थी? क्या कोई सिसक रहा था? सुखबीर पागलों की तरह लाशों को हटाने लगा। अगर इस ट्रेन पर एक भी व्यक्ति बचा था, तो सुखबीर उसे ढूंढ़कर रहेगा।

कुछ मिनट बाद उसने एक छोटे से, बुरी तरह डरे हुए बच्चे को एक सीट के नीचे से निकाल लिया। लड़के का कुर्ता उस पर गिर पड़ी लाश की वजह से ख़ून से सन गया था। उसके गाल आंसुओं और कालिख से गंदे हो रहे थे। सुखबीर ने लड़के की ओर हाथ

बढ़ाया, तो वो कांपने लगा।

“श्श्श, बच्चे, मैं तुम्हें मारूंगा नहीं,” उसने ठिनकते बच्चे को अपनी गोद में उठाते हुए कहा। उसने ये कोशिश करते हुए उसे प्यार के साथ सीने से लगाया कि बच्चे के दिमाग़ से उन भयानक राक्षसों की यादें चली जाएं जिन्हें उसने देखा था और जो उसकी यादों से चिपककर रह गए थे।

दुर्भाग्य से, वो जानता था कि ये राक्षस उसकी बाक़ी सारी ज़िंदगी उसे सताते रहेंगे।

पसीने और ख़ून से सना सुखबीर बच्चे को लेकर ट्रेन से निकलने ही वाला था कि उसे एक कराह सुनाई दी। क्या उसके कान बज रहे थे? क्या ये एक और इंसानी आवाज़ थी? और फिर वो आवाज़ दोबारा सुनाई दी।

सुखबीर ने अपने सहयोगी चांदप्रकाश को आवाज़ दी। “चांद, इस लड़के को रिटायरिंग रूम में ले जाओ। इसे खाने-पीने को कुछ देना। मुझे दूसरी आवाज़ को ढूंढ़ना है।”

ओऽम त्रयम्बकं यजामहे

सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं।

सन् 250 पाटलिपुत्र

उर्वारुकमिव बन्धनान्।

मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

पाटलिपुत्र की सड़कें सुनसान पड़ी थीं। देर रात तक चलने वाली सरायों तक ने भी अपने आख़री ग्राहकों को निबटा दिया था।

शहर को घेरने वाली विराट दीवारों में बने चौंसठ गेट रात के लिए बंद हो चुके थे। परिधि के साथ बने हर बुर्ज पर तैनात पांच सौ सत्तर संतरी खाई के पार से आने वाले किसी भी संभावित घुसपैठिए से निबटने के लिए पैनी नज़र रखे हुए थे।

शहर के मध्य बग़ीचों और झीलों के बीच बना शानदार शाही महल खड़ा हुआ था। शाही पहरेदारों ने महल के बड़े-बड़े दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे। लेकिन एक गुप्त प्रवेशद्वार अभी भी खुला हुआ था। इसका इस्तेमाल हर पूर्णमासी को सिर्फ एक बार किया जाता था।

विशेष रूप से चुने गए नौ व्यक्तियों के द्वारा।

महल के अंदर, सम्राट अभी भी काम में लगे हुए थे। वो कम ही सोते थे। जिसका अर्थ था कि उनके आसपास के लोग भी नींद से वंचित ही रहते थे। सम्राट मुलाक़ाती कक्ष के शीर्ष पर बैठे हुए थे और नौ आदमियों के साथ विचार-विमर्श में व्यस्त थे। फ़र्श में लगी मशालें नाचती हुई सी छायाएं फेंक रही थीं जो बार-बार दीवार से टकराती प्रतीत होती थीं।

अशोक कोई सुंदर व्यक्ति नहीं थे। अधिकतर लोग तो उन्हें अनाकर्षक ही मानते थे। लेकिन कुछ समय पहले तक वो हमेशा ज़बर्दस्त उत्साह में रहते थे, जो आजकल पूरी तरह से लुप्त हो गया सा लगता था।

कलिंग ने उन्हें बदल डाला था।

कलिंग हमेशा से अशोक के लिए सिरदर्द बना रहा था और कई साल पहले वो आख़िरकार इस संघीय गणतंत्र को जीतने में सफल हो गए थे। कलिंग में अशोक की ज़बरदस्त जीत से उनके पिता और दादा भी वंचित रहे थे। हालांकि ये विजय एक भव्य उत्सव का कारण होना चाहिए थी।

तो फिर ये इतनी खोखली सी क्यों महसूस हुई थी?

अशोक ने अपने एक लाख योद्धाओं को मौत के मुंह में भेजकर कलिंग पर विजय प्राप्त की थी। इससे दोगुने कलिंगवासी मारे गए थे। इस वीभत्स लड़ाई के कई महीने बाद तक भी युद्धक्षेत्र के पास बहने वाली दया नदी लाल ही रही थी।

और फिर, सम्राट में एक बदलाव आया। धूर्त अशोक अब सदाचारी अशोक बन गए थे।

सम्राट ने कक्ष में मौजूद नौ आदमियों की ओर देखा। सभी नौ आदमी ऐसे सिंहासनों पर बैठे हुए थे जो बिल्कुल अशोक के सिंहासन जैसे थे। इस कक्ष के अंदर कोई भी किसी से बड़ा नहीं था। अशोक सोच में डूबे हुए थे। क्या वो इन लोगों पर उस काम के लिए भरोसा कर सकते थे जो वो करना चाहते थे? क्या वो उन्हें दिए वचन को पूरा करेंगे? लेकिन ये देखते हुए कि और कोई विकल्प नहीं है, अशोक ने एक गहरी सांस ली और बोलना शुरू किया।

“मैंने आपको यहां इसलिए बुलाया है कि मैं अत्यंत व्याकुल हूं,” उन्होंने बात आरंभ की। उनमें से सबसे वृद्ध, रहस्य के संरक्षक, अच्छी तरह जानते थे कि उन्हें कोई प्रतिक्रिया नहीं देनी है। अपने मोटे से पुलिंदे को पकड़े हुए वो अपने निर्देशों का इंतज़ार करते रहे। पुलिंदा कपड़े का बना था और उसके आवरण पर एक मत्स्याकार राजचिह्न कढ़ा हुआ था।

“पिछले कुछ वर्षों में, हमने अपने शोध को लगभग पूर्ण कर लिया है,” अशोक आगे बोले। “आपके सामने इस भारी-भरकम पोथी में ऐसी जानकारियों का भंडार है जो नए मार्ग प्रशस्त करने वाला है। ऐसे अविश्वसनीय रूप से शक्तिशाली ज्ञान को प्राप्त करने के लिए सम्राट अपने साम्राज्य तक छोड़ने को तैयार हो जाएंगे। आपके शोध ने मौर्य साम्राज्य को समृद्ध बनाने में सहायता की है। इसने हमें युद्धों को जीतने, अपने शत्रुओं को अधीन करने और हमारे लोगों को एक बेहतर जीवन देने में सक्षम बनाया है।”

वो मौन हो गए। उनका मस्तिष्क इस अवसर के लिए सही शब्दों की तलाश में लगा हुआ था।

“लेकिन, देखिए, मैंने आपके काम के साथ क्या किया; सत्ता की भूख में मैंने दस लाख के एक तिहाई लोगों का संहार कर डाला; मैं ग्लानि, अपराधबोध और पश्चाताप से प्रताड़ित हूं। और क्या आप जानते हैं? आपकी इस पोथी में ऐसा कुछ नहीं है जो मेरी इस स्थिति का हल निकाल सके।” अशोक ने अपनी आंखें धरती पर टिका दीं।

“महाराज, कलिंग युद्ध को एक दशक बीत चुका है। उसके बाद के वर्षों में आपने अपने लोगों के लिए पिता की भूमिका निभाने के लिए बहुत कुछ किया है,” रहस्य के संरक्षक ने कहा। वो उनमें सबसे बूढ़े थे। उनका नाम कालपाशिक था। अशोक उनकी ओर देखने लगे।

“आपने निशुल्क चिकित्सालय स्थापित किए हैं; आपने विश्वविद्यालयों और मठों को अनुदान दिया है; आपने विश्रामगृह बनवाए हैं; आपने हज़ारों पेड़ लगवाए हैं; आपने कर कम किए हैं; आपने सुनिश्चित किया है कि राज्य के अधिकारी नागरिकों के साथ विनम्र व्यवहार करें। आज तक किसी भी सम्राट ने इतने कम समय में अपने लोगों के लिए इतना नहीं किया है,” कालपाशिक ने कहा, और उनकी आवाज़ में चापलूसी का हल्का सा भी पुट नहीं था।

कालपाशिक की एक-एक बात पूरी तरह सच थी। अशोक ने एक थकी हुई सी मुस्कान दी। “मुझे ढाढ़स बंधाने का प्रयास करने के लिए धन्यवाद, कालपाशिक,” उन्होंने कहा। “चाहे मैं कितनी भी घूस देकर कार्मिक शाप से निकलने का प्रयत्न कर लूं, मैं सफल नहीं हो सकूंगा। मुझे अंततः अपने पापों का फल भोगना ही होगा!”

वो एक बार फिर ख़ामोश हो गए।

“जैसा कि आप जानते हैं, ज्ञान शक्ति है,” उन्होंने कहा। “शक्ति का प्रयोग भलाई के लिए किया जा सकता है। इसका प्रयोग बुराई के लिए भी किया जा सकता है। हम किसी भी स्थिति में अपने ज्ञान को ग़लत हाथों में नहीं पड़ने दे सकते।”

“आपका तात्पर्य क्या है, देवनामपिय?” कालपाशिक ने अशोक की मनपसंद उपाधि-देवताओं का प्रिय-का इस्तेमाल करते हुए कहा।

“हमें सुनिश्चित करना है कि आपकी विद्वता आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित रहे और कभी इसका अनुचित प्रयोग न हो सके,” सम्राट ने उत्तर दिया।

नौ व्यक्तियों के दिमाग़ों में चल रहे विचार लगभग समान थे। हम इतने शक्तिशाली ज्ञान को कैसे दबाएंगे? उनके दिमाग़ों को जैसे पढ़ते हुए अशोक ने पूछा, “तो ऐसे शक्तिशाली ज्ञान को कैसे दबाया जाए? मेरा सुझाव है कि हमारा पांडित्य एक ही व्यक्ति में निहित रहे। वो व्यक्ति कौन हो सकता है?”

आगे बोलने से पहले अशोक ने सभी नौ आदमियों की ओर देखा। “कालपाशिक, क्या आप ये भारी दायित्व उठाने को तैयार होंगे? आख़िर आप रहस्य के संरक्षक भी हैं और इस समूह में सबसे वृद्ध भी। आपको इस ज्ञान की रक्षा अपनी जान से बढ़कर करनी होगी। आप बाहरी संसार को नहीं जानने दे सकते कि आपके पास क्या है।”

“किंतु मैं नश्वर हूं,” कालपाशिक ने कहा। “मैं भावी पीढ़ियों के लिए जानकारी का संरक्षण कैसे कर सकूंगा? हम शोध में सुधार कैसे ला पाएंगे? मेरे मरने पर क्या होगा?”

“जब मृत्यु निकट हो, तो आप सामग्री के संरक्षण के लिए एक योग्य उत्तराधिकारी चुनेंगे,” अशोक ने जवाब दिया। “आवश्यक नहीं है कि आपका उत्तराधिकारी कोई सगा-संबंधी ही हो, यद्यपि आप किसी ऐसे व्यक्ति को चुन सकते हैं। उत्तराधिकारी चुनने में आपको योग्यता, सत्यता, निष्ठा और सामर्थ्य को प्रमुख मानदंड बनाना होगा। आपका ज्ञान पूर्ण गोपनीयता की शपथ के साथ आपके उत्तराधिकारी के पास चला जाएगा।”

कालपाशिक ने सिर हिलाया।

“जैसा कि आप समझ सकते हैं, कालपाशिक, आपकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। लोभ मनुष्य के लिए एक भयानक प्रेरक है। आपको असाधारण सावधानी बरतनी होगी। ये महत्वपूर्ण है कि जो जानकारी आपकी रखवाली में होगी उसका प्रयोग केवल मानवजाति के लाभ के लिए किया जाए, व्यक्तियों के निजी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए नहीं। हमने संयुक्त रूप से अपने शोध को सत्रहवें चरण तक पूर्ण किया है। हमें अठारहवें तक पहुंचना है।”

“देवनामपिय, जैसा कि एक वर्ष पूर्व आपने सुझाव दिया था, मैंने गुरुकुल के किसी छात्र की तरह तथ्यों को पूरी तरह रट लिया है। मेरा प्रत्येक उत्तराधिकारी भी ऐसा ही करेगा।”

अशोक ने सिर हिलाया। “अच्छी बात है। क्या आप सभी अठारह चरण सुना सकते हैं?”

कालपाशिक ने सुनाना शुरू किया, “स्वेदन... मर्दन... मूर्च्छन... उत्थापन... पतन... रोधन... नियमन... संदीपन।”

अशोक ने इन शब्दों पर लगभग ध्यान करते हुए अपनी आंखें बंद कर लीं।

"गगनग्रास... कारण... गर्भद्रुति... बाह्यद्रुति... जारण... रंजन... सारण... क्रमण... वेधन... भक्षण।"

अशोक ने अपनी आंखें खोल दीं। "कृपया मंत्र पढ़िए," सम्राट ने निवेदन किया।

कालपाशिक ने अपने हाथ शिव के लिए मानसिक अनुनय में जोड़े और संस्कृत में पढ़ना शुरू किया।

"ओऽम त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं।

उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात।।"

ऋग्वेद का ये प्राचीन श्लोक असाधारण रूप से शक्तिशाली मंत्र था। कालपाशिक ख़ामोश हो गए।

"अब समापन," अशोक ने निर्देश दिया।

कालपाशिक ने मौर्य दरबार की पसंदीदा भाषा प्राकृत में बोलना आरंभ किया।

"सब कुछ जो सोना है चमकता नहीं है,

हर भटका शख़्स गुमराह नहीं है।

खाना जो मीठा है कड़वा भी हो सकता है,

आंखें जो देखती हैं, धुंधला भी सकता हैं।

देखने वाली आंखें बालक हैं दो,

मगर ज्ञानी दृष्टि तो मां है।

औषधि और मंत्र, सत्य ही,

पूरक हैं एक-दूसरे के।"

फिर अशोक ने कालपाशिक और बाक़ी आठ आदमियों से उस रात आख़री बार बात की। "आज तक मैं आप लोगों को नौ विशेष व्यक्ति कहता था। अब के बाद से आप नौ अज्ञात कहलाएंगे। ये हमारी अंतिम भेंट है। अब समय आ गया है कि आप विघटित हों और उन सुदूर स्थानों को वापस चले जाएं जहां से आने के लिए मैंने आपसे निवेदन किया था। मैं आपके समय और प्रयासों के लिए आभारी हूं। ईश्वर आप पर कृपा करे।"

एक पुस्तक
1950–1960

1950 में बंबई शरणार्थियों से भरा पड़ा था। सिंध और पंजाब से विस्थापित हुए दस लाख से ज़्यादा लोग अब शहर की सड़कों पर सो रहे थे। मराठीभाषी मध्यवर्गीय बंबई के केंद्र शिवाजी पार्क में घना जमावड़ा था। पांच लाख से ज़्यादा लोग जवाहरलाल नेहरू का भाषण सुनने को जमा हुए थे।

सांता क्रूज़ एयरपोर्ट पर उनका जहाज़ पहुंचने से घंटों पहले ही दुकानों ने अपने शटर गिरा दिए थे और लोगों ने अपने जीवित देवता की झलक पाने की उम्मीद में सड़कों पर क़तारें लगाना शुरू कर दिया था। जब पंडितजी अपनी लाल रंग की कार में गुज़रे, तो पुलिस को भीड़ को क़ाबू में रखने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी।

सरकार ने बंबई में पांच शरणार्थी कैंप बनाए थे लेकिन वो नारकीय जगहें थीं। हर परिवार को छत्तीस वर्ग फुट जगह में रहना था। बिजली थी नहीं। दस ह्ज़ार लोगों के लिए पानी के बस बारह नल थे।

एक नौजवान मुस्लिम दंपती, अय्यूब और शबाना शेख़, अपने बेटे के साथ शहर के डोंगरी इलाके से पैदल चले थे। उन्हें शिवाजी पार्क पहुंचने में कई घंटे लगे। किसी तरह धक्कामुक्की करते हुए वो उस शख़्स को सुनने के लिए पहुंचे जो उनके लिए किसी देवता से कम नहीं था। गोदी पर काम करने वाले अय्यूब ने अपने बेटे अरबाज़ को कंधों पर उठा लिया था ताकि वो बेहतर ढंग से देख सके।

पंडित जी ने बोलना शुरू किया। "जब मैंने लाल किले पर पहली बार राष्ट्रीय ध्वज फहराया था, तब से अब तक, भारत के लंबे इतिहास में जो ह्ज़ारों साल पहले शुरू हुआ था, तीन साल जुड़ चुके हैं। इन वर्षों में हमने उपलब्धियां और नाकामियां देखी हैं, हमने सुख और दुख का अनुभव किया है। हमने जो अच्छे काम किए हैं वो हमारे गुज़र जाने के बाद भी बाक़ी रहेंगे। इसी तरह, पीढ़ियां आती-जाती रहेंगी, लेकिन भारत हमेशा रहेगा।" शोर मचाती भीड़ की प्रतिक्रिया बड़ी जोशीली थी।

"हमें खुद को निरंतर याद दिलाते रहना चाहिए कि हमारा धर्म या पंथ चाहे जो भी हो, हम सब एक हैं," पंडित जी ने कहा। पंडित जी के इन शब्दों ने नौजवान मुस्लिम दंपती अय्यूब और शबाना शेख़ को भारतीय मुसलमानों के लिए उम्मीद दी।

अय्यूब ने अपने कंधे पर बैठे अरबाज़ की ओर देखा। वो जवाहरलाल नेहरू के महत्व से पूरी तरह बेख़बर लगता था। लड़का, लगभग दंभपूर्वक, अपने आसपास की भीड़ को देख रहा था।

शायद ये आने वाली चीज़ों का संकेत था।



कुरुक्षेत्र।

अधिकांश लोगों को ये नाम कौरवों और पांडवों के बीच हुए महायुद्ध की याद दिलाता था। लेकिन फ़िलहाल, कुरुक्षेत्र के बदनसीब मैदानों को एक विशाल शरणार्थी कैंप में बदल दिया गया था, जोकि पाकिस्तान से आने वाली मानवता की बाढ़ को

समायोजित करने वाले कैंपों में सबसे बड़ा कैंप था।

बागड़िया परिवार शरणार्थी नहीं था। बृजमोहनलाल बागड़िया कलकत्ता से था, जहां वो जूट का एक छोटा सा व्यापार चलाता था। परिवार 1950 के उन जाड़ों में दिल्ली में एक शादी में आया हुआ था और तभी उन्होंने सुना था कि पास ही में कुरुक्षेत्र के कैंप में महाशिव बाबा आने वाले हैं।

महाशिव बाबा वाराणसी के एक बाबा थे जिनके भक्तों का मानना था कि वो तीन सौ साल से जीवित हैं। बृजमोहनलाल की मां को कई साल पहले पवित्रात्मा के दर्शन प्राप्त हुए थे और वो उनकी तस्वीर हमेशा अपने पूजा वाले कोने में रखती थीं।

"काश हम एक बार उनसे मिल सकें और अरविंद के लिए उनका आशीर्वाद ले सकें," बृजमोहनलाल ने अपनी पत्नी शकुंतला से कहा। अरविंद का हाथ मज़बूती से थामे उसे घसीटती चल रही बेचारी शकुंतला बृजमोहनलाल के साथ चलने की पूरी कोशिश कर रही थी।

बाबा के अमरत्व के दावों पर भले ही शक किया जा सकता हो, लेकिन राहत कार्य के आयोजन की उनकी क्षमता संदेह से परे थी। महाशिव बाबा ने हज़ारों समर्पित अनुयायियों की एक संस्था बनाई थी जो 'जीवन प्रकाश' के नाम से जानी जाती थी। कई विश्वविद्यालय, स्कूल और अस्पताल चलाने के अलावा, जीवन प्रकाश जहां भी ज़रूरत हो, राहत का काम भी करती थी। कुरुक्षेत्र कैंप में सैकड़ों टन आटा, दाल, चावल और पकाने का तेल ख़र्च होता था। शरणार्थियों के खाने, कपड़े, रहने और दवाइयों का प्रबंध करना होता था। बाबा जैसे लोग उनके मसीहा थे। सशस्त्र बल हर समय काम में लगे हुए थे लेकिन उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा मदद चाहिए थी। महाशिव बाबा और उनके भक्तों का खुली बांहों से स्वागत किया गया था।

बागड़िया परिवार कुरुक्षेत्र के कैंप में भटक रहा था और इसकी विशालता से हैरान था। वहां तीन लाख से ज़्यादा लोग रह रहे थे, जिनमें से बहुत से तो पाकिस्तान से पैदल या बैलगाड़ियों पर सवार होकर लंबे-लंबे क़ाफ़िलों में आए थे। एक करोड़ से ज़्यादा लोग अपने घरों से भागे थे, और ये एक ऐसा पलायन था जिसके सामने मिस्र से यहूदियों का पलायन भी छोटा पड़ गया था।

एक घंटे तक धूप में भटकते रहने के बाद, आख़िरकार बागड़िया परिवार बाबा के शिविर तक पहुंच ही गया। बाबा सिर्फ़ धोती पहने हुए थे और उनके राख मले माथे के ऊपर घने जटाजूट से बाल थे। वो एक चौकोर कपड़े पर बैठे हुए थे जो एक रूमाल से ज़रा ही बड़ा था। उनकी उम्र कोई नहीं जानता था लेकिन वो चालीस साल के लगते थे। उनके चेहरे पर तेज था और उनकी छाती और बांहों की मांसपेशियां इस तरह लहरा रही थीं जैसे उन्होंने अपनी ज़िंदगी के हर दिन वरजिश की हो। उनके चेहरे की विशेषता जबड़े की उभरी हुई हड्डी थी। उनके पास में एक मिट्टी की चिलम और भस्म से भरा एक तांबे का बर्तन था। माहौल में एक मीठी सी कस्तूरी महक थी। बाबा कम ही खाते थे। उन्हें ऊर्जा ध्यान और चरस से मिलती थी।

उनकी नजरों ने बागड़िया परिवार को तुरंत पहचान लिया। उन्होंने अपने एक अनुयायी से उन्हें लाने को कहा। "आपकी माताजी कैसी हैं? क्या वो अब भी मेरा

चित्र अपने पूजा के कोने में रखती हैं?" उन्होंने बृजमोहनलाल से पूछा। बृजमोहनलाल मुंह फाड़े बाबा को देखता रह गया। बाबा ने उसे पहले कभी नहीं देखा था, लेकिन ऐसा लगता था जैसे वो उसके बारे में सब कुछ जानते हैं। पति और पत्नी दोनों उनके सामने दंडवत हो गए।

"लड़के को मेरे पास लाओ," उनके खड़े होने पर बाबा ने विनम्रतापूर्वक निर्देश दिया। शकुंतला आठ वर्षीय लड़के को साधु के सामने ले आई। अरविंद एक खिलौना सैनिक से खेलता हुआ पालथी मारकर बाबा के सामने बैठ गया। वो महात्मा से बिल्कुल बेख़बर था।

बाबा लड़के को देखकर मुस्कुराए। अरविंद जवाब में मुस्कुराया नहीं। फिर बाबा ने अपने तांबे के पात्र से थोड़ी सी राख ली और धीरे से उसे लड़के के माथे पर मलते हुए मंत्रोच्चारण करने लगे:

"ओऽम त्रयम्बकं यजामहे

सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं,

उर्वारुकमिव बन्धनान्

मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्!"

फिर उन्होंने उसके माता-पिता की ओर देखते हुए कहा, "इस लड़के का ध्यान रखना। इसे ज़िंदगी में बहुत से बड़े काम करने हैं।" बाबा के आशीर्वाद के लिए कृतज्ञ माता-पिता ने आगे बढ़कर बाबा के चरण छू लिए।

बाबा के शिविर से निकलते हुए बागड़िया दंपती ने उदासी का माहौल देखा। "क्या बात है?" बृजमोहनलाल ने बाबा के एक शिष्य से पूछा। शिष्य की आंखों में आंसू थे।

"सरदार गुज़र गए," उसने नर्मी से कहा। भारत के लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल का दिल का दौरा पड़ने से देहांत हो गया था। पटेल ने भारतीय संघ को 565 रियासतों का तोहफ़ा दिया था।

उसी साल बाबासाहेब अंबेडकर ने 395 अनुच्छेदों का तोहफ़ा दिया था जिन्होंने भारत के संविधान का निर्माण किया था। दुनिया का शायद सबसे लंबा संविधान।

भारतीय इतिहास के प्रमुख क्षण रचे जा रहे थे। हर बीता पल इतिहास था, हर आने वाला पल एक रहस्य।



डोंगरी की भीड़ भरी गलियों पर शाम का धुंधलका उतर आया था। फ़ुटपाथों पर, ताज़ा-ताज़ा ग्रिल किए गए या खौलते तेल में से निकाले गए गर्मागरम कबाब रमज़ान का रोज़ा खोलने वालों के लिए ख़ास आकर्षण थे।

जिस घर में अय्यूब और शबाना रहते थे वो असल में कोई घर नहीं था। वो वास्तव में पल्ला गली में स्थित हज़रत अब्बास दरगाह के सामने एक जर्जर बिल्डिंग के दूसरे

फ़्लोर पर बना एक कमरा ज़्यादा था।

मुहल्ले का नज़ारा देखने के लिए, दर्जनों छोटी-छोटी खिड़कियों में से लोग झांक रहे थे। झांकने वाले चेहरों में एक नौ वर्षीय भूखा अरबाज़ भी था। आज उसका पहला रोज़ा था।

नीचे गली में, बड़ी अस्तव्यस्तता की स्थिति थी। देश के पहले आम चुनाव के लिए अक्टूबर 1951 की घोषणा की जा चुकी थी और चीफ़ इलेक्शन कमिश्नर सुकुमार सेन के सामने लोकतंत्र के सबसे बड़े प्रयोग के रूप में साढ़े सत्रह करोड़ वयस्क भारतीयों द्वारा वोट डलवाने की भारी चुनौती थी। इलाक़े के मुस्लिम मतदाताओं को लुभाने के लिए जून की तपती गर्मी में कई पार्टियों के नेता इफ़्तार पार्टियां देने में व्यस्त थे।

दस गुणा दस के कमरे में, शबाना ने अपने घर को सुंदर बनाने की हर मुमकिन कोशिश की थी। अय्यूब जल्दी ही घर आने वाला था। उसे उसके लिए बड़ा दुख होता था-उसे रोज़े में गोदी पर मज़दूरी करनी पड़ती थी।

उसने कोने में स्टूल पर घड़ा रखा और कुछ खजूरें ठीक सेलगाकर रख दीं जिनकी इफ़्तार के लिए ज़रूरत पड़ने वाली थी। उसने खाना नहीं बनाया था। अय्यूब उन्हें गलियों के लज़ीज़ खाने खिलाने ले जाने वाला था।

उसने बर्तन में नज़र डालकर तली में पड़े तांबे के कड़े को देखा। नन्हा अरबाज़ अक्सर पूछता था कि उसमें कड़ा क्यों है। वो बस इतना कहती कि तांबा सेहत के लिए अच्छा होता है।

“चलो, अरबाज़, हाथ-मुंह धो लो,” वो अरबाज़ को एक छोटी सी नम तौलिया देते हुए बोली। “तुम्हें गंदा रहने के लिए स्कूल में कितनी परेशानी उठानी पड़ी थी।”

अरबाज़ ख़ामोशी से अपने चेहरे, गर्दन, बांहों और हाथों से पसीना और कालिख रगड़ने लगा। आज बड़ा ही गर्म और उमस भरा दिन रहा था। अरबाज़ ने मैली तौलिया अपनी मां को लौटाते हुए तौलिया को देखा। “कोई फ़ायदा थोड़े ही है,” वो बोला।

“किस चीज़ का फ़ायदा नहीं है?” शबाना ने पूछा।

“सफ़ाई करने का,” अरबाज़ ने जवाब दिया।

“क्यों?” शबाना ने उसे दुलार करते हुए पूछा।

“अब मैं साफ़ हो गया, तो तौलिया गंदी है। कोई भी चीज़ किसी दूसरी चीज़ को गंदा किए बिना साफ़ हो ही नहीं सकती।”



कलकत्ता कोई शहर नहीं था। कलकत्ता एक कहानी था। 1690 में, ईस्ट इंडिया कंपनी के एजेंट जॉब चारनॉक ने ब्रिटिश व्यापारिक बस्ती के लिए इसे ख़ासतौर से चुना था। ये अच्छा चुनाव था। ये पश्चिम में हुगली नदी, उत्तर में एक खाड़ी, और ढाई मील

पूर्व में नमकीन झीलों द्वारा सुरक्षित था। 24 अगस्त, 1690 को, चारनॉक ने एक पुराने काली मंदिर में एक भारी चढ़ावा चढ़ाया और एक पुरानी फ़ैक्टरी के जले हुए अवशेषों के स्थल पर अपना टेंट लगा दिया। उस समय गंगा नदी के पूर्वी तट पर तीन बड़े गांव थे—सुतानूती, गोबिंदपुर और कलिकाता। इन तीनों गांवों अंग्रेज़ों ने स्थानीय ज़मींदारों से ख़रीद लिया था। फिर मुग़ल सम्राट ने ईस्ट इंडिया कंपनी को 3,000 रुपए सालाना के एवज़ पर व्यापार करने की आज़ादी दे दी। कलकत्ता का जन्म हो गया।

बृजमोहनलाल, शकुंतला और अब नौ साल का हो चुका अरविंद कलकत्ता की पार्क स्ट्रीट के वॉलडोर्फ़ रेस्तरां में टेबल पर बैठे हुए थे। बागड़िया परिवार के लिए ये हर इतवार का नियम था। वो अपने बेटे को चाइनीज़ और फिर बाद में कसाटा आइसक्रीम खिलाने वॉलडोर्फ़ ले जाते थे। वो शाकाहारी थे, इसलिए लंच ऑर्डर एक ही रहता था: स्वीट कॉर्न सूप, वैजीटेबल स्प्रिंग रोल्स, फ़्राइड राइस और चॉप सुई।

बृजमोहनलाल छोटा, थुलथुला और काला था। उसके काले बाल ढेर सारी ब्रिलक्रीम से चिपके रहते थे। शकुंतला सुंदर और गोरी थी। उसके लंबे बालों की चोटी बंधी रहती थी और वो हमेशा शानदार बनारसी साड़ियां पहने रहती थी। उसकी पतली कलाइयों में उसकी साड़ी से एकदम मैच करती चूड़ियां रहती थीं। अरविंद अपने बाप से ज़्यादा मां पर गया दिखता था।

वॉलडोर्फ़ नाम के इस छोटे से रेस्तरां में कोई संकेत नहीं था कि अमेरिकी कांग्रेस भारत के एक खाद्य निवेदन पर चर्चा कर रही है; न ही इस बात की कोई निशानी थी कि देश में भोजन की कमी से निबटने के लिए सोवियत यूनियन 50,000 टन गेहूं भेजने की प्रक्रिया में है। 1951 में वॉलडोर्फ़ में कोई कमी नहीं थी।

पिता, मां और बेटा रेस्तरां की बेहतरीन लाल सजावट से घिरे, अपनी हमेशा वाली जगह पर बैठे हुए थे। उनका मनपसंद वेटर लियांग उस दिन छुट्टी पर था। कलकत्ता के चाइनाटाउन टांग्रा से यहां पार्क स्ट्रीट में इस रेस्तरां के आने के बाद से वो इसका एक नियमित भाग रहा था।

नए वेटर ने लियांग जैसे जोश और अपनाइयत के बिना ऑर्डर लिया और चला गया। तीस मिनट बाद भी उनका खाना आया नहीं था।

“कहां है ये निकम्मा वेटर?” लिनेन से सुसज्जित टेबल पर बेचैनी से अपनी उंगलियां थपथपाते हुए बृजमोहनलाल ने कहा।

“पापा, एक बात मेरी समझ में नहीं आती,” अचानक अरविंद बोला।

“कौन सी बात, बेटा?” बृजमोहनलाल ने पूछा।

“इन लोगों को वेटर क्यों कहा जाता है, जबकि वेट तो हम करते हैं?”



1951 में, आचार्य विनोबा भावे नाम के एक व्यक्ति ने सारे देश में एक यात्रा की

शुरुआत की थी जिसके दौरान वो धनी जमींदारों से कहते थे कि अपनी जमीन का एक भाग स्वेच्छा से देश के भूमिहीन मज़दूरों को दे दें। इसे भूदान कहा गया। साझा करना ही परवाह करना है।

पल्ला गली में, गर्व से भरा बाप अय्यूब गोदी के अपने दोस्तों के साथ नीचे गपशप में लगा हुआ था। वो एक दायरा बनाए हुए थे और एक ही सिगरेट से कश मार रहे थे जिसे हर कश के बाद आगे बढ़ा दिया जाता था। साझा करना उनकी दुनिया में भी परवाह करना था।

उनमें से एक आदमी, राजू नाम के एक मजाकिया हिंदू ने अपनी नाक से धुआं छोड़ते हुए एक चुटकुला सुनाया।

"मुग़ल बादशाह ने ऐलान किया कि उसे एक नया बॉडीगार्ड चाहिए," राजू ने बोलना शुरू किया। "तीन तलवारबाज़ों ने आवेदन दिया: एक हिंदू, एक ईसाई और एक मुसलमान।"

अय्यूब के पास ऐसी फ़िज़ूल बातों के लिए समय नहीं होता था। वो आमतौर पर ईमानदारी से रोज़ी-रोटी कमाने में व्यस्त रहता था। लेकिन राजू एक ऐसा दोस्त था जो उसे हंसा ही दिया करता था।

"उनका इम्तेहान लेने के लिए, बादशाह ने कमरे में एक मक्खी को छोड़ दिया," राजू आगे बोला। "उसने हिंदू तलवारबाज़ा से कहा कि वो मक्खी को मार डाले। तलवारबाज़ा ने बड़ी आसानी से तलवार चलाकर मक्खी के एकदम सफ़ाई से दो टुकड़े करके उसे फ़र्श पर गिरा दिया।"

"हिंदुओं की जय!" गोदी के एक और मज़दूर शिंदे ने कहा। "फिर?"

"यही इम्तेहान ईसाई तलवारबाज़ा का लिया गया। उसने अपनी तलवार दो बार चलाई और मक्खी के चार टुकड़े कर डाले।"

"शायद क्रॉस के प्रति हमारे लगाव की वजह से," डॉक के एक फ़ोरमैन लुईस ने राजू से सिगरेट लेते हुए कहा। "जो भी हो, क्राइस्ट की जय!"

"फिर यही इम्तेहान मुसलमान तलवारबाज़ा का लिया गया," राजू आगे बोला। "उसने कमरे में मक्खी का पीछा करते हुए कई बार तलवार चलाई। फिर वो बैठ गया और मक्खी उसके सिर के पास भिनभिनाती रही। बादशाह ने उससे पूछा कि वो रुक क्यों गया, मक्खी तो अभी ज़िंदा है।"

"फिर हुआ क्या?" शिंदे ने हंसते हुए पूछा।

आखरी पंच मारने से पहले राजू ने सारे आदमियों को भावहीन चेहरे से देखा।

"मुसलमान तलवारबाज़ा ने बादशाह को गंभीर भाव से देखा और बोला: "हां,ज़िदा तो है, हुज़ूर। लेकिन अब उसकी ख़त्ना हो चुकी है।"

सबने एक ज़ोरदार ठहाका लगाया और अभी वो एक सिगरेट और जलाने ही वाले थे कि ऊपर से शबाना की आवाज़ आई, "तुम सारी रात नीचे ही रहोगे या ऊपर भी आओगे? मौलवी साहब और डॉक्टर साहब तैयार हैं।"

वो सब जल्दी-जल्दी ऊपर दूसरे फ़्लोर पर पहुंच गए। अय्यूब और शबाना शेख़ की तंग सी रिहाइश में जश्न का माहौल था। नन्हे अरबाज़ की ख़त्ना होने वाली थी। इस्लाम ने ख़त्ना की कोई खास उम्र निश्चित नहीं की थी लेकिन उनके मौलवी का ख़्याल था कि उनके बेटे की ख़त्ना दस साल से कम में हो जानी चाहिए।

सेंट जॉर्ज हॉस्पिटल का एक दयालु डॉक्टर ये प्रक्रिया मुफ़्त में करने पर राज़ी हो गया था। एक अस्थायी परदे के पीछे, अरबाज़ को लोकल एनेस्थीसिया दिया गया। जब सूई ने उसके जननांग को छुआ, तो वो बुरी तरह रोने लगा। उसे इस हालत में देखकर शबाना के भी आंसू छलक आए। "क्या ये करना ज़रूरी है?" उसने पूछा। अय्यूब को चिढ़ते देखकर वो पीछे हट गई।

लेकिन कुछ ही मिनट में आगे की त्वचा के सफ़ाई से कटते ही प्रक्रिया पूरी हो गई। लोकल एनेस्थीसिया का प्रभाव होने के बाद अरबाज़ को कुछ भी महसूस नहीं हुआ। वो आज का हीरो था।

मौलवी साहब ने सबको दुआ के लिए इकट्ठा किया। "अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है। मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं," उन्होंने पढ़ा। फिर उन्होंने अय्यूब से ये शब्द अरबाज़ के दाएं कान में कहलवाए।

"अब मिठाई," मौलवी ने कहा। "ख़त्ना के बाद बच्चे को सबसे पहले मीठा चखना चाहिए। क्या है?"

शबाना ने अरबाज़ के लिए खूब मीठी खीर बनाई थी। उसने उसे खीर खिलाई, और उसकी आंखों में वापस आई चमक को देखकर खुश हो गई। सर्जरी से होने वाली बेचैनी के वापस आने तक वो मज़े लेकर खीर खाता रहा। वो फिर से रोने लगा और शबाना जल्दी से डॉक्टर द्वारा दी हुई पेनकिलर्स लेने को दौड़ पड़ी।



बृजमोहनलाल और अरविंद अलीपुर रोड पर बागड़िया परिवार के घर के लिविंग रूम में थे। 78-आरपीएम के एक रिकॉर्ड प्लेयर पर कुंदन लाल सहगल का एक गाना चल रहा था और अरविंद सोच रहा था कि वो किस तरह अपने पिता को इसे बंद करने को मनाए।

"मैं बड़ा होकर क्या बनूंगा, पापा?" अरविंद ने मासूमियत से पूछा।

"तुम एक बिज़नेसमैन के बेटे हो" बृजमोहनलाल ने जवाब दिया। "तुम भी बिज़नेसमैन ही बनोगे। बड़े बिज़नेसमैन।"

"क्या मैं आपके जितना बड़ा बिज़नेसमैन बनूंगा, पापा?"

"तुम और भी बड़े बिज़नेसमैन बनोगे," बृजमोहनलाल ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "मैंने तो खुद पर मूर्खतापूर्ण पाबंदियां लगा ली थीं।" उसने रिकॉर्ड प्लेयर के पास जाकर वाइनल पर से सूई हटा दी। अरविंद का काम हो गया था।

"क्या मतलब, पापा?" लड़के ने ख़ामोशी का आनंद लेते हुए आगे पूछा।

बृजमोहनलाल सोच में पड़ गया कि ज़िंदगी की कठिनाइयों के बारे में एक दस वर्षीय लड़के को कैसे समझाया जाए। उसने डाइनिंग टेबल से एक ख़ाली जार लिया और बाहर बग़ीचे की ओर बढ़ गया। "मेरे साथ आओ," उसने अरविंद से कहा। वो उस कुत्ताघर तक गए जहां उनका अल्सेशियन सुल्तान रहता था। कुत्ता बाप-बेटे को आता देखकर ख़ुशी से दुम हिलाने लगा। कुछ देर खेलने के बाद, बृजमोहनलाल घास पर झुका और उसने अपने साथ लाए जार को उस बड़े से कुत्ते के विशाल सिर के पास खोल दिया। कुछ देर तक रुकने के बाद उसने ढक्कन को बंद कर दिया। अरविंद इस रहस्यमयी प्रक्रिया को देखता रहा; वो अपने पिता की हरकतों से हैरान था।

"तुम देख रहे हो इसके अंदर क्या है?" बृजमोहनलाल ने पूछा।

"पिस्सू," अरविंद ने जवाब दिया।

"पिस्सुओं को उछलना पसंद होता है," बृजमोहनलाल ने कहा। "तुम उन्हें इसके अंदर उछलते-कूदते देख रहे हो? हर बार उछलने पर वो ढक्कन से टकरा रहे हैं।"

अरविंद ने सिर हिलाया, लेकिन फिर सोचने लगा कि इस बातचीत का मक़सद क्या है। उसने फ़ैसला कर लिया कि आगे से वो कभी "मैं बड़ा होकर क्या बनूंगा?" टाइप के सवाल नहीं पूछेगा।

बृजमोहनलाल ने जार को बग़ीचे के एक कोने में रख दिया। "इन्हें एक दिन यहीं रहने दो," बृजमोहनलाल ने कहा। "हम अपनी बातचीत कल पूरी करेंगे।"

अगले दिन बाप-बेटा बग़ीचे में वापस आए। "ये अभी भी उछल रहे हैं," अरविंद ने कहा।

"हां," बृजमोहनलाल ने सहमति जताई। "लेकिन क्या तुमने ध्यान दिया कि अब ये इतना ऊंचा नहीं उछल रहे हैं कि ढक्कन से टकराएं?"

अरविंद ने जार के अंदर झांककर देखा। उसके पिता की बात एकदम सही थी।

"अब ध्यान से देखो, अरविंद," उसने कहा। फिर उसने ढक्कन को खोल दिया। "जब मैंने ढक्कन को खोल दिया, तो भी पिस्सू उछल रहे हैं, लेकिन उछलकर जार के बाहर नहीं आ रहे हैं। वो बाहर इसलिए नहीं आ रहे कि उन्होंने ख़ुद को सिर्फ़ इतना ही ऊंचा उछलने का आदी बना लिया है। उन्होंने ख़ुद को सीमाओं में बांध लिया है।"

अरविंद ने और नज़दीक से देखा। पिस्सू उछल रहे थे, लेकिन जार के अंदर ही अंदर।

"यही मैं हूं-मैं सिर्फ़ उतना उछलता हूं जितने का मैंने ख़ुद को आदी बना लिया है। और तुम्हें ठीक इसी चीज़ से बचना है, अरविंद," बृजमोहनलाल ने कहा। "तुम्हारा भविष्य अनंत है!"



अरबाज़ डॉकयार्ड रोड पर स्थित रोज़ौरी हाई स्कूल की अपनी कक्षा की पिछली पंक्ति में बैठा हुआ था। सख़्त उमस भरी गर्मी थी। कमरे का इकलौता चरमराता पंखा

हवा फैलाने में नाकाम था और सिर्फ़ शोर ही मचा रहा था।

अरबाज़ का पिता अय्यूब गोदी पर कुली के रूप में लगभग तीस रुपए महीना कमा पाता था लेकिन फिर भी वो अपने बेटे को स्कूल भेजता था। चर्च ऑफ़ अवर लेडी ऑफ़ द रोज़ौरी के एक दयालु पादरी ने अरबाज़ को धर्मार्थ कोटा में पैरिश के स्कूल में दाख़िला दिला दिया था।

"तुम बड़े होकर कुली नहीं बनोगे," अय्यूब ने अरबाज़ से कहा। "अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो ताकि तुम्हें ऐसी मुश्किल ज़िंदगी न गुज़ारनी पड़े जैसी मैं गुजार रहा हूं।"

अरबाज़ मेधावी था लेकिन आलसी था। हमेशा की तरह, उसका होमवर्क नहीं हुआ था। ये दोहराई गई ग़लती थी जिसकी सज़ा दाएं हाथ पर छड़ी खाना थी।

स्कूल में उसका सबसे क़रीबी दोस्त मुरली अय्यर नाम का एक लड़का था। मुरली का परिवार बेहतर ज़िंदगी की तलाश में मद्रास से बंबई आकर बसा था। लेकिन वो नहीं जानते थे कि उनके सपनों के शहर में उनका लुंगीवाला कहकर मज़ाक़ उड़ाया जाएगा।

मुरली ने जल्दी से अरबाज़ की तरफ़ अपनी कॉपी बढ़ाई जिसका कवर फटा हुआ था। "ये ले," उसने कहा। अरबाज़ ने होमवर्क को देखा और मुस्कुराने लगा। मुरली क्लास का सबसे तेज़ बच्चा था लेकिन अपनी जगह उसका होमवर्क देने से काम नहीं चलने वाला था। मिस्टर डीसूज़ा तुरंत समझ जाएंगे।

"अपनी सज़ा पाने के लिए आगे आओ," क्लास टीचर मिस्टर डीसूज़ा ने कहा, जो सफ़ाई-सुथराई पर बहुत ज़्यादा ध्यान देते थे।

अरबाज़ क्लास से पहले खेल के मैदान में एक गड्ढा खोद रहा था। वो जानता था कि उसके हाथ कितने गंदे हैं, इसलिए सामने जाते-जाते उसने अपनी हथेलियों को अपने शॉर्ट्स पर अच्छी तरह रगड़ लेने की कोशिश की। लेकिन कोई फ़ायदा नहीं। दायां हाथ जो उसने मिस्टर डीसूज़ा के आगे बढ़ाया, वो गंदा था।

मिस्टर डीसूजा ने हाथ को देखा। ऐसा लगता था जैसे अरबाज़ ने पूरे दिन हाथ नहीं धोए थे। "हाथ पलटो तो ज़रा," मिस्टर डीसूज़ा ने कहा। अरबाज़ के नाखून भी उतने ही मैल भरे थे।

"अरबाज़, अगर तुम इस क्लास में मुझे इससे ज़्यादा गंदा हाथ दिखा दो, तो मैं तुम्हें छड़ी नहीं मारूंगा," मिस्टर डीसूज़ा ने ग़ुस्से में मज़ाक़ उड़ाते हुए कहा।

अरबाज़ ने फ़ौरन अपना बायां हाथ सामने कर दिया।

"देखिए, सर। ये उतना ही गंदा है," उसने मासूमियत से कहा।

बेंचों से खी-खी की आवाज़ों आईं। मिस्टर डीसूज़ा ने अपनी त्योरियां चढ़ाए रखने की पूरी कोशिश की लेकिन आख़िरकार हार मान ली।

क्लास के बाद अरबाज़ मुरली की डेस्क पर गया।

"मेरी मदद करने की कोशिश के लिए शुक्रिया," उसने कहा। "मैं इसे भूलूंगा नहीं।"

“तुम एक दिन नौकरी दोगे मुझे?” मुरली ने पूछा।

“हो सकता है नौकरी के लिए मुझे तुम्हारे पास आना पड़े,” अरबाज़ ने जवाब दिया।

“मुश्किल है,” मुरली बोला। “देखो, मैं इंटैलिजेंट तो हूं लेकिन तुम स्मार्ट हो। आमतौर पर, इंटैलिजेंट लोग स्मार्ट लोगों की नौकरी करते हैं।”



डल झील पर हाउसबोटें देवदार की लकड़ी से बनाई जाती थीं और आमतौर पर उनकी सजावट बारीक नक़्क़ाशी वाले फ़र्नीचर और कश्मीरी क़ालीनों द्वारा की जाती थी। लेकिन ये हाउसबोट उन सस्ती हाउसबोटों में से थी जिसने कभी बेहतर दिन देखे थे। लेकिन नज़ारा ज़बरदस्त था। इस तैरते हुए घर की बालकनी से पानी की विशाल, आईने जैसी चादर को देखा जा सकता था जिसमें पीर पंजाल पहाड़ों की धुंध भरी चोटियां दिखाई दे रही थीं। बृजमोहनलाल बागड़िया, उसकी पत्नी शकुंतला और ग्यारह वर्षीय बेटे अरविंद ने स्वर्ग में दो हफ़्ते बिताए थे। अब वापस कलकत्ता जाने का समय था।

परिवार अंदर से निकला और चमकीले रंगों वाले एक शिकारे में बैठ गया। वहां से वो एक कार में बैठे जो उन्हें पंजाब की सीमा पर लाखनपुर ले जाने वाली थी। बृजमोहनलाल का एक दोस्त वहां सीनियर आर्मी ऑफ़िसर था और वो लोग उसके परिवार के साथ दो दिन बिताने के बाद कलकत्ता की नीरसता में वापस जाने वाले थे।

काफ़ी लंबी सड़क यात्रा के बाद वो कठुआ ज़िले में लाखनपुर पहुंचे। लाखनपुर पंजाब और बाक़ी भारत की ओर से जम्मू-कश्मीर का द्वार था। उस दिन लाखनपुर कुछ ज़्यादा ही व्यस्त नज़र आ रहा था। कई जगह ट्रैफ़िक जाम होने की वजह से उन्हें घंटों रुके रहना पड़ा।

“ये भीड़ किसलिए है?” बृजमोहनलाल ने खीझकर ड्राइवर से पूछा।

“डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी आए हैं,” ड्राइवर ने जवाब दिया।

डॉ. मुखर्जी भारतीय जनसंघ के संस्थापक थे, जो आगे चलकर भारतीय जनता पार्टी-बीजेपी-बनने वाली थी। वो सरकार की कश्मीर नीति के बारे में जवाहरलाल नेहरू के पक्के विरोधी थे और उन्होंने शेख़ अब्दुल्लाह की परमिट पॉलिसी के ख़िलाफ़ विरोध जताने के लिए कश्मीर जाने का फ़ैसला किया था, जिसके अनुसार आम भारतीयों को वहां जाने के लिए वीज़ा लेना ज़रूरी था। लाखनपुर पहुंचने पर उन्हें कश्मीर पुलिस ने गिरफ़्तार कर लिया था। आम विश्वास ये था कि गिरफ़्तारी के बारे में जवाहरलाल नेहरू और शेख़ अब्दुल्लाह ने गुप्त रूप से फ़ैसला कर लिया था।

“अगर वो यहां हैं, तो मैं उनसे मिलना चाहूंगा,” बृजमोहनलाल ने कहा। डॉ. मुखर्जी कलकत्ता के एक हाई कोर्ट जज सर आशुतोष मुखर्जी के यहां पैदा हुए थे जो यूनिवर्सिटी ऑफ़ कलकत्ता के वाइस-चांसलर भी थे। बृजमोहनलाल के परिवार की मुखर्जी परिवार से अच्छी जान-पहचान थी।

“मुझे नहीं लगता हम कार में वहां तक पहुंच पाएंगे,” ड्राइवर ने सलाह दी। “बेहतर होगा कि आप पैदल उनके पास जाएं।”

एक क्षण भी इंतज़ार किए बिना बृजमोहनलाल कार से निकला और तेज़ी से हंगामे के केंद्र की ओर बढ़ने लगा। शकुंतला और अरविंद उसके पीछे-पीछे चल दिए।

उन्होंने पुलिस की एक गाड़ी को मौक़े से जाते देखा। डॉ मुखर्जी उसी में थे और चिल्लाकर एक लड़के से कह रहे थे, “जाकर सारे देश को बता दो कि मैंने जम्मू में बिना परमिट के प्रवेश किया है लेकिन एक क़ैदी के रूप में।”

बृजमोहनलाल ने जल्दी से उस लड़के के पास जाकर पूछा कि डॉ. मुखर्जी को कहां ले जाया जा रहा है। “श्रीनगर,” उसने जवाब दिया। “आप क्यों जानना चाहते हैं?”

“हम अभी वहीं से आए हैं। कलकत्ता में डॉ मुखर्जी के परिवार के साथ मेरे परिवार की जान-पहचान है,” बृजमोहनलाल ने कहा।

“उन्हें गिरफ़्तार क्यों कर लिया गया?” अरविंद ने पूछा। पच्चीस-तीस साल के उस लड़के ने अरविंद की तरफ़ देखा। “एक ही देश में दो संविधान, दो प्रधानमंत्री और राष्ट्रीय प्रतीक नहीं हो सकते। तुम्हें क्या लगता है?”

अरविंद ने एक क्षण को सोचा और फिर बोला, “रोज़ेज़ आर रेड, वॉयलेट्स आर ब्लू, वी हैव वन प्रॉब्लम, हू नीड्स टू?”

लड़के ने हंसते हुए अरविंद का सिर थपथपाया। “मुझे भी कविता पसंद है लेकिन ज़्यादातर हिंदी में। तुम्हारा नाम क्या है?”

“अरविंद बागड़िया। और आपका?”

“अटल बिहारी वाजपेयी।”



कलकत्ता के बेहतरीन स्कूलों में से एक ला मार्टिनेयर को जाते हुए, अरविंद लौडन स्ट्रीट पर पैदल चल रहा था। ग्यारह वर्षीय लड़के की पीठ पर एक भारी बस्ता था जो शायद किताबों से भरा हुआ था।

बृजमोहनलाल को शहर के महाधनी लोगों में तो नहीं गिना जाता था, लेकिन उसने इतना पैसा कमा लिया था कि उसकी बीवी और बेटा एक आरामदेह ज़िंदगी गुज़ार सकते थे। परिवार अलीपुर रोड पर रहता था; ये सड़क अमीर और शक्तिशाली लोगों के शानदार घरों के लिए मशहूर थी, लेकिन उनका घर सबसे छोटे घरों में से एक था, जिसमें साधारण सा साजो-सामान था और बहुत कम स्टाफ़ था। ऐसा विरोधाभास बागड़िया परिवार की लगभग हर चीज़ में देखने को मिलता था। वो फ़ैशनेबल जगहों पर छुट्टियां मनाते लेकिन सस्ते होटलों में ठहरते। उनके पास कार थी लेकिन वो पब्लिक ट्रांसपोर्ट में चलते थे। लगता था कि बागड़िया परिवार एक अलग क़िस्म के दिखावे के साथ जी रहा था।

लेकिन बृजमोहनलाल में एक विशेषता थी जो उसे उसके जैसे दूसरे लोगों से भिन्न

बनाती थी: संतोष। ये शब्द मारवाड़ियों के लिए अभिशाप था। संतुष्ट तो रहना ही नहीं था। संतुष्टि प्रगति और दौलत कमाने पर ब्रेक लगा देती है। लेकिन बृजमोहनलाल ऐसा ही था। संतुष्ट। जोंकों की तरह।

लेकिन अरविंद अलग ही मिट्टी का बना था। वो हमेशा सोचता था कि उसके पिता हमेशा शिखर की तली में ही क्यों रहते हैं। या तली के शिखर पर।

बैंकिंग, जूट और चाय के क्षेत्रों में प्रभुत्व बना लेने की वजह से कलकत्ता के मारवाड़ी शहर के आर्थिक अभिजात्य थे, लेकिन बृजमोहनलाल दूर-दूर से खेलने वाला खिलाड़ी ही रहा था। वास्तविकता ये थी कि उस वर्ष 1953 के आख़िर तक, उस जैसे बहुत से मारवाड़ियों को विश्वास नहीं था कि नया-नया आज़ाद हुआ भारत कितने समय चलेगा।

उत्तर में, श्रीनगर जेल में तैंतालीस दिन रहने के बाद श्यामा प्रसाद मुखर्जी की मृत्यु हो गई थी। उन्हें एक सामान्य अपराधी की तरह जेल में रखा गया था जबकि प्रशासन जानता था कि उन्हें दिल की बीमारी है। डॉक्टर को ये जानकारी दे दिए जाने के बावजूद कि उन्हें पेनिसिलिन से एलर्जी है, उन्हें पेनिसिलिन का ही इंजेक्शन दिया गया। अगर नेहरू ने शेख़ अब्दुल्लाह को गिरफ़्तार नहीं किया होता, तो देश बेक़ाबू हो गया होता।

दक्षिण में, तेलुगुभाषी राज्य की मांग में आमरण अनशन कर रहे एक व्यक्ति पोट्टि श्रीरामुलु की अट्ठावनवें दिन मौत हो गई थी। पंजाब में, मास्टर तारा सिंह नाम के किसी व्यक्ति ने ख़ालिस्तान नाम के स्वतंत्र देश की मांग शुरू कर दी थी। ऐसे में ये सोचना अकारण नहीं था कि एक एकीकृत भारत का विचार क़ायम रहेगा भी या नहीं।

स्कूल जाते हुए अरविंद ने एक गहरी सांस ली। ये वक़्त की बर्बादी थी। स्कूल जाकर कभी कोई समझदार नहीं बनता है, उसने सोचा। कितने लखपतियों ने विलियम शेक्सपीयर या प्लासी के युद्ध पर अपना समय ख़राब किया होगा?

पांच फ़ुट का अरविंद अपनी ग्यारह साल की उम्र के लिए काफ़ी लंबा था। वो बहुत सुंदर लड़का था। लेकिन मारवाड़ी लड़कों की सुंदरता की कोई अहमियत नहीं होती थी। अहमियत इसकी होती थी कि उनका पर्स कितना मोटा है।

अरविंद अपनी जाड़ों की वर्दी में था: ग्रे रंग की ऊनी पैंट, आधी आस्तीन की सफ़ेद शर्ट, सामान्य स्कूल टाई, बिना छेदों वाली बेल्ट, दो बटन वाला स्कूल ब्लेज़र, सफ़ेद मोज़े और फ़ीतों वाले चमड़े के काले जूते। छात्रों को सुबह निरीक्षण के लिए खड़ा होना होता था और कुछ भी कमी होने पर वापस घर भेज दिया जाता था।

अरविंद को स्कूल पहुंचने में हमेशा काफ़ी लंबा समय लगता था। दूरी की वजह से नहीं, बल्कि इसलिए कि वो रास्ते में कई जगह रुकता था।

“गुड मॉर्निंग, देबाशीष,” अरविंद ने फटे कपड़े और उलझी दाढ़ी वाले एक आदमी को अपनी ओर आते देखकर कहा। “आज मेरे लिए कितना लाए हो?”

“चौदह आने,” फटेहाल आदमी ने एक छोटा सा ब्राउन लिफ़ाफ़ा अरविंद को देते हुए कहा। लड़के ने लिफ़ाफ़ा लेकर सावधानी से सिक्कों को गिना। अपनी शर्ट की जेब

से एक नोटबुक निकालकर उसने पेंसिल से उसमें इस लेनदेन को दर्ज कर लिया।

"प्रीमियम दस प्रतिशत है," अरविंद ने बदले में एक रुपया देते हुए कहा। "मैंने तुम्हें तय हुए प्रीमियम से दो पैसे ज़्यादा दिए हैं। मैं इसे नोट कर रहा हूं और अगली बार काट लूंगा, ठीक है?"

"पक्का, बॉस," आवारा आदमी ने मज़ाक़ में लड़के को सलामी देते हुए दांत निपोरे। "मुझे नहीं पता तुम ये कैसे या क्यों करते हो, मगर जब तक ये चल रहा है, तब तक अपने आने तुम्हारे रुपयों से बदलना मेरे लिए तो बढ़िया है!"

अरविंद ने सिक्कों को अपने बस्ते में डाला और आगे बढ़ गया। स्कूल शुरू होने में पंद्रह मिनट बचे थे। गली के नुक्कड़ पर उसने दो मिनट इंतज़ार किया और उसका धैर्य रंग लाया। एक और आवारा आदमी आया, जिसकी सांस सस्ती दारू से बुरी तरह महक रही थी।

उसने बिना कुछ कहे एक कुचले हुए अखबार की बॉल सी लड़के को थमा दी। अरविंद ने सावधानी के साथ उस मैले से पात्र को खोलकर अंदर देखा। बाईस आने और पांच पैसे। आज नशेड़ी का दिन अच्छा रहा था। दारू की वजह यही थी।

अरविंद ने पांच पैसे निकाले और आदमी को वापस कर दिए। "तुम जानते हो मुझे ये नहीं चाहिए। सिर्फ आधे आने, एक आने और दो आने के सिक्के," वो बोला।

अरविंद ने जल्दी से अपने दिमाग़ में हिसाब लगाया। "सोलह आने का एक रुपया। तुमने मुझे बाईस आने दिए। तो ये हुए एक रुपया छह आने। और दस प्रतिशत के प्रीमियम के हिसाब से तुम्हारा मुझपे हुआ एक रुपया, आठ आने और एक पैसा।"

इतना पैसा शराबी को देने के बाद, अरविंद ने सिक्के अपने बैग में डाले और स्कूल की ओर चल दिया। दोपहर को वापसी के समय उसे और नशेड़ी, शराबी और आवारा मिलेंगे।

उसने एक संतोष की सांस ली।

आजकल उसका विश्वास पक्का होता जा रहा था कि बिज़नेस बस दूसरे लोगों को मजबूर किए बग़ैर उनका पैसा लेने की कला का नाम है।



"मिस्टर बागड़िया, अगर तुम मेरे सवाल का जवाब दे सको, तो मैं बड़ी आभारी होऊंगी," अंग्रेज़ी की टीचर मिसेज़ फॉन्सेका ने अपने सींग की कमानी वाले चश्मे से अरविंद को घूरते हुए कहा। जब वो उसका सरनेम लेकर बात करती थीं, तो आमतौर पर इसका मतलब ये होता था कि वो मुसीबत में है।

"आई एम सॉरी, मैम, क्या आप अपना सवाल दोहराएंगी?" अरविंद ने जल्दी से अपनी लेन-देन वाली नोटबुक और पेंसिल को बस्ते में ठूंसते हुए कहा। उसके लिए अपने हिसाब-किताब पर नज़र डालने के लिए अंग्रेज़ी साहित्य की क्लास आमतौर पर सबसे अच्छी रहती थी।

“अगर तुमने मेरी क्लास पर थोड़ा ज़्यादा, और बेकार की लकीरें बनाने पर थोड़ा कम ध्यान दिया होता, तो शायद तुम्हें सवाल के दोहराए जाने की ज़रूरत नहीं पड़ती,” मिसेज़ फॉन्सेका ने फटकार लगाई।

“आई एम वेरी सॉरी, मैम,” अरविंद ने एकदम बेचारेपन वाला चेहरा बनाते हुए कहा। ऐसा चेहरा लोगों को हमेशा ये अहसास दिलाता है कि उनकी बात मान ली जाएगी। ये उन्हें अपने पतन के लिए तैयार कर देता है।

“सवाल,” मिसेज़ फॉन्सेका ने एक गहरी सांस छोड़ी, “ये था। ऑस्कर वाइल्ड ने आख़री नाटक कौन सा लिखा था?”

अरविंद ने जवाब देने से पहले सिर खुजाया। “दि इंपॉर्टेंस ऑफ़ बींग ए जीनियस,” उसने पूरे आत्मविश्वास से कहा।

“दि इंपॉर्टेंस ऑफ़ बींग ए जीनियस?” मिसेज़ फॉन्सेका ने अविश्वास से पूछा। “तुमने ज़रा भी तैयारी नहीं की है, मिस्टर बागड़िया; इस नाम का तो कोई नाटक है ही नहीं। ऑस्कर वाइल्ड का आख़री नाटक दि इंपॉर्टेंस ऑफ़ बींग अर्नेस्ट था।”

“लेकिन मैम, मुझे ऑस्कर वाइल्ड के अमेरिका में आने के बारे में पढ़ना याद है,” अरविंद ने कहा, जिसे अपनी दिलचस्पी की हर चीज़ बड़ी आसानी से याद रहती थी जबकि वो बाक़ी चीज़ों को भुलाता जाता था।

“इसका मेरे सवाल से क्या संबंध हुआ?” मिसेज़ फॉन्सेका ने चिढ़कर पूछा।

क्लास के दूसरे छात्र मुंह दबाए खी-खी कर रहे थे। अरविंद ने खुद को कोने में फंसा लिया था। हमेशा की तरह खुद को कोने से निकालना बड़ा मज़ेदार होने वाला था।

“बस ये कि जब ऑस्कर वाइल्ड 1882 में न्यूयॉर्क हार्बर पर पहुंचे, तो एक अमेरिकी कस्टम्स अधिकारी ने उनसे पूछा कि क्या उनके पास घोषणा करने को कुछ है,” अरविंद ने जवाब दिया।

“तुम्हारी कहानी का कोई मतलब भी है, मिस्टर बागड़िया?” मिसेज़ फॉन्सेका ने बुरी तरह गुस्सा होते हुए पूछा।

अरविंद आगे बोला।

“ऑस्कर वाइल्ड ने जवाब दिया: मेरे पास घोषणा करने के लिए अपनी जीनियस के अलावा कुछ नहीं है,” अरविंद बोलता रहा। “आप इस बात से सहमत नहीं हैं कि जीनियस होना अर्नेस्ट होने से ज़्यादा महत्वपूर्ण है, मैम?”



“मुझे बिल्कुल समझ नहीं आता कि तुम भिखारियों से लेकर ये सिक्के क्यों जमा करते हो, और उन्हें प्रीमियम भी देते हो,” अरविंद का एक क्लासमेट जॉयदीप बड़बड़ाया। वो लोग स्कूल से घर वापस जा रहे थे।

अरविंद लंबा और गोरा था, जबकि जॉयदीप छोटा और काला था। वो एक अजीब सा जोड़ा थे।

“मेरे पिता मुझे बड़ा मामूली सा जेब ख़र्च देते हैं,” अरविंद ने जवाब दिया। “वो कहते हैं कि गांधीवादी कमख़र्ची आगे ज़िंदगी में मेरी मदद करेगी; इसलिए मुझे अक्सर अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए तरीक़े खोजने पड़ते हैं।”

“लेकिन मैं तुम्हें नीबू वाली टॉफ़ियों के अलावा तो कभी किसी चीज़ पर ख़र्च करते नहीं देखता हूं,” जॉयदीप ने कहा। “तुम जो सिक्के जमा करते हो, उनका करते क्या हो?”

“मैं उन्हें मिस्टर भट्टाचार्य को दे देता हूं,” अरविंद ने अपनी एक टॉफ़ी चूसते हुए कहा।

“किसे?”

“मिस्टर भट्टाचार्य। वो हमारे स्कूल की कैंटीनवाले के भाई हैं और बंगाल एलॉयज़ नाम की एक कंपनी के लिए काम करते हैं,” अरविंद ने आत्मविश्वास के साथ जवाब दिया।

“और ये भट्टाचार्य तुम्हारे दिए हुए सिक्कों का क्या करते हैं? वो सिक्के जमा करते हैं क्या?” जॉयदीप ने उत्सुकतावश पूछा।

अरविंद हंसने लगा। “जो तुम्हारे पीछे है और जो तुम्हारे सामने है, वो उसकी तुलना में बेकार है जो तुम्हारे अंदर है,” अरविंद ने पहेली बुझाई।

“क्या?”

“च्च। तुम आज सुबह फ़ोनेस्का की अंग्रेज़ी साहित्य की क्लास भूल गए; राल्फ़ वाल्डो एमर्सन ने ये कहा था,” अरविंद ने टॉफ़ी को एक गाल से घुमाकर दूसरे गाल की ओर डालते हुए कहा।

अरविंद ज़्यादातर पक्का सिरदर्द बना रहता था। “तुम्हारा मतलब क्या है?” जॉयदीप ने झुंझलाकर पूछा।

“हिंदुस्तानी एक आने के सिक्के के एक ओर अशोक की लाट और दूसरी ओर बैल बना होता है। हेड्स और टेल्स,” अरविंद ने जवाब दिया।

“तो?”

“जो पीछे है और जो सामने है—सिक्के के दोनों चेहरे—अहम नहीं हैं। लेकिन जो चेहरों के बीच में है, धातु, वो महत्वपूर्ण है,” अरविंद ने उत्तर दिया।

“तो तुम उन्हें जमा क्यों करते हो?” जॉयदीप ने बेसब्री से पूछा।

अरविंद ने अपने दोस्त को गंभीरतापूर्वक देखा। “आने के सिक्के में प्रयोग होने वाली धातु कूप्रो-निकल है, जिसमें 75 प्रतिशत तांबा और 25 प्रतिशत निकल होता है। एक आने के सिक्के का वज़न लगभग 3.88 ग्राम होता है।”

“तुम उन्हें जमा क्यों करते हो?” जॉयदीप पीछे पड़ा रहा।

“पिछले कुछ समय से तांबे और निकल की मांग बहुत ज़्यादा बढ़ गई है,” अरविंद ने जॉयदीप की झुंझलाहट को नज़रअंदाज़ करते हुए जवाब दिया। “समुद्री पानी से ज़ंग लगने के अपने प्रतिरोध की वजह से समुद्री साजो-सामान के लिए तांबे-निकल का इस्तेमाल हो रहा है। मेरी मां की चीज़ों में भी एक तांबे का कड़ा है। मैंने कई बार उन्हें मनाने की कोशिश की कि वो उसे मुझे दे दें लेकिन वो मना कर देती हैं। कहती हैं कि इसकी एंटीक वैल्यू है जिसे मैं बड़ा होकर ही समझ पाऊंगा।”

“मेरे सवाल का जवाब अब भी नहीं मिला। तुम उन्हें जमा क्यों करते हो?” जॉयदीप ने पूछा।

“ज़्यादातर सैनिक पोतों के पिछले विश्व युद्ध की बमबारी में बर्बाद हो जाने की वजह से अब नए सिरे से पोतों के निर्माण का काम चल रहा है और इसलिए तांबे और निकल की मांग बढ़ गई है,” आख़िरकार अरविंद ने जवाब दिया। “मैं उन्हें इसलिए जमा करता हूं कि ज़्यादा मांग की वजह से कुछ सिक्कों की क़ीमत उनकी ज़ाहिरी क़ीमत से ज़्यादा हो गई है।”

अपने दोस्त की बात को पचाने की कोशिश में जॉयदीप अपना सिर खुजाने लगा।

“आधे आने, एक आने और दो आने के सिक्कों के साथ ऐसा ही है, कि उनकी क़ीमत उनकी ज़ाहिरी क़ीमत से चालीस प्रतिशत ज़्यादा है; लफ़ंगों को दस प्रतिशत और मिस्टर भट्टाचार्य को दस प्रतिशत देने के बाद भी मेरे पास हर सिक्के के कारोबार पर बीस प्रतिशत आराम से बचते हैं!”

इस सैर-सपाटे के लिए काफ़ी तैयारी की गई थी। इसके लिए कई हफ़्तों से पैसा बचाया गया था। फ़िल्म की रिलीज़ के बाद से ही अय्यूब की इसे देखने की इच्छा थी। लेकिन एक कुली की तन्ख़ाह का मतलब था संयम और धीरज।

नन्हा अरबाज़ अपने माता-पिता को पीला हाउस की ओर बढ़ते देख रहा था। ब्रिटिश प्रशासन ने 1830 में इलाके के सारे क़ब्रिस्तानों को बंद करके उनकी जगह गेमिंग क्लब और थिएटर बना दिए थे जिन्हें प्ले हाउस कहा जाता था। स्थानीय लोग ‘प्ले हाउस’ नहीं बोल पाते थे तो उन्होंने इसे पीला हाउस बना दिया था। और यही नाम चल भी निकला।

“हमें यहां मुड़ना है,” अय्यूब ने अरबाज़ को मज़बूती से अपने साथ खींचते हुए कहा। बाहर साइनबोर्ड पर ‘रॉयल टॉकीज़’ लिखा हुआ था।

वो एक मेहराबदार गेट के नीचे से गुज़रे जिसके ऊपर हाथ से पेंट किया गया एक पोस्टर लगा हुआ था जिसमें फ़िल्म के स्टार प्रदीप कुमार, बीना राय और नूरजहां को दिखाया गया था। फ़िल्म का नाम अनारकली था और इसे फ़िल्मिस्तान ने प्रोडचूस किया था।

रॉयल टॉकीज़ में पहले नाटकों का ही मंचन किया जाता था लेकिन फिर स्टेज की जगह सिनेमा स्क्रीन ने ले ली थी। छह सौ की सीटिंग क्षमता होने के कारण, बाहर भारी कोलाहल था। बंबई का बॉलीवुड से कभी दिल भरता ही नहीं था। सिर्फ रॉयल

टॉकीज़ ही नहीं, बल्कि एडवर्ड, न्यू रौशन टॉकीज़, एल्फ़्रेड, निशात, गुलशन, इंपीरियल और कैपिटल जैसे सिनेमा हॉल भी हमेशा हाउस फ़ुल रहते थे।

एक बड़े से बोर्ड पर चॉक से शो के टाइम लिखे हुए थे, और चूंकि इस बोर्ड ने बुकिंग क्लर्क को छिपा सा दिया था इसलिए अय्यूब को पैसा देने के लिए झुकना पड़ा। उस दिन के चार शो 12.30, 3.30, 6.30 और 9.30 पर थे। शेख़ परिवार ने बॉक्स ऑफ़िस से चार आने प्रति टिकट पर तीन टिकट ख़रीदे।

अंदर जाकर तले हुए स्नैक्स और एक सोडा फ़ाउंटेन के बोझ के नीचे चरमरा रहे काउंटर को नज़रअंदाज़ करते हुए, उन्होंने शतरंज के बोर्ड जैसे एकरंगी फ़्लोर को पार किया। अरबाज़ को मज़बूती से उन स्वादिष्ट चीज़ों की ओर से खींच लिया गया। परिवार बस किसी तरह टिकटों का ख़र्च ही उठा सकता था।

अगले दो घंटे पचपन मिनट तक स्क्रीन पर दिखाई जा रही छवियों से अभिभूत शेख़ परिवार अंदर बैठा रहा। नादिरा के अनार का फूल मांगने पर अकबर द्वारा उसे अनारकली नाम दिए जाने पर वो हंसे। दरबार में नशे में नाचने के लिए जब अकबर ने उसे क़ैद कर दिया तो वो रोए। उन्होंने लता मंगेशकर के साथ ये ज़िंदगी उसी की है गाया। अकबर और सलीम के बीच विवाद के क्लाइमैक्स पर पहुंचने पर उनके मुंह खुले रह गए।

अंदर के अंधेरे और ठंडक भरे माहौल से बाहर गली में आते हुए अरबाज़ ने अपने पिता से पूछा, “अकबर ने अपने बेटे के साथ इतना बुरा सुलूक क्यों किया?”

अय्यूब ने कुछ पल सोचा और फिर जवाब दिया, “बदक़िस्मती से, ताक़त और प्यार के बीच की लड़ाई में आमतौर पर ताक़त ही जीतती है, बेटे,” वो बोला।



बंबई की चिलचिलाती गर्मी में आगे बढ़ते हुए अरबाज़ ने एक आह भरी। फिर परचून की दुकान तक लंबी दौड़। उसकी मां के पास उसके लिए हमेशा कोई न काम होता था।

वो सोच रहा था कि पता नहीं डोंगरी के नुक्कड़ पर आज भी जावेद और उसके बदमाश साथी उसका इंतज़ार कर रहे होंगे या नहीं। पिछली बार वो वहां से गुज़रा था, तो उन्होंने उसे गर्दन से पकड़ लिया था और उसकी बुरी तरह से पिटाई कर दी थी।

लंबे मगर दुबले अरबाज़ के अंग लंबे और आंखें झुकी हुई सी थीं। उसके बाल एकदम काले थे लेकिन उसकी मां द्वारा हिना लगा दिए जाने से उनमें भूरापन आ गया था। उसके गोरे रंग को हल्के-हल्के मुंहासों ने दाग़दार बना दिया था जिन पर उसे हमेशा शर्म आती थी। अरबाज़ आसान शिकार था।

अरबाज़ ने अपने हाथ अपनी मोटी और खुरदुरी बुनाई वाली पैंट की जेबों में डाल लिए। ये वही कपड़ा था जिससे ब्रिटिश कामगारों की डंगरी बनती थीं। दरअसल, ‘डंगरी’ शब्द डोंगरी का इंग्लिश अपभ्रंश था।

डंगरी नहीं बदली थी लेकिन डोंगरी बदल चुका था। ये अब बंबई के अंडरवर्ल्ड का

अड्डा था।

दिलों में ख़ौफ़ पैदा कर देने वाला नाम अब्दुल दादा का था। क्रॉफ़र्ड मार्केट से लेकर जेजे हॉस्पीटल तक के इलाक़ों में उसी की तूती बोलती थी। उमेरखाड़ी, चकला मार्केट, नल बाज़ार, कमाठीपुरा या चोर बाज़ार में रहने वाला कोई भी नागरिक अब्दुल दादा से झगड़ा मोल लेकर नहीं रह सकता था।

नुक्कड़ का नौजवान दादा जावेद एक टुच्चा था लेकिन अरबाज़ की नज़रों में वो अब्दुल दादा से भी ताक़तवर था। जावेद के ग़ुंडों का गैंग सारे इलाक़े के लिए एक बुरी ख़बर था। दो हफ़्ते पहले, उन्होंने इलाक़े के दारू के दुकानदार को इसलिए पीट डाला था कि उसने उन्हें बग़ैर पैसे के उनकी सामान्य सप्लाई देने से मना कर दिया था। पहले भी एक बार उन्होंने चाकू की नोक पर डाकिए से उसका मनी ऑर्डर्स का बैग छीन लिया था। अरबाज़ नुक्कड़ पर मुड़ा तो उसने देखा कि उसे जिस बात का डर था वही हो गया था।

अपने चमचों से घिरा जावेद एक खंभे से टिका ख़तरनाक ढंग से खड़ा था। "ओ हो... क्या बात है!" जावेद ने ज़ोर से कहा। "लगता है नन्हा अरबाज़ बेचारी शबाना के काम से निकला हुआ है। पता नहीं इसकी जेबों में कितना माल होगा! इसे पकड़ के देख तो, राशिद, इसके पास क्या है।"

एक लंबे-चौड़े लड़के ने आगे बढ़कर अरबाज़ को गिरा दिया और फिर उसके टख़ने पकड़कर उसे उल्टा लटकाकर वो उसे तब तक झिंझोड़ता रहा जब तक उसकी जेबों से कुछ सिक्के नहीं गिर गए। "लगता है ज़्यादा नहीं है," जावेद बोला। फिर वो उल्टे लटके अरबाज़ को कुछ देर देखता रहा।

"छोड़ दे, राशिद," जावेद ने नफ़रत से कहा। लंबे-चौड़े लड़के ने उसे लापरवाही से फ़ुटपाथ पर डाल दिया।

"अब इसके कपड़े उतार ले," जावेद ने निर्देश दिया।

"मगर-मगर..." अरबाज़ हकलाया।

"जेब में काफ़ी पैसा लाना तेरा फ़र्ज़ है। जब भी कम लाएगा, तो हम तेरे कपड़े भी ले लेंगे। हम ख़ैरात नहीं करते हैं!"

कमज़ोर सा अरबाज़ बेइज़्ज़ती से बचने के लिए भीख मांगता रहा मगर जावेद हाथ बांधकर लापरवाही से खड़ा देखता रहा और उसके गुंडे अरबाज़ के कपड़े उतारते रहे। कुछ मिनट बाद, अरबाज़ एकदम अकेला था और एकदम नंगा। उसका अंडरवीयर तक उतार दिया गया था। उसके गालों पर आंसू बह रहे थे लेकिन वो उन्हें पोंछ भी नहीं सकता था क्योंकि हाथों से उसे अपने गुप्तांग छिपाने थे।

और फिर उसके अंदर कुछ टूट गया और फिर वो अरबाज़ पहले वाला अरबाज़ नहीं रहा। महात्मा गांधी ने एक बार कहा था आंख के बदले आंख सारी दुनिया को अंधा कर देगी।

अब दुनिया के अंधे होने का समय आ गया था।



अरबाज़ अपनी डेस्क पर बैठा था। उसके सामने पोस्ट विभाग द्वारा जारी नौ पैसे वाला एक पोस्टकार्ड था।

उसके सामने ही उर्दू की एक किताब भी थी। इसका शीर्षक था खुतूते-ग़ालिब। शेख़ परिवार के घर में किताबें विरले ही दिखाई देती थीं। अरबाज़ ने ये किताब स्कूल में अपने टीचर से उधार मांगी थी।

"अस्सलामु-अलैकुम..." उसने सावधानी से लिखा, ये ध्यान रखते हुए कि हिज्जे और लिखाई एकदम सही हो।

"अल्लाह के करम से, क्या मैं आपसे दर्ख़ास्त कर सकती हूं-" वो ग़ालिब की किताब से सही शब्द लेते हुए लिखने लगा। उसे लहजा परिपक्व लेकिन सम्मानजनक रखना था।

पूरा ख़त लिखने के बाद, उसने फ़ख़्र के साथ उसे देखा। फिर वो पोस्टकार्ड डालने पोस्ट ऑफ़िस की ओर चल दिया। उसे लाल लैटर बॉक्स में डालने के बाद उसने एक गहरी सांस ली।

असली चुनौती आज रात आने वाली थी।



सैंडहर्स्ट रोड पर वो घर बिल्कुल ख़ामोश था; उसमें रहने वाले गहरी नींद में थे। अरबाज़ दो घंटे से रेल की पटरियों पर पालथी मारे बैठा था। उसने अपने मंसूबे पर बार-बार ग़ौर किया था। वो जानता था कि अगर उसका दांव उलटा पड़ गया, तो वो बड़ी मुसीबत में पड़ जाएगा।

उसने उठकर एक अंगड़ाई ली, फिर अपनी पैंट की दाईं जेब में हाथ डाला। वो जेब में मौजूद था। इसे ख़रीदने के लिए महीनों बचत करनी पड़ी थी। उसकी उंगलियों ने प्लास्टिक को छुआ, तो वो आश्वस्त हो गया। वो एक मिनट को हिचकिचाया, क्या वो सही काम कर रहा है। फिर उसे नंगे घर पहुंचना और सड़क के बच्चों द्वारा गंदे-गंदे नाम पुकारा जाना याद आया। उसने फ़ैसला कर लिया।

उसने फुर्ती से पटरियां पार कीं और उस दो माला बिल्डिंग के पास पहुंच गया। गेट के बाहर एक बोर्ड पर लिखा था, एमजे. रहमान, एडवोकेट। अरबाज़ ने ज़ोर से गेट को खोला और रात की ख़ामोशी में उसकी चूलें चरमराईं, तो अरबाज़ का दिल कांप गया। ख़ुद को हिम्मत बंधाते हुए, वो ज़मीन पर पड़ी टहनियों से बचता हुआ घर की ओर बढ़ा। उसने ऊपर उस खिड़की को देखा जिस पर उसने सारी रात नज़र रखी थी। खिड़की पूरी खुली हुई थी।

वो केरल के किसी नारियल तोड़ने वाले की पेड़ पर चढ़ने की सी फुर्ती से ड्रेनपाइप पर चढ़ गया। दोस्तों से वंचित रहे अरबाज़ ने बहुत दिन पेड़ों पर चढ़कर उनमें छिपे

रहकर बिताए थे। उसकी ताक़त की कमी को उसकी फुर्ती और रफ़्तार ने पूरा कर दिया था।

कुछ जानवर शिकार करते हैं। कुछ छिपते हैं।

खिड़की पर पहुंचकर उसने अंदर झांका। उसे बेड पर एक आकृति दिखाई दी, जिसका खुला हुआ मुंह ख़र्राटे ले रहा था और ख़र्राटों की लय के साथ फैल और सिकुड़ रहा था। अरबाज़ खिड़की की चौखट पर चढ़ा और एहतियात से कमरे में उतर गया।

वो एक मिनट को स्थिर खड़ा अपनी आंखों को अंधेरे का आदी बनाता रहा। फिर उसने डेस्क के पास जाकर एक दराज़ खोली। बंबई की नमी ने लकड़ी को फुला दिया था, इसलिए दराज़ चरामराई। बेड पर मौजूद आकृति के ख़र्राटे बंद हो गए। अरबाज़ डर से जमकर रह गया।

वो एक मिनट से ज्यादा तक जमा रहा और फिर लगभग जादुई ढंग से, ख़र्राटे फिर से शुरू हो गए। अरबाज़ ने राहत की गहरी सांस ली और फिर से अपने काम में लग गया।



"प्लीज़, अब मार भी चुकिए इसे!" मां ने मिन्नत की जबकि मुहम्मद जाफ़र रहमान, एडवोकेट ने फ़ौरी इंसाफ़ करने के लिए एक बार फिर अपनी चमड़े की बेल्ट चलाई।

"मैं इसकी बदतमीज़ियां ह्ज़ार बार बर्दाश्त कर चुका हूं!" गुस्से से पागल हो रहे मिस्टर रहमान चिल्लाए। "क्लासें छोड़ना, इम्तेहान में फ़ेल होना, कुछ पगलों का गैंग लीडर बनना, पड़ोसियों को तंग करना... मगर इस बार पानी सिर से ऊंचा हो गया है!"

ठाक; चमड़े की बेल्ट फिर से जावेद पर पड़ी, इस बार उसकी जांघों पर। उसकी पीठ और टांगों पर जहां-जहां उसके पिता की बेल्ट पड़ी थी, गहरी सुर्ख धारियां उभर आई थीं। लड़का दर्द से चिल्ला रहा था और अपनी टांगों पर खड़ा रहने की कोशिश में था।

"ये सब तुम्हारे लाड़ का नतीजा है," किसी बॉलीवुड फ़िल्म में अपराध से लड़ने वाले हीरो की तरह बेल्ट को पकड़े वकील ने बेल्ट को फिर से लहराने के लिए तैयार होते हुए कहा।

"क्या तुम हमारे बेटे की जान ही ले लोगे, ये तो बताओ कि इसने ऐसा क्या कर दिया है?" परेशान मां ने कहा।

"ये देख रही हो?" मिस्टर रहमान ने प्लास्टिक का एक पैकेट दिखाते हुए कहा जिसमें मटमैले रंग का कोई पाउडर था। "ये इसकी डेस्क की दराज़ा में था। ये हेरोइन है; अब हमारा बेटा एक पेशेवर ड्रग-डीलर बन चुका है!"

ये तुझे कहां से मिला, जावेद?" हैरान मां ने रोते हुए पूछा।

"मुझे सचमुच कुछ नहीं पता, अम्मी," जावेद ने कमज़ोर से भाव से कहा।

“झूठा!” मिस्टर रहमान फिर से बेल्ट लहराते हुए चिल्लाए, जो इस बार उसकी पीठ पर पड़ी थी। जावेद का संतुलन बिगड़ा और वो ज़ामीन पर गिर पड़ा।

“तुम्हें कैसे पता ये ड्रग्स जावेद के हैं?” मिसेज़ रहमान ने इस उम्मीद में पूछा कि शायद इस सवाल के नतीजे में पिटाई बंद हो जाएगी।

“तुम्हारी जैसी एक बेचारी, दुखी मां ने मुझे लिखा है,” मिस्टर रहमान ने जवाब दिया। “उसने मुझे ये पोस्टकार्ड भेजा है। इसे पढ़ो और बताओ क्या मुझे इस कमीने पर तरस दिखाना चाहिए जिसे हम अपना बेटा कहते हैं!”

जावेद की मां अपने शौहर से पोस्टकार्ड लेकर पढ़ने लगीं।

अस्सलामु-अलैकुम, रहमान साहब। मैं और किसी से मदद नहीं मांग सकती। मेरे बेटे को उन ड्रग्स की लत लग गई है जो आपका बेटा बेचता है। मैंने उसकी ये आदत छुड़ाने की पूरी कोशिश की लेकिन कोई फ़ायदा नहीं। आपका बेटा पक्का करता है कि उसके ग्राहकों को लत लगी रहे। मैं पुलिस के पास नहीं जा सकती क्योंकि वो पहले मेरे बेटे को गिरफ़्तार करेंगे। मैं जानती हूं कि आप एक इज़्ज़तदार वकील और अच्छे इंसान हैं। अल्लाह के करम से, क्या मैं आपसे दरख़ास्त कर सकती हूं कि इस लानत से छुटकारा पाएं ? मैं हमेशा आपकी अहसानमंद रहूंगी।

-एक मां जो अपने बेटे को वापस पाना चाहती है।

“तू ऐसा कैसे कर सकता है, जावेद?” मिसेज़ रहमान ने पूछा जिनका चेहरा गुस्से से लाल हो गया था। “तू हर साल फ़ेल होता रहा तो मैं तुझे बचाती रही, जब तू बदमाशी करता तो मैं तेरे बाप से तेरा बचाव करती रही, जब तेरे टीचर मुझे स्कूल बुलाते तो मैं बहाने बनाती रही…”

“अम्मी, मैं क़सम खाता हूं… ये चीज़ मेरी नहीं है!” जावेद ने मिन्नत की, और तेज़ी से दिमाग़ दौड़ाता रहा कि उसे किसने फंसाया होगा।

“चुप कर!” उसकी मां ने डांटा। “तेरे अब्बा सही कहते हैं। मैंने तुझे बहुत ज़्यादा ही छूट दे रखी है। आज के बाद हालात बदल जाएंगे।”

फिर वो अपने शौहर की ओर देखते हुए बोलीं, “मेरे ख़्याल से इसे कुछेक और पड़ने चाहिए।” और ये कहकर वो मुड़ीं और कमरे से निकल गईं।

रहमान परिवार के घर के पास एक पेड़ पर चढ़ा अरबाज़ संतुष्टि की ख़ामोश मुस्कान के साथ ये सब देख रहा था।

कुछ जानवर शिकार करते हैं। कुछ छिपते हैं। और कुछ छिपकर शिकार करते हैं।



इक़बाल और अरबाज़ एक दूसरे के पास खड़े अजीब से लग रहे थे। इक़बाल के चौड़े कंधे, मांसल बाहें और पहलवानों जैसी जांघें थीं। जबकि अरबाज़ लंबा और दुबला था। इक़बाल ने फिर से इस मरियल से लड़के को देखा।

“तो तुम चाहते हो मैं तुम्हें ट्रेनिंग दूं?” उसने पूछा। “क्यों?”

“क्योंकि मैं छेड़े जाने से थक चुका हूं,” अरबाज़ ने जवाब दिया। वो लोकल तालीमख़ाने में था जो लोकल हिंदू अखाड़े से बहुत भिन्न नहीं था। फ़र्क़ बस इतना था कि यहां दीवारों पर हिंदू देवताओं की मूर्तियां नहीं थीं। बल्कि कुरआन की एक आयत लिखी हुई थी। इसे लोकल पहलवान इक़बाल चलाता था।

“तुम्हारी ट्रेनिंग अभी शुरू होती है,” इक़बाल ने कहा। “उस पलंग पर खड़े हो जाओ।”

अरबाज़ ने अपने ट्रेनर की बात मानी। इक़बाल ने कमरे के कोने में एक पिंजरे से मुर्गी निकाली और उसे पलंग के नीचे सरका दिया और अरबाज़ को एक लाठी दे दी। “तुम्हारा काम मुर्गी को पलंग के नीचे से निकलने से रोकना है। याद रखना कि तुम्हें मुर्गी को नहीं छूना है, बस लाठी को पलंग के चारों तरफ़ इतनी तेज़ी से चलाना है कि मुर्गी निकल न सके।”

मुर्गी को बाहर निकलने में दस सैकंड भी नहीं लगे।

इक़बाल हंसने लगा। उसने अरबाज़ से लाठी ली और अपने एक शागिर्द से फड़फड़ाती मुर्गी को फिर से पकड़वाकर पलंग के नीचे पहुंचवा दिया। “अब देखो,” उसने कहा और मुर्गी को छुए बिना लाठी को पलंग के चारों ओर बड़ी आसानी से चलाने लगा। “हमें एक नक़ली रुकावट खड़ी करनी होती है। मुर्गी को लगता है कि पलंग के चारों तरफ़ एक दीवार है। मैं चाहूंगा कि तुम इतनी ही तेज़ी से पलंग के चारों तरफ़ लाठी चलाओ। समझ गए?”

अरबाज़ ने इक़रार में सिर हिलाया।

“तुम अपनी बैगी पैंट के नीचे क्या पहने हो?” इक़बाल ने अचानक पूछा।

“अंडरवीयर,” अरबाज़ बोला।

“ये लो, कल आने से पहले इसे पहन लेना,” इक़बाल ने उसे एक लंगोट और तेल की शीशी देते हुए कहा। “तुम्हें कुश्ती के लिए इसकी ज़रूरत पड़ेगी। और यहां आने के बाद इसे भी अपने पूरे जिस्म पर मल लेना।”

“ये क्या है?” अरबाज़ ने पूछा।

“तिल का तेल,” इक़बाल ने कहा। “कभी बाना, बनेठी, बिन्नौट और खारी गतका के बारे में सुना है?”

“नहीं,” अरबाज़ ने स्वीकार किया।

“ये हिंदुस्तानी आत्मरक्षा के विभिन्न तरीक़े हैं। मैं तुम्हें ये सब सिखाऊंगा। जब तुम्हारी ट्रेनिंग पूरी होगी, तो तुम्हारे हाथों में कपड़े के टुकड़े में बंधा एक मामूली सिक्का भी घातक हथियार बन जाएगा।”

“मैं किस वक्त आया करूं?” अरबाज़ ने पूछा।

“सुबह फ़जर की नमाज़ पढ़ने के बाद आ जाया करो। तुम्हें ये चमत्कार हासिल करने

के लिए अल्लाह की मेहरबानी की ज़रूरत होगी। तुम्हारी ट्रेनिंग रोज़ाना दो घंटे की होगी। लो, ये पी लो।"

एक लड़के ने अरबाज़ को एक गिलास दिया।

"ये क्या है?" अरबाज़ ने पूछा।

"पिसे हुए बादाम मिला दूध," इक़बाल ने जवाब दिया। "तुम इसका एक गिलास रोज़ाना ट्रेनिंग के बाद पिया करोगे। मैं चाहूंगा कि घर पर तुम दाल और मटन खाया करो। प्रोटीन तुम्हारे जिस्म को भर देगा। कल मिलते हैं।"



अरविंद ने उसे रॉदों स्ट्रीट के पार से देख लिया था। लड़कों के स्कूल का मेन गेट लॉडन स्ट्रीट पर खुलता था, और लड़कियों के स्कूल का मेन गेट रॉदों स्ट्रीट पर था। दोनों ला मार्टिनियर स्कूल, एक लड़कों का और एक लड़कियों का, रॉदों स्ट्रीट पर एक दूसरे के आमने-सामने थे।

वो बेहद ख़ूबसूरत थी। वो एक सांवली बंगाली हसीना थी जिसकी आंखें गहरी थीं और जिसके मुस्कुराने पर हर बार—जोकि अक्सर होता था—उसके गालों में गड्ढे पड़ते थे। वो अपनी एक सिक्का खोज दौरे पर था जब वो अपनी सहेली के साथ स्कूल में घुसी, और वो उस पर से अपनी नज़रें नहीं हटा सका। उसे पहले कभी ऐसा कोई अनुभव नहीं हुआ था। सबसे बदतर ये कि वो इस बारे में किसी से बात भी नहीं कर सकता था। अपने माता-पिता से तो क़तई नहीं। और उसका दोस्त जॉयदीप इन मामलों में बिल्कुल ही नाकारा था।

अपना परिचय देने में शर्म और किसी और से उसका नाम पूछने में डरते हुए, अरविंद ने रॉदों स्ट्रीट पर इंतज़ार करने और चुपके-चुपके उसका नज़ारा करने पर ही सब्र कर लिया। कुछ दिन बाद उसने उसकी सहेली को स्कूल के गेट से अकेले निकलते देखा। अब ये अभी या कभी नहीं वाला मामला था।

उसकी ओर जाते हुए उसका दिल बुरी तरह धड़क रहा था। "सु- सुनिए, म- मैं आपसे एक सवाल पूछ सकता हूं?" वो हकलाया।

लड़की एक प्राइवेट कार की ओर बढ़ रही थी लेकिन वो एक क्षण रुककर सवालिया नज़रों से उसे देखने लगी।

"मैं सोच रहा था क्या आप मुझे अपनी दोस्त का नाम बता सकती हैं," अरविंद घबराहट में बड़बड़ाया। "मतलब, वही जिसके साथ आप आमतौर पर होती हैं।"

"मैं क्यों बताऊं?" लड़की ने उसके सवाल को लगभग ख़ारिज करते हुए कहा।

अरविंद जमकर रह गया। उसे इस सवाल की उम्मीद नहीं थी। उसे लगा उसकी नब्ज़ तेज़ हो गई है और वो सोचने लगा कि क्या सफ़ाई दे।

"मुझे ल-लगता है," वो दब्बूपन से हकलाया। "मुझे लगता है मैं- मैं-"

“अब बोलो भी,” लड़की बोली। “क्या लगता है तुम्हें?”

“मुझे लगता है… कि मुझे उससे प्यार हो गया है।”

ये लो। उसने बोल दिया था। और शुरुआती हकलाहट के बावजूद ये शब्द वो ठीक से बोल पाया था।

लड़की मुस्कुराने लगी। “उसका नाम परोमिता है।”

“माफ़ करना मैंने अपना परिचय नहीं दिया,” अरविंद ने कहा। लड़की के मुस्कुराने से उसका हकलाना बंद हो गया था। “मैं अरविंद हूं। तुम्हारा क्या नाम है?”

“श्रेया,” लड़की ने जवाब दिया। “तुमसे मिलकर अच्छा लगा, अरविंद।”

“तुम्हें पता है उसका फ़ेवरिट सब्जेक्ट क्या है?” अरविंद ने पूछा। अब उसकी हिम्मत बढ़ने लगी थी।

“मेरे ख़्याल से कैमिस्ट्री,” श्रेया ने कहा। “क्यों?”

“क्या मैं कल तुम्हारे ज़रिए परोमिता को एक संदेश दे सकता हूं? मैं संदेश कल शाम को दे दूंगा।”

“सुबह को क्यों नहीं?” श्रेया ने कहा।

“क्योंकि सुबह को वो हमेशा तुम्हारे साथ होती है,” अरविंद ने कहा, जिसका चेहरा शर्म से लाल हो रहा था।

“तुम हम पर नज़र रखे हुए हो?” श्रेया ने पूछा।

अरविंद ने भोंडेपन से सिर हिलाया। वो सोचने लगा कि क्या वो उसे घटिया समझ रही है।

श्रेया खिलखिलाई। “सो स्वीट। ज़रूर, कल स्कूल के बाद मुझे संदेश दे देना। हम सुबह को साथ आते हैं लेकिन शाम को उसके एक्स्ट्रा क्लास होते हैं, इसलिए हम अलग-अलग जाते हैं। मैं तुम्हारा संदेश उसे दे दूंगी,” श्रेया ने अपने लिए इंतज़ार करती कार की ओर बढ़ते हुए कहा।

“सुनो, श्रेया, एक चीज़ और…” अरविंद ने कहा।

“हां?”

“क्या उसका पहले से ही कोई बॉयफ़्रेंड है?”



अगले दिन स्कूल के बाद श्रेया निकली, तो अरविंद रॉदों स्ट्रीट पर उसका इंतज़ार कर रहा था। उसने सड़क पार की और संदेश अपनी कोरियर-कम-साथी को दे दिया।

उसने क्लास में सीखी फ़्रेंच के द्वारा परोमिता को लुभाने का सोचा, लेकिन फिर फ़ैसला बदल दिया। उसे लगा ये थोड़ा घटिया सा लगेगा। वैसे भी, उसी साल, 1954

में, फ़्रांसीसी पॉन्डिचेरी को ख़ाली करके भारत को वापस सौंपकर चले गए थे। अरविंद को लगा कि भगोड़ों की भाषा का प्रयोग करना बेवक़ूफ़ी होगी। उसने इसके बजाय कैमिस्ट्री की भाषा इस्तेमाल करने का फ़ैसला किया।

श्रेया ने संदेश को पढ़ा।

डियर परोमिता। तुम मुझे नहीं जानतीं लेकिन मैं तुम्हें जानता हूं। मेरा नाम अरविंद है और मैं उम्मीद कर रहा था कि हम दोस्त बन जाएं। मुझे लगता है कि तुम कॉपर और टैलूरियम का यौगिक हो। मुझे ज़्यादा से ज़्यादा कार्बन, रूथेनियम, सल्फ़र और हाइड्रोजन का मिश्रण कहा जा सकता है। क्या तुम्हें लगता है कि हमारी कैमिस्ट्री कारगर रहेगी??

—अरविंद

उस दिन फ़िल्मफ़ेयर मैगज़ीन ने सिनेमा पुरस्कारों के विजेताओं की घोषणा की थी। बंबई में मेट्रो सिनेमा में आयोजित समारोह में दो बीघा ज़मीन ने सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म, इसी फ़िल्म के लिए बिमल रॉय ने सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, दिलीप कुमार ने दाग़ा के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता, मीना कुमारी ने बैजू बावरा के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री, और इसी फ़िल्म के लिए नौशाद ने सर्वश्रेष्ठ संगीत के लिए पुरस्कार जीते थे। अरविंद उम्मीद कर रहा था कि उस दिन वो भी एक विजेता होगा—एक अलग मायने में।

"मैं थोड़ी उलझन में हूं," श्रेया ने अरविंद से कहा। "ये संदेश बहुत रोमांटिक नहीं लग रहा। तुम वाक़ई चाहते हो मैं ये उसे दूं? ये कारगर रहेगा?"

अरविंद ने सिर हिलाया। "हां। मैं जोखिम उठाऊंगा। ये मुझ पर तुम्हारा उधार रहेगा, श्रेया," और इतना कहकर वो परोमिता के ख़्यालों में गुम अपने रास्ते चल दिया।



अरविंद सोच में डूबा था कि क्या श्रेया ने उसका संदेश परोमिता को दिया या नहीं। दो दिन हो चुके थे। उसकी नौजवान और बेचैन ज़िंदगी के सबसे लंबे दो दिन। क्या उसने ख़ुद को बुद्धू बना लिया था? क्या वो उसके संदेश पर हंस रही थी?

गेट की ओर बढ़ते हुए उसने एक कंकरी को ठोकर मारी। "उफ़!" एक ज़नाना आवाज़ आई जिसे वो कंकरी जाकर लगी थी। अरविंद ने देखा कि वो कंकरी परोमिता के टख़ने में जाकर लगी थी।

"मुझे बहुत, बहुत... अफसोस है," वो हकलाया; वो समझ नहीं पा रहा था कि ठीक से कैसे माफ़ी मांगे। वो तो बस नीचे झुककर उसके टख़ने को सहलाना चाहता था।

"कोई बात नहीं," परोमिता ने कहा। "छोटी सी कंकरी थी।"

एक असहज सी ख़ामोशी छा गई।

"वो, मुझे श्रेया से तुम्हारा संदेश मिला था। शुक्रिया," वो बोली।

"उम्मीद है मैंने कोई बेवक़ूफ़ी की बात नहीं कही होगी," अरविंद ने कहा। "मैं समझ

नहीं पा रहा था कि तुम क्या कहोगी। तुम मुझे जानती तक नहीं…"

अरविंद को महसूस हुआ कि वो बड़ी तेज़ी से बोल रहा है। वो जल्दी-जल्दी बनाए गए वाक्यों के बहाव को रोक क्यों नहीं पा रहा था?

"नहीं, नहीं… मुझे लगता है तुम स्वीट हो," वो बोली।

स्वीट? इसका क्या मतलब हुआ? छोटे भाई जैसा स्वीट? पिल्ले जैसा स्वीट?

"मेरे पास भी तुम्हारे लिए एक संदेश है," उसने अरविंद को काग़ज़ का एक छोटा सा पुरज़ा देते हुए कहा। और वो शर्माते हुए मुड़कर चल दी।

"फिर मिलेंगे," वो अपने स्कूल की ओर दौड़ते हुए बोली।

एक फ़ायर हाइड्रैंट पर बैठकर संदेश को पढ़ते हुए अरविंद का दिल बुरी तरह धड़क रहा था। लिखा था:

डियर अरविंद। मुझे कॉपर और टैलूरियम का यौगिक कहने के लिए शुक्रिया। तुम्हारे कार्बन, रूथेनियम, सल्फ़र और हाइड्रोजन का मिश्रण होने के लिए मुझे तुमसे हमदर्दी है। मेरे लिए तुम हाइड्रोजन, एरबियम और ऑक्सीजन का संयोग हो। बस इतना याद रखना कि मैं कभी हीलियम, आर्गन, थैलियम, आइंस्टीनियम और सल्फ़र का यौगिक नहीं बनूंगी।

—लव, परोमिता

उसने जल्दी से अपनी कैमिस्ट्री की किताब निकालकर आवर्त सारणी देखी, और खुशी से हंसने लगा।

कॉपर और टैलूरियम के संकेत चिह्न सीयू और टीई थे। कॉपर और टैलूरियम का यौगिक क्यूट बनता था। उसने अपने संदेश में उसका यही विवरण देना चाहा था।

कार्बन, रूथेनियम, सल्फ़र और हाइड्रोजन के संकेत सी, आरयू, एस और एच थे। अरविंद ने अपने संदेश में उसे बताया था कि उसे उस पर क्रश था।

हाइड्रोजन, एरबियम और ऑक्सीजन के संकेत एच, ईआर और ओ थे। वो उसे अपना हीरो कह रही थी।

और हीलियम, आर्गन, थैलियम, आइंस्टीनियम और सल्फर के संकेत एचई, एआर, टीएल, ईएस और एस थे। परोमिता उससे कह रही थी कि वो कभी हार्टलैस नहीं हो सकती।

खड़गपुर में शानदार नए इंडियन इंस्टीटच्यूट ऑफ़ टैक्नॉलोजी का पहला दीक्षांत समारोह दो साल बाद होने वाला था। उन्हें एक स्कूली लड़के और लड़की के वैज्ञानिक कौशल पर गर्व होता। दीक्षांत समारोह में, नेहरू घोषणा करने वाले थे, "ये भारत का एक शानदार स्मारक है, जो भारत की इच्छाओं का प्रतीक है…"

लेकिन उस समय तो अरविंद को बस अपनी इच्छाओं की चिंता थी।



अरबाज़ ने एक सिगरेट निकाला, उसे जलाया और अपने विचारों को भटकने के लिए छोड़ दिया। उसकी मांसल पीठ के पसीने को सुखा रही हल्की-हल्की हवा बड़ी खुशगवार थी। उसके ट्रेनर की भविष्यवाणी के मुताबिक़, वो एक मरियल से बच्चे से बदलकर एक ताक़तवर पहलवान बन गया था। लेकिन उसके चेहरे की मासूमियत अभी बाक़ी थी। उसके छोटे-छोटे बाल, सुडौल जबड़ा, खड़ी नाक और बड़ी-बड़ी भूरी आंखें लड़कियों के दिलों को फड़फड़ा देने के लिए काफ़ी थीं।

लेकिन अरबाज़ के पास प्यार के लिए वक्त नहीं था। उसका बाप, जो कई साल से कुली था, दो महीने पहले मर गया था। ये बड़ी दर्दनाक मौत रही थी। ब्लड कैंसर। खुशक़िस्मती से, मौत अचानक हो गई थी। 1956 के उन दस महीनों में अरबाज़ की उम्र दस साल बढ़ गई थी। पैसे की कमी ने उसे पंद्रह साल की ही उम्र में अपने बाप के बंदरगाह पर अपने बाप के सुपरवाइज़र के पास नौकरी के लिए जाने को मजबूर कर दिया था। उसके चौथी कक्षा के टीचर मिस्टर डीसूजा ने उसे हाल ही में बने जीवन बीमा निगम में क्लर्क की नौकरी दिलाने की कोशिश की लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

“तुम्हें बड़े होकर कुली नहीं बनना है,” अय्यूब अरबाज़ से कहा करता था। “अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो ताकि तुम्हें मुझ जैसी गुलामों वाली ज़िंदगी न गुज़ारनी पड़े।” अरबाज़ सोचता कि उसकी स्कूली पढ़ाई का क्या फ़ायदा हुआ। उसके बाद भी वो कुली ही बना। लेकिन फ़र्राटे से अंग्रेज़ी बोलने वाला कुली।

“चौदह रुपए महीना,” सुपरवाइज़र ने कहा था, जिसके मुंह के किनारे से एक सिगरेट लटक रहा था। उसके बाप की तन्ख़ाह से दस रुपए ज़्यादा। इस पर बहस नहीं की जा सकती थी। अरबाज़ ने सही जगह पर साइन कर दिए।

अगले कुछ दिन कमरतोड़ थे। दुबई से आए टेपरिकॉर्डरों, सिगरेट और ऑटोमेटिक घड़ियों, अदन से आए सिले-अनसिले कपड़ों और सिंगापुर से आई बीयर की कैनों और परफ़्यूम की शीशियों के बड़े-बड़े क्रेट जिन्हें लादकर-सावधानी के साथ-गोदी पर लगी कश्तियों से उतारना होता था।

तन्ख़ाह का दिन जल्दी ही आ गया। जब कुली अपनी हफ़्तेवार तन्ख़ाह लेने को लाइन लगाए खड़े थे, तो यूसुफ़ नाम का एक लोकल गुंडा खड़ा देख रहा था और हर मज़दूरों से तुरंत अपना हिस्सा ले लेता था।

अपना पैसा लेने के बाद अरबाज़ यूसुफ़ को नज़रअंदाज़ करता हुआ आगे बढ़ गया। अचानक उसके पीछे एक ज़ोरदार लात पड़ी। “पैसा दे, हरामज़ादे,” यूसुफ़ ने ग़ुस्से से कहा।

“क्यों?” अरबाज़ ने मासूमियत से पूछा।

“क्यों? इसकी जुर्रत तो देखो ये मुझसे क्यों पूछ रहा है!” यूसुफ़ अपने गुंडों के गिरोह को देखकर चिल्लाया। “मैं चुटकी बजाता हूं तो ये सारा शहर उछल पड़ता है, और ये चूतिया मुझसे पूछ रहा है क्यों!”

इससे पहले कि अरबाज़ अपने घूंसे का इस्तेमाल कर पाता, यूसुफ़ के पांच आदमी

उसे घेरकर अपने धारदार रामपुरी चाकू निकाल चुके थे। “पैसा दे या कट!” वो भौंके।

अरबाज़ ने हिचकिचाते हुए उन्हें पैसा दे दिया, हालांकि वो उनसे जमकर लड़ सकता था। कुछ जानवर शिकार करते हैं। कुछ छिपते हैं। और कुछ छिपकर शिकार करते हैं।

“तेरी बदतमीज़ी की वजह से तेरी आधी तन्ख़ाह,” यूसुफ़ ने हंसते हुए कहा। “अगली बार आराम से हफ़्ता दीजो, तो कुल 20 परसेंट लगेगा।”



1957 में बर्दवान पैलेस में हुई वो शादी एक भव्य समारोह था। कलकत्ता के सबसे धनी और शक्तिशाली परिवार—बिरला, जालान, खेतान, डालमिया, गोयनका, सिंघानिया, बांगड़, बाजोड़िया और कई अन्य—इसकी शान बढ़ा रहे थे। राजाजी को दिल्ली से कलकत्ता की फ़्लाइट से बुलवाया गया था और उस शाम उनके यहां आने की उम्मीद की जा रही थी।

सी. राजगोपालाचारी, या राजाजी, जिस नाम से अधिकतर लोग उन्हें जानते थे, पश्चिमी बंगाल के गवर्नर, भारत के गवर्नर-जनरल, केंद्रीय गृह मंत्री और मद्रास के मुख्यमंत्री सहित बहुत से पदों पर रहे थे। लेकिन राजाजी नेहरू के समाजवाद से ऊबने लगे थे। अफ़वाहें आम थीं कि राजाजी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को छोड़ने और स्वतंत्र पार्टी के नाम से अपनी नई पार्टी बनाने वाले थे। कलकत्ता और बंबई के कई उद्योगपति और व्यापारी उनका समर्थन कर रहे थे।

पैसे वाले मारवाड़ियों के बीच बृजमोहनलाल बागड़िया की कोई हैसियत तो नहीं थी लेकिन फिर भी उसे आमंत्रित किया गया था। उसे ऐसे समारोहों से चिढ़ थी। उसे ऐसे लोगों से मिलना पड़ता था जिनके सामने उसे छोटेपन का अहसास होता था। फिर भी, उससे उम्मीद की जाती थी कि वो दिखावा करेगा, मुस्कुराएगा और मारवाड़ी रईसों के आगे गुलामों की तरह झुकेगा।

लेकिन अरविंद खुश था। समारोह की वजह से नहीं बल्कि इसलिए कि वो एक नई कार ले रहे थे। काफ़ी सोच-विचार और बातचीत के बाद बृजमोहनलाल ने हिंदुस्तान मोटर्स नाम की एक कंपनी द्वारा बनाई जा रही एक गाड़ी का ऑर्डर दे दिया। ऑक्सफ़ोर्ड मॉरिस सीरीज़ थ्री के मॉडल पर बनी इस कार को एंबैसडर कहते थे। हालांकि डिलीवरी के लिए तीन साल इंतज़ार करना था, लेकिन अरविंद ने उसे लेकर अभी से योजनाएं बनानी शुरू कर दी थीं।

लेकिन ज़्यादातर मेहमानों को एंबैसडर कार की परवाह नहीं थी। ज़्यादातर की दिलचस्पी इस शादी में आए एक व्यक्ति में थी। और ये व्यक्ति राजाजी नहीं थे। इसका नाम हरिदास मूंदड़ा था।

बृजमोहनलाल ने इशारे से अरविंद को ये आदमी दिखाया। मूंदड़ा ने अपना कैरियर लाइट बल्ब के सेल्समैन के रूप में शुरू किया था और बड़े-बड़े सौदों, शेयरों के क्रय-विक्रय और लचीली नैतिकता के ज़रिए आसमान की ऊंचाइयों को छूने लगा था।

उस पर बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज ने भी जाली शेयर बेचने का अभियोग लगाया था। लेकिन उससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। आपके पास पैसा हो तो किसी को फ़र्क़ नहीं पड़ता था कि आपने पैसा कैसे कमाया। ख़बर थी कि एक सप्ताह पहले मूंदड़ा ने बड़ी आसानी से सारी कमेटियों को दरकिनार करते हुए सरकारी जीवन बीमा निगम के ज़रिए अपनी छह बीमारू कंपनियों में दसियों लाख का निवेश करवाया था। अरविंद ने सुरक्षित दूरी से उसे देखा। एक दिन मैं भी मूंदड़ा जैसा क्यों नहीं बन सकता?

एक सिंहासन जैसी व्हीलचेयर पर दूल्हे के दादा सर ज्ञानचंद सेक्सरिया बैठे हुए थे और मूंदड़ा से गपशप कर रहे थे। जब मूंदड़ा अगले प्रशंसक से मिलने को बढ़ गया, तो बृजमोहनलाल ने अपनी पत्नी और बेटे को इशारा किया और वो सर ज्ञानचंद से मिलने को आगे बढ़ गए। बृजमोहनलाल ने वृद्ध के पैर छुए और अरविंद को भी ऐसा करने को कहा।

वृद्ध ने अरविंद को देखा। "तुम्हारी शादी हो गई?" उन्होंने बृजमोहनलाल को नज़रअंदाज़ करते हुए लड़के से रूखेपन से पूछा। "ये अभी सोलह साल का है," बृजमोहनलाल ने जल्दी से जवाब दिया। "पहले ज़रा बिज़नेस में सैटल हो जाए... आपकी कृपा से।"

"अहहां!" सर ज्ञानचंद ने ज़ोर से अपना गला खखारा। उनकी त्योरियां चढ़ी हुई ही रहती थीं, ख़ासकर इस तरह के समारोहों में। सर ज्ञानचंद जैसे लोग सबसे ज़्यादा खुश बिज़नेस करते समय होते थे। ऐसे समारोह उन्हें बस खिझाते ही थे।

"ये जो नई धारणा है कि लड़कों की शादी अठारह के बाद होनी चाहिए, बकवास है," सर ज्ञानचंद ने विचार व्यक्त किया। "बेहतर ये है कि उनकी शादी जल्दी हो, समय से बच्चे हों और फिर वो पैसा कमाने में लगें।" बृजमोहनलाल ने बनावटी सहमति में सिर हिलाया। कौन सी दुनिया में जी रहे हो, बुढ़ऊ? संसद द्वारा पारित हिंदू मैरिज एक्ट ने अठारह साल से कम के लड़कों की शादी को अवैध घोषित कर दिया है।

सर ज्ञानचंद ने अरविंद की ओर मुड़ते हुए कहा, "अगली बारी तुम्हारी होगी!" फिर उन्होंने हाथ जोड़कर लाइन में अगले मेहमान का अभिवादन किया। ये लगभग स्पष्ट संकेत था कि अब बागड़िया परिवार आगे बढ़ जाए।

अचानक अरविंद को एक परिचित चेहरा दिखाई दिया। ये वो व्यक्ति थे जिनसे वो श्रीनगर में मिला था-अटल बिहारी वाजपेयी। अरविंद उनसे हाथ मिलाने को आगे बढ़ा। वाजपेयी को वो लड़का याद था जिसने अपने विचार कविता में व्यक्त किए थे।

"कैसे हो?" उन्होंने अरविंद के बालों को स्नेहपूर्वक बिखराते हुए पूछा।

"परिवार वाले बस मेरी शादी कर देने की ही बात करते रहते हैं," अरविंद बोला। "मुझे बड़ी चिढ़ होती है।"

"उन्हें बताना तुम्हारी बात मुझसे हुई थी," वाजपेयी ने कहा। "मैं तैंतीस साल का हूं और अभी तक अविवाहित हूं।"

"आपका शादी करने का इरादा है?" अरविंद ने पूछा।

“मेरा बस चले तो नहीं,” वाजपेयी ने कहा।

उस साल, तैंतीस वर्षीय वाजपेयी को बलरामपुर से लोकसभा के लिए चुना गया था। उनकी भाषण कला ने नेहरू को इतना प्रभावित किया था कि उन्होंने भविष्यवाणी की कि ये लड़का एक दिन भारत का प्रधानमंत्री बनेगा।

कुछ महीने बाद, एक ऐसा ही भव्य समारोह अलीपुर रोड पर एक शानदार आर्ट डेको शैली वाले घर में हुआ। इसे एक मारवाड़ी परिवार ने ले लिया था जिसने उस समय की एक प्रमुख ब्रिटिश मैनेजिंग एजेंसी का अधिग्रहण प्राप्त कर लिया था। एक बेटा-उत्तराधिकारी-पैदा हुआ था और इस कृपा के लिए देवताओं को धन्यवाद कहने के लिए एक भव्य नहान समारोह का आयोजन किया गया था। विभिन्न शहरों से कुक बुलाए गए थे ताकि भोज में सबसे आला क़िस्म के खाने परोसे जा सकें। डिनर सर्विस में सोने की थालियों का प्रयोग किया जाना था।

ये बड़ी मूर्खता की बात थी। लिंग से सुसज्जित बच्चे का जन्म उस बच्चे के जन्म से ज़्यादा महत्वपूर्ण क्यों था जो इस संलग्नक के बिना पैदा हुआ हो? हिंदू समाज की असमानताओं से तंग आकर, अंबेडकर ने एक साल पहले बौद्ध धर्म को अपना लिया था।

एक असुविधाजनक बंदगले का सूट पहने अरविंद समय काटने के लिए अंदाज़ा लगा रहा था कि उस दिन लेडीज़ ने कितनी कीमत के हीरे पहने होंगे। एक दोस्त ने, जिसके पिता ज्वैलर थे, उसे हीरों के चार सी समझाए थे-कट, क्लैरिटी, कलर और कैरट। कोई ज्वैलर कभी पांचवें और सबसे अहम सी-कॉस्ट-की बात नहीं करता है, अरविंद ने सोचा। अरविंद अपने नए प्राप्त हुए ज्ञान का इस्तेमाल कर ही रहा था कि उसे एक और “अहहां” सुनाई दी।

उसने पलटकर देखा कि वो सर ज्ञानचंद की शानदार व्हीलचेयर के रास्ते में आ गया था। उसने जल्दी से एक ओर हटते हुए वृद्ध के पैर छुए। उन्होंने उसे ध्यान से देखा। “तुम बागड़िया के लड़के हो ना?” उन्होंने तुनकमिज़ाजी से पूछा। ये सवाल से ज़्यादा इल्ज़ाम सा लगता था।

“जी, सर,” अरविंद ने जवाब दिया।

“तुम्हारे बच्चे हैं?” वृद्ध ने पूछा।

“नहीं, सर,” उसने सम्मानपूर्वक जवाब दिया। “अभी मेरी शादी नहीं हुई है।”

“चिंता मत करो। अगली बारी तुम्हारी होगी!” सर ज्ञानचंद ने अपनी बात दोहराई और अपनी छड़ी ज़ोर से ज़मीन पर मारकर अपने सेवकों को व्हीलचेयर आगे बढ़ाने का संकेत दिया।

बुढ़ऊ का दिमाग चल गया है, चिढ़े हुए अरविंद ने मन में सोचा। मुझे गुस्सा दिला देते हैं ये।

उसी वर्ष के अंत में चमड़िया परिवार में एक त्रासदी हो गई। इस परिवार ने साहूकारी के ज़रिए दौलत कमाई थी। शोकाकुल अंत्येष्टि के लिए श्मशान घाट में

इकट्ठा हुए थे। अरविंद भी अपने पिता के साथ आया था। लोग औपचारिक रूप से दुख प्रकट कर रहे थे और ये भी सोचते जा रहे थे कि यहां से जाने का उचित समय कौन सा रहेगा।

सर ज्ञानचंद की व्हीलचेयर अरविंद के पास से गुज़री। चिता से धुआं उठता देख रहे वृद्ध ने ज़ोर से गला खखारा। उनकी आंखों में धुएं की वजह से पानी आ रहा था। अरविंद ने झुककर उनके पांव छुए और अपना रूमाल उन्हें दिया।

जब अस्सी वर्ष से ऊपर के सर ज्ञानचंद ने रूमाल ले लिया, तो अरविंद ने धीरे से उनके कान में कहा, "चिंता मत कीजिए, सर, अगली बारी आपकी होगी।"



दिन के अंत में, क़ुली चारनाक बुंदेर के विभिन्न ढाबों और ठेकों पर जमा होते थे। एक दिन अरबाज़ इन्हीं में से एक पर एक आदमी से मिला। उसका नाम राजू था। वो अरबाज़ से बहुत बड़ा था; उसकी क़लमों में सफ़ेदी आ चुकी थी।

"तुम अय्यूब के बेटे हो?" राजू ने अपने बचेखुचे ठर्रे को चढ़ाते हुए पूछा।

"हां," अरबाज़ ने जवाब दिया। "अब्बा मर गए। मैंने उनकी जगह ले ली।"

"मुझे तुम्हारा बाप पसंद था। वो मेरा अच्छा दोस्त था। मैं तुम्हारी ख़त्ना में भी आया था," राजू ने सरल भाव से कहा। "वो एकदम ईमानदार आदमी था। इसीलिए तुम इस कमरतोड़ काम में फंसे हुए हो। मैंने सुना तुम्हारा यूसुफ़ से झगड़ा हो गया था।"

"मैं एक दिन उसका दिमाग़ ठीक कर दूंगा।"

"बदला मज़ेदार चीज़ है लेकिन कभी-कभी बदहज़मी कर देता है। ध्यान से चलना," राजू ने सलाह दी।

"इससे आपका क्या मतलब है कि मेरे अब्बा ईमादार थे?" अरबाज़ ने पूछा।

"मैंने उसे मुनाफ़ेबख़्श मौके दिए थे लेकिन वो कभी नहीं माना," राजू ने जवाब दिया।

"जैसे?"

"कि वो क्रीसेंट हाउस गैंग का भाग बन जाए।"

"ये क्या है?" अरबाज़ ने पूछा।

"तुम अपना मुंह बंद रख सकोगे?" राजू ने अरबाज़ के कान में पूछा। अरबाज़ ने सिर हिलाया।

"मुझसे आधी रात को इस ठीये के बाहर मिलना," राजू ने आंख मारते हुए कहा। "अपने साथ एक बोरा लेते आना।"

दो घंटे बाद, अरबाज़ ठेके के बाहर राजू का इंतज़ार कर रहा था। बारह बजे के कुछ

बाद, राजू पांच और आदमियों के साथ आया। उन सबके पास भारी-भारी बोरे थे। अरबाज़ का बोरा ख़ाली था जबकि दूसरों के बोरे भरे हुए थे। इनके बोरों में क्या बला है? अरबाज़ सोच में पड़ गया। एक आदमी के कंधे पर लंगर बांधने की रस्सी पड़ी हुई थी।

वो मेन गेट से बचते हुए, एलेक्ज़ेंड्रा डॉक की ओर चल दिए। गेट से कुछ सौ गज़ की दूरी पर, वो उस रस्सी की मदद से दीवार पर चढ़े। फिर उन्होंने रस्सी के ज़रिए अपने बोरे खींच लिए।

"मेरे साथ आओ," राजू फुसुफुसाया, और वो दिन में कश्तियों से उतारे गए कुछ क्रेटों की ओर बढ़ गए। "असलम, तुमने वो गाड़ियां उन इलाक़ों में खड़ी करने का इंतज़ाम कर लिया था न, जहां सर्चलाइटें नहीं पहुंचती हैं?"

"हां, बॉस," एक तगड़े से आदमी ने जवाब दिया जिसके शरीर का एक-एक इंच मांसपेशियों से लदा हुआ था। "आपने वहां एक्स बनाया हुआ था जहां आप वो गाड़ियां चाहते थे। वो ठीक उसी जगह पर हैं।"

उस जगह पहुंचने पर, राजू ने चार्ज संभाल लिया। "बड़े क्रेटों को छोड़ देना। उनमें भारी माल है। छोटे वालों में वो सामान है जिसमें हमें दिलचस्पी है," राजू ने कहा। दूसरे देखते रहे और उसने लोहे की छड़ से एक लकड़ी के क्रेट को खोल डाला।

अरबाज़ ने सर्चलाइट की एक किरण को उनकी ओर बढ़ते देखा। वो उसे क़रीब आते देखता रहा लेकिन फिर वो उनकी जगह से आगे निकल गई। उसने राहत की सांस ली।

फिर उसने देखा कि राजू के खोले हुए क्रेट में स्टेट एक्सप्रेस 555 सिगरेट के पीले टिन थे। द हाउस ऑफ स्टेट एक्सप्रेस, 210 पिकाडिली, लंदन, उनकी चमकदार सतहों पर बड़ी शान से लिखा हुआ था। महारानी की आज्ञा से।

सारे आदमियों ने कई टिन लिए और उन्हें अरबाज़ के लाए हुए बोरे में डाल दिया। कई टिन हटाने के बाद, उन्होंने अपने साथ लाए एक बोरे में से सूखी घास और रेत निकालकर क्रेट में ख़ाली हुई जगह में भर दी।

"अगर क्रेट बहुत हल्का हो या अंदर रखी चीज़ इधर-उधर हिले, तो सुपरवाइज़रों को शक हो जाता है," राजू ने समझाया और एक और आदमी पॉल को क्रेट को सील करने के लिए हथौड़ी और कीलों का इस्तेमाल करने का निर्देश दिया।

राजू ने एक और क्रेट खोला। इसमें शिलट्ज़ बीयर की कैन थीं-सोलह आउंस की फ़्लैट-टॉप। "वाह!" राजू ने एक और बोरे में कैनें भरते हुए कहा जिससे अभी रेत और घास निकाली गई थी। जब बोरा पौन भर गया, तो वो रुक गया। "ज़्यादा लालची नहीं होना चाहिए। हम सबको माल लेकर वो साली दीवार भी फांदनी है।" पिछली बार वाली प्रक्रिया फिर से दोहराई गई—एक बोरे से रेत और सूखी घास निकालकर क्रेट में ख़ाली जगहों में भरी गई और बोरे में तस्करी का माल भर दिया गया।

अगला आधा घंटा घड़ियां, लाइटर, ऑडियो प्लेयर्स और परफ़्यूम्स चुराने में बीता। सातों आदमी बोरे उठाकर दीवार के पार ले गए। मांसल असलम पहले गया, फिर पॉल और बाक़ी सब। राजू और अरबाज़ दीवार के अंदर की ओर रहे, और हर बोरे को रस्सी

से बांधते रहे जबकि दूसरी ओर से आदमी उन्हें खींचते रहे।

अचानक एक सर्चलाइट ने क्षण भर के लिए दोनों को चमका दिया। "मुझसे दूर भागो," राजू दाईं ओर बढ़ते हुए फुफकारा, जबकि अरबाज़ बाईं ओर चल दिया। "कुछ मिनट तक झुके रहकर इंतज़ार करो," उसने राजू को कहते सुना। "वो लाइट का कोण हर आधे घंटे पर बदल देते हैं ताकि उसका रेडियस बदल जाए।" वो अगले आधे घंटे तक झुके रहे। राजू और अरबाज़ जब तक दीवार फांदकर दूसरे आदमियों के पास पहुंचे, रात के दो बज चुके थे।

"अब कहां?" अरबाज़ ने पूछा।

"अगला पड़ाव वो बिल्डिंग समूह है," राजू ने कुछ चरमराए हुए से ढांचों की ओर इशारा करके कहा। एक बिल्डिंग पर एक बोर्ड लगा हुआ था जिस पर लिखा था 'क्रीसेंट हाउस'। दरअसल उस पर 'क्र सेंट हा स' लिखा था क्योंकि कुछ अक्षर गिर गए थे।

प्रांगण में एक ट्रक इंतज़ार कर रहा था। सबने अपने बोरे ट्रक में डाल दिए जबकि राजू एक बीमार से आदमी से पैसे तय करने लगा। एक पल ऐसा आया जब राजू ने क़ीमत ठीक न होने की वजह से सबको अपना माल उतार लेने को कहा। लेकिन फिर श्रीमान बीमार मान गए।

"इसे कहां जाना है?" ट्रक चलने पर अरबाज़ ने पूछा।

"चारनाक ब्रिज," राजू ने पैसे गिनते हुए जवाब दिया। "वहां से इसे मुसाफ़िरख़ाने जैसी उन जगहों पर बांट दिया जाएगा जो इन चीज़ों को बेचने में माहिर हैं।"

"हम सात हैं। लीडर की हैसियत से तीस फ़ीसदी मेरा। इंतज़ाम करने के लिए पंद्रह-पंद्रह फ़ीसदी असलम और पॉल का। दस फ़ीसदी बाक़ी चार का।"

राजू ने कुछ पैसा अरबाज़ को दिया और कहा, "गिन लो।"

"कोई बात नहीं, राजू भाई," अरबाज़ ने जवाब दिया। "आप जो भी दोगे, चलेगा मेरे को।"

"गिनो इसे," राजू ने इस बार थोड़ी सख़्ती से कहा। "बिज़नेस में कोई यारी नहीं। धंधा धंधा है।"

अरबाज़ ने पैसा गिना। सौ रुपए। एक रात के लिए दो महीने की तन्ख़ाह से कुछ ऊपर। उसे अचानक अपराधबोध सताने लगा।

राजू फौरन समझ गया। "कोई बात नहीं," वो बोला। "अपराधबोध जल्दी चला जाता है। मेरी दुनिया में बस एक ही उसूल याद रखने का है।"

"वो क्या?" अरबाज़ ने पैसा अपनी जेब में रखते हुए कहा।

"पकड़े नहीं जाते हो, तो तुम पैसा रखने के हक़दार हो!"



बागड़िया एंड कंपनी कलकत्ता के व्यावसायिक केंद्र बड़ा बाज़ार में स्थित थी। बड़ा बाज़ार का कोई आरंभ, मध्य या अंत नहीं था। ये एक ऐसे जीव जैसा था जो अपनी कोशिकाओं के उपखंडों के माध्यम से बढ़ता ही जाता था। बड़ा बाज़ार शोर-शराबे भरे पच्चीस कटरों या बाज़ारों में बंटा हुआ था, और हर बाज़ार किसी ख़ास क़िस्म के माल के व्यापारियों का ठिकाना था।

बागड़िया एंड कंपनी की गद्दी-या ऑफ़िस-इस घालमेल के केंद्र में, मलिक स्ट्रीट में थी। बिल्डिंग कालीगोदाम के नाम से जानी जाती थी और बागड़िया ऑफ़िस के पास तीसरी मंज़िल पर दो कमरे थे। पास में ही बांगड़, जालान और बाजोड़िया के ऑफ़िस थे, वो धनी मारवाड़ी परिवार जो सबसे बड़ी जूट मिलों के मालिक थे।

आज इतवार था लेकिन बागड़िया ऑफ़िस सातों दिन खुलता था। बृजमोहनलाल अक्सर कहता था कि वीकएंड सिर्फ़ गोरी त्वचा वालों के लिए होते हैं; भूरी त्वचा वालों को बिज़नेस में बने रहने के लिए सातों दिन काम करना चाहिए।

अरविंद ने पार्क स्ट्रीट के सेंट ज़ेवियर्स कॉलेज में दाख़िला ले लिया था। सेंट ज़ेवियर्स व्यापारी परिवारों के बच्चों की लोकप्रिय पसंद थी जबकि पेशेवर और सरकारी कर्मचारी परिवारों के बच्चे आमतौर पर कॉलेज स्ट्रीट पर प्रेज़ीडेंसी कॉलेज को चुनते थे। रोज़ाना लेक्चर्स ख़त्म होने के बाद, अरविंद को अपने पिता के ऑफ़िस में रिपोर्ट करना होता था। बृजमोहनलाल ने फ़ैसला किया था कि उसके बेटे को सत्रह साल की उम्र में अब बिज़नेस के प्रशिक्षण की ज़रूरत है। उसका ख़्याल था कि अभी मुश्किल समय है और बेहतर होगा कि अरविंद जल्द ही बिज़नेस के तौर-तरीक़े सीख ले।

उसी वर्ष, 1959 में, दलाई लामा ने मैकमैहॉन लाइन पार करके भारतीय इलाक़े में प्रवेश कर लिया था। ऑल इंडिया रेडियो की आकाशवाणी सर्विस का कहना था कि परमपावन ने एक सामान्य फ़ौजी के भेष में भारतीय सीमा पार की थी। चीनी नाराज़ थे कि भारत सरकार ने दलाई लामा को शरण दे दी है। चीन के साथ लड़ाई की पूरी संभावना थी लेकिन नेहरू ने अपने 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' के नारों से इस संभावना को दरकिनार कर दिया था।

बेशक आने वाला समय मुश्किल था, लेकिन अक्सर मुश्किल समय का मतलब अवसर भी होता था। बजाज ऑटो नाम की एक कंपनी को हाल ही में भारत में स्कूटर बनाने के लिए लाइसेंस दिया गया था। बृजमोहनलाल ने मन बना लिया था कि उसके बेटे की ट्रेनिंग जल्दी हो जानी चाहिए ताकि वो बिज़नेस अवसरों के सामने आते ही उनका फ़ायदा उठा सके।

बागड़िया ऑफ़िस के अंदर, पारंपरिक धोती, काला कोट और अकाउंटेंट वाली टोपी पहने एक मुनीम ताराचंद अग्रवाल अरविंद को अपने लाल कपड़े के कवर वाले बहीखाते में अंक लिखते हुए ध्यान से देख रहे थे। दोनों सफ़ेद सूती चादरों से ढके गद्दों पर बैठे थे। मुनीम के पास उनकी सबसे क़ीमती चीज़ उनका गल्ला रखा था, और उनके सामने टीक की लकड़ी की एक छोटी सी डेस्क थी जिसमें काग़ज़ात और दवात के लिए एक ताले वाला ख़ाना था। अरविंद ने एकाग्रता में अपनी जीभ को मुंह के

किनारे से निकालकर ऊपर को मोड़ा। उसे अपना काम ठीक से करना था।

“दरअसल, बहीखाता सिस्टम एक सटीक डबल-एंट्री सिस्टम है,” ताराचंद अग्रवाल ने समझाया। “इसमें वो सारे लेनदेन होते हैं जिनमें वास्तविक, अवास्तविक या व्यक्तिगत लेखा होते हैं।”

“मगर लोग तो कहते हैं कि डबल-एंट्री सिस्टम की शुरुआत यूरोपियन्स ने की थी,” अरविंद ने तर्क किया।

“बकवास,” ताराचंदजी ने उपहास किया। “हमारे सिस्टम में, सारे लेनदेन पहले रोकड़ाबही में लिखे जाते हैं। फिर उन्हें खाताबही में डाला जाता है। नक़लबही डायरी का काम करता है। और आख़िर में कच्चा आंकड़ा तैयार करना होता है। ये डबल-एंट्री कैसे नहीं हुआ?”

“मगर मुनीमजी, इसमें डेबिट और क्रेडिट कहां है?” अरविंद ने पूछा।

“हमारे सिस्टम में इसे सिर्फ़ नामे और जमा कहा जाता है, लेकिन सिद्धांत वही डेबिट और क्रेडिट वाला है। ये सिस्टम हमें पर्याप्त सटीकता देता है, और साथ ही ज़रूरत पड़ने पर बदलाव करने की गुंजाइश भी।”

“पर...” अरविंद ने अपने सामान्य बहस वाले लहजे में बात शुरू की। लेकिन ताराचंद के चेहरे के भाव ने उसे ख़ामोश कर दिया।

“अकाउंटिंग का विशेषज्ञ होने के लिए, अरविंद बाबू, बस दो बुनियादी नियम याद रखना काफ़ी हैं,” मुनीम ने कहा।

“वो क्या, मुनीमजी?” अरविंद ने पूछा।

“पहला नियम: आपके अकाउंट हमेशा आपके बिज़नेस के लेनदेन की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करें।”

“और दूसरा नियम?” अरविंद ने पूछा।

“दूसरा ये कि कभी-कभी पहले नियम को भूल जाएं।”



“शांत, अरबाज़,” राजू ने सांत्वना देते हुए कहा। “अगर तुम गोदी पर सही काम कर सकते हो, तो कोई वजह नहीं कि बिस्तर में न कर सको।”

सफ़ेद गली की ओर बढ़ते हुए अरबाज़ ने राजू की ओर देखा। सफ़ेद गली ज़री कारीगरों, कोठों, दंत चिकित्सकों, त्वचा क्लिनिकों और रॉयल व एल्फ्रेड जैसे थिएटरों की गली थी। ब्रिटिश सैनिकों के मनोरंजन के लिए यहां यूरोप और जापान से वेश्याएं लाई जाती थीं। इसीलिए ये सफ़ेद गली कहलाती थी।

बेशक इन दिनों कमाठीपुरा के इस इलाक़े में यूरोपीय नहीं होते थे। उनकी जगह हिंदुस्तानियों ने ले ली थी। ये भारत की आज़ादी के उन नतीजों में से एक था जिन पर बात कम ही होती थी।

वो एक और जीर्ण-शीर्ण बिल्डिंग के पास पहुंचे। “हमें यहीं उतरना है,” राजू बोला। “तुम मेरे शब्दों के कुछ भी मायने समझ सकते हो!”

“हम कहां हैं?” अरबाज़ ने पूछा।

“बच्चूसेठ की वाडी,” राजू ने बताया। “ये अपनी कोठेवालियों, तवायफ़ों और मुजरों के लिए मशहूर है। मेरा टांका तो अमीना से फ़िट है। वो बस अपनी आंखों से ही किसी को भी पटा सकती है। लेकिन हम तुम्हारा वक्त इन चीज़ों में बर्बाद नहीं करेंगे।”

देर रात का समय था और कोठा काफ़ी व्यस्त था। वो सुनसान बिल्डिंग के टूटे-फूटे से ज़ीने पर चढ़ने लगे। हर क़दम पर ज़ीना चरमराता सा लगता था। “इन बाहरी चीज़ों से धोखा मत खाना। अंदर का माल फ़र्स्ट क्लास है,” राजू ने विश्वास दिलाया।

वो तेज़ी से एक कमरे में पहुंचे जो एक बुनी हुई कालीन पर रखे एक बड़े से मैरून मख़मली सोफ़े के अलावा बिल्कुल ख़ाली था। कोठे की नायिका बिल्क़ीस बेगम सोफ़े पर अकेली बैठी थी, और उसे भिन्न उम्रों की कई लड़कियों ने घेरा हुआ था। बिल्क़ीस अपने मुंह में पान रखने ही वाली थी लेकिन राजू को आते देखकर रुक गई।

“आह; मेरा मनपसंद ग्राहक,” वो खुशी से चिल्लाई। “और देखती हूं कि तुम एक दोस्त को भी लाए हो। इनका कोई नाम है?”

राजू और अरबाज़ सोफ़े पर उसके पास बैठ गए। “इसका नाम अरबाज़ है और इसे ज़रा एहतियात से इस्तेमाल करने का है,” राजू ने बिल्क़ीस बेगम को धीरे से समझाया। ये थोड़ी अजीब बात थी कि एक लंबे-तगड़े आदमी को एहतियात से इस्तेमाल किए जाने की ज़रूरत थी।

बिल्क़ीस बेगम ने बात को समझते हुए सिर हिलाया। “आह; मुझे कच्चे फल पसंद हैं। मेरे पास एकदम सही लड़की है। फ़ाइज़ा कहां है?” नायिका ने लड़कियों से सवाल करने के साथ-साथ ताली भी बजाई थी।

वहां खड़ी लड़कियों में से पॉलिश किए हुए चावल जैसी रंगत वाली एक प्यारी सी लड़की आगे बढ़ी। उसके गहरे भूरे बाल उसके कूल्हों तक लटक रहे थे, चमकीली आंखें थीं, आकर्षक नाक थी और लिपस्टिक से सुर्ख़ भरे-भरे होंठ थे। उसके लगभग बालूघड़ी के आकार वाले शरीर को उस पर लिपटी गुलाबी साड़ी ने और भी सुंदर बना दिया था। दूसरों की तरह, वो लड़की नहीं थी। वो औरत थी।

वो बिना कुछ बोले अरबाज़ का हाथ पकड़कर उसे कमरे से निकालकर एक और ज़ीने से ऊपर ले गई। बेडरूम के अंदर, उसने अरबाज़ को बिस्तर पर बिठाया और कामुक ढंग से अपने कपड़े उतारने लगी। वो अपनी साड़ी, ब्लाउज़, पेटीकोट और अंदर के कपड़े उतारती रही, और घबराया सा अरबाज़ उसे देखता रहा।

अपनी नग्नता में दमकती फ़ाइज़ा मुस्कुराती हुई उसके पैरों के पास बैठ गई। अपने हाथों को उसने अरबाज़ की जांघों पर रखा, अरबाज़ को अपने शरीर में बिजली सी दौड़ती महसूस हुई। फिर वो उसकी बेल्ट खोलने लगी। वो कुलबुलाया, तो उसने कहा, “घबराओ मत। मैं सब संभाल लूंगी। तुम तो बस जन्नत की सैर का मज़ा लो।”

अरबाज़ स्तब्ध था।

उसकी मां हमेशा कहती थी कि मर्द के दिल का रास्ता उसके पेट से होकर जाता है। उस दिन उसे अहसास हुआ कि ये रास्ता बहुत नीचे से जाता है।



“नंबर सात ल्योन्स रेंज ले चलो,” अरविंद ने ताना रिक्शा में बैठते हुए कहा।

अरविंद के साथ उसके पिता के ऑफ़िस का एक क्लर्क भी था। क्लर्क हैरत में था कि उन्हें ये काम क्यों सौंपा गया है।

“हम कहां जा रहे हैं?” क्लर्क ने पूछा।

“एक नीम का पेड़ है। मैं हर महीने जाकर उसे पानी देता हूं और उसे बढ़ते देखता हूं,” अरविंद ने जवाब दिया। क्लर्क अपनी क़िस्मत को कोसने लगा। वो इस वक्त बड़ा बाज़ार में अपनी मीठी, ख़ुशबूदार चाय की चुस्कियां ले रहा होता।

अरविंद ने संकरी गलियों में रिक्शा खींचने में हांफते-कांपते पसीने में भीगे नंगे पैर आदमी के परिश्रम को नज़रअंदाज़ कर दिया। उल्लेखनीय बात थी कि ये मामूली रिक्शा उन कोनों तक भी पहुंच जाता था जहां कलकत्ता ट्राम्सवेज़ कंपनी की गाड़ियां नहीं पहुंच पाती थीं। लेकिन अरविंद अपने आसपास की दुनिया से बेख़बर था। वो स्टेट्समैन का एक पेज पढ़ने में व्यस्त था।

“आप क्या पढ़ रहे हैं?” क्लर्क ने उत्सुकतावश पूछा।

“बस इधर-उधर की खबरें बॉम्बे के बारे में; इस सेंचुरी की घटनाओं के बारे में; कोहिनूर के आकर्षण के बारे में; डाइंग के बारे में…”

क्लर्क की बोलती बंद हो गई। उसकी दिलचस्पी ज़िंदगी और मौत के दार्शनिक सवालों से ज़्यादा के.सी. दास के यहां रोशोगुल्लों की बढ़ती क़ीमतों में थी।

जब वो अपनी मंज़िल पर पहुंचे, तो उन्हें धोती पहने, मूंछों को वैक्स किए और तेल चुपड़े बालों वाला एक व्यक्ति मिला जो नुक्कड़ पर उनका इंतज़ार कर रहा था। क्लर्क उतरने लगा लेकिन अरविंद ने उसे रोक दिया।

“आपको देखकर अच्छा लगा, अरविंद बाबू,” धोतीवाले ने रिक्शा के पास आते हुए कहा।

“उम्मीद है मेरा नीम बड़ा हो रहा है, दीपांकर दा,” अरविंद बैठे-बैठे बोला। ये उन दोनों के बीच एक पुराना मज़ाक़ था।

बहुत पहले, 1830 के दशक में, दलालों का एक गुट क्लाइव स्ट्रीट पर एक नीम के पेड़ के नीचे मिला करता था। वो ईस्ट इंडिया कंपनी के ऋणों और बैंक ऑफ़ बंगाल के शेयरों का कारोबार करते थे। दुर्भाग्य से, 1905 में चार्टर्ड बैंक ने उस जगह एक ऑफ़िस बिल्डिंग बनानी शुरू कर दी जहां कभी नीम का पेड़ हुआ करता था। मजबूरन दलालों को 2 चाइना बाज़ार स्ट्रीट जाना पड़ गया था। और आख़िरकार 7 ल्योन्स रेंज पर

उन्होंने अपनी ही बिल्डिंग बना ली थी। अरविंद अब भी अपने स्टॉक मार्केट निवेशों को नीम का पेड़ कहना पसंद करता था।

"ओह, बिल्कुल," तेलू ने कहा। "बॉम्बे डाइंग, सेंचुरी टैक्सटाइल्स और कोहिनूर मिल्स में आपके सारे निवेश अच्छे चल रहे हैं।"

बस इधर-उधर की ख़बरें बॉम्बे के बारे में; इस सेंचुरी की घटनाओं के बारे में; कोहिनूर के आकर्षण के बारे में; डाइंग के बारे में...

"बढ़िया। मैं चाहता हूं आप वो सब बेच दें," अरविंद ने कहा।

"सब?" दीपांकर दा ने पूछा।

"हां, सब।"

"और बिक्री से मिलने वाला रोकड़ा? उसे कहां डालूं?"

"टाटा स्टील और बजाज ऑटो के नए शेयर्स में निवेश कर देना। टैक्सटाइल पुरानी चीज़ हो गई है। स्टील और ऑटोमोबील नए मोर्चे हैं। और हां, मेरी साप्ताहिक आमदनी का ये कुछ पैसा और है," अरविंद ने कैश देते हुए कहा। "रसीद मेरे घर पर डाक से भेज देना।"

"आप वाक़ई बॉम्बे डाइंग, सेंचुरी टैक्सटाइल्स और कोहिनूर मिल्स से निकलना चाहते हैं? क़ीमतें अब भी ऊपर जा रही हैं, अरविंद बाबू। दलाल बड़ी उत्सुकता से सारे शेयर ख़रीदे डाल रहे हैं।"

"पिछले कुछ सालों से जबसे मैं मार्केट में खेल रहा हूं, मैंने एक ही बात सीखी है, दीपांकर दा।"

"वो क्या?" दलाल ने पूछा, जो अक्सर अपनी निवेश रणनीतियां भी इसी लड़के के विचारों के अनुसार बनाता था।

"मैंने सीखा है कि जब दूसरे उत्सुक हों तो सावधान रहना चाहिए और जब दूसरे सावधान हों तो उत्सुक हो जाना चाहिए।"



अरबाज़ अपनी क़िस्मत चमकने के बाद पहली बार नेपोली में बैठा था। ये एक लोकप्रिय ओपन कैफे था जहां एक हॉट डॉग और एक एस्प्रेसो एक रुपए में मिलती थी। अरबाज़ कोक पीते हुए तेज़ संगीत को समझने की कोशिश कर रहा था। मालिक के पास ज्यूकबॉक्स में वाइनिल्स का बहुत बड़ा संग्रह था। गाना चुनने के कुल चार आने लगते थे।

शोर से तंग आकर, अरबाज़ टहलता हुआ एक साड़ी स्टोर पर चला गया। "नीले में कुछ दिखाना," अरबाज़ ने कहा, दुकानदार ने उसके सामने एक और साड़ी खोलकर फैला दी थी। अरबाज़ ने उसे बग़ौर सौदेबाज़ी के ख़रीद लिया।

फिर वो पटेल की तरफ़ चल दिया। सेठ श्यामजीभाई पटेल लोकल पंसारी था

जिससे उसके परिवार का लगातार हिसाब चलता था और परिवार हमेशा उसका क़र्ज़दार रहता था।

अरबाज़ दुकान में आया तो सेठजी की त्योरियां चढ़ गईं और जब उसने सारा हिसाब चुकता किया तो सेठजी की मुस्कुराहट थमने का नाम नहीं ले रही थी।

लेकिन पंसारी सारा कैश गिनने के बाद गंभीर हो गया था।

"चेहरे पर उदासी क्यों है, सेठजी?" अरबाज़ ने पूछा।

"बंबई राज्य को दो नए राज्यों-गुजरात और महाराष्ट्र-में बांट दिया गया है," सेठजी ने कहा।

"तो इससे आपको क्या फ़र्क़ पड़ता है?" अरबाज़ ने पूछा।

"वो कह रहे हैं कि बंबई महाराष्ट्र की राजधानी होगी। मैं गुजराती हूं लेकिन मेरा परिवार पीढ़ियों से इस शहर में रह रहा है। तो मैं कहां का हुआ?"

अरबाज़ ने इस जानकारी को आत्मसात किया। पटेल की बात में दम था लेकिन उसे अभी दूसरी अहम बातों पर ध्यान देना था।

"शांत हो जाइए, सेठजी," अरबाज़ बोला। "दुनिया छोटी होती जा रही है। सांता क्रूज़ के एक कुली का कहना है कि एयर इंडिया जल्द ही न्यूयॉर्क की फ़्लाइटें शुरू करने वाली है। ज़रा कल्पना कीजिए; जल्दी ही ये बेमानी हो जाएगा कि आदमी रहता कहां है। बीस साल बाद किसी को इससे फ़र्क़ नहीं पड़ेगा कि आपके बच्चे गुजरातीभाषी हैं या मराठीभाषी।" अरबाज़ मन ही मन सोच रहा था कि क्या उसकी बात सच होगी। सेठजी ने भी उसे अनिश्चितता के भाव से देखा।

अरबाज़ तेज़ी से चलता हुआ घर पहुंचा और उसने अपनी मां को साड़ी और चालीस रुपए—एक पूरे महीने की तन्ख़ाह—दी। देना तो वो और ज़्यादा चाहता था, लेकिन मां को शक हो जाता।

"पकड़े नहीं जाते हो, तो तुम पैसा रखने के हक़दार हो," अपनी मां को गले लगाते हुए अरबाज़ ने ख़ुद से कहा, लेकिन साथ ही उसे थोड़ा अपराधबोध भी हो रहा था। बंदरगाह के चोर के रूप में अपनी दोहरी ज़िंदगी के बारे में अपराधबोध। फ़ाइज़ा के साथ अपनी रंगीन रातों के बारे में अपराधबोध। उस औरत ने उसे कुछ ही महीनों में इतना कुछ सिखा दिया था जो उसने सारी ज़िंदगी में नहीं सीखा था।

फिर उसके विचार पटेल की कही हुई बात की ओर भटक गए। किसे परवाह थी कि बंबई महाराष्ट्र का भाग है या गुजरात का? एक दिन बंबई पर उसका, अरबाज़ शेख का, क़ब्ज़ा होगा। फिर इस सबसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा।

लेकिन पहले उसे उस बदमाश यूसुफ़ को ठीक करना था।



अगले दो दिन अरबाज़ ने यूसुफ़ के घर पर निगाह रखी और देखा कि लोग किस समय

आते और जाते हैं।

“मुझे तुम्हारी मदद चाहिए,” कुछ दिन बाद अरबाज़ ने राजू से कहा।

“बोलो,” राजू ने मुंह में एक पान रखते हुए कहा।

“मुझे यूसुफ़ को ठीक करना है,” अरबाज़ ने कहा।

“तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो गया है? यूसुफ़ से कोई पंगा नहीं लेता। बेहतर होगा कि उसे हफ़्ता देते रहो और उससे बचे रहो। उसकी भतीजी अब्दुल दादा के भतीजे की बीवी है। अब्दुल दादा को तुम ज़रूर जानते होगे-या तुम्हारे दिमाग़ की जगह तुम्हारे लठ ने ले ली है?”

“मैं शर्त लगा सकता हूं कि अब्दुल दादा को बंदरगाह पर जबरन वसूली के काम का पता नहीं है,” अरबाज़ ने कहा। “वो ग़रीब मज़दूरों का पैसा नहीं छीन सकता। यूसुफ़ बस अब्दुल दादा के नाम का फ़ायदा उठाता है। मुझे यक़ीन है कि इस गंदे काम में वो अकेला है।”

“जो भी करो संभल के करना,” राजू ने सलाह दी।

“मैं तुम्हारी सलाह को संजीदगी से लूंगा, राजू भाई। जो भी हो, मैं बस इतना चाहता हूं कि तुम्हारा कोई आदमी एक शख़्स की जेब काट ले जो रोज़ाना शेख़ मेमन स्ट्रीट की जामा मस्जिद में नमाज़ पढ़ता है।”

“कौन?” राजू ने पूछा, जिसके मुंह के किनारे से पान की पीक की एक हल्की सी धार बाहर आ गई थी।

“उसका नाम करीम है। चारनाक रोड पर एक ढाबा चलाता है।”

“साला तुम ऐसा क्यों चाहते हो कि मेरा आदमी एक रसोइए की जेब काटे?” राजू ने अविश्वास से पूछा।

“क्योंकि मैं उसकी नज़रों में भला बनना चाहता हूं,” अरबाज़ ने जवाब दिया।

“क्या मतलब? तुम किसी का दोस्त बनने के लिए उसे लूटना चाहते हो? तुम साले पक्के हरामी हो,” राजू ने पान को और ज़ोर से चबाते हुए कहा।

“वो तो मैं हूं,” अरबाज़ ने मक्कारी भरी मुस्कुराहट के साथ जवाब दिया। “लेकिन एक चीज़ और है।”

“अब क्या?”

“तुम्हारे एक दोस्त का नाम तावड़े है। वो जय जगदीश ऑयल मिल्स में फ़ोरमैन है।”

“हां, तो?”

“मुझे उससे मिलवा दो।”

“ठीक है। अब मैं ज़रा अपनी ज़िंदगी जी लूं?” राजू ने कड़वेपन से पूछा।

“बस एक आख़री दर्ख़ास्त और, राजू भाई,” अरबाज़ ने दर्ख़ास्त करने के लिए हिम्मत जुटाते हुए कहा।

“वो क्या?”

“जो बंदा करीम की जेब काटेगा... मुझे उसे पीटने के लिए तुम्हारी इजाज़ात चाहिए।”



अरबाज़ उसे अपने शागिर्दों को ट्रेनिंग देते देख रहा था। छत में एक हुक से एक रस्सी लटकी हुई थी। रस्सी में औसत कंधे की ऊंचाई पर कपड़ों का एक हैंगर लटका था। हैंगर पर एक शर्ट और पैंट टंगी हुई थी-ग़रीब केटमार के अभ्यास का बिजूका। हर जेब के अलावा रस्सी में भी घंटियां सिली हुई थीं जो लटके हुए बिजूका के हिलते ही बजने लगती थीं।

कमरे में कोई छह लड़के मौजूद थे। उन सबको एक-एक करके बिजूका पर काम करने के लिए बुलाया गया। सारी जेबों में चीज़ें थीं-चश्मा, पैन, पर्स, छुट्टा, रूमाल। उद्देश्य था सभी चीज़ों को जेबों से इस तरह निकालना कि घंटियां न बजें।

स्पष्ट था कि लड़के नौसिखिए थे। ज़्यादातर तो घंटियां बजाए बिना अपना काम कर ही नहीं पाए। लेकिन फिर एक और लड़का आगे आया। ट्रेनर उसे छोटू बुला रहा था। छोटू ने मिनटों में ही बिजूका की जेबें साफ़ कर डालीं। और एक भी घंटी नहीं बजी। और उसने ये काम किसी डांसर जैसी लचीली और सुंदर मुद्राओं के साथ किया। दूसरे लड़के तालियां बजाने लगे और छोटू धीरे से झुक गया।

“यही है,” अरबाज़ ने ट्रेनर से कहा। “मुझे यही चाहिए।”



अरविंद ने हसरत भरी निगाहों से परोमिता को देखा। पिछले कुछ महीने उसकी ज़िंदगी के बेहतरीन महीने रहे थे।

परोमिता बेतहाशा ख़ूबसूरत थी; वो लगभग दिव्य थी; बेदाग़ रंगत, तीखे नैन-नक़्श, भरे-भरे होंठ, गालों में प्यारे से गड्ढे और हल्की सी शरारत भरी भूरी आंखें। अरविंद के लिए अब भी ये यक़ीन करना मुश्किल था कि उसने बॉयफ़्रेंड के रूप में उसे चुना है।

वो कॉलेज स्ट्रीट पर इंडिया कॉफ़ी हाउस में एक टेबल पर आराम से बैठे हुए थे। सफ़ेद पगड़ी वाला एक वेटर दोपहर भर उनके लिए कॉफ़ी के कई कप लाता रहा था, लेकिन न तो अरविंद ने उन्हें पीने की ज़हमत उठाई थी और न परोमिता ने। ऐसा लगता था जैसे उन्हें सारा पोषण उनके प्यार से ही मिल रहा हो। वो अपने साथ उमर ख़य्याम की मुड़े हुए पन्नों वाली रुबाइयात की एक प्रति लाई थी और उसमें से अपनी मनपसंद रुबाई पढ़ रही थी। “शाख़ के नीचे शराब की सुराही हो, रोटी हो—और मेरे

पहलू में तू हो…”

“तुम तो मेरे पास ही हो,” अरविंद ने मज़ाक़ किया।

“ओह, श्शश। इन शब्दों को सुनो, अरविंद… चंद लम्हे जो बचे हैं उन्हें जी भर जी लें, मौत से पहले ज़रा हस्ती की मय को पी लें!”

“शुक्र है कि हम यहां पी नहीं रहे हैं,” अरविंद ने जानबूझकर बात को घुमाते हुए कहा। परोमिता ने हार मान ली।

अचानक अरविंद ने पूछा, “तुम्हें एक बात बताऊं?”

“बताओ,” परोमिता बोली।

“मैंने तुम्हारे जैसी प्यारी मुस्कान कभी नहीं देखी,” उसने गंभीर भाव से कहा।

परोमिता शर्मा गई। वो जानती थी कि ये सच है लेकिन फिर भी उसे अरविंद से ये सुनना अच्छा लगता था।

“अब मैं तुम्हें एक बात बताऊं?” उसने पूछा।

“बोलो,” अरविंद ने कहा।

“मेरे चेहरे पर ये मुस्कान तुम्हारी वजह से आती है।”



क्रॉफ़र्ड मार्केट के पास स्थित जामा मस्जिद ईंट और पत्थर की बनी एक आयताकार इमारत थी जो दो माला इमारतों की एक पट्टी से घिरी हुई थी। मस्जिद का पूर्वी गेट एक प्राचीन हौज़ पर ले जाता था जिसमें लगभग दस फ़ुट गहरा पानी था। बीच के परिसर में हौज़ की सीढ़ियों और किनारों पर लोग नमाज़ अदा करने से पहले वुज़ू करते थे।

अरबाज़ करीम को नमाज़ की तैयारी करते देख रहा था। करीम ने पहले अपने हाथ धोए और फिर तीन बार कुल्ला करके दांत और मुंह साफ़ किए, उसके बाद उसने तीन बार चुल्लू में पानी लिया और बाएं हाथ की छोटी उंगली से नाक को अच्छी तरह साफ़ किया। फिर तीन बार मुंह धो लेने के बाद उसने कोहनियों तक हाथों को धोया। फिर उसने हाथों को गीला करके हथेलियों को सिर पर आगे से पीछे और फिर पीछे से आगे तक फेरा, उंगलियों और अंगूठों से कानों के चारों ओर और अंदर तक सफ़ाई की और फिर हाथों को उलटा करके गर्दन पर फेरते हुए मसह किया। फिर उसने पैरों को इस तरह धोया कि उंगलियों के बीच या तलवों में कोई जगह भी सूखी न रह जाए।

इस बात से बेख़बर कि छोटू उसका पीछा कर रहा है, करीम सीढ़ियों तक गया। जैसे ही करीम ने काले पत्थर की उन सोलह मेहराबों को पार किया जिन पर मस्जिद की इमारत टिकी हुई थी, छोटू ने अपनी तर्जनी और बीच की उंगली को एकदम आहिस्ता से करीम की जेब में डाल दिया, और एक सच्चे कलाकार की तरह उसके पर्स को बाहर खींच लिया।

फ़ौरन ही हंगामा शुरू हो गया क्योंकि तभी अरबाज़ चिल्लाने लगा था, "रोको, चोर!"

करीम ने अचानक रुककर अपनी जेब पर हाथ मारा। ये जानकर कि उसका पर्स ग़ायब है, उसने भागते हुए छोटू की तरफ़ देखा। युवा पॉकेटमार जल्दी से भाग जाना चाहता लेकिन वो जानता था क्या करना है। उम्मीद के मुताबिक़, उसे अरबाज़ ने पकड़ लिया और उसके मुंह पर दो ज़ोरदार थप्पड़ रसीद कर दिए। "अल्लाह के घर में चोरी करने की तेरी हिम्मत कैसे हुई?" वो छोटू के हाथ से पर्स लेते हुए गरज़ा और फिर उसने जानबूझकर उसे भाग जाने के लिए छोड़ दिया।

अरबाज़ ने पर्स जाकर करीम को थमा दिया। "मेरे ख़्याल से ये आपका है, भाईजान," कृतज्ञ करीम को उसका पर्स लौटाते हुए वो बोला। बूढ़ा कुक, जिसका चेहरा सिर्फ़ मूंछों और झुर्रियों से घिरा हुआ था, आभारपूर्वक मुस्कुराया और उसने प्यार से अरबाज़ का सिर थपथपाया। "शुक्रिया, बेटा। अल्लाह तुम्हारा भला करे। तुम्हारी नेकी के बदले मैं कुछ कर सकूं, तो मुझे ज़रूर बताना।"

"अब आपने ज़िक्र किया ही है, तो मैंने सुना है कि आप शहर में सबसे अच्छा पाया निहारी बनाते हैं," अरबाज़ ने बोलना शुरू कर दिया।



अरविंद और परोमिता रबींद्र सरोबर के पास बेंच पर एक दूसरे से सटकर बैठे हुए थे। ये जाड़ों की शाम थी, शांतिपूर्ण-अलावा उन प्रवासी पक्षियों के चहचहाने के जो ज़्यादा ठंडे इलाक़ों से आकर इस झील पर एकत्रित हुए थे।

परोमिता ने अपना सिर अरविंद के कंधे पर टिकाया और अरविंद ने उसे अपनी ओर खींचते हुए कसकर आलिंगन में ले लिया। शारीरिक निकटता के इस दुर्लभ क्षण का आनंद लेते हुए समय जैसे ठहर सा गया था।

अरविंद ने अपने दूसरे हाथ को परोमिता की ठोड़ी के नीचे लगाया और उसका सिर उठाकर उसके चेहरे को अपने सामने कर लिया। वो बेहद दिलकश थी। दूसरी कोई लड़की उससे ज़्यादा सुंदर नहीं थी।

अरविंद ने उसकी आंखों में देखते हुए पूछा, "एक बात बताऊं?"

"ज़रूर," परोमिता ने मुस्कुराते हुए कहा।

"मैंने तुम्हारे जैसी प्यारी मुस्कान कभी नहीं देखी," उसने उसके चूमने लायक़ होंठों को देखते हुए गंभीर भाव से कहा।

परोमिता जानती थी अब क्या होगा। उसकी आंखें चमकने लगीं और उसने जवाब में पूछा, "अब मैं तुम्हें एक बात बताऊं?" उसने पूछा।

"बोलो," अरविंद ने उसके होंठों की ओर देखते हुए कहा।

परोमिता ने थोड़ा उचककर उसे किस कर लिया। ये एक कोमल सा किस था जिसके नतीजे में अरविंद और की इच्छा करने लगा।

“तुम मुझसे क्या कहना चाहती थीं?” वो चुंबनों के बीच बोला।

“चुप रहो और मुझे किस करते रहो,” परोमिता ने कहा।



वो दोनों रेस्तरां के गर्म किचन में थे और करीम अरबाज़ को अपनी सबसे मशहूर डिश का ज़रूरी सामान दिखा रहा था। करीम का रेस्तरां पाया निहारी-ग्रेवी में पके बकरे के पांव-के लिए मशहूर था। इस डिश की शुरुआत मुग़ल सल्तनत के आख़री सालों में पुरानी दिल्ली में हुई थी। निहारी को आमतौर पर बड़ी मात्रा में सारी रात पकाया जाता था और ये मज़दूरों को नाश्ते में खिलाई जाती थी।

अरबाज़ देख रहा था कि करीम ने पैरों को खुली आग में भूना ताकि अगर कुछ बाल बचे हों तो वो जल जाएं। फिर उसने एक भारी चॉपर से खुरों के छोटे-छोटे टुकड़े किए। कटे हुए टुकड़ों को उसने तेज़पात और काली मिर्च के साथ एक हांडी में डालकर उसमें ढेर सारा पानी डाल दिया।

“ये उबलेगा और फिर कई घंटे तक धीमी आंच पर पकता रहेगा,” करीम ने इस तरह समझाया जैसे वो किसी कुकरी शो पर हो। “अच्छे पाये निहारी की ख़ासियत है अच्छी तरह गला, हड्डी से अलग हो गया गोश्त जो आपके मुंह में एकदम घुल जाए। चिपचिपी चर्बी, रसदार हड्डियां और मींग साथ में मिलकर गाढ़ा, गोश्त भरा सालन बना देती हैं।”

“लेकिन ये समझ में नहीं आया कि आपके पाये क्यों इतने लज़ीज़ होते हैं,” अरबाज़ ने कहा। “मैंने बहुत लोगों को कहते सुना है कि करीम की पाया निहारी में कुछ ख़ास ही चीज़ होती है।”

करीम मुस्कुराया, जिससे उसके पीले और टेढ़े दांत दिखाई देने लगे। “राज़ वो है,” उसने किचन के कोने में रखे एक और बर्तन की तरफ़ इशारा किया।

“वो क्या है? कोई सीक्रेट मसाला?” अरबाज़ ने पूछा।

“कल का बचा हुआ खाना,” करीम ने जवाब दिया। “मैं रोज़ाना के बचे हुए खाने में से एक किलो अगले दिन के खाने में मिलाने के लिए रखता हूं। इस पिछली निहारी को तार कहते हैं और यही तार वो ख़ास लज़्ज़त देता है जिसके लिए मेरा रेस्तरां मशहूर है।”

“तो हर डिश में अतीत का एक भाग रहता है?” अरबाज़ ने पूछा।

“बिल्कुल सही। मेरे किचन में पिछले बीस साल से तार की एक अटूट कड़ी चल रही है!”

“और इसीलिए यूसुफ़ मियां जैसे बहुत से नियमित लोग हैं जो रोज़ाना यहां आते हैं,” अरबाज़ सादगी से बोला।

“हां, बेटा,” करीम ने कहा। “यूसुफ़ मियां सिर्फ़ यहां नहीं आते हैं बल्कि घर के लिए भी मंगवाते हैं। उनके नौकर रोज़ाना सुबह सात बजे मुझसे खाना लेने आते हैं।”

“उन्हें ये बहुत पसंद है?” अरबाज़ ने पूछा।

“वो अपने नौकर से थोड़ा तार अलग से लाने को भी बोलते हैं,” करीम ने मुस्कुराते हुए कहा। “पाये सब खाते हैं लेकिन तार सिर्फ़ उनके लिए होता है। लोगों को ये डिश इतनी ही पसंद है!”



अरबाज़ ने दिन का बड़ा भाग अपने दोस्त मुरली के साथ सीताफलवाड़ी में जगदीश ऑयल मिल्स जाकर बिताया। फ़ोरमैन तावड़े ने बड़ी खुशी से अरंडी का तेल निकलने के बाद बचा गूदा उसे बेच दिया। राजू भाई ने उससे न भी कहा होता, तो भी उसे ये बेचने में खुशी ही होती।

अरबाज़ उस कमरे में चला गया जो क्रीसेंट हाउस के पिछवाड़े राजू ने उसे दिया था।

“तुम्हें पता है ये क्या प्रक्रिया होती है?” अरबाज़ ने पूछा। मुरली ने हां में सिर हिलाया।

मुरली ने गूदे को एक बर्तन में डालकर उसमें बेंजीन मिलाया। फिर एक चम्मच लेकर उसने सामग्री को मिश्रित किया और फिर उसमें पानी मिलाया। और फिर जैसे जादुई ढंग से, मिश्रण दो स्पष्ट परतों में बंट गया—एक पनीली और दूसरी जैविक।

“देखा? हमें इस पनीली परत से काम है,” मुरली ने कहा।

उसने कैमिकल्स की उन बोतलों को देखा जो उसने कलबादेवी से ली थीं। हाइड्रोक्लोरिक एसिड और सोडियम कार्बोनेट। छानने के अगले कदम के लिए उसे दस्तानों और एक मास्क की ज़रूरत थी।

मुरली अपनी स्कूली शिक्षा का अच्छा इस्तेमाल कर रहा था।

तुमने मेरे कुत्ते की हत्या की? अरबाज़ ने मन ही मन सोचा। अब अपनी बिल्ली को बचा के रखना।



भिंडी बाज़ार से मुहम्मद अली रोड के बीच कहीं एक छोटी सी वर्कशॉप थी। अरबाज़ अंदर खड़ा लोहार को काम करते देख रहा था। दुबले-पतले लोहार ने अपनी वैल्डिंग टॉर्च को जलाया, जिसकी गुलाब की कली जैसी पतली सी नोक तेज़ी से जलने लगी। लोहार हथौड़े पर काम करने लगा।

“तो आपको हथौड़े के सिरे के ठीक नीचे एक हुक चाहिए और आप चाहते हैं कि हैंडल का बेस कटार की तरह धारदार हो,” उसने हथौड़े को कूटने के लिए उसे चिमटे से पकड़कर निहाई में लगाते हुए पूछा।

“हां, भाईजान,” अरबाज़ ने जवाब दिया। “मुझे ऐसे दर्जन भर हथौड़े चाहिए-सब

एक जैसे।"

लोहार ने सिर हिलाया और फिर उसने तब तक ठोंकना, गर्म करना और पॉलिश करना जारी रखा जब तक कि वो पूरी तरह संतुष्ट नहीं हो गया। हर कुछ देर बाद वो अपना मेहनत भरा काम आगे बढ़ाने से पहले निहाई को साफ़ कर लेता था।

गर्म धातु को ठोंक-ठोंककर अपनी मर्ज़ी से शक्ल देने में कुछ जादुई सा था। काश कि अरबाज़ इंसानों के साथ ऐसा कर सकता।



अरबाज़ तीन ज़ीने चढ़कर बिल्डिंग की छत पर पहुंचा। वो अकेला था। उसके हाथ में मुरली की दी हुई एक किताब थी। पूरी छत पर कपड़े सुखाने के तार लगे हुए थे जिन पर हर तरह के कपड़े लटके हवा में फड़फड़ा रहे थे। छज्जे तक पहुंचने के लिए उसे कई कपड़ों के नीचे से झुककर निकलना पड़ा। यहां से सड़क पार यूसुफ़ के लिविंग रूम का दृश्य एकदम साफ़ दिख रहा था। अरबाज़ पूरी तरह छज्जे के पीछे छिपा हुआ था।

कुछ जानवर शिकार करते हैं। कुछ छिपते हैं। और कुछ छिपकर शिकार करते हैं।

अरबाज़ यूसुफ़ के कमरे में कुछ लोगों के ग्रुप को फ़र्श पर बैठे देख रहा था। कीमे और पाये निहारी की प्लेटें और नान दायरे के अंदर रखे हुए थे। अपने आदमियों का सरदार बना यूसुफ़ भी बैठा हुआ था। वो बेढंगेपन से मींग को मज़े लेकर सुड़कते हुए खा रहा था। अरबाज़ ने देखा कि वो अपने पायों में उस ख़ास पाउच से तार डालता जा रहा था।

उम्मीद है स्वाद पसंद आ रहा होगा, अरबाज़ ने सोचा। मैंने ये ख़ासतौर से तेरे लिए बनाया है।

अरबाज़ सिगरेट सुलगाकर छज्जे के पीछे बैठ गया और बीस मिनट तक देखता रहा। नाश्ता निबट चुका था और नौकर प्लेटें हटा रहे थे।

अरबाज़ ने किताब का वो पेज खोला जिस पर अरबाज़ के पूछने पर मुरली ने निशान लगाया था।

अरंडी के पौधे को निचोड़कर राइसिन निकाला जाता है। अरंडी का पौधा बहुत आम हैः इसे सजावटी पौधे के रूप में इस्तेमाल किया जाता है और ये एक महत्वपूर्ण कारोबारी फ़सल भी है। बीजों में भारी मात्रा में तेल होता है और अरंडी का तेल विभिन्न कामों के लिए प्रयोग किया जाता है। ये एक अत्यंत सामान्य विरेचक है। साथ ही, चूंकि ये उच्च तापमान को सहने में अधिक सक्षम है, इसलिए ये मोटर इंजनों में पेट्रोलियम ऑयल का एक अच्छा विकल्प है।

अरंडी का तेल खाने में पूर्णतः सुरक्षित है क्योंकि इसमें राइसिन नहीं होता। राइसिन अरंडी की फली के उस गूदे में होता है जो तेल निकाले जाने के बाद बचता है। इस गूदे को बस एक विलायक में डालना होता है जिससे तेल और वसा अलग हो जाते हैं, और फिर मिश्रण को छानकर पाउडर बनने देना होता है।

एक औसत वयस्क *1.78* मि.ग्रा. मात्रा से मर सकता है। ये सामान्य नमक के कुछ दानों

जितना हुआ; रंगहीन और गंधहीन राइसिन नमक जैसा ही दिखाई देता है।

राइसिन एक विषैला प्रोटीन है जो कोशिकाओं पर आक्रमण करता है और उन्हें उनके अपने प्रोटीन का संश्लेषण करने से वंचित कर देता है। प्रोटीन के उत्पाद के बिना, शरीर की प्रमुख गतिविधियां बंद होने लगती हैं। जान बच भी जाए, तो अंग स्थायी रूप से क्षतिग्रस्त रह जाते हैं। प्रायः कोई तुरंत लक्षण नहीं दिखाई देते हैं। कई बार लक्षणों के सामने आने में काफ़ी समय लग जाता है, एक या दो दिन तक भी।

क्या इसका कोई विषनाशक है? दुर्भाग्य से, नहीं। कई सरकारें इसके विषनाशक पर काम कर रही हैं लेकिन अभी तक रिसर्च का कोई नतीजा नहीं निकला है।

अरबाज़ ने मन ही मन अपने मां-बाप को शुक्रिया कहा कि वो उसे अच्छी स्कूली शिक्षा दिलाने पर ज़ोर देते थे। फिर उसने एक ऐसा तमिल दोस्त देने के लिए खुदा का शुक्र अदा किया जो उस शिक्षा का अच्छा इस्तेमाल करना जानता था।



तन्ख़ाह का दिन आया।

अरबाज़ पगार लेने के लिए लाइन में लग गया। यूसुफ़ वहां नहीं था लेकिन उसके बारे में ख़बर हर जगह फैली हुई थी।

कल देर रात, यूसुफ़ को बहुत ज़्यादा उल्टियों और दस्त की शिकायत शुरू हो गई थी। इसके नतीजे में उसके शरीर में पानी की भयंकर कमी हो गई। जब तक वो अस्पताल पहुंचता, उसके गुर्दों, जिगर और पाचक ग्रंथि ने काम करना बंद कर दिया था।

एक घंटे बाद, यूसुफ़ मर गया था।

पाये निहारी पर किसी का शक तक नहीं गया क्योंकि यूसुफ़ के साथ सात और लोगों ने खाना खाया था और वो सभी ठीक थे।

यूसुफ़ का बिलाल नाम का एक गंदा, काना ग़ुंडा एक छोटे गुट के साथ अकड़कर चलता हुआ अंदर आया। बाक़ी ज़्यादातर आदमी यूसुफ़ के कफ़न-दफ़न के इंतज़ाम में लगे हुए थे।

बिलाल का आना बुरी ख़बर थी। वो सड़क पर लड़ने वाला आदमी था जिसकी आंख अब्दुल दादा और रंगराजन पिल्लै के बीच हो रही एक गैंग लड़ाई में बर्फ़ तोड़ने के सूए की नज़र हो गई थी।

“पैसा दे,” लाइन में से अरबाज़ के निकलते ही बिलाल ने कहा।

“भाग जा बे,” अरबाज़ ने आगे बढ़ते हुए कहा।

बिलाल गुस्से से पागल हो गया। “मार डालो मादरचोद को!” वो चिल्लाकर अपने आदमियों से बोला जिन्होंने फ़ौरन अपने रामपुरी निकाल लिए।

लेकिन इससे पहले कि वो अरबाज़ पर हमला कर पाते, राजू के आदमियों ने तेज़ी से

उन पर धावा बोल दिया। असलम और पॉल आगे-आगे थे। एक दर्जन कुलियों ने हथौड़े निकाल लिए जिन्हें उन्होंने अपनी क़मीज़ों के नीचे अपनी पैंटों में फंसा रखा था। हर हथौड़े का अतिरिक्त बड़ा सिर था और हैंडल में लोहे का खूंटा लगा था। ये एक घातक हथियार था।

ये एक भयंकर नज़ारा था। बिलाल के आदमियों की खोपड़ियां फट गईं और हड्डियां टूट गईं। बिलाल ने अपनी इकलौती सही आंख भी खो दी। उस दिन गोदी पर यूसुफ़ के आदमियों ने आख़री बार क़दम रखा था।

अरबाज़ की समझदारी दूसरों की नज़रों से चूकी नहीं थी। जिन अहम लोगों की इस पर नज़र गई उनमें से एक अब्दुल दादा था।



अरविंद मशीन को काग़ज़ उगल ते देख रहा था। रात के दस बज चुके थे और बेहद नर्वस जॉयदीप के अलावा वो कॉलेज के परिसर में अकेला था।

जॉयदीप के पिता कॉलेज के हेडमास्टर थे। अरविंद ने जॉयदीप को मना लिया था कि वो उसे संस्था की साइक्लोस्टाइलिंग मशीन का इस्तेमाल करने दे।

हेडमास्टर का ऑफ़िस ज़्यादातर दोपहरों को ठक-ठक की एक नागवार सी आवाज़ से गूंजता था। ये साइक्लोस्टाइलिंग मशीन द्वारा परीक्षा के पर्चे निकालते हुए धातु और काग़ज़ के टकराने की आवाज़ होती थी। लेकिन रात के समय वही आवाज़ भयानक सी लग रही थी। और इस समय मशीन परीक्षा के परचे नहीं छाप रही थी।

ये चार महीने में पांचवां मौक़ा था जब अरविंद मशीन का इस्तेमाल कर रहा था। आमतौर पर, जॉयदीप शुरू में मना कर देता था लेकिन अरविंद उसे रिश्वत देकर मनाने का कोई तरीक़ा निकाल ही लेता था। "सावधानी से चलाना, वरना मैं मुसीबत में फंस जाऊंगा," जॉयदीप हर बार उससे विनती करता और चौकीदार पर नज़र रखता था जो हमेशा अपनी चौकी पर सोया हुआ पाया जाता था। जॉयदीप की चिंता निराधार भी नहीं थी। अरविंद का कुछ नहीं बिगड़ने वाला था क्योंकि वो उसके पिता के कॉलेज का छात्र नहीं था।

पिछले अवसरों की ही तरह, अरविंद ने बड़े धीरज के साथ उस स्पेशल टाइपराइटर के ज़रिए मास्टर स्टेंसिल बनाया जो अक्षरों के नीचे छोटे-छोटे छेद करता था। फिर उसने साइक्लोस्टाइल मशीन में प्रिंटर्स इंक भरी, मास्टर स्टेंसिल को लगाया और मशीन चालू कर दी। जल्दी ही मशीन स्टेंसिल से इंक काग़ज़ पर डालकर छापने का काम करने लगी। अरविंद इस काम में लगातार अच्छा होता जा रहा था। उसने साइक्लोस्टाइल हुई एक चिट्ठी उठाई और उसकी स्पष्टता की जांच करने लगा। ये एकदम परफ़ेक्ट थी। लिखा था:

बी. रवि और आई. डागा

निवेश सलाहकार

1 दिसंबर, *1960*

डियर सर,

पिछले चार महीने से मैं आपको नियमित रूप से पूरी तरह मुफ़्त निवेश परामर्श और शेयर मार्केट पर सलाह दे रहा हूं। आपको याद होगाः

1 अगस्त को, मैंने आपको सैंचुरी टैक्स्टाइल्स के शेयर्स बेचने की सलाह दी। मेरा विचार था कि क़ीमतें अपने चरम को पहुंच चुकी हैं। मैं सही साबित हुआ।

1 सितंबर को, मैंने आपको नेशनल रेयन के शेयर्स ख़रीदने की सलाह दी। मुझे लगा ये फ़ायदेमंद रहेगा। जिन लोगों ने मेरी सलाह को माना, उनके शेयर्स में *26* प्रतिशत की वृद्धि हो चुकी है।

1 अक्टूबर को, मैंने आपको बॉम्बे डाइंग के शेयर्स बेचने की सलाह दी। मेरा विचार था कि क़ीमतें गिरने वाली हैं। और ऐसा ही हुआ।

1 नवंबर को, मैंने आपको टाटा स्टील के शेयर्स ख़रीदने की सलाह दी। मुझे यक़ीन था कि वो अच्छा करेंगे। मेरी सलाह मानने वालों के शेयर्स में *15* प्रतिशत की बढ़ोतरी हो चुकी है।

अब मेरे पास आपके लिए एक बहुत ख़ास सलाह है। इसे नज़रअंदाज़ करके आप अपना ही नुक़सान करेंगे...

जॉयदीप ने छपी हुई चिट्ठी को देखा। "ये बी. रवि और आईडागा कौन हैं?" उसने पूछा।

"वाक़ई जानना चाहते हो?" अरविंद ने पूछा।

"और कोई चारा है मेरे पास?" जॉयदीप ने पूछा। "मैं इसमें तुम्हारे साथ गर्दन तक धंसा हुआ हूं।"

"बी. रवि और आई. डागा दरअसल अरविंद बागड़िया का ही एक भिन्न रूप है," अरविंद ने आंखों में चमक के साथ स्वीकार किया।

"तुम लगातार चार बार सही रहने में कैसे सफल रहे?" जिज्ञासा से भरे जॉयदीप ने पूछा।

"हम आज साइक्लोस्टाइलिंग मशीन में कितनी चिट्ठियां डाल रहे हैं?" अरविंद ने जवाब में पूछा।

"एक सौ पच्चीस," जॉयदीप ने जवाब दिया।

"तुम्हें याद है हमने पहली बार—अगस्त में—कितनी चिट्ठियां छापी थीं?" अरविंद ने पूछा।

"वो तो पागलपन भरी रात थी," जॉयदीप ने याद किया। "कोई दो ह्ज़ार के लगभग। अगले दिन, मेरे पिताजी को विश्वास हो गया था कि कोई चपरासी इंक चुरा रहा है।"

"सही। दो ह्ज़ार ही थीं। लेकिन हमने दो भिन्न चिट्ठियां छापी थीं। एक ह्ज़ार

चिट्ठियों में लोगों से सैंचुरी टैक्स्टाइल्स के शेयर्स बेचने को कहा गया था लेकिन बाकी एक ह्ज़ार चिट्ठियों में लोगों से सैंचुरी टैक्स्टाइल्स के शेयर्स ख़रीदने को कहा गया था।"

"मुझे तफ़्सील याद नहीं," जॉयदीप ने स्वीकार किया। उसका दिमाग़ अरविंद की योजनाओं का नतीजा सामने आने तक थक चुका होता था।

"ज़ाहिर है, मेरी सलाह एक ह्ज़ार लोगों के लिए सही साबित हुई," अरविंद ने कहा।

"तो गड़बड़ क्या है?" जॉयदीप ने पूछा।

"अगले महीने—सितंबर में—मैंने सिर्फ़ उन एक ह्ज़ार लोगों को लिखा जिन्हें मुझसे सही सलाह मिली थी। इस बार भी मैंने दो चिट्ठियां भेजीं। मैंने पांच सौ लोगों से नेशनल रेयन ख़रीदने को कहा और पांच सौ से बेचने को कहा। नतीजतन, मेरे पास ऐसे पांच सौ लोग बचे जिन्हें मुझसे दो बार बिल्कुल सही सलाह मिली थी।"

"तो?"

"तो मैं एक क़दम और आगे बढ़ा। मैंने अक्टूबर में उन पांच सौ लोगों को चिट्ठियां भेजीं। मैंने ढाई सौ लोगों से बॉम्बे डाइंग बेचने को कहा और इतने ही लोगों से बॉम्बे डाइंग ख़रीदने को कहा। इस तरह मेरे पास ढाई सौ लोग बचे जिन्हें मुझसे लगातार तीन बार अच्छी सलाह मिली थी।"

"हम्म। तुम करने क्या वाले हो, अरविंद?" जॉयदीप ने पूछा।

"नवंबर में मैंने ढाई सौ लोगों को चिट्ठियां भेजीं जिन्होंने मेरी सलाह को तीन बार बिल्कुल सही होते देखा था। मैंने सवा सौ लोगों से टाटा स्टील ख़रीदने को कहा और सवा सौ लोगों से कहा कि टाटा स्टील बेच दें। ये डाटाबेस मेरा सोने का घड़ा है। इसमें सवा सौ ऐसे लोग हैं जिन्हें लगता है कि मैं कभी ग़लत हो ही नहीं सकता!"

"अब तुम उन्हें क्या राय देने वाले हो?" जॉयदीप ने पूछा।

"ज़िंदगी का सबसे बड़ा निवेश करने की। और कि वो ये निवेश जल्दी और ख़ामोशी से करें, इससे पहले कि किसी को इसकी भनक लगे," अरविंद ने जवाब दिया।

ओऽम त्रयम्बकं यजामहे

सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं।

सन् 350 कौशांबी

उर्वारुकमिव बन्धनान्।

मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

समुद्रगुप्त कुषाण कारीगरों को सिक्के को बहुत ध्यान से निहाई पर रखते हुए देख रहे थे। एक सहायक ने संभालकर उसके ऊपर सांचे को रखा। अपने बड़े से हथौड़े को उठाकर सुनार ने सांचे पर एक ज़ोरदार वार किया।

ब्राह्मणों ने मंत्रोच्चार शुरू कर दिया। ये बेहद गौरवशाली क्षण था।

"तैयार हो गया, महाराज," सुनार ने एक तरफ़ हटते हुए कहा। समुद्रगुप्त निहाई पर रखे नए-नए ढले सिक्के को देखने के लिए आगे बढ़े।

दरबारी अपने मनोहारी सम्राट को सिक्के को परखते देख रहे थे। समुद्रगुप्त की सुंदरता देखने और सराहने योग्य थी। उनके हृष्ट-पुष्ट शरीर पर लेशमात्र भी चर्बी के चिह्न नहीं थे। उनके सिर पर रत्नों से जड़ी पगड़ी थी। उन्होंने एक नर्म अंगवस्त्र पहना हुआ था जिसके छोर मैरून पट्टे से बंधे थे। उनकी सुडौल टांगें एक ढीले-ढाले मगर तंग मोहरी वाले पाजामे से ढकी हुई थीं। उनकी कमर में एक लंबी रत्नजड़ित तलवार टंगी हुई थी जिसने कई शक्तिशाली राजाओं को परास्त किया था। इसी तलवार ने गुप्त साम्राज्य को इतना विशाल और उन्नत बनाया था।

समय के साथ, समुद्रगुप्त ने कई सिक्के ढलवाए थे। कुछ में वो एक धनुर्धर के रूप में अंकित थे; दूसरों में शेर का शिकार करते दिखते थे; एक में वो युद्ध में इस्तेमाल होनेवाले कुल्हाड़े के साथ दर्शाए गए थे। पर ये सिक्का विशेष था। इस पर एक घोड़ा अंकित था। ये कोई आम घोड़ा नहीं था। ये वो पशु था जो राजा के अश्वमेध यज्ञ में प्रयुक्त हुआ था। ये सिक्का इस यज्ञ के सफलतापूर्वक संपन्न होने के प्रतीकस्वरूप ढाला गया था।

समुद्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ कर पौराणिक वैदिक परंपरा को पुनर्जीवित कर दिया था। एक श्वेत अश्व को विभिन्न राज्यों में घूमने के लिए छोड़ दिया गया था। जहां-जहां घोड़ा जाता, वहां समुद्रगुप्त की सेना पीछे-पीछे पहुंचती। जिन राजाओं ने उस घोड़े को रोकने का प्रयास किया, उन्हें समुद्रगुप्त की सेना का सामना करना पड़ा। और जिन्होंने ऐसा नहीं किया, उन्हें समुद्रगुप्त का आधिपत्य स्वीकार करने के लिए विवश किया गया।

जब तक समुद्रगुप्त का शासन रहा, तब तक उनका साम्राज्य अशोक के साम्राज्य जितना विशाल हो चुका था। पूर्व में, लगभग समस्त बंगाल में; उत्तर में उनका राज्य हिमालय के साथ-साथ फैला हुआ था; पश्चिम में पंजाब तक; दक्षिण में प्रायद्वीप का ज़्यादातर भाग उनके साम्राज्य में था। अधिकारिक तौर पर अब समुद्रगुप्त आर्यावर्त के सम्राट थे तथा दक्षिणपथ के अधिपति थे। वो चक्रवर्ती राजा थे।

सम्राट ने अपने राजकवि हरिसेन को बुलाया। "स्तंभ पर लिखा जाने वाला अभिलेख तैयार है?" उन्होंने पूछा।

"जी, महाराज," हरिसेन ने कहा। "ऋषि कुसुम्ब के पवित्र आश्रम पर बना शहर कौशांबी आपकी गौरवगाथा सुनने के लिए उत्सुक है।"

"अच्छा, तो आप ये नहीं मानते हैं कि कौशांबी नाम इस क्षेत्र में फैले वृक्षों के नाम

पर है?" समुद्रगुप्त ने पूछा।

"आमतौर पर कौशांबी यमुना नदी के तट पर बने पवित्र आश्रम के आभास से मुग्ध रहता है, महाराज, पर हम निस्संदेह आपका नज़रिया भी ऐतिहासिक अभिलेखों में शामिल कर सकते हैं," हरिसेन सहजता से बोला।

समुद्रगुप्त हंसे, और हंसते ही उनकी छाती की मांसपेशियां लहराती सी दिखीं। "तुम्हारी छेनी तो भयानक वस्तु है, हरिसेन," उन्होंने कहा। "तुम किसी की इच्छा के हिसाब से इस ऐतिहासिक गाथा को बदल सकते हो! तुम इस अभिलेख को कहां अंकित करोगे?"

"जब आप निर्माण स्थल का दौरा करने आएंगे तब मैं आपको सही जगह दिखा पाऊंगा, जहां आपकी गौरवगाथा अंकित की जाएगी," हरिसेन चापलूसी करते हुए बोला। "अभिलेख अंकन बाद में किया जाएगा, तब जब महाराज मोक्ष को प्राप्त करेंगे।"

सम्राट फिर हंसे। "मोक्ष? मेरी देह पर तलवारों, युद्ध के कुल्हाड़ों, तीरों और भालों के सैकड़ों निशान हैं! मुझ जैसे क्रूर योद्धा को मोक्ष नहीं मिल सकता, हरिसेन!"

"क्या आप भूल रहे हैं कि आपने सिंहल के राजा मेघवन को संबोधि में एक भव्य मठ बनाने की अनुमति दी थी?" हरिसेन ने पूछा। "ये धार्मिक सहिष्णुता का कृत्य है, नहीं क्या? बौद्धों के प्रति हिंदू राजा की उदारता। क्या महान बौद्ध विद्वान वसुबंधु आपके दरबार की शोभा नहीं हैं?"

"और इससे मुझे मोक्ष की प्राप्ति होगी?" समुद्रगुप्त ने अविश्वासपूर्वक पूछा। "बोध गया में एक मठ मुझे मोक्ष की प्राप्ति करा सकता है? असंभव! वैसे, वसुबंधु कहां हैं?"

ब्राह्मण परिवार में जन्मे वसुबंधु ने कई वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म अपना लिया था। उनकी व्यावहारिक टिप्पणियों ने एक नितांत नए बौद्धिक विचार योगाचार को जन्म दिया था।

वसुबंधु आगे आए। उनके हाथ में एक पुस्तिका थी जिसके आवरण पर एक मत्स्य का चिह्न अंकित था। एक हिंदू सम्राट के दरबार में वसुबंधु का होना समुद्रगुप्त की धर्मनिरपेक्षता का साक्षी था। सम्राट अतुल्य क्षमताओं के धनी थे और उन्होंने सहजता से कई भूमिकाएं निभाई थीं-सम्राट, योद्धा, राजनेता, कवि, संगीतज्ञ और परोपकारक। जब वो तलवारबाज़ी नहीं कर रहे होते थे, तब उन्हें वीणावादन करते पाया जाता था। उन्होंने अपने साम्राज्य को न केवल आर्थिक रूप से सशक्त किया था बल्कि उसे विद्वता, कला, धर्म और संस्कृति का केंद्र भी बना दिया था।

समुद्रगुप्त और उनके उत्तराधिकारियों की प्रबुद्ध नीतियां कई महान विद्वानों को जन्म देने वाली थीं: आर्यभट्ट, जिन्होंने शून्य का आविष्कार किया; कालीदास, जिन्होंने अत्यंत सुंदर नाटक शकुंतला लिखा; और वात्स्यायन, जिन्होंने कामसूत्र की रचना की। गुप्त साम्राज्य में कई आविष्कार होने वाले थे; शतरंज के मूल रूप चतुरंग का आविष्कार, तथा आयुर्वेद और शल्य-चिकित्सा की व्यापक कुंजी सुश्रुत संहिता का

संकलन। ये निस्संदेह स्वर्णयुग था, शाब्दिक और लाक्षणिक दोनों रूप से।

वसुबंधु ने नरम स्वर में कहा। "राजा मेघवन द्वारा बनाया गया मठ निश्चय ही भव्य है, महाराज, किंतु महान बोधिवृक्ष, जो आकर्षण का केंद्र हुआ करता था, आज उपेक्षित प्रतीत होता है। अगर आप उसके चारों ओर एक घेरा बनवा देते..."

"आगे कुछ न कहिए," समुद्रगुप्त बोले। "मैं बोधिवृक्ष के चारों ओर घेरा बनवाऊगा, यही मेरा योगदान होगा। वसुबंधु, आप जानते हैं क्या करना है। हमें सोने की आवश्यकता है... बहुत सारे सोने की। यह घेरा खरे सोने की छड़ों से बनेगा। समुद्रगुप्त की भेंट इससे कम नहीं हो सकती।"

"हमें मठ के भिक्षुओं से आज्ञा लेनी होगी, महाराज, उनके कुछ नियम हैं," वसुबंधु ने कहना आरंभ किया।

"वो प्रसन्न होंगे," समुद्रगुप्त ने नकारते हुए कहा। "किसी भी सूरत में, यहां केवल एक ही नियम लागू होता है।"

"और वह नियम क्या है, महाराज?" वसुबंधु ने पूछा।

"इसे स्वर्ण नियम कहते हैं। जिसके पास स्वर्ण है, वही नियम बनाता है।"

पुस्तक दो
1960—1970

अरविंद ने एक बार फिर बैंक स्टेटमेंट को देखा। उसे यक़ीन नहीं हो रहा था कि उसकी योजना इतनी अच्छी साबित हुई है। उसकी कंपनी—जिसमें न तो कोई कर्मचारी, न संपत्ति, न ग्राहक, न विक्रय राशि या पिछली उपलब्धियां थीं—ने उत्सुक निवेशकों से एक लाख रुपए इकट्ठे कर लिए थे।

बागड़िया गद्दी से कुछ ही दूरी पर, बड़ा बाज़ार में एक छोटा सा कमरा बहुत ही मामूली किराए पर ले लिया गया था। उसके पिता हैरान थे कि अलग ऑफ़िस की क्या ज़रूरत है। "तुम अपना नया काम यहां से भी कर सकते हो," बृजमोहनलाल ने सुझाया, पर अरविंद नहीं माना। "मैं नहीं चाहता कि जो जोखिम मैं उठाऊं, उससे आप प्रभावित हों," उसने बहुत समझदारी से अपने पिता को समझाया।

लोहे की दो मेज़ों, दो कुर्सियों और एक लोहे की अलमारी के अलावा अपने लगभग ख़ाली ऑफ़िस में खड़ा अरविंद अपने को राजा समझ रहा था।

उसने टेबल पर पड़ी मैगज़ीन को देखा। उसकी कवर स्टोरी मद्रास के एक समूह के सात्तईस वर्षीय वारिस पर थी। उसकी संपत्ति में टैक्सटाइल मिलें, होटल, चाय और तंबाकू के उद्योग थे। ये नवयुवक अभी एटन और ऑक्सफ़ोर्ड से लौटा था और अब बिज़नेस की बागडोर संभालने के लिए उसे तैयार किया जा रहा था। ख़ुद को साबित करने की धुन में वो वारिस सभी तरह के सौदे कर रहा था।

उस लेख पर से नज़र हटाकर अरविंद ने जॉयदीप को देखा। "मैंने तिकड़म से अपने निवेशकों से निवेश तो करा लिया पर अब मैं उन्हें मुनाफ़ा देने के लिए किताबों में दी हुई सारी तरकीबें लगा दूंगा," उसने जॉयदीप से कहा, जो तीन सौ रूपए मासिक तन्ख़ाह पर कंपनी का दूसरा कर्मचारी था।

"तुम इस पैसे से क्या करने की सोच रहे हो?" जॉयदीप ने पूछा।

"मैंने घूमने की योजना बनाई है," अरविंद ने जवाब दिया।

"घूमने की?" जॉयदीप को विश्वास नहीं हो रहा था। "तुमने अभी कहा कि तुम्हें अपने निवेशकों के लिए अच्छा मुनाफ़ा कमाना है। तुम ऐसे कैसे इसे अपने ऊपर उड़ा सकते हो?"

"ये कोई ऐसा-वैसा घूमना नहीं है। बहुत ख़ास यात्रा है।"

"कहां की?"

"ये बेमानी है। आह! मेरे ट्रैवल एजेंट आ गए। आइए, मित्रा जी। आपने वो काम किया जो मैंने कहा था?"

जो आदमी अंदर आया वो चश्मा पहनने वाला नाटा-मोटा, और चापलूस किस्म का था। "हां, बागड़िया जी, यहां मेरे पास सारी जानकारी है। इस महीने की 19 तारीख़ को मिस्टर देशमुख बंबई से दिल्ली जाएंगे।"

"बहुत बढ़िया। ऐसा है तो मुझे 18 को बंबई जाना होगा और फिर वहां से 19 को दिल्ली।"

“जी हां, मैं बुकिंग करा दूंगा। और हां, जैसा आपने पूछा था, मिसेज़ शर्मा 25 को दिल्ली से कलकत्ता के लिए फ़्लाइट लेंगी।”

“बहुत अच्छे। इसका मतलब 25 को मैं वापस कलकत्ता आऊंगा। मिस्टर राव की कोई ख़बर?”

“जी हां, वो 28 को मद्रास से कलकत्ता आएंगे।”

“इसका मतलब मुझे 27 को मद्रास जाना होगा,” अरविंद ने कहा।

“पर 27 को कलकत्ता से मद्रास के लिए कोई फ़्लाइट नहीं है, इसलिए मुझे आपको 26 को ही भेजना पड़ेगा। आपको मद्रास में एक दिन ज़्यादा बिताना होगा।”

“कोई बात नहीं,” अरविंद ने कहा। “क्या आपको पता है कि मिस्टर राव मद्रास वापस कब जाएंगे?”

“वो यहां कलकत्ता में पूरे महीने रहने वाले हैं। वो चाय के बाग़ानों के लिए बात करने आ रहे हैं।”

“बहुत ख़ूब, मित्रा जी। मुझे यक़ीन है आपने इंडियन एयरलाइन्स के स्टेशन मैनेजर का अच्छे से ख़्याल रखा होगा?” अरविंद ने पूछा।

“जी, बागड़िया जी,” ट्रैवल एजेंट ने जवाब दिया। “सभी संबद्ध मैनेजरों को आपकी विशिष्ट ज़रूरतों की जानकारी है।”

“मैं आपकी मेहनत से ख़ुश हूं, मित्रा जी। आगे चलकर मैं आपको एयरलाइन्स द्वारा दिए जाने वाले एजेंसी कमीशन से दो प्रतिशत ज़्यादा बोनस दूंगा।”

“मैं आपका आभारी हूं, बागड़िया जी। आप बहुत दयालु हैं,” उस गोलू-मोलू ट्रैवल एजेंट ने डगमगाते क़दमों से ऑफ़िस से बाहर जाते हुए कहा।

“अरविंद, क्या तुम पगला गए हो? तुम बंबई, दिल्ली और मद्रास क्यों जा रहे हो? हमारे पास अभी तक कोई बिज़नेस प्लान नहीं है।” जॉयदीप ने कहा।

“मेरे पास कोई बिज़नेस नहीं है, पर प्लान ज़रूर है,” अरविंद ने रहस्यमय ढंग से जवाब दिया।



आंखों से पट्टी हटी तो अरबाज़ की आंखें चुंधिया गईं। सफ़ेद गली में जब वो फ़ाइज़ा के बदन की जन्नत के अपने साप्ताहिक पड़ाव पर था तभी चार हट्टे-कट्टे आदमियों ने उसे घेर लिया। उस पर क़ाबू पाने, उसके हाथ और आंखों पर पट्टी बांधने में उन्हें एक मिनट से भी कम समय लगा। उन्होंने उसे बेदर्दी से स्टडबेकर कमांडर की पिछली सीट पर डाल दिया और तीस मिनट बाद संगमरमर के ठंडे फ़र्श पर पटक दिया। ये अब्दुल दादा का घर था।

“तो तुम हो जिसने मेरी भानजी के पति को लुढ़काया था,” अब्दुल दादा ने कहा। ये एक कथन था, कोई सवाल नहीं। अरबाज़ ने अब्दुल दादा को देखा।

एक लंबा और खूबसूरत पठान एकदम टिपटॉप सफ़ेद सफ़ारी सूट में खड़ा था। उसके पास स्टेट एक्सप्रेस 555 सिगरेट की एक डिब्बी रखी थी। उसने डिब्बी उठाई, उसमें से एक सिगरेट निकाली और उसके एक सिरे को डिब्बी पर हल्के से एक दो बार ठकठकाया। फिर उसने एक सुनहरे रंग का लाइटर निकाला, जिस पर एक नग्न युवती बनी हुई थी और उसके किसी एक स्तन को दबाने से आग निकलती थी, और अपनी सिगरेट जलाई। उसने एक लंबा कश भरा और धुएं को अपने फेफड़ों में समा जाने दिया।

उसका अंदाज़ इतना ज़बरदस्त था कि बॉलीवुड में उसकी नक़ल की जा सकती थी पर उसके सफ़ेद कपड़े उसके धंधे से मेल नहीं खाते थे। दादा काला चश्मा लगाता, काली मर्सिडीज़-बेंज़ चलाता और ब्लैक लेबल स्कॉच पीता था। ये सब चीज़ों उसके काले धंधों से मेल खाती थीं।

दो मांसल अंगरक्षकों से घिरा, अब्दुल दादा अपने बांद्रा के घर में नक़ली टाइगर प्रिंट के कवर वाली सिंहासननुमा कुर्सी पर बैठा था। वो कुछ साल पहले ही डोंगरी से बांद्रा शिफ़्ट हुआ था। ख़बर ये थी कि वो अपनी नई माशूक़ा के पास रहना चाहता था, एक बॉलीवुड अभिनेत्री जिसका आजकल सिक्का नहीं चल पा रहा था। साथ ही वो अपनी पत्नी से उचित दूरी बनाए रखना चाहता था जिसके बारे में मशहूर था कि वो उस पर भारी फूलदान और ऐशट्रे उठाकर फेंकती है।

दुश्मनों के लिए क्रूर और दोस्तों के लिए उदार, अब्दुल दादा को कोई हल्के में नहीं ले सकता था। मुसलमान होने के बावजूद, हर साल लालबाग़ में होने वाले गणेशोत्सव में वो बेशुमार पैसा ख़र्च करता था। लोगों को आकर्षित करने के लिए हमेशा बॉलीवुड के हीरो वहां मौजूद रहते थे। वो हर साल उन मुसलमानों की भी सहायता करता था जो इतने ग़रीब थे कि हज पर जाने की सोच भी नहीं सकते थे। अगर उमेरखड़ी, चकला मार्केट, नल बाज़ार, कमाठीपुरा या चोर बाज़ार के लोगों से कोई पूछे तो अब्दुल दादा एक ख़तरा, अहंकार में चूर और एक मसीहा तीनों का मिलाजुला पैकेज है।

“जब भी ख़ून गिरता है, तो धरती मां और ज़्यादा की मांग करती है। तो बता, मेरे बच्चे, मैं धरती मां की आवाज़ क्यों न सुनूं?” अब्दुल दादा ने प्यार से पूछा।

“मैंने उसे ज़हर दिया था, उसका ख़ून नहीं बहाया था,” अरबाज़ ने कहा।

अंगरक्षक सकपका गए। एक ने तो गहरी सांस भरी। आज तक किसी ने अब्दुल दादा से इस तरह बात नहीं की थी। निश्चित ही ये मूर्ख मरना चाहता है।

अब्दुल दादा ने बकारा क्रिस्टल ऐशट्रे में अपनी सिगरेट बुझाई, अरबाज़ को देखा और फिर ज़ोर से हंसने लगा। ये इतनी ज़ोर की हंसी थी कि उसके अंगरक्षक भी मुस्कुराने लगे।

“मुझसे वो हरामी बर्दाश्त नहीं हो रहा था,” अब्दुल दादा ने कहा। “मैं सिर्फ़ इसलिए उसे झेल रहा था क्योंकि वो रिश्तेदार था। मुझे तो तुम्हारा शुक्रिया अदा करना चाहिए कि तुमने उस गंद को इस दुनिया से दूर कर दिया।”

“मुझे माफ़ कर दें, दादा,” अरबाज़ ने कहा। “वो आपके नाम पर ग़रीब मज़दूरों से पैसे लूट रहा था। मुझे पता था कि आप ऐसा नहीं करवा सकते।”

“मुझे पता है,” अब्दुल ने कहा। “मुझे अल्लाह ने बहुत दिया है। मैं अमीरों से लेता हूं पर ग़रीबों को देता हूं।”

“आप तो हम सबके दाता हैं,” अरबाज़ ने मक्खन लगाया।

“मुझे तुम्हारा अंदाज़ पसंद आया,” अब्दुल ने कहा। “अगर मैं चाहता तो अब तक तुम मर चुके होते। तुम्हारी मां अपना सिर पीट रही होती। तुम्हारी सफ़ेद गली वाली माशूक़ा ने अपना सुंदर चेहरा नोच लिया होता। तुम्हारे गोदी वाले दोस्त जेल में सड़ रहे होते। तुम्हारा घर सुलगते मलबे में तब्दील हो गया होता और मैं उन अंगारों को ठोकर मार रहा होता। समझे?”

अरबाज़ ने शर्मिंदगी में सिर हिलाया। “मुझे माफ़ कर दीजिए, दादा। मुझे ऐसा करने से पहले आपके पास आना चाहिए था,” उसने कहा।

“एक बात बताऊं बच्चे,” अब्दुल दादा ने कहा। “शिकायत करने में साला कोई शान नहीं है। कभी-कभी हमें दुनिया को अपना बड़ा और मोटा लठ दिखाना होता है! तुमने वही किया।” एकाएक उसने कहा, “क्या तुम मेरे लिए काम करना चाहोगे?”

“हां, दादा,” अरबाज़ ने जवाब दिया। “मुझे और कुछ नहीं चाहिए।”

“हमीद और मुस्तफ़ा को बुलाओ,” अब्दुल दादा ने अपने एक अंगरक्षक से कहा। कुछ ही मिनटों में दोनों उसके सामने थे।

“ये मेरे वफ़ादार आदमी हैं,” दादा ने कहा। “इनकी इज़्ज़त करना और ये तुम्हें सब कुछ सिखा देंगे।”

“जी, दादा,” अरबाज़ ने उन दोनों को देखते हुए कहा, जो शहर के ग़ैरक़ानूनी शराब के धंधे, जूए, तस्करी, ज़मीन अतिक्रमण, ड्रग्स, वसूली, वेश्यावृत्ति और सुपारी-हत्या के लिए ज़िम्मेदार थे।

हमीद एक मांसल आदमी था जो अपने चालीसवें दशक में चल रहा था। उसके चेहरे के एक तरफ़ सफ़ेद निशान था। कहते हैं कि उसे मारने के लिए एक वेश्या को पैसे दिए गए थे। हमीद दादा के तस्करी, ज़मीन अतिक्रमण और वसूली के धंधे संभालता था। वह अपने बॉस के प्रति अत्यंत वफ़ादार था और ग़ुस्सैल मिज़ाज का था, उसकी घनी मूंछें थीं जो ऊपरी होंठ में एक निशान होने की वजह से ग़ुस्सा आने पर हिलने लगती थीं। चारमीनार सिगरेट के शौक़ीन हमीद के दांत गंदे भूरे रंग के हो गए थे।

मुस्तफ़ा थोड़ा कम उम्र, लगभग पैंतीस साल का था। वो लंबा और पतला था, और कम उम्र में ही गंजा हो गया था। अपने गंजेपन पर मज़ाक़ उड़वाने से बचने के लिए उसने अपने बाल ही मुंडवा लिए थे। मुस्तफ़ा दादा के जुए और ग़ैरक़ानूनी शराब के धंधे संभालता था।

“ये मुस्तफ़ा है,” अब्दुल दादा ने अरबाज़ से कहा। “ये हमारे मटके के धंधे संभालता है। जाओ और गुर सीखो।”

“जी, दादा,” अरबाज़ ने कहा और मुस्तफ़ा के पीछे चल दिया।



“अगर तुम्हारी बज़ाहीर बिना किसी कारण के सारे भारत की यात्रा पूरी हो गई हो, तो हम बैठकर बिज़नेस प्लान को फ़ाइनल कर लें?” गुस्से में भरे जॉयदीप ने एक महीने बाद कहा।

अरविंद ने अपनी टिनटिन एडवेंचर कॉमिक बुक की प्रति एक ओर रख दी। इसका शीर्षक किंग ऑटोकार्स स्केप्टर था। अरविंद को पढ़ने का कुछ ख़ास शौक़ कभी नहीं रहा था, लेकिन कॉमिक बुक्स की बात अलग थी। अगर उसकी अंग्रेज़ी साहित्य की टीचर मिसेज़ फॉन्सेका अभी उसे देख लेतीं, तो उन्हें शायद दौरा पड़ जाता।

“ज़रूर,” अरविंद ने ख़ुश होकर मुस्कुराते हुए जवाब दिया। “प्लान ये है। हम भारत में सोने का पूर्वेक्षण करेंगे।”

“सोने की खान? हमारे पास इतना पैसा नहीं है!” जॉयदीप बड़बड़ाया।

“बिल्कुल है,” अरविंद ने जवाब दिया। “यूनाइटेड फ़ेडरेशन बैंक के चेयरमैन ने मुझे ज़रूरी वित्तीय संसाधनों का विश्वास दिलाया है।

“मगर... मगर... खनन ही क्यों?”

“देखो, जॉयदीप, भारत में सोने के बहुत विशाल स्रोत हैं लेकिन हमारा देश सोने का खनन करने वाले बड़े देशों की सूची में कहीं नहीं है। हम इसे बदल डालेंगे।”

“लेकिन क्या खनन की रिआयतें महंगी नहीं हैं?”

“बिल्कुल हैं। और इसीलिए हमें खनन मंत्री की मदद चाहिए होगी।”

“किस-तरह की म-मदद?” जॉयदीप हकला गया।

“मंत्री हमें तीन साल के लिए एक आरपी-रीकॉनेसां परमिट-जारी करेगा। हम जियोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया के हालिया अध्ययन पर आधारित आरपी के लिए आवेदन देंगे। आरपी हमें संबंधित क्षेत्रों में खोज करने का अधिकार देगा।”

“और फिर?” भौचक्के जॉयदीप ने पूछा।

“अगर शुरुआती खोज के बाद हमें लगेगा कि इलाक़े में संभावनाएं हैं, तो हम पूर्वेक्षण के लाइसेंस के लिए आवेदन करेंगे। इससे हमें पूरे इलाक़े में ड्रिलिंग की इजाज़त मिल जाएगी,” अरविंद ने समझाया।

“और फिर?” जॉयदीप ने बात को कुछ-कुछ समझते हुए कहा।

“हमें ड्रिलिंग से पत्थरों के जो नमूने मिलेंगे, उनका विश्लेषण करके उन क्षेत्रों की पहचान की जाएगी जहां सोने के मिलने की संभावना ज़्यादा होगी। उसी के अनुसार हम खनन के लाइसेंस के लिए आवेदन करेंगे।”

“लेकिन इस सबमें तो बरसों लग सकते हैं; और सोचो कितने लोग चाहिए होंगे,

कितनी टेक्नोलॉजी और पूंजी की लागत की ज़रूरत होगी," जॉयदीप ने तर्क दिया।

"बिल्कुल," अरविंद सहमत था। "इसीलिए हमें खान के लिए एक संभावित ख़रीदार की ज़रूरत होगी। कोई ऐसा जो एडवांस में ही हमें ख़रीद ले।"

"क्या खनन के लाइसेंस ट्रांसफ़रेबल होते हैं?" जॉयदीप ने पूछा।

"नहीं," अरविंद ने जवाब दिया। "इसीलिए आरपी किसी शैल कंपनी के नाम में जारी होगा। हम बाद में उस कंपनी के शेयर्स ख़रीदार को ट्रांसफर कर देंगे।"

"तुम इन सारे लोगों को कैसे जानते हो?" हैरान जॉयदीप ने पूछा। "लगता है तुमने उधार के बारे में यूनाइटेड फ़ेडरेशन बैंक के चेयरमैन से बात कर ली है। तुमने आरपी के लिए खनन मंत्री से अनुमोदन की मांग कर ली है। तुमने संभावित ख़रीदार के लिए शैल कंपनी भी सोच ली है। कैसे, अरविंद? कैसे?"

"यात्रा के उन ख़र्चों को बढ़ाकर जिनके तुम ख़िलाफ़ थे," अरविंद ने जवाब दिया। अरविंद ने अपने दोस्त को देखा और मुस्कुराया।

जॉयदीप भौचक्का था। अरविंद ने उसे समझाया।

"दरअसल, मैंने ट्रैवल एजेंट से ये पता करने को कहा था कि यूनाइटेड फ़ेडरेशन बैंक के चेयरमैन मिस्टर देशमुख कब बंबई से बाहर की यात्रा करेंगे। मैंने उससे ये भी पता करने को कहा कि खनन मंत्री मिसेज़ शर्मा कब दिल्ली से बाहर की यात्रा करेंगी। और फिर मैंने उससे ये पता करने को कहा कि राव एंटरप्राइज़ेज़ ऑफ़ मद्रास के घुमक्कड़ वारिस मिस्टर राव कब मद्रास से बाहर की यात्रा करेंगे।"

जॉयदीप ने इस जानकारी को पचाने की कोशिश की।

"मैं जानता था कि मुझे इनमें से किसी से भी मिलने के लिए अपॉइंटमेंट कभी नहीं मिल पाएगा," अरविंद बोलता रहा। "इसलिए मैंने एक जुगाड़ किया। मैंने इंतज़ाम किया कि मुझे उनकी फ़्लाइटों पर उनके बग़ल वाली सीटें मिल जाएं। सौभाग्य से, एयरवेज़ इंडिया, भारत एयरवेज़, हिमालयन एविएशन, कलिंग एयरलाइन्स, इंडियन नेशनल एयरवेज़ और एयर सर्विसेज़ समेत सारी घरेलू एयरलाइनों का विलय होकर एक ही संस्था—इंडियन एयरलाइन्स—बन गई है। अब मेरे ट्रैवल एजेंट को बस इंडियन एयरलाइन्स की बुकिंग्स पर नज़र रखनी थी।"

"तुमने अपने ट्रैवल एजेंट से ये पक्का करने को कहा कि वो एयरपोर्ट के स्टेशन मैनेजरों को संभाल ले। लेकिन किसलिए?" जॉयदीप ने पूछा।

"इंडियन एयरलाइन्स के स्टेशन मैनेजर फ़्लाइट वाले दिन सीटों के आवंटन का फैसला करते हैं," अरविंद ने जवाब दिया। "ये महत्वपूर्ण था कि मुझे मेरे लक्षय के बराबर वाली ही सीट मिले। इसीलिए मैंने एजेंट को दो प्रतिशत अतिरिक्त दिया; अच्छा, तुम्हें उस केस के बारे में पता चला जो अदालत में मिस्टर राव के ख़िलाफ़ गया है?"

"हां," जॉयदीप ने जवाब दिया। "मैंने कुछ रिसर्च की थी। वो इसलिए हार गए क्योंकि दूसरे पक्ष ने यहीं कलकत्ता की एक बहुत ही सक्षम लॉ फ़र्म की सेवाएं ली

थीं।”

“उस लॉ फ़र्म का क्या नाम है?” अरविंद ने पूछा।

“तुम उस केस के बारे में नहीं जानना चाहते जो वो हारे हैं?” जॉयदीप ने पूछा।

“नहीं। वो बेमानी है। मैं बस उस फ़र्म का नाम जानना चाहता हूं जिसकी वजह से वो हार गए,” अरविंद ने जवाब दिया।

“डिग्बी एंड दस्तूर,” जॉयदीप ने जवाब दिया। अरविंद ने इस नाम को याद कर लिया।

“तो तुम सोने की खानों के अधिग्रहण को लेकर गंभीर हो?” जॉयदीप ने पूछा।

“इसीलिए तो उसे खान कहते हैं। क्योंकि मेरा खानपान उसी में है,” अरविंद हंसा।



अब्दुल दादा ने उस आदमी को देखा जो उसके सामने खड़ा था। वो हल्का सा कांप रहा था और उसके होंठ सूखे से लग रहे थे। दादा ने फ़ौरन अरबाज़ से कहा कि वो उसे उसकी डेस्क के सामने मुलाक़ातियों की कुर्सियों में से एक पर बिठाए।

“ठंडी रूह अफ़ज़ा का इंतज़ाम करो, हमीद,” दादा ने उस आदमी के बैठने के बाद कहा, जो फटी-फटी आंखों से दादा के पीछे खड़े दो तगड़े बॉडीगार्ड्स को देख रहा था।

“घबराइए मत,” जब वो आदमी मीठे शर्बत को कृतज्ञतापूर्वक पीने लगा, तो दादा ने नरमी से कहा। “मैं आपकी मदद करूंगा।”

अरबाज़ और हमीद एक ओर को खड़े हो गए और दादा मुलाक़ाती को तसल्ली देने लगा। कुछ देर की ख़ामोशी के बाद, बूढ़ा आदमी आवाज़ में हल्के से कंपन के साथ बोला। “दादा, मैं आपके पास इसलिए आया हूं कि मेरे पास और कोई ऐसा नहीं है जिससे मैं मदद मांग सकूं।”

अब्दुल दादा ने सिर हिलाया। “मैं आपकी परेशानी सुलझाऊंगा,” दादा ने कहा। “बोलिए।”

“मेरे बेटे ने लालबाग़ में मिठाई की एक छोटी सी दुकान खोली थी,” उस आदमी ने बोलना शुरू किया। “मैं पैसे से उसकी मदद करने की हालत में नहीं था, इसलिए मेरा बेटा मदद के लिए एक साहूकार के पास गया। उसकी शर्तें लूटने वाली थीं लेकिन मेरे बेटे के पास और कोई रास्ता नहीं था।”

“बोलते जाइए,” दादा ने फिर तसल्ली दी।

“जब वो क़र्ज़ नहीं चुका पाया, तो वो धमकियां देने लगे। दो बार उसकी पिटाई भी की। मैं एक रिटायर्ड मजिस्ट्रेट हूं और मेरे बहुत से दोस्त अभी भी अच्छे ओहदों पर हैं। मैंने उनसे संपर्क किया।”

“फिर?” दादा ने पूछा।

“उन्होंने पुलिस के ज़रिए साहूकार से पूछताछ कराई। लेकिन इससे मामला बस और ज़्यादा बिगड़ गया। कल मेरा दस साल का पोता प्रसाद स्कूल से ग़ायब हो गया। पुलिस को कुछ पता नहीं है,” बूढ़े ने कहा। उसके गालों पर आंसू बह रहे थे।

“आपने पुलिस को बताया आपको किस पर शक है?” दादा ने पूछा।

“हां, लेकिन उन्होंने कहा कि बंबई बड़ा शहर है,” लाचार आदमी ने बताया। “बहुत से पुलिसवाले उसके तन्ख़ाहदार हैं। प्लीज़, दादा, अल्लाह के वास्ते, प्लीज़ मदद कीजिए। उस बच्चे की कोई ग़लती नहीं है। अपने बाप की ग़लतियों को वो क्यों भुगते?”

“हमीद, इन साहब से साहूकार का नाम ले लो,” दादा ने कहा। हमीद ने फ़ौरन ऐसा ही किया।

“फ़िक्र मत कीजिए, आपकी परेशानी हल कर दी जाएगी,” दादा ने कहा।

“मैं हमेशा आपका अहसानमंद रहूंगा, दादा,” मुलाक़ाती ने कहा।

“हां, वो तो रहेंगे,” दादा ने बस इतना जवाब दिया।



दो आदमियों को गोदाम से निकलता देखकर हमीद ने अपने होंठों पर उंगली रखकर ख़ामोश रहने का इशारा किया। उन्होंने पूरी सावधानी से दरवाज़े पर ताला लगाया। पूरी संभावना थी कि बच्चा यहीं होगा। हमीद ने इस काम के लिए चुने गए दोनों लोगों—अरबाज़ और एक पुराना खिलाड़ी जिसे चिकना के नाम से जाना जाता था—को संकेत किया।

चिकना हाथ में एक भारी सा देसी रिवॉल्वर लिए छाया से निकला और उसने उसे साहूकार की खोपड़ी में दे मारा। साहूकार के साथी ने अपनी गन निकालने के लिए हाथ बढ़ाया लेकिन उससे पहले ही अरबाज़ ने उसके मुंह पर एक ज़ोरदार वार किया। वो बेहोश होकर फ़र्श पर गिरा और उसके होंठों के किनारों से ख़ून रिसने लगा।

चिकना ने अपनी गन साहूकार की खोपड़ी पर लगा दी और हमीद फुफकारा। “दादा ने मुझे लड़के के लिए भेजा है। मुझसे पंगा मत लेना। प्रसाद कहां है?”

“मुझे नहीं पता तुम क्या बोल रहे हो,” साहूकार ने अभी घटी घटनाओं से ख़ुद को अप्रभावित सा दिखाते हुए कहा।

हमीद ने अरबाज़ को इशारा किया। अरबाज़ ने अपना ख़ास ऑर्डर पर बना वो हथौड़ा निकाला जिसके हैंडल में लोहे का खूंटा लगा था, और साहूकार को धक्का देकर गोदाम के दरवाज़े से सटा दिया। फिर उसने उसका बायां हाथ पकड़कर दरवाज़े से लगाया और हड्डीतोड़ ताक़त से हथौड़े को उसकी तर्जनी पर मारा। साहूकार बुरी तरह चिल्ला पड़ा।

“मैंने अभी बस तेरे बाएं हाथ की एक उंगली से शुरुआत की है,” अरबाज़ ने कहा। “मैं पांचों उंगलियां तोड़ डालूंगा और मुझे तेरी हड्डियां टूटने की आवाज़ सुनकर बड़ा मज़ा आएगा। फिर ऐसा ही तेरे दाएं हाथ पर करूंगा। चल, अब मेरी ऐश करा दे, भैनचोद।”

ठीक आधे घंटे बाद, अपहृत प्रसाद अपने माता-पिता और दादा की गोद में था।

उस दिन अरबाज़ को पता चला कि अब्दुल दादा होना क्या होता है।



“मुझे अपना सारा बैलेंस कैश में निकालना है,” अरविंद ने कहा। “मेरा ख़्याल है कि हमारे करेंट अकाउंट में 94,516 रुपए हैं।

टैलर अपनी कुर्सी से गिरते-गिरते बची। लेकिन वो अपनी नाक पर रखे चश्मे को गिरने से नहीं रोक सकी। ख़ुशक़िस्मती से, उसका चश्मा उसकी गर्दन में पड़ी एक चेन से बंधा हुआ था।

“लेकिन-लेकिन-आपको करेंट अकाउंट में मिनिमम बैलेंस बनाए रखना होगा, सर,” उसने बहस की।

“मिनिमम बैलेंस कितना है?” अरविंद ने पूछा।

“हज़ार रुपए,” टैलर ने जवाब दिया।

“ठीक है। एक हज़ार रुपए खाते में छोड़ दीजिए और 93,516 रुपए मुझे दे दीजिए,” अरविंद ने कहा।

हैरान सी दिख रही टैलर ने कैश गिना और पासबुक पर अरविंद के दस्तख़त करवाने के बाद उसे पैसा दे दिया।

अरविंद ने फिर से टैलर के पीछे दीवार पर लगे कैलेंडर को देखा। मिस्टर राव अभी कलकत्ता में ही होंगे। एक महीना अभी पूरा नहीं हुआ था।

अरविंद ने कैश अपने ब्रीफ़केस में रखा, बाहर जाकर वहां इंतज़ार कर रहे जॉयदीप से मिला और सड़क पार एक दुकान की ओर बढ़ गया।

डीलर उसका इंतज़ार कर रहा था। “आज सोने की क़ीमत 111.87 रुपए प्रति दस ग्राम है। आपके पास कितना पैसा है?” उसने पूछा।

“मेरे पास 93,516 रुपए हैं,” अरविंद ने जवाब दिया।

“इसका मतलब है कि आप 8,359 ग्राम सोना ले सकते हैं,” उस आदमी ने धीमे से सीटी बजाते हुए कहा। “पक्का आप इसे बिस्कुटों या छड़ों में नहीं लेना चाहते?”

“नहीं। मुझे कच्चे डले चाहिए। चार मैश के साइज़ का हो तो बेहतर होगा। प्रीमियम कितना लगेगा?”

“क़ीमत का बीस प्रतिशत,” उस आदमी ने नज़र बचाते और अरविंद को तीन डले

देते हुए कहा।

“हमारी बात दस प्रतिशत की हुई थी,” अरविंद ने वज़न, आकार और रंग देखकर डले वापस लौटाते हुए कहा।

“हां, लेकिन मेरा ख़्याल था कि शुद्धता का स्तर कम होगा। ये सब बीस से बाईस कैरट की रेंज में हैं।”

“दस प्रतिशत-वर्ना मैं बैंक में जाकर अपना पैसा वापस जमा करा दूंगा,” अरविंद ने बिना हिचकिचाहट के कहा।

“पंद्रह प्रतिशत। आप मेरा नुक़सान तो नहीं कराना चाहेंगे न?” सोने के डीलर ने कहा।

“मैं आपको पसंद करता हूं, इसलिए ग्यारह प्रतिशत दे दूंगा। इससे ज़्यादा नहीं,” अरविंद ने कहा।

ग्यारह मिनट और बारह प्रतिशत बाद, अरविंद और जॉयदीप सोने के आठ किलो डलों से भरे सूटकेस के साथ दुकान से निकल पड़े।

जब वो नेहरू रोड और एस्प्लेनेड रो के चौराहे को पार कर रहे थे तो सूटकेस खुल गया। आठ किलो सोने के डले सूटकेस से निकलकर सड़क पर बिखर गए।

बुरी तरह घबरा गया जॉयदीप हाथ हिला-हिलाकर ट्रैफ़िक को रोकने लगा जबकि अरविंद सड़क से डलों को उठाकर वापस सूटकेस में रखने लगा।

लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। हर राहगीर थोड़ा-बहुत सोना उठा लेने की कोशिश में था।

कलकत्ता की सोने की होड़ शुरू हो चुकी थी।



मुस्तफ़ा शिवड़ी के एक छोटे से ऑफ़िस से हफ़्ते में सातों दिन बिज़नेस चलाता था। उसके आदमी तारदेव, भायखला, मझगांव, रे रोड, लालबाग़, परेल, नायगांव, शिवड़ी, वरली और प्रभादेवी के मिलों वाले इलाक़ों में मटके के अड्डे चलाते थे, जिससे आसपास की चॉलों के मिल कामगारों के लिए सट्टा खेलना आसान हो गया था।

मुस्तफ़ा का सफ़र बड़ा दिलचस्प रहा था। कच्छ में एक मछुआरे के यहां पैदा हुआ मुस्तफ़ा एक प्रवासी के रूप में बंबई आया और शहर के ढाई लाख मिल मज़दूरों की फ़हरिस्त में शामिल हो गया। वो कॉटन की खुलने और बंद होने की दरों पर शौक़िया बाज़ियां लगाता था। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि ये कभी इतना लोकप्रिय हो जाएगा।

कॉटन की खुलने और बंद होने की दरें आमतौर पर न्यूयॉर्क कॉटन एक्सचेंज से शिवड़ी में बॉम्बे कॉटन एक्सचेंज तक टेलीग्राफ़ के ज़रिए हफ़्ते में पांच दिन दिन में दो बार पहुंचती थीं। मुस्तफ़ा के लिए इसका मतलब ये था कि ये सट्टा सोमवार से

शुक्रवार तक जारी रहता था।

शिवड़ी में मुस्तफ़ा के छोटे से ऑफ़िस में रात नौ बजे और बारह बजे मिल कामगारों की भारी भीड़ होती थी जब न्यूयॉर्क से कॉटन की क़ीमतों की घोषणा होती थी और सट्टे का फ़ैसला होता था। इनमें से कई लोग बहुत दूर से यहां तक आते थे।

फिर एक दिन, अब्दुल दादा मुस्तफ़ा से मिलने आया। दादा ने अपने आदमियों से इस नई दीवानगी के बारे में सुना था और वो इसका भाग बनना चाहता था। उसने मुस्तफ़ा को वो ज़बरदस्त प्रस्ताव दिया जिससे इंकार नहीं किया जा सकता था।

उसने मुस्तफ़ा से अपने काम में संशोधन करने को कहा जिसमें कॉटन की क़ीमतों का इस्तेमाल करने के बजाय लोग एक मटके से निकाले गए ताश के पत्तों पर सट्टा खेलें। इस मामूली से बदलाव के ज़रिए, अब सट्टा सप्ताह में सातों दिन खेला जा सकता था। इससे बिज़नेस चालीस फ़ीसदी बढ़ जाता।

अब्दुल दादा ने मुस्तफ़ा को अपनी दुकानें, गोदाम और आदमी देने का भी प्रस्ताव दिया जिससे उसका सट्टे का खेल दो सौ जगहों तक पहुंच जाता। इस बढ़ी हुई पहुंच की वजह से लोगों के लिए अपने घरों या फ़ैक्टरियों के नज़दीक ही बाज़ियां लगाना निहायत आसान हो जाता। इससे बिज़नेस दस गुणा बढ़ जाता। मुस्तफ़ा को सारी बाज़ियों पर दस प्रतिशत कमीशन मिलता और वो उसका पैंसठ प्रतिशत अब्दुल दादा को देता। मुस्तफ़ा जानता था कि अब्दुल दादा कोई ऐसा आदमी नहीं था जिससे बहस की जा सके।

मुस्तफ़ा अरबाज़ को समझाने के लिए बैठा कि मटका किस तरह चलता है। एक चायवाले लड़के ने तांबई रंग की मीठी कटिंग चाय के दो गिलास उनके सामने लाकर रख दिए। मुस्तफ़ा ने चाय की एक ज़ोरदार चुस्की मारी और फिर भाषण देने लगा।

“ज़ीरो से नौ तक कोई भी तीन अंक चुन लो,” उसने कहा।

अरबाज़ ने सोचा और कहा, “पांच-नौ-तीन।”

“ठीक है। अब इन तीनों को जोड़ो। क्या आया?” मुस्तफ़ा ने पूछा।

“सत्रह।”

“इसका आखरी अंक क्या है?”

“सात।”

“तो पहला ड्रॉ 593 होगा और सात उसका प्रतिनिधित्व करेगा। ये शुरुआती ड्रॉ होगा। अब ज़ीरो से नौ तक तीन अंक और चुनो,” मुस्तफ़ा ने कहा।

“सात-एक-आठ,” अरबाज़ ने जवाब दिया।

“अब तीनों को जोड़ो। कितना आया?”

“सोलह।”

“इसका आख़री अंक क्या है?”

“छह।”

“तो दूसरा ड्रॉ 718 होगा और उसका प्रतिनिधित्व छह करेगा। ये आख़री ड्रॉ होगा,” मुस्तफ़ा ने समझाया।

मुस्तफ़ा के बोलने के साथ-साथ अरबाज़ नोट्स लेता जा रहा था।

लोग इन सारे नतीजों पर कई-कई बाज़ियां लगाते हैं। लोग शुरुआती और आख़री तीन अंक के नंबरों पर बाज़ियां लगाते हैं, जैसे इस मामले में 593 और 718, या शुरुआती और आख़री प्रतिनिधि नंबरों पर, जैसे इस मामले में सात और छह। लोग शुरुआती और आख़री प्रतिनिधि नंबरों को मिलाकर भी बाज़ियां लगाते हैं, जैसे इस मामले में छिहत्तर। और, शुरुआती और आख़री ड्रॉ नंबरों के जोड़ पर भी बाज़ियां लगाते हैं, जैसे इस मामले में सत्रह और सोलह। तो बाजियां 9:1 से लेकर 999:1 तक कुछ भी हो सकती हैं।”

अरबाज़ सुनता रहा, और सोचता रहा कि काश उसने स्कूल में मिस्टर डीसूजा के पढ़ाने के समय गणित पर ज़्यादा ध्यान दिया होता।

क्लास पूरी हुई, तो वो उठ खड़ा हुआ और एक तमिल ब्राह्मण की तलाश में निकल गया जो इस सबको समझ लेगा।



“मुस्तफ़ा भाई, मैं तुम्हारी मुलाक़ात मुरली से कराना चाहूंगा,” अरबाज़ ने कहा।

मुस्तफ़ा ने अपने खाते में लिखते-लिखते लापरवाही से सिर हिलाया। पिछले दिन की बाज़ियां, आमदनी, अदायगी और मुनाफ़े का सारा हिसाब अब्दुल दादा तक दोपहर तक पहुंचाना था।

“मैं जल्दी में हूं,” मुस्तफ़ा ने कहा। “दादा आज हम दोनों से मिलना चाहते हैं।”

“मैं मुरली को साथ ला सकता हूं?” अरबाज़ ने पूछा। “ये मेरा स्कूल का पुराना दोस्त है। हम दोनों रोज़ौरी हाईस्कूल में साथ पढ़ते थे।”

मुस्तफ़ा ने मुरली को देखा। वो दुबला-पतला तमिल था जिसके माथे पर संदल का लेप लगा हुआ था।

“दादा को अजनबियों से मिलना पसंद नहीं है,” मुस्तफ़ा ने रूखेपन से कहा।

“प्लीज़, मुस्तफ़ा भाई,” अरबाज़ ने विनती की। “बस कुछ मिनट को। ये बहुत ज़रूरी है।”

मुस्तफ़ा मान गया। वो जानता था कि दादा एक नए आदमी को देखकर नाराज़ होगा। मैं अरबाज़ को क्यों बचा रहा हूं? उसने खुद से पूछा।

वो तीनों एक खटारा ऑस्टिन ए40 में बैठे। कई नाकाम कोशिशों के बाद, इंजन आख़िरकार खड़खड़ाकर स्टार्ट हो गया।

बांद्रा में अब्दुल दादा के घर पहुंचने पर, तीनों को डॉन के विशाल बाथरूम में लाया गया। वो संगमरमर के एक गहरे बाथटब में लेटा 555 का सिगरेट पी रहा था जबकि टब के झागों के बुलबुलों से एक महक सी ऊपर हवा में उठ रही थी। गुलाबी बैलबॉटम और उससे मैचिंग टॉप पहने एक लड़की स्टूल पर बैठी उसके पैरों की उंगलियों को रगड़ रही थी।

“ये लड़का कौन है?” दादा ने मुरली को देखकर मुस्तफ़ा से पूछा।

“दादा, इसका नाम मुरली है, और ये गणित का ज़बरदस्त माहिर है,” अरबाज़ ने जवाब दिया। “मैं इसे आपसे मिलवाना चाहता था। ये स्कूल में मेरे साथ था।”

“तो मुझे इससे मिलने में क्यों दिलचस्पी होगी? तुम्हें साली ज़रा भी समझ नहीं है,” अब्दुल दादा ने गुलाबी लड़की को जाने का इशारा करते हुए कहा।

“क्योंकि मुझे लगता है कि हम टर्नओवर को छुए बग़ैर मटके के मुनाफ़े को तिगुना कर सकते हैं,” अरबाज़ ने अब्दुल दादा के ग़ुस्से को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा।

“तुम कहते हो ये गणित का जादूगर है?” अब्दुल दादा ने ये सुनकर थोड़ा नर्म पड़ते हुए कहा कि मुनाफ़ा तिगुना हो सकता है। “9867 को चौंतीस से भाग देने पर क्या आएगा?” वो ग़ुर्राया।

“290.2058… आपको कितने दशमलव तक जवाब चाहिए?”

फिर दादा ने मुरली को गुणा करने के लिए अंकों की एक पूरी श्रृंखला दे डाली। “7,686,369,774,870 को 2,465,099,745,779 से गुणा करने पर क्या आएगा?”

मुरली ने अंकों को नोट किया लेकिन गणना अपने दिमाग़ में ही की। “जवाब है 18,947,668,177,995,400,000,000,000,” मुरली ने बत्तीस सैकंड में जवाब दिया।

“ये तो कुछ भी नहीं है, दादा,” अरबाज़ बोला। “मैं कभी स्क्वेयर रूट नहीं कर पाता था लेकिन ये बंदा अपने दिमाग़ में ही सत्रह रूट कर लेता है!”

“तो तुम्हारे दोस्त को कैसे लगता है कि हम अपना मुनाफ़ा तिगुना कर सकते हैं?” अब्दुल दादा ने पूछा।

अरबाज़ ने मुरली को देखकर सिर हिलाया। लड़के ने अपनी जेब से एक तह किया हुआ काग़ज़ निकाला और पढ़ने लगा।

“फ़िलहाल, सिंगल डिजिट सही बताने पर एक पर दस की अदायगी होती है,” मुरली ने हिचकिचाते हुए बोलना शुरू किया। “ये देखते हुए कि सही सिंगल डिजिट बताने की संभावना दस में एक है, हमें अदायगी रुपए पर आठ रखनी चाहिए। ऐसा करके हम आगे चलकर ज़्यादा पैसा कमा सकते हैं।”

“बोलते जाओ,” अब्दुल दादा ने कहा, जिसके कान ज़्यादा मुनाफ़े के बारे में सुनकर खड़े हो गए थे।

“डबल डिजिट में सही भविष्यवाणी की संभावना सौ में एक है, इसलिए उसमें हमें रुपए पर सत्तर देने चाहिए। इस तरह हम ज़्यादा जोखिमपूर्ण बाज़ियों पर अदायगी

को कम करके ढेरों पैसा कमा सकते हैं," मुरली ने आगे कहा।

"मुझे इस लड़के की बात पसंद आ रही है," अब्दुल दादा ने खुश होकर कहा।

"सिंगल, डबल और ट्रिपल डिजिट्स में भी, हमें ज़्यादा बार बोले गए अंकों पर अदायगी कम करनी चाहिए। जैसे सात, आठ, 108 और 786 को सटोरिये ज़्यादा चुनते हैं। ये लकी या पवित्र अंक माने जाते हैं। हमें इन पर अदायगी कम कर देनी चाहिए।"

"ट्रिपल का क्या होगा?" मुस्तफ़ा ने पूछा, जो अब मुरली के सब कुछ जानने वाले रवैये से खीजने लगा था।

"ट्रिपल डिजिट में जीतने का चांस हज़ार में एक है। इसलिए अदायगी काफ़ी कम होनी चाहिए, एक रुपए पर ढाई सौ के लगभग।

"और पूरी बाज़ी पर?" अब्दुल ने पूछा।

"इसमें उम्मीद दस लाख में एक की है। इसलिए एक रुपए पर दस हज़ार की अदायगी ठीक होनी चाहिए," मुरली ने जवाब दिया। "जब अदायगी बड़ी दिखाई देती है, तो उम्मीद की उतनी परवाह नहीं की जाती।"

"शुक्रिया, मुरली, तुम बाहर मेरा इंतज़ार करोगे?" अरबाज़ ने पूछा। और मुरली संगमरमर के बाथरूम से बाहर चला गया।

"मुझे तुमपे फ़ख्र है, अरबाज़," अब्दुल दादा ने कहा। "अभी तुम्हें बिज़नेस में लगे मुश्किल से दो दिन हुए हैं, और तुम इतनी जल्दी मुझे और अमीर बनाने के तरीक़े ढूंढ़ने लगे। मुस्तफ़ा, वही करो जो ये मद्रासी लुंगीवाला कहता है। उसे तन्ख़ाह भी दो ताकि वो तुम्हारे लिए अदायगियों में बदलाव करता रह सके।"

"जी, दादा," इस सबसे हैरान मुस्तफ़ा ने कहा। "चलो, अरबाज़, वापस शिवड़ी चलते हैं।"

"रुको," अब्दुल दादा ने कहा। "मुस्तफ़ा, तुम जाओ। लुंगीवाले को अपने साथ ले जाना। अरबाज़ यहीं रुकेगा। मुझे ज़रा इससे खुलकर बात करनी है।"

मुस्तफ़ा उन दोनों को छोड़कर चला गया। वो थोड़ा नाराज़ सा दिखता था।

अब्दुल दादा ने नरमी से बात की। "बेहतर ये होता है कि तुम्हारे दुश्मन तुम्हारी समझदारी के बजाय तुम्हारी बेवक़ूफ़ी को ज़्यादा आंकें। आइंदा कभी मुस्तफ़ा और हमीद समेत किसी को भी ये मत महसूस होने देना कि उन्हें तुमसे ख़तरा है। कुछ बात करनी हो, तो उसके बारे में मुझसे अलग से बात करना।"

"मैं माफ़ी चाहता हूं, दादा," अरबाज़ ने जवाब दिया।

"हर जीत के बाद, अपने चाकू पर धार रख लेना बेहतर होता है," डॉन ने टब से निकलते और गुलाबी लड़की को आवाज देकर बुलाते हुए कहा। "लेकिन, ख़ैर, तुमने अच्छा काम किया। आज से तुम सीधे मुझसे बात करोगे और मेरे ही साथ रहोगे।"



स्टेट्समैन में सोने के डलों के बारे में एक लेख छपा।

सोने के डलों की एक बड़ी मात्रा नेहरू रोड और एस्प्लेनेड रो के व्यस्त चौराहे पर ग़लती से गिर गई। डलों के मालिक मिस्टर अरविंद बागड़िया ने इस रिपोर्टर को बताया कि वो अपने सेफ़ डिपॉज़िट वॉल्ट जा रहे थे कि अचानक उनका सूटकेस टूट गया। सूत्रों के अनुसार मिस्टर बागड़िया सोने की खोज से जुड़े हैं और फ़िलहाल छह स्थलों पर जांच कर रहे हैं। मिस्टर बागड़िया अपना आधा माल तो उठाने में सफल रहे, लेकिन उन्होंने बताया कि बाकी का आधा माल राहगीरों ने चुरा लिया।

बृजमोहनलाल आगबबूला हो गया।

"तुम्हें अहसास है तुमने कितना बड़ा नुक़सान किया है? तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो गया है? यही सिखाया है मैंने तुम्हें बिज़नेस के बारे में? तुम्हें अंदाज़ा है कि इनकम टैक्स वाले हमारा क्या करेंगे?"

अरविंद अपने पिता की फटकार को धैर्यपूर्वक सुनता रहा लेकिन उसकी नज़र लगातार अपनी डेस्क पर रखे काले रंग के रोटरी टेलीफ़ोन पर थी।

"तुम मेरी बात सुन क्यों नहीं रहे हो?" उसके पिता ने पूछा। "फ़ोन में ऐसी क्या ख़ास बात है?"

अरविंद शांत और ख़ामोश रहा। वो मन ही मन सौ से उलटी गिनती करने लगा। वो तिहत्तर पर पहुंचा था कि फ़ोन बजने लगा।

"बी. रवि एंड आई. डागा," वो फ़ोन उठाकर इस तरह बोला जैसे वो कंपनी का स्विचबोर्ड ऑपरेटर हो। "मिस्टर बागड़िया? मेरा ख़्याल है वो अभी किसी मीटिंग के लिए बाहर चले गए हैं लेकिन शायद दस मिनट में आ जाएंगे। आप उनके लिए कोई संदेश देना चाहेंगे, सर?" अरविंद आगे बोला। "अच्छा, ग्रेट ईस्टर्न होटल, हां। किस समय? दोपहर? ज़रूर, सर। मैं संदेश पहुंचा दूंगा।"

"ये सब क्या था?" बृजमोहनलाल ने पूछा, जो अभी भी गुस्से में दिखाई दे रहा था।

"मैं आपको बाद में बताऊंगा," कहता हुआ अरविंद तेज़ी से दरवाज़े की ओर लपका। वो बाईस मिनट बाद डलहौजी स्क्वेयर पर ग्रेट ईस्टर्न होटल पहुंच चुका था। बारह बजे। वो ठीक समय पर पहुंचा था।

अरविंद ने घड़ी देखकर पांच मिनट इंतज़ार किया। और फिर अंदर चल दिया।

1840 में स्थापित किया गया ग्रेट ईस्टर्न होटल पूर्व के आभूषण के रूप में जाना जाता था। अंग्रेज़ कहा करते थे कि आदमी चाहे तो होटल के एक छोर से प्रवेश करे, एक पूरा लिबास और शादी का तोहफ़ा या फिर बग़ीचे के लिए बीज ख़रीदे, शानदार खाना खाए, एक बड़ा पैग मारे और अगर बारमेड राज़ी हो, तो दूसरे छोर से निकलकर सगाई भी कर ले।

लेकिन अरविंद वहां शादी के लिए नहीं आया था। यहां पैसा अहम था।

वो लैदर की एक आरामदेह आरामकुर्सी में बैठा ही था कि बेहतरीन ढंग से इस्त्री किया हुआ सूट पहने एक नौजवान स्मार्ट सा दक्षिण भारतीय व्यक्ति उसके पास आया। "आपसे दोबारा मिलकर अच्छा लगा, मिस्टर बागड़िया। इतने कम समय में आने के लिए शुक्रिया," उसने कहा।

"मुझे भी, मिस्टर राव," अरविंद ने उठकर उसके बेदाग़ साफ़-सुथरे हाथ से हाथ मिलाते हुए कहा। "मद्रास से फ़्लाइट के दौरान आपसे बातचीत करके बहुत अच्छा लगा था।"

"मैंने देखा आप आज की ख़बरों में हैं," नौजवान उद्योगपति ने एकदम साफ़ लहजे में कहा। ईटन और ऑक्सफ़ोर्ड ने अपना पूरा प्रभाव डाला था।

"वो मेरी नादानी थी," अरविंद ने कहा।

"मुझे अपने खनन बिज़नेस के बारे में कुछ बताइए," विजय राव ने कहा।

"हम कई क्षेत्रों में पूर्वेक्षण कर रहे हैं—लगभग छह जगहों पर। हमें पूरी उम्मीद है कि इनमें से आधी जगहों पर तीन से चार ग्राम प्रति टन मिलेगा," अरविंद ने समझाया।

"अब इतने विनम्र मत बनिए," राव ने हंसते हुए कहा। "फ़िलहाल तो भारत में सोने की कुल दो खानें हैं—हट्टी और कोलार। और आपने सड़क पर जो बिखेरा, उसे देखकर लगता है कि आपका काम पूरी तरह चालू है।"

अरविंद ने कुलबुलाने का नाटक किया। फिर वो साज़िशी ढंग से आगे को झुका। "वो खोज महज़ एक इत्तफ़ाक़ थी। खोज शुरू करने के बाद सोना ढूंढ़ने तक में लगभग एक दशक लग जाता है, मिस्टर राव। अन्वेषण की लागत बहुत ज़्यादा होती है। इसमें ज़मीन के सर्वेक्षण, नमूनों की जांच, आकलन और ड्रिलिंग शामिल होती है। सच कहूं, तो ये मेरे बस से बाहर होता जा रहा है, सर।"

"मैंने इसीलिए टेलीफ़ोन किया था," मिस्टर राव ने कहा। "आप चाहें, तो मैं एक झटके में आपकी आर्थिक समस्याएं दूर कर सकता हूं।"

"वाक़ई? कैसे?" अरविंद ने मासूमियत से पूछा।

"मैं एक क़ीमत तय करके आपकी छहों खानें ख़रीद सकता हूं," युवा बिज़नेसमैन ने कहा।

"लेकिन हमारे पास अभी तक खनन के अधिकार नहीं हैं। हमारे पास बस छहों स्थलों के लिए रीकॉनैसां परमिट हैं। इस बात की भी कोई गारंटी नहीं है कि इन स्थलों से कुछ निकल ही आएगा। आपको वो अधिकार बेचना अनुचित लगता है जो हमारे पास हैं ही नहीं।"

"वो फ़ैसला मुझे करने दीजिए," विजय राव ने कहा। "मैं छहों स्थलों के लिए आपको पांच लाख का चेक देने को तैयार हूं। मेरा ख़्याल है कि आपके पास एक शैल कंपनी है और कि शैल कंपनी के शेयर्स बेचे जा सकते हैं?"

"जी, हां, सर। और आपका प्रस्ताव उदार है। लेकिन बस-"

“क्या बात है? क्या ये बहुत अच्छा प्रस्ताव नहीं है?” राव ने अपनी भौंहें उठाते हुए पूछा।

“ओह, बिल्कुल है। बस मेरे वकीलों को लगता है कि उनके पास पंद्रह लाख के आसपास के प्रस्ताव हैं। आपने मेरे साथ इतनी मेहरबानी की है कि मुझे आपको ये बताते हुए भी शर्मिंदगी हो रही है।”

“वकील क्या जानें? अगर वो इतने ही समझदार होते, तो वो बिज़नेस कर रहे होते,” विजय राव ने गुस्से से कहा। “कौन हैं आपके वकील?”

“डिग्बी एंड दस्तूर,” अरविंद ने बड़े आराम से जवाब दिया।

उसने राव को कुलबुलाते देखा। स्पष्ट था कि राव ये नाम सुनकर थोड़ा परेशान सा हो गया था। डिग्बी एंड दस्तूर कलकत्ता की सबसे पुरानी लॉ फ़र्मों में से एक थी, जिसकी स्थापना 1893 में एक अंग्रेज़ मिस्टर जे.एल. डिग्बी और एक पारसी मिस्टर जीसी. दस्तूर के बीच पार्टनरशिप के रूप में हुई थी। ब्रांड इक्विटी बहुत ज़बरदस्त थी। सबसे अहम ये कि फ़र्म ने हाल ही में अदालत में राव के वकीलों को बुरी तरह हराया था।

“अगर आप वादा करें कि आप शर्तों पर बातचीत के लिए वकीलों के पास नहीं जाएंगे, तो मैं आपको अभी दस लाख का चेक दे सकता हूं,” राव ने कहा।

“क्या मैं आपसे प्रस्ताव को थोड़ा बेहतर बनाने का निवेदन कर सकता हूं?” अरविंद ने पूछा।

“मैं ऐसा कर सकता हूं कि आपको दस लाख का चेक दूं, और साथ में आपको एल्बर्ट मिल्स नाम की कंपनी के अपने शेयर्स दे दूं। ये बंबई में एक कपड़ा बनाने की यूनिट है लेकिन मेरे किसी काम की नहीं है।”

“मगर…” अरविंद ने कहा।

“कोई अगर-मगर नहीं मिस्टर बागड़िया। हमारी डील पक्की है कि नहीं?”

अरविंद अपना मुंह बिगाड़कर प्रस्ताव के बारे में सोचने लगा। अगर एल्बर्ट मिल्स के शेयर्स बेकार भी हों, तब भी उसे दस लाख मिल रहे थे। दो मिनट बाद उसने राव की आंखों में देखा और कहा, “आप बहुत तगड़ी सौदेबाज़ी करते हैं, सर, और मेरे पिता इसके लिए मुझसे बहुत नाराज़ होंगे, लेकिन मेरा सहजबोध कह रहा है कि मुझे आपके साथ जाना चाहिए। इसलिए जवाब ‘हां’ है।”

राव ने अपनी जैकेट की अंदरूनी जेब से एक चेकबुक निकाली और उसके एक पेज पर कुछ लिखने लगा। फिर उसने वेटर से एक काग़ज़ लाने को कहा। उसने सामान्य लिखाई में एक पेज का अनुबंध लिखा, उसे एक बार देखा और फिर उसे अरविंद की मंज़ूरी के लिए उसकी ओर बढ़ा दिया।

अरविंद ने दस्तख़त किए और कृतज्ञतापूर्वक राव से चेक ले लिया।

राव से हाथ मिलाते समय अरविंद सामान्य ढंग से सांस लेने की कोशिश करता रहा। होटल से निकलने तक भी वो अपनी सांसों पर काबू पाता रहा।

होटल से सुरक्षित दूरी पर पहुंचने के बाद ही उसने ख़ुशी की चीख़ मारी।



वेटर उडिपी में बैठे उन दो नौजवानों को देख रहा था। दोशे, इडली, मेडू वड़ा और गर्मागरम सांभर की प्लेटों के साथ फ़िल्टर कापी भी टेबल पर रखी थी।

दोनों ने भुक्खड़ों की तरह खाने पर हमला बोल दिया था।

"तुमने मुझे ये नौकरी क्यों दिलाई, अरबाज़?" मुरली ने दोशे का एक पीस सांभर में डुबोते हुए पूछा।

"सीधी सी बात है, मुरली। मैं अपने दोस्तों की फ़िक्र करता हूं। मुझे पता था तुम्हें काम चाहिए," अरबाज़ ने अपने सामने रखी कटोरी से सांभर सुड़कते हुए कहा।

"सिर्फ़ यही वजह थी?" मुरली ने पूछा।

अरबाज़ हंसने लगा। "मुस्तफ़ा और अब्दुल दादा के बीच समझौता ये है कि मुस्तफ़ा सारी बाज़ियों पर दस प्रतिशत कमीशन लेगा और उसका पैंसठ प्रतिशत अब्दुल दादा के साथ बांटेगा। मुझे लगता है वो ऊपर से कुछ और भी उतार रहा है। मैं चाहता हूं तुम इसकी ख़बर मुझे देते रहना," वो बोला।

दोनों दोस्तों ने कॉफ़ी के अपने स्टील के गिलासों को एक दूसरे से टकराया। ये एक लंबी और मुनाफ़ेबख़्श साझेदारी की शुरुआत थी।



"मुझे ये दस लाख का चेक जमा करना है," अरविंद ने कहा। "मेरा ख़्याल है कि हमारे करेंट अकाउंट में अभी सिर्फ़ दस हज़ार रुपए हैं।"

टैलर एक बार फिर से अपनी कुर्सी से लुढ़कते-लुढ़कते बची। सौभाग्य से, इस बार उसके गले की ज़ंजीर को उसके चश्मे को गिरने से बचाने की ज़रूरत नहीं पड़ी।

ये आदमी पागल है। एक दिन पहले अपना सारा बैलेंस निकाला और अगले ही दिन उसका दस गुणा जमा करा रहा है।

"जी, सर," वो बोली। "मैं ब्रांच मैनेजर को बुलाकर लाती हूं। आप चाय लेंगे?"

पैसा हर व्यक्ति और हर चीज़ को बदल देता है, अरविंद ने सोचा।

काम पूरा होने के बाद, अरविंद रिसेप्शन पर बैठे जॉयदीप के पास पहुंचा। "एक दिन के काम के लिए बुरा नहीं है न?" आंखों में चमक लिए अरविंद ने जॉयदीप से पूछा। "मेरा ख़्याल है कि हमारे निवेशक अपने पैसे पर एक हज़ार प्रतिशत मुनाफ़े से काफ़ी ख़ुश होंगे। क्या कहते हो?"

जॉयदीप हंसने लगा। "मुझे नहीं पता था कि तुमने सड़क पर जानबूझकर सोना गिराया था, अरविंद। मैं तो घबरा गया था!"

“मैंने उसे नेहरू रोड और एस्प्लेनेड रो के चौराहे पर भी जानबूझकर ही गिराया था क्योंकि स्टेट्समैन का ऑफ़िस ठीक वहीं है। मैं जानता था कि कोई न कोई रिपोर्टर आसपास ज़रूर होगा। और मैं सही था।”

“मुझे ख़ुशी है कि तुमने सोने की खानें बेच दीं, अरविंद,” जॉयदीप ने धीरे से कहा।

“क्यों?” अरविंद ने पूछा।

“क्योंकि तुम्हें सोना नहीं, स्टील बनाना चाहिए,” जॉयदीप ने जवाब दिया।

“क्यों?” अरविंद ने पूछा।

“क्योंकि तुम्हारा हौसला स्टील जैसा है, मेरे दोस्त।”



परोमिता ने एकदम अचानक ही अरविंद से मिलने के लिए कहा था। वो सोने की खानों के मामले में इतना व्यस्त रहा था कि पिछले कई हफ़्तों से उसे परोमिता के साथ समय बिताने का मौक़ा ही नहीं मिला था।

अपनी हालिया कामयाबी की वजह से अरविंद ने ख़ूब पैसा उड़ाने का फ़ैसला किया था। “डिनर के लिए मोकैंबो चलते हैं,” उसने परोमिता से कहा। मोकैंबो मशहूर पार्क स्ट्रीट के एकदम बग़ल में फ़्री स्कूल स्ट्रीट पर स्थित था; ये एक किलोमीटर लंबी एक फ़ैशनेबल सड़क थी जिस पर ट्रिंका‘ज़, स्काई रूम, ब्लू फ़ॉक्स और मूलिन रूज जैसे अनोखे नामों से जाने जाने वाले कई रेस्तरां और नाइटक्लब थे। रात ढलते-ढलते, सड़क पर महंगी कारों की लाइन लग जाती और डिनर जैकेटें में सजे-धजे जैंटलमेन और महंगे हैंडबैग झुलाती लेडीज़ क्लबों की ओर बढ़ जाते जहां वो संगीत की धुनों पर फ़ॉक्सट्रॉट या चा-चा करते, और आमतौर पर श्वेत एंग्लोइंडियन्स द्वारा संचालित लाइव बैंडों पर गाते अपनी शामें बिताते थे।

परोमिता को ये आइडिया बहुत ज़्यादा पसंद नहीं आया था। “मैं तो चाहूंगी कि हम सामान्य ढंग से मिलें,” उसने बोलना शुरू किया लेकिन अरविंद ने उसकी बात काट दी। आख़िरकार, वो अरविंद की योजना के मुताबिक ही जाने को तैयार हो गई।

“तुमने ख़बरें सुनीं?” बैठने के बाद परोमिता ने पूछा। “आज भारतीय सेना ने गोवा को आज़ाद करा लिया। उन्होंने इसका नाम ऑपरेशन विजय रखा था। 1961 में, हमने साढ़े चार सौ साल के पुर्तगाली शासन का अंत कर दिया।”

“मुझे इससे क्या मतलब?” अरविंद ने पूछा। “विदेशी शक्तियां भारतीय सेना के आगे समर्पण करती रहें। मैं तो अभी बस तुम्हारे आगे समर्पण करने का सोच रहा हूं।”

ख़ूबसूरत परोमिता के चेहरे पर उसकी हमेशा जैसी दिव्य मुस्कान पसर गई। अरविंद ने ऐसा नाटक किया जैसे उसके दिल में कोई तीर आ लगा हो। दोनों हंसने लगे।

पांच कलाकारों की टीम के साथ एक रूखी आवाज़ वाली गायिका कोई अद्भुत गीत गा रही थी, और रेस्तरां में ख़ूब हलचल थी। एक जर्मन आर्किटेक्ट ने इंटीरियर की सजावट की थी, एक इटैलियन शेफ़ ने मेन्यु तैयार किया था, और एक ब्रिटिश फ़ैशन

डिज़ाइनर ने गायकों की ड्रेसें डिज़ाइन की थीं। डांस फ़्लोर बेल्जियम से आयातित मज़बूत शीशे से बनाया गया था जिसके नीचे रंगीन लाइटें जल-बुझ रही थीं। रेस्तरां में एकमात्र भारतीय चीज़ वहां मौजूद लोग थे।

अरविंद ने व्हिस्की की एक चुस्की ली और पूछा, "तुम्हें एक बात बताऊं?"

"ज़रूर," परोमिता ने अपनी वाइन से घूंट लेते हुए कहा।

"मैंने तुम्हारे जैसी प्यारी मुस्कान कभी नहीं देखी," उसने रिवाज के मुताबिक़ कहा।

"अब मैं तुम्हें एक बात बताऊं?" परोमिता ने अचानक गंभीर होते हुए पूछा।

"बोलो," अरविंद ने कहा।

"मैं बंबई शिफ़्ट हो रही हूं, अरविंद।"



"तुम मुझे क्यों छोड़ रही हो?" अरविंद ने कहा, जिसकी आवाज़ से सारा आनंद निचुड़ चुका था।

"मैं तुम्हें नहीं छोड़ रही हूं, अरविंद," परोमिता ने उसे आश्वासन दिया। "मैं बस कलकत्ता छोड़ रही हूं। मेरे सामने और कोई विकल्प नहीं है-मेरे पिता का बंबई ट्रांसफर हो गया है। मेरे माता-पिता जा रहे हैं।"

"लेकिन तुम्हें उनके साथ जाना क्यों ज़रूरी है?" अरविंद ने बेतुका सवाल किया।

"और मैं रहूंगी कहां?" परोमिता ने पूछा। "तुम उन्नीस साल के हो, अरविंद। बेशक तुमने ढेर सारा पैसा कमा लिया है लेकिन मेरे साथ ऐसा नहीं है। मैं एक रूढ़िवादी बंगाली परिवार से हूं और अपनी शादी तक मुझे अपने मां-बाप के साथ ही रहना होगा।"

"लेकिन हम शादी तो कर सकते हैं," अरविंद ने बहस की। "मैं अभी तुम्हारे घर चलूंगा और तुम्हारे पिता से तुम्हारा हाथ मांगूंगा। उसके बाद हम मेरे घर में रह सकते हैं। समस्या हल!"

परोमिता ने नम आंखों से अरविंद को देखा और इंकार में सिर हिला दिया। "ऐसा नहीं होगा, अरविंद," वो बोली।

"क्यों? मुझे बताओ मैं तुम्हें यहां रोकने के लिए क्या कर सकता हूं," अरविंद ने बेचैन होकर पूछा। "तुम्हें यहां रोकने के लिए मैं कुछ भी करूंगा।"

कुछ देर तक एक असहज सी ख़ामोशी रही। फिर वो हिचकिचाते हुए बोली। "बंबई में मेरे मामा मशहूर फ़िल्म डाइरेक्टर पिनाकिन देब हैं। उन्होंने मेरी मां से बात की थी..."

"किस बारे में?" अरविंद ने पूछा।

"वो एक फ़िल्म बना रहे हैं और उन्हें एक नया चेहरा चाहिए," परोमिता बोली।

“उन्होंने उस भूमिका के लिए मेरा स्क्रीन टैस्ट लेने का प्रस्ताव दिया है।”

“तो तुम किसी बकवास फ़िल्म के लिए मुझे छोड़ दोगी,” आहत अरविंद ने पूछा।

“समझने की कोशिश करो, अरविंद। मैं तुम्हें प्यार करती हूं और तुम इसे मेरे लिए आसान नहीं बना रहे…”

अरविंद खड़ा हुआ, उसने अपना पर्स निकाला और बिल से कहीं ज़्यादा पैसा टेबल पर रख दिया।

“कहां जा रहे हो?” परोमिता ने पूछा, जिसके गालों पर आंसू बहने लगे थे।

“जानती हो किसी को प्यार करने से बदतर क्या होता है, परोमिता?” अरविंद ने पूछा, जिसके मुंह से हर शब्द प्यार, गुस्से, झल्लाहट और खेद के मिश्रण के साथ निकल रहा था।

“क्या?” परोमिता ने पूछा।

“ये जानना कि दूसरा व्यक्ति आपको कभी प्यार करता ही नहीं था,” अरविंद ने कहा और मोकैंबो से बाहर जाने के लिए चल पड़ा जबकि जलपरी जैसी ड्रेस पहनी गायिका शिरेल्स का गाना ‘विल यू स्टिल लव मी टुमॉरो?’ गा रही थी।



अब्दुल दादा का इकलौता साप्ताहिक शौक था नियमित रूप से चर्चगेट के एंबैसडर होटल जाना।

अब्दुल दादा के आदमी ऐसी चीज़ों की तस्करी करते थे जिनकी अक्सर होटल में ज़रूरत पड़ती थी और होटल का यूनानी मालिक जैक वोयंट्ज़स उसका दोस्त बन गया था। जैक हमेशा पहलू में खूबसूरत औरतों और दांतों के बीच कसकर दबे बड़े से हवाना सिगार के साथ नज़र आता था। साल के शुरू में उसे दो असाधारण रूप से खूबसूरत महिलाओं—जयपुर की महारानी गायत्री देवी, और भारत के दौरे पर आई हुई जैकी कैनेडी—के नाम टोस्ट करते देखा गया था।

एंबैसडर में एक ऐसा रेस्तरां था जो दौलतमंदों के लिए यक़ीनन जाने लायक़ था। इसका नाम था अदर रूम। अंदर जाने के लिए आपको फ़ॉर्मल कपड़े पहने होना चाहिए था। ये आवश्यक शर्त थी। दूसरी शर्त थी कि जैक वोयंट्ज़स आपको पसंद करे। अब्दुल हमेशा जैक की लिस्ट में सबसे ऊपर होता था।

टोनी पिंटो के प्रबंधन में जैज़ क्वार्टेट माहौल को शानदार बना देता था जबकि आगंतुक सरलॉइन स्टेक, लैंब चॉप्स या ब्रेस्ड ऑक्स टंग का मज़ा ले रहे होते थे। बंबई में ऐसे ही अच्छे कुछ और होटल थे जैसे बॉम्बेली, रैंडेवू, एस्टोरिया’ज़ वेनिस और रिट्ज़ में लिटिल हट, लेकिन अब्दुल जिसमें जाता था वो बस अदर रूम था।

उस शाम अब्दुल अपनी काली मर्सिडीज़-बेंज़ पॉन्टन डब्ल्यु128 से एंबैसडर की ओर जा रहा था। उसका एक बॉडीगार्ड आगे की सीट पर बैठा था जबकि डॉन और उसकी रखैल पीछे बैठे थे। वो काली साड़ी और उसके साथ सॉलिटेयर डायमंड का

नेकलेस पहने थी। उसने बालों को बूफ़ांट स्टाइल में बनाया था जिससे वो लगभग अब्दुल जितनी लंबी ही दिख रही थी। उसके चेहरे ने बॉलीवुड के उसके बेहतरीन दिनों में बहुत मर्दों के दिलों को चुराया था।

एक पुरानी बेबी हिंदुस्तान दादा की मर्सिडीज़-बेंज़ के पीछे चल रही थी। इस दूसरी कार में अरबाज़ के साथ दूसरा बॉडीगार्ड था।

जब कार चर्चगेट पहुंची तो अब्दुल दादा के ड्राइवर ने ज़ोर से हॉर्न बजाया क्योंकि उसके सामने बंबई की सर्वव्यापी घोड़ागाड़ी विक्टोरिया आ गई थी। अचानक, गोलियों की बौछार होने लगी, घोड़ागाड़ी में बैठे दो आदमियों ने अब्दुल की कार पर फ़ायरिंग शुरू कर दी थी। गोलियां कार से टकराईं तो विंडस्क्रीन हज़ारों किरचों में बिखर गया। ड्राइवर और सामने की सीट पर बैठा बॉडीगार्ड तो फ़ौरन ही मारे गए, उस रात उनके कट्टे एक बार भी नहीं चले थे।

अरबाज़ और दूसरा बॉडीगार्ड जो पीछे की कार में थे बाहर निकले और रेंगते हुए मर्सिडीज़ की ओर बढ़े। अरबाज़ अपना रिवॉल्वर पकड़े हुए था, अब्दुल दादा का कहना था कि हर पल वो उसके साथ रहना चाहिए। वो अब्दुल दादा की कार के बाएं दरवाज़े के पास पहुंचा और उसे खोला। अंदर कार खून और कांच का ख़ौफ़नाक मंज़र बनी हुई थी। दादा की खूबसूरत रखैल के सीने में सीधे गोली लगी थी और वो एक ओर को झुकी हुई थी और मर चुकी थी। दादा समझदारी से अगली और पिछली सीटों के बीच की जगह में नीचे बैठ गया था। एक गोली उसके दाएं कंधे को छील गई थी और खून उसकी कलफ़ लगी सफ़ेद शर्ट से बहता हुआ उसके लाल कमरपट्टे में मिल गया था।

शूटर्स ने अपनी बंदूकें फिर से भरीं और अरबाज़ और दूसरे बॉडीगार्ड को निशाना बनाने लगे। अरबाज़ ने दादा को निकालने के लिए दरवाज़े को ढाल की तरह इस्तेमाल किया। "मेरी फिक्र मत करो, बेटे," दादा ने कहा। "मुझे इनकी गोलियां लाकर दो। मैं चाहता हूं कि कल सुबह के नाश्ते में वो मुझे टोस्ट पर लगाकर पेश की जाएं।"

अरबाज़ ने दूसरे बॉडीगार्ड को आवाज़ दी। "दादा को बाहर निकालो और इन्हें हमारी कार में ले जाओ। मैं जाकर दादा के नाश्ते का इंतज़ाम करता हूं, तुम इन भड़वों को हिलगाए रखना।"

अरबाज़ जल्दी से मर्सिडीज़ के नीचे घुस गया और सड़क पर आगे की ओर खिसकने लगा। शूटर अब बॉडीगार्ड और अब्दुल दादा को लक्षय बना रहे थे। बॉडीगार्ड ने खुद को दादा के चारों ओर लपेट लिया था और अपनी दोनलिया से फ़ायरिंग भी करता जा रहा था।

अरबाज़ कार के अगले हिस्से की ओर से बाहर खिसका और जल्दी से विक्टोरिया के नीचे घुस गया, जिसका पिछला हिस्सा लगभग मर्सिडीज़ के अगले बंपर को छू रहा था। वो बस ये मना रहा था कि विक्टोरिया में सवार आदमी उसे देख न पाएं और कि वो उन्हें औचक पकड़ने का फ़ायदा उठा सके।

घोड़े की पिछली टांगों के बीच से निकलकर उसने गाड़ीवान को सीधा निशाना बनाया जो माथे में एक बड़ा सा लाल छेद लिए लुढ़क गया। अचानक ही घोड़ा

हिनहिनाया और घबराकर भागने लगा। विक्टोरिया आगे को लहराई और अरबाज़ ने जल्दी से उस प्लेटफ़ार्म को पकड़ लिया जिस पर आमतौर से गाड़ी का बैज नंबर लगा होता है। घोड़े की दुलत्ती से बाल-बाल बचते हुए वो खुद को ऊपर खींचकर गाड़ीवान की सीट पर पहुंच गया।

विक्टोरिया के अंदर दो आदमी और कई बंदूकें थीं। जब गाड़ी अचानक चलने लगी तो वो पलटे मगर इस बीच अरबाज़ एक आदमी की गर्दन में गोली उतार चुका था। गोली के झटके से वो आदमी पीछे की ओर लहरा गया। दूसरे आदमी ने, जो काले होंठों और टैटू से भरी बांहों वाला छोटा और मोटा सा बंदा था, अरबाज़ पर निशाना साधा मगर चलती हुई गाड़ी की वजह से झूल गया जो अब बेक़ाबू भाग रही थी। इन कुछ पलों ने अरबाज़ को गाड़ी में अंदर कूदने का मौक़ा दे दिया था। मोटे आदमी के हाथ की बंदूक़ चली मगर गोली बहक गई। तब तक अरबाज़ ने अपनी गन से फ़ायर कर दिया था। उसने उस आदमी के दाएं हाथ की धज्जियां उड़ा दीं, वो दर्द से चीख उठा।

अरबाज़ ने अपनी गन से उस आदमी की खोपड़ी पर वार किया लेकिन मोटू के बाएं हाथ से पड़े अपरकट के लिए वो तैयार नहीं था। अरबाज़ भिन्ना गया लेकिन उसने ज़बरदस्ती खुद को होश में रखा। उसने अपनी गन से दूसरी बार फ़ायर किया। ये एक सोच-समझकर लगाया गया निशाना था। उस आदमी का बायां हाथ भी उड़ गया। देखो, मां, कोई हाथ नहीं!

पूरी तरह से लाचार उस आदमी ने सिर से अरबाज़ पर वार करने की कोशिश की लेकिन अरबाज़ अपनी रिवॉल्वर की मूठ उसके सिर पर ले आया। फिर उसने बंदूक का बैरल उस आदमी के मुंह में रखा और कहा, "तेरे पास तीन सैकंड है जिनमें तू मुझे बताएगा तुझे किसने भेजा है।"

अरबाज़ ज़ोर से बोलकर गिनने लगा। "एक... दो... ती-" लेकिन उस आदमी के मुंह से घुटी सी आवाज़ निकली। "प्लीज़ गोली मत- मत- चलाना!"

अरबाज़ ने उसके मुंह में से नली निकाली। "रंगराजन पि-पि-पिल्लै ने," मोटे आदमी ने कहा।

"रंगराजन पिल्लै ने मारने को कहा था?" अरबाज़ ने पूछा। पिल्लै बंबई का हिंदू डॉन था। अंडरवर्ल्ड में भी जाति और धर्म के हिसाब से बंटवारे थे। अब्दुल दादा शहर का मुसलमान डॉन था तो हिंदुओं की ओर से भी पलड़ा बराबर रहना था। वो पलड़ा रंगराजन पिल्लै था।

"ह-ह-हां," वो मोटा हकलाया।

"क्यों?" अरबाज़ ने जानना चाहा। "अगर तूने सब कुछ नहीं बका तो मैं तेरा भेजा उड़ाने में हिचकूंगा नहीं।"

"अब्दुल दादा के तुम्हें छोड़ देने के बाद यूसुफ़ की बीवी उससे इंसाफ़ मांगने आई थी। वो बहुत नाराज़ थी कि यूसुफ़ का बदला नहीं लिया गया।"

"मैं तेरी जान बख़्श रहा हूं," अरबाज़ ने घोड़े का निशाना लेते हुए कहा जो अब पूरी

तरह से बेक़ाबू हो चुका था। रस्से का बकसुआ पशु की चमड़ी में धंसा जा रहा था और स्पष्ट था कि वो बहुत तकलीफ़ में था। घोड़ा सड़क पर ढेर हो गया, जिससे गाड़ी ज़मीन से उठ गई।

अरबाज़ गाड़ी से कूद गया। "उम्मीद करूंगा कि आर्थर रोड जेल में तेरा समय अच्छा गुजरे। हमारे वर्दीवाले दोस्त बस पहुंचने ही वाले हैं।"



"ये साला हुआ क्या था?" अब्दुल दादा के सामने खड़े अरबाज़ ने पूछा। दादा के दोनों बॉडीगार्ड निकल लिए थे—शूटआउट में मारे गए थे।

दादा के निजी डॉक्टर को बुला लिया गया था जो वार्डन रोड पर रहता था। उसने टिटेनस का इंजेक्शन दे दिया था, और दादा के कंधे के घाव को साफ़ करके पट्टी बांध दी थी। दादा के ख़ास आदमियों, हमीद और मुस्तफ़ा, को भी बुला लिया गया था।

"ये पुरानी कहानी है," दादा ने जवाब दिया। "कई अंकों का ड्रामा। इसे बताओ, हमीद।"

"पिल्लै मद्रास का है और कोई दस साल पहले बंबई आया था," हमीद ने अरबाज़ को बताया, उसकी मूंछें गुस्से से कांप रही थीं। "उसने रेलवे स्टेशन पर क़ुली के तौर पर काम शुरू किया था, लेकिन फिर वो देसी शराब के गैंग के संपर्क में आ गया। उसने माटुंगा और चेम्बूर के इलाक़ों में शराब का धंधा शुरू कर दिया, और फिर नशीली दवाओं का। ये वो इलाक़े थे जहां दक्षिण भारत से आए लोग हावी थे। इसने बज़ाहीर उसे हमारे ख़िलाफ़ ला खड़ा किया।"

"मैंने उसे मारने के लिए लोग भेजे," अब्दुल दादा ने अपनी व्हिस्की के घूंट भरते हुए बताया। "इसका नतीजा रही ज़बरदस्त गैंग वार जो दो साल से ज़्यादा चली।"

"फिर क्या हुआ?" अरबाज़ ने पूछा।

"दोनो पार्टियों की समझ में आ गया कि दूसरे को आसानी से ख़त्म नहीं किया जा सकता," हमीद ने जवाब दिया। "हम मिले और हमने इलाक़ों के साथ ही क्षेत्र भी बांट लिए। जिन क्षेत्रों में हम मज़बूत थे वो थे नाजायज़ शराब, जुआ, तस्करी, ज़मीन पर अतिक्रमण, और सुपारी। हमारा क़ानून उमेरखड़ी, चकला मार्केट, नल बाज़ार, कमाठीपुरा, और चोर बाज़ार में चलता था। पिल्लै का मज़बूत पहलू नशीली दवाएं, जबरन वसूली और वेश्यावृत्ति और, भौगोलिक नज़रिए से उसके इलाक़े माटुंगा, चेम्बूर, धारावी और मलाड हैं। हम साथ जीने के लिए राज़ी हो गए थे। समझौता हो गया था।"

"लेकिन फिर ये हमला क्यों?" मुस्तफ़ा ने पूछा। "यूसुफ़ की बीवी की शिकायत पर कार्रवाई करके पिल्लै बंबई के समझौते को क्यों ख़त्म करेगा?"

"आजकल बंबई पर किसी सरकार का शासन नहीं है। चीन के साथ हुई भयंकर लड़ाई ने सरकारी मशीनरी पर बहुत सीमाएं लाद दी हैं," अब्दुल दादा ने कहा। "कभी-

कभी तो मेरा दिल चाहता है कि फ़्रंट पर जाऊं और खुद चीनियों को गोली मार दूं। वो हमें बुरी तरह पीट रहे हैं!"

"नतीजा ये है," हमीद ने मुद्दे पर वापस आते हुए कहा, "कि आधा बंबई अब्दुल दादा के हुक्म से चलता है और बाक़ी आधा पिल्लै के। मुसलमानों के लिए दादा की कही बात क़ानून है और हिंदुओं के लिए पिल्लै की, हालांकि दोनों गैंगों में दोनों मज़हबों के लोग हैं। जैसे दादा गणेश मंडल को पैसा देते हैं, वैसे ही पिल्लै रोज़ाना माहिम की दरगाह पर हज़ारों को खाना खिलाता है। ये हमला साफ़ इशारा है कि पिल्लै अब आधे शहर का डॉन ही बना नहीं रहना चाहता है। उसे ये पूरा चाहिए।"

"मेरी राय है कि हम उन्हें खोज निकालें और पिल्लै और उसके गुर्गों को हमेशा के लिए निबटा दें," मुस्तफ़ा ने कहा। "आप बस इशारा कीजिए, दादा, हम उन्हें चीरकर रख देंगे।"

"अपने गुस्से पर क़ाबू करना सीखो, मुस्तफ़ा," अब्दुल दादा ने झिड़की दी। अरबाज़ की ओर मुड़कर उसने पूछा, "तुम्हारा क्या ख़्याल है?"

"ये देखते हुए कि आपकी जान लेने के लिए किया हमला नाकाम रहा है, वो बहुत सावधान हो गए होंगे," अरबाज़ ने जवाब दिया। "पिल्लै से बदला लेने के लिए ये सही समय नहीं है।"

अब्दुल दादा मुस्कुरा दिया। इस नौजवान में उसे वो गुण दिख रहा था जो उसके बाक़ी आदमियों में नहीं था। सोचने, तर्क और विश्लेषण करने की क्षमता।

"हम ये बकवास क्यों सुन रहे हैं?" हमीद ने पूछा। "अरबाज़ को कुछ पता नहीं है कि हमारी दुनिया में कैसे काम होता है। दादा, अगर आपने जवाब नहीं दिया तो आपकी इज़्ज़त कम हो जाएगी। लोग सोचेंगे कि हम पिल्लै से डरते हैं!"

अब्दुल दादा ख़ामोश रहा। उसने अपना गिलास ख़ाली करते हुए व्हिस्की का एक घूंट और भरा। फिर उसने अपने आदमियों को देखा।

"कुछ दिन हम कुछ भी नहीं करेंगे। मुझे उस औरत का मातम करना है जिसे मैंने खो दिया है। वो अच्छी औरत थी। उसने उस तरह से मेरी ज़रूरतों का ख़्याल रखा था जैसे मेरी उस अहसानफ़रामोश बीवी ने नहीं रखा था। और मुझे सोचने का भी समय चाहिए," उसने सबको जाने का संकेत करते हुए कहा।

सबके जाने के बाद अरबाज़ को वापस बुला भेजा गया। "क्या तुम अपने दम पर इस काम का ज़िम्मा ले सकते हो?" अब्दुल दादा ने पूछा।

अरबाज़ जरा नहीं हिच किचाया। "हां, ले सकता हूं। मुझे यक़ीन है हमें इसे खुली लड़ाई में बदलने की ज़रूरत नहीं होगी।"

"मुझे इस फ़ैसले पर कभी पछताने मत देना," अब्दुल दादा ने कहा। "तुम अपनी योजना मेरे अलावा और किसी को नहीं बताओगे।"

अरबाज़ ने हामी भरी।



अरबाज़ ने एक बार फिर रेस्तराओं को स्कैन किया। उसने कारों को रुकते, शीशों को नीचा किए जाते और किनारे पर इंतज़ार करते रेस्तरां मैनेजरों के हाथ में कैश दिया जाते देखा। हरेक रेस्तरां के सामने अगले खाने का इंतज़ार करते भूखे लोगों की दोहरी या तिहरी लाइन बैठी होती थी। बिना किसी अपवाद के, सभी आदमी गंदे, भूखे और दयनीय थे। उदारता के कार्यों का एकदम सटीक जीवंत इश्तेहार। रेस्तराओं के अंदर, पीली मटन करी के पतीले खदक रहे होते थे जबकि बाहर पेट भरने वाले अगले चंदे का इंतज़ार करते भूखे लोगों के पेट गुड़गुड़ा रहे होते थे।

माहिम के वर्धी रेस्तरां वाकई अनूठे थे। दुनिया में और कहीं ऐसा होटल नहीं मिलेगा जो कुपोषितों को लक्षय करता हो। भले ही अंतिम लक्षय दान हो लेकिन ये रेस्तरां लाभ कमाने वाला व्यवसाय थे। वो भूखों का भोजनालय थे जो मख़दूम अली माहिमी की दरगाह को जाने वाली मुख्य सड़क से ज़रा दूरी पर बने थे। वास्तव में, माहिम के पूरे इलाक़े का नाम ही चौदहवीं सदी के उस फ़क़ीर के नाम पर पड़ा था।

अरबाज़ जब बेमक़सद भटक रहा था तब माहिम को एक अहम सालाना आयोजन के लिए सजाया जा रहा था। माहिम के दस दिन चलने वाले सालाना उर्स में जो बस एक हफ़्ते बाद शुरू होना था, लाखों लोग मज़ार पर आने वाले थे। माहिम पुलिस स्टेशन से एक बड़ा जुलूस शुरू होता जिसे मख़दूम अली माहिम का असली स्थान माना जाता है। बंबई के हर पुलिस थाने से दो पुलिस अफ़सर जाते। फिर ये अफ़सर फ़क़ीर के मज़ार पर फूलों की चादर चढ़ाते।

मेले के दौरान सारे वर्धी रेस्तराओं को रंगराजन पिल्लै पैसा देता था। किसी भूखे आदमी, औरत या बच्चे को लौटाया नहीं जाता था। दस दिन तक किसी भी भूखे इंसान को किसी गुज़रती कार से चंदा लेने के लिए हाथ फैलाए बिना खाना मिलता।

आपसी सद्भाव के आश्चर्यजनक कार्य के रूप में पिल्लै मज़ार पर चादर भी चढ़ाता था जबकि पुलिस, कथित रूप से उसकी घोर दुश्मन, देखती रहती। एक पर्यवेक्षक ने व्यंग्य में कहा था कि पुलिस और गैंगस्टरों के बीच की लड़ाई तकलीफ़ भोगती ग़रीब जनता के लिए रचा गया ड्रामा भर होती है; परदे के पीछे वो सब साथ होते हैं।

माहिम बाज़ार की ओर जाते हुए अरबाज़ ने फ़ोर स्क्वेयर सिगरेट जला ली थी। वो उन दुकानों पर गया जो उस इलाक़े के रेस्तराओं को मीट सप्लाई करती थीं। दुकानों पर मीट देवनार के क़साईघर से बड़े-बड़े ट्रकों में आता था, मगर वो रेस्तराओं में मीट भेजने के लिए छोटे तिपहिया डिलीवरी वाहनों का प्रयोग करती थीं।

अरबाज़ के दिमाग़ में एक योजना आकार ले रही थी। एक टैक्सी को रोकते हुए वो मुस्कुराया। उसकी अगली मंज़िल आइसक्रीम सैंडविच खाने के लिए के. रुस्तम था, फिर, धोबी तालाब की पीपुल्स फ़्री लाइब्रेरी में कुछ अच्छा समय बिताना।



क़व्वाली गायक खुदा और माहिम बाबा की अक़ीदत में पूरे जोश से गा रहे थे। बड़े वाले झूले और एक टॉय ट्रेन के साथ माहिम का समुद्रतट मेले का मैदान बन गया था। तमाशबीन नौजवानों को एक्रोबेटिक स्टंट करते देख रहे थे, जबकि गुब्बारे, खिलौने और क़ुल्फ़ीवाले बच्चों और उनके माता-पिता को लुभाने की कोशिश कर रहे थे।

माहिम बाबा की मज़ार के लिए चंदन के लेप और चादर को अपनी मंज़िल तक पहुंचने में सात घंटे लग गए। मख़दूम अली माहिमी की मज़ार माहिम के सबसे ज़्यादा भीड़ भरे इलाक़े में स्थित थी। इस ख़ास दिन तो जब तक कि आसपास की भीड़ न चाहे, किसी शख़्स के लिए वहां चल पाना नामुमकिन ही था। पुलिस बैंड और सैकड़ों लोगों के साथ माहिम पुलिस थाने के एक सब-इंस्पेक्टर ने फ़क़ीर की क़ब्र पर चंदन का लेप लगाया और, दूसरे अफ़सरों के साथ, चादर चढ़ाई।

वहां मौजूद भीड़ चर्चा कर रही थी कि इन रस्मों में पुलिस की इतनी अहम भूमिका क्यों होती है। कुछ का दावा था कि जब फ़क़ीर मरणासन्न थे तो एक सिपाही ने उन्हें पानी पिलाया था। दूसरों का दावा था कि माहिम बाबा ने एक बहुत ही पेचीदा केस हल करने में पुलिस की मदद की थी और क़ानून का लंबा हाथ तब से ही उनका क़र्ज़दार है।

अगला अहम व्यक्ति रंगराजन पिल्लै था। आधी बांह की कड़क सफ़ेद क़मीज़ और बेदाग़ सफ़ेद धोती पहने गैंगस्टर ने नाक के ठीक ऊपर और भौंहों के बीच में चंदन का तिलक लगा रखा था। उसके गले में वेंकटेश्वर के लॉकेट वाली ठोस सोने की चेन थी। हालांकि उसकी सिक्योरिटी नुमायां नहीं थी, मगर भीड़ में कई हट्टे-कट्टे लोग रिवॉल्वर और पिस्तौलें लिए दिख रहे थे। पुलिस की भारी मौजूदगी की वजह से वो पिल्लै से सावधानी भरी दूरी बनाए हुए थे।

पिल्लै के पीछे एक फ़क़ीर खड़ा था। उसने सिर पर एक हरी पगड़ी पहनी हुई थी। छोटी सी सफ़ेद दाढ़ी उसकी गर्दन तक पहुंच रही थी। उसने एक गंदा सा सफ़ेद कुर्ता, काली जैकेट और ब्राउन लुंगी पहन रखी थी। उसके कंधों पर एक हरी चादर पड़ी थी जिस पर क़ुरआन की पहली आयत कढ़ी हुई थी। उसके गले में तरह-तरह के मोतियों की मालाएं और तावीज़ पड़े हुए थे। उसके एक हाथ में बरतन था जिसमें सुलगते हुए कोयले और पत्ते रखे थे जिनसे उसके आसपास एक मीठा सा धुआं फैला हुआ था और दूसरे हाथ में एक मुलायम झाड़ू थी।

पिल्लै की मौजूदगी लगभग चुंबकीय थी। ये तो जानामाना सच था कि पुलिस अफ़सर, कस्टम अफ़सर और नगरनिगम के अफ़सर उससे बंधा-बंधाया पैसा पाते थे। अब्दुल दादा के स्मगलिंग के कामों के विपरीत जो शहर के अधिकृत बंदरगाहों के आसपास तक ही सीमित थे, पिल्लै की नशीले पदार्थों की टीम शिवड़ी-वडाला, वरसोवा, वरली, गोराई, माहिम और यहां तक की सुदूर रत्नागिरी के मैन्ग्रोव के घाटों पर काम करती थी। एक बार रंगराजन पिल्लै मध्यस्थ बन जाए तो ऐसा कोई झगड़ा नहीं था जिसका निपटान न हो सके। अगर रंगराजन पिल्लै तय कर ले कि ज़मीन के किसी टुकड़े का विकास होना है तो ऐसी कोई ज़मीन नहीं थी जिसका विकास न किया जा सके। अगर रंगराजन पिल्लै चाहे तो ऐसा कोई पुलिस अफ़सर नहीं था

जिसका ट्रांसफ़र न हो सके।

चादर चढ़ाने के बाद पिल्लै ने हाथ जोड़े और माथा टेका, पहले मज़ार पर फिर फ़क़ीर को। बाबा ने नरम झाड़ू से उसके कंधों को थपथपाकर उसे दुआ दी।

पलटकर पिल्लै ने अपनी उंगलियां चटकाईं। ये संकेत था कि हज़ारों ग़रीब और निम्नवर्ग के लोगों को खाना खिलाना शुरू किया जाए। पिल्लै मज़ार से निकला और उस तयशुदा रेस्तरां की ओर बढ़ गया जहां भूख से भरी आंखों वाली भीड़ को कुछ कलछे मटन करी देकर उसे प्रतीकात्मक रूप से कुछ लोगों को खुद खाना परोसना था। फ़क़ीर उसके पीछे लगा रहा। ये अड़ियल फ़क़ीर मुझसे और पैसा पटीलना चाहता है, पिल्लै ने मन ही मन सोचा। आजकल धर्म भी धंधा बन गया है।

"आपको हज़ारों-हज़ार दुआएं," पिल्लै से सबसे पहला भोजन पाने पर एक बिना दांतों वाले बूढ़े आदमी ने कहा। पिल्लै कृपापूर्वक मुस्कुराया और बोला, "आपकी दुआओं के सहारे ही जीता हूं, बाबा।" फ़क़ीर ने भी बिना दांत वाले आदमी को दुआ दी जो अपनी प्लेट लेकर जल्दी से हट गया था।

अगला एक कंकालनुमा आदमी था, जिसकी पसलियां उसकी खाल में से निकली पड़ रही थीं। पिल्लै ने उसे एक और कलछुल भात और सालन दिया। आदमी ने भाप उठते खाने को देखा, वो जैसे उसे पहचान ही नहीं पा रहा था। उसने कई दिन से भरपेट खाना नहीं खाया था। उसने जानवरों की तरह मुंह से ही खाना शुरू कर दिया। फ़क़ीर ने उस कंकालनुमा आदमी को दुआ दी हालांकि वो उसकी दुआओं की ओर से बेख़बर था।

खाना परोसे जाने के इंतज़ार में बैठी क़तार बहुत लंबी थी। अचानक, एक चीख़ उठी। ये वो बिना दांतों वाला आदमी था जिसे सबसे पहले खाना दिया गया था। "ये मटन नहीं है; ये तो सूअर है; ये हराम है!" कंकालनुमा आदमी ने भी खाना रोक दिया। उसने शिकायती नज़रों से पिल्लै को देखा। अचानक उसने गुस्से से अपनी प्लेट पिल्लै पर फेंक दी, जो पिल्लै की कलफ़ लगी सफ़ेद शर्ट को तेल भरे सालन से रंग गई। "एक हिंदू से हम और क्या उम्मीद कर सकते हैं? तुम यहां हमारा पेट भरने नहीं, हमें नापाक करने आए हो!"

पिल्लै के चारों ओर भीड़ जमा हो गई। उसके आदमियों ने उस तक पहुंचने की कोशिश की, लेकिन क्योंकि उनसे दूरी बनाए रखने के लिए कहा गया था इसलिए वो असावधान थे। उनमें से एक ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए गोली भी चलाई लेकिन इसका असर उल्टा ही हुआ। "हिंदू सूअर!" एक आदमी चिल्लाया। "इसने हमें नापाक करने के लिए जानबूझकर हमें ये खिलाया है," एक और चिल्लाया। कुछ ही पलों में भीड़ बेक़ाबू हो गई और सर्वशक्तिमान डॉन पिल्लै पर अचानक लात-घूंसों की बौछार होने लगी। फ़क़ीर ने घूंसों से बचाने के लिए पिल्लै को पकड़ लिया।

पुलिस ने भी पिल्लै तक पहुंचने की पूरी कोशिश की। उन्होंने लाठियां भांजी और रास्ता साफ़ किया लेकिन जब तक वो वहां पहुंचे, सीने में चाकू लगने से पिल्लै मर चुका था।

फ़क़ीर ग़ायब था।



“क्या प्लान था, और इसे कितनी नफ़ासत से अंजाम दिया गया था; मुझे तुम पर नाज़ है, मेरे बेटे,” अब्दुल दादा ने कहा, हमीद और मुस्तफ़ा देखते रहे। “ज़्यादातर नए रंगरूट छोटे शिकारों से शुरू करते हैं और यहां हमारे पास एक ऐसा रंगरूट है जिसने सबसे बड़े शिकार पर हाथ डाला!”

“हम इसे पुराने तरीक़े से करके भी कामयाब हो सकते थे,” मुस्तफ़ा ने नाराज़गी से कहा। “ये सब ड्रामा करने की क्या ज़रूरत थी?”

साला, चूतिया... मैंने तेरा काम कर दिया और मेरे इसे अच्छी तरह से कर देने पर अब तू मुझे नीचा दिखाना चाहता है, अरबाज़ ने मन ही मन सोचा मगर ख़ामोश रहा।

“पिल्लै के आदमी भड़के हुए हैं,” हमीद ने कहा। “हमें बदले की कार्रवाई के लिए तैयार रहना चाहिए।”

“जब सिर काट दिया जाए तो शरीर मर जाता है,” अब्दुल दादा ने जवाब दिया। “इस लड़के की कमियां निकालने की जगह हमें इसे मुबारकबाद देनी चाहिए कि इतना बढ़िया काम किया है। चलो, अरबाज़। ज़रा फिर से तो बताओ तुमने उसे कैसे मारा।”

अरबाज़ असहज हो गया। वो जानता था कि दादा की नजरों में अचानक चढ़ जाने की वजह से हमीद और मुस्तफ़ा उससे ख़ुश नहीं हैं। वो ख़ामोश ही रहा मगर अब्दुल दादा बार-बार कोंचता रहा।

आख़िरकार उसने बताया। “मैं जानता था कि पिल्लै को तभी मारा जा सकता है जब उसकी सुरक्षा कम हो। माहिम का उर्स बिल्कुल सही मौक़ा था। मैंने रेस्तरां के बावर्ची को रिश्वत देकर सप्लायर बदलवा दिया। जब ये हो गया तो बकरे के गोश्त को सूअर के गोश्त से बदलना आसान था। मुझे बस एक थ्री व्हीलर चाहिए था जो देवनार से गोश्त लेकर रेस्तरां में पहुंचा दे। बावर्ची किसी भी तरीक़े से दोनों गोश्तों में फ़र्क़ नहीं बता सकते थे क्योंकि वो सबसे बुरा गोश्त होता है-जिसे और कोई नहीं लेना चाहता। उनके पास तो जो आता है, उसे वो बस अपने पतीलों में डाल देते हैं।”

“ये सौ टके का आइडिया था,” दादा ठठाकर हंस पड़ा।

“मैं ये भी जानता था कि पिल्लै के पास अगर कोई जा सकता था तो बस कोई फ़क़ीर,” अरबाज़ ने आगे कहा। “मैंने जानबूझकर फ़क़ीर की पोशाक के हिस्से के तौर पर जैकेट पहनी थी। ये ज़रूरी थी जिससे कि मैं रामपुरी चाकू छिपा सकूं। पिल्लै अपनी सैक्युलर छवि को लेकर बहुत सजग रहता था और जब कोई मज़हबी आदमी उसके पास जाता था तो वो बहुत ही श्रद्धालु हो जाता था।”

“तुम्हें ये कैसे पता चला?” दादा ने पूछा।

“मैंने कई घंटे धोबी तालाब की पीपुल्स फ़्री लाइब्रेरी में बैठकर पिल्लै के बारे में अख़बारों के लेख पढ़े थे। उनमें पिल्लै के बारे में कई जानकारियां थीं।”

दादा और भी ज़ोरों से हंसा। “मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे कभी कोई ऐसा

आदमी मिलेगा जिसे वाक़ई पढ़ना आता हो; ध्यान रखना कि कल सुबह तुम मेरे लिए टाइम्स ऑफ इंडिया लाओगे," दादा ने अरबाज़ से कहा।

"क्यों, दादा? आप तो कभी अख़बार नहीं पढ़ते," अरबाज़ ने कहा।

"हां। लेकिन उस मादरचोद पिल्लै की मौत पर छपे लेख पढ़ने का मज़ा लूंगा।"



अरबाज़ अपनी चाभी से दरवाज़ा खोलकर अपने घर-कोलाबा के एक छोटे से आरामदेह दो बेडरूम के फ़्लैट-में घुसा। सामाजिक रूप से ऊपर चढ़ने की उसकी प्रगति सीधी थी लेकिन यक़ीनन धीमी नहीं थी। पहले, उसने एक पुराना बजाज स्कूटर लिया, फिर एक खटारा मॉरिस माइनर, और फिर एक डॉज किंग्सवे ली—और फिर नया फ़्लैट। अब्दुल दादा को उसे संतुष्ट करके बड़ी ख़ुशी होती थी, वो तो उसे अपने शौक़ पूरे करने के लिए अलग से पॉकेट मनी भी देता था। अरबाज़ की फ़ोर स्क्वेयर सिगरेट की जगह डनहिल ने ले ली थी।

उसे कुछ पकने की ख़ुशबू आई। ये उसकी मां की मशहूर चिकन बिरयानी की महक थी। वो दबे पांव रसोई में गया जहां वो प्याज़ को सुनहरी भूनने में मसरूफ़ थीं और उन्हें पीछे से पकड़ लिया। उसने वृद्ध महिला को चौंका दिया था। वो पलटीं और उन्होंने लाड़ से अरबाज़ को चपत मारी। "मैं अभी जल गई होती," शबाना ने नाराज़गी से कहा।

"लेकिन जलीं तो नहीं न," अरबाज़ ने कहा, उसका पेट कुलबुला रहा था। "मुझे भूख लगी है, अम्मी!"

"जाकर हाथ धो लो और डाइनिंग टेबल पर बैठो," शबाना ने कहा। "मैं कुछ ही देर में खाना परोसती हूं।"

अरबाज़ ने अपनी गन रसोई के काउंटर पर रख दी और बेसब्री से एक चम्मच उठाकर पतीले में से भाप छोड़ती बिरयानी निकाल ली।

"मुझे ये चीज़ अपने बावर्चीख़ाने में नहीं चाहिएं," उसकी मां ने सख़्ती से कहा। अरबाज़ ने जल्दी से गन को वापस होल्स्टर में रख लिया और अपनी मां के माथे पर चुंबन जड़ दिया।

"अब तो ये मेरी ज़िंदगी का हिस्सा है, अम्मी," उसने कहा। "अब्दुल दादा इसके बिना मुझे कहीं जाने ही नहीं देते।"

"अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त करे, मेरे प्यारे अरबाज़," शबाना ने कहा। "मुझे हरदम तुम्हारी फ़िक्र रहती है। मैं तुम्हारे अब्बा को खो चुकी हूं। अब तुम्हें भी नहीं खोना चाहती।"

अब्दुल दादा के दल में अपनी नई भूमिका के लिए अपनी मां को राज़ी करना बेहद मुश्किल रहा था। अरबाज़ के पिता अय्यूब नैतिक रूप से हमेशा सीधे-सच्चे इंसान रहे थे और शबाना को उनका ये गुण बहुत पसंद था हालांकि इसका मतलब हमेशा ग़रीबी

के स्तर के आसपास ही जीना रहा था।

उन्हें मनाने की ख़ातिर अरबाज़ ने चालाकी से उनके हाजी अली की दरगाह पर जाने की योजना बनाई थी। वहां रिश्वत पाया एक फ़क़ीर—जिसने बाद में अरबाज़ को उसकी फ़क़ीर की पोशाक भी मुहैया करवाई थी—उनसे मिला और उसने 'भविष्यवाणी' की कि अगर अरबाज़ अब्दुल नाम के किसी आदमी के साथ काम करेगा तो बहुत ऊंचाइयों तक पहुंचेगा। बाक़ी तो फिर आसान रहा था।

शबाना मटके के पास गई और उसका ढक्कन हटाया। उसके अंदर झांककर उसने तांबे का कड़ा निकाला जो एक शोधक की तरह तली में पड़ा था।

"इसे अपने साथ रखना," उसने कड़ा थमाते हुए कहा जिस पर अब नमी की हरी सी परत जम गई थी।

"क्यों?" अरबाज़ ने पूछा।

"ये उस गन से ज़्यादा तुम्हारी हिफ़ाज़त करेगा," उसने कहा। "अगली बार मुझे यक़ीन दिलाने के लिए शायद तुम्हें उस नक़ली फ़क़ीर की भी ज़रूरत न पड़े।"



वो चौरंगी रोड के अपने नए ऑफ़िस में थे। सोने की खान के सौदे ने उन्हें महंगी जगह पर जाने में मदद की थी। अरविंद और जॉयदीप के अलावा, अब उनके पेरोल पर तीन और कर्मचारी थे—एक अकाउंटेंट, एक रिसेप्शनिस्ट और एक टाइपिस्ट।

टाइपिस्ट एक युवती थी जिसका नाम हिल्डा फॉन्सेका था। वो उसकी पुरानी इंग्लिश टीचर की बेटी थी। मिसेज़ फॉन्सेका ने फ़ोन पर अरविंद से बात की थी, वो मदद मांगते हुए थोड़ा हिचकिचा रही थीं। अरविंद ने तुरंत ही उन्हें सहज किया था।

"जब आपकी क्लास में मैं अपना अकाउंट्स का काम करता था तो क्या कभी आपने मेरे नोट्स ज़ब्त किए थे?" उसने उनसे पूछा था।

"नहीं," उसकी टीचर ने कहा था।

"उम्मीद करूंगा कि आपकी बेटी भी इतनी ही उदार होगी," अरविंद ने चुहल की थी। "और उम्मीद करूंगा कि वो मुझे डांटेगी नहीं!"

"अरविंद, तुमने ख़बर सुनी?" जॉयदीप ने उसके दिवास्वप्न को तोड़ते हुए पूछा।

"क्या?" अरविंद ने पूछा।

"नेहरू नहीं रहे," जॉयदीप ने उदास स्वर में कहा।

अरविंद दुखी तो था, मगर हैरान नहीं हुआ। भारत-चीन युद्ध में हार के बाद से ही प्रधानमंत्री की तबीयत गिरती जा रही थी। 1963 का अधिकांश भाग उन्होंने कश्मीर में स्वास्थ्य लाभ करते बिताया था।

"उनकी मृत्यु कैसे हुई?" अरविंद ने पूछा।

“बज़ाहिर, वो देहरादून से दिल्ली लौटे थे। वो पूरी रात सोए लेकिन सुबह उन्होंने पीठ में तेज़ दर्द की शिकायत की। डॉक्टर आया मगर नेहरू बेहोश हो गए। उसके कुछ ही देर बाद उनकी मृत्यु हो गई। दिल का दौरा पड़ा था।” अगले दिन, पृष्ठभूमि में चल रहे रघुपति राघव राजाराम के गायन के साथ, तिरंगे में लिपटे जवाहरलाल नेहरू के शव को लोगों के अंतिम दर्शनों के लिए रखा गया। उसी दिन बाद में, यमुना नदी के तट पर शांतिवन में हिंदू रीति से नेहरू का अंतिम संस्कार किया गया। ये एक युग का अंत था।

“अब सत्ता का हस्तांतरण होगा,” अख़बार पढ़ते हुए अरविंद ने धीमे से कहा।

“तुम्हारा मतलब इंदिरा गांधी?” जॉयदीप ने पूछा।

“मुश्किल है,” अरविंद ने कहा। “सत्ता के पीछे की ताक़त कामराज हैं। मेरा अंदाज़ा है वो असली दावेदार मोरारजी देसाई को बेअसर करने के लिए लाल बहादुर शास्त्री को आगे करेंगे।”

“इसका हम पर कैसे असर पड़ेगा?” जॉयदीप ने पूछा।

“ये बहुत ज़बरदस्त बदलाव का समय है। बड़े सियासी बदलावों के साथ आर्थिक बदलाव भी आते हैं। हमें इस पल का फ़ायदा उठाना चाहिए।”

अरविंद कुछ मिनट सोच में डूबा रहा। फिर उसने फ़ोन उठाकर अपने पुराने और भरोसेमंद स्टॉकब्रोकर दीपांकर दा से बात की।

“नोमोश्कार, दीपांकर दा,” अरविंद ने कहा। “भारत में इस समय सबसे अच्छी खाद और कीटाणुनाशक कंपनियां कौन सी हैं?”

दस मिनट बाद वो फ़ोन से हटा। “तुम सोच क्या रहे हो?” जॉयदीप ने पूछा।

“शास्त्री नेहरू से बहुत भिन्न हैं,” अरविंद ने जवाब दिया। “वो समाजवादी हैं लेकिन इसे लेकर बहुत कट्टर नहीं हैं। ये आदमी भारत के खाद्य उत्पादन में मूलभूत बदलाव लाएगा, देख लेना। कृषि के लिए आवश्यक सभी चीज़ों की मांग बढ़ेगी। यही समय है कि इन कंपनियों में निवेश शुरू किया जाए।”



“अरविंद, दीपांकर दा का फ़ोन आया था,” जॉयदीप ने कहा। “जब वो तुम्हारी ओर से विभिन्न कीटाणुनाशक और खाद्य कंपनियों में निवेश कर रहे थे तो उन्हें एक खाद्य तेल यूनिट के बारे में पता लगा। ये यूनिट संपूर्ण रूप से बिकाऊ है।”

“क्यों?”

“बज़ाहिर, मैनेजमेंट सारा पैसा खा गया है। बैंक उन्हें काम करने के लिए पूंजी उधार देने को तैयार नहीं हैं। उनके पास गिरवी रखने के लिए कोई स्टॉक नहीं हैं।”

अरविंद ने किसी को फ़ोन किया। जॉयदीप को बातचीत का कुछ हिस्सा ही सुनाई दे पा रहा था। “मिस्टर सम्पत तेजपाल... निर्यात प्रतिबद्धताएं... खाद्य तेल की

क़ीमतें…”

अरविंद फ़ोन से हटा और जॉयदीप की ओर मुड़ा। “ये फैक्टरी किस जगह पर है? दीपांकर दा से हमें वहां मिलने को कहो।”

एक घंटे बाद, अरविंद, जॉयदीप और दीपांकर दा भारत एडिबल ऑयल्स के फ़ैक्टरी स्थल पर खड़े थे। फ़ैक्टरी का मैनेजर उन्हें फ़ैक्टरी दिखाने ले गया।

कंपनी ने खाद्य तेल की ट्रेडिंग कंपनी से शुरू किया था और बढ़कर तिलहन पेराई कंपनी बन गई और अंततः एक एकीकृत खाद्य तेल निर्माण यूनिट में तब्दील हो गई। अपने संस्थापक की देखरेख में कंपनी ने विभिन्न क़िस्म के तिलहनों जैसे नारियल, सोयाबीन, मूंगफली, सरसों, तिल और बिनौले की पेराई के लिए एक अति-आधुनिक संयंत्र मंगवाया था। बेतरतीब पड़ी फ़ैक्टरी में सबसे ज़्यादा दिखने वाली चीज़ स्टोरेज टंकियों की अंतहीन क़तारें थीं। तैयार उत्पाद इन विशाल टंकियों में रखा जाता था।

“ये प्लांट तो काफ़ी मॉडर्न है,” अरविंद ने कहा। “फिर क्या हो गया? ये कंपनी आर्थिक कठिनाई में क्यों है?”

दीपांकर दा बोले। “कंपनी को पिता ने स्थापित किया था लेकिन बेटों को दिलचस्पी नहीं थी। उनके गुज़रने के बाद, उन्होंने सारा पैसा खींच लिया और इस तरह उधार और रेहन में तालमेल बिगड़ गया। बैंक उधार बढ़ाने से इंकार कर रहे हैं। कंपनी को कोई चाहिए जो पैसा लगा सके। बस इतनी सी बात है।”

फ़ैक्टरी मैनेजर उन्हें एक सीढ़ी पर चढ़ाकर एक टंकी तक ले गया। ऊपर लगे पनडुब्बियों सरीखे ढक्कन को खोलकर उन्होंने अंदर झांका। टैंक ख़ाली पड़ा था।

“बैंक के रिकॉर्डों के मुताबिक़, इस टंकी के अंदर एक हज़ार किलोलीटर मूंगफली का तेल होना चाहिए,” दीपांकर दा ने कहा। “जैसा तुम देख सकते हो, इसके अंदर तली से कुछ इंच ऊपर से ज़्यादा तेल नहीं है।”

“अगर मैं बैंकों से उधार बढ़वा दूं तो?” अरविंद ने पूछा।

“बक़ाया पड़े बैंक ऋणों की वजह से तुम इस फ़ैक्टरी को कौड़ियों के दाम ख़रीद सकते हो,” दीपांकर दा ने कहा। “और अगर तुम बैंकों से इसमें पैसा लगवाना शुरू कर सकते हो, तो बाक़ी सब अपने आप ठीक हो जाएगा।”

“मालिकों से कह दें कि मैं इसे ख़रीद रहा हूं,” अरविंद ने कहा। “काग़ज़ात तैयार कर लें। एक बात और…”

“हां?” दीपांकर दा ने पूछा।

“मशीनें। कच्चे माल के बिना भी इन्हें चलाया जा सकता है?”



“भारत एडिबल ऑयल्स को कौन सा बैंक कार्यशील पूंजी देता है?” अरविंद ने बैलेंस

शीट को पढ़ते हुए पूछा।

“सैंट्रल कमर्शियल बैंक,” जॉयदीप ने जवाब दिया।

“क्या वो समय-समय पर स्टॉक का ऑडिट नहीं करवाते थे?” अरविंद ने पूछा।

“अपनी पूछताछ में मुझे पता चला है कि बैंक मैनेजर रिश्वतख़ोर था,” जॉयदीप ने कहा। “जब उड़ाऊ बेटों ने स्टॉक बेच डाले लेकिन बैंक का पैसा चुकाने की कभी परवाह नहीं की तो उसने नज़र फेर ली थी।”

अरविंद ने बैलेंस शीट एक ओर रखीं और एन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ कैमिकल प्रोसेसिंग एंड डिज़ाइन नाम की एक किताब उठा ली।

“क्या देख रहे हो?” जॉयदीप ने पूछा।

“कंपनी कौन से तेलों का उत्पादन करती है?” अरविंद ने जॉयदीप के सवाल को नज़रअंदाज़ करते हुए पूछा।

जॉयदीप ने गहरी सांस ली। “नारियल, सोयाबीन, मूंगफली, सरसों, तिल और बिनौला।”

“मेरे लिए ज़रा कुछ नोट्स बनाना, जॉयदीप,” अरविंद ने किताब में पढ़ते हुए गुज़ारिश की। “तीस डिग्री सेल्सियस पर नारियल के तेल का आपेक्षिक भार 0.915 और 0.920 के बीच होता है।”

जॉयदीप ने कर्तव्य भाव से आंकड़ों को लिख दिया।

“तीस डिग्री सेल्सियस पर सोयाबीन के तेल का आपेक्षिक भार 0.915 और 0.920 के बीच होता है।”

जॉयदीप ने और नोट्स लिखे।

“तीस डिग्री सेल्सियस पर मूंगफली के तेल का आपेक्षिक भार 0.909 और 0.913 के बीच होता है।”

अभी कुछ और नोट्स।

“और तीस डिग्री सेल्सियस पर बिनौले के तेल का आपेक्षिक भार 0.910 और 0.920 के बीच होता है।”

“अरविंद, ये सब क्या है?” खीजे हुए जॉयदीप ने अपना पैन और पैड नीचे रखते हुए पूछा।

“ये मामला भारी है,” अरविंद ने कुटिलता से मुस्कुराते हुए जवाब दिया। “तुम चाहते हो मैं साफ़-साफ़ बताऊं?”



“क्या बैंक ऑडिट के लिए कह रहा है?” अरविंद ने इंद्रजाल कॉमिक बुक को रखते

हुए पूछा जिसे वो पढ़ रहा था। आजकल उसने इंद्रजाल के लिए टिनटिन को छोड़ दिया था। जबसे उसने चौंसठ रुपए में इंद्रजाल की वार्षिक सदस्यता ली थी, उसे हर हफ़्ते एक कॉमिक मिलता था जिसमें ली फ़ाक द्वारा कल्पित रहस्यपूर्ण पात्र फ़ैंटम की कहानियां होती थीं। पीछे कहीं बीटल्स का रिकॉर्ड बज रहा था 'ए हार्ड डे'ज़ नाइट'।

जॉयदीप ने हामी भरी। "वो जानते हैं कि कमान अब तुम्हारे हाथ में है। इस उम्मीद ने कि उनके बट्टेखाते में गए ऋणों के अचानक वापस मिलने की संभावना है, उन्हें बेतहाशा जोश में ला दिया था।"

"अच्छा है। फ़ैक्टरी की टंकियों की भंडार क्षमता कितनी है?" अरविंद ने पूछा।

"लगभग एक हज़ार टन," जॉयदीप ने कहा। "ये हमारे देश की सबसे बड़ी भंडार क्षमताओं में से एक है।"

"फ़ैक्टरी में पानी की सप्लाई तो नियमित है न?" अरविंद ने पूछा।

"हां," जॉयदीप ने जवाब दिया। "फ़ैक्टरी हुगली के तट पर है। पानी कोई समस्या नहीं है।"

"बढ़िया, जॉयदीप। साइट के इंडस्ट्रीयल वाटर पंप की क्या क्षमता है?"

"पता करना होगा," जॉयदीप ने सिर खुजाते हुए कहा। "बैंक से क्या कहूं?"

"पंप की क्षमता का पता लगाओ और फिर मैं तुम्हें बताऊंगा कि हम बैंक से कब मिल सकते हैं," अरविंद ने जवाब दिया।

कुछ मिनट बाद, जॉयदीप के पास वो जानकारी थी जो अरविंद को चाहिए थी। "पंप हाउस जर्मन मशीन का इस्तेमाल करता है। इसकी क्षमता पांच सौ लीटर प्रति मिनट है।"

अरविंद ने कुछ जोड़-तोड़ की। "अगर मीटिंग अड़तीस घंटे बाद रखी जाए तब ठीक है। जाओ, इसे तय कर लो।"

वो रुका। "साथ ही प्रोडक्शन मैनेजर से कहना कि जैसा मैंने कहा है वैसा करे," अरविंद ने कहा। "और आज यूनाइटेड फ़ेडरेशन बैंक में कंपनी का एक नया खाता खोल लो। उसमें कुछेक लाख रुपए ट्रांसफ़र करना और फिर उसी दिन निकाल लेना। यही काम कल फिर करना।"

"ज़रूर। अब बताओगे भी कि तुम करना क्या चाह रहे हो?" जॉयदीप ने पूछा।

"तो हम करने ये वाले हैं..." अरविंद ने कहना शुरू किया।



सैंट्रल कमर्शियल बैंक के अधिकारियों को मैनेजिंग डाइरेक्टर के केबिन में ले जाया गया। अरविंद शांत-सहज दिखता हुआ लकड़ी के पैनलों वाले ऑफ़िस में बैठा था।

परिचयों के लेनदेन के बाद वो काम की बातों पर आ गए।

“हम हैरान हैं कि आपने इस कंपनी को ख़रीद लिया है, सर,” तेल चुपड़े बालों वाले एक्ज़ीक्यूटिव ने कहा। तेल कंपनी से संबंध रखने के लिए एकदम सही बंदा है, अरविंद ने सोचा। उसने मन ही मन उस एक्ज़ीक्यूटिव का नाम तेलू रख दिया। “कंपनी की सारी संपत्तियां बैंक के पास गिरवी रखी हैं और हमारे बोर्ड ने ऋण वापस मांगने का फ़ैसला किया है,” तेलू ने कहा। “अगर कंपनी भुगतान करने में नाकाम रहती है तो हमें संपत्तियां नीलाम करनी पड़ेंगी।”

“मैं भी उतना ही हैरान हूं कि आपने तीन साल इंतज़ार करने के बाद संपत्तियां नीलाम करने का फ़ैसला किया है,” अरविंद ने कोमलता से जवाब दिया। “आप जानते हैं कि आप ऋण का एक अंश भर ही वापस पा सकेंगे। आप सिर्फ़ इसलिए ऋण को वापस मांग रहे हैं क्योंकि नए मैनेजमेंट के पास चुकाने के लिए वित्तीय संसाधन हैं। मैं इसे बेईमानी कहूंगा।”

“नहीं, नहीं, सर। हम तो आपके साथ अच्छे संबंध बनाए रखना चाहते हैं,” तेलू ने जल्दी से कहा।

“अब मेरी फ़ैक्टरी पूरा उत्पादन कर रही है जैसा कि आपने देखा होगा,” अरविंद ने कहा।

तेलू ने हामी भरी। “फिर से मशीनों की आवाज़ सुनकर खुशी हो रही है, सर,” उसने अरविंद से कहा।

“जॉयदीप, इन्हें बैंक के स्टेटमेंट दिखाओ,” अरविंद ने कहा। जॉयदीप ने उसे बैंकरों के सामने रख दिया।

“इस स्टेटमेंट से आप देखेंगे कि मैं फ़ंड लेकर आया हूं। इनसे कच्चे माल के सप्लायरों को भुगतान किया गया है। हमारे ग्राहकों की ओर से भी पैसा आया है। फिर से, उन्हें कच्चे माल की क़ीमतों का भुगतान करने के लिए इस्तेमाल कर लिया गया। नक़द प्रवाह वापस शुरू हो गया है,” अरविंद ने कहा।

बैंकर ध्यान से सुनते रहे।

“अब अगर आप मेरे साथ आएं तो मैं आपको कुछ दिखाना चाहूंगा,” अरविंद ने कहा। वो उठ खड़ा हुआ और बैंकर उसके पीछे-पीछे आए।

वो स्टोरेज टंकियों की ओर गए, और अरविंद पहली टंकी की सीढ़ी पर चढ़ा। बैंक अधिकारी पीछे-पीछे चढ़े। उसने ढक्कन खोला और बैंकरों से अंदर झांकने को कहा। टंकी तेल से लबालब भरी थी।

“देखा, प्रोडक्शन के टाइट शैडयुल से क्या हो सकता है?” अरविंद ने पूछा। उसने उनसे अगली टंकी की ओर चलने को कहा। फिर से वो भरी हुई थी।

“मेरी तो राय है कि आप अपने ऑडिटर्स को टंकियों की जांच करने दें,” अरविंद ने कहा। “मेरे पास 11,36,000 लीटर रिफ़ाइंड तेल है। आज की तारीख़ में, मेरा स्टॉक आपके ऋण की मांग को पूरा करने के लिए कहीं ज़्यादा पर्याप्त है।”

तेलू की तो आवाज़ ही गुम हो गई थी।

“बेशक, अगर आप संपत्तियों की नीलामी ही करना चाहते हैं, तो शौक़ से करें। मैं अपनी किसी कंपनी से मामूली दामों पर उन संपत्तियों को ख़रीदवा लूंगा। मेरा अनुमान है कि नीलामी में आपको रुपए के क़रीब तीस पैसे मिलेंगे।”



“मुझे पता नहीं तुमने ये कैसे किया, अरविंद, लेकिन बैंक ऋण की अवधि और शर्तों पर फिर से बात करने को तैयार हो गया है,” जॉयदीप ने उत्तेजित स्वर में कहा।

“मुझे पता था वो मान जाएंगे,” अरविंद ने कहा।

“वो बक़ाया ब्याज का मार्जिन लेने को तैयार हो गए हैं,” जॉयदीप ने कहा। “उनको देने वाली कुल राशि 25 फ़ीसदी कम हो गई है; तुमने कैसे जाना कि वो इस झांसे में आ जाएंगे?”

“आसान है। फ़ैक्टरी की भंडारण क्षमता हज़ार टन है। मैंने देखा था कि हरेक टंकी की तली में कुछ इंच तेल था। तेल का आपेक्षिक भार पानी से कम होता है। इसीलिए तेल पानी पर तैरता है। मुझे बस टंकियों को पानी से भरवाना था, इससे ये आभास होता कि टंकियां तेल से भरी हुई हैं!”

“लेकिन अड़तीस घंटे का इंतज़ार क्यों?” जॉयदीप ने पूछा।

“क्योंकि फ़ैक्टरी का वाटर पंप प्रति मिनट पांच सौ लीटर पानी पंप कर सकता है। हमें एक हज़ार टन या लगभग 11,36,000 लीटर पानी पंप करवाना था। हिसाब लगा लो। टंकियों को भरने में लगभग अड़तीस घंटे ही लगते।”

“तुमने बहुत बड़ा जोखिम लिया था,” जॉयदीप ने कहा। “अगर वो नीचे लगे आउटलेट से नमूने लेकर जांच कर लेते तो उन्हें पता लग सकता था कि वो पानी है।”

“इसीलिए तो कैश के प्रवाह को दिखाने वाला बैंक खाता ज़रूरी था,” अरविंद ने कहा। “ये तथ्य भी ज़रूरी था कि मशीनों की आवाज़ आए भले ही उनमें कच्चा माल न जा रहा हो। इससे बड़ा सही प्रभाव पड़ा।”

दोनों दोस्त एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराए। “अब?” जॉयदीप ने पूछा।

“हिल्डा से कहो कि अहमदाबाद में मिस्टर सम्पत तेजपाल के लिए एक पीपी कॉल बुक कर दे। उसके पास नंबर है।”

“वो कौन हैं?” जॉयदीप ने पूछा।

“खाद्य तेल का देश का सबसे बड़ा निर्यातक,” अरविंद ने जवाब दिया। “पिछले साल हमारे देश ने 77,000 टन मूंगफली के तेल का निर्यात किया था, लेकिन इस साल कमी है। क़ीमत 1700 रुपए प्रति टन हुआ करती थी लेकिन अभी ही 2300 रुपए प्रति टन हो चुकी है। खाद्य तेल उत्पादकों के लिए ये ज़बरदस्त समय है लेकिन निर्यातकों के लिए भयानक समय है। उन्होंने सप्लाई के अनुबंधों और वचनबद्धताओं पर दस्तख़त कर दिए हैं जिन्हें वो पूरा नहीं कर सकते।”

“तुम उसे तेल बेचना चाहते हो?” जॉयदीप ने पूछा।

अरविंद मुस्कुराया। “जॉयदीप, कल टोक्यो ओलंपिक्स में क्या हुआ था?”

“भारत की हॉकी टीम ने गोल्ड जीता था,” जॉयदीप ने गर्व से कहा।

“मैंने भी कल यही किया था। मैंने गोल्ड जीता था,” अरविंद ने जवाब दिया।

“कैसे?” जॉयदीप ने पूछा।

“मैंने फ़ैक्टरी मिस्टर सम्पत तेजपाल को उससे तिगुनी क़ीमत पर बेच दी जितने में ख़रीदी थी।”

“तुमने दो सौ फ़ीसदी कमा लिया? ये तो अविश्वसनीय राशि है, अरविंद!” जॉयदीप ने हैरानी से कहा।

अरविंद ने बोलने से पहले एक पल सोचा। “जानते हो, जॉयदीप, जब हमने बिज़नेस शुरू किया ही था, तब मैं सोचता था कि पैसा ही ज़िंदगी की अकेली सबसे अहम चीज़ है। वो कई साल पहले की बात है।”

“और अब?” जॉयदीप ने पूछा।

“अब मैं जानता हूं कि ये सच है।”



लोकेशन जुहू का होटल होराइज़न थी। होटल का बॉलरूम न जाने कितनी बार इस्तेमाल हो चुका था। आप बस उस साल बनी पिछली दस फ़िल्में देखें तो पाएंगे कि लड़ाइयों, डांस, गानों और ड्रामा में इस्तेमाल हुआ हर कमरा होटल होराइज़न वाला ही है। अभिनेता-अभिनेत्रियां बदलते थे, उनके परिधान बदलते थे लेकिन कमरा नहीं बदलता था। उसकी अलंकृत छत पर प्लास्टर से बने फूल और पत्तों के कॉर्निस थे। हल्की हरी दीवारों पर प्लास्टर के सफ़ेद मोर बने थे और क़ालीन पड़े फ़र्श पर जगह-जगह नृत्य करती सुंदरियों के सफ़ेद बुत खड़े थे।

जॉर्जट की नीली साड़ी और स्लीवलैस ब्लाउज़ में परोमिता मीना कुमारी की तरह ही प्रभावशाली दिख रही थी। उसके लंबे रेशमी बाल उसके कूल्हों पर झूल रहे थे जबकि वो बेख़्याली में अपने गले में पड़े रूबी के ख़ूबसूरत पेंडेंट से खेल रही थी। वो जैसे पूर्णता की तस्वीर थी। जब वो मुस्कुराती, तो उसके आसपास की दुनिया हुलस उठती थी। जब वो उदास होती, तो दुनिया जैसे बेसाख़्ता उसे दिलासा देने में लग जाना चाहती थी कि वो बस फिर से मुस्कुरा उठे।

निर्देशक पिनाकिन देब चेन स्मोकिंग कर रहा था जबकि लाइटिंग दल पूरे कमरे में तार फैला रहा था। पिनाकिन देब ने कैमरामैन को अलग हटाकर कैमरे के पीछे जगह ली ताकि देख सके कि उसकी कोशिशें कामयाब हुई थीं या नहीं।

“मुझे इनके चेहरे पर और धूप चाहिए,” वो चिल्लाया और तुरंत ही घबराए हुए से दो लड़कों ने खिड़कियों के पास सनलाइट रिफ़्लेक्टर लगा दिए। पिनाकिन देब का

ग़ुस्सा बहुत तेज़ था और अगर वो टीम के किसी बंदे से नाराज़ हो जाए तो उसे थप्पड़ तक मार देता था। सब लोग इसे उसकी कलात्मक उत्कृष्टता से जोड़ते थे लेकिन अंदर के लोग जानते थे कि इसकी वजह शराब है। बहुत ज़्यादा शराब। अरबाज़ एक कोने में बैठा मज़े लेकर सारा क्रियाकलाप देख रहा था। अब्दुल दादा ने फ़िल्मिंग शैडचुल को चैक करने के लिए उसे भेजा था।

अब्दुल दादा की नई रखैल अंजुम आज़ाद कश्मीर की ख़ूबसूरत ग़ज़ल गायिका थी। महोगनी के से चमकीले रंग के उसके बाल उसके गुलाबी चेहरे पर लहरों की तरह गिरे रहते थे। जब वो मुस्कुराती, तो उसकी पन्ने सी हरी आंखें शरारत से टिमटिमाने लगती थीं। उसके पास सब कुछ था, सिवाय क़िस्मत के। उसने फ़िल्मों में काम करने की कोशिश की लेकिन कामयाब नहीं रही। अब वो चाहती थी कि अब्दुल दादा उसके लिए एक फ़िल्म फ़ाइनेंस करे।

"मुझे तो फ़िल्मों के बारे में कुछ पता नहीं है," अब्दुल ने कहा था।

"और मुझे वो सब पता है जो पता होना चाहिए। हम तो शशि कपूर और प्राण को साइन भी कर चुके हैं। पिनाकिन की भतीजी हीरोइन है। आप बहुत पैसा कमा सकते हैं," उसने अब्दुल दादा की पैंट की ज़िप खोलते और अपनी उंगलियों को उसके उभार को टटोलने देते हुए कहा। ये बहस मुश्किल से पांच मिनट चली होगी और अब्दुल दादा प्रोजेक्ट को फ़ाइनेंस करने के लिए तैयार हो गया।

"सब तैयार हैं?" पिनाकिन चिल्लाया। "लाइट्स, कैमरा, ए-ए- एंड... एक्शन!" परोमिता ने अपना डायलॉग बोलना शुरू किया तो वहां इकलौती आवाज़ कैमरे की घरघराहट की थी।

"कट!" पिनाकिन चिल्लाया। टीम ने गालियां खाने के लिए ख़ुद को तैयार कर लिया था।

"चुदीर पोला!" वो सारी अपेक्षाओं को लांघते हुए लाइटिंग सुपरवाइज़र पर चिल्लाया। असहाय आदमी ख़ामोश खड़ा रहा, उसे बंगाली में रंडी का बेटा कहा जा रहा था। अरबाज़ मुस्कुरा दिया। अब वो समझ गया था कि इस सैक्टर को मनोरंजन उद्योग क्यों कहा जाता था। ये तो यक़ीनन मनोरंजक था।

"मैंने तुझसे कहा था कि मुझे इनके चेहरे पर धूप चाहिए, चुदीर भाई!" पिनाकिन दा चीख़ा। लाइटिंग सुपरवाइज़र ने जल्दी से रिफ़्लेक्टर फिर से ठीक किए और सोचता रह गया कि वो रंडी के बेटे से रंडी का भाई कैसे हो गया।

"सब तैयार हैं?" पिनाकिन फिर से चिल्लाया। "लाइट्स, कैमरा एंड... एक्शन!" कैमरा घूमने लगा और परोमिता ने बोलना शुरू किया।

अरबाज़ ने उस दिन सौंवी बार उसे देखा था और ये सोचने के लिए ख़ुद को दोषी महसूस किया कि इस हसीन औरत की तुलना में फ़ाइज़ा एकदम फीकी है। इसकी सांवली रंगत, गहरी अलसाई आंखें, सांचे में ढली फ़िगर और मुस्कुराने पर गालों में पड़ने वाले गड्ढे उसे पागल किए दे रहे थे।

अरबाज़ ने दूसरों को देखने के लिए ज़बरदस्ती अपनी नज़रें घुमाईं। इसके जैसी

हीरोइन दूसरे हीरो लोगों के साथ घूमेगी, मुझ जैसे बदमाश के साथ थोड़े ही जाएगी, उसने ख़ुद को समझाया। वो सही भी था। ख़बर थी कि एक उभरते स्टार के साथ उसका अफ़ेयर चल रहा है।



वो अपने हमेशा वाले ठीये पर मिले थे। गर्म-गर्म सांभर और चटनी के साथ इडली की प्लेटें उनके सामने आ गई थीं। वो टूट पड़े।

भारत में उत्सव का माहौल था। भारत-पाकिस्तान का युद्ध ख़त्म हो गया था। ये शुरू हुआ था पाकिस्तान के ऑपरेशन जिब्राल्टर छेड़ने से, ये एक साज़िश थी 1965 में कश्मीर में आदमियों और सामग्री की घुसपैठ करवाने की ताकि भारत के ख़िलाफ़ विद्रोह भड़काया जा सके। शास्त्री जी ने पश्चिमी पाकिस्तान पर बड़े स्तर पर सैन्य हमला करवाकर जवाब दिया। सत्रह दिन चली इस जंग में दोनों ओर के हज़ारों लोग मारे गए और फिर युद्धविराम के साथ इसका अंत हुआ था।

“तुम सही कह रहे थे,” मुरली ने सुड़ककर सांभर पीते हुए कहा।

“तुम्हें क्या पता लगा?” अरबाज़ ने अपनी मीठी दूधिया कॉफ़ी का घूंट भरते हुए कहा।

“मुस्तफ़ा को हर सट्टे पर दस फ़ीसदी कमीशन लेना और उसका पैंसठ फ़ीसदी अब्दुल दादा के साथ बांटना चाहिए। मगर सट्टे के रजिस्टर में वो बहुत कम दर्ज करता है। दादा को असल का मुश्किल से आधा मिलता है,” मुरली ने बताया।

अरबाज़ ने सिर हिलाया। “मैं ये जानता था। वो पैसे का करता क्या है? उसे लगाता कहां है?”

“वो साइड में एक और धंधे में दिलचस्पी ले रहा है,” मुरली ने कहा। “उसने रॉयल वैस्टर्न इंडिया टर्फ़ क्लब में होनेवाली घुड़दौड़ों में बुकी लगा रखे हैं। वो फ़ोन पर मैदान से बाहर के सट्टे लगाते हैं हालांकि क़ानूनन इसकी इजाज़त नहीं है।”

“कोई आइडिया कि कितने बुकी शामिल होंगे?” अरबाज़ ने पूछा।

“बहुत,” मुरली ने कहा। “अगर वो रोज़ाना तीन-चार लाख के सट्टे लेता हो तो मुझे हैरानी नहीं होगी।”

अरबाज़ ने सीटी बजाई। “ये तो बहुत पैसा है,” उसने कहा। “बज़ाहिर उसका मलाई खाना काम आ रहा है।”

“तुम क्या करोगे?” मुरली ने पूछा। “दादा को बताओगे?”

“अभी फ़िलहाल इसे अपने बीच ही रखते हैं, मुरली। मेरे ख़्याल से मैं इस बदमाश को ऐसा सबक़ सिखाने का रास्ता निकाल सकता हूं कि वो कभी नहीं भूलेगा!”



“दादा, एक आइडिया है,” अरबाज़ ने कहा।

“क्या है?” अब्दुल दादा ने पूछा।

वो वरली के वल्लभभाई पटेल स्टेडियम में कुश्ती के एक मुक़ाबले में बैठे थे। दारा सिंह हंगरी के पहलवान किंग कांग से मुकाबला कर रहे थे। स्टेडियम ठसाठस भरा था लेकिन सबसे अच्छी सीटें अब्दुल दादा और उसके सुरक्षा घेरे के लिए अलग कर दी गई थीं।

“आइडिया घोड़ों के बारे में है,” अरबाज़ ने कहा।

“घोड़े?” दादा ने पूछा।

भीड़ पगला रही थी। 130 किलो के दारा सिंह ने 200 किलो के किंग कांग को अपने सिर के ऊपर उठा लिया था और उसे गोल-गोल घुमा रहे थे।

अब्दुल दादा ठठाकर हंस पड़ा। “ये मुझे अच्छा लगता है। दारा सिंह महज़ पहलवान नहीं हैं, वो शोमैन भी हैं।”

किंग कांग रैफ़री पर चिल्ला रहा था। ऐसे घुमाना तयशुदा नियमों में नहीं था। रैफ़री दारा सिंह के विजय प्रदर्शन को रोकने भागा। लेकिन वो कुछ कह पाता, इससे पहले दारा सिंह ने किंग कांग को अखाड़े से बाहर फेंक दिया। वो भीड़ से बस कुछ ही फ़ुट दूर गिरा।

“हम्म, घोड़ों के बारे में, दादा,” अरबाज़ ने कहा।

“बोलो,” दादा ने बड़ी मुश्किल से अपने सामने मौजूद नज़ारे से निगाहें हटाते हुए अरबाज़ से कहा।

“रॉयल वैस्टर्न इंडिया टर्फ़ क्लब जो इस कुश्ती के स्टेडियम से लगा हुआ है, आजकल बहुत पॉपुलर हो रहा है,” अरबाज़ ने कहा। “मुझे लगता है आपको एक घोड़ा ले लेना चाहिए।”

“तुम्हारी इस मुनाफ़ेदार खोपड़ी में क्या चल रहा है?” दादा ने पूछा, जबकि दारा सिंह को विजेता घोषित किया जा रहा था।

“पिछले साल महालक्ष्मी में पहला इंडियन इन्वीटेशन कप आयोजित हुआ था। इस साल इंडियन फ़िलीज़ ट्रिपल क्राउन है। ये बहुत फ़ायदे का धंधा हो सकता है।”

“तुम्हें क्या चाहिए?” अब्दुल दादा ने मुस्कुराते हुए पूछा।

“बस कुछ बुनियादी पूंजी और आपकी ओर से पूरी राज़दारी और साथ,” अरबाज़ ने जवाब दिया।

“ठीक है,” दादा ने कहा। “लेकिन बस एक बात याद रखना।”

“क्या?”

“मुझे पैसे बनाना तो पसंद है मगर गंवाना उससे ज़्यादा नापसंद।”



वो एक अस्तबल में खड़ा था जहां लीद की गंध भरी हुई थी। मगर इस वक्त अरबाज़ को इसकी कोई फ़िक्र नहीं थी। उसके लिए लीद की गंध महंगे कोलोन से कम क़ीमती नहीं थी।

"राइडिंग हुड तैयार है?" अरबाज़ ने पूछा।

बंबई के अपेक्षाकृत गुमनाम ट्रेनर संतोष ने सिर हिलाया। घोड़ा नाकारा था और वो ये जानता था। दो साल से ज़्यादा से जॉकी रुस्तम भी कोई रेस नहीं जीता था। ये ख़ास घोड़ा और जॉकी रेसिंग सर्किट में हंसी का पात्र बन गए थे।

"बढ़िया," अरबाज़ ने कहा। वो तीन महीने से ज़्यादा से इस योजना पर काम कर रहा था। अगले कुछ दिन में ये सामने आने वाला था कि उसकी कोशिशें कामयाब होंगी या नहीं।

उसने दो रेसकोर्स ट्रेनर्स की सेवाएं ली थीं: बंबई स्थित संतोष तावड़े, और पूना के राजन धोबले की।

संतोष को सीमित क्षमताओं वाला चेस्टनट के रंग का रेस का घोड़ा दिया गया था। काग़ज़ों में उसे राइडिंग हुड का नाम दिया गया था। लेकिन एक और घोड़े को, राइडिंग हुड नाम के ही—और चेस्टनट रंग के ही—पूना में राजन धोबले बढ़िया प्रशिक्षण दे रहा था।

"राइडिंग हुड को इंडियन डर्बी में ले जाओ," अरबाज़ ने जाने के लिए उठते हुए संतोष से कहा। "देखते हैं हम कैसा करते हैं।"

अस्तबल के बाहर मुरली इंतज़ार कर रहा था। "मुझे फ़ोन के पास ले चलो," अरबाज़ ने निर्देश दिया। मुरली उसे सट्टे के बूथों के पास लगे इकलौते पब्लिक फ़ोन बॉक्स पर ले गया।

"आमतौर पर पूरी रेस के दौरान बूथ को मुस्तफ़ा के आदमी घेरे रहते हैं। एक आदमी जाता है, तो लाइन में लगा दूसरा आदमी भी मुस्तफ़ा का होता है। अपने बुकीज़ से बात करने के लिए वो फ़ोन का इस्तेमाल करते हैं।"

अरबाज़ मुस्कुराया। ये मज़ेदार होने वाला था।



अरबाज़ अब्दुल दादा के बांद्रा वाले घर पर था। उसने फ़ोन उठाया और 180 डायल किया। ऑपरेटर की उबाऊ सी आवाज़ आई, "ट्रंक कॉल बुकिंग।"

"मुझे पूना के लिए एक पीपी कॉल बुक करनी है," अरबाज़ ने कहा। दूसरे शहर में किसी व्यक्ति से बात करने का इकलौता तरीक़ा ऑपरेटर की सहायता से पर्सन-टू-पर्सन—या पीपी—कॉल ही था।

“फ़ोन नंबर?” ऑपरेटर ने पूछा।

“60428,” अरबाज़ ने जवाब दिया। पूना के पांच अंकों वाले नंबर को याद रखना अपेक्षाकृत आसान था।

“पीपी कौन है?” ऑपरेटर ने अपनी एकरस सी आवाज़ में कहा। ज़्यादातर ऑपरेटर ये भूल जाते मालूम होते थे कि पीपी का मतलब पर्सन-टू-पर्सन होता है। ये सवाल करके वो असल में ये पूछ रहे होते थे, “पर्सन-टू-पर्सन कौन है?” जिसका बज़ाहीर कोई मतलब नहीं निकलता था। ये हास्यास्पद सा था। ये ऐसा लगता था कि अगर तुम मुझे अपनी पी-पी दिखाओगे तो मैं तुम्हें अपनी पी-पी दिखाऊंगा।

“राजन धोबले,” अरबाज़ ने कहते हुए रिसीवर रख दिया।

एक घंटे बाद फ़ोन बजा। बंबई और पूना के ऑपेरटरों ने कॉल लगा दी थी। “आप छह मिनट बात कर सकते हैं,” ऑपरेटर ने रुखाई से कहा।

“हैलो? राजन?” अरबाज़ ने पूछा। “आह; अच्छा है। तुम्हें घोड़े को पूना से बंबई लाना होगा। मैंने ट्रक का इंतज़ाम कर दिया है। महालक्ष्मी रेसकोर्स का चौकीदार रजिस्टर में ब्योरा दर्ज किए बिना ट्रक को अंदर जाने देगा। मैंने इसका इंतज़ाम कर दिया है। और हां, ड्राइवर को पता है कि उसे बंबई के घोड़े को पूना वापस ले जाना है।”

“अब?” अब्दुल दादा ने पूछा, उसकी आंखें चमक रही थीं। उसने अपने दोनों नए बॉडीगार्ड्स को कमरे से बाहर जाने का इशारा किया। अरबाज़ ने दादा के लिए खुद उन्हें चुना था।

“पूना वाले घोड़े को उस घोड़े से बदल दिया जाएगा जो इस समय महालक्ष्मी अस्तबल में मौजूद है,” अरबाज़ ने कहा।

“और फिर?” दादा ने पूछा। बढ़िया घोटाले उसे बहुत पसंद थे।

“मैंने मुरली से कहा है कि कई सट्टे लगाने का बंदोबस्त करे लेकिन हमें सावधान रहना होगा। अगर बुकी किसी ख़ास घोड़े में बहुत ज़्यादा दिलचस्पी देखेंगे तो उन्हें शक हो जाएगा।”

“इस बारे में हम क्या कर रहे हैं?”

“मैंने दो थोड़े कमतर घोड़े भी रेसों में उतारे हैं—ब्लडी मेरी और स्नो व्हाइट। ब्लडी मेरी उस रेस में लाई जा रही है जो राइडिंग हुड की रेस से दस मिनट पहले होगी। स्नो व्हाइट उस रेस में लाई जा रही है जो राइडिंग हुड की रेस के दस मिनट बाद होगी। मैंने मुरली से कहा है कि केवल एक्युमुलेटर दांव ही लगाए। ब्लडी मेरी और स्नो व्हाइट दोनों को उनकी रेसों से कुछ मिनट पहले ही हटा लिया जाएगा।”

अब्दुल दादा ने अरबाज़ की चालाकी को दाद दी। एक्युमुलेटर दांव लगातार होने वाली अनेक रेसों के दांव होते हैं। अनेक रेसों में प्रत्येक में घोड़ों के जीतने या उनके स्थान के लिए चुना जाता है। वास्तव में, अरबाज़ राइडिंग हुड के भविष्य को दूसरे दोनों घोड़ों के साथ जोड़कर बड़े-बड़े दांव लगा रहा था। बेशक, बाक़ी दोनों को झांसे

के रूप में लाया जा रहा था—झांसा जिन्हें आख़री वक्त में हटा लिया जाना था इस तरह सट्टेबाज़ बौखला जाते।

मुरली के सट्टेबाज़ जानते थे कि बाक़ी दोनों घोड़े तेज़ नहीं हैं। इस तरह, एक्युमुलेटर दांवों पर लगा सारा पैसा राइडिंग हुड के खाते में चला जाता।

अरबाज़ ने फिर से फ़ोन उठा लिया। इस बार उसे ट्रंक कॉल नहीं करवानी थी। ये लोकल कॉल थी।

"हैलो? संतोष? यार, ये पक्का देख लेना कि पूना से आ रहे घोड़े पर साबुन के टुकड़े मलवा लो।"

संतोष ने कुछ कहा। फिर अरबाज़ ने आगे कहा।

"जानता हूं। लेकिन मुस्तफ़ा के आदमी सारे घोड़ों की जांच करेंगे। हम ये दिखाना चाहते हैं कि राइडिंग हुड को बेहद पसीने आ रहे हैं। समझ रहे हो न? बढ़िया। इसे करवा लेना।"

वो ज़रा सोचने को ठहरा। "एक बात और, संतोष। हमारे जॉकी आदिल से कहना कि ऐसा नाटक करे जैसे उसे घोड़े पर सवार होने में मुश्किल हो रही है। इससे सट्टेबाज़ बाज़ियां बढ़ाने के लिए तत्पर होंगे।"

"लगता है तुमने इस पर बहुत अच्छी तरह सोचा है," अब्दुल ने कहा। "तुम घोड़ों, ट्रेनर्स, जॉकीज़ और दांवों पर पहले ही मेरे पांच लाख रुपए लगा चुके हो। उम्मीद है ये मुनाफ़ेबख़्श सौदा होगा। साथ ही मैं उम्मीद करूंगा कि ये आदिल तुम्हारे मौजूदा जॉकी से बेहतर है?"

"कोल और अख़बारों में दर्ज जॉकी रुस्तम है। वो दो साल से कुछ नहीं जीता है। लेकिन रुस्तम खुद को बीमार बता देगा और उसकी जगह आदिल ले लेगा। वो बंगलौर का सबसे बड़ा शौक़िया घुड़सवार है लेकिन असल में पूना में कई बार राइडिंग हुड की सवारी कर चुका है।"

"मैं मुस्तफ़ा को ऐसे ही निबटा सकता था," अब्दुल दादा ने कहा। "इस सारे झमेले में क्यों पड़ना?"

"क्योंकि हम उसे वहां चोट पहुंचा रहे हैं जहां सबसे ज़्यादा तकलीफ़ होती है," अरबाज़ ने कहा।



अरबाज़ सब्र के साथ सदस्यों के लिए नियत स्थान पर बैठा था, उसकी दूरबीन उसकी आंखों से चिपकी हुई थी और वो केवल वही एक रेस देख रहा था जिसके लिए वो वहां आया था। उसने शिफ़ॉन की साड़ियों में लिपटी खुशबू बिखेरती औरतों को और स्ट्रॉ हैट पहने फ़ैशनेबल जैंटलमेन को नज़रअंदाज़ कर दिया।

कुछ मिनट पहले ही उसके आदमियों ने टेलीफ़ोन बॉक्स की फ़ोन लाइन काट दी थी। अब मुस्तफ़ा की टीम के पास बात करने का कोई ज़रिया नहीं था।

जब तक रेस शुरू हुई, राइडिंग हुड, स्नो व्हाइट और ब्लडी मेरी पर तीन लाख रुपयों से ज़्यादा का सट्टा लग चुका था। सारे दांव लंबे थे, जिन पर राइडिंग हुड के जीतने की सूरत में भारी भुगतान मिलना था।

अनाउंसर के शब्द घोड़ों से ज़्यादा तेज़ी से दौड़ रहे थे।

वो पूरी तरह तैयार हैं। और, वो चल दिए... क्या अच्छी शुरुआत है।

पहले नंबर पर हमारे पास गोल्डन बिस्कुट है। वो लगातार जीतती आ रही है। वो ऐसी घोड़ी है जिसे बाहर की ओर दौड़ना पसंद है। बिल्कुल पीछे आ रही किट कैट शायद आगे निकल सकती है...

मिस्टिक मैजिक तीसरे नंबर पर है...

जॉकी को गोल्डन बिस्कुट के पीछे पहुंचने और पीछे कहीं से आगे निकलने का कोई तरीक़ा निकालना होगा। आह, यहां हमारे साथ क्या है? राइडिंग हुड आगे आ रही है...

उसे आदिल तारापोरवाला दौड़ा रहे हैं क्योंकि उसके हमेशा वाले जॉकी रुस्तम श्रॉफ़ बीमार हो गए हैं। लगता है जॉकी के बदलने का फ़र्क़ पड़ा है...

इस वक्त ट्रैक काफ़ी समतल है। अंदर की ओर भी वही गहराई है जो बाहरी ओर है। और एक बात कहूं? लगता है राइडिंग हुड इस रेस में गति निर्धारक रहेगी...

गोल्डन बिस्कुट अभी भी आगे है... मिस्टिक मैजिक चौथे नंबर पर रह गई है।

चालीस के मुक़ाबले एक की संभावना के साथ राइडिंग हुड के जीतने की उम्मीद बहुत कम थी जबकि गोल्डन बिस्कुट पहली पसंद थी...

और आज राइडिंग हुड एक्सप्रेस ट्रेन की तरह हो रही है, हरेक डक के साथ फ़ासले को कम करती हुई...

और राइडिंग हुड जीतने के क़रीब पहुंच रही है...

और राइडिंग हुड जीत गई है; शानदार स्टाइल में... चालीस के मुक़ाबले एक की लुभावनी संभावनाओं के साथ पंद्रह चक्करों में मैदान को पार करके!

अरबाज़ जल्दी से सदस्यों के स्थान से चला गया। बदले का मज़ा अकेले में लेने का होता है।



"आपने ख़बर सुनी?" अरबाज़ ने पूछा।

"कैसी ख़बर?" अब्दुल दादा ने पूछा।

"कल रात मुस्तफ़ा ने खुदकुशी कर ली," अरबाज़ ने कहा। "जब उससे एक करोड़ से ज़्यादा का भुगतान करने को कहा गया तो उसने मुंह में रिवॉल्वर रखकर अपना भेजा दीवार पर छितरा दिया।"

अब्दुल दादा ख़ामोश था। “मैंने उसे लगभग गोद लिया था, अरबाज़। मैंने उसे बेटे की तरह रखा था। कभी सोचा भी नहीं था कि ये सब होगा।”

अरबाज़ ने कभी उस बुज़ुर्ग को जज़्बाती होते नहीं देखा था।

भारत भर में ये एक बुरा दिन रहा था। प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री पाकिस्तान के अय्यूब ख़ान के साथ शांति संधि पर दस्तख़त करने ताशकंद गए थे और अगले ही दिन रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु हो गई।

“दादा, चलिए ताज चलते हैं। मुझे पता लगा है कि वहां रीता फ़ारिया आने वाली है,” अरबाज़ ने किसी तरह बुज़ुर्ग को खुश करने की कोशिश करते हुए कहा।

“वो कौन है?” अब्दुल दादा ने पूछा।

“रीता ने मिस बंबई का ताज जीता है और वो ईव’ज़ वीकली की मिस इंडिया है। वो मिस वर्ल्ड 1966 बनने वाली है। उससे मुलाक़ात आपकी उदासी की दवा बन सकती है,” अरबाज़ ने कहा।

“ज़िंदगी में हर चीज़ की एक ही दवा है, प्यारे अरबाज़,” बुज़ुर्ग ने कहा। “वो है मौत।”

“अगर आप ताज न चलना चाहें तो ब्रीच कैंडी चल सकते हैं और आप वो केक खा सकते हैं जो बॉम्बेली में आपको पसंद आया था,” अरबाज़ ने कहा।

“चलो, चलते हैं,” आख़िरकार अब्दुल ने तैयार होते हुए कहा।

“आपने अपना इरादा क्यों बदला?” अरबाज़ ने पूछा।

“मुझे अपना केक मिल गया है। मैं इसे खा भी सकता हूं।”



अरविंद और जॉयदीप विक्टोरिया मेमोरियल के पुचका पॉइंट पर थे।

“हम यहां क्यों आते रहते हैं?” जॉयदीप ने पूछा।

“क्योंकि सौदा साला बढ़िया है; एक रुपए के बत्तीस पुचके। साथ ही न मेरी गर्लफ़्रेंड है न तुम्हारी। हम साथ में अटके हुए हैं,” अरविंद ने जवाब दिया और एक और पुचका अपने मुंह में रख लिया, और तुरंत ही कुचले आलू, खजूर और कच्चे आम की चटनी की भरावन के साथ पोदीना, नीबू और इमली के पानी के मुंह में फूटने से तृप्त हो गया।

अरविंद को विश्वास था कि पुचका वास्तव में वैसा ही नहीं होता जैसे गोलगप्पे या पानी पूरी होते हैं। आलू और चने का तीखा मिश्रण भरकर फिर उन्हें इमली के पानी में डुबोकर निकाले गए पतले, तले हुए गोल-गोल पुचके अपने इन दूर के भाई-बंधुओं से बिल्कुल ही भिन्न चीज़ होते हैं।

पुचकों का असली मज़ा लेने के लिए उन्हें पूरा का पूरा मुंह में रखना होता है, अंदर

भरा माल गिराए बिना। अगर आप ऐसा कर सकें, तो बस आनंद-परमानंद!

“तो तुम क्या बात करना चाहते थे?” जॉयदीप ने पूछा।

“ताशकंद में लाल बहादुर शास्त्री की मृत्यु होने का मतलब है कि उस शीर्ष पद के लिए अब फिर से धकापेल मचेगी,” अरविंद ने कहा।

“मृत्यु? तुम्हारा मतलब हत्या!” जॉयदीप ने गुस्से में भरकर उसे सही किया।

बज़ाहीर लाल बहादुर शास्त्री जी का शरीर नीला पड़ गया था। सरकारी सफ़ाई ये थी कि शव का संलेपन किया गया है लेकिन बहुत लोगों को इस पर यक़ीन नहीं था। राष्ट्र के लिए ये विश्वास करना मुश्किल था कि वो छोटे से प्रधानमंत्री जिन्होंने जनरल अय्यूब ख़ान को जंग में नाकों चने चबवा दिए थे, वो एक छोटे से एकाकी कंट्री हाउस में दिल का दौरा पड़ने से मर जाएंगे। राजधानी में, अफ़वाहें गर्म थीं कि शास्त्रीजी की मृत्यु के पीछे सीआईए का हाथ था, ताकि वो अपने मित्र पाकिस्तान की मदद कर सके।

“शायद मुझे दीपांकर दा से बात करनी चाहिए,” अरविंद ने कहा।

“क्यों?” जॉयदीप ने पूछा।

“शास्त्रीजी की मृत्यु हो गई है तो इसका मतलब है कि अब इंदिरा गांधी के लिए रास्ता साफ़ है। मोरारजी देसाई को प्रधानमंत्री बनाने की जगह कामराज उन्हें तरजीह देंगे। तुम देखना, मोरारजी देसाई को दरकिनार कर दिया जाएगा।”

“तो?” जॉयदीप ने पूछा।

“उन्हें देश की वामपंथ की ओर झुकाव रखनेवाली सभी ताक़तों को एक साथ लाना होगा। यही समय है कि मैं भारतीय बैंकों में अपने पोर्टफ़ोलियो को कैश कर लूं। ये जानते हुए कि वे किसी भी समय उनका राष्ट्रीयकरण कर देंगी।”

“हमारी कारोबारी रणनीति क्या होगी?” जॉयदीप ने पूछा।

“मेरे ख़्याल से हमें एक और बड़ी डील चाहिए,” अरविंद ने जवाब दिया। “मुझे बंबई जाना चाहिए।”

“परोमिता से मिलने?” जॉयदीप ने पूछा, तुरंत उसे उसका नाम लेने पर पछतावा हुआ। अपने ब्रेकअप के बाद अरविंद ये मानने को तैयार नहीं था कि परोमिता के जाने का उस पर कोई असर पड़ा है। उसने पहले से दोगुने जोश से अपने काम पर धावा बोल दिया था। ये सामान्य नहीं था।

“नहीं,” अरविंद ने कहा। “मुझे नए शौक़ चाहिए। गोल्फ़ और बॉटनी इस ब्योरे के लिए सही उम्मीदवार दिखते हैं।”

“लेकिन बंबई क्यों?” जॉयदीप ने पूछा।

“क्योंकि मेरे ट्रेनर वहां रहते हैं,” अरविंद ने कहा, और अपने मुंह में एक और पुचका रख लिया, एक बूंद भी गिरने दिए बिना। “साथ ही, मेरा मानना है कि बंबई के विलिंगडन स्पोर्ट्स क्लब का कलकत्ता के टॉलीगंज क्लब के साथ कुछ आपसी

गठजोड़ है। मेरे पिता टॉली के मेंबर हैं तो मैं विलिंगडन क्लब का इस्तेमाल कर लूंगा।"

जॉयदीप ने हैरान होते हुए सिर खुजाया कि अब पता नहीं कौन सी अजीबोग़रीब योजना बनाई जा रही है। उसने हार मान ली। अरविंद की ज़्यादातर योजनाएं जॉयदीप की समझ के लिए बहुत टेढ़ी हुआ करती थीं।

"जब मैं बंबई में होऊंगा तो एक काम करना, जॉयदीप," अरविंद ने काग़ज़ के टुकड़े पर एक नाम लिखते हुए कहा।

"क्या?" जॉयदीप ने पूछा।

"कंपनी रजिस्ट्रार के यहां एक नई कंपनी रजिस्टर करवाना। इसका नाम होगा ट्रैक टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड," अरविंद ने काग़ज़ थमाते हुए कहा।

"एक काम और," अरविंद ने कहा।

"हां?" जॉयदीप ने पूछा।

"मैं चाहता हूं तुम भारतीय पेटेंट और डिज़ाइन अधिनियम 1911 के तहत एक पेटेंट के लिए भी एप्लाई कर दो।"



अब्दुल दादा ने धुएं का छल्ला उड़ाया जो हवा में तैरता हुआ ऊपर गया और घुल गया। अरबाज़ उसे ग़ायब होते देखता रहा।

"मुझे लगता है ये बहुत ज़बरदस्त मौक़ा हो सकता है, दादा," अरबाज़ ने कहा।

"मानता हूं," अब्दुल दादा ने कहा। "लेकिन ये काम कैसे करेगा?"

"इस शहर में सैकड़ों सूदख़ोर हैं जिनके क़र्ज़दार पैसा चुकाने को तैयार नहीं हैं," अरबाज़ ने कहा। "यही बात उन किराएदारों के साथ है जो मकानमालिक की जगहों को ख़ाली करने को तैयार नहीं होते। हम सूदख़ोरों और मकानमालिकों की मदद करने के लिए उनके साथ काम करेंगे।"

"शर्तें?" अब्दुल दादा ने पूछा।

"शामिल होने के लिए कोई नहीं," अरबाज़ ने कहा। "ये मुफ़्त सेवा है।"

"ये तो बकवास है," अब्दुल दादा ने कहा। "हम कोई ख़ैरात खोले नहीं बैठे हैं!"

"दादा, एक मिनट के लिए मैं चाहूंगा आप एक बड़े से कंसर्ट हॉल की कल्पना करें," अरबाज़ ने कहा।

"ठीक है," दादा ने बेमन से कहा। "लेकिन अभी भी मुझे लगता है कि ये बेवक़ूफ़ी का आइडिया है।"

"अब कल्पना करें कि कंसर्ट हॉल में दो गेट हैं-एक आने का और दूसरा जाने का।"

“अच्छा,” दादा ने हॉल की कल्पना करने के लिए अपनी आंखें बंद कर लीं।

“अब कल्पना करें कि आने वाले गेट पर कोई टिकट चैक नहीं कर रहा है,” अरबाज़ ने कहा। “वास्तव में, कोई भी मुफ़्त में घुस सकता है।”

“तुम तो बिना आमदनी के हज़ारों लोगों को आने दोगे,” अब्दुल ने कहा। “वाहियात!”

“रुकिए तो,” अरबाज़ ने कहा। “अब कल्पना करें कि बाहर निकलने वाले गेट पर निकलने की फ़ीस सौ रुपए है।”

अब्दुल ज़ोरों से हंस पड़ा।



अरविंद ने एक बार फिर नीलामी के ‘नियम एवं शर्त’ को देखा। वो अलीपुर रोड पर एक खूबसूरत घर था। अरविंद ने उसके लिए बोली लगाने का मन बना लिया था।

नीलामी में भाग लेने के लिए भागीदारों को पंजीकरण करवाना होगा। भागीदारी के लिए आवश्यक जमा राशि एक लाख रुपए है।

संपत्ति जहां-है-जैसी-है के आधार पर बेची जा रही है। बोली लगाने से पहले भागीदार क्रय-विक्रय अनुबंध, कोई भी लागू अनुशेष, प्रकटीकरण प्रलेखन, एवं अन्य सभी लेन-देन के दस्तावेज़ों का अवलोकन कर लें।

यह प्रत्येक भागीदार का दायित्व है कि, बिना किसी प्रतिबंध के, क़ानूनी मामलों, बाह्य स्थिति और विशेषताओं, पर्यावरण मामलों, आर्थिक मामलों, ऋणभार, एवं अन्य सभी पहलुओं समेत संपत्ति से जुड़े सभी मामलों को उचित रूप से समझ लें और उनकी जांच कर लें।

इस संपत्ति का न्यूनतम विक्रय मूल्य विक्रेता, या आरक्षित मूल्य द्वारा निर्धारित किया गया है। आरक्षित मूल्य पचास लाख रुपए है। आरक्षित मूल्य से कम की बोलियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

विजेता बोली लगाने वाले को नीलामी की तारीख़ पर सायं *3* बजे से, पहले प्रारंभिक भागीदारी जमा राशि काटकर बोली के मूल्य का *10* प्रतिशत नक़द या चैक के रूप में जमा करवाना होगा।

अगर सबसे बड़ी बोली लगाने वाला नीलामी की तारीख़ को तयशुदा समय से पहले *10* प्रतिशत राशि जमा करने में असफल रहता है तो उसकी भागीदारी राशि ज़ब्त कर ली जाएगी और सबसे बड़ी बोली लगाने वाले दूसरे व्यक्ति को सूचित कर दिया जाएगा और उसे दूसरी सबसे बड़ी बोली का *10* प्रतिशत जमा करने का मौक़ा दिया जाएगा।

“भागीदारी डिपॉज़िट के दो चैक बनवाओ,” अरविंद ने जॉयदीप से कहा।

“क्यों?” जॉयदीप ने पूछा। “और कौन बोली लगा रहा है?”

“तुम,” अरविंद ने कहा। “मेरे अलावा।”

“हम दोनों बोली क्यों लगा रहे हैं?” जॉयदीप ने पूछा।

“पहले मैं हाथ उठाऊंगा और बोली लगाऊंगा। ये देखते हुए कि आरक्षित मूल्य से कम की बोली नहीं लगाई जा सकती, मैं पचास लाख की बोली लगाऊंगा,” अरविंद ने कहा।

“और फिर?” जॉयदीप ने पूछा।

“तुम मेरे फ़ौरन बाद बोली लगाओगे,” अरविंद ने कहा। “अपने से पहले और किसी को हाथ मत उठाने देना। ये बहुत ज़रूरी है।”

“क्यों?”

“क्योंकि तुम तीन करोड़ की बोली लगाओगे,” अरविंद ने कहा।

“ये तो बाज़ार भाव से कई गुणा ज़्यादा है!” जॉयदीप हकला गया। “उस क़ीमत पर कोई घर क्यों ख़रीदा जाए?”

“क्योंकि उस हास्यास्पद संख्या से ज़्यादा बोली कोई नहीं लगाना चाहेगा,” अरविंद ने जवाब दिया। “तुम आसानी से विजेता बोलीदाता घोषित कर दिए जाओगे।”

“लेकिन हम बाज़ार भाव से कई गुणा क़ीमत पर इसे जीतेंगे!” जॉयदीप ने बहस की।

“जब तुम जीत जाओगे, तो नीलामीकर्ता तुमसे तीन बजे तक नीलामी राशि का दस प्रतिशत जमा करने को कहेंगे। तुम ऐसा नहीं करोगे। तुम्हारा एक लाख का डिपॉज़िट ज़ब्त हो जाएगा।”

“फिर?”

“नीलामीकर्ता सबसे बड़ी बोली लगाने वाले दूसरे बंदे को घर बेचने का प्रस्ताव देंगे।”



अरविंद ने प्यार करते जा के बाहर लगे होर्डिंग को देखा। उसे पिनाकिन देब ने निर्देशित किया था और इसमें दो नए कलाकारों को लिया गया था।

अरविंद ने हीरो को नज़रअंदाज़ कर दिया। उसकी आंखें तो केवल हीरोइन को तक रही थीं।

हमेशा ही तकती थीं।

उसका नाम परोमिता था।



नया बागड़िया होम ओरीजनल घर से दोगुना बड़ा था, हालांकि वो अलीपुर रोड पर

ही क़ायम रहा था। अरविंद की अमीरी ने उनके दरवाज़े पर दो नई कारें भी ला खड़ी की थीं। एक थी प्रीमियर पद्मिनी—एंबैसडर के अलावा जिसे बृजमोहनलाल ने पहले ख़रीदा था। इसका इस्तेमाल उसकी मां शकुंतला करती थीं जब वो ब्रिज के अपने साप्ताहिक गेम के लिए क्लब जाती थीं। दूसरी जीएम होल्डेन थी जिसमें पूर्ण-कॉयल सस्पेंशन और विस्तारित व्हीलबेस था, जिसे अरविंद चलाता था।

"तुम्हें नहीं लगता अब तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए?" एक दिन शकुंतला बागड़िया ने पूछा। "आजकल तुम इतना समय हमसे दूर रहने लगे हो।" अरविंद वाक़ई बहुत ज़्यादा सफ़र कर रहा था। पिछले दिन ही वो नई चली राजधानी एक्सप्रेस से दिल्ली से लौटा था—हावड़ा स्टेशन तक की 1,445 किलोमीटर की दूरी महज़ सत्रह घंटे में पूरी करके। हरेक यात्रा के साथ जैसे उसके बैंक बैलेंस में कुछ लाख रुपए और बढ़ जाते थे।

"लड़के को तंग मत करो," बृजमोहनलाल ने अपनी पत्नी से कहा, उन्हें बखूबी मालूम था कि उस बंगाली लड़की के साथ संबंध ख़त्म होने के बाद अरविंद सामान्य नहीं हो पाया था।

"सच कहूं तो, मैं तैयार हूं," अरविंद ने केतली से अपने लिए चाय उड़ेलते हुए कहा। वो एक बहुत बड़े से सोफ़े पर आराम से बैठा था और उसने बीटल्स के लोगो वाली टीशर्ट पहन रखी थी। दो साल पहले महर्षि महेश योगी के आश्रम में ट्रांसेंडेंटल मैडिटेशन या भावातीत ध्यान शिविर में शामिल होने के लिए चारों संगीतकार ऋषिकेश आए थे। बीटल्स के कट्टर प्रशंसक अरविंद ने किसी तरह अंदर घुसने का जुगाड़ कर लिया था। ये शर्ट जॉन लेनन का दिया तोहफ़ा थी।

"क्या कहा तुमने?" उसकी मां ने पूछा। ये उनके लिए ज़बरदस्त झटका था। पिछले कई साल से वो शादी के लिए उसके पीछे पड़ी थीं लेकिन वो उनमें से किसी लड़की को न देखने पर अड़ा हुआ था जिनका प्रस्ताव पंडितों, आंटियों और पारिवारिक दोस्तों के पारंपरिक शादियों के नेटवर्क के ज़रिए आता था।

"मैंने कहा कि मैं इसके लिए तैयार हूं," अरविंद ने चाय का घूंट भरते हुए कहा। "अगर आपके दिमाग़ में कोई अच्छी लड़की है तो मैं उससे मिलने के लिए तैयार हूं।"

"तुम्हारा इरादा कैसे बदल गया?" बृजमोहनलाल ने पूछा।

अरविंद ने अमर चित्र कथा कॉमिक एक ओर रख दिया जिसे वो पढ़ रहा था। आजकल उसने अमर चित्र कथा के लिए इंद्रजाल को धता बता दिया था।

"पिछले साल मधुबाला की मौत हो गई," अरविंद ने व्यंग्य से कहा। "उससे शादी करने की सारी उम्मीदें अब ख़त्म हो गई हैं।"

"सच बोलो, बेटे," बृजमोहनलाल ने कहा।

"शादी बिज़नेसमैन और हाउसकीपर के बीच महज़ एक कामकाजी साझेदारी है। मैं ऐसे प्रबंध के साथ रह सकता हूं।"

"तुम बिना प्रेम के शादी करोगे?" उसकी मां ने पूछा।

“इतने समय से मैं शादी के बिना प्रेम को आज़माने को तैयार था। तो प्रेम के बिना शादी को क्यों न आज़माऊं?” अरविंद ने पूछा।



अगले दिन, बागड़िया परिवार गोयल परिवार के घर गया। वो बृजमोहनलाल की तरह ही जूट के कारोबारी थे, और अरविंद और उनकी बेटी की कुंडलियों के छत्तीस में से बत्तीस गुण मिल गए थे। इसे बहुत अच्छा माना गया। अष्टकूट मिलान पद्धति में इकत्तीस से ज़्यादा बहुत अच्छे, इक्कीस से ज़्यादा अच्छे, सत्रह से ज़्यादा औसत, और सोलह या कम अशुभ माने जाते हैं।

उसका नाम अभिलाषा था और वो बिल्कुल मुनासिब ढंग से अरविंद से तीन साल और तीन इंच छोटी थी। उसका परिवार बागड़िया परिवार के समुदाय का ही था और उनके मुक़ाबले थोड़ा ग़रीब था। पुरानी कहावत है कि बेटी को ऐसे घर में ब्याहो जो आपसे अमीर हो और बहू ऐसे घर की लाओ जो आपसे ग़रीब हो।

एक महीने बाद अक्षय तृतीया के शुभ मुहूर्त पर शादी की रस्में संपन्न हो गईं। रिसेप्शन में आने वाले मेहमानों में से एक थे सर ज्ञानचंद सेक्सरिया, अपनी सिंहासन जैसी व्हीलचेयर पर विराजमान। दंपती को आशीर्वाद देते हुए वृद्ध मुस्कुराए, “तुम्हारी बारी मुझसे पहले आ गई,” उन्होंने अरविंद के कान में कहा।

अरविंद ने खुद ख़त लिखकर उस एकमात्र नेता को आमंत्रित किया था जिसे वो जानता था, अटल बिहारी वाजपेयी। उन्होंने जवाबी ख़त लिखकर अरविंद को बधाई दी थी और उस समय कलकत्ता आने में अपनी असमर्थता जताई थी। जनसंघ के महासचिव दीनदयाल उपाध्याय की मृत्यु ने जनसंघ के नेतृत्व का बीड़ा वाजपेयी पर डाल दिया था और उन्होंने तभी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का पदभार संभाला था।

अगले मेहमान थे मुनीमजी ताराचंद अग्रवाल, जिन्होंने अरविंद को अकाउंटिंग की सारी तिकड़में सिखाई थीं। अरविंद और अभिलाषा वृद्ध के पैर छूने के लिए झुके। उन्होंने उन्हें आशीर्वाद दिया और फिर अपना एक और मशहूर ज्ञान का गुर दिया।

“सुखी विवाह के दो नियम होते हैं,” उन्होंने कहना शुरू किया।

“वाक़ई?” अरविंद ने पूछा। “क्या हैं वो?”

“लगता है किसी को याद नहीं कि वो क्या हैं,” मुनीमजी ने मुस्कुराते हुए कहा।

ओऽम त्रयम्बकं यजामहे

सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं।

सन् 644 प्रयाग

उर्वारुकमिव बन्धनान्।

मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

चीनी भिक्षु ने प्रयाग में नदी किनारे जमा जनसमूह को देखा था। सम्राट क्या कहते थे इसे? कुंभ मेला? जो भी हो, ह्वेनत्सांग गहरे उतरते चले गए। वो एक दान का कार्य था, अपने दायरे में इतना विशाल कि इसने राजा को लगभग याचक में रूपांतरित कर दिया था।

राजकीय शासनादेश द्वारा, प्रयाग में सभी पांचों भारतीय क्षेत्रों से निर्धन, निराश्रित, अनाथ और पददलितों को राजा के अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया गया था। पांच लाख से अधिक ही लोग आए थे। हर जनसभा के दिन सम्राट हज़ारों लोगों को भोजन कराते थे।

अगले पचहत्तर दिनों में, सम्राट हर्ष राजकोष में जमा धन ख़र्चकर देते थे। स्वर्ण, रत्न, अन्न और अन्य अनेक वस्तुएं ब्राह्मणों, बौद्धोंऔर भिक्षुओं में समान रूप से वितरित कर दी जाती थीं। हर्ष कापरोपकार उन्मत्त भाव का था। वो रक्षा और नागरिक व्यवस्था बनाएरखने हेतु केवल अति-आवश्यक अश्व, गज और सैन्य सामग्री हीअपने पास रखते थे।

देने के लिए और क्या बचा है? साम्राज्य के धन-संपत्ति सेसम्राट के विलगाव को देखकर ह्वेनत्सांग ने सोचा। ये बिलकुलऐसा था जैसे उन्हें किसी चीज़ से कोई मोह ही न हो।

उनकी अनासक्ति कोई आश्चर्य नहीं थी।

हर्ष को राजसिंहासन का अधिकारिक उत्तराधिकारी नहीं चुनागया था। ये केवल भाग्य का फेर था जिसने उन्हें वहां पहुंचा दिया था। एक शत्रु राजा ने हर्ष के बड़े भाई की हत्या कर दी थी और उनकी बहन को बंदी बना लिया था। अपनी बहन को स्वतंत्र कराने और अपने भाई की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिए हर्ष ने जो अभियान प्रारंभ किया वो संपूर्ण उत्तर भारत की विजय में परिणत हो गया। अब हर्ष का साम्राज्य ब्रह्मपुत्र डेल्टा से काठियावाड़ और पंजाब से नर्मदा नदी तक फैल गया था।

परंतु मन से हर्ष विजेता नहीं अपितु आध्यात्मिक झुकाव वाले कवि और कलाकार थे। हर्ष ने कन्नौज साम्राज्य को कवियों, कलाकारों, संगीतकारों और दार्शनिकों के लिए विख्यात एक जीवंत भूमि में रूपांतरित कर दिया था। यहां तक कि सम्राट ने स्वयं संस्कृत में तीन नाटक लिखे थे।

जन्म से सूर्य-पूजक, वो शैव और बौद्ध संप्रदाय के महानतम संरक्षकों में से एक थे। अपने शासन के प्रारंभिक वर्षों में ही उन्होंने साम्राज्य में पशुओं की बलि पर प्रतिबंध लगा दिया था। वो नालंदा, एक विश्वविद्यालय जहां दस हज़ार विद्यार्थी और भिक्षु निवास करते थे, के सबसे उदार प्रदाताओं में से एक थे।

"और क्या बचा दान देने को?" हर्ष ने स्वयं सोचा। उनका ध्यान तुरंत अपने व्यक्तिगत आभूषणों और वस्त्रों पर गया। पहले उन्होंने अपने हार, मुकुट, रत्न, कड़े, गंडे और अंगूठियां दान किए, और फिर वस्त्र। इस तरह उन्होंने स्वयं को नंगा फ़क़ीर बना लिया, वो मुस्कुराए और अपनी बहन से पुराने साधारण वस्त्रों हेतु अनुरोध किया। जनसाधारण की तरह स्वयं को उनसे ढका, फिर उन्होंने प्रार्थना की, और

परमात्मा को धन्यवाद दिया कि उसने उन्हें ऐसा अवसर दिया कि वो दूसरों के काम आ सके।

फिर सम्राट ने अपनी प्रजा को संबोधित किया।

"कुंभ मेले के साथ छल की अमंगल विरासत का कलंक जुड़ा हुआ है," उन्होंने कहना प्रारंभ किया। "हमारे पवित्र शास्त्रों के अनुसार, अमृत से भरे एक पात्र के लिए देवों और असुरों ने एक-दूसरे से युद्ध लड़ा, जबकि समुद्र मंथन के समय वो तथाकथित रूप से एक दूसरे का सहयोग करने पर सहमत हुए थे।"

सन्नाटा पूरी तरह पसरा रहा। अधिपति अपनी प्रजा के प्रिय और आदरणीय थे। वो उनके हर शब्द को ग्रहण करने के लिए उत्सुक थी।

"कहा जाता है कि विष्णु स्वयं को आकर्षक मोहिनी के रूप में परिवर्तित करके असुरों से कुंड हथियाकर भागे," हर्ष कहते रहे। "उनका पीछा हुआ, तो विष्णु ने घड़े को अपने उड़न-वाहन गरुड़ के हवाले कर दिया। इस दौरान हुए संघर्ष में अमृत की कुछ बूंदें चार स्थानों पर गिर गईं। इनमें से एक स्थान प्रयाग भी था। और उस घटनापूर्ण दिन से परंपरा चल पड़ी, तीन साल के विधिवत अंतराल से बारी-बारी से इन चार स्थानों पर कुंभ मेला आयोजित किया जाता है, अपना प्रिय प्रयाग उनमें सबसे महत्वपूर्ण है।"

हर्ष सांस लेने के लिए ठहरे।

"हमारे साझा इतिहास में इस महत्वपूर्ण पवित्र घटना की महत्ता पर समय-समय पर बल दिया जाता रहा है," हर्ष बोले। "सहस्त्रों वर्ष पूर्व, युवराज भरत अपने भाई राम, सीता और लक्ष्मण के पीछे-पीछे प्रयाग आए, जो उस समय ऋषि भारद्वाज के आश्रम में रह रहे थे। भरत ने राम से अयोध्या वापस लौट चलने की मनुहार की, परन्तु उन्होंने मना कर दिया। भरत अनिच्छापूर्वक वापस लौट आए और अयोध्या पर राम के नाम से शासन किया।"

राजा ने चीनी भिक्षु की ओर दृष्टि डाली।

"कई शताब्दियों बाद, उपदेश देने के सिलसिले में गौतम बुद्ध ने प्रयाग की यात्रा की। बुद्ध के तीन शताब्दी बाद, बौद्ध स्तूपों के निर्माण के सिलसिले में सम्राट अशोक आए। हमारी पूंजी इसी आध्यात्मिक और ऐतिहासिक धरोहर में निहित है।"

अनुमोदन में जनसमूह से एक उल्लासपूर्ण जय-जयकार उठी।

दोबारा आरंभ करने से पूर्व, हर्ष ने जयकार थमने की प्रतीक्षा की। "हमारी धरती महती समृद्धशाली है, पर हमें सावधान रहना चाहिए कि हमारी समृद्धि कभी अभिशाप न बनने पाए। आइए, हम ये सुनिश्चित करें कि हम अमृत-कुंड के लिए झगड़ेंगे नहीं। जो भी संपत्ति साम्राज्य के पास है, वो मेरी प्रजा की सेवा के लिए है।"

अधिपति के गुणगान के स्वर पुनः सुनाई दिए।

राजमहल में उसी दिन बाद में, हर्ष ने ह्वेनत्सांग से अपने निजी कक्ष में मिलने का

अनुरोध किया।

ह्वेनत्सांग साधारण भिक्षु नहीं थे। देश की सीमा से बाहर कार्य न करने के चीनी सम्राट ताईज़ौंग के आदेश को चुनौती देते हुए गुप्त रूप से उन्होंने चीन छोड़ दिया और भारत की यात्रा की। अगले सत्रह साल उन्होंने प्रायद्वीप की यात्रा करते, बौद्ध शिक्षा केंद्रों पर अध्ययन करते, और अपने अनुभवों का इतिवृत्त लिखने में बिताए।

चीन वापसी पर ह्वेनत्सांग अपने साथ चीन के साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित करने वाले हर्ष के पत्र लेकर आए थे और उन्होंने पवित्र बौद्ध ग्रंथों को चीनी भाषा में अनूदित करने में कई वर्ष बिताए। इस प्रकार से ह्वेनत्सांग एक भिक्षु, विद्वान, कूटनीतिज्ञ, यात्री और अनुवादक, एक ही में सब कुछ थे।

"मेरी इच्छा आपको कुछ दिखाने की है," सम्राट ने कहा। "ये मेरे सबसे विश्वासपात्र अधिकारी, नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति मित्रवसु की निगरानी में है।"

सम्राट ने ताली बजाई, और झुर्रियों से भरे चेहरे वाले एक भिक्षु ने प्रवेश किया। उनके हाथ में गहरे लाल रंग के कपड़े में लिपटा एक पुलिंदा था। सम्राट के सामने निचले पटल पर उन्होंने सावधानी से उसे रखा, और गांठ खोली।

उसके अंदर था, सूखे और सुचिक्कण विशाल तालपत्रों का एक संग्रह, जिन्हें छांटकर एक बराबर किया गया था। पूरे पुलिंदे को एक साथ बांधे रखने के लिए प्रत्येक तालपत्र के बीचोबीच बने छिद्र में एक रस्सी थी। भंगुर पांडुलिपि को एकजुट रखने के लिए उसके ऊपर और नीचे एक जोड़ा काष्ठ-आवरण था। प्रत्येक काष्ठ-आवरण पर एक मत्स्य की आकृति उकेरी गई थी।

कुलपति ने प्राचीन पुस्तक खोली। हर पत्र पर अभिलेखों का संचयन था। प्रतीत होता था कि प्रत्येक अक्षर बड़ी मेहनत से उन पत्तों पर उकेरे गए थे और बाद में कालिख से भरे गए थे।

पांडुलिपि पढ़ने के लिए ह्वेनत्सांग ने कनखी मारी। ये वो लिपि नहीं थी जिसे उन्होंने नालंदा में सीखा था। हर्ष मुस्कुराए। "ये ब्राह्मी है, कुटिला नहीं," उन्होंने समझाया। "आप इसे पढ़ने में असमर्थ होंगे।"

"ओह, तब आप इसे मुझे क्यों दिखा रहे हैं, सम्राट?" ह्वेनत्सांग ने पूछा।

"क्योंकि आपको ये जानना चाहिए कि इस स्वर्णिम युग के मूल में क्या अंतर्निहित है," हर्ष ने कहा। भिक्षु की ओर घूमते हुए उन्होंने कहा, "मित्रवसु, क्या आप इसके कुछ पन्ने पढ़ेंगे, हमारे प्रबुद्ध मित्र के लिए?"

उस वृद्ध मनुष्य ने हामी भरी और पढ़ना प्रारंभ किया।

'स्वेदन... मर्दन... मूर्छन... उत्थापन... पतन... रोधन... नियमन... संदीपन...'

पुस्तक तीन
1970—1980

अब्दुल दादा चीनी ड्रैगन प्रिंट का ड्रेसिंग गाउन पहने हुए था और अपने ऑफ़िस में बैठा मोटा सा क्यूबन सिगार पी रहा था जबकि उसकी गुलाबो उसके कंधों की मालिश कर रही थी। उसके सामने मेज़ पर स्पंज केक, चीज़ स्ट्रॉ और पफ़ पेस्ट्रियों की प्लेटें रखी थीं। "ये सब क्या है?" अरबाज़ ने खाने की चीज़ों की तरफ़ इशारा करते हुए पूछा।

"वो बच्चा याद है तुम्हें जिसे तुमने बचाया था? वही जिसके बाप ने एक मिठाई की दुकान खोली थी और सूदख़ोरों के चंगुल में फंस गया था? उस लड़के के दादा, एक रिटायर्ड मजिस्ट्रेट, ने हमारी मदद मांगी थी?"

"हां," अरबाज़ ने जवाब दिया।

"अब बाप क़िले की मॉन्गिनीज़ शॉप पर काम करता है। आज वो मेरे चखने के लिए कुछ चीज़ों भेंट करने आया था।"

अरबाज़ मुस्कुराया। ये सुनकर अच्छा लगा था कि वो परिवार आगे बढ़ रहा था।

"मैंने उसके बेटे के लिए उसे कुछ पैसा दे दिया," अब्दुल दादा ने कहा। "कौन सी लूं?"

"आपका मतलब केक और पफ़ पेस्ट्री में से?" अरबाज़ ने पूछा।

"नहीं, चूतिया। मेरा मतलब इन अंगूठियों में से!"

अब्दुल दादा के हाथ में हीरे की दो अंगूठियां थीं। वो उन दोनों को परख रहा था ये देखने के लिए कि उसकी महबूबा अंजुम आज़ाद के लिए कौन सी बेहतर होगी।

"हीरों के मामले में मैं ज़रा भी माहिर नहीं हूं," अरबाज़ ने जवाब दिया। "मैं तो सस्ती वाली लेता।"

"तुमने ख़बर सुनी?" अब्दुल दादा ने पूछा जबकि अरबाज़ केक के पीस को खाने में लगा हुआ था।

"क्या?" अरबाज़ ने भरे मुंह से पूछा।

"इंदिरा गांधी ने प्रिवी पर्स खत्म कर दिया है," दादा ने कहा। "मैंने कहा था तुमसे ये सरकार क़तई भरोसे लायक़ नहीं है!"

प्रिवी पर्स वो फ़ीस थी जो 1947 में भारत में विलय की शर्त के तौर पर अब तक राजे-रजवाड़ों के शाही परिवारों को दी जाती थी। उनके समर्पण को सुदृढ़ करने के बाद इंदिरा गांधी की सरकार अब आराम से उस वादे से पीछे हट गई थी।

"मेरी फ़ौरी मुश्किलें कहीं ज़्यादा बड़ी हैं," अरबाज़ ने कहा।

अब्दुल दादा ने हीरे की अंगूठियों से नज़र उठाई। "बताओ मुझे," उसने मालिश करने वाली औरत को जाने का संकेत करते हुए कहा।

"आप तो जानते ही हैं, शहर में एक नया पुलिस कमिश्नर आया है," अरबाज़ ने कहा। "वो ज़रा मुश्किल हो रहा है।"

“कैसे?” दादा ने पूछा।

“उसने शहर में आ रही शराब की एक खेप को रोक लिया; मटके के तीन अड्डों पर छापे मारे; कोलाबा कॉज़वे से उसने हमारे पांच ड्रग बेचनेवालों को उठा लिया; वो...”

“कोई बड़ी बात नहीं है,” अब्दुल दादा ने बीच में टोका। “सारे कमिश्नरों को सिखाना पड़ता है। उन्हें पिल्लों की तरह ट्रेनिंग देनी होती है। तुम मेरे किसी पांडव का इस्तेमाल करो।”

अब्दुल दादा पांच लोगों को हमेशा अहम मुकाम पर रखता था। “वो पवित्र पांच हैं,” उसने अरबाज़ को समझाया था। अरबाज़ जल्दी ही समझ गया था कि इसका मतलब पुलिस, न्यायपालिका, नगरपालिका और इंकम टैक्स में महत्वपूर्ण संपर्क बनाकर रखना था। “पांचवां क्या है?” अरबाज़ ने पूछा था।

“खुदा,” अब्दुल ने मंजे अंदाज में कहा।

“इस आदमी के साथ ये इतना आसान नहीं हो रहा है,” अरबाज़ ने कहा। “ये कट्टर ईमानदार है। नागपुर से इसका यहां ट्रांसफ़र हुआ है। अभी इसे बंबई की हवा नहीं लगी है। पुलिस का आपका पांडव भी इस बंदे से उकता गया है।”

“सब ईमानदार आदमियों में छिपी हुई कमियां होती हैं,” दादा ने कहा। “उनका पता करो।”

“हमने सब कुछ देख लिया। वो रिश्वत नहीं लेता। सिगरेट-शराब नहीं पीता, जुआ नहीं खेलता।”

“औरतें?” दादा ने पूछा।

“इक्कीस साल से वफ़ादारी से एक ही औरत के साथ शादीशुदा है,” अरबाज़ ने कहा। “किसी अफ़ेयर, रखैल या कॉल गर्ल की कहीं कोई भनक नहीं है।”

“इस घंटे को टपका डालते हैं,” अब्दुल दादा ने धुएं का एक शानदार छल्ला बनाया। अरबाज़ ने एक बार फिर छल्ले को बड़ा होते और शून्य में विलीन होते देखा।

“हमारे तीन आदमी जेल में हैं,” अरबाज़ ने कहा। “पुलिस के साथ खुली जंग होने की सूरत में उन्हें दांव पर लगाया जा सकता है। आपने मुझे सिखाया था कि रिवॉल्वर से बेहतर नरमी से समझाना है।”

दादा हंसने लगा। “लेकिन कभी-कभी रिवॉल्वर हाथ में लेकर नरमी से समझाना ज़्यादा कारगर होता है,” उसने कहा। “लेकिन तुम सही कहते हो, पुलिस के साथ खुलकर भिड़ने की कोई तुक नहीं है। हमीद को बुलाते हैं।”

हमीद आया। मुस्तफ़ा की खुदकुशी के बाद से हमीद की अहमियत बढ़ गई थी। रंगराजन पिल्लै के क़त्ल ने माटुंगा और धारावी में पिल्लै के कुछ कट्टर साथियों को छोड़कर उसके लगभग सारे गैंग का सफ़ाया कर दिया था। नतीजा ये हुआ कि दादा का क़ानून चलने लगा। अब बंबई पूरी तरह से उसकी मिल्कियत थी। इसका ये भी मतलब था कि उसके विशाल हो चुके साम्राज्य को अब अब्दुल दादा के दो भरोसेमंद

आदमी-अरबाज़ और हमीद-चला रहे थे। मटका कारोबार को अब मुरली चलाता था जिसने दादा के मुनाफ़े को तिगुना कर दिया था।

"इस आदमी के कोई शौक़ हैं?" अरबाज़ ने पूछा।

"केवल दो। सिक्के जमा करना और राजेश खन्ना की फ़िल्में देखना," हमीद ने जवाब दिया। "प्राचीन सिक्कों पर वो बहुत रिसर्च कर चुका है और उसे किसी हद तक एक्सपर्ट माना जाता है।"

"राजेश खन्ना का क्या जुनून है?"

"उसने सुपरस्टार की सारी हिट फ़िल्में देख रखी हैं। पहले दिन, पहला शो देखने जाता है। बज़ाहिर उसने आराधना, दो रास्ते, कटी पतंग, आनंद और अमर प्रेम पांच-पांच बार से ज़्यादा देखी हैं।"

"राजेश खन्ना की अगली बड़ी फ़िल्म कौन सी आ रही है?" अरबाज़ ने पूछा।

"अंदाज़," हमीद ने जवाब दिया। "अगले महीने रिलीज़ हो रही है। हालांकि इसमें इस सुपरस्टार का बस गैस्ट रोल है।"

"और कलाकार कौन हैं?" अरबाज़ ने पूछा।

"हेमा मालिनी, शम्मी कपूर और सिम्मी गरेवाल—सुपरस्टार के अलावा," हमीद ने जवाब दिया।

"प्रोडक्यूसर?"

"रमेश सिप्पी," हमीद ने बताया। "लोग कह रहे हैं कि फ़िल्म में एक गाना है 'ज़िंदगी एक सफ़र है सुहाना' जिसमें किशोर कुमार ने योडलिंग की है।"

"उसे इस गाने के बारे में पता है?" अरबाज़ ने पूछा।

"वो रेडियो पर हर वक्त अमीन सयानी की बिनाका गीतमाला सुनता रहता है। उस पर नज़र रखने के लिए लगाए हमारे आदमी तो बार-बार उन्हीं गानों को सुनकर पक गए हैं," हमीद ने कहा।

"रेडियो पर कोई ऐसा है जो राजेश खन्ना की नक़ल उतारता हो?" अरबाज़ ने पूछा।

"बिल्कुल," हमीद ने जवाब दिया। "एक कोई निरंजन है।"

"हमीद, ये निरंजन जो भी है, इसे मुझसे मिलवाओ," अरबाज़ ने निर्देश दिया। अब्दुल दादा की ओर मुड़कर अरबाज़ ने पूछा, "दादा, क्या आप अंदाज़ के प्रीमियर के चार टिकटों का इंतज़ाम कर सकते हैं?"

अब्दुल दादा ने हामी भरी। "बॉलीवुड में ऐसा कुछ नहीं है जिसका मैं इंतज़ाम न कर सकूं।"

अरबाज़ मुस्कुराया। अब्दुल दादा ने उसे देखा।

दादा को पता था कि जब अरबाज़ मुस्कुराता है तो इसका बस दो में से कोई एक ही मतलब हो सकता है। वो हिसाब बराबर कर चुका है। या उसने हिसाब बराबर करने का रास्ता खोज लिया है।



क्रॉफ़र्ड मार्केट के सामने वाली बिल्डिंग जिसे 1896 में बनाया गया था, एंग्लो-गोथिक वास्तुशिल्प का शानदार नमूना थी। नारियल केपेड़ों की मोटी आड़ ने मेन रोड से उसे लगभग अदृश्य ही बना दिया था। अंदर पहुंचने के बाद पुलिस कमिश्नर के ऑफ़िस तक पहुंचने के लिए विक्टोरियाई मेहराबदार गलियारों से होकर, और पूर्व पुलिस कमिश्नरों की अनेक भयानक तस्वीरों को पार करते हुए जाना होता था।

कमिश्नर दुबे का केबिन बहुत बड़ा था, जहां टीकवुड की कांच के टॉप वाली एक विशालकाय मेज़ थी। उसके पीछे की दीवार पर बंबई पुलिस का चिह्न लगा था। एक ओर लगे साइडबोर्ड पर तीन टेलीफ़ोन रखे थे। एक में रोटरी डायल नहीं था, वो उसकी सेक्रेटरी के लिए इंटरकॉम था। दूसरा उसके और राज्य के गृहसचिव के बीच हॉटलाइन था। तीसरा उसकी डाइरेक्ट लाइन था।

तीसरी लाइन की घंटी बजने लगी। ये ज़्यादातर रोटरी फ़ोनों जैसी चिढ़ाने—बल्कि डराने—वाली कर्कश घंटी थी। दुबे ने फ़ोन उठाया।

“जी?” उसने कहा।

“क्या कमिश्नर दुबे बोल रहे हैं?” राजेश खन्ना की आवाज़ ने कहा। दुबे अपनी सीट से उछलकर खड़ा हो गया। ऐसा तो वो मुख्यमंत्री या राज्यपाल तक के लिए नहीं करता था।

इतने बरसों से जिस आवाज़ ने उसे दीवाना बना रखा था, वो उसे फ़ोन कर रही थी… दुबे को!

“क्या सच में आप ही हैं, काका?” दुबे ने खन्ना के लोकप्रिय नाम को लेते हुए पूछा, उसकी आवाज़ उत्तेजना से कांप रही थी।

दूसरे छोर से आ रही आवाज़ हंस पड़ी। “हां, मैं ही हूं, यार। मेरे पीए ने मुझे बताया कि आप मेरे प्रशंसक हैं।”

“हां, काका!” कमिश्नर ने ज़ोर देकर कहा। “कौन आपका प्रशंसक नहीं है? मेरी बीवी और बेटियां भी आपके लिए पागल हैं। हम आपकी हर फ़िल्म को कई-कई बार देखते हैं। हम सब आपसे मिलने के लिए मरे जा रहे हैं; मैं तो अभी ही मरा जा रहा हूं!”

“ज़िंदगी और मौत ऊपरवाले के हाथ में हैं,” आवाज़ ने मशहूर फ़िल्म आनंद से पंक्ति लेते हुए कहा। “लेकिन मैंने एक छोटे से काम के लिए आपको फ़ोन किया है।”

“आपका तो कहना ही मेरे लिए हुक्म है, सर,” दुबे ने कहा।

“आप तो जानते ही हैं कि एक नई फ़िल्म अंदाज़ जल्दी ही रिलीज़ होने वाली है,”

आवाज़ ने कहा। “उसमें मेरा गैस्ट रोल है।”

“हम सब बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रहे हैं,” दुबे ने कहा।

“उस फ़िल्म का प्रीमियर अप्सरा में है और आपको शायद पता ही होगा कि पिछली बार वहां क्या हुआ था?”

दुबे ने जो ज़िंदगी में कभी किसी फ़िल्म के प्रीमियर में नहीं गया था, अपनी अनभिज्ञता जताई।

“लड़कियां अपने लिपस्टिक लगे होंठों से मेरी कार पर चुंबन जड़ना चाहती थीं। कुछ ने तो खिड़कियों पर अपने ख़ून से प्रेम-संदेश तक लिख डाले थे। सड़क के दोनों ओर लोगों को हुजूम लग गया था और सिनेमाहॉल में घुसना नामुमकिन ही हो गया था,” मशहूर आवाज़ ने शिकायत की।

“आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं, सर?” दुबे ने पूछा।

“मुख्यमंत्री को भी निमंत्रण भेजा गया है। ये शाम छह बजे का है।”

“तो, क्या कोई मुश्किल है?” दुबे ने लगभग चाटुकारिता भरी आवाज़ में पूछा।

“मैं उम्मीद कर रहा हूं कि ये फ़िल्म मेरी लगातार पंद्रहवीं सुपरहिट होगी। मैंने अपने ज्योतिषी से बात की है और उसका कहना है कि प्रीमियर छह की जगह सात बजे हो।”

“आप सीएम से ही बाद में आने को क्यों नहीं कह देते?” दुबे ने सलाह दी।

“मैं कह देता लेकिन नौ बजे उनकी प्रधानमंत्री के साथ मीटिंग है। अगर हम सात बजे शुरू करेंगे तो उन्हें एक घंटे पहले जाना पड़ेगा। उनका आग्रह है कि फ़िल्म छह बजे शुरू हो जानी चाहिए। मैं बड़ी मुश्किल में पड़ गया हूं।”

“मैं समझता हूं, काका,” दुबे ने हमदर्दी जताते हुए कहा।

“क्या मैं आपसे गुज़ारिश कर सकता हूं कि उनके क़ाफ़िले कोअप्सरा थिएटर पहुंचने से कुछ पहले थोड़ी देर करवा दें और क़रीब तीस मिनट उसे वहीं रोके रखें? इससे सीएम के अहं को भी ठेस नहीं पहुंचेगी और उस इलाक़े में ट्रैफ़िक की स्पीड को देखते हुए ये भी पक्का हो जाएगा कि वो सात बजे के आसपास वहां पहुंचें।”

“वो मुख्यमंत्री हैं, मैं उन्हें कैसे रोक सकता हूं?” कमिश्नर ने पूछा।

“मैं किसी को जानता हूं जो आपकी मदद कर सकती है,” आवाज़ ने कहा। “उसका नाम रानी है। मैं आपके, आपकी पत्नी और बेटियोंके लिए भी इंवीटेशन भेज रहा हूं। प्लीज़ प्रीमियर में आना। वहांठीक छह बजे पहुंच जाना जिससे मैं सभी कलाकारों से आपका परिचय करवा सकूं।”

“और रानी?” कमिश्नर ने पूछा।

“वो जल्दी ही आपसे मिलेगी। प्लीज़ उसे 500 रुपए दे दें।मैं आपको दे दूंगा।”



मुख्यमंत्री और उनकी पत्नी अपनी लाल बत्ती वाली सफ़ेद एंबैसडर में बैठे थे। मुख्यमंत्री की पत्नी ने अपनी बेहतरीन साड़ी पहनी थी—मटमैले नीले रंग की लेस की साड़ी और बालों में चमेली का गजरा। एक हफ़्ते से वो अपने परिधान की तैयारी कर रही थीं।

प्रीमियर में आने के लिए मुख्यमंत्री ने अपने कई बहुत ज़रूरी काम छोड़े थे। अपने अधिकारियों को उन्होंने ये कहकर इसे न्यायसंगत ठहराया था कि उन्हें "सिने उद्योग को प्रेरित और प्रोत्साहित करना है।" उनके प्रमुख सचिव ने नरमी से इंगित किया था कि 1913 में जब दादासाहेब फाल्के ने भारत के लिए अपनी पूरी लंबाई की फ़ीचर फ़िल्म राजा हरिश्चंद्र बनाई थी, तभी से सिनेमा ख़ूब फल-फूल रहा है। सीएम ने उसे सख़्त नज़र से देखा जिसने तुरंत उसे चुप कर दिया।

अपनी कार के आगे चल रही मात्र एक पायलट कार के साथ, दंपती अप्सरा सिनेमा की ओर जा रहे थे। ओपेरा हाउस पहुंचने से पहले उनकी कार चुस्ती से कैंप्स कॉर्नर और ह्यूजेस रोड से निकल गई थी। लेकिन जब कार लैमिंग्टन रोड के लिए बाएं मुड़ी तब ये हुआ।

हिजड़ों के एक झुंड ने मुख्यमंत्री की कार को घेर लिया। ये कोई छोटा-मोटा झुंड नहीं था। ऐसा लग रहा था जैसे सारी दुनिया के हिजड़े जमा हो गए हों। अपने आम अजीब से स्टाइल में वो कार की खिड़की पर थाप देने, ज़ोर-ज़ोर से तालियां बजाने और बेहूदा गाने गाने लगे।

मुख्यमंत्री का रास्ता साफ़ करने के लिए पाइलट कार में चल रहे दो पुलिसवाले अपनी गाड़ी से उतरकर आए, लेकिन किन्नरों की इतनी विशाल फ़ौज से घिरकर वो दो आदमी भी क्या कर पाते! दस हिजड़ों के पहले वाले गुट ने जैसे औरों को भी खींच लिया था। कुछ ही मिनटों में वहां पचास से ज़्यादा हो गए थे।

"निकालो हमें यहां से!" सीएम अपने ड्राइवर पर भड़के। ड्राइवर धर्म-कर्म वाला आदमी था। उसने सीएम को समझाने की कोशिश की कि जब अयोध्या से निकाले जाने पर राम वन के लिए जा रहे थे तो उन्होंने अपने पीछे आ रहे सभी नर-नारियों से लौट जाने को कहा। हिजड़े रुके रहे क्योंकि वो तो न नर थे न नारी। उनके समर्पण से भावुक होकर राम ने उन्हें आशीर्वाद देने की शक्ति प्रदान की।

"चिंता करने की कोई बात नहीं है, साहब," ड्राइवर ने कहा। "इनके पास तो आशीर्वाद देने की दिव्य शक्ति होती है।"

एक हिजड़ा कार के बोनट पर चढ़ गया था और विंडस्क्रीन पर अश्लीलता से कूल्हे हिलाता बेहूदा डांस कर रहा था।

"तुम हमें यहां से निकाल रहे हो या मैं तुम्हें आशीर्वाद दूं?" सीएम गुस्से से चिल्लाए।



मुख्यमंत्री और उनकी पत्नी पूरे एक घंटे लेट शाम को सात बजे अप्सरा सिनेमा पर पहुंचे थे। जब तक उन्हें उनकी पहली पंक्ति की सीटों पर पहुंचाया गया, 166 मिनट की फ़िल्म के लगभग साठ मिनट निकल चुके थे।

डाइरेक्टर, प्रोडक्यूसर और अभिनेताओं समेत पूरी टीम पहले ही बैठ चुकी थी। उन्होंने देखा कि सीएम के बाल अस्तव्यस्त हो रहे हैं और उनकी पत्नी की लेस की नीली साड़ी मुचड़ गई है। उनके बालों में लगे चमेली के फूल गिर चुके थे, और अब बस वो धागा उनके बालों में मुखरता से नज़र आ रहा था जिसमें वो ख़ूबसूरत फूल पिरोए गए थे।

पुलिस कमिश्नर दुबे दूसरी पंक्ति की अपनी सीट से उठा जहां उसका परिवार बैठा हुआ था और लपककर सीएम के पास पहुंचा। "सब ठीक तो है न, सर? आपको देर हो गई तो मुझे फ़िक्र होने लगी थी," उसने धीमे से कहा, लेकिन उसके शब्द इतने तेज़ थे कि ज़्यादातर लोगों को परेशानी हुई। सीएम ने धीमे से अस्पष्ट सा कुछ कहा और कमिश्नर जल्दी से अपनी सीट पर वापस चला गया।

कमिश्नर अपने परिवार को साथ लिए ठीक छह बजे अप्सरा सिनेमा आ पहुंचा था। उसे मिले निमंत्रण में साफ़ लिखा था कि आमंत्रित लोगों को छह बजे तक अपनी जगहों पर बैठ जाना है। वो सोच में तो पड़ा था कि जब फ़िल्म को शुरू ही सात बजे होना है तो इसकी क्या तुक है। लेकिन फिर, काका से जवाबतलब करने वाला वो कौन होता था? काका ने तो जैसे उसे पूरी तरह नज़रअंदाज़ ही कर दिया था, उसकी कोशिशों के लिए उसे धन्यवाद देने तक की शिष्टता नहीं दिखाई, न ही उसे वो पैसे वापस दिए जो उसने ख़र्च किए थे। वो तो जब कमिश्नर खुद काका के पास गया और अपना परिचय दिया तब जाकर स्टार विनम्रता से मुस्कुराए और उससे हाथ मिलाया। अजीब बात तो ये थी कि जब कमिश्नर ने साज़िशी अंदाज़ में स्टार को आंख मारी तो काका के चेहरे पर उलझन भरा भाव उभरता सा लगा था।

बीस मिनट बाद लाइट ऑन हो गईं। इंटरवल हो गया था। सीएम सभी कलाकारों से मिले और जाने की इजाज़त मांगी—राज्य के बेहद ज़रूरी कामों की वजह से। वास्तव में, उनकी पत्नी ने उनसे कहा था कि वो घर जाना चाहती हैं क्योंकि शुरू का एक घंटा निकल जाने से फ़िल्म की कहानी उनके पल्ले नहीं पड़ रही थी। सीएम को उनकी कार तक छोड़कर आने के लिए पुलिस कमिश्नर भी उठ खड़ा हुआ।

जब वो थिएटर के बाहर आ गए, तो सीएम की एंबैसडर किनारे पर आ लगी। कमिश्नर ने दंपती के लिए दरवाज़ा खोला। अचानक, हंगामा खड़ा हो गया। रानी थी, हिजड़ों के उस गुट की मुखिया जिसने सीएम के सफ़र में रुकावट डाली थी।

"जितने पैसे आपने मुझे दिए हैं, उससे दोगुने पैसे में सौदा तय हुआ था," रानी ने सौ-सौ के पांच नोट पुलिस कमिश्नर के सामने लहराते हुए कहा। "जो आपने करने को कहा था हमने वो सब किया, तो आप अपनी बात पूरी क्यों नहीं कर रहे हैं?"

बेचारे कमिश्नर के चेहरे का रंग उतर गया, जबकि सीएम गुस्से से उसे घूर रहे थे,

ग़ुस्सा उनकी आंखों में साफ़ दिख रहा था।

पुलिस कमिश्नर दुबे का कार्यकाल बंबई पुलिस के इतिहास में दर्ज सबसे छोटा कार्यकाल रहा।



"मैं चाहता हूं तुम हैदराबाद जाओ," अब्दुल दादा ने अरबाज़ से कहा।

"ठीक है, मगर क्यों?" अरबाज़ ने पूछा।

"बंजारा हिल्स में हमारी एक ज़मीन है—बहुत ही क़ीमती प्रॉपर्टी है," अब्दुल ने बताया। "राज्य सरकार उसका कुछ हिस्सा सार्वजनिक इस्तेमाल के लिए लेने की योजना बना रही है।"

"मैं इसे किस तरह हैंडल करूं?" अरबाज़ ने पूछा।

"मैंने एच.वी. रेड्डी के साथ एक मीटिंग रखवा दी है," दादा ने कहा।

"वो कौन है?" अरबाज़ ने पूछा।

"उसकी मुख्यमंत्री तक पहुंच है," दादा ने बताया।

"हम सीएम को रिश्वत देंगे?"

"ऐसा नहीं कर सकते। वो बहुत ईमानदार है। हम बस उससे अपील कर सकते हैं। शायद वो हमें किसी और ज़मीन का विकल्प दे दे। इसके अलावा, वो अधिग्रहीत की जाने वाली ज़मीन का आकार कम करवा सकता है।"



"क्या तुम उसे हैदराबाद ला सकते हो," अरबाज़ ने पूछा। सुबह को वो मुरली के साथ स्थानीय उडिपी रेस्तरां में था।

"पक्का नहीं कह सकता लेकिन अगर तुम उसे अपने साथ ले जा सको तो इससे तुम्हें बहुत धार मिल जाएगी," मुरली ने कहा। "आह, वो आ गया।"

गोटी दाढ़ी वाला एक लंबा और पतला यूरोपियन अंदर आया। वो बहुत अलग-थलग नहीं दिख रहा था क्योंकि उसने कुर्ता और जींस पहन रखी थी।

"मैं तुम्हें पियरे लैक्रॉइ से मिलवाता हूं, अरबाज़," मुरली ने कहा। अरबाज़ और पियरे ने हाथ मिलाए और बैठ गए। फिर उन्होंने नाश्ते का ऑर्डर दिया।

"मैं भाषाविद के रूप में जाना जाता हूं," पियरे ने बताया।

"भाषाविद क्या करते हैं?" अरबाज़ ने पूछा।

"मैं भाषाओं के व्यावहारिक और सैद्धांतिक तत्वों का अध्ययन करता हूं—व्याकरण, वाक्य रचना, शब्दार्थ विज्ञान, स्वर विज्ञान," पियरे ने जवाब दिया। "मैं यहां इसलिए

आया हूं क्योंकि भारत में जीवित भाषाओं की सबसे ज़्यादा तादाद है।"

"मुरली ने मुझे बताया कि आपको कोई परेशानी हो रही है," अरबाज़ ने कहा।

"मुझे इंडो-फ़्रेंच काउंसिल से एक ग्रांट मिलने वाली थी," पियरे ने कहा। "बदक़िस्मती से, पैसा आ नहीं पाया। मुझे फ़्रेंस लौटना होगा।"

"और अगर मैं आपसे कहूं कि मैं अपने बॉस से आपको स्पॉन्सर करवा सकता हूं तो?" अरबाज़ ने पूछा।

"ये तो बहुत ज़बरदस्त होगा," पियरे ने कहा। फिर उसके माथे पर बल पड़े। "झोल क्या है?"

"आपको मेरे साथ हैदराबाद का सफ़र करना होगा।"



पियरे लैक्रॉइ बंबई से हैदराबाद की फ़्लाइट में सो गया था। उसके पास ही अरबाज़ बैठा था।

जब अरबाज़ ने कॉकपिट में जाने की इजाज़त मांगी थी, तब कारावेल विमान के छब्बीस वर्षीय नौजवान सह-पायलट ने कुछ देर उससे बात की थी। "दबाव से पैदा हुई गड़बड़ी की वजह से मौसम थोड़ा ख़राब है लेकिन कोई दिक़्क़त नहीं होगी," उसने कहा। जब अरबाज़ ने उसका नाम पूछा तो उसने बताया कि उसका नाम राजीव गांधी है।

अरबाज़ के बीच के रास्ते के दूसरी ओर एक और जैंटलमेन बैठा था जो अख़बार पढ़ने में मसरूफ़ था जिसकी हैडलाइन थी 'चक्रवात से उड़ीसा में *10,000* की मृत्यु'। ख़बर के मुताबिक़, 30 अक्टूबर 1971 की सुबह-सुबह पारादीप के पास उड़ीसा के तटीय क्षेत्र से 170 किमी प्रति घंटे की रफ़्तार से एक चक्रवात गुज़रा था जिसने अपने रास्ते में भयंकर तबाही मचा दी थी।

"भयानक ख़बर है," अरबाज़ ने दूसरी ओर बैठे आदमी से कहा।

उस आदमी ने अपने अख़बार पर से नज़र उठाई, मुड़कर अरबाज़ को देखा। "हां, वाक़ई बहुत बुरा रहा," वो आदमी सहमत था। "दस हज़ार मर चुके हैं और दस लाख बेघर हो गए हैं।"

"आप अक्सर हैदराबाद जाते हैं?" अरबाज़ ने पूछा।

"कभी-कभार, जब बिज़नेस के सिलसिले में जाना होता है," उस आदमी ने जवाब दिया।

"वहां ठहरने के लिए सबसे अच्छा होटल कौन सा है?" अरबाज़ ने पूछा। "मैं मुख्यमंत्री से मिलने जा रहा हूं लेकिन ये आइडिया नहीं है कि कहां ठहरूं।"

"हैदराबाद बंबई, दिल्ली या कलकत्ता की तरह नहीं है," उस आदमी ने जवाब दिया। "कोई ठीकठाक होटल नहीं है। अगर आप चाहें, तो मेरे कंपनी गैस्टहाउस में

ठहर सकते हैं।"

"ये तो आपकी बहुत मेहरबानी है," अरबाज़ ने कहा। "लेकिन क्या आप वहां नहीं रहेंगे? आपको परेशानी देना मुझे अच्छा नहीं लगेगा।"

"मैं निज़ाम के परिवार की एक शादी में जा रहा हूं," उस आदमी ने कहा। "मेरे रहने का इंतज़ाम दुल्हन के परिवार ने कर दिया है, तो कोई परेशानी नहीं है।"

"मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूं। वैसे, मैं अरबाज़ शेख हूं," अरबाज़ ने कारावेल के गलियारे के पार हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"मैं अरविंद बागड़िया हूं," उस आदमी ने अरबाज़ से हाथ मिलाते हुए कहा।



हैदराबाद पहुंचने और बागड़िया गेस्टहाउस में रुकने के बाद अरबाज़ ने एच.वी. रेड्डी को फ़ोन किया जो उसके फ़ोन का ही इंतज़ार कर रहा था। "मैं सीएम के साथ आपकी मीटिंग का इंतज़ाम कर दूंगा लेकिन बाक़ी आपके ऊपर है," उसने अरबाज़ से कहा। "मैं क्या कहूं कि आप किसलिए आ रहे हैं?"

अरबाज़ ने समझाया।

अरबाज़ पियरे को साथ लेकर मीटिंग के लिए गया। अगले तीन घंटे ज़मीन, प्रॉपर्टी या बिज़नेस के बारे में कोई बात नहीं हुई। मुख्यमंत्री भारतीय साहित्य के प्रति समर्पित बुद्धिजीवी आदमी थे। तेलुगू, मराठी, हिंदी, अंग्रेज़ी, तमिल, उर्दू, कन्नड़, उड़िया, संस्कृत, फ़्रेंच और स्पेनिश समेत कई भाषाओं में माहिर थे। कुल मिलाकर वो सत्रह भाषाएं बोल सकते थे। महान तेलुगू कृति वेयीपदगलु को हिंदी में और साथ ही मराठी की पण लक्षात कोन घेतो? को तेलुगू में अनूदित करने में उनकी दिलचस्पी थी।

सीएम पियरे से प्रभावित थे और दिन के कई अपॉइंटमेंट रद्द करने के बाद, उन्होंने बहुत इसरार से उसके लिए सरकारी ग्रांट प्रदान करने की पेशकश रख दी।

"मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है, सर," पियरे ने कहा। "अरबाज़ ने बहुत मेहरबानी करके मेरी सारी आर्थिक ज़रूरतों को संभाल लिया है। ये तो बस औपचारिक भेंट थी।"

फिर वो जाने के लिए उठ खड़े हुए। सीएम ने अरबाज़ की पीठ थपथपाई और कहा, "इन्हें यहां लाने के लिए शुक्रिया। ये बहुत ज्ञानवर्धक दोपहर रही। अगर मैं किसी भी काम आ सकूं तो संपर्क करने में हिचकिचाना मत।"

"अब जब आपने ज़िक्र छेड़ा ही है तो, सर..." अरबाज़ ने कहना शुरू किया।



अरविंद ने अपनी टाई ठीक करते हुए कमरे पर नज़र डाली। वो 1895 में स्थापित एक प्रतिष्ठित संस्था टॉलीगंज क्लब में था। सौ एकड़ से ज़्यादा में फैला ये मैदान

मूलत: जॉनसन परिवार के स्वामित्व वाला नील का खेत था। मुख्य क्लबहाउस कभी परिवार का घर हुआ करता था। जो कभी ब्रिटिश बैंकरों और व्यापारियों की मिलन स्थली के लिए रूप में शुरू हुआ था, वो भारतीय कारोबारियों और उद्योगपतियों के लिए क्लब में तब्दील हो गया था और उसे 'टॉली' नाम से जाना जाता था। इन दिनों, सफ़ेद कड़क चादरों और चमकती क्रॉकरी से सजी सुघड़ क़तारों में लगी मेज़ों पर सामान्यतया कलकत्ता का संभ्रांत वर्ग जमा होकर बड़ा पैग या दार्जीलिंग टी का लुत्फ़ उठाता होता था।

दूर की एक मेज़ पर अरविंद ने उन आदमियों को बैठे देखा जिन्हें वो तलाश रहा था। दोनों आदमी व्हिस्की पीते हुए सजे-धजे कमरे की आवाजाही को देख रहे थे। पहला था, घुमक्कड़ कपड़ा व्यापारी से फ़ाइनेंशियर बना घनश्याम दास। दूसरा राम लाल खेतानथा, व्यापारी बैंकर जो अब शहर का सबसे मशहूर डीलमेकर था। दोनों आदमी पचास के दशक में थे और बिज़नेस सूट पहने हुए थे। दोनों आदमी अपने जागृत दिन का ज़्यादातर हिस्सा उस ख़ास मेज़ पर, सौदे पक्के करते हुए बिताते थे। टॉली एक तरह से उनका ऑफ़िस और दूसरा घर था। अरविंद ने उनकी ओर हाथ हिलाया और उनकी मेज़ की तरफ बढ़ गया।

"कैसे हो, मेरे बच्चे?" घनश्याम दास ने कहा, अरविंद के सोने की खान और खाद्य तेल के सौदे कलकत्ता की ज़बान पर थे, इसलिए अचानक इतना स्नेह बरस रहा था।

"आपके आशीर्वाद से सब अच्छा है, सर," अरविंद ने कहा। वो तब तक आदरपूर्वक खड़ा रहा जब तक कि उससे बैठने को नहीं कहा गया।

"आओ, हमारे साथ ड्रिंक लो," राम लाल खेतान ने अपना गिलास ख़ाली करते हुए कहा।

"मैं बैठ तो जाऊंगा, सर, लेकिन लूंगा कुछ नहीं। मंगलवार को मेरा व्रत होता है," अरविंद ने एक अच्छे संस्कारी मारवाड़ी लड़के का चोला ओढ़ते हुए कहा।

"तो, तुम किस बारे में बात करना चाहते हो?" घनश्याम दास ने पूछा।

"मेरे दिमाग़ में एक ट्रांसपोर्टेशन सिस्टम लगाने का आइडिया घूम रहा है," अरविंद ने हिचकिचाते हुए कहा। घनश्याम दास ने हैरानी से अपनी घनी भौंहें उठाईं। ऑटो उद्योग तो ऐसा उद्योग था भी नहीं जिसमें निवेश का सोचा भी जाए। लाइसेंस राज की वजह से भारत सरकार ही तय करती थी कि क्या बनाया जा सकता है और किस क़ीमत पर उसे बेचा जा सकता है।

भारत में पहली मोटरकार 1898 में बंबई की सड़कों पर आई थी। 1903 तक, एक अमेरिकी फ़र्म ने क़रीब पचास कारों के साथ शहर में पब्लिक टैक्सीकैब सेवा शुरू कर दी थी। पहला विश्वयुद्ध होने तक भारत में क़रीब चार हज़ार कारें आयात की जा चुकी थीं। चालीस के दशक में दो कंपनियों, प्रीमियर ऑटोमोबाइल्स और हिंदुस्तान मोटर्स ने भारतीय फ़ैक्टरियां स्थापित कर दी थीं। इन फ़ैक्टरियों ने फ़िटिंग से शुरू किया था, और फिर निर्माण करने लगीं। इस बीच महिंद्रा एंड महिंद्रा ने उपयोगिता वाहन जीप सीजे-3ए की फ़िटिंग शुरू कर दी थी। लेकिन सच तो ये था कि ऑटोमोबाइल सैक्टर अब तक का सबसे ज़बरदस्त तौर पर विनियमित सैक्टर था।

“तुम ऐसे उद्योग में क्यों जाना चाहते हो जो इतना पूंजी प्रधान और सरकार द्वारा इतना ज़्यादा नियंत्रित है?” खेतान ने पूछा।

“मैं कुछ बहुत ही ज़हीन लोगों के साथ काम कर रहा हूं,” अरविंद ने जवाब दिया। “हमारा विश्वास है कि हम एक ऐसा ट्रांसपोर्ट सिस्टम विकसित कर सकते हैं जो अनूठा हो। इसके लिए लगभग कोई ईंधन नहीं चाहिए और न के बराबर रखरखाव। उससे भी ख़ास ये कि सरकार भी इसे पसंद करेगी क्योंकि पहले दिन से ही इसके सारे पार्ट भारत में बनाए जाएंगे। आयात की ज़रूरत ज़ीरो होगी।”

“कोई बहुत दिलचस्प प्रस्ताव नहीं है,” घनश्याम दास बुदबुदाया। “लागत ज़्यादा और पूरा होने के लिए लंबा समय। मेरी पसंद की चीज़ नहीं है।”

“इस सिस्टम को टीआरएसी-ट्रांसपोर्ट रिप्लेसमेंट ऑल्टरनेटिव फ़ॉर द कॉमनवेल्थ-कहते हैं। ये भारत जैसे अब तक ब्रिटिश कॉलोनी रहे देशों को आम आदमी के लिए सस्ती गाड़ियां बनाने का मौक़ा देगा। ये जनता का वाहन होगा,” अरविंद ने कहा।

“आम आदमी के लिए तो कभी कोई गाड़ी होगी ही नहीं,” खेतान ने कहा। “कार लग्ज़री है और लग्ज़री केवल अमीरों का विशेषाधिकार है।

“मैं समझता हूं, सर,” अरविंद ने मेज़ से उठते हुए कहा। “मैं बहुत शुक्रगुज़ार हूं कि आपने मेरे लिए समय निकाला। मेरा आइडिया सुनने के लिए आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।”



अगले हफ़्ते अरविंद एक दोस्त के साथ क्लब में आया। वो एक मेज़ पर जा बैठे जो उस मेज़ से कुछ ही दूर थी जिस पर घनश्याम दास और राम लाल खेतान आमतौर पर बैठा करते थे। उन्होंने चाय और सैंडविचों का ऑर्डर दिया फिर ज़ोरों से चर्चा में लग गए जिसमें कई काग़ज़ और एक पेंसिल शामिल थे।

टॉली का माहौल सामान्य था लेकिन कलकत्ता की सड़कों के हालात दूर-दूर तक ऐसे नहीं थे। 1971 के हमले के बाद से पूर्वी पाकिस्तान के हज़ारों शरणार्थी बंगाल में आए चले जा रहे थे। पाकिस्तान के जनरल याह्या ख़ान ने निश्चय किया था कि मुजीबुर्रहमान के सभी समर्थकों के ख़िलाफ़ कड़ी कार्रवाई करेगा। अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन जिसने इंदिरा गांधी को प्यार भरे शब्द ‘दैट बिच’ से पुकारा था, याह्या की हर मुमकिन मदद कर रहा था।

“देख रहे हैं वो बागड़िया छोकरा किसके साथ है?” खेतान ने पूछा। घनश्याम दास ने अपना पढ़ने का चश्मा उतारा और दूर देखने के लिए अपनी आंखें सिकोड़ीं।

“ये तो वो डॉ वेंकटेश सुब्रह्मण्यम है न?” घनश्याम दास ने पूछा।

“बिल्कुल,” खेतान ने जवाब दिया। “टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ़ फ़ंडामेंटल रिसर्च का मशहूर वैज्ञानिक। फ़्रिक्शन कम करने पर इसके काम को कमर्शियल दुनिया में

अग्रणी माना जा रहा है।"

"ये यहां कलकत्ता में क्या कर रहा है? ये तो बंबई में रहता है न?" घनश्याम दास ने पूछा।

"साफ़ है कि ये हमारे नौजवान दोस्त से मिलने यहां आया है," खेतान ने कहा। "शायद ये उस ट्रांसपोर्ट वेंचर में शामिल हो?"

अरविंद और डॉ. सुब्रह्मण्यम इस बात से बेख़बर थे कि दोनों बुज़ुर्ग उनके बारे में ही बात कर रहे हैं। डॉ सुब्रह्मण्यम कई बार हंसे भी थे।



एक महीने बाद अरविंद फिर से क्लब में मौजूद था। उसकी मेज़ पर बंबई से आया एक स्टॉकब्रोकर था। ये वही ब्रोकर था जिसने हाल ही में कलकत्ता की बिरला ग्रुप की एक कंपनी को बहुत बड़ा ऋण दिया था। उसका नाम राकेश दलाल था। लंबा, भड़कीला और ज़ोर से बोलने वाला दलाल टॉली के उस परिष्कृत और सुशिष्ट माहौल में बेमेल लग रहा था। अरविंद और राकेश दोनों गोल्फ़ के कपड़ों में थे, और अभी-अभी क्लब के अठारह होल वाले मैदान में एक राउंड पूरा करके चुके थे। "वो बहुत क्रूर था," अरविंद नेकहा, वो बुरी तरह हारा था।

वास्तव में, क्रूर हालात तो बांग्लादेश में हो चुके थे। पश्चिमी पाकिस्तानी सेनाएं हिंदुओं की सामूहिक हत्याएं, बलात्कार और मज़हबी सफ़ाया कर रही थीं। कड़ी कार्रवाई के जवाब में चटगांव से बांग्लादेश ने आज़ादी का ऐलान कर दिया था। मुक्ति वाहिनी नाम के एक संगठन ने पाकिस्तानी बलों के ख़िलाफ़ गोरिल्ला जंग छेड़ दी थी, स्पष्ट रूप से भारत की सहायता से।

"आप जानते हैं वो कौन है?" घनश्याम दास ने पूछा। दोनों जन अरविंद के मेहमान को तक रहे थे।

"राकेश दलाल," खेतान ने जवाब दिया। "इसने हाल ही में डालमिया कंपनी पर एक अधिग्रहण की सफल बोली लगाई थी और साला बहुत सफल रहा था। इसे अच्छे विचारों में निवेश करने के लिए जाना जाता है। ये हमारे समय का वालचंद हीराचंद है।"

"आपके ख़्याल से अरविंद बागड़िया के साथ इसका क्या मेल होगा? क्या ये इसके उस ट्रांसपोर्ट वेंचर में निवेश कर रहा हो सकता है?" घनश्याम दास ने पूछा। दोनों आदमी असहजता से राकेश दलाल को देखते रहे।

"आपको लगता है हमने बागड़िया छोकरे के प्रस्ताव को न सुनकर कोई ग़लती की थी?" खेतान ने धीरे से कहा।



अरविंद क्लब के बरामदे में अपने मिल्कशेक का मज़ा ले रहा था जब टॉलीगंज के

दोनों बुज़ार्गों ने उसे घेर लिया।

“क्या हाल है, मेरे बच्चे?” घनश्याम दास ने पूछा। अरविंद आदरपूर्वक उनका अभिवादन करने के लिए खड़ा हो गया।

“नहीं, नहीं, बैठो, बैठो,” घनश्याम दास ने कहा। “हम तुम्हें डिस्टर्ब नहीं करना चाहते। हम तो बस तुम्हें ये बताना चाहते हैं कि हमें तुम्हारे आइडिया के बारे में सोचने का मौक़ा मिला और हम बातचीत करने के लिए तैयार हैं।”

“वाक़ई, सर?” अरविंद ने पूछा। “ये तो आपकी बहुत मेहरबानी है लेकिन मेरी परेशानी ये है कि मुझे एक निवेशक मिल गया है।”

अरविंद के बैठने को कहने का इंतज़ार किए बग़ैर दोनों जन बैठ गए। घनश्याम दास साज़िशी अंदाज़ में आगे को झुके। “तुम्हारा मतलब वो राकेश दलाल? वो तो बस चटपट मुनाफ़े की ही फ़िक्र करता है; वो तुम्हारी मैनेजमेंट मीटिंगों पर हावी हो जाएगा और आख़िर में तुम्हारा सारा पैसा पटील ले जाएगा।”

“लेकिन सर,” अरविंद ने नज़ाकत से अपने नैपकिन से मुंह के कोने को पोंछ्ते हुए कहना शुरू किया, “राकेश दलाल को दिलचस्पी नहीं है। वो तो मेरे साथ बस गोल्फ़ का एक राउंड खेलने आया था...”

“मुझसे झूठ मत बोलो, बागड़िया,” खेतान ने कहा। “दलाल को जब तक निवेश में दिलचस्पी न हो, वो किसी से नहीं मिलता... भले ही वो गोल्फ़ के गेम के लिए क्यों न हो। हम तुम्हें गाइड करेंगे। आख़िरकार, हम तुम्हारे शुभचिंतक हैं!”

“आप जैसे सलाहकार पाकर मैं धन्य हूं, सर,” अरविंद ने कहा। “बात ये है कि जिस टेक्नोलॉजी पर हम काम कर रहे हैं...”

“तुम्हारा मतलब वो टेक्नोलॉजी जिसे तुमने डॉ. वेंकटेश सुब्रह्मण्यम के साथ डिज़ाइन किया है?” घनश्याम दास ने पूछा।

“सर, मैं आपको यक़ीन दिलाता हूं कि वो बस बॉटनी के शौक़ीन हैं जिन्हें दुर्लभ जीवों और वनस्पतियों में दिलचस्पी है,” अरविंद ने जवाब दिया। “मैंने उनसे गुज़ारिश की थी कि मेरे मेहमान बनें क्योंकि इस क्लब में एकड़ों जगह में दुर्लभ फूल-पौधे हैं।”

“अचानक तुम इतनी राज़दारी क्यों बरतने लगे हो?” खेतान ने अरविंद की पीठ थपथपाते हुए कहा। “मैं तुम्हारे लिए इसे आसान बना देता हूं।” उन्होंने एक पगड़ीधारी वेटर को बुलाने के लिए चुटकी बजाई।

“मुझे काग़ज़ और एक पैन लाकर दो,” उन्होंने निर्देश दिया। “साथ ही सेक्रेटरी के ऑफ़िस से एक कार्बन पेपर भी लेते आना।” खेतान क्लब के चेयरमैन थे इसलिए स्टाफ़ कभी कोई निर्देश टाल ही नहीं सकता था। जब स्टेशनरी आ गई तो खेतान ने दो ख़ाली काग़ज़ों के बीच में कार्बन पेपर दबाया और उसे अरविंद को पकड़ा दिया। “तुम जिन शर्तों पर सौदा करना चाहो, उन्हें लिख दो। कोई मोलतोल नहीं। पैसा तुम्हारा है।”

“सर, मैं आपका पैसा नहीं ले सकता। मुझे तो बस आपका आशीर्वाद चाहिए,”

अरविंद ने कहा।

"लिखो," घनश्याम दास ने दृढ़ता से कहा।

अरविंद ने गहरी सांस ली, अपने कंधे झटके, काग़ज़ और पैन लिया और लिखा:

उन्नीस दिसंबर, *1971* की दिनांक को हुए इस अनुबंध के अनुसार, पार्टियों के बीच यह तय हुआ है कि इस अनुबंध पर हस्ताक्षर करने पर ट्राक टेक्नोलॉजी प्राइवेट लिमिटेड के नाम से ज्ञात कंपनी के इक्यावन प्रतिशत शेयर *1,00,00,000 (*एक करोड़ रुपए*)* के अग्रिम भुगतान के साथ *2,00,00,000 (*दो करोड़ रुपए*)* की राशि के बदले समान भाग में श्री घनश्याम दास और श्री राम लाल खेतान के अधिकार में रहेंगे। ट्राक के तहत परिकल्पित यातायात प्रणाली को भारतीय सड़कों पर भलीभांति परखा गया है। ये किफ़ायती, कम लागत वाली है और इसके लिए लगभग ज़रा भी ईंधन नहीं चाहिए। इसे बहुत कम देखरेख की आवश्यकता होती है। वाहन के सभी भाग और पुरज़े भारत में ही निर्मित हैं और इस तरह इस वाहन को बिना किसी सरकारी लाइसेंस प्रतिबंध के आगे बढ़ाया जा सकता है। शेयरों के क्रेता इस तथ्य से पूरी तरह से अवगत हैं कि श्री अरविंद बागड़िया के पास ट्राक का पेटेंट नहीं है, यद्यपि उसके लिए याचिका दे दी गई है। उपरोक्त के अलावा श्री अरविंद बागड़िया किसी तरह का कोई दावा, वादा, वारंटी या अभ्यावेदन नहीं करते हैं।

"दस्तख़त करो इस पर," खेतान ने कहा। अरविंद ने नीचे दस्तख़त कर दिए। "सर, ये वाक़ई सही नहीं है। मैंने डॉ. सुब्रह्मण्यम और राकेश से वादा किया था..."

"वादे तो बच्चों की तरह होते हैं," खेतान ने कहा। "उन्हें धारण करना तो आसान होता है, लेकिन डिलीवर करना मुश्किल। हम उनसे निबट लेंगे, बेटे। अब तुम कम शेयरों के साथ निष्क्रिय पार्टनर हो।"

खेतान ने अनुबंध को देखा और मुस्कुराया। ये काफ़ी आसान रहा था। उसने चैकबुक निकाली और पचास लाख का एक चैक लिख दिया। घनश्याम दास ने भी यही किया। दोनों आदमियों ने अपने-अपने चैक अरविंद को थमा दिए।

"हमें शेयर सर्टिफ़िकेट और दस्तख़त किए हुए ट्रांसफ़र फ़ॉर्म चाहिए होंगे," खेतान ने कहा।

"वो आज ही आपके पास पहुंच जाएंगे," अरविंद ने कहा।

"हम गाड़ी कब देख सकेंगे?" घनश्याम दास ने पूछा।

"मैं टैस्ट की जा रही गाड़ियों में से एक को कल क्लब भिजवा दूंगा," अरविंद ने कहा। "लंचटाइम पर—करीब साढ़े बारह बजे।"



घनश्याम दास और राम लाल खेतान ने शैंपेन का ऑर्डर कर दिया था। तीसरी जगह अरविंद के लिए रखी गई थी। एक शानदार बिज़नेस डील के पूरा होने पर ये जश्न मनाने का समय था।

उस दिसंबर 1971 में आम मूड जोश से भरपूर था। पाकिस्तान द्वारा उत्तर भारत पर

हवाई हमले शुरू करने के बाद उस महीने भारत भी बांग्लादेश के साथ जंग में उतर आया था। बाद में हुई भारत-पाक जंग ने दो मोर्चों पर लड़ाई देखी-बंगाल की खाड़ी और अरब सागर पर। 16 दिसंबर को पाकिस्तान ने समर्पण कर दिया। युद्ध का अंत एक नए देश, नए आज़ाद बांग्लादेश के उदय के साथ हुआ। मिसेज़ गांधी विजेता नायक के रूप में सामने आईं।

पुराने वेटरों में से एक उनकी मेज़ पर आया और उसने धीरे से उन्हें बताया कि ट्राक टेक्नोलॉजी का एक ड्राइवर एक गाड़ी लिए मेन रोड पर इंतजार कर रहा है जो उन्हें दिखाई जानी है।

"मेन रोड?" खेतान ने पूछा। "वो क्लब के परिसर में क्यों नहीं आ गया?"

"मेन गेट के गार्ड को समझ नहीं आया कि उसे आने दे या नहीं," वेटर ने बताया।

"नॉन्सेंस," खेतान ने कहा। "गार्ड से कहो उसे अंदर आने दे। हम उस गाड़ी को क्लब के पोर्टिको में देखना चाहते हैं।"

वेटर जल्दी से निर्देश पहुंचाने चला गया।

"अब तक बागड़िया को आ नहीं जाना चाहिए था?" घनश्याम दास ने पूछा।

"जश्न मना रहा होगा," खेतान ने कहा। "उसने शेयर और दस्तख़त किए ट्रांसफ़र फ़ॉर्म भेज दिए हैं। उसने चैक जमा कर दिए थे और वो क्लीयर हो गए थे।"

पंद्रह मिनट बाद, खेतान ने वेटर को अपनी मेज़ पर बुलाया। "क्लबहाउस के मेन पोर्टिको में वो गाड़ी आ गई?"

"आ रही है, सर," वेटर ने कहा। राम लाल खेतान ने अपनी सोने की रोलेक्स टचूडर घड़ी देखी। अरविंद को आधे घंटे पहले ही उनके पास आ जाना चाहिए था। ऐसी लापरवाही से कंपनी किस तरह चलाई जाएगी?

तीस मिनट बाद गाड़ी आ गई लेकिन अरविंद नहीं आया। "चलकर देखते हैं," घनश्याम दास ने कहा। "समझ नहीं आता उसे मेन गेट से अंदर आने में इतनी देर क्यों लगी।"

दोनों व्यक्ति डाइनिंग रूम से बाहर निकले, लॉबी से होते हुए पोर्टिको में आए। पोर्टिको में कोई कार नहीं थी, बस एक बैलगाड़ी थी।

"गाड़ी कहां है?" घनश्याम दास ने वेटर से पूछा जो फ़रमाबरदारी से उनके पीछे-पीछे आ गया था।

बैलगाड़ी का ड्राइवर उतरा। वो नीले ओवरऑल पहने हुए था जिसकी जेब पर ट्राक का लोगो बना हुआ था।

"गुड आफ़्टरनून, सर," उसने कहना शुरू किया। "मि. बागड़िया ने मुझसे कहा है कि आपको बताऊं कि ये गाड़ी भारतीय सड़कों पर भलीभांति टैस्ट की गई है। ये किफ़ायती, कम ख़र्च वाली है और इसे लगभग कोई ईंधन नहीं चाहिए। इसे रखरखाव भी बहुत कम चाहिए। गाड़ी के सारे हिस्से और पुरज़े भारत में ही बनाए गए हैं, इस

तरह इस सिस्टम को किसी भी सरकारी लाइसेंस के प्रतिबंध के बिना आगे बढ़ाया जा सकता है…”

घनश्याम दास और राम लाल खेतान के चेहरों से ख़ून निचुड़ गया था।

“हमारी कंपनी ने पेटेंट के लिए याचिका दी है,” ड्राइवर आगे कह रहा था। “ये प्रयोगात्मक हल्की गाड़ी है। इसमें न्यूमेटिक टायर हैं और इसकी धुरी इस्पात की है। आराम से घूमने के लिए इसमें कम घर्षण वाले बियरिंग हैं। खिंचाई धरन इस्पात के पाइपों से बने हैं और बॉडी इस्पात के हल्के खंडों से बनी है।”

ट्राक टेक्नोलॉजी के दोनों मुख्य निवेशकों के लाभ की ख़ातिर ड्राइवर विनम्रता से कार्ट की ओर इशारा करने के लिए मुड़ा, ये पूछते हुए, “क्या आप लोग टैस्ट ड्राइव लेना चाहेंगे, सर?”

उसके नीले ओवरऑल की पीठ पर ट्राक के लघुरूप को उलटा लिखा हुआ था।

इसकी स्पैलिंग थी कार्ट।



अरविंद और जॉयदीप लैदर की विशाल कुर्सियों पर बैठे थे जो हज़ारों जिल्दबंद क़ानूनी किताबों से भरी उम्दा पॉलिश की गई लकड़ी की बुकशेल्फ़ों से घिरी थीं। वो कलकत्ता की सबसे पुरानी लॉ फ़र्म डिग्बी एंड दस्तूर के ऑफ़िस में थे। मीटिंग उसके संस्थापकों में से एक जी.सी. दस्तूर के पोते डैरियस दस्तूर के साथ थी।

“जैसी कि उम्मीद थी, मिस्टर घनश्याम दास और मिस्टर राम लाल खेतान ने हमें क़ानूनी नोटिस भिजवाया है,” दस्तूर ने कहा, उसके होंठों पर मुस्कान नाच रही थी। “वास्तव में, वो नोटिस बस झांसा है। उनके अपने वकील ने उन्हें कहा होगा कि इससे कुछ नहीं निकलने वाला।”

“वो हमारा कुछ बिगाड़ सकते हैं?” जॉयदीप ने पूछा।

“ओरीजनली तो हमने वो अनुबंध तैयार किया था जिस पर बागड़िया जी ने मिस्टर दास और मिस्टर खेतान के साथ दस्तख़त किए थे,” वकील ने कहा। “ये देखकर मैं ख़ुश हूं कि बागड़िया जी ने उसे बिल्कुल सही-सही याद कर लिया था और अपनी लिखाई में लफ़्ज़-दर-लफ़्ज़ उसे लिख दिया था।”

“उसे आपने तैयार किया था?” जॉयदीप ने अविश्वास से पूछा।

“हां,” दस्तूर ने जवाब दिया। “राव के साथ अपनी सोने की खान की डील के बाद बागड़िया जी मेरे पास आए थे और ईमानदारी से इन्होंने मुझे बताया कि मुझे मामला बताए बिना इन्होंने मेरी फ़र्म के नाम का इस्तेमाल किया था। मगर, ये देखते हुए कि इन्हें खनन के अधिकार की बिक्री के लिए राव से पर्याप्त पैसा मिला था, इन्हें क़ानूनी सेवाओं की ज़रूरत थी। मैंने इनसे कहा कि भविष्य में इस तरह की डील करने से पहले ये मेरे पास आएं, बाद में नहीं!”

अरविंद मुस्कुराया मगर चुप रहा।

“तो अनुबंध फ़ूलप्रूफ़ है?” जॉयदीप ने पूछा।

“बिल्कुल,” मि. दस्तूर ने जवाब दिया। “कार्ट को वास्तव में भारतीय सड़कों पर व्यापक तौर पर परखा गया है, ये किफ़ायती और कम ख़र्च वाली है। इसके लिए लगभग कोई ईंधन नहीं चाहिए सिवाय बैलों के चारे के। इस तथ्य पर तो कोई विवाद हो ही नहीं सकता कि इसे बहुत कम रखरखाव चाहिए। गाड़ी के सभी हिस्से और पुरज़े वास्तव में भारत में ही निर्मित हैं। बैलगाड़ी बनाने के लिए किसी सरकारी लाइसेंस की ज़रूरत नहीं है।”

“लेकिन वो पेटेंट का क्या?” जॉयदीप ने पूछा।

“बहुत मुमकिन है कि पेटेंट डिज़ाइन और ट्रेडमार्क्स का कंट्रोलर-जनरल कंपनी की पेटेंट याचिका को इस बिना पर ख़ारिज कर दे कि ये कोई नई तकनीक नहीं है मगर अनुबंध में साफ़ तौर पर लिखा है कि क्रेता इस तथ्य से पूरी तरह से अवगत हैं कि श्री अरविंद बागड़िया के पास ट्राक का पेटेंट नहीं है, यद्यपि उसके लिए याचिका दे दी गई है। आख़री लाइन तो लोहे की कील ही है-उपरोक्त के अलावा श्री अरविंद बागड़िया किसी तरह का कोई दावा, वादा, वारंटी या अभ्यावेदन नहीं करते हैं! ले जाने दो उन्हें इसे अदालत में। मुझे तो मज़ा आएगा एक दिन में उसे धता देनेमें!” दस्तूर ज़ोर देकर बोला।



अरविंद अपने पुराने स्कूल में घुसा और यादों का सैलाब सा उमड़ पड़ा। वो गोल चैपल में गया जो शानदार कॉरिन्थियन खंभों से घिरा था और सम्मान-बोर्डों को देखने लगा जिन पर फ़ाउंडर्स डे के पदक विजेताओं के नाम दर्ज थे। वो कभी उनमें से किसी बोर्ड तक नहीं पहुंच पाया था। लेकिन वो लड़के जो सम्मान-बोर्डों तक पहुंचे थे, आमतौर पर बड़े बिज़नेस उद्यमों के बोर्डों पर नहीं मिलते थे।

चैपल के पास ही ख़ूबसूरत लाइब्रेरी थी। मुख्य बिल्डिंग में कक्षाओं की क़तारें थीं, सबसे ऊपर की मंज़िल पर छात्रावास थे। अरविंद मुड़ा और बिल्डिंग के पश्चिमी खंड की ओर बढ़ गया, सीढ़ियोंपर चढ़ते हुए प्रिंसीपल के ऑफ़िस में पहुंच गया।

बाहर के ऑफ़िस में सेक्रेटरी मिस मैथ्यु उसका इंतज़ार कर रही थीं। वो जल्दी से उसे प्रिंसीपल के केबिन में ले गईं। “अरविंद,मेरे बच्चे, तुम्हें देखकर ख़ुशी हुई,” फ़ादर एंथनी ने कहा और अरविंद से हाथ मिलाने के लिए अपनी मेज़ से घूमकर आ गए थे।

“मुझे भी आपको देखकर अच्छा लगा, फ़ादर,” अरविंद ने कहा। “न आप बदले हैं और न ही स्कूल। हर क़दम यादों के गलियारों में भटकने जैसा लगता है।”

“तुम्हारे माता-पिता कैसे हैं?” फ़ादर एंथनी ने पूछा। “और तुम्हारी पत्नी अभिलाषा?”

“सब ठीक हैं, ईश्वर की कृपा से,” अरविंद ने जवाब दिया। “और इसीलिए मैं यहां आया हूं।”

“पुराने लड़के मुझसे मिलने केवल तब आते हैं जब उनके बच्चों को स्कूल में दाख़िला चाहिए होता है,” फ़ादर एंथनी ने कहा।

“तब तो, मैं अपवाद हूं। मैं यहां सीपीसी के लिए आया हूं।”

“सीपीसी?” चकित प्रिंसीपल ने पूछा।

“कैटचिक पॉल चैटर,” अरविंद ने कहा।

“आह!” प्रिंसीपल ने हामी में सिर हिलाते हुए कहा। सर कैटचिक पॉल चैटर 1856 से 1863 तक ला मार्टिनियर के छात्र रहे थे। वो आगे चलकर बहुत दौलतमंद और हांगकांग के प्रतिष्ठित बैंकर बने। जब ला मार्टिनियर आर्थिक तंगी से गुज़र रहा था और बंद होने की कग़ार पर था, तो उन्होंने ही धन प्रदान किया जिससे स्कूल क़ायम रह पाया। कृतज्ञ स्कूल ने चैटर का नाम स्कूल की प्रार्थना में जोड़ा और उनके नाम पर एक वार्षिक छुट्टी का दिन रख दिया।

“मैं कुछ दान देना चाहता हूं,” अरविंद ने कहा।

“मैं मिस मैथ्यु से दानपात्र लाने को कह देता हूं,” फ़ादर एंथनी ने कहा।

“ये शायद दानपात्र में समा नहीं पाएगा,” अरविंद ने एक भारी-भरकम चैक हक्के-बक्के प्रिंसीपल के हाथ में रखते हुए कहा।



लव स्टोरी के पन्ने पलटते हुए अभिलाषा ने गहरी सांस भरी। मन ही मन उसने पिछले साल इसे लिखने के लिए एरिक सीगल का शुक्रिया अदा किया। कुछ पंक्तियों ने तो उसकी आंखों में आंसू ही ला दिए थे।

पढ़ने ने उसकी नीरस ज़िंदगी में कुछ हलचल ला दी थी। अरविंद के दोस्त और मैनेजर जॉयदीप को भी पढ़ने का बहुत शौक़ था और वो दोनों नियमित रूप से किताबों का लेनदेन करते रहते थे। अरविंद तो अपने काम में इतनी बुरी तरह से डूबा रहता था कि उसके पास अभिलाषा के लिए कभी वक्त ही नहीं होता था। यहां तक कि डिनर भी अक्सर अलग-अलग खाया जाता था क्योंकि उसे निरपवाद रूप से काम में देर होती ही थी। महीने में कम से कम दो हफ़्ते तो वो कलकत्ता से बाहर ही गया हुआ होता था।

अभिलाषा ने शुरू में तो उसकी ग़ैरमौजूदगी को अपनी सहेलियों से मेल-मुलाक़ातें कर भरने की कोशिश की। मगर कुछ ही समय बाद ये उबाऊ हो गया। कोई कितनी फ़ालतू बातें सुन सकता है? उसने अपनी सास शकुंतला के साथ मंदिरों में जाने की भी कोशिश की, लेकिन जल्दी ही उसने पाया कि धार्मिक परिदृश्य उसे बुरी तरह उबा देते हैं। पूजास्थलों पर जाना और लालची पंडितों से मिलना जो झटपट ‘विशेष’ दामों पर नए कर्मकांडों की सिफ़ारिश कर देते हैं, ये आध्यात्मिक पूर्णता पाने का उसका विचार नहीं था।

सगाई के बाद जब वो शुरू-शुरू में मिले थे तो अरविंद ने कहा था, “शादी एक

साझेदारी है। मैं बिज़नेस संभालूंगा और तुम घर संभालोगी।"

"और प्रेम?" उसने पूछा था।

"प्रेम तो वैकल्पिक अतिरिक्त चीज़ है," उसने भावहीन अंदाज़ में जवाब दिया था। "अगर हम ख़ुशक़िस्मत होंगे तो ये बोनस के रूप में आ जाएगा।" बोनस ने अभी तक तो अपनी शक्ल दिखाई नहीं थी। उस समय तो उसने अरविंद की बात के छिपे हुए मतलबों के बारे में सोचा नहीं था। और फिर उसे समझ आया। हल तो बहुत ही सीधा-सरल था।

बच्चे।



कमरे को ठंडा करने के लिए उसने एक घंटे पहले ही वोल्टास का विंडो एयरकंडीशनर चला दिया था। उसने रोशनी हल्की कर दी और धुली हुई सूती चादर बिछाकर बिस्तर ठीक किया। बिस्तर पर उसने यू डी कोलोन छिड़का और कॉफ़ी टेबल पर ताज़े ग्लैडियोली के लंबे गुलदस्ते के पास फ़्रेंच वाइन की बोतल रखी जिसे उसने दिन में अपने शराब के सप्लायर से लिया था। बोतल के पास ही दो लुभावने चमकते वाइन गिलास रखे थे।

फिर उसने शॉवर लिया और सादा सी नीली साड़ी पहन ली स्लीवलैस ब्लाउज़ के साथ जिसमें से उसकी पतली-पतली बांहें झलक रही थीं। उसके गले में मोतियों की लड़ी थी। उसने ख़ूब अच्छी तरह अपने बालों को ब्रश किया, हल्की सी लिपस्टिक, ब्लश और आईशैडो लगाया। कुछ भी ज़रूरत से ज़्यादा नहीं था। अभिलाषा बहुत दिलकश दिख रही थी।

अरविंद घर के लिए निकल चुका था। उसके ऑफ़िस से चलने से पहले अभिलाषा ने उससे बात की थी। अभिलाषा ने अपनी कलाई में बंधी शानदार घड़ी को देखा। शाम के आठ बजे थे। उसकी उससे छह बजे बात हुई थी। घर पहुंचने में दो घंटे कैसे लग सकते थे? वो जानता था कि आज उनकी शादी की सालगिरह है। वो बेडरूम के काउच पर बैठ गई और समय काटने के लिए उसने लव स्टोरी उठा ली, हालांकि दिल तो उसे काट डालने का कर रहा था।

उसने अपने लिए वाइन का पैग बनाया। छियासठवें पन्ने पर पहुंचने तक उसने गिलास ख़ाली कर दिया। डेढ़ सौवें पन्ने तक वो तीन पैग वाइन पी चुकी थी। आंखों में आंसू लिए वो आख़री पन्ने पर पहुंची।

"ऑलिवर," मेरे पिता ने आजिज़ी से कहा, "मैं मदद करना चाहता हूं।"

"जैनी नहीं रही," मैंने उन्हें बताया।

"मुझे अफ़सोस है," उन्होंने हतप्रभ बुदबुदाहट में कहा।

पता नहीं क्यों, मगर मैंने वही बात दोहरा दी जो बहुत ज़माने पहले उस ख़ूबसूरत लड़की से सुनी थी और जो अब मर चुकी है। "प्यार का मतलब है कि आपको कभी सॉरी न कहना

पड़े।”

और फिर मैंने वो किया जो उनकी मौजूदगी में कभी नहीं किया था, उनकी बांहों में तो दूर की बात है। मैं रो पड़ा था।

अभिलाषा रोते-रोते सो गई, ऑलिवर के टूटे दिल के लिए ही नहीं, बल्कि अपने टूटे दिल के लिए भी। जब तीन घंटे बाद उसकी आंख खुली, तब तक भी अरविंद नहीं आया था।



परोमिता होटल के कमरे में गई जो उसके लिए होटल होराइज़न में बुक था। ये उसके लिए ड्रेसिंग रूम, विश्राम कक्ष, मेकअप स्टेशन और हेयरड्रेसिंग पार्लर के अनेक कामों को अंजाम देता था। वो थक गई थी। उन्होंने सुबह सात बजे शूटिंग शुरू कर दी थी। उसने अपनी घड़ी पर नज़र डाली। रात के सवा आठ बज रहे थे। उन्होंने बारह घंटे से भी ज़्यादा देर तक शूटिंग की थी। मगर फिर भी वो शुक्रगुज़ार थी।

उस साल के शुरू में, पुरकशिश मीना कुमारी का लिवर की पुरानी बीमारी के कारण देहांत हो गया था। मौत के वक्त उनकी माली हालत अपने जन्म के वक्त की अपने माता-पिता की ग़रीबी से भिन्न नहीं थी। अस्पताल के बिल भरने के लिए पैसा नहीं था। इससे शोहरत और दौलत की चंचल प्रकृति ही बयां होती है। परोमिता को मीना कुमारी की सी शोहरत तो नहीं मिली थी मगर पिनाकिन देब के साथ उसने जो तीन फ़िल्में की थीं, उन्होंने बहुत बुरा बिज़नेस भी नहीं किया था।

वो अपनी ड्रेसिंग टेबल के सामने स्टूल पर बैठी थी और रुई के फ़ाहों से बहुत मेहनत से अपना मेकअप उतार रही थी। एयरकंडीशनिंग अच्छी लगी। पिनाकिन ने बॉलरूम के एसी बंद करवा दिए थे क्योंकि वो बहुत शोर कर रहे थे। परोमिता ने अपने कपड़े उतारे और शॉवर के नीचे जा खड़ी हुई। पांच मिनट बाद उसने बदन पर तौलिया लपेटा और कमरे में आ गई।

ये ख़ास कमरा था, जिसमें टेलीविज़न सेट भी लगा हुआ था। उसमें एक इनडोर एंटीना और भद्दे से बटन लगे थे मगर 1972 में ये बहुत मॉडर्न था। वरली में एक दूरदर्शन केंद्र बन चुका था और उसने बंबईवासियों के लिए शाम को कुछ घंटे ब्लैक एंड व्हाइट कार्यक्रम प्रसारित करने शुरू कर दिए थे। परोमिता उसका स्विच ऑन करने का सोच ही रही थी लेकिन जब उसे अहसास हुआ कि पिनाकिन देब कमरे में है तो वो डरकर सिमट गई।

“आप यहां क्या कर रहे हैं, मामा?” उसने पूछा।

“मैंने तुम्हें शोहरत दिलाई है,” उसने उसके वक्ष को घूरते हुए कहा। “मैं ये भी पक्का कर सकता हूं कि दूसरे निर्देशकों से भी तुम्हें अच्छे रोल मिलें।”

“थैंक्यू, मामा,” उसने असहजता से अपने चारों ओर तौलिया को कसते हुए कहा। “मैं शुक्रगुज़ार हूं।”

"कितनी शुक्रगुज़ार?" उसने पूछा, और वो उसके पीछे आ गया और अपने हाथ उसके भीगे कंधों पर रख दिए। परोमिता बेसाख़्ता कांप उठी और उसके स्पर्श से दूर होने के लिए और बेड पर पड़े ड्रेसिंग गाउन को उठाने के लिए कुछ क़दम हट गई।

वो मुड़ती और उसे जाने को कहती, इससे पहले ही उसने उसे पीछे से पकड़ लिया, उसका तौलिया खींचकर फेंक दिया और उसे बेड पर गिरा दिया। वो उसे किस करने की कोशिश कर रहा था लेकिन वो करने नहीं दे रही थी। कुंठित होकर उसने अपना हाथ परोमिता के मुंह पर रख दिया ताकि वो चीख़ न सके और जल्दी से उसके मुंह में उसका अपना तौलिया ठूंस दिया। फिर उसने उसे पलटा और उसके ड्रेंसिंग गाउन की डोरी से उसके हाथ बांध दिए।

उसे फिर से पलटकर उसने बेदर्दी से उसके वक्ष को पकड़ लिया। परोमिता सिहर उठी। "नहीं, प्लीज़..." उसने रिरियाकर अपने मामा से कहा लेकिन उसके मुंह से शब्द नहीं निकले, बस तौलिए के अंदर से घुटी-घुटी सी आवाज़ें निकलीं। उसने अपनी पैंट के बटन खोले और उसके ऊपर सवार हो गया और हिंसक ढंग से उसमें समा गया।

परोमिता ने संघर्ष किया मगर कोई फ़ायदा नहीं था। "हां, जान, थोड़ा और संघर्ष करो। मुझे अच्छा लग रहा है," पिनाकिन ने बेरहमी से उसे इस्तेमाल करते हुए कहा। आतंक से परोमिता की आंखें तो खुली थीं मगर उसकी दृष्टि धुंधला गई थी। उसे अहसास हुआ कि आंखों में भरे आंसुओं ने उसकी नज़र को धुंधला दिया है।

बीस मिनट बाद सब ख़त्म हो गया। "इस बारे में किसी से एक शब्द भी कहा, तो तुम्हारा कैरियर ख़त्म हो जाएगा। वेश्या के अलावा तुम्हें कोई काम नहीं मिलेगा। समझीं?"



अरबाज़ होटल होराइज़न की ओर कार ले जा रहा था। अब्दुल दादा ने कहा था कि वो वहां जाए और पिनाकिन से बात करे। आजकल प्रोडक्शन बजट में रहस्यमय ढंग से बहुत सारे अस्पष्ट ख़र्चे दिखने लगे थे। जो तीन फ़िल्में उसने निर्देशित और निर्मित की थीं, उन्होंने भी कोई बहुत अच्छा बिज़नेस नहीं किया था, उनमें से एक तो पूरी तरह डिब्बा ही साबित हुई थी।

अचानक अरबाज़ ने एक आकृति को देखा जिसे वो पहचान गया। परोमिता; वो गुलाबी सूती साड़ी पहने थी मगर उसके बाल बिखरे हुए थे और उसने काला चश्मा लगा रखा था। वो धीमे-धीमे और झुककर चल रही थी, मानो अपना सिर झुकाए रखने की कोशिश कर रही हो।

उसने फ़ुटपाथ के पास कार रोकी और बोला, "माफ़ करें, परोमिता जी, क्या आपको कहीं छोड़ दूं?"

उसने पल भर को उसे देखा और बोली, "मुझे अकेला छोड़ दें। मैं ठीक हूं। मैं टैक्सी ले लूंगी।"

अरबाज़ ने हौले से सीटी बजाई। इस औरत में बड़ी अकड़ है, उसने सोचा। आगे बढ़ो।

उसने वापस कार को गीयर में डाला और आगे बढ़ गया। जब उसने रियर व्यू मिरर में झांका तो देखा कि टैक्सी स्टैंड तक पहुंच पाने से पहले ही वो फ़ुटपाथ पर गिर गई है।

उसने जल्दी से कार को रोका, बाहर निकला और उसकी तरफ़ दौड़ गया। वो उसके पास झुककर बैठा। तब जाकर उसका ध्यान उसकी साड़ी पर लगे ख़ून और उसके आंसुओं भरे चेहरे पर गया। साला! मैं भी कैसा चूतिया हूं, उसने सोचा। किसी ने इसके साथ बहुत ग़लत किया है।

"आप कहां रहती हैं?" उसने पूछा। "मैं आपको छोड़ देता हूं। आप चलने की हालत में नहीं हैं।"

"नहीं... नहीं... इस हालत में मैं घर नहीं जा सकती," वो हकलाने लगी। "मैं ठीक रहूंगी। मुझे अकेला छोड़ दें, मैं संभाल लूंगी।" उसके गालों पर झर-झर आंसू बह रहे थे।

"मैं आपको अकेला नहीं छोड़ूंगा," अरबाज़ ने कहा। "और आपको मुझे बताना होगा किस हरामज़ादे ने आपके साथ ऐसा किया है। इस बीच, मैं आपको अपने साथ अपने घर अपनी मां के पास ले जा रहा हूं। वो आपकी देखभाल करेंगी।"

परोमिता सिहर गई। वो इस हालत में नहीं थी कि फिर से किसी आदमी पर भरोसा कर सके। अगर इसने भी उसके साथ ज़बरदस्ती करनी चाही तो?

"जानता हूं आप क्या सोच रही हैं," अरबाज़ ने नरमी से कहा। "प्लीज़ मुझ पर भरोसा रखें। मैं किसी को आपको नुक़सान नहीं पहुंचाने दूंगा।"

वो कोई जवाब देती इससे पहले उसने उसे अपनी बांहों में उठा लिया और अपनी कार की पिछली सीट पर लिटा दिया, फिर वो अपने कोलाबा वाले फ़्लैट की ओर चल पड़ा।



शबाना अपने बेडरूम में बेड पर बैठी उस बेचारी लड़की को चाय के घूंट भरते देख रही थी। उसके कपड़े उतारकर उसकी साफ़-सफ़ाई करने में घंटा भर लग गया था। पुलिस को बुलाने का कोई फ़ायदा नहीं था। क़ानून औरतों के ख़िलाफ़ तोड़े-मरोड़े जाते थे और बेपरवाह पुलिसवालों के हाथों उसे और ज़लील करवाने की कोई तुक नहीं थी।

उस साल, 1972 के शुरू में महाराष्ट्र के चंद्रपुर की एक सोलह साल की आदिवासी लड़की को उसके रिश्तेदार घसीटकर पुलिस थाने ले गए थे क्योंकि उसने अपने प्रेमी के साथ भागने की कोशिश की थी। उसका बयान दर्ज करने की जगह, उस दिन ड्यूटी पर मौजूद दो पुलिसवालों ने उसके साथ बलात्कार कर डाला जबकि उसके रिश्तेदार लापरवाही से बाहर बैठे रहे।

शबाना ने परोमिता के हाथों को अपने हाथ में लिया और उसे दिलासा देने की कोशिश की। उसने उस लड़की को धुली हुई साड़ी दी थी और उसकी ख़ून में सनी साड़ी को गर्म पानी से भरी बाल्टी में डाल दिया था। उसकी अपनी कोई बेटी तो नहीं

थी लेकिन वो सोच रही थी कि अगर उसकी अपनी बेटी के साथ बलात्कार हुआ होता तो उसे कैसा लगता। उसने घोर बेबसी और हताशा के उस अहसास की कल्पना करने की कोशिश की।

उस आदिवासी लड़की के मामले में सैशन्स जज ने फ़ैसला दिया कि अपने प्रेमी के साथ भागने की उसकी कोशिश का निहितार्थ ये है कि वो सैक्स की आदी थी। लाजवाब तर्क है! उच्च न्यायालय ने फ़ैसले को उलट दिया और पुलिसवालों को छह साल की सज़ा सुनाई मगर सर्वोच्च न्यायालय ने उस फ़ैसले को बदल दिया। जजों को लगा कि क्योंकि लड़की ने शोर नहीं मचाया था, इसलिए उसने पुलिसवालों को अपनी सहमति दे दी होगी।

दरवाज़े पर दस्तक हुई। शबाना ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि बाहर अरबाज़ खड़ा है। "कैसी हैं वो?" उसने पूछा।

"अभी भी हादसे से उबरने की कोशिश कर रही है," शबाना ने बताया। "खुशक़िस्मती से इसके घाव जल्दी भर जाएंगे। इसके मन के बारे में मैं इतने यक़ीन से नहीं कह सकती।"

अरबाज़ बेडरूम में गया। "मुझे जानना है कि आपके साथ ये किसने किया," उसने पूछा।

परोमिता फिर से रो पड़ी।

"बस कर, अरबाज़," उसकी मां ने कहा। "ये अभी इसके लिए तैयार नहीं है।"

अरबाज़ बिस्तर के पास बैठ गया। उसने धीरे से कहा। "मैं वादा करता हूं कि मैं इसे ख़ामोशी से संभाल लूंगा। पुलिस या आपके घरवालों को कभी इसका पता नहीं चलेगा। अब, मुझे बताएं, वो कौन था?"



अरबाज़ पहले अब्दुल दादा से मिलने गया। "उस हरामी ने अपनी ही भानजी से बलात्कार किया," अरबाज़ ने बताया।

अब्दुल दादा ने बहुत सब्र से सुना। "हमीद को साथ ले जाओ। जो ज़रूरी हो वो करो," उसने कहा।

"लेकिन उसमें आपने पैसा लगा रखा है," अरबाज़ ने कहा।

"निर्देशक तो तन्ख़ाह पानेवाले नौकर होते हैं। मैं किसी और जोकर को रख लूंगा। ये एक ग़लत काम का बदला लेने के लिए है। इसके रास्ते में कभी कोई पैसा नहीं आ सकता। अब जाओ!"

अरबाज़ और हमीद उसकी कार में बैठे और जुहू की ओर चल दिए। जब वो पहुंचे तो घर में शांति थी। हरामख़ोर शायद नशे में धुत्त सो रहा था।

बाहर बैठे चौकीदार को हमीद ने झटपट ख़ामोश कर दिया था। उसने जल्दी से उसे

बांधा, उसके मुंह में कपड़ा बांधा और उसे गेट के पास पड़ा छोड़ दिया। फिर दोनों आदमी सामने के दरवाज़े की ओर गए। एक मिनट बाद चौकीदार की बेंच मारकर उन्होंने दरवाज़ा तोड़ डाला था।

पिनाकिन ने शोरगुल सुना तो धोती और बनियान पहने दौड़ता हुआ सीढ़ियों से नीचे आया। झालरदार नाइटगाउन पहने उसकी बीवी मदद के लिए चिल्लाती सीढ़ियों के पटले पर खड़ी थी।

किचन से एक नौजवान नौकर निकला लेकिन हमीद के एक ही घूंसे ने उसे ढेर कर दिया। अरबाज़ पिनाकिन की ओर लपका और उसने निर्देशक के मुंह पर ज़ोरदार घूंसा मारा। पिनाकिन फ़र्श पर जा पड़ा, उसका खून और दांत ज़मीन पर बरस पड़े।

पिनाकिन की बीवी घबरा गई और ज़ोर-ज़ोर से मदद के लिए चिल्लाने लगी थी। "चुप करो उसे," पिनाकिन के हाथों को पीठ के पीछे बांधते और उसके मुंह में कपड़ा ठूंसते हुए अरबाज़ ने कहा।

हमीद दो सीढ़ियां एक बार में फलांगता हुआ मिसेज़ देब के पास पहुंचा। उसने उसे कंधों से पकड़ा, बुरी तरह झिंझोड़ डाला और उसके कान में फुसफुसाया, "तुम्हारे शौहर ने एक और औरत के साथ ज़बरदस्ती की थी। इसने बेरहमी से उसका बलात्कार किया था। तुम सच में इसे बचाना चाहती हो?"

मिसेज़ देब शांत हो गई और उसने चिल्लाना बंद कर दिया। कुछ सैकंड तक हमीद और मिसेज देब बिना बोले एक-दूसरे को देखते रहे। फिर वो बोली। "ये हरामख़ोर तुम्हारा है। बाहर जाते हुए चौकीदार को खोलते जाना क्योंकि तुमने मेरा दरवाज़ा तोड़ डाला है।"

हमीद और अरबाज़ ने पिनाकिन को कार की डिक्की में डाला और चले गए। एक घंटे बाद उन्होंने डिक्की खोली। वो वसई कीखाड़ी के एक सुनसान इलाक़े में पहुंच गए थे। अब्दुल दादा के गैंग के दो आदमी पहले से वहां उनका इंतज़ार कर रहे थे। उनमें से एक चिकना था जिसने अरबाज़ के साथ उस अग़वा हुए लड़के को छुड़ाने में मदद की थी।

"सब तैयार है?" अरबाज़ ने पूछा।

"हां, अरबाज़ भाई," चिकना ने कहा। "देख लीजिए।"

एक ख़ूब बड़ी सी बारबेक्यु सींक लगाई गई थी। बारबेक्यु का सारा साजो-सामान भी मौजूद था: लकड़ी, कोयले, घी, डीज़ल और चिमटे।

"इसे डिक्की से बाहर निकालो," अरबाज़ ने निर्देश दिया। भौचक्के पिनाकिन को बाहर घसीटकर लाया गया तो अरबाज़ ने उसको नंगा करने का आदेश दिया।

पिनाकिन की आंखों से ख़ौफ़ टपक रहा था मगर मुंह में ठुंसे कपड़े की वजह से वो न रहम की भीख मांग सकता था न चीख़ सकता था।

"तू जानवरों की तरह उसके साथ पेश आया, है न? अब हम तुझसे जानवरों जैसा सुलूक करेंगे," अरबाज़ ने कहा। "इसके हाथ सींक पर बांध दो और इसके तलवों और

हथेलियों पर हल्का सा घी मल दो।"

"क्यों?" हमीद ने उत्सुकता से पूछा, उसके मुंह के कोने में एक चारमीनार लटकी हुई थी।

"अभी देख लेना," अरबाज़ ने कहा, और पिनाकिन को हाथों और पैरों से सींक पर लटकाए जाते देखता रहा। उसके नंगे कूल्हे ज़मीन की ओर थे।

अरबाज़ उसके पास गया और उसके मुंह में से कपड़ा निकाला।

"नहीं, प्लीज़..." पिनाकिन रिरिआया।

"उसने भी ऐसे ही रहम की भीख मांगी थी?" अरबाज़ ने पूछा।

अपने धड़ को झुलाने और सींक को गिराने की कोशिश करते हुए पिनाकिन ने जद्दोजहद की। "हां, जान, थोड़ा और संघर्ष करो। मुझे अच्छा लग रहा है," अरबाज़ ने कहा। "यही कहा था न तूने उससे?"

"हम तैयार हैं," चिकना ने कहा, जो पिनाकिन के नीचे लकड़ी और कोयले का ढेर लगाने में लगा हुआ था।

अरबाज़ ने डीज़ल की बोतल ली और उसे लकड़ी पर छिड़क दिया। फिर उसने एक माचिस जलाई और उसमें फेंक दी। लकड़ी और कोयले धू-धू कर जल उठे, पहली लपटें पिनाकिन की खाल को झुलसाने लगी थीं।

वो चीख़ उठा।

"हां, जब तू चीख़ता है तो मुझे बहुत अच्छा लगता है," अरबाज़ ने कहा। "ये तो कुछ नहीं है। लपटों को अपने हाथ-पैरों तक पहुंचने दे ज़रा। वो बहुत जल्दी सुलगने लगेंगे। आह, बारबेक्यु की महक। अरे, मैं तो भूल गया था। तू तो सूअर है और मैं सूअर खा नहीं सकता... कोई बात नहीं, ये चिकना तो गोआ का हिंदू है। तुम्हें तो भुना सूअर पसंद है न, चिकना?"



साल 1974 बहुत मुश्किल साबित हुआ था। पूर्व में, इंदिरा गांधी के सबसे मुखर आलोचक जयप्रकाश नारायण ने 'संपूर्ण क्रांति' काबिगुल बजा दिया था। पश्चिम में, गुजरात के नव-निर्माण आंदोलन में सौ लोगों की जानें गई थीं, तीन ह्ज़ार घायल हुए थे और आठ हज़ार गिरफ़्तारियां हुई थीं। राजनीतिक अनिश्चितता कारोबारी मनोभावों पर कहर बरपा रही थी।

"हमें एक ऐसा चीफ़ एक्ज़ीक्यूटिव चाहिए जो बिक्री-उन्मुख और जोशीला हो," अरविंद ने जॉयदीप से कहा, वो जानता था कि कारोबारी माहौल को कोई ऐसा बंदा चाहिए जिसे चुनौतियां पसंद हों। कोई जो जॉयदीप जैसा कम और अरविंद जैसा ज़्यादा हो।

"क्यों?" जॉयदीप ने पूछा। "हमारे पास तो बेचने को कुछ है ही नहीं। हम कोई

बिज़नेस चलाना शुरू करें इससे पहले तो तुम उसे बेच देते हो।"

"वही तो। हम उसे बेचते हैं। तुम्हें और मुझे कोई ऐसा बंदा चाहिए जो ये सुनिश्चित कर सके कि सौदों पर फ़टाफ़ट फ़ायदा हो। मेरे चेयरमैन और तुम्हारे वाइस-चेयरमैन होते हुए..."

"मैं कब से वाइस-चेयरमैन हो गया?" जॉयदीप ने पूछा।

"इसी वक्त से," अरविंद ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। "मैंने कई बार तुम्हें राय दी है कि शादी कर लो, लेकिन तुम अभी तक नहीं कर पाए। मेरा ख़्याल है कि एक बढ़िया सा टाइटिल तुम्हें दुल्हन दिला सकता है!"

दोनों आदमी हंसने लगे। "इसलिए अब हमें एक नया चीफ़ एक्ज़ीक्यूटिव चाहिए," अरविंद ने कहा।

अगले हफ़्ते इंटरव्यू रखा गया और उसे कंपनी के चौरंगी रोड ऑफ़िस के कॉन्फ़्रेंस रूम में अरविंद और जॉयदीप ने लिया।

पहला उम्मीदवार अंदर आया।

अपनी जेब से एक पैन निकालकर अरविंद ने उसे मेज़ पर रख दिया और उम्मीदवार से कहा, "ये पैन मुझे बेचें।"

बेचारा उम्मीदवार पहले तो थोड़ा परेशान लगा। फिर उसने हिचकिचाते हुए कहना शुरू किया: "ये बहुत अच्छा पैन है। ये बहुत सुंदरता से लिखता है और अच्छा भी दिखता है। इसे पकड़ना भी आसान है और भरना भी।"

"थैंक्यू," अरविंद ने कहा।

"ये हमारा आदमी नहीं है," उसके जाते ही उसने जॉयदीप से कहा।

दूसरा उम्मीदवार अंदर आया। मेज़ से पैन उठाकर अरविंद नेउसे उस उम्मीदवार के सामने रख दिया और कहा, "ये पैन मुझे बेचें।

"उस उम्मीदवार ने आत्मविश्वास के साथ कहना शुरू किया। "क्या आपको चीज़ों याद रखने की ज़रूरत होती है? क्या आपको उन बातों को लिखना होता है जिन्हें आप भूल सकते हैं? क्या आपको एक भरोसेमंद उपकरण चाहिए जो आपकी मदद कर सके? तो ये पैन आपके लिए है।"

अरविंद ने बोलने के तरीक़े पर थोड़ा सोचा और फिर कहा, "अच्छा था ये, लेकिन मुझे बेहतर चाहिए। आने के लिए शुक्रिया।"

तीसरा उम्मीदवार आया। अरविंद ने पैन उठाया और निर्देश दोहराए। "ये पैन मुझे बेचें।"

"क्या आपने किसी सहकर्मी को कभी काम पर सोते देखा है? इस ज़बरदस्त पैन से कोंचकर आप उसे जगा सकते हैं।"

अरविंद हंस पड़ा। आइडिया विनोद भरा था मगर कुछ कमी थी।

आख़री उम्मीदवार अरविंद के ऑफ़िस में दाख़िल हुआ। अरविंद ने उसकी ओर पैन खिसकाया और निर्देश दिया। "ये पैन मुझे बेचें।"

उम्मीदवार ने पल भर इस पर सोचा।

उसने बैग से एक चैकबुक निकाली जो उसके साथ थी। उसने एक चैक पर दस्तख़त किए और ख़ाली चैक अरविंद को थमा दिया। उसने पैन अपनी जेब में रखा और अरविंद से पूछा, "अगर आपके पास अभी पैन होता तो अच्छा नहीं होता?"

अरविंद मुस्कुराया। उसे अपना आदमी मिल गया था।

सत्यपाल मित्तल।



सत्यपाल मित्तल पटना के एक ग़रीब परिवार में पैदा हुआ था। उसके पिता कबाड़ का काम करते थे। परिवार इतना ग़रीब था कि सत्यपाल के पिता बिजली का ख़र्च भी नहीं उठा सकते थे।

सत्यपाल कैरोसिन लैंप की अस्थिर रोशनी में पढ़ता था, धुएं से उसकी आंखों में पानी आता रहता।

सत्यपाल अपने और अपनी क्लास के बच्चों के घरों के बीच फ़र्क़ को देखता था। एक उसी का घर था जहां बिजली का बल्ब नहीं था। एक दिन वो सकुचाते हुए अपने पिता के पास गया और उनसे कहा कि क्या वो बिजली का एक बल्ब लगवा सकते हैं। उसके निवेदन को मना करने की जगह सत्यपाल के पिता ने उससे मेहनत करने के लिए कहा ताकि एक दिन वो ख़ुद उनके घर में बिजली के बल्ब लगवा सके।

जिस स्कूल में वो जाता था, श्री विष्णु महादेव विद्यालय, वो स्कूल में प्रथम आने वाले छात्र को सौ रुपए की टोकन छात्रवृत्तिदेता था। पांचवीं कक्षा से सत्यपाल ने हर साल छात्रवृत्ति जीती जब तक कि उसके पास तीन सौ रुपए नहीं हो गए। फिर वो बाज़ार गया और एक बल्ब और टेबल फ़ैन ख़रीद लाया। ये उसकी ज़िंदगी का सबसे फ़ख़्र का पल था। ये उसके पिता के लिए भी बहुत गर्व का पल था।

उस दिन, उसके पिता युवा सत्यपाल को पटना में आयोजित हो रही जीवन प्रकाश की एक सभा में ले गए। "हम वहां क्यों जा रहे हैं, पिताजी?" सत्यपाल ने पूछा।

"क्योंकि मैं देख सकता हूं कि तुम ज़िंदगी में बहुत सफल होगे," उसके पिता ने कहा।

"अगर मैं सफल होऊंगा, तो मुझे जीवन प्रकाश की ज़रूरत क्यों होगी?" सत्यपाल ने पूछा।

"क्योंकि असफलता की तुलना में कभी-कभी सफलता को संभाल पाना मुश्किल हो जाता है," उसके पिता ने बुद्धिमानी से जवाब दिया।



“अगला वेंचर क्या होना चाहिए?” अरविंद ने पूछा। “मैं चाहता हूं कि हम कुछ ऐसा करें जिसमें सत्यपाल की ज़बरदस्त सेल्समैनशिप और पीआर का फ़ायदा उठाया जा सके।”

जॉयदीप ने बोलने के लिए मुंह खोला मगर सत्यपाल बाज़ी मार ले गया। “क्यों न हम एक लाइसेंस बैंक बनाएं?” उसने पूछा।

“वो क्या होता है भला?” जॉयदीप ने पूछा।

“जैसा कि आप जानते हैं, भारत में हमारे यहां सुनियोजित अर्थव्यवस्था है,” सत्यपाल ने कहा। “अर्थव्यवस्था के सभी पहलुओं पर हमारी सरकार का नियंत्रण है। योजना आयोग ने सुनिश्चित किया है कि लाइसेंसों, अनुमतियों और विनियमनों का एक जटिल जाल बुन दिया जाए जिससे हर उस व्यक्ति को गुज़रना पड़े जो कोई निर्माण संस्थान लगाना चाहता है।”

“तो?” जॉयदीप ने पूछा।

“कभी-कभी उन सरकारी एजेंसियों की संख्या अस्सी के पार निकल जाती है जिन्हें आपको संतुष्ट करना होता है। हरेक केस में ज़बरदस्त ताल्लुक़, पहुंच का इस्तेमाल और रिश्वत चलते हैं।”

“तुम्हारे दिमाग़ में क्या है?” अरविंद ने पूछा।

“अगर आप अपने संपर्कों के इस्तेमाल से विभिन्न फ़र्मों की संभावित योजनाओं के बारे में जानकारी हासिल कर सकें, तो हमपहले से बुनियादी काम कर सकते हैं,” सत्यपाल ने कहा।

“लेकिन इससे हमें कैसे फ़ायदा होगा?” जॉयदीप ने पूछा।

“सीधी सी बात है, वास्तव में,” अरविंद ने सत्यपाल की ओर से जवाब दिया। “मान लो किसान-कैचप और जैम बनानेवाली कंपनी-स्क्वैश और डिब्बाबंद खाद्य पदार्थों में जाने की योजना बना रही है। मैं सत्यपाल को बता देता हूं। फिर ये पहले से मंत्रालयों और अधिकारियों के यहां के चक्कर लगाएंगे और किसी विशेष-उद्देश्यवाली कंपनी के लिए लाइसेंस हासिल कर लेंगे।”

“किसान ऐसा खुद क्यों नहीं करेगी?” जॉयदीप ने पूछा।

“दो वजहों से,” सत्यपाल ने जवाब दिया। “एक: हम दौड़भाग करने में कई महीने लगाएंगे। उनके लिए हमारी विशेष-उद्देश्य वाली कंपनी को ख़रीदना आसान होगा, इस तरह उनका समय और परेशानी बचेगी।”

“और?” जॉयदीप ने पूछा।

“दो: जब साल में पचास हज़ार स्क्वैश की बोतलों के निर्माण के लिए लाइसेंस जारी किया जाता है, तो स्वाभाविक तौर पर ये किसी और कंपनी को इसके लिए

एप्लाई करने से रोक देता है। सरकार चाहती है कि प्राकृतिक संसाधनों का इस्तेमाल बिना बर्बादी के हो।"

"प्रभावी रूप से हम लाइसेंसों का एक बैंक बनाएंगे जिसे संबंधित निर्माता अच्छे दाम देकर सैकेंडरी मार्केट से ख़रीद सकते हैं," अरविंद ने समझाया।

"मुझे दिल्ली में ही रहना होगा," सत्यपाल ने कहा।

"हम तुम्हारे लिए किराए पर कोई जगह ले देंगे," जॉयदीप ने कहा।

"अरे नहीं," सत्यपाल ने जवाब दिया। "पहाड़गंज में विकास नाम का एक छोटा सा होटल है। मैं वहीं रह लूंगा। वो सस्ता रहेगा।"

"तुम्हें यक़ीन है तुम वहां आराम से रह पाओगे?" अरविंद ने पूछा।

"बिल्कुल," सत्यपाल ने जवाब दिया। "वहीं नुक्कड़ पर एक बहुत बढ़िया परांठेवाला है, और उसके पास ही उससे भी बढ़िया दही-भल्लेवाला है और कुछ ही आगे एक बर्फ़ीवाला है। ये एकदम बढ़िया है। मैं एक महीने पहले वहां रहा था।"

"वहां तुम किस सिलसिले में गए थे?" अरविंद ने पूछा।

"मैं जीवन प्रकाश का अनुयायी हूं। वो पहाड़गंज के एक विशाल मैदान में आध्यात्मिक सभाएं आयोजित करते हैं।"

सत्यपाल ने अपने वॉलेट से एक फ़ोटोग्राफ़ निकाला और अरविंद की ओर बढ़ा दिया। "ये मैं जीवन प्रकाश के एक शिविर में हूं।"

"तुम्हारे पास खड़ा ये अमेरिकी हिप्पी कौन है?" अरविंद ने पूछा।

"ओह, कोई बंदा है जो नैनीताल के पास नीम करौली बाबा नाम के किसी गुरु की खोज में था। अपना नाम भी बताया था इसने। स्टीव जॉब्स, या ऐसा ही कुछ। ये भी उसी होटल में रुका हुआ था और साथ चला आया।"



"हमें कुछ जायज़ बिज़नेस शुरू करने के बारे में सोचना चाहिए," मुरली ने कहा।

अब्दुल दादा, अरबाज़ और हमीद ने चिकन मक्खनवाला खाना रोक दिया जिसके लिए रेस्तरां मशहूर था। वो ओबरॉय शेरेटन होटल की हाल ही में खुली शानदार कॉफ़ीशॉप समरकंद में थे। जब अब्दुल दादा अंदर आया, तो अनेक खानेवाले उसे देखने के लिए खाते-खाते रुक गए थे। स्टाफ़ के लोग उसके लिए एक टेबल का इंतज़ाम करने और कुर्सी खिसकाने के लिए भागे। अब्दुल दादा ऐसा आदमी था जिसे कोई नाराज़ नहीं करना चाहता था जब तक कि वो खुदकुशी ही न करना चाह रहा हो।

"क्यों?" अरबाज़ ने पूछा।

"इससे हमें ज़्यादा लचीलापन मिल पाएगा," मुरली ने जवाब दिया। "इंदिरा गांधी भारत में सुप्रीम डिक्टेटर बन गई हैं। इमर्जेंसी अभी रहेगी। सरकार ने कोफ़ेपोसा-

कंज़र्वेशन ऑफ़ फ़ॉरेन एक्सचेंज एंड प्रिवेंशन ऑफ़ स्मगलिंग एक्टिविटीज़ एक्ट-पास कर दिया है। ये क़ानून प्रशासन को तस्करी की गतिविधियों में शामिल होने के महज़ शक की बिना पर भी लोगों को हिरासत में लेने की व्यापक शक्तियां प्रदान करता है। अब समय है कि एक इज़्ज़तदार मुखौटा ओढ़ा जाए।"

"मुझे तो ये इमर्जेंसी बहुत पसंद है," अरबाज़ ने मक्खनवाले में अपनी नान डुबोते हुए कहा। "रेलगाड़ियां समय से चल रही हैं और लोग ज़्यादा मेहनत करते मालूम दे रहे हैं। लोगों को प्रेरित करने के लिए उन्हें डर की सही खुराक देते रहना ज़रूरी है। और हमने तो अपना इलाक़ा भी बढ़ा लिया है। आख़िरकार, सिक्किम भारतीय राज्य के रूप में जुड़ गया है।"

इंदिरा गांधी ने राष्ट्रपति फख़रुद्दीन अली अहमद से भारतीय संविधान की धारा 352 (1) के तहत 'आंतरिक गड़बड़ी' के कारण आपातकाल की घोषणा जारी करवा दी थी। इस आदेश ने प्रधानमंत्री को अनेक शक्तियां प्रदान कर दी थीं-आज्ञप्ति द्वारा शासन करने, चुनाव स्थगित करने, नागरिक स्वतंत्रताओं को नियंत्रित करने, राजनीतिक विरोधियों को क़ैद करने और प्रेस को सैंसर करने के अधिकार। इंडियन एक्सप्रेस और स्टेट्समैन ने विरोधस्वरूप अपने अख़बारों के मुख्य संपादकीय की जगह ख़ाली छोड़ दी थी।

"ये सब कुछ बहुत अच्छा है सिवाय इसके कि उनके उस बेटे-का एक स्क्वैड है जो बज़ाहिर आदमियों को पकड़ रहा है और ज़बरदस्ती उनकी नसबंदी करवा रहा है!" हमीद ने कहा। "हालांकि सरकार इससे मना कर रही है।"

"तब तो ये सच ही होगा," अरबाज़ ने चुटकी ली। "लेकिन शायद ये अच्छा ही है। देखो हमारे देश में किस क़िस्म के बदमाश पैदा हो गए हैं!" वो फ़िल्म डाइरेक्टर पिनाकिन के बारे में सोच रहा था।

"हम किस क़िस्म के बिज़नेस में जाएंगे?" अब्दुल दादा ने मूल मुद्दे पर लौटते हुए पूछा।

"हम एक सुनियोजित ढंग से कुछ और फ़िल्मों को फ़ाइनेंस करें... रियल एस्टेट में अपनी मज़बूती को देखते हुए हम कुछेक होटलों के बारे में भी सोच सकते हैं... अपने जुए के फ़ोकस को देखते हुए हम बंबई स्टॉक एक्सचेंज में शेयरों में कुछ जायज़ निवेशों को भी देख सकते हैं," मुरली ने अपने शाकाहारी विकल्प-वेजीटेबल मक्खनवाला को एक ओर खिसकाते हुए कहा।

"और टैक्स भरें?" हमीद ने पूछा, उसकी चारमीनार की सांस मेज़ पर बैठे सब लोगों तक पहुंच रही थी। "हम साली इस बकवास को सुन ही क्यों रहे हैं, दादा? हमारा धंधा जैसा है, ठीक है। हम चूतियों की तरह क्यों बर्ताव कर रहे हैं?"

अब्दुल दादा ने हमीद को नज़रअंदाज़ कर दिया। "इन बिज़नेसों में जाने से मुझे कैसे फ़ायदा होगा?" अब्दुल ने अपनी नान के आख़री निवाले से प्लेट की भारी ग्रेवी को पोंछते हुए पूछा।

"कई मायनों में," मुरली ने जवाब दिया। "आपकी विदेश यात्राएं सही ठहराई जा

सकेंगी। आपके पास ऐसे स्रोतों से आमदनी आएगी जो आपको अधिकृत रूप से कारोबार और निवेश करने देगी। जैसी ज़रूरत हो, वैसे आप बीच-बीच में काले धन को सफ़ेद में या सफ़ेद को काले में बदल सकते हैं।"

"तो तुम्हारी क्या राय है मुझे कैसे शुरू करना चाहिए?" अब्दुल दादा ने अपनी उंगलियों पर लगी बचीखुची ग्रेवी चाटते हुए कहा।

"हम एक कंपनी बनाएंगे जिसके आप एकमात्र शेयर होल्डर होंगे," मुरली ने राय दी। "फिर ये कंपनी मुनाफ़ाबख़्श मौक़ों में निवेशों का ज़रिया बन सकती है। कोई नाम सुझाएंगे?"

"धंधा होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड," अरबाज़ ने सुझाया। "सफ़ेद हो या काला, टैक्स वाला हो या बिना टैक्स का, जायज़ हो या नाजायज़... सब महज़ धंधा ही है।



पांच घंटे कुर्सी से चिपके रहने की थकान उतारने के लिए मुरली अय्यर ने बांहें ऊपर उठाकर अंगड़ाई ली। इन पांच घंटों में यूनाइटेड फ़ेडरेशन बैंक के एक एनेलिस्ट ने उसे बंबई, दिल्ली, कलकत्ता और मद्रास की विभिन्न कंपनियों की तीस बैलेंस शीट दिखाई थीं।

मुरली बहुत स्पष्ट था। "मुझे ऐसी कंपनियों के बारे में बताएं जिन्हें मालिक चलाते हों, पहली पीढ़ी के उद्यमी हों तो बहुत अच्छा है। मुझे उन कंपनियों की बैलेंस शीट दिखाएं जिन्हें क़र्ज़ देने में आपको कोई हिचकिचाहट नहीं होगी। मुझे उन कारोबारों के बारे में बताएं जो आज से बीस साल बाद विशाल हो जाएंगे।"

यूनाइटेड फ़ेडरेशन बैंक का चेयरमैन किशोर देशमुख अब्दुल दादा का अहसानमंद था। अगर अब्दुल दादा बीच में न पड़ा होता तो यूनाइटेड फ़ेडरेशन बैंक की कर्मचारी यूनियन की हड़ताल ने बैंक को पूरी तरह अपाहिज कर दिया होता। उसकी बैंकिंग की दुनिया में, हर लेन का देन होना ज़रूरी है। अब्दुल दादा का फ़ोन आने पर देशमुख ने फ़ौरन ही अपने सबसे अच्छे फ़ाइनेंशियल एनेलिस्ट को मुरली अय्यर के साथ लगा दिया।

"पारले एक्सपोर्ट्स," मुरली ने कहा। "वो एक भारतीय कोला पर काम कर रहे हैं।"

"वो चौहान परिवार के निजी अधिकार में है। किसी बाहरवाले के पास शेयर नहीं हैं," एनेलिस्ट ने जवाब दिया।

"विमल," मुरली ने कहा।

"आपका मतलब, रिलायंस," एनेलिस्ट ने कहा। "वो जल्दी ही स्टॉक एक्सचेंज में जाएंगे। आईपीओ निकलने पर हम आपके लिए काफ़ी तादाद में शेयर ख़रीद लेंगे।"

"गोदरेज," मुरली ने कहा।

"गोदरेज परिवार के टाइट कंट्रोल में है। आपके पहली पीढ़ी के मापदंड पर खरी नहीं उतरती। वो 1897 में स्थापित हुई थी।"

“इमामी,” मुरली ने कहा।

“अच्छा चुनाव है,” एनेलिस्ट ने कहा। “वो पहली पीढ़ी के हैं। दो लोग चला रहे हैं जो बिरला ग्रुप छोड़कर आए हैं। वो एक और आयुर्वेदिक कंपनी लेने की प्रक्रिया में हैं। उन्हें कैश चाहिए होगा। मैं बातचीत करवा दूंगा।”

“क्वालिटी,” मुरली ने कहा। “आइसक्रीमवाले लोग।”

“1940 में लांबा परिवार द्वारा शुरू की गई थी। अगली पीढ़ी अभी बिज़नेस में शामिल हुई है। और तफ़्सील पता करूंगा।”

“नरूला?” मुरली ने पूछा।

“दिल्ली की फ़ास्ट फ़ूड कंपनी? उन्हें पैसे की ज़रूरत नहीं है। कनॉट प्लेस का इकलौता आउटलेट ख़ूब पैसा बना रहा है। लेकिन मैं पता लगाऊंगा।”

“और क्या है?” मुरली ने पूछा।

“ब्रेड के बारे में सुना है?” एनेलिस्ट ने पूछा।

“बताइए मुझे,” मुरली ने कहा।

“ये बी. रवि और आई. डागा का संक्षिप्तीकरण है। कंपनी खनन, खाद्य तेलों, होटलों, उपभोक्ता वस्तुओं और कमोडिटी सट्टे में निवेश करती है। बहुत कम ही इसकी बात होती है। लो-प्रोफ़ाइल है लेकिन मुनाफ़ा बहुत ज़बरदस्त है।”



अरबाज़ घबराया सा फ़्लैट के दरवाज़े के बाहर खड़ा था। दरवाज़े पर लगी नेमप्लेट पर के. सी. बनर्जी लिखा था। फ़्लैट नेपियन सी रोड पर हैदराबाद एस्टेट में स्थित था। दस एकड़ की ये प्रॉपर्टी कभी पूरी तरह से हैदराबाद के निज़ाम की थी लेकिन आख़िरकार वो सरकारी क्वार्टरों के नीरस और बुरे रखरखाव वाले ब्लॉकों की साइट में बदल गई थी।

उस घटना को कई महीने बीत गए थे। परोमिता अस्थायी तौर पर फ़िल्मों से हट गई थी, तब तक अब्दुल दादा ने अपने लिए एक और निर्देशक ढूंढ़ लिया। गैप उसके लिए ठीक भी था। उसे ठीक होने के लिए समय चाहिए था। उस भयानक दिन का सदमा बर्दाश्त कर पाना उसके लिए बहुत कठिन था। वो समझ नहीं पा रही थी कि जो हुआ था, उसे क्या कभी वो अपने माता-पिता को बता पाएगी। वो अपनी मां से आख़िर कैसे कहती, “आपके भाई ने मेरा बलात्कार किया था और मैंने ये बात अंडरवर्ल्ड के एक बंदे को बताई थी जिसने जाकर मेरी ख़ातिर उसे मार डाला?”

बांद्रा के फ़्लैट में ताला पड़ा था जो उसने अपनी बॉलीवुड की कमाई से ख़रीदा था। वो अकेले रहने की हिम्मत जुटा ही नहीं पा रही थी। वो हैदराबाद एस्टेट में अपने माता-पिता के पास रहने चली गई थी।

पिनाकिन की लाश कभी नहीं मिली। पुलिस फ़ाइल में वो केस अभी भी लापता

लोगों में दर्ज है। अरबाज़ ने गहरी सांस ली और घंटी बजा दी, ये मनाते हुए कि परोमिता ही दरवाज़ा खोले।

उसकी क़िस्मत अच्छी थी। उसी ने दरवाज़ा खोला था लेकिन उसे देखकर अचकचा गई। "अरबाज़, तुम? यहां? मेरी मां घर पर हैं!" उसने धीरे से कहा।

"शांत रहो, मैं जा रहा हूं। मुझे बस तुमसे मिलना था। जब भी फ़ोन करता हूं तो तुम्हारी मां जैसा कोई फ़ोन उठाता है," अरबाज़ ने कहा।

"कौन है, परोमिता?" अंदर से उसकी मां की आवाज़ आई।

"कोई कुछ सर्वे कर रहा है, मां," परोमिता ने कहा, उसके होंठों पर हल्की सी मुस्कुराहट खेल रही थी।

"तुम मुझसे मिलोगी?" अरबाज़ ने पूछा।

"हां, मिलूंगी," परोमिता ने जवाब दिया। "अब, प्लीज़... जाओ।"

"कब?" अरबाज़ ने पूछा।

"कल... जाओ।"

"मैं ताज की कॉफ़ीशॉप शामियाना में तुम्हारा इंतज़ार करूंगा कल-शुक्रवार को-शाम पांच बजे," अरबाज़ ने कहा, और जैसे ही उसने परोमिता की मां को आते देखा, वो जल्दी से मुड़ा और चुस्त क़दमों से सीढ़ियां उतर गया।



अरबाज़ और परोमिता शामियाना में खिड़की के पास वाली मेज़ पर बैठे थे। ये कुछ साल पहले ही खुला था और बहुत जल्द ही बंबई का लोकप्रिय स्थान बन गया था। ये एक नया कंसेप्ट था जिसमें गुजराती वॉल हैंगिंग्स को गहरे मैरून खंभों पर टिकाकर कैनोपी की तरह इस्तेमाल किया गया था ताकि शामियाने का प्रभाव पैदा हो। दूसरे रेस्तराओं के विपरीत जहां पश्चिम की छवि पैदा करने की कोशिश की जाती है, शामियाना का मेन्यु बेझिझक पाव भाजी, गोआ फ़िश करी और मसाला दोशा पेश करता था।

"मुझे अच्छा लगा कि तुम आईं," अरबाज़ ने अपनी कैपुचीनो में कई सारे शुगर क्यूब्स मिलाते हुए कहा।

परोमिता मुस्कुराई। "तुमने जो किया, उसके लिए मैं कभी तुम्हारा शुक्रिया अदा नहीं कर पाऊंगी," उसने कहा। "मेरे ऊपर तुम्हारा जो क़र्ज़ है उसे मैं कभी उतार नहीं पाऊंगी।"

"तुम्हारे ऊपर मेरा कोई क़र्ज़ नहीं है," अरबाज़ ने कहा। "मगर, मुझे कुछ कहना है..."

"क्या?" परोमिता ने पूछा।

“जबसे मैंने तुम्हें देखा है, मैं तुम्हारे लिए एक अजीब सी कशिश महसूस करता हूं,” अरबाज़ ने हिचकिचाते हुए कहना शुरू किया। “मैं सच में समझ नहीं पा रहा हूं कि ये क्या है और तुम्हारे हालात को देखते हुए मुमकिन है कि तुम मुझे न कह दो… मैं सच में तुम्हारा दोस्त बनना चाहूंगा।”

“मैं भी ये चाहूंगी,” परोमिता ने अपने कोक फ़्लोट का घूंट भरते हुए कहा, ये शामियाना का कोकाकोला और वैनीला आइसक्रीम का मशहूर मेल था।

रेस्तरां में थोड़ी सी हलचल हुई जब ख़ाकी वर्दीधारी दो पुलिसवाले उस टेबल की ओर बढ़े जिस पर अरबाज़ बैठा था। उनमें से एक पुलिस का डिप्टी कमिश्नर सावंत था; दूसरा सब-इंस्पेक्टर वाघमारे था।

“अरबाज़ शेख़?” डीसीपी सावंत ने पूछा।

“हां?” अरबाज़ ने कहा, उसका दिल ज़ोरों से धड़क रहा था।

“मैं तुम्हें गिरफ़्तार करने आया हूं,” सावंत ने कहा।

“आपके पास वारंट है?” अरबाज़ ने कहा।

“ये संज्ञेय अपराध है। हमें वारंट की ज़रूरत नहीं है,” सावंत ने कहा।

“आरोप क्या है?” अरबाज़ ने पूछा।

“हत्या,” सावंत ने कहा।

कुछ मेज़ दूर सादे कपड़ों में एक सीनियर पुलिस अधिकारी बैठा था। जब उसने देखा कि उसका कैरियर तबाह करने वाले शख़्स को गिरफ़्तार किया जा रहा है तो वो मुस्कुरा दिया। उसका नाम दुबे था। बदले का मज़ा मीठा होता है, अपनी कोक फ़्लोट का सिप लेते हुए पूर्व कमिश्नर दुबे ने सोचा।



अरबाज़ को एक पुलिस जीप में आर्थर रोड जेल ले जाया गया और हत्या के लिए भारतीय अपराध संहिता की धारा 302 और हत्या के प्रयास के लिए 307 के तहत बुक किया गया।

परोमिता जाना नहीं चाह रही थी। उसने उसे मजबूर किया कि टैक्सी लेकर अपने घर वापस जाए और चुप रहे। बाहर आते ही वो उससे संपर्क करेगा।

“अपने कपड़े उतारो,” सब-इंस्पेक्टर वाघमारे ने अरबाज़ से कहा।

“क्यों?” अरबाज़ ने पूछा। उसे एक ज़ोरदार थप्पड़ पड़ा।

“मैं साला कोई टूर गाइड नहीं हूं कि सब कुछ समझाऊं,” वाघमारे ने कहा, उसकी सांसें पान और तंबाकू से महक रही थीं। “हमें ड्रग्स, चाकू, बंदूक़ वग़ैरा के लिए तलाशी लेनी है।”

अरबाज़ ने कपड़े उतारे और एक मेडिकल सुपरवाइज़र ने उसके शरीर के हर सूराख़

की जांच की। सुपरवाइज़र को अरबाज़ की गुदा की जांच करते देख सब-इंस्पेक्टर को बड़ा परपीड़क क़िस्म का लुत्फ़ मिलता लग रहा था। जांच पूरी हो गई तो अरबाज़ को पहनने के लिए उसके कपड़े वापस दे दिए गए। उसका सामान-घड़ी, वॉलेट, कैश, बैल्ट और पैन-उससे ले लिए गए और एक रजिस्टर में दर्ज कर दिए गए जिस पर उससे दस्तख़त करवाए गए।

"इसे आठ नंबर की बैरक में ले जाओ," सब-इंस्पेक्टर ने वार्डन से कहा। अरबाज़ ने इसके बारे में सुन रखा था। नशेड़ी, कचरा बीननेवाले, भिखारी और बलात्कारियों को आमतौर पर वहां रखा जाता था। आर्थर रोड की अधिकृत क्षमता आठ सौ क़ैदियों की थी लेकिन आमतौर पर उसमें तीन ह्ज़ार से ज़्यादा क़ैदी भरे रहते थे।

जैसी कि उम्मीद थी, बैरक ज़रूरत से ज़्यादा भरी थी। अरबाज़ के पीछे ज़ोर से गेट बंद हो गया तो वो एक कोने में जाकर बैठ गया।

"ये मेरी जगह है। उठ साले यहां से," एक लंबे-तगड़े पहलवान ने कहा। वो अरबाज़ से दोगुने आकार का था और उससे भयानक बदबू आ रही थी, बासी पेशाब की।

"फूट ले यहां से," अरबाज़ ने कहा। उस पहलवान के मुंह से एक धीमी सी गुरगुराहट निकली, उसने झुककर अरबाज़ के कंधे पकड़े और उसे बुरी तरह धुन देने के लिए ऊपर उठा लिया। ऐसा कुछ हो पाता, इससे पहले ही अरबाज़ ने अपना दायां हाथ घुमाकर पहलवान के बड़े से लिंग पर ज़ोरदार वार कर दिया। पहलवान दर्द से दोहरा हो गया, और अरबाज़ को इतना समय मिल गया कि उठकर पीछे से उसकी गोलियों को ठोक दे। अब तक सारे क़ैदी पहलवान के चारों ओर जमा हो गए थे, जो अपनी गोलियां पकड़े लुढ़का पड़ा था। इक़बाल की ट्रेनिंग आख़िर काम आ गई, अरबाज़ ने सोचा।

अरबाज़ नीचे झुका और पहलवान के कान में बोला, "तूने मेरी ओर देखा, तो तेरी जान ले लूंगा। तूने मुझे छुआ, तो तेरी जान ले लूंगा। मुझसे पंगे लेगा, तो तेरी जान ले लूंगा। समझ रहा है, कुतिया? नहीं समझा, तो तेरी जान ले लूंगा।"

खड़े होकर, अरबाज़ ने क़ैदियों के बीच ऐलान किया, "मैं अरबाज़ शेख़ हूं, अब्दुल दादा का दायां हाथ। अगर साली अपनी जान प्यारी है तो यहां कोई भी, फिर कहता हूं, कोई भी मुझसे पंगे न ले।"

"तुमसे मिलने कोई आया है," वार्डन के चिल्लाने की आवाज़ आई। वो अरबाज़ की ओर इशारा कर रहा था।

अरबाज़ उसके पीछे जेल सुपरिंटेंडेंट के ऑफ़िस में गया। सुपरिंटेंडेंट के साथ अब्दुल दादा और एक और कोई आदमी बैठा था।

"बैठो," सुपरिंटेंडेंट ने कहा। अरबाज़ तीसरी कुर्सी पर बैठ गया। "अभी तुम्हें यहां मुझसे या और किसी से नहीं मिलना चाहिए। तुम पुलिस हिरासत में हो, न्यायिक हिरासत में नहीं। ये अनधिकृत मुलाक़ात है।"

"तुम्हारी मुख़बिरी की गई थी," अब्दुल ने कहा। "हम आराम से बात कर सकते हैं। सुपरिंटेंडेंट मेरे पुराने दोस्त हैं।"

“किसने की?” अरबाज़ ने हैरानी से पूछा।

अब्दुल दादा ने अरबाज़ की आंखों में देखा और बोला, “हमीद ने।”

“मगर क्यों?” अरबाज़ ने पूछा।

“मुस्तफ़ा की मौत के बाद कामों के नए सिलसिले को लेकर वो खुश नहीं था। उसे लगता था कि तुमने उसकी जगह हड़प ली है। किसी हद तक ये मेरी ग़लती है। जब तुम उस कुत्ते पिनाकिन देब के पीछे गए थे तो मुझे उसे तुम्हारे साथ नहीं भेजना चाहिए था।”

“अब क्या होगा?” अरबाज़ ने पूछा।

“मेरे साथ मिस्टर डैरियस दस्तूर हैं, ये भारत के सबसे क़ाबिल वकीलों में से हैं। मुरली के कहने पर ये कलकत्ता से आए हैं। ये वो सब कुछ करेंगे जो तुम्हें आज़ाद करवाने के लिए ज़रूरी होगा।”

“मुझे यहां कब तक रहना होगा?” अरबाज़ ने पूछा।

“फ़िक्र मत करो, बेटे,” सुपरिंटेंडेंट ने कहा। “मैं ये पक्का करूंगा कि तुम्हें चादरें, चाय, अच्छा खाना और ताश मिल जाएं-ये सब कुछ तुम्हारे बैरक वार्डन को बिना तगड़ी रिश्वत दिए मिलेगा।”

“सुपरिंटेंडेंट साहब,” अब्दुल ने कहा। “मेहरबानी करके इसे बूढ़ा बैरक में भेज दें। आप तो जानते हैं-बुज़ुर्गों वाली। वो कहीं ज़्यादा साफ़ और सुरक्षित है। साथ ही, एक क़ैदी को इसके नौकर के तौर पर रख दें। मैं पैसा दे दूंगा। इस नरक के पाख़ाने साले हमेशा ओवरफ़्लो करते रहते हैं। इसके इस्तेमाल करने से पहले किसी से उसकी सफ़ाई करवा दिया करें। और उन ख़ूनचूसू खटमलों के लिए इसकी कोठरी में कीटनाशक धुआं करवा दें।”

“हां, दादा, मैं ये देख लूंगा,” सुपरिंटेंडेंट ने कहा।

“तो मैं कब तक बाहर आऊंगा,” हाउसकीपिंग निर्देशों को नज़रअंदाज़ करते हुए अरबाज़ ने पूछा।

“तुम्हें आईपीसी की ग़ैरज़मानती धाराओं में गिरफ़्तार किया गया है,” दस्तूर ने बताया। “हमें पहले तुम्हें पुलिस हिरासत से निकालकर न्यायिक हिरासत में लाना होगा ताकि तुमसे पूछताछ न की जा सके। फिर हमें मजिस्ट्रेट के सामने ज़मानत के लिए अर्ज़ी देनी होगी।”

“तो मैं बाहर कब आऊंगा?” अरबाज़ ने दोहराया।

“उन्होंने हमीद से लंबा-चौड़ा कंफ़ेशन लिया है। ये केस वास्तव में मुश्किल नहीं है लेकिन तुम्हें मेरे निर्देशों का अच्छी तरह पालन करना होगा,” दस्तूर ने कहा।

अब्दुल दादा ने ख़ामोशी से दस्तूर की गोद में भूरे काग़ज़ में लिपटा नोटों का बंडल रख दिया। ये उसकी सामान्य फ़ीस से चौगुना ज़्यादा था।

“तो ये बाहर कब आएगा?” अब्दुल दादा ने पूछा।

“एक दिन में, अगर अरबाज़ उसके लिए तैयार हो जाए जो मेरे दिमाग़ में है,” दस्तूर ने कहा।

“आप जो कहेंगे मैं करूंगा,” अरबाज़ ने कहा।

“सबसे पहले, मुझे वो सारी बातचीत ठीक-ठीक सुनाओ जो तुम्हारी गिरफ़्तारी के वक्त पुलिस के साथ हुई थी,” दस्तूर ने कहा। अरबाज़ अगले दस मिनट शामियाना में हुई घटनाओं को दोहराता रहा।

दस्तूर ने सावधानी से नोट्स बनाए।

फिर उसने अब्दुल दादा से पूछा, “आप उस मजिस्ट्रेट को जानते हैं जिसके सामने अरबाज़ को कल, शनिवार को, पेश किया जाएगा?”

“वो तो तीर की तरह सीधा है,” अब्दुल ने जवाब दिया। “अगर आप यही पूछना चाह रहे हैं।”

“उस स्थिति में क्या आप जानते हैं कि इतवार को ड्यूटी मजिस्ट्रेट कौन होता है?” उसने अब्दुल से पूछा।

“हां, लेकिन अरबाज़ का मामला उसके सामने नहीं लाया जाएगा। वैसे भी, वो साला बेवकूफ़ है। उसे तो बस रमी खेलना पसंद है,” दादा ने जवाब दिया।

सुपरिंटेंडेंट की ओर मुड़कर दस्तूर ने पूछा, “आपके पास ऐसी कोई जगह है जहां अरबाज़ छिप सकता हो?”



आधी रात बीत चुकी थी जब उसे उसके अस्थायी नौकर ने उठाया। “सुपरिंटेंडेंट साहब ने आपको बुलाया है।”

अरबाज़ जल्दी से सुपरिंटेंडेंट के ऑफ़िस में पहुंचा। वहां बस वो दो ही आदमी थे। दरवाज़े को बंद करके सुपरिंटेंडेंट ने पूछा, “तैयार हो?”

“बिल्कुल,” अरबाज़ ने कुर्सी पर बैठते हुए जवाब दिया।

सुपरिंटेंडेंट ने हाथ घुमाकर अरबाज़ के चेहरे पर घूंसा जड़ दिया।

“उफ़!” अरबाज़ धक से रह गया। “इतनी ज़ोर से मारना ज़रूरी था क्या?”

“हमें इसे ठीक से अंजाम देना है,” सुपरिंटेंडेंट ने कहा। “अपनी आंख देखने दो। बहुत बढ़िया। शर्ट उतारो।”

अरबाज़ ने शर्ट उतार दी, और बैठा रहा।

सुपरिंटेंडेंट ने प्लग लगी इस्त्री उठा ली और अरबाज़ से झुकने को कहा ताकि वो उसकी पीठ तक पहुंच सके। “थोड़ी तकलीफ़ तो होगी लेकिन हम इसे तीन सैकंड से भी कम रखेंगे। इतना काफ़ी होना चाहिए,” सुपरिंटेंडेंट ने कहा।

“जेल की सज़ा से ज़्यादा तकलीफ़देह नहीं होगा,” अरबाज़ ने अपने दांत भींचते हुए कहा। जब गर्म इस्त्री कुछ सैकंड को पीठ पर लगी तो वो चीख़ पड़ना चाहता था।

जब वो कुर्सी से उठा तो उसे हल्की सी कमज़ोरी महसूस हुई। सुपरिंटेंडेंट ने शर्ट पहनने में उसकी मदद की। जब पीठ पर कपड़े की रगड़ महसूस हुई तो अरबाज़ दर्द से सिहर उठा।

“अब?” अरबाज़ ने पूछा।

“तुम शाम आठ बजे तक छिपे रहोगे।”

“कहां?”

“यहीं मेरे ऑफ़िस में। ये बंद रहेगा क्योंकि एक कॉन्फ़्रेंस के सिलसिले में मुझे शहर से बाहर रहना है। कैंटीन के लड़के ने कैबिनेट में खाने-पीने का सामान रख दिया है। तुम इससे अटैच्ड प्राइवेट टॉयलेट को इस्तेमाल कर सकते हो। दरवाज़ा बाहर से बंद रहेगा।”



“योअर ऑनर, मेरे मुवक्किल को हत्या और हत्या के प्रयास के इल्ज़ामों के लिए गिरफ़्तार किया गया है जबकि पुलिस को कोई लाश तक नहीं मिली है। हत्या कहां हुई है?” दस्तूर ने कहा।

मजिस्ट्रेट ने दस्तूर को और फिर सरकारी वकील को देखा। “सरकारी वकील को क्या कहना है?”

“योअर ऑनर, लाश को राख में तब्दील होने तक आग में भून दिया गया था। हमारे पास मिस्टर हमीद इब्राहीम की विस्तृत चश्मदीद गवाही है। ये देखते हुए कि लाश राख में बदल गई थी, कोई लाश नहीं मिल सकती है,” सरकारी वकील ने आत्मविश्वास से कहा।

दस्तूर टेनिस का खिलाड़ी और विम्बल्डन का शौक़ीन था। लव-फ़िफ़्टीन, दस्तूर ने मन ही मन सोचा।

“योअर ऑनर, मेरे मुवक्किल मिस्टर अरबाज़ शेख़ को ताज महल होटल की एक कॉफ़ीशॉप से गिरफ़्तार किया गया था। जैसा कि आप जानते हैं, सही तरीक़े से गिरफ़्तारी के लिए पांच बुनियादी ज़रूरतें होती हैं,” दस्तूर ने आगे कहा। “एक: वारंट देखने का अधिकार; दो: अपनी पसंद के वकील से परामर्श करने का अधिकार; तीन: ज़मानत की अनुकूलता के बारे में सूचित किए जाने का अधिकार; चार: अपनी गिरफ़्तारी की वजहों के बारे में बताए जाने का अधिकार...”

“हां, हां, मिस्टर दस्तूर, मैं क़ानून जानता हूं,” मजिस्ट्रेट ने बात काटी।

“ओह, बिल्कुल, उम्मीद करता हूं योअर ऑनर मुझे एक पल और बोलने देंगे,” दस्तूर ने धाराप्रवाह अपनी बात जारी रखी। “और पांच: गिरफ़्तारी के चौबीस घंटे के

अंदर किसी मजिस्ट्रेट के सामने प्रस्तुत करने का अधिकार…”

“आप कहना क्या चाह रहे हैं?” मजिस्ट्रेट ने पूछा।

“इनका अपराध संज्ञेय था। इसलिए कोई वारंट नहीं था,” दस्तूर ने कहा। “इसलिए पहली शर्त लागू नहीं होती है। इन्हें मुझसे मिलने दिया गया, जिसका मतलब है कि दूसरी शर्त का पालन हुआ। ये देखते हुए कि आरोप ग़ैरज़मानती अपराध का है, तो ज़मानत की अनुकूलता के बारे में बताने का सवाल ही नहीं उठता, तो नंबर तीन शर्त भी पूरी की गई। बदक़िस्मती से, चौथी और पांचवी शर्तों के बारे में ये बात नहीं कही जा सकती।”

“क्या मतलब है आपका?” मजिस्ट्रेट ने पूछा।

“जब डीसीपी सावंत ने इन्हें गिरफ़्तार किया था, तो मेरे मुवक्किल ने साफ़ तौर पर पूछा था कि उनके ख़िलाफ़ क्या आरोप है। डीसीपी ने जवाब दिया था कि हत्या का आरोप है।”

“मुझे तो ये ठीक मालूम देता है,” मजिस्ट्रेट ने कहा।

“मेरे मुवक्किल के ख़िलाफ़ दो आरोप थे: भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत हत्या का और भारतीय दंड संहिता की धारा 307 के तहत हत्या के प्रयास का। डीसीपी ने मेरे मुवक्किल को पहले के बारे में तो बताया था, मगर दूसरे के बारे में नहीं।”

“क्या ये सच है?” मजिस्ट्रेट ने सरकारी वकील को देखते हुए पूछा जिसे डीसीपी के साथ सिर जोड़े देखा जा सकता था। उनके बीच गर्मागरम बहस होती मालूम दे रही थी।

“मेरे पास सारा दिन नहीं पड़ा है,” मजिस्ट्रेट ने सरकारी वकील से कहा।

सरकारी वकील ने गला खंखारा और बोला, “गिरफ़्तारी करने वाले अफ़सर को विश्वास है कि उन्होंने मुल्ज़िम को दोनों आरोपों के बारे में बताया था…”

“मेरे पास एक गवाह हैं—एक महिला जो मेरे मुवक्किल के साथ कॉफ़ी पी रही थीं—जो इस तथ्य की गवाही देंगी कि गिरफ़्तारी के दौरान केवल एक आरोप ही बताया गया था,” दस्तूर ने जल्दी से कहा।

“…लेकिन मुमकिन है कि गिरफ़्तारी करने वाले अफ़सर से ये चूक हो गई हो,” सरकारी वकील ने जल्दी से बात पूरी की।

मजिस्ट्रेट ने इस मुद्दे पर विचार करने के लिए छोटा सा ब्रेक लेते हुए अपना चश्मा उतारा और अपनी आंखों को मला।

फ़िफ़्टीन-ऑल, दस्तूर ने सोचा।

मजिस्ट्रेट ने चश्मा वापस पहन लिया। “आगे कहिए, मिस्टर दस्तूर।”

“शुक्रिया, योअर ऑनर। जहां तक शर्त नंबर पांच की बात है तो मेरे मुवक्किल को शुक्रवार की शाम पांच बजे गिरफ़्तार किया गया था। क़ानून के मुताबिक़ इन्हें ज़्यादा

से ज़्यादा शनिवार की शाम को पांच बजे तक आपके सामने पेश कर दिया जाना चाहिए था।"

"आज तो सोमवार है," मजिस्ट्रेट ने नोट किया। "ये देरी क्यों?"

सरकारी वकील असहजता से खंखारा। "योअर ऑनर, मुल्ज़िम शनिवार की रात आठ बजे तक जेल अधिकारियों को मिले ही नहीं थे। तब तक इन्हें किसी मजिस्ट्रेट के सामने ले जाने के लिए बहुत देर हो गई थी। इसके बाद रविवार आ गया जब आपका साप्ताहिक अवकाश होता है..."

"आपने रविवार को ये मामला ड्यूटी मजिस्ट्रेट के सामने क्यों नहीं रखा?" मजिस्ट्रेट ने पूछा।

"वो बीमार हो गए थे," सरकारी वकील ने उत्तर दिया।

"जो भी हो, ये पुलिस की लापरवाही है जिसकी वजह से मुल्ज़िम को निर्धारित सीमा से ज़्यादा समय तक पुलिस की हिरासत में रहना पड़ा," मजिस्ट्रेट ने कहा। "आप किस क़िस्म की जेल चला रहे हैं जहां क़ैदी मिलते नहीं हैं!"

थर्टी-फ़िफ़्टीन, दस्तूर ने सोचा।

"आप और कुछ कहना चाहते हैं, मिस्टर दस्तूर?" मजिस्ट्रेट ने पूछा।

"योअर ऑनर, मुझे ये बात कहते हुए दुख होता है," चालाक वकील ने कहना शुरू किया।

"आप कहिए," मजिस्ट्रेट ने मदद करते हुए आग्रह किया।

"मेरे मुवक्किल को पुलिस हिरासत के दौरान बुरी तरह से यातना दी गई हैं। अगर अदालत इजाज़त दे तो मैं अपने मुवक्किल को आपके सामने खड़ा करना चाहूंगा," दस्तूर ने कहा।

"ये बेबुनियाद बात है, योअर ऑनर," सरकारी वकील ने कहा।

"मुल्ज़िम बेंच के पास आ सकते हैं," मजिस्ट्रेट ने सरकारी वकील को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा। अरबाज़ मजिस्ट्रेट के पास गया ताकि वो पास से उसे देख सके।

"आपकी बाईं आंख को क्या हुआ?" मजिस्ट्रेट ने नीली पड़ी आंख को देखकर पूछा।

"मैं कुछ नहीं कहना चाहूंगा, योअर ऑनर," अरबाज़ ने कहा। ये मत कहना कि जांचकर्ता अफ़सर ने तुम्हें पीटा था। ये झूठी गवाही होगी।

अरबाज़ ने अपनी शर्ट उतारी और मुड़कर अपनी पीठ जज की ओर कर दी। उसकी पीठ पर इस्त्री से जलने का निशान दिख रहा था।

"ये किसने किया आपके साथ?" मजिस्ट्रेट ने पूछा।

"अगर मैं कुछ कहूंगा तो वो मुझे फिर से पीट सकते हैं," अरबाज़ ने कहा। याद रखना कि तुम्हें किसी सवाल की प्रतिक्रिया में निश्चित जवाब देने की ज़रूरत नहीं है।

फ़ोर्टी-फ़िफ़्टीन, दस्तूर ने सोचा।

"योअर ऑनर," दस्तूर ने बीच में बात काटी। "मैं कहना चाहूंगा कि पुलिस के साथ मेरे मुवक्किल की जान को ख़तरा है। गिरफ़्तारी के नियमों का पालन नहीं किया गया। एक बदनाम गैंगस्टर मिस्टर हमीद इब्राहीम के इक़रारनामे के आधार पर आरोप गढ़े गए हैं, जिनके ख़िलाफ़ कई आपराधिक आरोप विचाराधीन हैं..."

"आप अपने मुवक्किल के लिए ज़मानत चाहते हैं?" मजिस्ट्रेट ने पूछा।

"मैं ज़मानत नहीं चाहता," दस्तूर ने कहा।

अरबाज़ ने अपनी सांस खींची। ये पागल बावा क्या कर रहा है?

"मैं चाहता हूं कि आप इस बेमानी केस को ख़ारिज कर दें," दस्तूर ने कहा।

"मुझे नहीं लगता कि मैं ये कर सकता हूं," मजिस्ट्रेट ने कहा।

"दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 203 कहती है, और मैं उद्धृत करता हूं, 'यदि, शिकायतकर्ता या साक्षियों के, यदि कोई है, शपथ के तहत दिए बयानों और पूछताछ या जांच, यदि कुछ है, के परिणाम पर विचार करने के बाद, धारा *202* के तहत मजिस्ट्रेट को लगता है कि कार्रवाई करने के लिए पर्याप्त आधार नहीं है, तो उसे शिकायत को ख़ारिज कर देना चाहिए, और ऐसे प्रत्येक केस में उसे संक्षेप में ऐसा करने के कारण दर्ज करने चाहिए।'"

मजिस्ट्रेट ने दस्तूर के निवेदन पर विचार किया।

"आपके पास ये शक्ति है, योअर ऑनर," दस्तूर ने आग्रह किया।

"शायद मेरे पास है," मजिस्ट्रेट ने कहा।

गेम, सैट और मैच।



अब्दुल दादा उनके घर मिलने गया। बुज़ुर्ग बेहद खुश हुए।

"मॉन्निगीज़ केक शॉप कैसी चल रही है?" दादा ने पूछा।

"बहुत बढ़िया। मेरे बेटे का प्रमोशन हो गया है। अब वो मैनेजर है।"

"और आपका पोता, प्रसाद? वो अब कौन सी क्लास में है?"

"अब वो स्कूल में नहीं है, दादा। अब वो नासिक की एक प्रिंटिंग प्रेस में फ़्लोर सुपरवाइज़र का काम कर रहा है।"

"समय कैसे उड़ जाता है," अब्दुल दादा ने अपना सिर हिलाते हुए कहा। "अब आपकी क्या उम्र हो गई?"

"बस अस्सी का हूं," बुज़ुर्ग ने दांत निपोरते हुए कहा। "मगर दिल से अभी भी जवान हूं।"

"न्यायिक मजिस्ट्रेट के पद से आप कब रिटायर हुए थे?" दादा ने पूछा।

“बीस साल पहले। रविवार का ड्यूटी मजिस्ट्रेट मेरा जूनियर था,” बुज़ुर्ग ने कहा।

“आपने उससे क्या कहा था?” दादा ने पूछा।

“बस ये कि उसे उस ख़ास दिन फ़ोन करके बीमारी का बहाना करना है और दिन भर मेरे साथ रमी खेलनी है। उसने तो ख़ुशी से ऐसा किया।”



“दुबे ही वो हरामी है जिसने मुझे गिरफ़्तार करवाया था,” अरबाज़ ने अब्दुल दादा से कहा। “उसे सबक़ सिखाना होगा।”

“उसने तो बस मुख्यमंत्री की कार को रोकने में उसे फंसाने का बदला लिया है तुमसे,” अब्दुल ने कहा। “बात ख़त्म। तुमने उसे फंसाया। उसने तुम्हें फंसाया।”

“आगे चलकर वो फफोला बन सकता है। मुझे उसे ठीक करना होगा,” अरबाज़ ने कहा।

“तुम तो पहले ही ये कर चुके हो। पुलिस कमिश्नर के पद के बाद तरक़्क़ी होकर उसे इंटेलीजेंस ब्यूरो का निदेशक हो जाना चाहिए था। ऐसा नहीं हुआ।”

“सही है, लेकिन मुझे पता लगा है कि अब उसे सैंट्रल ब्यूरो ऑफ़ इंवेस्टीगेशन में भेजा जा रहा है और वो इंटरपोल से जुड़े सारे मामलों का कोऑर्डिनेटर होगा। हमारे ड्रग्स और स्मगलिंग के धंधे को देखते हुए ये हालात अच्छे नहीं हैं। उससे छुटकारा पाना ही बेहतर होगा।”

“तुम और कितने लोगों को मारोगे?” अब्दुल दादा ने अपना सिगार जलाते हुए पूछा।

“उसे मारने का मेरा कोई इरादा नहीं है,” अरबाज़ ने कहा। “इसे देखें।”

अरबाज़ ने अब्दुल दादा की मेज़ पर एक छोटा सा डिब्बा रख दिया। अब्दुल दादा ने उसे देखा और हंस पड़ा। “तुम सब कुछ सोच लेते हो। ठीक है, करो।”



सांता क्रूज़ हवाईअड्डे पर दुबे ने अपना पासपोर्ट, टिकट, बोर्डिंग कार्ड और आरोहण कार्ड पकड़ रखा था जबकि एक कांस्टेबल उसका बैग उठाए चल रहा था। उस बदमाश अरबाज़ शेख़ ने उसका कैरियर मटियामेट कर डाला था मगर उसने अपने ग्रहों को सराहा जिन्होंने उसे धूल में से उठाकर फिर खड़ा कर दिया था। मुश्किल तो रहा था मगर किसी तरह हाथ-पैर मारकर वो निकल आया था। गृह सचिव ने सीबीआई के निदेशक से बात की जिसने इंटरपोल कोऑर्डिनेटर के रूप में दुबे की सिफ़ारिश की थी।

उसके कई पुराने सहकर्मी उसे विदा करने हवाईअड्डे पर आए थे। विदेश जा रहे भारतीयों के साथ ऐसा होना आम बात थी। जानेवाले हर बंदे को विदा करने के लिए दस दूसरे लोग आते थे, बहुत से भड़कीली मालाएं, फूल और बेकार तोहफ़े लिए होते

थे। मैं विमान पर सवार होने जा रहा हूं और तुम मुझसे ये उम्मीद करते हो कि तुम जो हवाईअड्डे के टैक्सी स्टैंड के पास से सस्ता सा बुके लेकर आए हो, उसे लेकर मैं जहाज़ पर जाऊंगा?

हवाईअड्डे पर आनेवाले लोगों में तत्कालीन निरीक्षण निदेशालय में आयकर अधिकारी सुशील तिवारी भी था। दोनों आदमी बहुत सालों से एक दूसरे को जानते थे क्योंकि उनके परिवार बंबई में एक से सरकारी क्वार्टरों में रहते थे। तिवारी ने बड़े प्रेमपूर्वक दुबे की विदाई की रस्म अदा की। ये आम परंपरा थी कि सफ़र पर जा रहे यात्री के माथे पर टीका लगाया जाए, थोड़ी मिठाई खिलाई जाए और एक रुपए का सिक्का थमाया जाए। ये मुसाफ़िर के सुरक्षित सफ़र की कामना करने का रस्मी तरीका था। "आपकी यात्रा सुरक्षित और सफल हो," तिवारी ने दुबे को हाथ हिलाकर विदा करते हुए कहा।



दुबे झटपट पासपोर्ट कंट्रोल से निकल गया। इमीग्रेशन अफ़सर ने निर्गमन की तारीख़—पांच अप्रैल 1976—के साथ उसके पासपोर्ट पर मुहर लगा दी। उसके साथ हवाईअड्डे का ड्यूटी मैनेजर था, इसलिए सुरक्षा जांच टाल दी गई थी।

ठीक उस वक्त जब वो वीआईपी लाउंज की ओर बढ़ रहे थे, एक आदमी ने पीछे से दुबे के कंधे को थपथपाया। "माफ़ी चाहूंगा, सर, लेकिन मुझे आपसे कुछ बात करनी है।"

दुबे मुड़ा तो देखा कि एक सफ़ेद वर्दीधारी कस्टम अधिकारी खड़ा है। उसका बैज बता रहा था कि वो सतर्कता अधिकारी है। हवाईअड्डे का ड्यूटी मैनेजर बीच में पड़ा। "बात क्या है?"

"प्लीज़ बीच में मत बोलिए," सतर्कता अधिकारी ने रूखेपन से हवाईअड्डे के ड्यूटी मैनेजर से कहा। "हमारे पास स्पष्ट जानकारी है जिसकी वजह से हमें मिस्टर दुबे से कुछ सवाल पूछने हैं। कृपया मेरे साथ आएं, सर।"

"आप जानते हैं मैं कौन हूं?" दुबे ने पूछा, वो नाराज़ दिख रहा था।

"बिल्कुल, सर। पूर्व पुलिस कमिश्नर, वर्तमान में डेप्युटेशन पर सीबीआई में हैं। अब, क्या आप मेरे साथ चलेंगे, सर?"

दुबे सतर्कता अधिकारी के पीछे-पीछे परदे पड़े एक छोटे से बूथ में गया। सतर्कता अधिकारी की कड़ी नज़र ने सुनिश्चित कर दिया कि हवाईअड्डे के ड्यूटी मैनेजर को निकल लेना चाहिए। "प्लीज़, अपनी जेबें ख़ाली करें और अपना ब्रीफ़केस मेज़ पर खोलें," सतर्कता अधिकारी ने कहा।

"मैं इस हैरेसमेंट की रिपोर्ट आपके सीनियर्स से करूंगा," दुबे ने गुस्से से कहा। "बेवजह मेरी तलाशी ली जा रही है। आपके अशिष्ट बर्ताव द्वारा एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी को अपनी कठिन ड्यूटी निभाने से रोका जा रहा है।"

“ज़रूर, सर। आप वीआईपी लाउंज में एक कप चाय पीने वाले थे—बेशक कठिन ड्यूटी है। आप चीफ़ कमिश्नर ऑफ़ कस्टम्स, ज़ोन तीन के ऑफ़िस में अपनी शिकायत दर्ज कर सकते हैं। अब, प्लीज़ अपनी जेबें ख़ाली करें और अपना ब्रीफ़केस मेज़ पर खोलें,” सतर्कता अधिकारी ने अविचल भाव से कहा।

दुबे जान गया कि उसके सामने कोई और चारा नहीं है। उसने अपना ब्रीफ़केस मेज़ पर रखा और खोल दिया। फिर उसने पीछे की जेब से अपना वॉलेट, सामने की जेबों से चाबियां, रुमाल और रेज़गारी, क़मीज़ की जेब से पैन और विज़िटिंग कार्ड निकाले और सबको मेज़ पर रख दिया।

सतर्कता अधिकारी ने मेज़ पर रखी चीज़ों का निरीक्षण किया। जल्दी ही उसने सिक्कों को अलग कर लिया और एक रुपए का एक सिक्का उठा लिया। उसे ऊपर उठाकर, उसने सिक्के को दोनों तरफ़ से परखा।

“ये तो दुर्लभ सिक्का है, सर,” सतर्कता अधिकारी ने कहा। “1875 में क्वीन विक्टोरिया के चित्र के साथ ढाला गया एक रुपए का सिक्का।”

दुबे ने उसे देखा। “ये मेरा नहीं है। ये मेरे एक मित्र तिवारी जी का है। उन्होंने मुझे विदाई के गुडलक तोहफ़े के रूप में दिया था। उन्हें पता है कि मुझे पुराने सिक्के पसंद हैं।” “इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता कि ये आपके पास कैसे आया, सर,” सतर्कता अधिकारी ने कहा। “पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम के तहत इस सिक्के को भारतीय सीमा से बाहर ले जाना अपराध है।”

“बेकार बात न करें,” दुबे ने कहा। “ये क़ानून तो लागू…”

“मैं आपकी याददाश्त ताज़ा कर दूं, सर,” सतर्कता अधिकारी बोला। “पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम भारतीय संसद ने 1972 में पारित किया था। ये 5 अप्रैल 1976 से लागू हो गया है। आज पांच है।”

“मगर- मगर- ये तो बमुश्किल ही एंटीक है। इस देश में ईस्ट इंडिया कंपनी के सैकड़ों सिक्के हैं!” दुबे हकला गया।

सतर्कता अधिकारी ने एक छोटी सी बुकलेट दुबे को थमा दी। ये पुरावशेष एवं बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972 की प्रति थी। “कृपया अंडरलाइन किए अंशों को पढ़ें,” उसने कहा।

“…इस अधिनियम में, जब तक कि संदर्भ में कुछ और आवश्यक न हो ‘पुरावशेष’ में कोई भी सिक्के, मूर्ति, कलाकृति, पुरालेख या अन्य कृतियां सम्मिलित हैं…

“…संपूर्ण भारत में *(*सिक्किम राज्य को छोड़कर*)* इसे *5* अप्रैल *1976* से लागू कर दिया जाएगा।

“…कोई भी कला, वस्तु या कृति जिसे केंद्र सरकार द्वारा इस अधिनियम के उद्देश्यों के तहत पुरावशेष घोषित किया गया है, जो कम से कम सौ वर्ष से अस्तित्वमान हों…”

“सिक्के पर कौन सा साल पड़ा है?” सतर्कता अधिकारी ने अपनी बुकलेट वापस लेते हुए पूछा।

“1875,” दुबे ने सिक्के को ग़ौर से देखते हुए कहा। “इस समय कौन सा साल चल रहा है?” सतर्कता अधिकारी ने पूछा।

“1976,” दुबे ने जवाब दिया।

“आपका सिक्का 101 साल पुराना है, वास्तव में सौ साल से ज़्यादा पुराना,” सतर्कता अधिकारी ने कहा। उसने बुकलेट का एक और पन्ना पलटा और उसे फिर से दुबे को थमा दिया। “अंडरलाइन किया हिस्सा पढ़ें,” उसने कहा।

“अगर कोई व्यक्ति, स्वयं या अन्य किसी की ओर से, धारा तीन के उल्लंघन में किसी पुरावशेष या बहुमूल्य कृति को निर्यात या आयात करने का प्रयास करता है, तो वह, किसी भी अधिहरण या दंड के प्रति पक्षपात के बिना, कम से कम छह माह के कारावास के दंड का, जिसे तीन वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है, भागी होगा।”



“18 अगस्त 1976 को सुबह दस बजे कलकत्ता के ओबरॉय ग्रैंड होटल में हुई बी. रवि और आई. डागा प्राइवेट लिमिटेड के शेयरधारकों की पांचवी वार्षिक आम सभा की कार्रवाई,” सेक्रेटरी हिल्डा फॉन्सेका नोट कर रही थी, जबकि अरविंद देख रहा था।

“उपस्थिति: 25,000 शेयर रखने और शेयर पूंजी के सौ प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करने वाले 116 शेयरधारक या उनके प्रतिनिधि। बोर्ड के अध्यक्ष, अरविंद बागड़िया, ने सभा का शुभारंभ किया और अध्यक्षता की। उन्होंने शेयरधारकों का स्वागत किया और मंच से निदेशकों का औपचारिक परिचय करवाया।”

“मि जॉयदीप चक्रवर्ती, उपाध्यक्ष।”

मेरा विश्वासपात्र दोस्त, अरविंद ने सोचा।

“मि सत्यपाल मित्तल, प्रबंध निदेशक।”

मेरा ज़बरदस्त सेल्समैन, अरविंद ने सोचा।

“मि बृजमोहनलाल बागड़िया, पार्टनर, बागड़िया एंड कं।।”

मेरे धैर्यवान पिता, अरविंद ने सोचा।

“मि डैरियस दस्तूर, पार्टनर, डिग्बी एंड दस्तूर।”

मेरा क़ाबिल वकील, अरविंद ने सोचा।

“मि किशोर देशमुख, चेयरमैन, यूनाइटेड फ़ेडरेशन बैंक।”

मेरा साधन-संपन्न बैंकर, अरविंद ने सोचा।

“मि. ताराचंद अग्रवाल, मुख्य लेखाकार, बागड़िया एंड कंपनी।”

मेरे चतुर मुनीमजी, अरविंद ने सोचा।

“कंपनी अधिनियम 1956 की धारा 174 के अनुसार, अध्यक्ष ने घोषणा की कि

आवश्यक संख्या उपस्थित है और धारा 171 के अनुसार सभा की समयानुकूल सूचना दे दी गई थी। तदनुसार उन्होंने सभा को नियमानुसार घोषित किया।

"चेयरमैन ने शेयरधारकों के लिए अपने भाषण का आरंभ गत वर्ष की घटनाओं की समीक्षा के साथ किया। उन्होंने शेयरधारकों का ध्यान विशेष रूप से इस तथ्य की ओर दिलाया कि गत वर्ष भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण, स्माइलिंग बुद्धा, किया, इस साल के शुरू में अपने पहले उपग्रह आर्यभट्ट का प्रक्षेपण किया। ये विकास देश की प्रगति के लिए शुभ संकेत हैं। फिर उन्होंने 1974-75 के लिए कंपनी के आर्थिक परिणामों पर चर्चा की और अगले वित्त वर्ष की रूपरेखा बताई। उन्होंने इस तथ्य पर बल दिया कि कंपनी स्थायी कारोबारों में न पड़कर केवल उन्हीं कारोबारों में जाएगी जिनमें उच्च निर्गम मूल्य संभव होगा।"

हमारा कारोबार चीज़ों को ख़रीदना-बेचना ही नहीं है; हमारा कारोबार तो कारोबारों को ख़रीदना और बेचना है, अरविंद ने सोचा।

"चेयरमैन को शेयरधारकों का ध्यान इस तथ्य की ओर खींचते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही थी कि 1960 में कंपनी में निवेशित सौ रुपए का मूल्य अब 29,192 रुपए है, जो पचास प्रतिशत वार्षिक की संयोजित वार्षिक वृद्धि दर को दर्शाती है, ये भारतीय कॉरपोरेट क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धि है।"

नियमों की जानकारी होने से अच्छी विकास दर प्राप्त की जा सकती है; जबकि अपवादों की जानकारी होने से ज़बरदस्त विकास दर प्राप्त की जा सकती है, अरविंद ने सोचा।

"फिर वार्षिक आम बैठक ने प्रकाशित एजेंडा में दर्ज कार्यसूची पर कार्रवाई की:

एक: गत वर्ष की वार्षिक रिपोर्ट और वित्तीय विवरण का अनुमोदन।

दो: उपलब्ध आय और लाभांश घोषणा के समायोजन पर मतदान।

तीन: वर्तमान वर्ष के लिए सांविधिक लेखापरीक्षकों की नियुक्ति।

चार: जिन निदेशकों का कार्यकाल पूरा हो गया है, उनका पुनर्चयन।

"सभी आवश्यक प्रस्ताव, तटस्थ मत के बिना, 25,000 मतों के साथ पारित हुए। तदुपरांत चेयरमैन ने शेयरधारकों को चर्चा के लिए आमंत्रित किया।"

मिस्टर ताराचंद अग्रवाल बोलने के लिए खड़े हुए। "वैसे तो हम सभी आपकी प्रगति से खुश हैं, अरविंद बाबू, मगर मैं इस अवसर पर आपको तीन नए आयकर आंकलनों के लिए बधाई देना चाहता हूं।"

"नए आंकलन?" अरविंद ने पूछा। "हमने तो कोई नई कंपनी या फ़र्म शामिल नहीं की है।"

"मेरा मतलब आपके दो बेटों—विनय और विनीत—के आगमन से था," मुनीमजी ने मुस्कुराते हुए कहा।

अरविंद हंस पड़ा जबकि उसके शेयरधारकों ने तालियां बजाईं। "शुक्रिया, मुनीमजी। हां, ये सच है कि मेरी पत्नी अभिलाषा और मुझे दो जुड़वां बच्चे होने का

सौभाग्य प्राप्त हुआ है। लेकिन, मुनीमजी, अगर हम उनकी आयकर फ़ाइलें शुरू करते हैं तो भी वो केवल दो ही तो हैं।"

"आयकर अधिनियम 1961 के तहत, आप एच.यू.एफ., हिंदू अनडिवाइडेड फ़ैमिली —हिंदू अविभाजित परिवार—को तीसरा कर निर्धारिती बना सकते हैं, इसलिए तीन आंकलनों के लिए मेरी बधाई," मुनीमजी ने बैठते हुए कहा।

बंबई से आए धंधा होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड का प्रतिनिधित्व कर रहे एक प्रॉक्सी मुरली अय्यर ने राय दी कि शेयरधारक के मूल्य के निस्तारण के लिए कंपनी को बिना किसी देरी के बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध करवा लेना चाहिए। चेयरमैन सहमत थे और उन्होंने संकेत दिया कि प्रारंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव (आईपीओ) लाने की दिशा में काम जारी है।

सभा समाप्त होने से पहले किशोर देशमुख ने चेयरमैन के भारी अनुभव, उद्यमशील दूरदर्शिता और प्रभावशाली नेतृत्व क्षमता की प्रशंसा की और उनके द्वारा संभव बनाए गए नाटकीय परिणामों के लिए उन्हें बधाई दी।

किसी अन्य द्वारा कुछ कहने की पेशकश न आने पर बारह बजे के क़रीब चेयरमैन ने सभा में आने के लिए शेयरधारकों को धन्यवाद दिया और सभा समाप्त कर दी। फिर उन्होंने ऐलान किया कि साथ वाले कक्ष में लंच का आयोजन है। उन्होंने ये भी ऐलान किया कि शेयरधारकों के लिए ज्योति सिनेमा में शाम को तीन बजे फ़िल्म शोले—जो बॉक्स ऑफ़िस पर बावन हफ़्ते पूरे करने जा रही थी—की विशेष स्क्रीनिंग का इंतज़ाम किया गया है।



अरविंद और अभिलाषा कार की पिछली सीट पर बैठ गए। विनय और विनीत मेल खाते नीले जंपर सूट में बंडल बने पड़े थे। अरविंद ने विनय को ले रखा था जबकि अभिलाषा के पास विनीत था। विनय बड़ा था, उसका जन्म सुबह के 10:47 पर हुआ था, विनीत से पूरे एक मिनट पहले, जो 10:48 पर जन्मा था।

उनकी कार के पीछे एक और कार थी, दूसरी कार में दो आयाएं थीं जो लड़कों की देखभाल करती थीं। वो कलकत्ता से लगभग अट्ठावन किमी. दूर तारकेश्वर जा रहे थे। हुगली ज़िले में स्थित तारकेश्वर का नाम तारकनाथ मंदिर पर पड़ा था जिसे 1729 में राजा भारमल्ल ने बनवाया था। उस रोज शिवरात्रि थी और अभिलाषा ने भगवान शिव से मन्नत मांगी थी कि अगर उसे संतान हुई तो शिवरात्रि पर वहां जाकर पूजा करेगी। भगवान ने उसे दो संतान प्रदान की थीं तो मन्नत पूरी करना ज़रूरी था।

जैसे ही ड्राइवर पोर्च से गाड़ी निकालने वाला था कि तभी उनका पुराना नौकर भागता हुआ आया। "अरविंद बाबू, आपके लिए अर्जेंट फ़ोन है," उसने हांफते हुए कहा।

"ज़रा एक मिनट दो," अरविंद ने विनय को अभिलाषा को पकड़ाते हुए कहा। वो कार से उतरा और फ़ोन के पास चला गया जो सीढ़ियों के पास उम्दा पॉलिश किए गए

टीक की लकड़ी के साइडबोर्ड पर रखा था। उसने फ़ोन उठाया और सुना।

वो कार के पास वापस गया जहां अभिलाषा बच्चों के साथ उसका इंतज़ार कर रही थी। “तुम चलो, अभिलाषा,” उसने कहा। “मुझे दस मिनट के लिए दफ़्तर जाना है। कुछ काग़ज़ात पर तुरंत दस्तख़त करने हैं।”

“तुम बाद में आओगे?” अभिलाषा ने थोड़ा चिढ़कर पूछा।

“तुम्हारे बस आधे घंटे पीछे पहुंच जाऊंगा,” अरविंद ने कहाऔर शोफ़र को अभिलाषा और बच्चों को लेकर चलने का इशारा किया।

अभिलाषा जानती थी कि वो नहीं आएगा। इसी पैटर्न को बार-बार दोहराया जाता था।



अक्टूबर 1978 में विनोद खन्ना, परोमिता बनर्जी और प्रेम चोपड़ा की धरती और आकाश का प्रीमियर इरोज़ सिनेमा में हुआ था। क्योंकि ये प्रीमियर था, इसलिए दर्शक वीको वज्रदंती, गोल्ड स्पॉट, निरमा और फ़ोर स्क्वेयर के हमेशा वाले इश्तेहारों से बच गए थे।

बिल्डिंग के ऊपर विनोद खन्ना का विशाल कट-आउट लगाया गया था, जबकि फ़िल्म का नाम फ़ख़्र के साथ थिएटर के प्रवेश द्वार पर सफ़ेद चैनलों पर काले कट-आउट अक्षरों में लगाया गया था।

परोमिता जानती थी कि ये शायद आख़री फ़िल्म होगी जिसमें उसने काम किया था। वो अपने तीस के दशक के में थी और बॉलीवुड अपनी हीरोइनों को उनके कैरियर के चरम पर धता बता देने के लिए बदनाम था।

हर ख़ास आदमी वहां मौजूद था। ये फ़िल्म डाइरेक्टर अविजित बसु की 1976 की ज़बरदस्त हिट फ़िल्म मेरी प्रेम कहानी के बाद की फ़िल्म थी। परोमिता डाइरेक्टर और अपने साथी कलाकारों के साथ पहली पंक्ति में बैठी थी। पहली पंक्ति में ही अरबाज़ और अब्दुल दादा बैठे थे, जिसने पिनाकिन देब के ‘अचानक लापता’ हो जाने के बाद फ़िल्म को आर्थिक संकट से उबारा था। अब्दुल दादा के दल के ज़्यादातर लोग उसे क़त्ल मानने से इंकार करते थे क्योंकि इससे अरबाज़ ही फंसता। वैसे भी, इन दिनों अख़बारों का पूरा फ़ोकस बलात्कारी एवं हत्यारे रंगा-बिल्ला पर बना हुआ था।

दूसरी पंक्ति में परोमिता के पीछे उसके माता-पिता को बैठा होना चाहिए था। ये उनके लिए गर्व का पल होता लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं था। पिनाकिन की घटना और अरबाज़ की गिरफ़्तारी के सदमे से परोमिता पूरी तरह उबरी भी नहीं थी कि उसे एक और ज़ोरदार झटका लगा। भारत सरकार ने परोमिता के पिता के.सी. बनर्जी को तरक़्क़ी दी थी और उन्हें उस साल के शुरू में एक कॉन्फ़्रेंस में शामिल होने के लिए न्यूयॉर्क आमंत्रित किया गया था। बदक़िस्मती से, 1978 के नए साल के रोज़ एयर इंडिया की उड़ान संख्या 855 जिसमें परोमिता के माता-पिता सवार हुए थे, उड़ान भरने के कुछ मिनट बाद ही बांद्रा के तटीय क्षेत्र में दुर्घटनाग्रस्त हो गई। विमान पर

सवार सभी 213 यात्री और कर्मचारी दल मारे गए।

परोमिता ने आग्रह किया था कि फ़िल्म के प्रीमियर को कुछ दिन टाल दिया जाए और अविजीत ने उसका मान रखने के लिए उसे उस साल के बाद के महीनों में खिसका दिया था।

अरबाज़ के साथ अपनी दोस्ती को परोमिता ने अपने माता-पितासे हमेशा छिपाकर रखा था। उसके पिता बंगाली ब्राह्मण थे जो बहुत गर्व से अपनी वंशावली को कन्नौज के शांडिल्य गोत्र के रारिया ब्राह्मणों से जोड़ते थे। वो इस बात को कभी स्वीकार नहीं कर पाते कि उनकी बेटी का कोई मुसलमान बॉयफ़्रेंड हो या वो किसी मुसलमान से शादी करे। लेकिन माता-पिता के गुज़रने के बाद अरबाज़ ही उसका इकलौता सहारा और सुकून हो गया था।

माता-पिता की मृत्यु के छह महीने बाद परोमिता ने अपने पिता को अलॉट किया गया हैदराबाद एस्टेट का फ़्लैट छोड़ दिया। उसने बांद्रा में बंद पड़ा अपना फ़्लैट बेच दिया और अपने लिए कोलाबा में अरबाज़ के घर से बस एक मंज़िल ऊपर एक छोटा सा फ़्लैट ख़रीद लिया। उसने अपने माता-पिता के थोड़े से फ़र्नीचर से उसेबहुत सादगी से सजाया था। गृह प्रवेश के दिन उसने घर में छोटी सी पूजा और लंच रखा था। अरबाज़, उसकी मां, डाइरेक्टर अविजीत बसु और सैट के परोमिता के थोड़े से सहकर्मी शामिल हुए थे।

सबके जाने के बाद उसने बरतन धोए और घर की सफ़ाई की। उसके पास इतना पैसा था कि कोई नौकर रख ले लेकिन तन्हाई में सुकून था। उसने अपने वॉकमैन का हैडफ़ोन लगाया, जापानी गजेट जो अरबाज़ ने उसके जन्मदिन पर उसे दिया था। उसमें उसने अबा का ऑडियो कैसेट लगाया और अपना मनपसंद गाना 'टेक ए चांस ऑन मी' सुनने लगी, साथ ही ये भी सोच रही थी किरात के लिए किस किताब से दोस्ती की जाए।

गाना ख़त्म हुआ तो उसे घंटी बजती सुनाई दी। पीपहोल से झांकने पर उसने देखा कि दरवाज़े पर अरबाज़ खड़ा है। खुश होकर उसने दरवाज़ा खोला और उसकी बांहों में समा गई। "मुझे फ़िक्र होने लगी थी," वो बोला। "कई मिनटों से मैं घंटी बजा रहा हूं।"

"तुम्हारी ग़लती है कि तुमने मुझे ये मशीन दी," उसने मुस्कुराते हुए कहा। एक अजीब सा ठहराव पसर गया। तुम्हें हुआ क्या है? तुम स्कूली लड़कों की तरह बर्ताव कर रहे हो, अरबाज़ ने मन ही मन सोचा।

परोमिता ने एक चुंबन जड़कर उसके दिवास्वप्न को तोड़ा। उस रात पहली बार उन्होंने सैक्स किया था। परोमिता को डर था कि पिनाकिन द्वारा की गई उस घिनौनी हरकत के बाद क्या कभी वो किसी और आदमी को खुद को छूने भी दे पाएगी। लेकिन अरबाज़ इतना भला और संवेदनशील था कि अरबाज़ के चुंबन के साथ ही वो उस भयानक दिन को भूल गई। वो तो उन दूसरे लोगों को भी भूल गई थी जिनके साथ अपने फ़िल्मी कैरियर के दौरान उसे सोना पड़ा था।

अगली सुबह जब उसकी आंख खुली तो देखा कि अरबाज़ उसके लिए चाय बना

रहा है। “मुझे तो इसकी आदत पड़ जाएगी,”अपने बालों को चेहरे से हटाते हुए वो हंसी।

“और मुझे भी,” उसने सरल भाव से कहा।



“वो मादरचोद तो शायद ज़मानत पर छूट जाएगा,” अरबाज़ ने कहा,वो अपनी डाटसन ब्लूबर्ड के स्टीयरिंग व्हील पर उंगलियां बजा रहा था। वो हमीद के बारे में बात कर रहा था।

अब्दुल दादा उसके पास ही पैसेंजर सीट पर बैठा था। कारबांद्रा के ड्राइव-इन थिएटर में पार्क थी। आठ सौ कारों की क्षमता के बावजूद उस रात के शो में जोश फीका सा था। अरबाज़ ने खिड़की का शीशा नीचे किया ताकि पार्किंग स्लॉट के खंभे पर लगे स्पीकर की आवाज़ आ सके। अमिताभ बच्चन, विनोद खन्ना, राखी,रेखा और अमजद ख़ान की मुक़द्दर का सिकंदर दिखाई जा रही थी।

उनके आसपास हर तरह की कारों में हर तरह के लोग मौजूद थे। कुछ लोग अपनी कारों से निकल आए थे और फ़ोल्डिंग कुर्सियों पर बैठे हुए थे। कुछ अपनी कारों की छतों पर चढ़ गए थे। दूर खड़ी कारों में ऐसे जोड़े थे जो थोड़ा ज़्यादा एकांत चाहते थे।

हमीद अरबाज़ के ख़िलाफ़ सुबूत पेश करने के लिए सरकारी गवाह बन गया था लेकिन फिर मजिस्ट्रेट ने अरबाज़ के ख़िलाफ़ केस को ही ख़ारिज कर दिया। गुस्से में भरकर पुलिसवालों ने उन पिछले जुर्मों के लिए हमीद को बंद कर दिया जो उसकी माफ़ी के दायरे में शामिल नहीं थे। दो साल जेल में पड़े रहने के बाद, अब ख़बर थी कि वो एक-दो दिन में बाहर आ जाएगा।

“तुम्हारा इस बारे में क्या इरादा है?” अब्दुल दादा ने पूछा।

“मैं तो उसकी गोलियां फोड़ देना चाहता हूं,” अरबाज़ ने आराम से कहा।

“गुस्सा होना अच्छी बात नहीं है,” अब्दुल दादा ने कहा। “बदला आइसक्रीम की तरह होता है। पिघल जाने पर वो बहुत बुरी लगती है।”

“आपकी क्या राय है, दादा?” अरबाज़ ने पूछा।

“वो दो आदमी जिन पर मुझे भरोसा था—मुस्तफ़ा और हमीद—अब हमारे साथ नहीं हैं। मुरली स्मार्ट है लेकिन वो भारी बोझ नहीं उठा सकता। वो बंदरगाह वाला तुम्हारा दोस्त अभी यहीं-कहीं है?”

“राजू?” अरबाज़ ने पूछा।

अब्दुल दादा ने हामी भरी। “तुम तभी क़ाबिल जनरल बन सकते हो जब तुम्हारी सेना मज़बूत हो…”

“जनरल तो आप हैं, दादा, मैं नहीं!” अरबाज़ ने कहा।

“थैंक्यू, लेकिन मैं अब फ़ील्ड मार्शल जैसा ज़्यादा हूं।”

“वो क्या होता है?” अरबाज़ ने पूछा।

“ये लाइफ़टाइम अचीवमेंट अवार्ड की तरह है,” अब्दुल दादा ने अपने सिगार का मज़ा लेते हुए समझाया। बज़ाहिर जो सिगार वो पीता था, उन्हें हाथ से एक क्यूबाई औरत की जांघ पर रोल किया जाता था। ये सादा सा तथ्य डॉन को बेहिसाब उत्तेजना देता था। “इसका मतलब है कि मुझे वास्तव में कुछ नहीं करना है। मेरे लिए तुम ये करोगे। तो तुम मेरे जनरल हो। लेकिन तुम्हारा कर्नल कहां है?”

“राजू तो क़रीब पचास साल का है,” अरबाज़ ने कहा।

“तो क्या हुआ? जब बंदा पहाड़ी पर पहुंच जाता है तो स्पीड पकड़ना शुरू करता है,” दादा ने कहा। “एक बात और…”

“हां, दादा?”

“तुम्हें शिव सेना के बॉसों से मुलाक़ात तय करनी होगी,” दादा ने कहा। “मैं जानता हूं वो केशव गाडगिल, जो उनके बड़े नेताओं में से है, तुमसे मिलकर खुश होगा।”

“लेकिन हमें उनसे मिलने की क्या ज़रूरत है?” अरबाज़ ने पूछा। “उनका तो हमेशा से हिंदू समर्थक एजेंडा रहा है।”

“राजनीति नाटक की तरह होती है,” अब्दुल ने कहा। “यहां हरेक नेता उसी तरह अपनी भूमिका निभाता है जैसी उसे लाइनें दी जाती हैं। लेकिन परदे के पीछे, हीरो और विलेन साथ बैठकर ड्रिंक का मज़ा लेते हैं। और एक बात याद रखना जो किसी फ़िलॉसफ़र ने कही थी: जब सवाल पैसे का हो, तो सबका मज़हब एक होता है।”

“लेकिन हमें उनकी क्या ज़रूरत है?” अरबाज़ ने पूछा।

“हम धंधे में हैं,” अब्दुल ने कहा। “हमें हर सियासी पार्टी के हर बंदे का दोस्त होना चाहिए।”

“मगर शिव सेना क्यों?” अरबाज़ अड़ा हुआ था।

“तुम बंबई में रहते हो,” अब्दुल ने कहा। “तुम्हारा धंधा बंबई में चलता है। सियासी दोस्तियों के बिना इस शहर में बहुत कुछ पाने की उम्मीद मत करना। और उस फ़हरिस्त में सबसे ऊपर बालासाहेब ठाकरे की पार्टी है।”



“वो कैसे मरा?” अब्दुल दादा ने पूछा।

“दो आदमी उस होटल-मालिक के ऑफ़िस में घुसे और पॉइंट ब्लैंक रेंज से उसे गोली मार दी,” अरबाज़ ने कहा।

“क्या उसने अपनी प्रॉपर्टी के झगड़े के निपटान के लिए हमें रखा था?” अब्दुल ने पूछा।

अरबाज़ ने हामी भरी।

“उसका पार्टनर होटल को बढ़ाने के लिए राज़ी नहीं हो रहा था हालांकि नगरपालिका की सारी अनुमतियां मिल चुकी थीं। उसने हमसे कहा था कि उसके पार्टनर को मनाएं।”

“जिसका मतलब है कि उसके पार्टनर ने किसी और का इस्तेमाल करने का फ़ैसला किया,” अब्दुल ने कहा। “किसे?”

“दाऊद इब्राहीम को,” अरबाज़ ने जवाब दिया।

“हम इतने यक़ीन से कैसे कह सकते हैं?” अब्दुल ने पूछा।

“वो ड्रग्स, सुपारी-हत्याएं और जबरन वसूली के धंधों को हाथ में लेने पर तुला था। इस एक हत्या से उसने इन तीनों इलाक़ों में कुछ न कुछ हासिल कर लिया है।”

“कैसे?” अब्दुल ने पूछा।

“पहला: उसने एक सुपारी ली और हमारे आदमी को मार डाला,” अरबाज़ ने कहा। “ख़बर ये है कि ये कॉन्ट्रेक्ट-किलिंग थी। दूसरा: वो होटल की प्रॉपर्टी को हथियाने के चक्कर में था। उसकी जबरन वसूली की चालें कामयाब हो गईं। तीसरा: होटल ड्रग्स के धंधे का अकेला सबसे बड़ा अड्डा है। अब वो उसके पास है।”

दाऊद इब्राहीम उस डॉन से भी बड़ा हो गया था, जिसने उसे सिखाया था—हाजी मस्तान। हाल के बरसों में उसने हवाला सिस्टम पर भी कंट्रोल जमा लिया था—जो कि दुनिया भर में पैसों के लेनदेन का आमतौर से इस्तेमाल होने वाला अंडरग्राउंड सिस्टम है।

“उसे ड्रग्स, जबरन वसूली और कॉन्ट्रेक्ट-किलिंग के धंधे लेने दो,” अब्दुल दादा ने कहा। “हमें इनकी ज़रूरत नहीं है। जुए और भूमि-बैंकों पर ध्यान दो।”

“उसको जगह क्यों दें?” अरबाज़ ने पूछा।

“क्योंकि वो सही बंदा नहीं है,” अब्दुल ने जवाब दिया। “तुम और मैं कभी किसी को बेवजह नहीं मारेंगे। ये बंदा मार सकता है और मारता है। वो दिन नहीं रहे जब माफ़िया नियम-क़ायदों से काम करते थे।”

अरबाज़ ने हामी भरी।



“मुझे तुम्हारी ज़रूरत है, राजू,” अरबाज़ ने राजू का दिया पान अपने मुंह में रखते हुए कहा। उसे पान का कोई शौक़ नहीं था मगर वो नहीं चाहता था कि राजू को बुरा लगे।

“मैं तो सीधा-सादा बंदरगाह का मज़दूर हूं, अरबाज़,” राजू ने कहा।

“और मैं मदर टेरेसा हूं।”

राजू हंस पड़ा। “आ जाऊंगा। मैं तुम्हारा डिप्टी बनूंगा मगर केवल एक शर्त पर।”

“क्या?” अरबाज़ ने पूछा।

“उस औरत से शादी कर लो। वो बहुत ख़ूबसूरत है।”

अरबाज़ हंसने लगा। राजू परोमिता की बात कर रहा था। अरबाज़ को सैक्स का पहला तजुर्बा राजू की वजह से ही हुआ था जो उसे बच्चूसेठ की वाड़ी और बिल्क़ीस बेगम के यहां ले गया था।

“काश लोगों ने ऐसी ही और ज़्यादा शर्तें मेरे सामने रखी होतीं,” अरबाज़ ने कहा।

वो रुका। “ये नया बंदा दाऊद इब्राहीम अचानक बंबई में बहुत उछलने लगा है।”

“तुम्हारा क्या इरादा है?” राजू ने पूछा।

“उसे ड्रग्स, कॉन्ट्रेक्ट-किलिंग और जबरन वसूली के धंधे संभालने दो,” अरबाज़ ने कहा। “मैं तो तुम्हारी देखरेख में जुए और भूमि-बैंकों का कंट्रोल हासिल करना पसंद करूंगा। इन धंधों से आया पैसा मुरली के पास जाएगा जो उसे जायज़ मुखौटा पहनाएगा। अगले कुछ सालों में मैं अंडरवर्ल्ड के चीफ़ की जगह बिज़नेसमैन की तरह देखा जाऊंगा।”

राजू ने हामी भरी। “तुम पक्का दाऊद के लिए जगह छोड़ना चाहते हो? अब्दुल दादा को इससे कोई दिक़्क़त नहीं है?”

“हां,” अरबाज़ ने कहा। “ये उनका ही आइडिया है। सब चीज़ों का वक्त और जगह होती है और दादा इसे मुझसे बेहतर जानते हैं। अब सुनो, मैं चाहता हूं तुम इस छोटे से मसले को देख लो।”

“हमीद को?” राजू ने पूछा।

“तुमने कैसे जाना?” अरबाज़ ने पूछा।

“ख़बर है कि वो जल्दी ही बाहर आ रहा है,” राजू ने कंधे उचकाए। “तुम्हारा कोई आदमी आर्थर रोड में है?”

“कुछ यरवदा में हैं, दूसरे भायखला और नागपुर में हैं,” अरबाज़ ने जवाब दिया। “जब हमीद वहां गया तो उन्होंने हमारे आदमियों को वहां से हटा दिया था।”

“कैंटीनवाला शिव सेना का वफ़ादार है,” राजू ने कहा। “अगर तुम शिव सेना के लोकल शाखा प्रमुख के साथ अपने संबंध का फ़ायदा उठाकर पहचान कर सको तो काम बन सकता है।”

“मैं ये कर सकता हूं। जबसे अब्दुल दादा ने मुझसे कहा है, मैंने कई स्तरों पर संबंध बनाने शुरू कर दिए हैं, ख़ासकर केशव गाडगिल के साथ। अगर मैं कैंटीनवाले तक तुम्हारी पहुंच बनवा भी दूं तो जेल स्टाफ़ नज़र तो फेर लेगा, लेकिन उस कॉक्रोच को कुचलने में हमारी मदद नहीं करेगा,” अरबाज़ ने कहा।

“तो हम कॉक्रोच को कुचलेंगे नहीं,” राजू ने कहा। “धुआं छोड़ने से ही बात बन जाएगी।”

“धुआं छोड़ने से?” अरबाज़ ने पूछा।

“हर्बल इलाज। कभी तिलपुष्पी का नाम सुना है?”



हमीद ने अपने कूपन गिने। इन साले कूपनों का इस्तेमाल जेल परिसर में बनी कैंटीन में ही हो सकता था। इनसे आप दूध, बिस्कुट, ब्रेड, मक्खन और सिगरेट ख़रीद सकते थे।

ये जगह साली गू है, हमीद ने सोचा। पाख़ाने के ऊंचे ढेर की वजह से टॉयलेट का इस्तेमाल लगभग खड़े रहकर करना होता था। उसे ग्यारह नंबर की बैरक में रखा गया था और वो मछलियों के कैन की तरह ठुंसी हुई थी। रात में क़ैदियों को तीन पैरेलल पंक्तियों में सोना पड़ता था, एक क़ैदी के पैर और दूसरे के सिर के बीच चार इंच की दूरी बनाकर। सुरक्षा कारणों से गार्ड लाइट कभी बंद नहीं करते थे। सोना नामुमकिन ही था। खाना तो भयानक ही था—आमतौर पर पनीली दाल, बेस्वाद सब्ज़ियां, चावल और चमड़े जैसी चपातियां—और उसे हमेशा ही अल्युमीनियम के गंदे कटोरों में परोसा जाता था। मैं क्या हूं, कुत्ता?

हमीद ने अपना बचा हुआ कूपन कैंटीनवाले को थमा दिया और बेसब्री से उससे चारमीनार सिगरेट ली। कैंटीन एक-एक सिगरेट ही बेचती थी। उसने बड़ी हसरत से कोने में लटकी रस्सी के सुलगते सिरे से सिगरेट जलाई, निकोटिन के नशे की उम्मीद में उसकी मूंछें फड़फड़ा रही थीं और हाथ कांप रहे थे।

ज़मीन पर गिरने से पहले उसने एक लंबी सांस ली, और धुएं को अपने फेफड़ों में भरने दिया।

पोस्टमॉर्टम में पता लगा कि उसने जड़ी-बूटी के एक कम उम्र के सदाबहार पौधे फ़ॉक्सग्लव का धुआं सांस के साथ खींच लिया था। पश्चिम में इसे डिजिटलिस कहते हैं लेकिन भारतीय युगों से इसे तिलपुष्पी के नाम से जानते हैं।



जब धरती और आकाश बन रही थी, उन दो सालों के दौरान बहुत कुछ हो गया था।

1977 ने इंदिरा गांधी को सत्ता से बाहर जाते और जनता पार्टी को सत्ता में आते देखा। मोरारजी देसाई ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली थी। भारत की ‘अशिक्षित’ जनता ने दिखा दिया था कि पथभ्रष्ट सरकारों को समझदारी से दंडित करने के लिए वो अपने मत का इस्तेमाल कर सकती है।

कॉरपोरेट दुनिया में, नए उद्योग मंत्री जॉर्ज फ़र्नांडीज़ ने कोकाकोला और आईबीएम से भारत छोड़ने के लिए कहा। इस बीच, धीरूभाई अंबानी नाम के व्यक्ति द्वारा स्थापित रिलायंस टैक्सटाइल्स इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड नाम की एक नई कंपनी ने पूंजी बाज़ार में आईपीओ उतारे। धीरूभाई ब्रांड ‘विमल’ के मालिक के रूप में पहले ही काफ़ी मशहूर हो चुके थे और ये इश्यु सात गुणा ओवरसब्सक्राइब हुए। इस इश्यु के महत्वपूर्ण सब्सक्राइबर्स में से एक धंधा होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड नाम की

कंपनी थी।

रिलायंस के आईपीओ के चार महीने बाद, एक कम ज्ञात कंपनी ब्रेड इंवेस्टमेंट्स, ब्रेड 'बी.रवि एंड आई.डागा' का संक्षिप्तीकरण था, ने भी ख़ामोशी से ख़ुद को बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में दर्ज करवा दिया। इश्यु बस दोगुना ओवरसब्सक्राइब हुए। इश्यु का मुख्य सब्सक्राइबर धंधा होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड थी।

अगले साल, 1978 में अमरीकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर भारत आए थे। माइक्रोफ़ोन ने अनजाने में ही उनकी आवाज़ पकड़कर उनके उबाऊ भाषणों को दिलचस्प बना दिया था। अपने सहायक अधिकारियों से धीमे से ये कहने से पहले वो माइक्रोफ़ोन बंद करना भूल गए थे कि परमाणु महत्वाकांक्षाओं के लिए भारत को "उदासीन और रूखा संदेश" दिया जाना चाहिए। इसने शायद विदेश मंत्री, अटल बिहारी वाजपेयी नाम के चौवन वर्षीय व्यक्ति, को अपने शाम के पैग पर जी खोलकर हंसने का मौक़ा थमा दिया होगा।

उससे भी अहम, धरती और आकाश ज़बरदस्त हिट रही। बुरी मार्केटिंग और बेजान समीक्षाओं की वजह से पहले दो हफ़्तों में तो इसका कलेक्शन बेकार ही रहा। मगर तीसरे हफ़्ते से दर्शक बढ़ना शुरू हो गए। इसकी वजह मुख्य रूप से ज़बानी सकारात्मक तारीफ़ थी। एक गाना रिलीज़ करने से फ़िल्म को बल मिला और फ़िल्म को जल्दी ही ब्लॉकबस्टर कहा जाने लगा। ये सिनेमाघरों में सौ हफ़्ते से ज़्यादा चली। फ़िल्म की सफलता के साथ परोमिता भी रातोरात स्टार बन गई। इसलिए अंडरवर्ल्ड के साथ आपराधिक रूप से जुड़े एक मुस्लिम आदमी के साथ होने जा रही उसकी भावी कोर्ट मैरिज भारत की सबसे चटख़ारे भरी ख़बर बन गई थी।

अरबाज़ और परोमिता दोनों ने तय किया था कि वो अपनी-अपनी मज़हबी पहचान बनाए रखेंगे। इसलिए शादी करने का सबसे आसान तरीक़ा अदालती शादी था।

"तुम समझती हो न कि मेरी दुनिया काली और गंदी है?" अरबाज़ ने पूछा।

"शायद मैं कुछ रोशनी ले आऊं?" परोमिता ने जवाब दिया। वो अरबाज़ की साख के बारे में जानती थी। जैसे ही उसका नाम लिया जाता तो लोग बेसाख़्ता "ओह!" कह उठते। लहजा हमेशा ही डर और आतंक भरा होता था।

दिसंबर 1978 के एक ठंडे, हवाओं भरे दिन, अरबाज़ और परोमिता अब्दुल दादा की उधार दी मर्सिडीज़ बेंज़ कार से निकले और ओल्ड कस्टम्स हाउस में चले गए, जो उस जगह से महज़ थूकने भर की दूरी पर था जहां से अरबाज़ की कहानी शुरू हुई थी।

शादी को पूरा करने के लिए तीन गवाहों की ज़रूरत थी। अब्दुल दादा, शबाना और अविजीत ने ये काम किया। दूल्हा-दुल्हन ने अपने शादी के प्रमाणपत्र पर दस्तख़त किए और विवाह अधिकारी के सामने शपथ पढ़ी। "अब आप विशेष विवाह अधिनियम 1954 के तहत पति-पत्नी हैं," उसने उन्हें सूचित किया। अरबाज़ और परोमिता ने एक-दूसरे के गले में गुलाब के फूलों की मालाएं पहनाईं और विवाह संपन्न हो गया। वहां मौजूद सभी लोगों को कोल्ड ड्रिंक्स—थम्स अप नाम की एक नई ज़्यादा फ़िज़ वाली कोला—और कैडबरी चॉकलेट दी गईं। फिर वो अदालत से बाहर निकले।

अगले दिन के अख़बारों के लिए बेहतरीन शॉट लेने की गरज़ से सैकड़ों फ़ोटोग्राफ़र उन पर झपट पड़े। फिर वो जल्दी से कार में बैठे और बांद्रा में नए खुले सी रॉक होटल के सुइट की ओर चल दिए। सी रॉक में शाम को एक शानदार विवाह भोज का आयोजन किया गया था क्योंकि बॉलीवुड के ज़्यादातर लोग उसी इलाक़े में रहते थे।

रिसेप्शन शुरू होने से ठीक पहले, अब्दुल दादा ने अरबाज़ के हाथ में एक बंद लिफ़ाफ़ा रख दिया। "मेरी ओर से शादी का तोहफ़ा,"उसने सरल भाव से कहा।

अरबाज़ से मिलने आया दूसरा शख़्स शिव सेना का केशव गाडगिल था। "बालासाहेब ने अपनी शुभकामनाएं भेजी हैं। किसी पारिवारिक कार्य की वजह से वो आ नहीं पाए। वो आप दोनों के लंबे और सुखी वैवाहिक जीवन की कामना करते हैं।"

रिसेप्शन स्थल को फूलों से सजाया गया था। "मुझे फूल बहुत पसंद हैं," परोमिता ने बॉलरूम में चारों ओर देखते हुए कहा।

"फिर तो तुम्हें अंतिम संस्कार भी पसंद होंगे," अरबाज़ ने चुहल की। "वहां भी बहुत सारे फूल होते हैं।"

परोमिता ने उसकी इस ढिठाई पर उसे चपतियाने का नाटक किया। "शादी और अंतिम संस्कारों में बहुत बड़ा फ़र्क़ होता है," उसने कहा।

"क्या?" अरबाज़ ने पूछा।

"अपनी शादी में आप अपनी पसंद के फूल चुन सकते हैं," उसने चंचलता से कहा।

अगले दिन नवविवाहित हनीमून के लिए स्विट्ज़रलैंड—आमतौर पर ज़्यादातर बॉलीवुड फ़िल्मों में इसे श्वीट-ज़र-लैंड बोलते हैं—के विमान पर सवार हो गए थे।

जंबो 747 के फ़र्स्ट क्लास मुसाफ़िरों के लिए बने अपर डैक लाउंज में बैठे हुए अचानक अरबाज़ ने पूछा, "तुमसे कुछ कहूं?"

"ज़रूर," परोमिता ने कहा।

"मैंने तुम्हारे जैसी प्यारी मुस्कान कभी नहीं देखी," उसने सरगोशी से कहा।

परोमिता जड़ हो गई, और अरविंद का ध्यान आते ही अपराधबोध की एक लहर उसे भिगो गई।



अरविंद ने अपने सामने रखे अख़बार को देखा। सुर्ख़ी थी "परोमिता विवाह-सूत्र में बंधी"। साथ में अदालत से निकलती परोमिता और उसके पति की तस्वीर थी, नवविवाहितों के रूप में वो बहुत खुश दिख रहे थे।

ये अभी भी ख़ूबसूरत है, अरविंद ने सोचा।

अरविंद उदास हो गया। फिर उसे गुस्सा आने लगा। वास्तव में, वो समझ नहीं पा

रहा था कि उसे कैसा लग रहा है। उसने फिर से उसके पति की तस्वीर को देखा। चेहरा पहचाना सा लगा। उसने फ़ोटोग्राफ़ के नीचे दी हुई रिपोर्ट को पढ़ा।

बंबई में कल इस वर्ष का विवाह संपन्न हुआ। धरती और आकाश की मुख्य अभिनेत्री परोमिता बनर्जी बंबई के बिज़नेसमैन अरबाज़ शेख़ के साथ विवाह-सूत्र में बंध गईं। कई माह से शहर में उनके रोमांस की चर्चा थी लेकिन विवाह की अचानक हुई घोषणा ने सबको हैरान कर दिया। दंपती को आशीर्वाद देने के लिए बंबई का ख़तरनाक डॉन अब्दुल रहीम मौजूद था। अंदरूनी स्रोतों ने बताया है कि अरबाज़ शेख़ के अब्दुल का उत्तराधिकारी बनने की संभावना है हालांकि हाल ही में दाऊद इब्राहीम के ऊपर उठने से इन योजनाओं में बाधा पड़ सकती है। यहां ये याद दिलाना होगा कि कुछ वर्ष पहले हत्या के आरोपों में अरबाज़ शेख़ को गिरफ़्तार किया गया था जिन्हें अंततः ख़ारिज कर दिया गया था।

अरविंद ने अपने दिमाग़ को खंगाला। अरबाज़ शेख़, ये नाम उसने कहां सुना है? उसने ये नाम सुना भर नहीं था, बल्कि इस शख़्स को देखा भी था, इसका चेहरा बहुत पहचाना सा था।

फिर उसे बंबई से हैदराबाद की अपनी फ़्लाइट याद हो आई।



ब्रीच कैंडी अस्पताल के इंटेंसिव केयर यूनिट की खिड़कियां अरब सागर की ओर खुलती थीं मगर कोई मरीज़ अपने बेड से नज़ारों का आनंद नहीं ले सकता था। आईसीयू के अंदर, एक लोहे के बड पर अब्दुल दादा लेटा हुआ था। उसकी ग़ज़ल गायिका रखैल बाहर आईसीयू की लॉबी में बैठी थी। उसकी बीवी को उसकी हालत के बारे में ख़बर कर दी गई थी और बज़ाहिर उसने कहा था, "मैं उसे देखने अस्पताल नहीं आऊंगी। मैं दफ़्न का इंतज़ार करूंगी।"

ख़बर मिलते ही अपने महीने भर के हनीमून को छोटा करके एक हफ़्ते पहले ही, अरबाज़ और परोमिता को जो पहली फ़्लाइट मिली, वो उससे आ पहुंचे थे।

अरबाज़ की ग़ैरमौजूदगी में बीता महीना अब्दुल दादा के लिए बहुत मसरूफ़ियत भरा रहा था क्योंकि बुज़ुर्ग को अब उस नौजवान के बिना काम करने की आदत नहीं रही थी। उसकी परेशानियों में इज़ाफ़ा करते हुए भारतीय रिज़र्व बैंक ने 1,000, 5,000 और 10,000 करेंसी नोटों को बंद करने का फ़ैसला कर लिया था। ये ग़ैर-हिसाबी धन के प्रचलन को रोकने के नज़रिए से किया जा रहा था। इन नोटों को रखने वाले लोगों को बैंकों में जाकर धन के स्रोत को बताकर उन्हें बदलवाना था। अब्दुल दादा के कामों के लिए ये साफ़ तौर पर मुश्किल था। मुरली सक्रिय हुआ और उसने दादा के लिए भारी मात्रा में सोना और चांदी ख़रीद ली, इस तरह वक़्ती तौर पर उसकी मुश्किल हल हो गई थी। दादा अपने ऑफ़िस में बैठा अप्रयुक्त नोटों की सिगरेटें बना-बनाकर पीता रहा।

बदक़िस्मती से, इस तनाव ने—और शायद करेंसी सिगरेटों के धुएं ने—अब्दुल दादा को दिल का दौरा दे दिया। उसे फ़टाफ़ट एंबुलैंस में अस्पताल ले जाया गया जहां उस पर कॉरोनरी बाइपास सर्जरी नाम की एक नई प्रक्रिया की गई। उसका ऑपरेशन कर

रहा सर्जन वही था, जिसने तीन साल पहले भारत में इस इलाज की शुरुआत की थी।

“कैसे हैं वो?” अरबाज़ ने फ़िक्र करते हुए पूछा।

सर्जन ने क्लिपबोर्ड को देखा। फिर उसने बड़ी सावधानी से अपने शब्दों को तोला। “मरीज़ों में ऑपरेशन के बाद एट्रियल फिब्रिलिएशन सबसे आम प्रतिकूल प्रभाव होता है। हमें अगले पांच दिन उन्हें बहुत ध्यान से ऑब्ज़र्व करना होगा।”

परोमिता को घर भेजने के बाद वो रात अरबाज़ ने अस्पताल में ही आईसीयू की लॉबी की तकलीफ़देह कुर्सी पर गुड़ीमुड़ी होकर गुज़ारी। अगली सुबह राउंड पर आए सर्जन को उसने पकड़ा।

“वो कैसे हैं?” उसने पूछा, उसकी फ़िक्र बढ़ती जा रही थी।

“उनके गुर्दे एकदम बेकार हो गए हैं और इसलिए हमें उन्हें डायलिसिस मशीन पर रखना पड़ा है। हम उन पर बारीकी से निगाह रखे हुए हैं।”

अरबाज़ घर गया, नहाया और मां के ज़बरदस्ती लंच करवाने के बाद वापस अस्पताल आ गया, जो अस्थायी रूप से परोमिता के घर रहने आ गई थीं। एक और रात उसने तकलीफ़देह कुर्सी पर काटी, मगर अगली सुबह जैसे ही डॉक्टर राउंड पर आया वो एकदम चुस्ती से खड़ा हो गया।

“वो कैसे हैं?” अरबाज़ ने पूछा।

“हमें अस्पताल से हुआ इंफ़ेक्शन दिख रहा है जो कि पांच में से एक कार्डियक सर्जरी के मरीज़ को अक्सर हो जाता है। फ़िलहाल तो हम बस ऑब्ज़र्व ही कर सकते हैं।”

अरबाज़ वहीं रहा। मुरली और राजू विभिन्न मसलों पर रिपोर्ट देने आए थे। नीचे मौजूद स्नैक कार्ट पर वो साथ बैठे चाय पी रहे थे। अरबाज़ ने डॉक्टर को अपनी ओर आते देखा। अरबाज़ ने अपना कप रखा और उसकी ओर लपक गया।

“कैसे हैं वो?” अरबाज़ ने पूछा।

“बदक़िस्मती से वो गुज़र गए हैं,” डॉक्टर ने कहा।

“क्या आप अभी भी उन्हें ऑब्ज़र्वेशन में रखने का सोच रहे हैं?” अरबाज़ ने गुस्से से पूछा, उसके गालों पर आंसू बह रहे थे,वो उस आदमी के लिए शोक कर रहा था जिसने उसे बाप का प्यार दिया था।



बंबई शुरू में मच्छरों से भरी दलदलों से विभक्त सात टापू थे। ये क्षेत्र मूलत: अशोक के मौर्य साम्राज्य का हिस्सा था मगर 1343 में टापुओं को गुजरात के सुल्तान ने जीत लिया। दो सौ साल बाद पुर्तगालियों ने टापुओं पर क़ब्ज़ा कर लिया और वहां एक ट्रेडिंग सैंटर स्थापित किया। वो उस क्षेत्र को बॉम बहिया—यानी ‘अच्छी खाड़ी’ कहते थे।

बॉम बहिया रेशम, मलमल, चावल, सूती कपड़ा, छपाई का कपड़ा, गोमेद और तंबाकू के कारोबार के साथ धीरे-धीरे बढ़ता रहा। 1661 तक, बॉम बहिया में एक बड़ा सा गोदाम, एक चर्च और एक शिपयार्ड बन गया था। वहां रहने वाले समृद्ध व्यापारियों के घर और बंगले भी दिखने लगे थे। उसी साल, इंग्लैंड के राजा चार्ल्स द्वितीय ने ब्रैगेंज़ा की कैथरीन से शादी कर ली। कैथरीन के परिवार ने बॉम बहिया अंग्रेज़ राजा को दहेज में दे दिया जिसे मच्छरों से भरे दलदलों पर शासन करने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसने जल्दी ही इन द्वीपों को ईस्ट इंडिया कंपनी को प्रतिवर्ष दस पाउंड स्वर्ण के किराएपर दे दिया। अंग्रेज़ों ने द्वीपों को बॉम्बे कहा।

बंबई गहरे पानी का बंदरगाह था और वहां बड़े-बड़े जहाज़ रुक सकते थे। तो ईस्ट इंडिया कंपनी वहां एक क़िला, जहाज़ी घाट, गोदाम और कस्टम हाउस बनाने में लग गई, इसके अलावा उसने वहां सुरक्षा के लिए पंद्रह सौ सैनिकों की सेना भी रख दी। इसके बाद पक्की सड़कों, चर्च, अस्पताल, और टकसाल की बारी आई। 1675 तक, बंबई की आबादी साठ ह्ज़ार हो गई, और ईस्ट इंडिया कंपनी ने उसे अपना भारतीय मुख्यालय बना लिया था। मुग़ल सेना के एक हमले के बाद कंपनी ने मालाबार तटीय क्षेत्र पर गश्त करने के लिए एक बेड़ा बनाया, जिसे बॉम्बे मैरीन कहा गया।

नतीजा ये हुआ कि सभी क़िस्म के लोग—सुनार, जुलाहे, लोहार, व्यापारी, जहाज़ निर्माता और साहूकार—शहर में आ गए। इंजीनियरिंग के बड़े-बड़े प्रोजेक्ट लिए गए और 1854 तक दलदलों को भर दिए जाने से सातों द्वीप मिलकर एक बड़ा द्वीप बन गए थे। 1853 में शहर में पहली रेलवे लाइन आई, बंबई से थाणे तक और एक साल बाद पहली सूत मिल लगाई गई।

सूत मिल के लिए श्रमिक चाहिए थे, तो श्रमिक देश के विभिन्न हिस्सों से आए। उनमें से एक मुहम्मद रहीम था। 1903 में कई बच्चों को छोड़कर वो मृत्यु को प्राप्त हुआ। उनमें से एक आज़म रहीम था जो आज़ादी मिलने से एक साल पहले 1946 में हैज़े से मरने से पहले तक छुटभैये चोर के रूप में फला-फूला। आज़म ने कभी शादी नहीं की मगर एक वेश्या से उसका एक नाजायज़ बेटा था। उसका नाम अब्दुल रहीम था, लेकिन बाद में सबने उसे अब्दुल दादा के नाम से जाना।

अब्दुल दादा ने ज़ीनत नाम की एक औरत से शादी की थी। उसके गर्भ में उसका एक बेटा और एक बेटी ठहरे थे। बेटा तो गर्भ में ही मर गया, और बेटी प्रसव के दौरान गर्भनाल से दम घुटने से मर गई। कड़वाहट और दुख से भरी ज़ीनत तन्हा ज़िंदगी गुज़ारने लगी जो तब और भी तन्हा हो गई जब अब्दुल दादा ने अपनी रखैल के लिए उसे छोड़ दिया।

1978 में हुई उसकी मौत एक युग का अंत था।



अरबाज़ ने वो बंद लिफ़ाफ़ा खोलने की ज़हमत ही नहीं की थी जो अब्दुल दादा ने उसे दिया था, लेकिन उसके गुज़रने ने उसे मजबूर कर दिया। उसके अंदर गोदरेज टाइपराइटर पर टाइप किया गया एक सादा दो पन्ने का क़ानूनी दस्तावेज़ था। ये

दादा की वसीयत थी।

मैं, अब्दुल रहीम, उम्र इक्यासी साल, एक मुसलमान बालिग़ और हिल रोड, बांद्रा, बंबई *400050* पर रहने वाला भारतीय निवासी, इसके द्वारा अपनी सभी पिछली वसीयतों, वसीयतनामों के परवर्ती उत्तराधिकार पत्रों और इच्छापत्र की प्रकृति के आलेखों को वापस लेता हूं और घोषणा करता हूं कि ये मेरी अंतिम वसीयत और इच्छापत्र है।

1. मैं अपने विश्वासपात्र साथी, अरबाज़ शेख़, को इस वसीयत का प्रबंधक नियुक्त करता हूं।

2. मेरी इच्छा है कि मेरी मृत्यु के बाद मेरे स्वामित्व वाले डोंगरी के मकान के मेरे सभी अधिकार, स्वत्वाधिकार, हित और उससे जुड़े अधिकार और लाभ, जिनमें स्वामित्व के आधार पर उक्त आवास का प्रयोग करने और रहने का अधिकार शामिल हैं, मेरी पत्नी बेगम ज़ीनत रहीम को हस्तांतरित होंगे और वसीयत द्वारा उन्हें प्राप्त होंगे।

3. मेरी इच्छा है कि मेरी मत्यु के बाद मेरे स्वामित्व वाले बांद्रा के मकान के मेरे सभी अधिकार, स्वत्वाधिकार, हित और उससे जुड़े अधिकार और लाभ, जिनमें स्वामित्व के आधार पर उक्त आवास का प्रयोग करने और रहने का अधिकार शामिल हैं, मेरी प्रिय साथी अंजुम आज़ाद को हस्तांतरित होंगे और वसीयत द्वारा उन्हें प्राप्त होंगे।

4. धंधा होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड का मैं एकमात्र शेयरधारक हूं और उक्त कंपनी के सभी *1000* शेयर मेरे पास हैं। मेरी इच्छा है कि मेरी मृत्यु के बाद इस कंपनी के मेरे सभी शेयर और उनसे जुड़े अधिकार और लाभ, मेरे उस बेटे को जो कभी नहीं हुआ, मेरे विश्वासपात्र साथी, अरबाज़ शेख़, को हस्तांतरित होंगे और वसीयत द्वारा उन्हें प्राप्त होंगे।

5. करों समेत मेरे वैध ऋणों और दायित्वों को पूरा करने के बाद यदि और कोई संपत्ति शेष रहती है तो वो भी अरबाज़ शेख़ को हस्तांतरित होगी और वसीयत द्वारा उन्हें प्राप्त होगी। इसके साक्ष्य में, मैं, उक्त अब्दुल रहीम, बंबई में आज *21* दिसंबर,

1978 को इस दस्तावेज़ पर दस्तख़त करता हूं।

उसने वसीयत पर उसी दिन दस्तख़त किए थे जिस दिन अरबाज़ की शादी हुई थी। जब अरबाज़ को अहसास हुआ कि उसने अपने दूसरे पिता को भी खो दिया है तो वो बेआवाज़ रोने लगा।



आधे से ज़्यादा टाइम्स ऑफ इंडिया बीती रात षण्मुखानंद हॉल में हुए भव्य आयोजन की तस्वीरों से भरा पड़ा था। मुख्य रिपोर्ट में लिखा था:

कल षण्मुखानंद हॉल में *26*वें फ़िल्मफ़ेयर अवार्ड का आयोजन हुआ। राज खोसला की मैं तुलसी तेरे आंगन की को वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म माना गया। अमिताभ बच्चन ने डॉन में अपने डबल रोल के लिए लगातार दूसरी बार सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार पाया। सत्यजीत रे ने शतरंज के खिलाड़ी के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का अपना एकमात्र पुरस्कार जीता। परोमिता बनर्जी ने धरती और आकाश में अपनी भूमिका के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का पुरस्कार प्राप्त किया। परोमिता और उनके पति अरबाज़ शेख़ दोनों को कार्यक्रम में देखा गया...

ओऽम त्रयम्बकं यजामहे

सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं।

सन् 817, कन्नौज

उर्वारुकमिव बन्धनान्।

मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

“परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर, नागावलोक!”

दरबार के घोषक ने अपनी सामान्य गूंजती हुई आवाज़ में पदवियों का ऐलान किया जबकि राजा नागभट्ट द्वितीय कूबड़ का हल्का सा भी आभास दिए बग़ैर अपने सिंहासन की ओर बढ़ रहे थे। ये विडंबना ही थी कि नागभट्ट की राजधानी को कुबड़ी लड़कियों की नगरी के दुर्भाग्यपूर्ण विशेषण से जाना जाता था।

दंतकथा के अनुसार, ग़ुस्से से भरे एक ऋषि ने नगर के शासक की सौ बेटियों को शाप दे दिया था और उन्हें कुबड़ा बना दिया था। तभी से, शहर को कन्याकुब्ज या कुबड़ी लड़कियों का नगर कहा जाता है। आगे चलकर ये अपने इस विशेषण के छोटे रूप—कन्नौज—नाम से जाना जाने लगा।

राजसूय यज्ञ चल रहा था। पिछले वर्ष में की गई आनुष्ठानिक बलियों की श्रृंखला राजा द्वारा दिव्य शक्तियों को ग्रहण करने के साथ समाप्त हुई थी। पुरोहित राजा की तुलना इंद्र और प्रजापति से करते हुए मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे, और राजा ने सिंह की खाल पर तीन पग भरे। इन तीन पगों के प्रताप से राजा अब विष्णु का अवतार हो गए थे, जिनके तीन पगों ने पृथ्वी और स्वर्ग को नाप लिया था। ब्राह्मणों ने अंतिम ऋचा का उच्चारण किया:

इन्हें प्रबल शक्तियों से अभिषिक्त कर दिया गया है

अब ये आपके जैसे बन गए हैं

और आपको इनकी रक्षा करनी होगी।

राजा बैठ गए और अपने दरबारियों को देखकर मुस्कुराए। ये आत्मविश्वास से भरी मुस्कान थी, एक विजेता की मुस्कान। पिछले साल, उन्होंने चक्रयुद्ध से कन्नौज को हासिल किया था जो पाल शासकों से प्राप्त संरक्षण के बावजूद उनकी सेना के सामने धराशायी हो गया था।

“आज मैं शिव के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूंगा जिनके आशीर्वाद ने प्रतिहार राज्य को समृद्ध बनाया है,” राजा ने कहना शुरू किया। “लगभग एक शताब्दी पहले हमारे प्रिय सोमनाथ मंदिर को सिंध के दुष्ट अरब प्रांतपाल जुनैद ने नष्ट कर दिया था। वो पापकर्म अभी भी मेरे जीवन के प्रति दिन मुझे सताता है। अपने संपूर्ण वैभव के साथ शिव के आवास का पुनरोद्धार करना मेरी सर्वोच्च प्राथमिकता होगी!”

“परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर, नागावलोक!” सारा दरबार एक सुर में कह उठा।

“प्रभु के लिए बहुमूल्य भेंट उपलब्ध करवानी होंगी,” नागभट्ट ने आगे कहा। “ये घोषणा करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है कि इस मंदिर के निर्माण और देखरेख के लिए दस हज़ार गांवों का राजस्व उपलब्ध करवाया जाएगा। प्रभु की सेवा में एक हज़ार ब्राह्मण नियुक्त किए जाएंगे और पांच सौ कन्याएं उनके आनंद के लिए गाएंगी और नृत्य करेंगी। ये सुनिश्चित करने के लिए कि कोई व्यक्ति इसे आसानी से नष्ट न कर सके, मैंने राजकीय वास्तुशिल्पियों से कहा है कि इस दिव्य भवन को लाल

बलुआ पत्थर से बनाएं।"

"महाराज की जय हो!" राजा अपने निजी कक्ष की ओर जाने लगे तो दरबारियों ने जय-जयकार की, छत्रधारिणी और चंवर झुलाती दासियां उनके पीछे चल रही थीं।

अपने निजी बैठक कक्ष के एकांत में राजा ने अपनी प्रिय परियोजना पर चर्चा जारी रखी, लेकिन सभी सेवकों को वहां से भेजने के बाद ही। अब कक्ष में केवल दो ही लोग और थे। पहले नागभट्ट के विश्वासपात्र कुलगुरु ऋषि गर्ग थे। ऋषि गर्ग की गोद में एक पोथी रखी हुई थी जिसे बहुत सावधानीपूर्वक एक वस्त्र में लपेटा गया था जिस पर मत्स्य की आकृति बनी हुई थी।

दूसरे व्यक्ति युवराज रामभद्र थे।

"पुत्र," नागभट्ट ने कहना शुरू किया। "शिल्पकारों ने मुझे बताया है कि वो टीक के छप्पन स्तंभों का निर्माण करेंगे। ये सभी बहुमूल्य धातुओं और रत्नों से जड़ित होंगे। हमें रत्नजड़ित प्रकाशदीप चाहिए होंगे। ब्राह्मणों को पूजा के लिए जगाने को दो सौ मांस वज़न की सोने की घंटियों की ज़ंजीर की आवश्यकता होगी। धार्मिक आयोजनों के लिए सोने की मूर्तियों और रत्नजड़ित भारी पात्रों की आवश्यकता होगी।"

"आप ये सब मुझे क्यों बता रहे हैं, पिताजी?" राजकुमार रामभद्र ने पूछा।

"क्योंकि संभव है ये परियोजना मेरे जीवनकाल में पूरी न हो पाए," पिता ने उत्तर दिया। "अगर मेरी मृत्यु हो जाए तो इसे पूरा करवाने का दायित्व तुम्हारा होगा।"

ऋषि गर्ग की ओर मुड़कर राजा ने कहा, "हम बहुत कठिन दौर में जी रहे हैं, गुरुश्रेष्ठ। इन दिनों आंध्र, सिंधु, विदर्भ और कलिंग के राजा मेरे साथ संबंध स्थापित करने के प्रयास में लगे हुए हैं। क्यों? क्योंकि वो मुझे एक महत्वपूर्ण मित्र के रूप में देखते हैं। किंतु राजनीति में न कोई स्थायी मित्र होता है और न शत्रु। आप तो उन लोगों में से हैं जो जानते हैं कि मैंने यहां तक पहुंचने के लिए कितना संघर्ष किया है।"

"आप चिंता क्यों करते हैं, राजन? अनरत्ता, मालवा, मत्स्यों, किराटों, तुरुशकों और वत्सों पर आपकी विजयों ने आपको ऐसी प्रतिष्ठा प्रदान की है जो अन्य किसी राजा के पास नहीं है," ऋषि ने अपनी राय दी।

"सच है, किंतु धर्मपाल को पराजित करने के लिए मुझे मित्रों की सहायता चाहिए," राजा ने उत्तर दिया। "हमारी दुनिया में, मित्रताएं सुविधा का गठबंधन होती हैं। परिस्थितियां बदलती हैं तो मित्रताएं शत्रुता में बदल जाती हैं। ये तो बस दैवी कृपा है जो हमारी निरंतर सफलता को सुनिश्चित करती है।"

ऋषि गर्ग ने हामी भरी। राजा सही कह रहे थे। उन्हें पता था कि बात किस दिशा में जा रही है।

"मुझसे वादा करें कि सोमनाथ के मेरे स्वप्न को साकार करने के लिए आप अपनी दिव्य शक्तियों का प्रयोग करेंगे," राजा ने कहा, जैसा कि अपेक्षित था।

“ये हो जाएगा, राजन,” गर्ग ने कहा, और सावधानीपूर्वक अपनी गोद में रखी लाल पोथी को कसकर पकड़ लिया और मन ही मन उच्चारण करने लगे:

स्वेदन... मर्दन... मूर्च्छन... उत्थापन... पतन... रोधन... नियमन...संदीपन...

अपने मस्तिष्क में इन शब्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए गर्ग ने अपनी आंखें बंद कर लीं।

गगनग्रास... कारण... गर्भद्रुति... बाह्यद्रुति... जारण... रंजन... सारण...क्रमण... वेधन... भक्षण।

पुस्तक चार
1980–1990

अब्दुल दादा की मौत के एक हफ़्ते बाद अरबाज़ बांद्रा हाउस से—जिसे दादा ने वसीयत में अपनी रखैल के नाम कर दिया था—बैलार्ड एस्टेट की नई बिल्डिंग में चला गया। मुरली ने इसकी सिफ़ारिश की थी। इससे अरबाज़ को सम्मान का चोला मिल जाता। "सारी पुरानी और इज़्ज़तदार मल्टीनेशनल कंपनियों के ऑफ़िस अभी भी वहां हैं," मुरली ने कहा था।

वो पुरानी बिल्डिंग, क्रेसेंट हाउस, बिकाऊ थी जिसे कभी राजू और अरबाज़ अपना चोरी का माल रखने और बाहर निकालने के लिए इस्तेमाल करते थे। अरबाज़ ने तुरंत उसे ख़रीद लिया और उसकी एक मंज़िल को बड़े से ऑफ़िस में तब्दील कर दिया। ज़िंदगी अपना चक्कर पूरा करती है, पहले दिन उस नवीनीकरण की गई बिल्डिंग में क़दम रखते हुए उसने सोचा था।

दादा की रखैल अंजुम आज़ाद से अरबाज़ ने बस एक चीज़ की गुज़ारिश की थी, वो थी दादा की कुर्सी। उस पर बैठने से उसे उस बुज़ुर्ग की रूह से नज़दीकी का अहसास होता था। वो इसे समझा नहीं सकता था। अंजुम ने बहुत ख़ुशी से वो दे दी। अरबाज़ ने नए फ़र्नीचर और इंटीरियर के साथ उस कुर्सी को रखा था जिसने उसके कार्यस्थल को मज़बूती और संजीदगी का पुट दे दिया था।

हालांकि ऑफ़िस की जगह और इंटीरियर बदल गया था, मगर उसके अंदर होने वाला काम नहीं बदला था। अपने उस्ताद की तरह ही अरबाज़ हमेशा अपने दफ़्तर में उन लोगों का स्वागत करने को तत्पर रहता था जो मुश्किल में होते थे। वो बड़े सब्र से उनकी बात सुनता, ख़ुद ही फ़ैसला करता कि उस व्यक्ति के केस को उसकी मदद चाहिए या नहीं और फिर फ़टाफ़ट ज़रूरी कार्रवाई करता।

आज उसके सामने जो व्यक्ति बैठा था, वो था यश धर।

यश की कहानी भी दिलचस्प थी। कश्मीर के एक पंडित परिवार में जन्मे यश ने श्रीनगर के टिंडेल बिस्को स्कूल में शिक्षा पाई और फिर दिल्ली के सेंट स्टीफ़ंस में इकोनॉमिक्स पढ़ा, साथ ही डेल्ही फ़्लाइंग क्लब से विमान उड़ाना सीखा था। ग्रेजुएशन के बाद उसने इंडियन एयरलाइंस में पाइलट के तौर पर भी कई साल काम किया। फिर एक दिन उसके सीने में दर्द हुआ। उसकी जांच करने वाले डॉक्टर ने बताया कि उसे एंजाइना पैक्टोरिस है। बदक़िस्मती से, एंजाइना पैक्टोरिस ऐसी बीमारी थी जिसने उसे पाइलट बनने के अयोग्य कर दिया। उस दिन उसका फ़्लाइंग कैरियर ज़मीन पर आ गिरा।

यश का दूसरा शौक़ बस अख़बार पढ़ना था। वो ख़बरों का नशेड़ी था, जो हाथ लगता उसे चाट जाता। सेंट स्टीफ़ंस के एक दोस्त ने उसे हिंदुस्तान टाइम्स में नौकरी दिला दी थी और दो साल के अंदर वो ऐसे लेख लिख रहा था जो अख़बार के उसके बॉसों द्वारा सराहे जा रहे थे। एक साल बाद उसे बंबई में एक नए लांच हुए टेबलॉयड मिड-डे से ज़बरदस्त प्रस्ताव मिला। उसने नौकरी बदल ली और अपनी पत्नी और नन्हे बेटे के साथ बंबई चला आया।

यश ग़ज़ब का खोजी पत्रकार साबित हुआ। परेशानी ये थी कि कोई भी खोजी पत्रकार लोगों को नाराज़ किए ना अपना काम कर ही नहीं सकता। राज्य की जेलों

में तेईस विचाराधीन क़ैदियों की मौत की जांच करते हुए उसने मुख्यमंत्री के साथ-साथ पुलिस कमिश्नर को भी चिढ़ा दिया था।

दबाव डालने के तरीक़े परिष्कृत ढंग से शुरू हुए थे। अचानक उसके मकानमालिक ने तय किया कि वो अब उसे अपना फ़्लैट किराए पर नहीं दे सकता। जिस स्कूल में उसके बच्चे का दाख़िला लगभग हो गया था, उसने तय किया कि उनके पास बहुत ज़्यादा आवेदक हैं और वो बची हुई सीट नहीं दे सकते। यश आगे बढ़ता रहा।

फिर दबाव थोड़ा कम परिष्कृत हो गया। जब वो अपने दफ़्तर के लिए निकलता तो हमेशा उसका पीछा होता। पीछा करने वाला शख़्स खुद को छिपाने की कोशिश भी नहीं करता था। राज्य की मशीनरी अगर किसी के पीछे पड़ना चाहे तो उसके हाथ बहुत लंबे होते हैं।

फिर एक दिन उसके और उसकी पत्नी शैला के पास फ़ोन आने लगे जिनमें फ़ोन करने वाला कुछ बोलता नहीं था। इसके बजाय, वो मुहम्मद रफ़ी के गानों का कैसेट लगा देता था। ये बड़ी कुटिलता भरी धमकी थी कि यश जल्दी ही मारा जाएगा, रफ़ी की तरह जिनकी कुछ महीने पहले ही मृत्यु हुई थी।

“मुझे आपकी मदद चाहिए, सर,” यश ने कहा, वो अरबाज़ की मेज़ के सामने रखी आगंतुकों की कुर्सी पर बैठा था।

“मुश्किल ये है कि उन्हें नाराज़ किए बिना हमारे पास ये पता लगाने का कोई ज़रिया नहीं है कि इसके पीछे कौन है,” अरबाज़ ने कहा। “ये तो फ़्रिज की लाइट की तरह है।”

“हह?”

“जब फ़्रिज का दरवाज़ा बंद होता है तो क्या लाइट जली रहती है? ये पता करने का तरीक़ा बस दरवाज़े को खोलना है, उस स्थिति में दरवाज़ा बंद नहीं रहेगा,” अरबाज़ ने कहा।

“तो मुझे क्या करना चाहिए?” यश ने पूछा।

“पहले मैं आपसे एक सवाल पूछूंगा: आप मेरे पास क्यों आए हैं? आप तो खोजी पत्रकार हैं। साफ़ है कि आप जानते होंगे मैं कौन हूं और क्या करता हूं।”

“आपका नाम मुझे अंजुम ने सुझाया था,” यश ने जवाब दिया।

“अंजुम आज़ाद? अब्दुल दादा की रखैल?” अरबाज़ ने पूछा।

“हां, वो कश्मीर की हैं और हमारे परिवार एक दूसरे से परिचित हैं,” यश ने जवाब दिया। “पिछले हफ़्ते जब मैं उनसे मिला था, तो उन्होंने कहा कि बंबई में केवल एक ही इंसान है जो मेरी मदद कर सकता है और वो आप हैं।”

“मैं वर्तमान पुलिस कमिश्नर को जानता हूं,” अरबाज़ ने कहा। “उसका बेटा एक आर्ट स्टूडियो चलाता है जिसमें मैंने पैसा लगाया है। मैं उससे कह सकता हूं, अपने आदमी हटा ले। लेकिन…”

“लेकिन क्या?” यश ने पूछा।

“उनसे आदमी हटाने को कहना किसी वेश्या से ब्रह्मचर्य अपनाने को कहने जैसा है,” अरबाज़ ने कहा।

“फिर क्या हल है?” यश ने चिंतित होते हुए पूछा। “मेरी पत्नी कह रही हैं कि हम इस शहर से चले जाएं। मैं उन्हें दोष नहीं देता।”

“अगर आप पर दबाव डालने के लिए पुलिस कमिश्नर कुछ कर रहा है तो इसका मतलब है कि उसे मुख्यमंत्री से आदेश मिल रहा है। अब मुख्यमंत्री को ही ये समझाना होगा कि आपको परेशान न किया जाए।”

“क्या मुख्यमंत्री जनता की हिफ़ाज़त और सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध नहीं होता है?” यश ने नैतिकता भरे ग़ुस्से से पूछा।

“इस मुख्यमंत्री की इकलौती प्रतिबद्धता केवल मुख्यमंत्री के लिए है,” अरबाज़ ने जवाब दिया। “लेकिन शायद मेरे पास रास्ता है। इसका मतलब आपकी ओर से कुछ पैसा ख़र्च करना होगा।”

“बहुत, बहुत शुक्रिया,” यश ने कहा। “मैं इस अहसान को कभी नहीं भूलूंगा।”

“जानता हूं आप नहीं भूलेंगे,” अरबाज़ ने कहा। “मैं इस पैसे को निवेश के तौर पर ले रहा हूं।”



पहाड़गंज के खुले मैदान में लगा विशाल शामियाना सफ़ेदी का समंदर था। विशालकाय तंबू का कैनवस सफ़ेद था, वो गद्दे सफ़ेद थे जिन पर शिष्य बैठे थे, सभा में बैठे सब लोगों के कपड़े सफ़ेद थे।

“शुद्ध श्वेत प्रकाश,” अध्यापिका ज्योति माइक्रोफ़ोन पर कह रही थीं। “ब्रह्मांड केवल प्रकाश है। आप प्रकाश हैं। मैं प्रकाश हूं... और फिर भी हम अंधकार में जीते रहते हैं।”

जीवन प्रकाश बीसवीं सदी के मोड़ पर वाराणसी में अस्तित्व में आया था जब संस्थापक महाशिव बाबा को अनेक दिव्य दृष्टियों का अनुभव हुआ। उनकी दिव्य दृष्टियों ने ब्रह्मांड की प्रकृति, मनुष्य की आत्मा और ईश्वर के बारे में कुछ बहुत ही सरल से विचार उजागर किए। उन्होंने अपनी दिव्य दृष्टियों के बारे में अनुयायियों के एक अंतरंग गुट को बताया और इस तरह जीवन प्रकाश का जन्म हुआ। अनेक वर्षों तक जीवन प्रकाश एक बहुत ही संगठित समुदाय रहा जो अपना समय आध्यात्मिक अध्ययन, चिंतन, ध्यान और आत्मसुधार में लगाता था। लेकिन जैसे-जैसे अनुयायियों की संख्या बढ़ी, ये ऐसे कार्य भी हाथ में लेने लगा जिनसे मानवता की सहायता हो सकती थी। एक दशक के अंदर ही इसने अनेक विश्वविद्यालय, विद्यालय, अस्पताल, अनाथालय और धर्मशालाएं स्थापित कर दीं।

भारत और पाकिस्तान के विभाजन के बाद के वर्षों में, पाकिस्तान से भारत आने

वाले इंसानी समंदर को आश्रय देने के लिए जीवन प्रकाश ने अनेक सहायता शिविर चलाए, कुरुक्षेत्र के विशाल शिविर की तरह। महाशिव बाबा खुद शिविर का संचालन करते थे और सुनिश्चित करते थे कि हज़ारों शरणार्थियों को खाना-कपड़ा मिल सके।

कुरुक्षेत्र शिविर में, हज़ारों शरणार्थियों में से एक ने उनका ध्यान खींचा था। वो एक जवान औरत थी, परमीत नाम की। उन्होंने देखा था कि उसका ध्यान हमेशा दूसरों की मदद करने पर रहता था, हालांकि वो खुद भी एक शरणार्थी ही थी। महाशिव बाबा शरणार्थियों को शांति और साहस प्रदान करने के लिए हर शाम को कैंप में सत्संग किया करते थे और परमीत हमेशा वहां होती थी, ध्यान से उनकी बातें सुनती।

महाशिव बाबा के सभी वरिष्ठ शिष्यों को अध्यापक की पदवी प्राप्त थी। स्त्रियां अध्यापिकाएं कहलाती थीं। ये उनका दायित्व था कि मनुष्यों को सिखाएं कि वो किस तरह अंधकार से प्रकाश में आ सकते हैं। महाशिव बाबा ने जल्दी ही परमीत को 'अध्यापिका ज्योति' नाम दे दिया।

अध्यापिका ज्योति जीवन प्रकाश को अकल्पनीय ऊंचाइयों पर ले जाने वाली थीं। 1980 तक, जीवन प्रकाश के 103 देशों में एक हज़ार से ज़्यादा आश्रम बन चुके थे। अनुयायियों की संख्या का अनुमान साठ लाख से लेकर लगभग पांच करोड़ के बीच था। महाशिव बाबा जो अमर कहे जाते थे, उन्होंने प्रायश्चित के लिए हिमालय जाने का फ़ैसला लिया और सारे संगठन को अध्यापिका ज्योति के सक्षम हाथों में सौंप दिया।

पहाड़गंज सत्संग सबसे बड़ा था और इसमें देश भर से लोग आते थे। सामने की पंक्ति में अरविंद, उसकी पत्नी अभिलाषा और दोनों बेटे विनय और विनीत बैठे थे। खुद इससे शांति पाने के बाद सत्यपाल ने अरविंद से जीवन प्रकाश के सत्संग में शामिल होने का आग्रह किया था।

"आपको लगता है कि ईश्वर कोई व्यक्ति है जो हमारा निर्णय करने को बैठा है," अध्यापिका ज्योति कह रही थीं। "ये भ्रांति है। ईश्वर तो बस ऊर्जा है—विशुद्ध श्वेत प्रकाश। ये ऊर्जा असंख्य रूपों में स्वयं को प्रदर्शित करती है। हम प्रकाश से आते हैं और प्रकाश में ही लौट जाते हैं।"

मुझे इन आलतू-फालतू बातों से बख़्शो, अरविंद ने मन ही मन सोचा।

अरविंद ने शामियाने में चारों तरफ़ देखा। उस दिन इस विशाल शिविर में कम से कम ढाई लाख लोग तो होंगे ही, लेकिन जब अध्यापिका ज्योति बोल रही थीं तो इतनी ख़ामोशी थी कि सुई गिरने की आवाज़ भी सुनाई दे जाए। अरविंद अपने साथ शंकाओं का जो भी ज़खीरा लाया था, वो चमत्कारिक ढंग से उसके हाथों से निकलने लगा था। अध्यापिका ज्योति में कोई गहन आध्यात्मिक बात थी। वो आम साधु-संतों या साध्वियों जैसी नहीं थीं जिनसे आप मिलते रहते हैं। उनके आचरण और बातों की सादगी इंसान को उनकी ओर खींचती थी।

एक घंटे बाद, अध्यापिका ज्योति मंच के पीछे बने अपने साधारण से अस्थायी कमरे में चली गईं। एक शिष्य उनके लिए एक गिलास नीबू-पानी लेकर आया। अरविंद ने अपना सिर अंदर डाला। "आह, अंदर आ जाओ, अरविंद," उन्होंने कहा। अरविंद ने

जीवन प्रकाश को बहुत बड़ा दान दिया था और इसलिए वो इतनी बेतक़ल्लुफ़ी से उसे नाम से बुला रही थीं।

अरविंद अंदर आया, उसके पीछे-पीछे अभिलाषा आई, माता-पिता दोनों एक-एक बेटे को लिए हुए थे। अध्यापिका ज्योति माता-पिता को देखकर मुस्कुराईं और उन्होंने अपनी बांहें फैला दीं, संकेत देते हुए कि शिशुओं को उनके पास लाया जाए। उन्होंने दोनों बच्चों को अपनी बांहों में लिया और उनके कानों में बुदबुदाईं:

"ओऽम त्रयम्बकं यजामहे

सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बंधनान्

मृत्योर्मुक्षीय मामृतात।।"



अरबाज़ ने बीती शाम सरदार वल्लभभाई स्टेडियम में हैवीवेट बॉक्सर मुहम्मद अली को भूतपूर्व हैवीवेट चैंपियन जिमी एलिस से मुक़ाबला करते देखने में बिताई थी।

मुक़ाबले के बाद, एक मुंहज़ोर रिपोर्टर ने अली के बाएं हुक की कमज़ोरी पर सवाल किया। अली ने उस रिपोर्टर को चुनौती दी कि रिंग में उसके साथ आ जाए। उसने आगे कहा, "अपने उनचास मुक़ाबलों में मैंने बत्तीस विपक्षियों को नॉक आउट किया है और मुझे कोई ख़ास मार भी नहीं पड़ी। आप मेरा चेहरा देख रहे हैं? आपको कोई ज़ख़्म या विरूपता दिख रही है? ये साफ़-सुथरा दिख रहा है, है न? यही है; इसीलिए मैं सबसे महान हूं!"

अरबाज़ को ये पसंद आया।

"खाते में और पांच हज़ार रुपए जमा करो," मुरली ने फ़ोन पर कहा। वो विभिन्न लोगों से एक ही खाते में समान राशि जमा करवा रहा था।

"कुल कितना जमा हो गया है?" मुरली ने फ़ोन रखा तो अरबाज़ ने पूछा।

"उस आख़री निर्देश के समेत हम खाते में ढाई लाख डाल चुके हैं। पांच-पांच हज़ार के पचास डिपॉज़िट," मुरली ने जवाब दिया। "अगले एकाध घंटे में टेलेक्स मशीन पर मुझे पुष्टि मिल जाएगी।"

अरबाज़ ने मेज़ के दूसरी ओर बैठे यश धर को देखा। "तुमने वो ड्राफ़्ट टाइप कर लिया जो मैंने करने को कहा था?" उसने पूछा।

यश ने हामी भरी और एक काग़ज़ अरबाज़ की ओर बढ़ा दिया जिसने जल्दी से उसे पढ़ डाला।

शिक्षा मंत्रालय के विश्वस्त सूत्रों ने बताया है कि लगभग पचास छात्रों ने राज्य के इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेजों अपने दाख़िले को सुनिश्चित करने की दृष्टि से राज्य की कैबिनेट के एक वरिष्ठ मंत्री की पत्नी को रिश्वत दी है। ये अभी भी स्पष्ट नहीं है कि रिश्वत

किसने ली है लेकिन सूत्रों ने हमें बताया है कि इस रैकेट की कड़ी सरकार में बहुत उच्च विभागों से जुड़ी है।

"शाबाश," अरबाज़ ने कहा।

"क्या इसे छपवा दूं?" यश ने पूछा।

"जब तक गोली रिवॉल्वर में होती है तब तक ही उसकी अहमियत होती है," अरबाज़ ने जवाब दिया। "इसे छपवाने की कोई ज़रूरत नहीं है।"

मुरली की ओर मुड़कर उसने पूछा, "तुम्हें यक़ीन है ये उनका ही अकाउंट है?"

"मैंने यूनाइटेड फ़ेडरेशन बैंक के अपने आदमी से दोबारा पता किया था। ये यक़ीनन मुख्यमंत्री की पत्नी का ही बचत खाता है।"

"मुरली, बैंक मैनेजर से बैंक स्टेटमेंट की एक कॉपी लाओ," अरबाज़ ने कहा। "इसके बाद हम यश के ड्राफ़्ट लेख के साथ ही बैंक स्टेटमेंट भी मुख्यमंत्री को भेजेंगे।"

"फिर?" यश धर ने पूछा।

"तुम उनसे मिलने जाओगे।"

"फिर?" यश धर ने पूछा।

"तुम उनसे पूछोगे कि तुम्हारे लेख के संदर्भ में क्या उन्हें कोई टिप्पणी करनी है। इसे कहते हैं अली का नॉकआउट पंच।"



"मेरे पास कई महीनों से आपकी डेट्स के लिए फ़ोन आ रहे हैं," उसके सेक्रेटरी टी.के. ने कहा। धरती और आकाश की ज़बरदस्त कामयाबी के बाद परोमिता के पास सितारों पर मर-मिटने वाले प्रशंसकों के प्रेमपत्रों की बाढ़ आ गई थी। अपने पत्रों और फ़ोनों को संभालने के लिए फ़ुल-टाइम सेक्रेटरी रखने के अलावा उसके पास कोई चारा नहीं रहा था।

परोमिता ने उन महत्वपूर्ण पत्रों और पोस्टकार्डों पर नज़र डाली, जिन्हें उसने उसके लिए छांटा था। "हृषिकेश मुखर्जी को फ़िल्म में आपका लुक पसंद आया था। उन्होंने कहलवाया है कि वो अपनी अगली फ़िल्म में एक कैरेक्टर रोल के लिए आप पर विचार करना चाहेंगे," टी.के. ने कहा।

"हे भगवान, ये तो सपना सच होने जैसा है!" परोमिता ने उत्साह से कहा। "मैंने तो सारी ज़िंदगी इसी दिन का इंतज़ार किया है।"

"रमेश सिप्पी भी संपर्क में हैं। उनका ख़्याल है कि आप एक नई फ़िल्म के लिए बिल्कुल ठीक रहेंगी जिसमें शशि कपूर हैं," टी.के. ने कहा। "ये लीडिंग रोल तो नहीं है मगर मज़ाक़ में उड़ाने लायक़ भी नहीं है।"

“और कोई?” परोमिता ने पूछा।

“रवि चोपड़ा एक नई फ़िल्म की तैयारी कर रहे हैं जिसमें धर्मेंद्र और हेमा मालिनी को साइन किया जा चुका है। उन्हें कहानी में एक और औरत चाहिए। आप उनकी पहली पसंद हैं।”

“तुम्हें इन सबको मना करना होगा, टी.के.,” उसने कहा।

उस रात देर गए, अरबाज़ उसे सुपर क्लब में डिनर करवाने ले गया। फिर वो मैरीन ड्राइव पर स्टूडियो 29 की ओर गए। वो ‘केवल सदस्यों के लिए’ टाइप नाइटक्लब था और अरबाज़ इसके शुरुआती सदस्यों में से था।

स्टूडियो 29 ने बॉम्बे इंटरनेशनल होटल में वांडरर्स नाम के एक सैलून की जगह ली थी। महंगे साउंड उपकरण, लाइटनिंग, टर्नटेबल, एक बड़ी सी चमकती हुई डिस्को बॉल, और यहां तक कि डीजे को भी मालिक सबीरा मर्चेंट ने इंग्लैंड से इंपोर्ट करवाया था। सजावट में लाल दीवारें, जगमगाते परदे, वैल्वेट चढ़ी कुर्सियां और मार्लिन मुनरो के स्मृति चिह्न थे। बिलबोर्ड की हिट लिस्ट का डॉ. हुक का गाना ‘व्हैन यू आर इन लव विद ए ब्यूटीफ़ुल वुमैन’ ज़ोरों से बज रहा था।

डांस फ़्लोर पर अरबाज़ ने परोमिता को अपने नज़दीक खींच लिया। उस रात बंबई की कुछ बेहद ख़ूबसूरत औरतें वहां मौजूद थीं। अरबाज़ और परोमिता के पास ही मिस एशिया पैसिफ़िक 1976 की विजेता एना ब्रेडमेयर, और मिस इंडिया 1980 संगीता बिजलानी डांस कर रही थीं मगर अरबाज़ को कोई परवाह नहीं थी।यही एक औरत है जो हमेशा मुझे चाहिए होगी, संगीत पर थिरकते हुए अरबाज़ ने सोचा। यही एक औरत है जिसे मैं हमेशा प्यार करूंगा।

“मुझे ताज़ा हवा में जाना है,” परोमिता ने कहा। अरबाज़ झटपट उसे नाइटक्लब से बाहर ले गया। उन्होंने सड़क पार की और मैरीन ड्राइव के समुद्र से लिपटे फ़ुटपाथ पर टहलने लगे। अरबाज़ के बॉडीगार्ड विवेकपूर्ण दूरी रखकर पीछे आ रहे थे।

“क्या बात है, बेबी?” उसने पूछा। “कोई नई फ़िल्म का ऑफ़र है? तुम्हें फ़िक्र हो रही है कि अब जब हमारी शादी हो गई है तो उसे लो या नहीं? मुझे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा अगर तुम…”

“मैं प्रेग्नेंट हूं,” उसने कहा।



अरबाज़ ने सावधानी से पादरी को देखा। उन्होंने एक सफ़ेद चोग़ा पहना हुआ था जिससे उनके सफ़ेद बाल एकदम मैच कर रहे थे। काले लैदर के जूते शीशे की तरह चमक रहे थे। ये ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने ख़ुद को भली प्रकार संवारा था। उनका नाम था थॉमस वी.कोशी।

“मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं, फ़ादर?” अरबाज़ ने अब्दुल दादा की कुर्सी पर आगे को झुकते हुए पूछा।

“जैसा कि शायद आप जानते हों, सेंट थॉमस कैथेड्रल 1781 में बनकर पूरा हुआ था,” पादरी ने कहा। “वास्तव में, चर्चगेट नाम ही उस चर्च की वजह से पड़ा है जो बंबई के क़िले के गेट पर है।”

“मुझे ये जानकारी नहीं थी,” अरबाज़ ने कहा, वो सोच रहा था कि पता नहीं ये सब कितनी देर चलने वाला है।

“पुलिस मदद नहीं कर पाई है और सब लोग कहते हैं कि केवल आप ही ऐसे शख़्स हैं जो कामों को अंजाम देते हैं,” कोशी ने कहा। “इसीलिए मैं आपके पास आया हूं हालांकि चर्च इसके ख़िलाफ़ था।”

“पूरी बात बताएं, फ़ादर,” अरबाज़ ने गुज़ारिश की।

“चर्च की एक सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित वस्तु एक प्राचीन बाज़ का लैक्टर्न है,” पादरी ने कहा। “ये चर्च की सर्विस के दौरान पवित्र बाइबिल को रखने के लिए पीतल का बना एक विशिष्ट संबल है।”

“उसे क्या हुआ?” अरबाज़ ने पूछा।

“परसों पता लगा कि वो चर्च से ग़ायब है। हमने पुलिस को ख़बर दी लेकिन कुछ पता नहीं लगा। हमें चिंता है कि अगर ज़्यादा समय गुज़रा तो चोरों को बच निकलने का मौक़ा मिल जाएगा।”

“वो कितना भारी है?” अरबाज़ ने पूछा।

“क़रीब तीस किलो,” थॉमस कोशी ने कहा।

“मुझे तीस घंटे दें,” अरबाज़ ने कहा।

अरबाज़ ने थॉमस कोशी को विदा किया और राजू को फ़ोन किया। उसे फ़टाफ़ट सारी स्थिति समझाई।

“ये तीस किलो का है। इतनी भारी चीज़ को इतनी आसानी से नहीं ले जाया जा सकता। अंदर का काम लगता है,” राजू ने कहा।

“मैं सहमत हूं,” अरबाज़ ने कहा। “ये कमर्शियल इलाक़े की मसरूफ़ जगह है। दिन में तो इसे लेकर जाया नहीं जा सकता। अगर इसे रात में ले जाया गया है तो किसी चौकीदार की निगाह में आए बिना नहीं ले जाया जा सकता।”

“तुम मुझसे क्या करवाना चाहते हो?” राजू ने पूछा।

“रात की शिफ़्ट के चौकीदारों के बारे में जो भी पता करने लायक़ हो, वो पता करो। अगर उनमें से किसी को ड्रग, शराब, जुए या औरतों की लत है तो मुझे यक़ीन है कि हमारे लड़के जानते होंगे।”

एक घंटे बाद राजू वापस आया। “तुम सही कह रहे थे, बॉस,” राजू ने कहा। “एक चौकीदार है लोबो नाम का। हमारे मटका अड्डे के भारी क़र्ज़ में है।”

“उससे अच्छे से बात करना,” अरबाज़ ने कहा। “उससे कहना अगर वो लैक्टर्न

वापस रख दे तो हम उसका क़र्ज़ माफ़ कर देंगे। पुलिस या चर्च में उसका नाम सामने नहीं आएगा।"

"और अगर वो मना करे तो?" राजू ने पूछा।

"तो वो चर्च के अंदर ही किसी संगमरमर की क़ब्र में दफ़नाया जाना चुन सकता है," अरबाज़ ने कहा।

"तुम इस आदमी, थॉमस कोशी, की मदद करने को इतने उतावले क्यों हो?" राजू ने पूछा।

"ये मेरा फ़र्ज़ है," अरबाज़ ने कहा। "ये एक निवेश भी है जो पांच साल में फल देगा।"



"आपने सिरी फ़ोर्ट के बारे में सुना है?" सत्यपाल ने पूछा। वो ब्रेड इंवेस्टमेंट्स के कलकत्ता ऑफ़िस के शानदार कॉन्फ़्रेंस रूम में थे।

"तुम्हारा मतलब दिल्ली की वो दलदल?" अरविंद ने पूछा।

"वही," सत्यपाल ने कहा। "वो दलदल अगली सोने की खान हो सकती है।"

"क्या मतलब है तुम्हारा?" जॉयदीप ने पूछा।

"भारत वहां 1982 के एशियन गेम्स की मेज़बानी करेगा," सत्यपाल ने कहा।

"इन चीज़ों का ऐलान क्या कई साल पहले नहीं किया जाता है?" अरविंद ने पूछा।

"वास्तव में, भारत में एशियन गेम्स आयोजित करने का फ़ैसला तो 1976 में ही ले लिया गया था, मगर फिर इमर्जेंसी ख़त्म कर दी गई। जनता पार्टी सत्ता में आई। राजनीतिक अनिश्चितताओं ने कुछ काम नहीं होने दिया। इस साल मिसेज़ गांधी वापस सत्ता में आई हैं और मुझे बताया गया है कि काम पूरे ज़ोर-शोर से शुरू हो चुका है।"

जनता पार्टी का प्रयोग शुरू से ही दुर्भाग्यपूर्ण साबित हुआ। केवल एक ही चीज़ थी जिसने जनता के घटकों को एकजुट किया था—इंदिरा गांधी के लिए उनकी नफ़रत। संसद ने उन्हें एक हफ़्ते के लिए तिहाड़ में क़ैद रखा क्योंकि यही एक मुद्दा था जिस पर वास्तव में वो एकमत थे। ये बेवक़ूफ़ी भरा क़दम था। इससे उनका छोटापन ज़ाहिर हुआ। और इसने इंदिरा गांधी के लिए हमदर्दी हासिल की। बहुत ज़्यादा। हिंदुस्तान की जनता की।

अपने कार्यकाल के अट्ठाइसवें महीने के अंदर प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई का तख़्तापलट कर दिया गया, उनके बाद प्रधानमंत्री बने चौधरी चरण सिंह जिनका कार्यकाल छह महीने से भी कम रहा। सियासी कलह और उठापटक से तंग आकर हिंदुस्तानी आवाम ज़बरदस्त बहुमत से मिसेज़ गांधी को वापस ले आई। जनसंघ जो जनता पार्टी का एक घटक था, अंतत: भारतीय जनता पार्टी या बीजेपी के रूप में

पुनर्गठित हुआ।

गत वर्ष में पाकिस्तान ने अपने पूर्व प्रधानमंत्री ज़ुल्फ़िकार अली भुट्टो को फांसी देने का फ़ैसला किया था। कुछ पर्यवेक्षकों ने टिप्पणी की कि कम से कम मिसेज़ गांधी की अग्निपरीक्षा का प्रतिकार चुनाव के माध्यम से तो हो गया था। भुट्टो का तो वो भी नहीं हो सकता था।

"तो एशियन गेम्स आयोजित करवाने का ज़िम्मा किसके पास है?" अरविंद ने पूछा।

"संजय गांधी को ये संभालना था लेकिन उस विमान हादसे में उनकी मौत के बाद दिल्ली के लेफ़्टिनेंट-गवर्नर जगमोहन के साथ राजीव गांधी इसे देख रहे हैं।"

"सिरी फ़ोर्ट में क्या होगा?" अरविंद ने पूछा।

"जैसा कि आपको पता है, वो इलाक़ा भूला-बिसरा पड़ा जंगल है और मानसून के दौरान दलदली मैदान हो जाता है। एक नया सिरी फ़ोर्ट स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स बनाया जा रहा है। इसके पास ही एशियन गेम्स विलेज होगा। वहां जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम नाम से साठ हज़ार लोगों की क्षमता वाला एक विशाल स्टेडियम भी बनाया जा रहा है।"

"बहुत ख़ूब," अरविंद बड़बड़ाया।

"दिल्ली की शक्ल बदल जाएगी," सत्यपाल कह रहा था। "फ़्लाइओवर्स और सड़कें बनाई जा रही हैं और सरकार उन लोगों को मौक़े की जगह सैंक्शन कर रही है जो होटल बनाना चाहते हैं।"

"आह," अरविंद ने कहा, अब आख़िरकार समझ में आने लगा था कि सत्यपाल किस दिशा में जा रहा है।

"मैं जानता हूं कि ताज ग्रुप दिल्ली में एक दूसरा होटल बना सकता है," सत्यपाल ने कहा। "हयात और हॉलीडे इन भी प्लॉट के सर्वे कर रहे हैं।"

"तुम्हारे दिमाग़ में क्या है?" अरविंद ने पूछा।

"ये देखिए," सत्यपाल ने तीन दिन पुराने हिंदुस्तान टाइम्स की प्रति बढ़ाते हुए कहा। उसमें एक सरकारी विज्ञापन था। अरविंद ने ज़ोर से इसे पढ़ा।

नई दिल्ली में पांच सितारा होटलों के विकास, निर्माण और प्रबंधन के लिए रुचि की अभिव्यक्ति (ईओआई) का आमंत्रण। भारत सरकार को नई दिल्ली के महत्वपूर्ण स्थानों पर पांच सितारा होटलों के निर्माण का कार्य सौंपा गया है ताकि नवंबर *1982* में नई दिल्ली में आयोजित होने वाले एशियाई खेलों में और उसके बाद बढ़ने वाली पर्यटकों की मांग को पूरा किया जा सके। सरकार ऐसे होटल निर्माताओं की पहचान और उनकी नियुक्ति करने की प्रक्रिया शुरू करने का प्रस्ताव रख रही है जो प्रस्तावित परियोजनाओं की योजना बनाने, विस्तृत इंजीनियरिंग एवं डिजाइनिंग, वित्तप्रबंधन, निर्माण, मार्केटिंग, और संचालन एवं प्रबंधन का कार्य ले सकें। प्रत्येक स्थल और प्रस्तावित परियोजना के बारे में सूचना रुपए *100* के सामान्य शुल्क पर सचिवालय में उपलब्ध है। सभी ईओआई प्रविष्टियों का पहले आवेदकों की

वित्तीय और तकनीकी क्षमता के संदर्भ में मूल्यांकन किया जाएगा। सफल आवेदकों को पंजीकृत डाक द्वारा सूचित किया जाएगा और तत्पश्चात उन्हें मुहरबंद वाणिज्यिक निविदाएं जमा करनी होंगी। सूचीबद्ध कंपनियों के सिवा, ईओआई जमा किए जाने के बाद आवेदक या आवेदक कंपनी के स्वामित्व संरचना में किसी भी परिवर्तन की अनुमति नहीं दी जाएगी।

अरविंद ख़्यालों में गुम रहा।

"अरविंद?" जॉयदीप ने पूछा। "तुम्हारा क्या ख़्याल है?"

"मैं आख़री लाइन को देख रहा हूं," अरविंद ने कहा। "सूचीबद्ध कंपनियों के सिवा, ईओआई जमा किए जाने के बाद आवेदक या आवेदक कंपनी के स्वामित्व संरचना में किसी भी परिवर्तन की अनुमति नहीं दी जाएगी। इसका मतलब है कि हम लाइसेंस के लिए एप्लाई करने और इसे किसी और को बेच देने की स्थिति में नहीं होंगे। लाइसेंस और ज़मीन आवंटित होने के बाद हम कंपनी को भी बेच पाने में सक्षम नहीं होंगे।"

"मुझे तो लगता है कि हमें होटल के परमिटों का सौदा करने की जगह होटल बनाने के बारे में ही गंभीरता से सोचना चाहिए," जॉयदीप ने कहा।

"नहीं," अरविंद ने कहा। "याद रखो कि हमारा बिज़नेस चीज़ें ख़रीदना और बेचना नहीं बल्कि बिज़नेस ख़रीदना और बेचना है।"

"अगर होटल के परमिटों को बेचना नहीं चलेगा तो कोई कैसे अंदर घुसेगा और मुनाफ़ा कमाते हुए, मगर होटल चलाने के चक्कर में पड़े बिना, कैसे बाहर निकलेगा?" जॉयदीप ने पूछा।

"शायद मेरे पास एक आइडिया है," अरविंद ने कहा।



"मेरे लिए कोई ऐसी कंपनी ढूंढ़ो जो बिकाऊ हो और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हो," अरविंद ने अपने टोस्ट पर मनोयोग से मक्खन लगाते हुए बंबई के अपने पान मसाला चबाऊ चार्टर्ड अकाउंटेंट से कहा। जॉयदीप, अरविंद और चार्टर्ड अकाउंटेंट अलीपुर रोड के बागड़िया हाउस के दूर तक पसरे लॉन में थे। अभिलाषा ने उनके लिए लॉन में नाश्ता सर्व करने का इंतज़ाम कर दिया था।

"आप किस तरह की कंपनी लेने के बारे में सोच रहे हैं?" चार्टर्ड अकाउंटेंट ने अपने मुंह में कुचले पान मसाले के रसों का पान करते हुए पूछा। मसाला खाने के लिए उसने नाश्ते की क़ुर्बानी देना पसंद किया था। "कोई ख़ास सैक्टर या बिज़नेस?"

"ऐसी कोई पसंद नहीं है," अरविंद ने कहा। "बस एक निष्क्रिय कंपनी जिसके शेयर औने-पौने में मिल रहे हों... और कोई छिपी देनदारियां न हों।"

"सूचीबद्ध कंपनी का अधिग्रहण एक जटिल प्रक्रिया है," मिस्टर पान मसाला ने कहा। "इसके लिए शेयरहोल्डरों और प्रबंधन का अनुमोदन, और पूंजी निर्गम नियंत्रक द्वारा स्थापित नियमों का अनुपालन ज़रूरी है..."

"मेरा डाटा दिखाता है कि ऐसी कम से कम उन्नीस कंपनियां हैं जो बॉम्बे स्टॉक

एक्सचेंज पर सक्रिय कारोबार करती थीं, अब दस लाख रुपए से कम की क़ीमत पर उपलब्ध हैं," अरविंद ने कहा। "मुझे परवाह नहीं कि उनकी कोई आमदनी है या नहीं। वास्तव में, मैं तो ऐसी कंपनियां पसंद करूंगा जिनका कोई चालू बिज़नेस न हो। बेहतरीन होगा कि न कोई आयकर भुगतान देय हो, न छिपी हुई श्रमिक देनदारियां हों।"

"मैं फ़ौरन इस पर लगता हूं," पान मसाले ने उठते हुए कहा।

"तुम्हारा इरादा क्या है, अरविंद?" जब वो अकेले रह गए तो जॉयदीप ने पूछा। "हमारी कंपनी ब्रेड इंवेस्टमेंट्स तो पहले से ही बीएसई में सूचीबद्ध है। हम एक और कंपनी क्यों ले रहे हैं?"

"स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध होने में महीनों लगते हैं," अरविंद ने जवाब दिया। "हमारे पूंजी बाज़ार दो पुराने क़ानूनों-पूंजी निर्गम नियंत्रक अधिनियम, 1947 और प्रतिभूति संविदा विनियमन अधिनियम 1956 से संचालित होते हैं। महज़ सूचीबद्ध होने के लिए इतने झमेले करने की न तो मेरी इच्छा है न कोई इरादा।"

"लेकिन हमें कोई दूसरी सूचीबद्ध कंपनी चाहिए ही क्यों?" जॉयदीप ने पूछा।

"होटल के लिए ईओआई—रुचि की अभिव्यक्ति—जमा करने के लिए," अरविंद ने कहा।



"आह, ये तो अच्छी ख़बर है," अरविंद ने बंबई से आए फ़ोन पर कहा। "हम फ़ौरन कितने शेयर ख़रीद सकते हैं?"

उसने फ़ोन के दूसरे छोर से आती आवाज़ को सुना। ख़लल ख़राब कनेक्शन की वजह से नहीं था। वो तो दूसरे छोर पर ज़ोर-ज़ोर से पान मसाला चबाए जाने की आवाज़ थी।

"इससे हमें क़रीब सत्तर फ़ीसदी शेयर मिल जाएंगे? सही है, ग्यारह रुपए प्रति शेयर पर शेयर ख़रीद लो..."

अरविंद ने फिर सुना।

"तुम्हें मेरी ओर से शेयर ख़रीदने-बेचने के लिए पॉवर ऑफ़ अटॉर्नी चाहिए? मैं भेज दूंगा। मेरा एक आदमी इसे लेकर फ़्लाइट से बंबई आ जाएगा।"

दूसरे छोर पर कुछ और चबाया और कहा गया।

अरविंद ने आगे कहा। "हां, मैं पीओए को जितना मुमकिन होगा, जनरल रखूंगा ताकि तुम सभी मामलों में मेरी ओर से काम कर सको। शेयर ख़रीदने के लिए जो पैसा चाहिए, वो पहले ही क़र्ज़ के तौर पर तुम्हें भेज दिया गया है। प्लीज़ क़र्ज़ के राज़ीनामे पर दस्तख़त करके मुझे भेज देना।"

अरविंद ने रिसीवर रखा, और सत्यपाल और जॉयदीप को देखा। "रुचि की

अभिव्यक्ति पर काम कैसा चल रहा है?" उसने पूछा।

"काग़ज़ी काम तो पूरा हो गया है," सत्यपाल ने कहा। "मैं बस ये इंतज़ार कर रहा हूं कि आप मुझे कंपनी का नाम बता दें जिसमें हमें ये जमा करना है। एक बार अंडे की भुर्जी बन गई तो मैं उसे वापस अंडा नहीं बना पाऊंगा।"

इंटरकॉम बजा। अरविंद ने उठाया। "आपके लिए आपकी पत्नी का फ़ोन है, सर," हिल्डा ने कहा।

"उनसे कहो कि मैं मीटिंग में हूं और मैं उन्हें खुद फ़ोन कर लूंगा," अरविंद ने इंटरकॉम पर कहा। हिल्डा ने निर्देशों का पालन किया मगर उसे बुरा लगा। कितनी बार वो कुछ ऐसे बहाने गढ़ती जिससे अभिलाषा की तकलीफ़ कम हो पाती?

"अरविंद, छह बज चुके हैं। अभिलाषा चिंता कर रही होगी क्योंकि आज बच्चों का पांचवां जन्मदिन है," जॉयदीप ने कहा। "मुझे ये सुनिश्चित करना है कि तुम समय से घर पहुंच जाओ।"

"ये तो मेरे दिमाग़ से बिल्कुल ही निकल गया था," अरविंद बुदबुदाया। "मेरा एक काम करो, जॉयदीप। जन्मदिन के वो तोहफ़े ले लो जो हिल्डा ने गिफ़्ट रैप कर दिए हैं, और घर चले जाओ। उन्हें बच्चों को दे देना। मैं सत्यपाल के साथ फ़ोन निबटा लूं फिर जल्दी ही आता हूं।"

"और वो स्कूल के एडमीशन फ़ॉर्म?" जॉयदीप ने पूछा। जुड़वां बच्चों को जल्दी ही स्कूल शुरू करना होगा।

"मेरी ओर से उन्हें फ़ादर एंथोनी के ऑफ़िस में छोड़ देना," अरविंद ने कहा।

"मुझे बताया गया है कि ला मार्तिनियर में बहुत लंबी वेटिंग लिस्ट है," जॉयदीप ने कहा।

"वेटिंग लिस्ट तो मेरे लिए उसी दिन ग़ायब हो गई थी जब मैंने सर कैटचिक पॉल चैटर की भूमिका अख़्तियार की थी," अरविंद ने कहा।



बंबई के रियल एस्टेट ब्रोकर ने अरविंद बागड़िया के फ़ोन का तुरंत जवाब दिया। उसकी शोहरत उससे पहले पहुंच गई थी।

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं, बागड़िया जी?" ब्रोकर ने पूछा।

"मुझे ऑफ़िस के लिए एक छोटी सी जगह चाहिए," अरविंद ने कहा। "किराए पर।"

"कुछ बताएंगे किस लोकेलिटी में?" ब्रोकर ने पूछा।

"प्राइम कमर्शियल एरिया," अरविंद ने जवाब दिया। "नरीमन पॉइंट।"

"आजकल उस एरिया में किराया बहुत ज़्यादा चल रहा है, क़रीब दस रुपए प्रति

वर्ग फ़ुट," ब्रोकर ने कहा। "मेरे पास लगभग तीन हज़ार वर्ग फ़ुट का ऑफ़िस उपलब्ध है। उससे समुद्र का नज़ारा दिखता है।"

"कोई थोड़ा छोटा, प्लीज़," अरविंद ने कहा।

"एक और है, लेकिन वहां से झोपड़पट्टी दिखती है। वो कोई हज़ार वर्ग फ़ुट का है," ब्रोकर ने कहा।

"और छोटा, प्लीज़," अरविंद ने कहा।

"पांच सौ वर्ग फ़ुट। ऑफ़िस में कोई खिड़की नहीं है। मुझे पक्का नहीं पता कि वहां एयरकंडीशनिंग सिस्टम लगा हुआ है या नहीं," ब्रोकर ने कहा।

"थोड़ा और छोटा, प्लीज़," अरविंद ने फिर कहा।



"अब हमारे पास कितने शेयर हैं?" अरविंद ने पूछा।

"कंपनी के क़रीब 97 प्रतिशत," पान मसाले के आदी चार्टर्ड अकाउंटेंट ने कहा। "हम बक़ाया तीन प्रतिशत के शेयरधारकों को नहीं तलाश पा रहे।"

"इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता," अरविंद ने कहा। "ये इतना छोटा हिस्सा है कि इसकी फ़िक्र करना बेमानी है। मुझे उम्मीद है कि आपने अभी तक शेयर ट्रांसफ़र करने के फ़ॉर्म जमा नहीं किए होंगे?"

"नहीं। हम इसे एक ही लॉट में करेंगे। हमें फ़िक्र थी कि अगर शेयरों में अचानक बहुत ज़्यादा दिलचस्पी दिखाई देगी तो शेयरों की क़ीमत बढ़ने लगेंगी।"

"अच्छा है," अरविंद ने कहा। "अब मैं चाहता हूं कि आप रजिस्टर्ड ऑफ़िस और नाम में बदलाव के लिए एप्लाई करें।"

"नया रजिस्टर्ड ऑफ़िस क्या होगा?" चार्टर्ड अकाउंटेंट ने पूछा।

"मैंने नरीमन पॉइंट में एक छोटी सी सौ वर्ग फ़ुट की जगह किराए पर ली है," अरविंद ने कहा।

"सौ वर्ग फ़ुट?" चार्टर्ड अकाउंटेंट ने पूछा। "ये तो कुछ ज़्यादा ही छोटा है न?"

"हम सामान्य से दोगुना किराया दे रहे हैं लेकिन फिर भी ये हमें मार्जिनल क़ीमत पर बहुत सम्मानजनक पता दे रहा है," अरविंद ने कहा।

"और नया नाम क्या होगा?" चार्टर्ड अकाउंटेंट ने पूछा।

"क़ुर्बानी होटल्स लिमिटेड," अरविंद ने जवाब दिया। उसने पिछले हफ़्ते ही फ़िरोज़ ख़ान की फ़िल्म क़ुर्बानी देखी थी और नाज़िया हसन नाम की नौजवान गायिका का गाया गाना 'आप जैसा कोई मेरी ज़िंदगी में आए' अभी तक लगातार उसके दिमाग़ में बज रहा था।

“क़ुर्बानी ही क्यों?” जॉयदीप ने पूछा।

“‘क़ुर्बानी’ का मतलब होता है ‘बलिदान’,” अरविंद ने रहस्यमय ढंग से कहा। विषय बदलते हुए उसने कहा, “जॉयदीप, मैं चाहता हूं कि तुम ये पता लगाओ कि पिछले साल कौन से सीनियर मैनेजमेंट एक्ज़ीक्यूटिव नौकरी से रिटायर हुए हैं।”

“किस शहर में?” जॉयदीप ने पूछा।

“बंबई, दिल्ली, कलकत्ता और मद्रास में,” अरविंद ने जवाब दिया। “केवल ऐसे लोगों को देखना जो बहुत बड़ी कंपनियों में शीर्ष पदों पर रहे हों लेकिन अब इतने उम्रदराज़ हों कि कहीं ठीक नौकरी न पा सकें—साठ के दशक के मध्य के या सत्तर के शुरू में।”

“और कुछ?”

“वो ऐसे लोग होने चाहिएं जिन्होंने पब्लिक सैक्टर कंपनियों में काम किया हो, बहुत बड़ी और नौकरशाही वाली।”

“और?”

“वो सामाजिक रूप से जुड़े हों… ऐसे लोग जो लंच, कॉकटेल, डिनर और शादियों में जाते हों।”

“ज़रूर,” जॉयदीप ने कहा। “और कोई मानदंड?”

“हां,” अरविंद ने कहा। “उन सबकी थोड़ी सी दाग़दार छवि हो। उस तरह के लोग जो अतिरिक्त आमदनी के लिए कुछ ग़लत-क़िस्म-के-सौदों में लिप्त रहे हों।”

“इस मुद्दे पर, अरविंद…” जॉयदीप ने हिचकिचाते हुए कहना शुरू किया।

“हां?” अरविंद ने पूछा।

“मुझे नहीं लगता कि हम यहां जो करने की कोशिश कर रहे हैं, उसे लेकर मैं बहुत खुश हूं,” जॉयदीप ने अपनी बात रखी। “ये अनैतिक मालूम देता है।”

“बिज़नेस में कुछ नैतिक नहीं होता,” अरविंद ने कहा।

“लेकिन मैं अपनी आत्मा बेदाग़ रखना चाहता हूं,” जॉयदीप ने कहा।

“जॉयदीप,” अरविंद ने कहा। “बेदाग़ आत्मा वाला व्यापारी विरोधाभास है।”



अरविंद ने अपने सामने रखी अंतिम सूची को देखा। सूची में चार नाम थे।

1. मि. जगदीप अरोड़ा, 71, स्टील अथॉरिटी ऑफ़ इंडिया, दिल्ली से अवकाश प्राप्त

2. मि. अनुराग सेन, 65, स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया, कलकत्ता से अवकाश प्राप्त

3. मि. वेंकट रामास्वामी, 69, कोल इंडिया लिमिटेड, मद्रास से अवकाश प्राप्त

4. मि. संतोष परुलेकर, 66, जीवन बीमा निगम, बंबई से अवकाश प्राप्त

“तुमने इन चारों से संपर्क किया?” अरविंद ने पूछा।

“हां,“ जॉयदीप ने जवाब दिया। “एक एजेंसी के जरिए किया था ताकि मुझे उनसे सीधे बात न करनी पड़े।”

“बहुत बढ़िया। उन चारों ने डाइरेक्टर्स के तौर पर काम करने की सहमति दे दी?”

“हां। ज़्यादातर तो खुश थे कि उन्हें अपनी बढ़ती उम्र के बावजूद पैसा कमाने का मौक़ा मिल रहा है,” जॉयदीप ने कहा। “दो को कुछ हैरानी थी कि किसी ने डाइरेक्टर्स के रूप में कार्य करने के लिए उनसे संपर्क किया।”

“बहुत खूब,” अरविंद ने कहा। “सत्यपाल, अब तुम क़ुर्बानी होटल्स लिमिटेड के नाम से हमारी रुचि की अभिव्यक्ति जमा कर सकते हो। “बोली कब लगेगी?”

“दो हफ़्ते में,” सत्यपाल ने कहा। “आप कितनी बोली लगाना चाहते हैं?”

“कुछ भी नहीं,” अरविंद ने कहा।



जॉयदीप ने कमरे में नज़र दौड़ाई जब तक कि उसने अनुराग सेन को नहीं देख लिया। वो अपनी बताई गई उम्र पैंसठ से ज़्यादा के लग रहे थे। वो परंपरागत बिज़नेस सूट पहने हुए थे और वेटर से अपनी व्हिस्की में सोडा और पानी का मिक्सचर मिलवा रहे थे। ये पांच सितारा होटल की सामान्य क़िस्म की कॉकटेल पार्टी थी जहां घंटे भर में आप किसी अजनबी के बारे में इतना कुछ जान सकते हैं जितना आपके जीवनसाथी पूरी ज़िंदगी में नहीं जान सकते।

जॉयदीप उनके पास गया और बोला, “देख रहा हूं आप मेरे जैसे ही हैं, सर। आपको भी अपनी व्हिस्की में सोडा और पानी का मिक्सचर पसंद है।”

बुज़ुर्ग ने जॉयदीप को देखा और अपनी आंखें सिकोड़ीं मानो उसे पहचानने की कोशिश कर रहे हों। “हम कभी नहीं मिले, मैं जॉयदीप चक्रवर्ती हूं,” जॉयदीप ने हाथ बढ़ाते हुए कहा।

अनुराग सेन ने नौजवान से हाथ मिलाए। “अनुराग सेन,” उन्होंने अपना परिचय दिया।

“आप वो अनुराग सेन तो नहीं हैं न?” जॉयदीप ने उत्साह से कहा। “वही जो स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया में थे?”

सेन के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई। स्पष्ट था कि किसी ने कभी ‘वो अनुराग सेन’ कहकर उनका हवाला नहीं दिया था।

“आपका सेवक हूं,” सेन अपनी व्हिस्की का पहला घूंट भरते हुए लगभग झुक गए थे।

“पहले तो मेरी बधाई स्वीकार करें, सर,” जॉयदीप ने कहा।

“बधाई?”

“आप जानते हैं मेरा क्या मतलब है,” जॉयदीप ने बुज़ुर्ग को आंख मारते हुए कहा।

“अरर, कुछ याद दिलाओ, बेटे,” सेन ने कहा।

“आह, समझा। शायद डाइरेक्टर्स को इस बारे में बोलना नहीं है। इसे राज़ रखना है, अह? इस बात को उठाने के लिए माफ़ी चाहूंगा,” जॉयदीप ने दुखदायी होना जारी रखते हुए कहा। अरविंद की ट्रेनिंग बोल रही थी।

सेन और भी ज़्यादा हैरान दिख रहे थे।

“आप मेरी ओर से मुतमईन रहें, सर, कि क़ुर्बानी की बोली—पहले ही—आपके पक्ष में मुड़ जाने की ख़बर राज़ ही रहेगी। मैं किसी के आगे एक शब्द नहीं कहूंगा,” जॉयदीप ने कहा।

“मुझे आप पर विश्वास नहीं है,” सेन ने धीमे से कहा।

“सबको किसी न किसी चीज़ पर विश्वास करना ही होता है,” जॉयदीप ने ड्रिंक्स की ट्रे लेकर जा रहे एक वेटर को बुलाते हुए कहा। “मुझे विश्वास है कि मैं एक और ड्रिंक लेना चाहूंगा।”



जॉयदीप ने तीसरी घंटी पर फ़ोन उठाया। बंबई से अरविंद फ़ोन कर रहा था।

“तुम उससे मिले?” अरविंद ने पूछा।

“बिल्कुल,” जॉयदीप ने फ़ख़्र से कहा। “बिल्कुल उसी तरह किया जैसा तुमने मुझसे करने को कहा था।”

“बहुत ख़ूब। तब तो मैं पान मसाले से 10,000 शेयर बाज़ार में बिक्री के लिए उतारने को कहूंगा,” अरविंद ने कहा। “हमने ग्यारह रुपए में ख़रीदे थे। मेरे ख़्याल से पंद्रह रुपए ठीक रहेंगे। बाज़ार में ये संकेत भेजने के लिए काफ़ी हैं कि कुछ हो रहा है।”

“और कोई निर्देश?” जॉयदीप ने पूछा।

“हां, सत्यपाल से जगदीप अरोड़ा से मिलने को कहो। तुम मद्रास जाओ और उस कांपते मूर्ख वेंकट रामास्वामी से मिलने का कोई तरीक़ा निकालो।”



अरविंद गोल्फ़र्स के एक ग्रुप को विलिंगडन क्लब के अठारह-होल वाले गोल्फ़ कोर्स के सत्रहवें होल को टैकल करते देख रहा था। वो संतोष परुलेकर को अपने दोस्त को मशवरा देते सुन सकता था। “अगर पारंपरिक तरीक़े से खेला जाए तो इस होल को

बनाना बहुत आसान है। तुमने देखा था, डॉगलैग पर, फ़ेयरवे महत्वपूर्ण ढंग से बाईं ओर मुड़ता है और फिर सीधा हो जाता है?"

उनके मित्र ने हामी भरी और दूर देखा।

"देखो, दोस्त, ये होल हॉप, स्टैप और जंप होल की तरह खेलना बेहतरीन होगा। एक आसान 220 गज़ का ड्राइव, 150 गज़ का मिड आयन और घास में एक और छोटा सा वैज।"

उनका दोस्त ये उम्मीद करता सा लग रहा था कि संतोष परुलेकर चुप हो जाएंगे और उसे शॉट खेलने देंगे मगर परुलेकर कहते रहे, "टी की चुनौती ये है कि बाएं से बचकर फ़ेयरवे में रहा जाए। टी का ड्रॉ तो बेहतरीन है। फ़ेयरवे का रफ़ मोटा और सख़्त है और निकलने के लिए बहुत मुश्किल है।"

उनके दोस्त ने शॉट लगा दिया, शायद परुलेकर को चुप करने के लिए।

अरविंद जल्दी से टीरूम की ओर चल दिया। उसे पता था कि ग्रुप आख़िरकार वहीं आएगा। उसने अपने लिए एक फ़्रेश लाइम सोडा मंगवाया और इंतज़ार करने लगा। कोई बीस मिनट बाद वो आदमी अंदर आए।

अरविंद सामान्य तरह से एक ख़त पढ़ने का नाटक करता रहा। उन व्यक्तियों ने अपने लिए चाय और सैंडविच मंगवाए।

"धत!" अरविंद ने इतनी ज़ोर से कहा कि वो आदमी सुन लें। उसे नज़रअंदाज़ कर दिया गया।

"साला!" अरविंद ने कहा और अपने सामने मेज़ पर ख़त को मारा और अपनी ड्रिंक गिरा दी। आंख की कोर से उसने देख लिया था कि परुलेकर उसे देख रहा है। वो उठा और उसने उन लोगों से माफ़ी मांगी।

"मैं माफ़ी चाहता हूं, मुझे अपनी भावनाओं पर लगाम रखना सीखना चाहिए, सर," अरविंद ने विनम्रता से कहा।

"बात क्या है, बेटे?" परुलेकर ने पूछा। "तुम परेशान लगते हो।"

"अपनी परेशानियों से मुझे आपको परेशान नहीं करना चाहिए, सर," अरविंद ने कहा। "ये एकदम ग़ैरपेशेवराना है।"

"नहीं, नहीं, नहीं..." परुलेकर ने कहा। "आओ, हमारे साथ बैठो। बैठो।" अरविंद ने एक कुर्सी उनकी मेज़ की ओर खींच ली और बैठ गया।

"क्या मामला है?" परुलेकर ने पुछा। "रोमांटिक चक्कर है?"

"अरे नहीं, सर। बिज़नेस।"

"बताना चाहोगे?" परुलेकर ने पूछा।

"मेरा नाम अरविंद बागड़िया है," अरविंद ने कहा। "मेरी ब्रेड इंवेस्टमेंट्स नाम की कंपनी है।"

“अरे हां, सुना है इसके बारे में,” परुलेकर ने कहा। “तुमसे मिलकर अच्छा लगा, नौजवान। मैं संतोष परुलेकर हूं।”

“वही संतोष परुलेकर? जो जीवन बीमा निगम में थे?”

परुलेकर फ़ौरन फूलकर कुप्पा हो गया। “हां, मैं एलआईसी में था तो...”

“आपसे मुलाक़ात होना तो कमाल है, सर,” अरविंद ने उत्साह से कहा। “बात बस ये है कि एक बिज़नेस डील जिस पर मैं लगा हुआ था, नाकाम हो गई है।”

“किस तरह की डील?” परुलेकर ने पूछा।

अरविंद साज़िशी अंदाज़ में परुलेकर के नज़दीक खिसका और फुसफुसाकर बोला, “मेरी कंपनी दिल्ली के एशियन गेम्स में एक होटल प्रोजेक्ट लेने के लिए बोली लगाने वाली थी...”

“और?” परुलेकर ने पूछा।

“बोली से पहले ही हमें मात दे दी गई है। क़ुर्बानी नाम की एक अनजान कंपनी ने उसे अपने पक्ष में फ़िक्स कर लिया है।”

अरविंद ने देखा कि नाम सुनते ही परुलेकर के चेहरे पर पहचान का भाव उभर आया था।

“प्लीज़ किसी को बताइएगा मत,” अरविंद ने कहा। “क़ुर्बानी तो पैसा कमाएगी लेकिन मेरे शेयरों की क़ीमत गिर जाएगी।”



शाम को जॉयदीप ने अरविंद को फ़ोन किया। “कैसा रहा?” अरविंद ने पूछा।

“परफ़ेक्ट,” जॉयदीप ने कहा। “वेंकट रामास्वामी को ब्रिज खेलना पसंद है। मैंने उनके साप्ताहिक गेम में उनसे मिलने का जुगाड़ बैठा लिया।”

“हम्म। मैं आज परुलेकर से मिला था। मुझे लगता है अब शेयरों का एक और हिस्सा निकाल देने का समय आ गया है।”

“तुम अब तक कितने बेच चुके हो?” जॉयदीप ने पूछा।

“केवल दस फ़ीसदी। लेकिन वो तो बस काम शुरू करवाने के लिए था। मेरे ख़्याल से हम अब बीस फ़ीसदी शेयर बाज़ार में ला सकते हैं। बीस रुपए ठीक भाव सुनाई देता है?”



“तुम जगदीप अरोड़ा से मिले थे?” अरविंद ने पूछा।

“हां, वो दिल्ली से चंडीगढ़ की ट्रेन पर थे। मैं भी चढ़ गया,” सत्यपाल ने जवाब

दिया।

"क्या रहा?" अरविंद ने पूछा।

"जैसे ही मैंने क़ुर्बानी का नाम लिया और ये बताया कि ऐसा लगता है मूल्यांकनों के पहले राउंड में यही एक कंपनी निकल पाएगी, तो उनके हाथ से तो बेंत ही फिसल गया," सत्यपाल ने कहा।

अरविंद हंस पड़ा।



"मेरे पास तो पचास में लेने वाले भी हैं," पान मसाला ने अरविंद से कहा।

"एक-तिहाई शेयर और बेच दो मगर बाक़ी रोककर रखना," अरविंद ने कहा।

"क्यों?" पान मसाले ने सवाल किया। "मुझे तो शक है कि इस बेकार कंपनी के लिए आपको कुछ ज़्यादा मिल पाएगा।"

"मैं जोखिम लूंगा," अरविंद ने कहा।



अरविंद ने ओल्ड लेडी ऑफ़ बोरी बंदर के दफ़्तरों में क़दम रखा। टाइम्स ऑफ इंडिया बंबई का सबसे ज़्यादा पढ़ा जाने वाला अख़बार था। भगवान, चाय और टाइम्स ऑफ इंडिया बंबई की सुबह की त्रिमूर्ति थी—सुबह की पूजा, उसके बाद चाय और ख़बरों की ख़ुराक।

चमड़े का एक पाउच और साथ में दो भूरे मनीला लिफ़ाफ़े अपनी बग़ल में दबाए अरविंद लोगों और टाइपराइटरों की टक-टक से भरे दफ़्तरों की भूलभुलैया से गुज़रता गया। आख़िरकार वो टी.आर. गणेशन के कोने के दफ़्तर पर पहुंच गया।

अपनी खोजी क़ाबिलियत के लिए मशहूर गणेशन ने अनेक पैनी दृष्टि वाली रिपोर्टें दी थीं जो अक्सर विज्ञापनों, तस्वीरों और न्यूज़वायर के अक्षरश: लेखों से भरे नीरस आम अख़बारी आहार के साथ आती थीं। गणेशन को ऐसी जानकारी में कभी दिलचस्पी नहीं होती थी जिसे सामान्य तरीक़े से पाया जा सकता था। उसकी दिलचस्पी ऐसी जानकारी में होती थी जिसके बारे में कोई और नहीं जानता था।

"आपसे मिलकर खुशी हुई, मि गणेशन," अरविंद ने कहा। "इतने शॉर्ट नोटिस पर मुझसे मिलने के लिए शुक्रिया।"

"आपके बारे में मैंने बहुत सुना है," गणेशन ने अरविंद को कुर्सी पेश करते हुए कहा।

"उम्मीद है उसमें कुछ अच्छा भी होगा," अरविंद हंसते हुए बैठ गया, उसने अपने लिफ़ाफ़े गणेशन की मेज़ पर रख दिए, चमड़े का पाउच सबसे ऊपर था।

गणेशन मुस्कुराया। "मैं ब्रेड इंवेस्टमेंट्स के चेयरमैन की क्या सेवा कर सकता हूं?"

“वास्तव में, मैं यहां व्यक्तिगत रूप से आपसे मिलने आया हूं,” अरविंद ने कहा। “मुझे बताया गया है कि आप कर्नाटक संगीत के सबसे बड़े जानकारों में से हैं।”

“बिल्कुल। डी.के. पट्टाम्मल, एम.एल. वसंताकुमारी और एम.एस.सुबुलक्ष्मी की रिकॉर्डिंग्स के सबसे बड़े संग्रहों में में एक मेरे पास है।”

“क्या बात है!” अरविंद ने कहा। “मेरी पत्नी को कर्नाटक संगीत में बहुत रुचि है क्योंकि उनका परिवार कुछ साल मद्रास में रहा था। उन्होंने मुझसे पता करने को कहा था कि क्या वो कभी-कभार आपसे पत्र-व्यवहार कर सकती हैं।”

“मुझे बहुत खुशी होगी,” गणेशन ने कहा। “मैं नहीं जानता था कि किसी उत्तर भारतीय को भी कर्नाटक संगीत में रुचि होती है।”

“ओह, वो तो ज़बरदस्त प्रशंसक हैं। उन्हें पुरुष गायक ज़्यादा पसंद हैं जैसे मुथैया भगवतार, मैसूर वासुदेवाचार और चिंतलापल्ली वेंकटा राव,” अरविंद ने नामों का ठीक से उच्चारण करने की उम्मीद करते हुए कहा। जॉयदीप की रिसर्च काम आई थी।

“बहुत खूब, उम्मीद है हमारे पास बातें करने के लिए बहुत कुछ होगा,” गणेशन ने कहा। “उनका क्या नाम है?”

“अभिलाषा,” अरविंद ने जवाब दिया। “मैं उन्हें आपका पता दे दूंगा और उनसे आपको पत्र लिखने को कहूंगा। आपकी मदद के लिए किस तरह आपका शुक्रिया अदा करूं?”

“बस कभी-कभी बिज़नेस की अंदर की ख़बरें दे दिया करें,” गणेशन ने आंख मारते हुए कहा।

अरविंद हंसते हुए जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। “ज़रूर दूंगा। मसला बस ये है कि आजकल मैं भूलने बहुत लगा हूं, आपको मुझे याद दिलाना होगा!”

उसने अपना चमड़े का पाउच और लिफ़ाफ़ा उठाया, उन्हें बांह के नीचे दबाया, और जल्दी से निकल गया।

उसके जाने के बाद, गणेशन ने देखा कि बागड़िया का एक लिफ़ाफ़ा तो मेज़ पर ही छूट गया है।

अख़बार के दफ़्तर से निकलते हुए अरविंद मन ही मन हंस पड़ा। भुलक्कड़पन को भी अक्सर सामरिक लाभ के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था। जो भी हो, पत्रकारों को ऐसा कुछ भी खुलकर और ईमानदारी से बताना हमेशा बेहतर रहता है जिसकी जानकारी वो किसी और तरह से पा सकते हैं।



टाइम्स ऑफ इंडिया के अपने घुटन भरे दफ़्तर में बैठे गणेशन ने एक बार फिर से मेमो पर नज़र डाली।

द्वारा: सत्यपाल मित्तल

सेवा में: अरविंद बागड़िया

विषय: दिल्ली एशियाड होटल परियोजना

दिनांक: *3* दिसंबर *1980*

आपके साथ हुई बातचीत के अनुसार मैं दिल्ली विकास प्राधिकरण, पर्यटन विभाग और शहरी विकास मंत्रालय के चक्कर लगाता रहा हूं। ऐसा प्रतीत होता है कि अनेक पार्टियों से रुचि की अभिव्यक्ति प्राप्त हुई हैं। समस्या ये है कि राजनीतिक कारणों से ज़्यादातर को वित्तीय और तकनीकी मूल्यांकन के चरण पर ही अयोग्य क़रार दिया गया है। बज़ाहिर केवल एक कंपनी सख़्त मानदंडों को 'पूरा' करती है, कुर्बानी होटल्स लिमिटेड नाम की एक अपेक्षाकृत अज्ञात कंपनी। अगर हम इस कंपनी के शेयर हासिल करना शुरू कर सकें तो ये इस मुनाफ़ेबख़्श अवसर तक पहुंचने का एक और ज़रिया हो सकता है।

गणेशन मुस्कुराया। उसने अपना टाइपराइटर खींचा और लेख लिखने लगा।



"बाज़ार तो पगला गया है," पान मसाले ने कहा। "मेरे पास ढाई सौ रुपए में शेयर उठाने के लिए स्टॉकब्रोकरों के फ़ोन आ रहे हैं।"

"कोई आइडिया कि कौन ख़रीद रहा है?" अरविंद ने पूछा।

"ज़्यादातर तो चारों डाइरेक्टरों के दोस्त और परिवार," पान मसाले ने कहा। "जैसा कि आप जानते हैं, भारत में भेदिया व्यापार विनियमन कभी लागू नहीं किए गए हैं। हमारे पास तो कोई बाज़ार नियंत्रक भी नहीं है; अख़बार के लेख ने भी असंबद्ध निवेशकों की भीड़ को हवा दी है। बड़े निवेशकों में एक धंधा होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड नाम की कंपनी है।"

"शिट," अरविंद बड़बड़ाया।

"क्या हुआ?" पान मसाले ने पूछा।

"वो कुर्बानी होटल्स में निवेश न करते तो ठीक रहता," अरविंद ने कहा। "वो मेरी कंपनी ब्रेड इंवेस्टमेंट्स में निवेशक हैं। क्या कोई ऐसा तरीक़ा निकाल सकते हैं कि उनके साथ हुए शेयरों का लेनदेन रद्द हो जाए?"

"नामुमकिन है," पान मसाले ने कहा। "उन्होंने तो पहले ही पैसा दे दिया है। उनका बैंकर तो इस लघु अवधि सट्टा निवेश, जैसा वो इसे कह रहा था, को लेकर बहुत उत्साहित था।"

अरविंद ने गहरी सांस ली। "जो भी हो, अब हम कुछ नहीं कर सकते... ठीक है तो, बचे हुए शेयरों को ढाई सौ पर बेच दें," अरविंद ने कहा।

"आपको यक़ीन है?" पान मसाले ने पूछा। "टाइम्स ऑफ इंडिया का लेख कहता है कि कुर्बानी दिल्ली के एशियाई गेम्स के लिए कई होटल परियोजनाओं को जीतने की अगड़ी जमात में है।"

“मैं वो खेल खेल चुका हूं जिसमें मुझे मज़ा आता है,” अरविंद ने कहा।

“और लाभ? आप उनका भुगतान कैसे चाहते हैं?” पान मसाले ने पूछा।

“नक़द,” अरविंद ने कहा। “क़ुर्बानी के शेयरों की क़ीमतों की गतिविधि से मुझे जोड़ने वाली कोई कड़ी नहीं रहनी चाहिए।”



बोर्ड के पुनर्गठन के बाद क़ुर्बानी होटल्स लिमिटेड के चारों डाइरेक्टर कंपनी की पहली बोर्ड मीटिंग के लिए पहुंचे थे।

“आपको यक़ीन है कि यही पता है?” परुलेकर ने पूछा।

“बेशक मुझे यक़ीन है,” रामास्वामी ने कहा। “नोटिस पढ़िए।”

क़ुर्बानी होटल्स लिमिटेड के बोर्ड ऑफ़ डाइरेक्टर्स की एक सभा *10* दिसंबर *1980* को कंपनी के रजिस्टर्ड ऑफ़िस, प्रथम तल, सुइट *11*-ए, मेकर टॉवर्स छह पर सुबह दस बजे होगी।

उन्होंने एक बार फिर उस दरवाज़े पर दस्तक दी जिस पर 11-ए लिखा था। आख़िर में, जगदीप अरोड़ा ने हैंडल घुमाकर देखा तो पाया कि दरवाज़ा खुला था।

वो दस गुणा दस का सफ़ाईकर्मी का क्लोज़ेट था। तीन दीवारों की पूरी लंबाई में शेल्फ़ थीं जिनमें झाड़ुएं, बाल्टियां, पोंछे और सफ़ाई की दूसरी चीज़ें रखी हुई थीं।

वो ख़ामोश खड़े रहे, इस सदमे को जज़्ब करते हुए।

“मुझे लगता है हमें ज़बरदस्त उल्लू बनाया गया है,” अनुराग सेन ने अन्य लोगों से कहा। “आप लोगों ने अपने दोस्तों और घरवालों से कितने-कितने शेयर ख़रीदवाए हैं?”

इसकी भी वजह थी कि अरविंद बागड़िया ने कंपनी का नाम क़ुर्बानी रखा था। किसी की क़ुर्बानी दी जानी थी।



“क्या कहा तुमने वो कितने पर हैं?” मुरली ने पूछा। उसने यूनाइटेड फ़ेडरेशन बैंक के अपने बैंकर द्वारा ख़बर दिए जाने का इंतज़ार किया।

“पांच ही दिन में क़ीमत ढाई सौ रुपए से नौ रुपए पर कैसे आ गई?” मुरली ने पूछा। “इसे तो लघु अवधि का जोखिम निवेश होना था, घुसना और ज़बरदस्त मुनाफ़े के साथ बाहर आ जाना। और इस भारी नुक़सान के बारे में मैं अरबाज़ से क्या कहूंगा?”

बैंकर ने अस्पष्ट सा कुछ कहा कि उसने बीस शानदार निवेश करने में मुरली की मदद की थी। एक बुरे निवेश से दुनिया ख़त्म नहीं होगी।

“पता करो जो शेयर हमने ख़रीदे थे, वो किसके पास थे,” मुरली ने सख़्ती से कहा।

“पता करो डाइरेक्टर कौन हैं। टैक्स रिटर्न और होटल की निविदाएं सब निकालो। मुझे सब कुछ जानना है। और मेरा मतलब है सब कुछ! समझे?”



1200 मील दूर कलकत्ता में बैठे अरविंद ने फिर से स्टेटमेंट को देखा।

क़ुर्बानी के शेयरों का ख़रीद मूल्य रु	9,47,300
किराया, आढ़त, यात्रा और निदेशक शुल्क रु	2,61,557
व्यय सहित कुल निवेश रु	12,08,857
क़ुर्बानी शेयरों की बिक्री से आय रु	1,02,62,416
लाभ रु	90,53,559

दो हफ़्ते में नौ गुणा ज़बरदस्त लाभ के साथ नब्बे लाख का शुद्ध मुनाफ़ा।

“मुझे पता है कि हमने बोली लगाए बिना भी मुनाफ़ा कमा लिया है लेकिन क़ुर्बानी को ईओआई चरण पर शॉर्टलिस्ट किया गया है। आप अभी भी चाहेंगे कि हम होटल के लिए निविदा दें?” सत्यपाल ने पूछा।

“कभी बाथरूम में टॉयलेट पेपर रोल पर ध्यान दिया है?” अरविंद ने पूछा।

“हां,” सत्यपाल ने कहा, वो हैरान था कि बातचीत किस दिशा में जा रही है।

“कभी ध्यान दिया है कि जब वो ख़त्म होने लगता है तो कितनी तेज़ी से लुढ़कता है? हम उसी पॉइंट पर पहुंच रहे हैं। छोड़ो इसे।”



अरबाज़ मुरली और राजू के साथ अपने साप्ताहिक लंच के लिए गेलॉर्ड में बैठा था।

मुरली और राजू अब उसके दायां और बायां हाथ थे। राजू ने बिना किसी मुश्किल के अब्दुल दादा के कारोबार के सारे नाजायज़ भाग को संभाल लिया था जबकि मुरली तेज़ी से अरबाज़ के लिए एक सम्मानजनक कॉरपोरेट मोर्चा बना रहा था।

गेलॉर्ड हमेशा से अरबाज़ का पसंदीदा अड्डा रहा था। इसे 1956 में दो साझेदारों—घई और लांबा—ने शुरू किया था। उन्होंने ‘गे लॉर्ड’ नाम चुना था क्योंकि इसमें घई का ‘जी’ और लांबा का ‘एल’ आता था। वो सीधे-सरल दिन थे जब ‘गे’ होने का मतलब ख़ुश होना होता था!

परोमिता को, ख़ासतौर से, वाल्डॉर्फ़ सलाद, बेक्ड अलास्का और चिकन स्ट्रॉगनऑफ़ पसंद था। लेकिन आज के मेन्यु में मुरली के लिए चना-भटूरे, और

अरबाज़ और राजू के लिए बटर चिकन था।

“अपने ख़ास कामों में हम कैसा कर रहे हैं?” अरबाज़ ने राजू को देखते हुए पूछा। “सट्टे की आमदनी कैसी हो रही है?”

“बहुत बढ़िया,” राजू ने जवाब दिया। “इस साल के शुरू से ही हमने पचास और मटका अड्डे खोल दिए हैं। नतीजा ये है कि हमारा रोज़ का मुनाफ़ा पचास फ़ीसदी बढ़ गया है।”

“ये सोचो कि हम सट्टे को दूसरी गतिविधियों जैसे क्रिकेट वग़ैरा में कैसे ले जा सकते हैं,” अरबाज़ ने कहा। “शराब का क्या हाल है?”

“फिर यही कहूंगा, क़ब्ज़े में है,” राजू ने जवाब दिया। “दिक़्क़त बस बीच-बीच में होने वाली पुलिस की रेड हैं। कभी-कभी अपने पे-रोल पर मौजूद किसी पुलिसवाले से हमें पहले से ख़बर मिल जाती है। कभी-कभी नहीं मिलती।”

“अपनी शराब की भट्टियों को स्लम एरियाओं में ले जाने के बारे में सोचो। इससे पुलिस के लिए उन तक पहुंचना मुश्किल हो जाएगा,” अरबाज़ ने कहा। “तस्करी का क्या सीन है?”

“बढ़िया है,” राजू ने कहा। “हमने आइटमों की रेंज बढ़ा दी है-इलेक्ट्रॉनिक्स, परफ़्यूम, घड़ियां, सोना, कपड़े, खाने का सामान, कॉस्मेटिक्स... आजकल सबसे ज़्यादा मांग वीएचएस प्लेयरों और रंगीन टेलीविज़न सेटों की है।”

“क्यों?” अरबाज़ ने पूछा।

“क्योंकि सरकार ने ऐलान किया है कि वो जल्दी ही दूरदर्शन का रंगीन प्रसारण शुरू कर देगी। ये एशियाड के साथ शुरू होगा।”

“ड्रग्स?” अरबाज़ ने पूछा। “कोई अच्छी ख़बर?”

“वास्तव में बहुत अच्छी ख़बर है। सरकार मादक द्रव्य वग़ैरा, वग़ैरा क़ानून और साथ ही मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार की रोकथाम वग़ैरा, वग़ैरा क़ानून पास करने वाली है। अगर ये पास हो गए तो सारा धंधा अंडरग्राउंड हो जाएगा।”

“हेरोइन के लिए और सप्लाई चैनल बनाना शुरू कर दो,” अरबाज़ ने कहा। “भूमि बैंक कैसा है?” अरबाज़ ने पूछा।

“शानदार,” राजू ने जवाब दिया। “इस बंदे दत्ता सामंत ने मिलमालिकों के दिलों में ख़ौफ़ पैदा कर दिया है। पूरी संभावना है कि सारा कपड़ा उद्योग हड़ताल पर जा सकता है। हम मालिकों के साथ ज़मीन की एक तिहाई क़ीमत की साइड डील कर रहे हैं। इस बीच, एयरपोर्ट के पास की ख़ाली ज़मीन पर हम अपने ख़ुद के स्लम के ठेकेदारों के ज़रिए क़ब्ज़ा कर रहे हैं।”

“बहुत बढ़िया,” अरबाज़ ने कहा। “और तुम, मुरली? बताने को कुछ है?”

“तुम्हें अच्छी ख़बर चाहिए या बुरी ख़बर?” मुरली ने पूछा।

“अच्छी ख़बर क्या है?” अरबाज़ ने पूछा।

“हमने अपने लगभग बीस निवेशों में सोने का हाथ मारा है। कुछ बहुत बड़ी कॉरपोरेशनों में तुम्हारी कंपनी एक बड़ी शेयरहोल्डर बन गई है। उनमें से कुछ में, मैंने तुम्हारी ओर से बोर्ड सीट भी हासिल कर ली है। बहुत सी नई कंपनियां भी हमारे हाशिए पर हैं। पुणे में इंफ़ोसिस नाम की एक छोटी कंपनी भी सामने आई है। संभावित अवसर के तौर पर हम उस पर निगाह रखे हुए हैं।”

“पैसे के नज़रिए से?” अरबाज़ ने पूछा।

“इस साल के लिए हमारी पूंजी में तीन करोड़ से ज़्यादा की बढ़ोतरी हुई है,” मुरली ने कहा। “ये याद रखना कि बीएसई इंडेक्स केवल 227 है। मेरी अपनी भविष्यवाणी है कि दस साल में इंडेक्स दस गुणा हो जाएगा। हम बहुत ज़बरदस्त मुनाफ़ा कमाने वाले हैं। दूसरी अच्छी ख़बर ये है कि सरकार एक विशेष धारक बौंड का ऐलान करने वाली है जो तुम्हें अपने बेहिसाबी पैसे को सफ़ेद करने में मदद करेगा।”

“तो बुरी ख़बर क्या है?” अरबाज़ ने पूछा।

“ब्रेरड इंवेस्टमेंट्स लिमिटेड के मालिक ने हमें धोखा दिया। उसका नाम अरविंद बागड़िया है। हमने लगभग तीस लाख गंवा दिए।”

“ये नाम तो पहचाना सा लगता है,” अरबाज़ ने कहा। फिर उसे हैदराबाद की उड़ान और बागड़िया गेस्टहाउस में ठहरना याद आया।

“तुमने इतना पैसा कैसे गंवा दिया?” अरबाज़ ने पूछा।

“हमने क़ुर्बानी होटल्स लिमिटेड नाम की एक कंपनी में निवेश किया था। ख़बर थी कि वो दिल्ली में होटल का एक मुनाफ़ेबख़्श प्रोजेक्ट हासिल करने की क़तार में है। हमने सोचा था कि ये शॉर्ट टर्म का निवेश होगा, ये पता नहीं था कि ये बागड़िया का ज़बरदस्त घोटाला है।”

“तुम उसे कितनी अच्छी तरह से जानते हो?” अरबाज़ ने पूछा।

“हमने उसकी कंपनी ब्रेरड इंवेस्टमेंट्स में निवेश किया हुआ है। वो तेज़ बंदा है—बहुत ज़्यादा तेज़। अरे, मैंने तो उसकी कंपनी की वार्षिक आम बैठक में उसकी तारीफ़ तक की थी।”

“बिज़नेस तो बिज़नेस है, मुरली,” अरबाज़ ने कहा। “शांत हो जाओ।”

“हमने बहुत सारा पैसा गंवाया है, अरबाज़। तुम्हारा पैसा! और ये इसलिए हुआ कि मैंने उस कमीने बैंकर को मुझे यक़ीन दिलाने दिया कि क़ुर्बानी शॉर्ट टर्म का अच्छा जोखिम निवेश है।”

“नाराज़ मत हो,” अरबाज़ ने कहा। “हिसाब बराबर कर लो।”

“कैसे?” मुरली ने पूछा।

“तुम्हारे तरीक़े से या मेरे तरीक़े से?” अरबाज़ ने पूछा।

“क्या मतलब है तुम्हारा?” मुरली ने पूछा।

“तुम्हारे तरीक़े का मतलब है हम कोई ऐसा तरीक़ा ढूंढ़ें कि हमारा पैसा मुनाफ़े के साथ वापस मिल जाए। मेरे तरीक़े का मतलब है कि मैं उसकी टांगें तुड़वा दूं या बोरे में उसकी लाश पाऊं।”

“अरे, इस मामले में तो मेरा तरीक़ा ही बेहतर है। हमें अपनी कॉरपोरेट साख को भी संभालकर और सुरक्षित रखना है,” मुरली ने जल्दी से कहा।

“ठीक है,” अरबाज़ ने कहा। “तो तुम्हारी कोई योजना है?”

“अगर मैं उसकी कंपनी के शेयर बाज़ार में सस्ते में बेच दूं, तो उसके शेयरों के भाव लुढ़कवा सकता हूं,” मुरली ने कहा।

“लेकिन तुम्हें फ़ायदा कैसे होगा?” अरबाज़ ने पूछा। “नहीं, मेरी राय है कि तुम तिवारी से मिलो।”

“वो कौन है?” मुरली ने पूछा।

“आयकर का चीफ़ कमिश्नर, वही जिसने एयरपोर्ट पर भूतपूर्व पुलिस कमिश्नर दुबे को ठीक करने में हमारी मदद की थी,” अरबाज़ ने जवाब दिया। “हमें अरविंद बागड़िया से फ़ायदा लेना होगा।”

“तिवारी काम करेगा?” मुरली ने पूछा।

“ज़्यादातर सरकारी कर्मचारी ख़राब बंदूक़ों की तरह होते हैं,” अरबाज़ ने जवाब दिया।

“हह?”

“वो काम नहीं करते और आप उन्हें ‘फ़ायर’ नहीं कर सकते। खैर, कोशिश तो करते हैं,” अरबाज़ ने कहा।

मुरली हंसा। “तुम्हारे चेहरे पर मुस्कुराहट है। इसके पीछे क्या खिचड़ी पक रही है?”

“इस योजना का नाम है पीएलपीएलपीएल,” अरबाज़ ने कहा।

“पीएलपीएलपीएल?” मुरली ने पूछा।

“तुम्हें वो पारसी वकील याद है जिसे तुम मुझे आर्थर रोड जेल से छुड़वाने के लिए कलकत्ता से लाए थे?” अरबाज़ ने पूछा।

“डैरियस दस्तूर?” मुरली ने पूछा।

“वही। मैं उसके संपर्क में हूं। उसने मेरा संपर्क एक ऐसे शख़्स से करवाया है जो बंबई की पारसी पंचायत के रिकॉर्ड रखता है।”

“किसलिए?”

“वो पैदस्त सूची रखते हैं,” अरबाज़ ने कहा।

“क्या?”

“पैदस्त सूची अंत्येष्टि की सूची होती है। पारसी समुदाय में होने वाली मौतों की

रोज़ाना अपडेट की गई सूची," अरबाज़ ने उत्तर दिया। "मेरा आदमी मुझे बताता रहता है।"

"पूछ सकता हूं क्यों?"

"क्या तुम्हें पता है कि बंबई की ज़मीन का पांचवां हिस्सा कुल मिलाकर नौ भूस्वामियों के पास है?" अरबाज़ ने कहा।

"वाक़ई?"

"छह सबसे बड़े हैं गोदरेज एंड बॉयस, बैरामजी जीजीभाय ग्रुप, ए. एच. वाडिया ट्रस्ट, एफ़. ई. दिनशॉ ट्रस्ट, हीरजीभाई दिनशॉ बिल्लीमोरिया और जीजीभाय आर्देशर। इन लोगों में क्या समानता है? सब पारसी हैं!"

"ये कैसे हुआ?"

"ईस्ट इंडिया कंपनी ने लोगों को बंबई की ओर आकर्षित करने के लिए ईनाम के तौर पर ज़मीन भेंट की थी। अमीर पारसी कारोबारियों और व्यापारियों को न केवल तोहफ़े के तौर पर बड़ी-बड़ी ज़मीनें मिलीं, बल्कि उन्होंने अपने मुनाफ़ों को अतिरिक्त ज़मीन ख़रीदने में भी लगाया। ये ज़मीनें पीढ़ियों से विरासत में दी जाती रही हैं," अरबाज़ ने बताया।

"इससे हमें क्या मतलब है?" मुरली ने पूछा।

"भारत में पारसी आबादी तेज़ी से घट रही है," अरबाज़ ने कहा। "ये 72,000 लोगों से भी कम है। बीस साल पहले ये एक लाख से ज़्यादा थी। नतीजा ये है कि बहुत सी पारसी विधवाएं बहुत तन्हा ज़िंदगी गुज़ारती हैं। मैं बस उनसे बीच-बीच में मिल लेता हूं, चाय पर बतियाता हूं, और कभी-कभार उनके लिए कुछ तोहफ़े ले जाता हूं। वो मुझे अपना डीकरा—या बेटा—कहती हैं और मुझसे अपने दिल की बातें कहती हैं।"

"ये सब तुम अपनी नेकदिली से करते हो?" मुरली ने व्यंग्यपूर्वक पूछा।

"हां," अरबाज़ ने जवाब दिया। "साथ ही, ये बात भी है कि वो कुर्ला, भांडुप, विक्रोली, देओनार, मलाड और गोरेगांव में ज़मीनों के विशाल प्लॉट्स की मालिक हैं—कुछ शानदार हैरिटेज संपत्तियां अलग हैं। जब तक वो जाने के लिए तैयार होंगी, अकेला मैं ही होऊंगा जिसे वो अपनी आख़री वसीयत और इच्छापत्र में शामिल करना चाहेंगी। बच्चे तो इन तन्हा औरतों की कोई खोज-ख़बर लेते नहीं हैं। इसीलिए मेरे प्रोग्राम का नाम है पीएलपीएलपीएल।"

"इसका पूरा मतलब क्या है?" मुरली ने पूछा।

"प्रॉपर्टीज़ ऑफ़ लोनली पारसी लेडीज़ प्राइवेट लिमिटेड," अरबाज़ ने आंख मारते हुए कहा।



"मुझे तीन बार दर्द उठ चुका है," परोमिता ने अरबाज़ से कहा जो टीवी सैट से चिपका

बैठा था। वो कुछ देख नहीं रहा था। उसके पास सिंक्लेयर जेडएक्स81 नाम की एक छोटी सी मशीन थी जो टेलीविज़न से जुड़ी थी और वो 3डी मॉन्स्टर मेज़ नाम का गेम खेल रहा था। उसके स्मगलर ऐसे कुछ गैजेट लाने लगे थे जिन्हें लोग पर्सनल कंप्यूटर कहते थे और हाजी अली के नए हीरा पन्ना शॉपिंग सैंटर में वो हाथोहाथ बिक रहे थे।

अरबाज़ कंप्यूटर से चिपका रहा। वो ऐसी भूलभुलैया में फंस गया था जिसमें केवल एक ही निकास और एक दुश्मन टायरैनोसॉरस रैक्स था। उसका सारा ध्यान भूलभुलैया को पार करने और खाए गए बिना निकास से बाहर निकल लेने पर लगा हुआ था, ऐसा काम जो वो अपने पेशे में लगभग रोज़ाना करता था।

"मुझे तीन दर्द उठ चुके हैं," परोमिता ने फिर से कहा। इस बार अरबाज़ ने नज़र उठाई।

"क्या? तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?" उसने कहा। जेडएक्स81 को एक ओर फेंककर अरबाज़ इस तरह ड्राइव करते हुए परोमिता को अपने कोलाबा के फ़्लैट से बॉम्बे हॉस्पीटल लेकर गया मानो उस पर कोई भूत सवार हो गया हो। वो दस मिनट से भी कम समय में अपनी मंज़िल पर पहुंच गए थे।

"तुम ठीक तो हो?" परोमिता की कार से उतरने में मदद करते हुए उसने पूछा।

परोमिता मुस्कुराई। "तसल्ली रखो, अरबाज़, दर्द बहुत रुक-रुककर हो रहे हैं और अभी बहुत तेज़ भी नहीं हैं। हम वक़्त से आ गए हैं।"

परोमिता को मैटरनिटी विंग में भरती किया गया और कुछ घंटे बाद उसे स्ट्रेचर से डिलीवरी कक्ष में ले जाया गया। उसका गायनोकोलॉजिस्ट बंबई का सबसे अच्छा, युवा मराठी डॉक्टर था जिसकी पूरी शख़्सियत किसी बॉलीवुड स्टार जैसी थी।

"मेरी राय है आप बाहर ही इंतज़ार करें, मि. शेख़," उसने अरबाज़ से कहा। डिलीवरी कक्ष में डॉक्टर को घबराए हुए शौहर की मौजूदगी क़तई नहीं चाहिए थी।

उसने जल्दी से नर्स से उसे डिलीवरी टेबल पर तैयार करने को कहा और परोमिता से गहरी सांसें लेने और दम लगाने को कहा। परोमिता को अपने गर्भ में ज़बरदस्त संकुचन बनता महसूस हो रहा था और जब उसे ऐसा लगने लगा जैसे उसकी मांसपेशियां फटने वाली हैं तो वो चीख़ पड़ी।

डॉक्टर ने नर्स से उसके चेहरे पर ठंडी तौलिया रखने को कहा। "एक पल रुकें, बहुत गहरी सांस लें, दर्द उठने का इंतज़ार करें और फिर ज़ोर लगाएं।"

परोमिता ने गहरी सांस लेते हुए वही किया जैसा कहा गया था। फिर वो दृढ़ भाव के साथ ज़ोर लगाने लगी। "मुझे सिर दिखाई दे रहा है," डॉक्टर ने कहा।

शिशु सिर के बल बाहर उभरा। "हमने कंधे तक शिशु को निकाल लिया है," डॉक्टर ने कहा। "अब आपको एक और लंबा और अंतिम ज़ोर लगाना होगा।"

परोमिता घुरघुराई, उसका शिशु निकला, धीरे से पीछे से सामने को घूमते हुए कंधों से नीचे का शेष शरीर बाहर आ गया। "अब हम प्लेसेंटा को निकाल दें और गर्भनाल

को काट दें, फिर हमारा काम ख़त्म।”

दस मिनट बाद डिलीवरी कक्ष से बाहर निकलकर डॉक्टर ने एक छोटा सा बंडल अरबाज़ को थमा दिया। “आपकी बहुत प्यारी बेटी हुई है। मुबारक हो!”

उसकी बेटी की आंखें पटपटा रही थीं और मुंह का एक कोना टेढ़ा हो रहा था मानो वो अरबाज़ को देखकर मुस्कुरा रही हो। उस दिन अपनी ज़िंदगी में दूसरी बार उसे प्यार हो गया था।



अभिलाषा ने अपने ड्राइवर से उसे फ़ेयरलॉन होटल छोड़ने को कहा। वो ऐसा होटल नहीं था जहां अरविंद अक्सर जाता था, हालांकि वो होटल सन् 1783 से मैज लेन और सद्दर स्ट्रीट के बीच स्थित था। उसके इस ख़ास होटल को चुनने की एक वजह ये थी कि वो बहुत ज़्यादा सवाल नहीं पूछते थे।

उसने रिसेप्शन को नज़रअंदाज़ कर दिया और तेज़ी से दूसरी मंज़िल की ओर बढ़ गई। उसने दरवाज़े पर दस्तक दी और वो लगभग तुरंत ही खुल गया। वो अंदर गई और उसकी बांहों में समा गई।

“मैंने तुम्हें मिस किया,” वो बोली।

“मैंने भी,” उसने कहा और झुककर उसे चूम लिया।

वो इसी तरह आवेग भरे आग़ोश में बंधे रहे जबकि उसके हाथ अभिलाषा के कूल्हों के उभार को सहला रहे थे। “मैं और इंतज़ार नहीं कर सकता,” उसने कहा और साड़ी उतारने में उसकी मदद करने के लिए पीछे हट गया।

अभिलाषा को उसकी लालसा और उत्साह अच्छा लगा। उसे तो उसकी मौजूदगी ही पसंद थी। उसने खुद को उत्तेजित, एडवेंचरस, जवान और सैक्सी महसूस किया। उसे अपराधबोध भी महसूस हो रहा था कि वो अरविंद को धोखा दे रही है।

फिर उसे वो लंबी-लंबी रातें याद हो आईं जब उसका इंतज़ार करते हुए वो रोती-रोती सो जाती थी। उसे प्रसव के बाद के वो दिन याद आए जब अरविंद उसे नज़रअंदाज़ करता था हालांकि तब उसे उसकी बेहद ज़रूरत महसूस होती थी। उसे वो सारी पारिवारिक छुट्टियां याद आईं जिन्हें आख़री वक़्त पर आ गए बिज़नेस के कामों की वजह से कैंसल करना पड़ा था और वो सारी फ़िल्में भी जो उसने अकेले देखी थीं।

“ए, क्या सोच रही हो,” उसने अपनी बटन के शर्ट खोलते हुए पूछा।

“कुछ नहीं,” उसने मुस्कुराते हुए कहा और कपड़े उतारने में उसकी मदद करने लगी।



परोमिता नन्ही अलीशा को दूध पिला रही थी। वो थकी हुई थी और उसकी आंखें बेजान सी थीं। अलीशा ने रात भर उसे जगाए रखा था।

अरबाज़ ख़ाकी पैंट और लिनेन की ढीली सी शर्ट पहने हुए था। उसके हाथ में फूलों का गुच्छा और चॉकलेट का एक डिब्बा था।

परोमिता ने उसे देखा। अरबाज़ को नहाकर एकदम टिपटॉप और साजो-सामान के साथ इस तरह तैयार देख मानो वो डेट पर जा रहा हो, परोमिता उस पर बरस पड़ना चाहती थी।

"कहां जा रहे हो?" उसने पूछा।

"प्रॉपर्टी के सौदे पर," उसने जवाब दिया।

"हाथ में फूल और चॉकलेट लेकर?" उसने अलीशा को अपनी बांह में संभालते हुए पूछा।

अरबाज़ हंस पड़ा। "जल रही हो?" उसने पूछा। वो परोमिता के अंदर उबलते ग़ुस्से को देख सकता था।

उसने जल्दी से फूल और चॉकलेट नीचे रखे और उस आराम कुर्सी के पास गया जिस पर वो बैठी थी और अलीशा को दूध पिला रही थी।

"मेरी ज़िंदगी में तो पहले से ही दो सबसे ख़ूबसूरत लड़कियां हैं," परोमिता के पास नीचे बैठते हुए उसने हौले से कहा। "मुझे और कोई नहीं चाहिए।"

"फिर ये चॉकलेट और फूल किसके लिए हैं?" परोमिता ने संदेह से पूछा।

"उनका नाम मिसेज़ गुलनाज़ बाटलीवाला है," अरबाज़ ने जवाब दिया। "वो हमारे द्वारा उठाई गई एक सामाजिक पहल का हिस्सा हैं। इसका नाम है पीएलपीएलपीएल।"



अरबाज़ और परोमिता जब आरे मिल्क कॉलोनी में कार से उतरे तो अरबाज़ ने अलीशा को अपनी गोद में ले लिया। गोरेगांव ईस्ट तक ये लंबी ड्राइव थी लेकिन पूरी तरह इसके लायक़ थी। 1287 हैक्टेयर ज़मीन पर बने बाग़, झील, रेस्तरां, एक पर्यवेक्षण मंडप, पिकनिक की सुविधाएं और 16,000 पशु ये भूलना मुमकिन कर देते थे कि आप बंबई में हैं।

पिकनिक का आइडिया परोमिता का था और उसने अलीशा के ज़रूरी सामान के बैग के साथ ही एक टोकरी भरकर खाना पैक कर लिया था। अरबाज़ भी इस आइडिया को लेकर जोश में था और उसने महाराष्ट्र लोक निर्माण विभाग में अपने आदमी से बात करके ख़ुद को उन इलाक़ों में जाने देने की इजाज़त ले ली थी जो आमतौर पर सामान्य लोगों के लिए निषिद्ध होते हैं।

अरबाज़ ने अपने बॉडीगार्ड्स को दूरी बनाए रखने के सख़्त निर्देश दिए थे। राजू ने चुपचाप अरबाज़ की बात को ख़ारिज कर दिया था। "याद है जब रंगराजन पिल्लै ने अपने बॉडीगार्ड्स से दूर रहने के लिए कहा था तो क्या हुआ था? नज़र से दूर रहना लेकिन बहुत ज़्यादा चौकस रहना। अगर किसी ने अरबाज़ का बाल भी बांका किया तो

मैं तुम सबको गोली मार दूंगा। समझे?"

अरबाज़ और परोमिता नर्म घास पर बैठ गए और अलीशा को उसके पालने में लिटा दिया। वो अभी बस बैठे ही होंगे कि तभी दूर कहीं से एक लड़की की चीख़ सुनाई दी।

"देखो, पापा, परोमिता!" लड़की एक पैड और पैन लेकर परोमिता की ओर दौड़ी, उससे ऑटोग्राफ़ लेने। कुछ ही देर में, उन्हें अनेक प्रशंसकों ने घेर लिया।

अरबाज़ के बॉडीगार्ड भी वहां आ गए लेकिन अरबाज़ ने कठोर नज़र से देखकर उन्हें भगा दिया। काग़ज़ के टुकड़ों, क़मीज़ों और यहां तक कि बांहों पर भी ऑटोग्राफ़ देते हुए परोमिता बहुत ज़्यादा खुश नज़र आ रही थी। अरबाज़ ने उसे देखा और मुस्कुरा दिया। जब भीड़ छंट गई तो वो उससे बोला, "शुक्रिया, जान।"

"शुक्रिया? किसलिए?" परोमिता ने टोकरी खोलते हुए पूछा।

"मेरी ख़ातिर इस सबको छोड़ने के लिए," अरबाज़ ने कहा। "मैं शायद दुनिया का सबसे खुशक़िस्मत इंसान हूं।"

"मेरे ख़्याल से तुम्हें इस वाक्य से शायद शब्द हटा देना चाहिए," परोमिता ने उसे सैंडविच पकड़ाते हुए चुटकी ली।

अरबाज़ ने चेहरे पर गंभीर भाव लिए उसे देखा। "ज़िंदगी में मेरे बस दो गुरु रहे हैं," उसने कहा।

"कौन?" परोमिता ने पूछा।

"अब्दुल दादा और तुम," उसने जवाब दिया।

"तुम मेरी तुलना उनके साथ कैसे कर सकते हो?" परोमिता ने पूछा, इस बात से वो लगभग उखड़ ही गई थी।

"उन्होंने मुझे सिखाया किस तरह डर पैदा किया जाए। तुमने मुझे सिखाया कैसे प्यार किया और पाया जाए।"



सुशील तिवारी ने आयकर मुख्यालय के अपने बड़े से ऑफ़िस में बहुत धीरज से मुरली की बात सुनी। वो बंबई में आयकर का चीफ़ कमिश्नर था, चीफ़ कमिश्नर का उच्च पद संभालने से पहले वो तीस साल भारतीय राजस्व सेवा में कार्य कर चुका था।

तिवारी ने अपनी कनपटियों को मला, इस उम्मीद में कि हैंगओवर की वजह से हो रहा भयानक सिरदर्द शायद दूर हो सके। पिछली रात प्रेज़ीडेंट होटल में जगजीत और चित्रा सिंह का एक कन्सर्ट था। तिवारी एक बेदाग़ सफ़ेद गद्दे पर बैठा था और एक के बाद एक पैग पीता गया जबकि दोनों गायक उसकी पसंदीदा ग़ज़ल 'आहिस्ता आहिस्ता' गा रहे थे। धीमे पीने की सलाह को तिवारी ने नज़रअंदाज़ कर दिया। जगजीत सिंह और व्हिस्की तिवारी के लिए ज़बरदस्त मेल थे। ऐसे ही पंकज उधास और व्हिस्की थे। या ग़ुलाम अली और व्हिस्की। कुछ भी और व्हिस्की।

तिवारी का उत्थान विवादों के बग़ैर नहीं रहा था। वो निरीक्षण निदेशालय के तहत 1972 में बनी एक स्पेशल सैल का हिस्सा था जिसका काम बड़े औद्योगिक घरानों के आयकर मामलों को देखना था। ऐसी अफ़वाहें थीं कि विभागीय सूचनाएं कॉरपोरेट समूहों को पहुंचाई जा रही हैं लेकिन कोई भी कभी वापस उस तक नहीं पहुंच सकी थी। उसे 1978 में एक नया निदेशालय भी सौंपा गया था जिसका नाम सतर्कता निदेशालय था लेकिन वास्तविकता में ज़्यादातर काम उसके द्वारा दिए गए निर्देशों के कारण रुक गया था। फिर से, उसके ख़िलाफ़ कभी कोई कार्रवाई नहीं की गई।

भारतीय राजस्व सेवा में तिवारी की अबाध प्रगति का राज़ ये तथ्य था कि सभी सही जगहों पर उसके मित्र थे। कई लोग जो राजस्व सचिव और केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के चेयरमैन जैसे महत्वपूर्ण पदों पर रहे थे, उन्हें तिवारी ने बड़े जतन से विकसित किया था। उसे ऐसे शख़्स के तौर पर देखा जाता था जो 'काम करवा' सकता था। अगर किसी बच्चे का स्कूल में दाख़िला करवाना होता था तो तिवारी सही आदमी था। किसी को बिना बारी के टेलीफ़ोन लाइन मंज़ूर करवानी होती तो तिवारी उसे भी संभाल सकता था। अगर अस्पताल में सीनियर डॉक्टर से समय मिलना मुमकिन नहीं था तो तिवारी फ़ोन उठाता और पलक झपकते सब इंतज़ाम कर सकता था। तिवारी तो जैसे हर मर्ज़ की दवा था।

तिवारी का सीक्रेट फ़ॉर्मूला अब्दुल दादा था। अब्दुल ने तिवारी के साथ अपने ताल्लुक़ात को ख़ूब जतन से पोसा था, ये सुनिश्चित करने के लिए कि उसके अड्डों और घरों पर कभी छापा न पड़े। ज़्यादातर अफ़सर तो वैसे भी उसके यहां छापा डालने से बहुत घबराते थे लेकिन विभाग में अपना कोई आदमी रहना हमेशा फ़ायदेमंद ही रहता था। वास्तव में, अब्दुल दादा को क़ानून के दायरे में लाने के किसी भी प्रस्ताव को तिवारी लगभग तुरंत ही ज़ोरदारी से नकार देता था। तिवारी दादा के पांडवों में से एक था, वो पांच लोग जिन्हें अब्दुल दादा हमेशा अपने पक्ष में रखना चाहता था—पुलिस, आयकर, नगर निगम, अदालत और ख़ुदा।

"ये पांच ही ख़ासतौर से क्यों?" अरबाज़ ने एक बार पूछा था। दादा ने जवाब दिया था, "पुलिस तो हमारी पार्टनर है। उनके बिना हम अपना धंधा कर ही नहीं सकते। आयकर वाले हमारे प्रतीक्षारत-पार्टनर हैं। वो थोड़ा एक्शन चाहते हैं लेकिन हम उन्हें आने नहीं देना चाहते इसलिए जब-तब उनके सामने थोड़े-बहुत टुकड़े डालकर उन्हें ख़ुश रखते हैं। नगर निगम वाले ऐसे पार्टनर हैं जिन्हें हम पाना चाहते हैं। ज़मीन के क़ब्ज़ों से वो हमें बेतहाशा दौलत दिलवा सकते हैं लेकिन उन्हें साथ लाने के लिए हमें उन्हें बहुत पटाना पड़ता है। न्यायपालिका नाराज़ पार्टनर है, जिसे एक्शन से कुछ हासिल नहीं हो रहा है। हमें इस पार्टनर को शांत रखना पड़ता है ताकि वो हमें नुक़सान न पहुंचा सके।"

"और ख़ुदा?" अरबाज़ ने पूछा।

"वो सीनियर पार्टनर है। उसकी रहमत और मर्ज़ी के बिना तो कुछ भी नहीं हिल सकता।"

मुरली तिवारी को ध्यान से दस्तावेज़ों को जांचते देखता रहा। "अगर उसने ये सब

किया है तो वो इतना मूर्ख नहीं होगा कि अपने मुनाफ़े को खातों में दिखाए। ये पूरी तरह से बेनामी लेनदेन होगा," तिवारी ने कहा।

"बिल्कुल," मुरली ने कहा। "और इसीलिए मैं यहां आया हूं।"

"इसे मेरे पास छोड़ दें," तिवारी ने कहा। "मैं कोई तरीक़ा निकालता हूं। अरबाज़ भाई से कहना चिंता न करें। मैं हमेशा रास्ता निकाल लेता हूं।"



चंदर लखोटिया उर्फ पान मसाले का ऑफ़िस कालबादेवी रोड पर था, एक भीड़ भरा इलाक़ा जिसका नाम कालबा देवी पर पड़ा था। सैकड़ों सुनार, कपास के व्यापारी और स्टील के बरतनों के कारोबारी यहां से अपना काम करते थे।

कालबादेवी रोड मेट्रो सिनेमा के पास से शुरू होती थी और भूलेश्वर रोड और खेतवाडी रोड तक फैली थी। बंबई के दो मेन होलसेल कपड़ा मार्केट मुलजी जेठा मार्केट और मंगलदास मार्केट यहीं पर थे और हनुमान गली से वहां जाया जा सकता था। भूलेश्वर की ओर ज़वेरी बाज़ार था, बहुत ही संकरी गलियों से भरा, जहां सैकड़ों सुनार थे जिनसे भारत का सोने का दो-तिहाई कारोबार होता था। कालबादेवी के आख़िर की ओर, भूलेश्वर रोड के पास, कॉटन एक्सचेंज था।

चंदर लखोटिया इसी इलाक़े में जन्मा और बड़ा हुआ था। उसके पिता मुलजी जेठा मार्केट में कपास के कारोबारी थे और बड़ा भाई भी पिता के साथ ही लग गया था। चंदर पढ़ाई में हमेशा अच्छा रहा था और उसने इंटरमीडिएट के दोनों ग्रुपों के साथ-साथ फ़ाइनल परीक्षाएं भी अच्छे अंकों से पास कर ली थीं। ये चुटकुला प्रचलित था कि सीए का असली अर्थ 'चार्टर्ड अकाउंटेंट' नहीं बल्कि 'कम अगेन' होता है लेकिन चंदर ने अपने सारे पेपर पहले प्रयास में ही क्लीयर कर लिए थे।

सच तो ये था कि चंदर लखोटिया ऐसा चार्टर्ड अकाउंटेंट था जिसे लोग तब रखते थे जब उन्हें नाजायज़ की दहलीज़ पर खड़ा कोई काम ज़्यादा से ज़्यादा जायज़ तरीक़े से करवाना होता था। उसके तेल चुपड़े बाल, सफ़ारी सूट और पान मसाले से रंगे दांत इसकी गवाही देते थे।

चंदर ने कॉलेज की अपनी प्रेमिका से शादी की थी जिसे 'अंतरसामुदायिक' शादी कहा गया था—मारवाड़ी लड़के की गुजराती लड़की से शादी। रोमांस उस क्षेत्र के मशहूर होटल श्री ठाकर भोजनालय में परवान चढ़ा था। 1945 में बने इस होटल में सारे बंबई की बेहतरीन गुजराती थाली मिलती थी जिसमें फ़रसान, सब्ज़ियां, रोटी, पुलाव, दाल, कढ़ी, छाछ और क्रीमी श्रीखंड होता था। श्री ठाकर भोजनालय का एक चक्कर लगाना चंदर के लंचटाइम की रस्म सा था और वो हमेशा अपने क्लायंट्स से खाने पर मिलकर इस समय का सदुपयोग करता था। खाना ख़त्म होता तो वो अपनी जेब से पान मसाले से भरी छोटी सी चांदी की डिबिया निकालता और खाने का आनंद पूरा करता।

कालबादेवी में कोई ऐसा सुनार, कपड़ा व्यापारी या स्टॉक मार्केट का ऑपरेटर नहीं

था जिसने उसके हुनर से काम न लिया हो। सामान्य अकाउंटिंग और टैक्सेशन की सलाह के अलावा, चंदर अपनी आला सेवाओं के लिए भी मशहूर था जो जानकार लोगों के बीच 1-2-2-1 के नाम से जानी जाती थीं। वो आपके अधिकृत पैसे को लेकर उसे अनधिकृत या इसका उलट भी बना सकता था, इसलिए ये नाम था वन का टू और टू का वन। अरविंद बागड़िया से चंदर का परिचय बृजमोहनलाल के पुराने मुनीम ताराचंद अग्रवाल ने करवाया था जो अरविंद के बोर्ड में थे। पैसों का मामला सामने आए तो मारवाड़ी समुदाय आश्चर्यजनक रूप से साधनसंपन्न हो जाता है।

उस बृहस्पतिवार को चंदर अपनी हमेशा वाली दो सीट की मेज़ पर बैठा एक ज्वेलर का इंतज़ार कर रहा था जो टैक्स की एक बड़ी देनदारी से बचने के लिए मदद चाहता था। 70 के दशक में ऐसी भारतीय कर संरचना सामने आई थी जो अवास्तविक थी। अपने चरम पर, किसी व्यक्ति के लिए कर की अधिकतम सीमांत दर हैरतअंगेज़ रूप से 97.5 प्रतिशत थी। ये स्पष्ट था कि चंदर की सेवाओं की मांग भी अच्छी-ख़ासी होगी।

चंदर ने अपनी घड़ी देखी। उसका क्लायंट लेट हो गया था। एक मिनट बाद उसकी मेज़ की दूसरी कुर्सी भर गई। उसके ज्वेलर क्लायंट द्वारा नहीं बल्कि किसी अजनबी द्वारा।

“आज थाली में क्या बढ़िया है? उम्मीद है श्रीखंड की जगह बासुंदी देंगे,” आयकर के चीफ़ कमिश्नर सुशील तिवारी ने टिप्पणी की। “मैं ज़माने से यहां नहीं आया हूं। क्या अभी भी खाना उतना ही ग़ज़ब का होता है?”



“मुझे उस लेनदेन की कोई जानकारी नहीं है,” चंदर लखोटिया ने सुशील तिवारी से उपेक्षापूर्वक कहा।

“तुमने मुझ पर पत्थर फेंका है,” तिवारी ने कहा। “जो लोग शीशे के घरों में रहते हों उन्हें आयकर अधिकारियों पर पत्थर नहीं फेंकने चाहिए।”

“मैं समझा नहीं आपका मतलब,” चंदर ने बचाव की मुद्रा में कहा, वो अभी भी पान मसाला चबा रहा था।

“क्यों न हम अप्रैल के लेनदेन से शुरू करें जो तुमने भीमजी माणिकलाल के लिए किया था? तुमने उसे कई लाख का कमीशन दिया था। बताओ ज़रा, उसने ऐसी क्या सेवाएं दी थीं जिसका इतना ज़बरदस्त भुगतान बनता हो? साफ़ है कि तुम उसके ग़लत ढंग से कमाए कच्चे को पक्के में बदलने में मदद कर रहे थे।”

चंदर लखोटिया ख़ामोश रहा।

“और फिर जून का लेनदेन है जो और भी ज़्यादा दिलचस्प है। तुमने भारी तादाद में कच्चा इस्पात ख़रीदा और बेचा। जहां तक मुझे याद पड़ता है तुम न तो इस्पात के कारोबार में हो और न ही भवन निर्माण उद्योग में हो।”

चंदर लखोटिया अब भी ख़ामोश रहा।

“अगस्त का लेनदेन तो कमाल का ही है। तुमने लाखों के अनगढ़ हीरे ख़रीदे और फिर मामूली क़ीमत पर उन्हें फिर से बेच दिया। एकदम साफ़ है कि तुम पैसा सफ़ेद करने में किसी की मदद कर रहे थे। ये देखते हुए कि हीरे आयात किए गए थे, मैं बहुत आसानी से प्रवर्तन निदेशालय के लड़कों से ये देखने को कह सकता हूं कि विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम के किसी प्रावधान का उल्लंघन तो नहीं हुआ। जैसा कि तुम अच्छी तरह जानते हो, अनुपालन न करने का मतलब आपराधिक मुक़द्दमा और जेल की सज़ा है। तुम चाहते हो मैं आगे बढ़ूं?”

चंदर लखोटिया अब चुप नहीं रहा।

“आप मुझे सीधे-सीधे ये क्यों न बता दें कि आप चाहते क्या हैं? पैसा?” उसने पूछा।

सुशील तिवारी हंस पड़ा। “पैसे जितना घटिया कुछ नहीं, मि.लखोटिया। मुझे तो बस अरविंद बागड़िया चाहिए। मेरी मदद करो तो मैं अपने रास्ते चला जाऊंगा और तुम अपने धोखेधड़ी के लेनदेन करते रहना।”



“अब हमारे पास इतना मसाला है कि अरविंद बागड़िया और उसके सारे व्यापारिक संस्थानों पर आयकर के छापे मार सकें,” सुशील तिवारी ने कहा।

“लेकिन आयकर के छापे से मैं अपना पैसा कैसे वापस पाऊंगा?” मुरली ने पूछा। “इससे तो बस आपको अपनी जेबें भरने का मौक़ा मिल जाएगा।”

“उसके घर और कॉरपोरेट ऑफ़िस के अलावा बाईस जगहें हैं जहां छापा मारा जाना होगा,” तिवारी ने कहा। “तुम चाहो तो हम बस कुछेक जगहों पर ही छापा मारेंगे।”

“इससे कैसे मदद मिलेगी?” मुरली ने पूछा।

“बाक़ी को तुम संभाल लेना,” तिवारी ने आंख मारी।



“तिवारी का तो दिमाग़ ख़राब हो गया है,” मुरली ने अपनी कॉफ़ी पीते हुए कहा। “कहता है कि वो बस कुछेक छापे मारेगा और बाक़ी जगहों पर हम मार लें। ये किस क़िस्म का अफ़सर है?”

“अच्छे क़िस्म का,” अरबाज़ ने कहा।

“कैसे?” मुरली ने पूछा, अरबाज़ के जवाब से वो और भी उलझ गया था।

“तुम्हें याद है दो साल पहले बंबई की एक ज्वेलरी शॉप में क्या हुआ था? आयकर अधिकारियों का वेष धरकर कुछ लोगों ने दुकान में जाली छापा मारा था।”

“उन्होंने ये किया कैसे?” मुरली ने पूछा।

“सरग़ना ने टाइम्स ऑफ इंडिया में एक वर्गीकृत विज्ञापन दिया था, जिसमें ऐसे उम्मीदवारों से आवेदन मांगे गए थे जो सुरक्षा अधिकारी बनना चाहते थे,” अरबाज़ ने जवाब दिया। “विज्ञापन ने आवदेकों से अगले दिन एक ऑफ़िस के पते पर इंटरव्यू के लिए पहुंचने को कहा। सरग़ना ने आवेदकों का इंटरव्यू लिया, उनमें से दो दर्जन को चुना और उनसे अगले दिन एक नक़ली छापे के लिए पहुंचने को कहा।”

“फिर क्या हुआ?” मुरली ने आगे को झुकते हुए पूछा, उसकी उत्सुकता बढ़ चुकी थी।

“अगले दिन उसने उन्हें एक बस में सवार किया और उन्हें लक्षित ज्वेलरी शॉप पर ले गया। वहां पहुंचकर उसने मालिक को अपना परिचय दिया और एक जाली सर्च वारंट दिखाया। फिर उसने ज़्यादातर स्टॉक और कैश ज़ब्त कर लिया और मालिकों को एक रसीद दे दी। अपनी टीम पर ‘काम’ छोड़कर वो ‘एक और सरप्राइज़ रेड’ पर चला गया। एक घंटे बाद जब मालिक को पता लगा कि पीछे छूट गए टीम के सदस्य आयकर अधिकारी नहीं हैं, तो उसने पुलिस को फ़ोन किया।”

मुरली और अरबाज़ दिल खोलकर हंसे।

“वो कमाल की डकैती थी। उसे कभी पकड़ा नहीं गया। तिवारी इसी का ज़िक्र कर रहा था। जब वो कुछेक चुनिंदा जगहों पर असली आयकर के छापे मार रहा होगा, उस वक़्त हमारे आदमी बची हुई जगहों पर नक़ली छापे मार सकते हैं। आयकर की टीम अरविंद बागड़िया को बेरहमी से सताएगी जबकि हम अपने सारे नुक़सान पूरे कर लेंगे, ऊपर से बढ़िया मुनाफ़ा भी कमाएंगे।”



“तुम जो कह रहे हो उस पर मुझे साला विश्वास ही नहीं कर सकता,” अरविंद चिल्लाया। “ऐसा कैसे हो सकता है?”

एक असहज सी ख़ामोशी छाई रही जबकि उसकी टीम हालात को समझने की कोशिश में लगी थी।

“कल हमारा सारा दिन आयकर विभाग के सवालों के जवाब देने में लग गया,” अरविंद चिल्लाया। “और आज तुम मुझे बता रहे हो कि केवल बंबई के ऑफ़िस में पड़े छापे असली थे... कि हमारे कलकत्ता के कॉरपोरेट ऑफ़िस और दूसरे शहरों के हमारे ब्रांच ऑफ़िसों में पड़े बाक़ी छापे नक़ली थे। क्या तुममें से किसी ने पहचानपत्र और वारंट चैक करने की ज़हमत नहीं की?”

“छापा मारने वाले सभी दलों के पास सर्च वारंट और आयकर के पहचानपत्र थे,” जॉयदीप ने जवाब दिया। “बंबई ऑफ़िस पर सुबह दस बजे छापा पड़ा था। फिर जब ग्यारह बजे बाक़ी छापे पड़े तो हमने मान लिया कि ये वही है।”

“मान लिया? मान लिया? मैं साला तुम लोगों को कुछ भी मान लेने की तन्ख़ाह

नहीं देता हूं!" अरविंद चिल्लाया। "हमारा कितना पैसा गया?"

"सारी जगहों पर दो करोड़ से कुछ ज़्यादा कैश मौजूद था," सत्यपाल ने कहा। "वो उसे ले गए और हमें रसीदें दे गए।"

"इस बीच, असली अधिकारियों ने जिन्होंने बंबई ऑफ़िस पर छापा मारा था, रिकॉर्ड्स और बहीखाते ज़ब्त कर लिए," जॉयदीप ने कहा। "आयकर का चीफ़ कमिश्नर कोई सुशील तिवारी है। वो ख़ुद उस लेनदेन की प्रस्तावित देनदारी का हिसाब लगा रहा है जो हमने चंदर लखोटिया के साथ किया था।"

"ये तो साफ़ है कि चंदर लखोटिया ने ही ख़बर लीक की होगी," सत्यपाल ने कहा।

"अगर लखोटिया ने ख़बर लीक की है तो किसी ने उससे करवाई होगी," अरविंद ने कहा। "सवाल ये है किसने?"



"कलकत्ता मेडिकल कॉलेज आ जाओ," अभिलाषा ने फ़ोन पर कहा। वो थकी हुई और तनावग्रस्त लग रही थी।

"क्या बात है?" अरविंद ने पूछा।

"बाबूजी," उसने कहा। "उन्हें दिल का दौरा पड़ा है।"

अरविंद ने सब कुछ छोड़ा और बिना हिल्डा को कोई निर्देश दिए जैसे वो हमेशा देता था, अपनी कार में जा बैठा। जब बारिश होती है तो साली छप्पड़ फाड़ होती है, उसने सोचा।

उसने ड्राइवर से कहा कि दोगुनी तेज़ी से उसे कॉलेज स्ट्रीट ले चले। कलकत्ता मेडिकल कॉलेज पहुंचते ही वो सीधे कार्डियोलॉजी विंग की ओर भागा। गलियारे में बाहर उसने अपनी मां और पत्नी को देखा। दोनों बहुत ज़्यादा परेशान दिख रही थीं।

"कैसे हैं वो?" आसपास चल रही अस्पताल की गहमागहमी को नज़रअंदाज़ करते हुए उसने पूछा। उसकी मां आगे बढ़ीं और कसकर अरविंद से लिपट गईं, उनके आंसू बहने लगे थे।

अभिलाषा देख रही थी, उसे और भी ज़्यादा अपराधबोध हो रहा था।



1983 में व्यापार क्षेत्र के दो प्रमुख व्यक्तियों की मृत्यु हुई थी। ये दो ऐसे व्यक्ति थे जो अपनी नीति में एक दूसरे से भिन्न थे। पहले, भारतीय उद्योग के अग्रणी सदस्य घनश्याम दास बिरला थे जिनका 11 जून को लंदन में निधन हो गया था। फिर बृजमोहनलाल बागड़िया थे जो एक दिन बाद कलकत्ता में सिधार गए थे।

बिरला की अंत्येष्टि लंदन के गोल्डर्स ग्रीन क्रेमेटोरियम में हुई थी। बृजमोहनलाल बागड़िया की अंत्येष्टि केओड़ाटोला श्मशान घाट में हुई थी। जलती

हुई घास का गट्ठर पकड़कर अरविंद ने अपने पिता के शव की परिक्रमा की। फिर पंडित ने अरविंद को अग्नि देने का निर्देश दिया। जल्दी ही लकड़ी, बांस और घास की शैया पर रखा बृजमोहनलाल का शरीर आग की लपटों में समा गया। आग की सार-संभाल एक ब्राह्मण कर रहा था जो शिव की प्रशंसा में मंत्रोच्चार कर रहा था।

अंत्येष्टि में बैंकर, उद्योगपति, कारोबारी, भूस्वामी और अधिकारी वर्ग के लोग शामिल हुए थे। कलकत्ता में कोई ऐसा नहीं था जिसने अरविंद के साथ कारोबारी लेनदेन न किया हो, और उसके सारे दोस्त भी मौजूद थे। अरविंद के दुश्मन भी मौजूद थे। जन्म, शादियां और मौतें कभी किसी एक गुट के लिए आरक्षित नहीं होतीं। जब आप मरेंगे तो कौन रोएगा? अगर आपका बेटा दौलतमंद और ताक़तवर है तो कुछेक।

बागड़िया कुनबे के भी कई लोग मौजूद थे। ये वही परिवार था जिसने बृजमोहनलाल को बहिष्कृत कर दिया था और उन्हें अवांछित व्यक्ति घोषित कर दिया था। जब बृजमोहनलाल का बेटा अरविंद करोड़पति हो गया, केवल तब उन लोगों को उनकी याद आने की सूझी थी।

बृजमोहनलाल की ज़िंदगी भी जटिल रही थी। दार्जीलिंग के एक चाय बाग़ान में सीनियर मैनेजर रहे उनके पिता चाहते थे कि वो बाग़ान में ही फ़ैक्टरी मैनेजर का पद संभाल लें। बृजमोहनलाल अड़े थे कि वो कलकत्ता जाएंगे और जूट के कारोबार में लगेंगे। उन्होंने अपने पिता की मर्ज़ी के बिना ये किया था।

बृजमोहनलाल के पिता के नज़रिए की भी एक वजह थी। वजह 1652 से जुड़ी थी। बृजमोहनलाल के दूर के एक पूर्वज हीरानंद साहू 1652 में मारवाड़ के—जयपुर और बीकानेर के बीच स्थित एक छोटे से धूल भरे शहर—नागौर से पटना आए थे। पटना में वो स्थानीय शासकों के साथ-साथ विदेशी व्यापारियों के लिए भी प्रमुख साहूकार के रूप में उभरे। उनके सबसे बड़े बेटे माणिक चंद ढाका चले गए जो सत्रहवीं शताब्दी में बंगाल का प्रमुख वाणिज्यिक केंद्र हुआ करता था। ढाका में माणिक चंद ने अपनी गतिविधियों के पोर्टफ़ोलियो में उपयोगी वस्तुओं को भी जोड़ लिया।

जब बंगाल के एक हिंदू ब्राह्मण द्वारा परवरिश पाए पहले नवाब मुर्शीद क़ुली ख़ान ने एक नए शहर मुर्शिदाबाद को बंगाल की राजधानी बनाया जिसका नाम उन्होंने अपने नाम पर रखा था, तो माणिक चंद भी वहां चले गए। 1714 में मृत्यु होने तक उनका व्यापार कई गुणा बढ़ गया था। अब व्यापार की शाखाएं मुर्शिदाबाद के अलावा दिल्ली, हुगली, कलकत्ता, ढाका और वाराणसी में भी फैल गई थीं।

माणिक चंद के बेटे फ़तह चंद के समय में परिवार अपनी पराकाष्ठा पर था, जिन्हें मुग़ल बादशाह ने 1722 में जगत सेठ की पदवी अता की थी। ये नाम उन पर खरा भी उतरता था। वो मुर्शिदाबाद टकसाल का प्रबंध करते थे, स्थानीय शासकों और विदेशी व्यापारियों को पैसा देते थे और उन्हें राज्य का कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया था। वो अकेले ही ईस्ट इंडिया कंपनी को चार लाख प्रति वर्ष उधार दिया करते थे!

और ये विडंबना ही है कि अंग्रेज़ ही जगत सेठों के पतन की वजह बने। जगत सेठों ने 1757 में प्लासी के युद्ध के दौरान अंग्रेज़ों का साथ दिया था, और इस तरह बंगाल पर नियंत्रण पाने में उनकी मदद की थी। जब अंग्रेज़ों का प्रभाव और

प्रशासन मज़बूत हुआ तो जगत सेठों की स्थिति कमज़ोर पड़ने लगी। अंतत: अंग्रेज़ों ने ऐसे कई काम हथिया लिए जो आमतौर पर जगत सेठ किया करते थे।

उन्नीसवीं सदी तक परिवार अंग्रेज़ों से पेंशन लेने पर विवश हो गया, और बीसवीं सदी तक उनके वंशज नौकरी के अवसर तलाशने के लिए मजबूर हो गए थे। बृजमोहनलाल की परदादी एक जगत सेठ थीं और उन्होंने फ़तहपुर के नाथूलाल बागड़िया से शादी की थी। बाद की पीढ़ियों ने, बृजमोहनलाल के पिता समेत, हमेशा नौकरी ही की और व्यापार को छोड़ दिया था।

अपना व्यापार करने की बृजमोहनलाल की हठ और बाद में शकुंतला से शादी करने के निर्णय ने, जो बागड़ियों से नीची जाति की थीं, परिवार से सारे रिश्ते ख़त्म कर दिए। परिवार से किसी भी तरह के सहयोग के बिना गुजर-बसर करने की जद्दोजहद का असर दंपती पर पड़ा। ख़ुशक़िस्मती से बृजमोहनलाल का एक स्कूल का साथी बंगाल की सबसे पुरानी जूट मिलों में से एक कामारहट्टी में मैनेजर था। उसने बृजमोहनलाल को उसका पहला काम दिया था। इससे काम चल निकला। बृजमोहनलाल लखपति तो नहीं बने मगर ऐसी ज़िंदगी बनाने में कामयाब रहे थे जिसे ज़्यादातर मानदंडों पर समृद्ध कहा जा सकता था।

अरविंद अपने पिता के शव को अग्नि की भेंट चढ़ते देखता रहा। उसे परोमिता की याद आई। उसे याद आया उसका उमर ख़य्याम की रुबाइयां सुनाना।

चंद लम्हे जो बचे हैं उन्हें जी भर जी लें, मौत से पहले ज़रा हस्ती की मय को पी लें!



25 जून 1983 को लंदन में ख़ुशनुमा धूप खिली थी, लेकिन बंबई में आधी रात होने में पांच मिनट बाक़ी थे जब टेलीविज़न सैट के सामने बैठे पांच लोग बुरी तरह पसीने में नहाए हुए गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहे थे।

लॉर्ड्स की दर्शक दीर्घा में जमा पच्चीस हज़ार दर्शकों की आंखें बॉल पर चिपकी हुई थीं जबकि वो हवा में घूमती हुई आउटफ़ील्ड की ओर जा रही थी। और भारत में भी लाखों भारतीय अपनी निगाहें टेलीविज़न सैटों पर टिकाए बैठे थे और मना रहे थे कि उस नाज़ुक पल में कहीं ट्रांसमीशन लिंक टूट न जाए और मैच की जगह शम्मी कपूर के गाने गाते मुहम्मद रफ़ी का फ़ुटेज न लगा दिया जाए।

ये अप्रत्याशित मोड़ों वाली श्रृंखला रही थी जो भारत को फ़ाइनल तक ले गई थी। कपिल देव ने ज़िम्बाब्वे के ख़िलाफ़ बेहतरीन एक दिवसीय शतकीय पारी खेली थी; यशपाल शर्मा और संदीप पाटिल सेमी-फ़ाइनल के दौरान डटे रहे थे; बलविंदर संधू ने गॉर्डन ग्रीनिज को चौंका देने वाली शानदार इन-स्विंगर फेंकी थी... फ़हरिस्त अंतहीन थी।

उस दिन फ़ाइनल मैच के दौरान, भारत को 183 रन पर समेट दिया गया था, और रिचर्ड्स ने एक विकेट पर 50 रन के स्कोर पर लाकर वेस्टइंडीज़ की ओर से मज़बूत जवाब दिया था। कैरिबियाइयों ने जश्न मनाना शुरू भी कर दिया था। और फिर कपिल

चमत्कारिक ढंग से अपनी जगह से पीछे भागे, अपनी लंबी-लंबी बांहें फैलाए, उनकी आंखें पल भर को भी बॉल से नहीं हटी थीं, और उन्होंने 33 रन पर रिचर्ड्स को लपक लिया। भारतीय खुशी भरे पागलपन में डूब गए। फिर मदन लाल और मोहिंदर अमरनाथ ने स्विंग करती हुई गेंदें डालीं और अविश्वसनीय रूप से तीन-तीन विकेट झटक लिए, और इस तरह हतप्रभ वेस्टइंडीज़ को 140 रन पर समेट दिया। दुनिया भर के भारतीयों को लगा था जैसे भगवान ने उन्हें जीत दिलाई है। और कपिल देव भगवान थे।

वो चार लोग जो टेलीविज़न के सामने पागल हुए जा रहे थे, वो थे अरबाज़, मुरली, राजू और एक चौथा मेहमान-यश धर।

अरबाज़ के आग्रह पर राजू प्रूडेंशियल वर्ल्ड कप के लिए क्रिकेट की बैट स्वीकार करने लगा था। किसी ने कभी भी दूर-दूर तक कपिल देव की टीम द्वारा वेस्टइंडीज़ को हराने की संभावना नहीं जताई थी और इसने अंततः यही किया था। फ़ाइनल के दिन भी, लंदन में भारत की जीत पर लगे दांव 66-1 थे। टीम के कैप्टन के रूप में कपिल देव का ये पहला-पहला सीज़न था, उन्होंने कुछ महीने पहले ही गावस्कर से ये भार संभाला था। मुरली ने बड़ी होशियारी से सारा हिसाब लगाया था और राजू को सलाह दी थी कि भारत की जीत पर 11-1 की संभावना रखे। तीन प्रतिशत से भी कम सट्टेबाज़ों ने भारत पर अपना पैसा लगाया था। और नतीजा ये रहा कि अरबाज़ ने ज़बरदस्त मुनाफ़ा कमाया।

“इस घटना ने क्रिकेट को हमेशा के लिए बदल दिया है,” अरबाज़ ने अपना पैग गले से उतारते हुए कहा।

“कैसे?” राजू ने एक छोटे से डिब्बे से पान निकालकर उसे अपने मुंह में रखते हुए पूछा।

“पहली बात, टेलीविज़न रंगीन सीधे प्रसारण के साथ हमेशा रहेगा,” अरबाज़ ने समझाया। “दूसरे, खेल का छोटा फ़ॉर्मेट टैस्ट मैचों की जगह ले लेगा। तीसरे, विज्ञापनों और स्पॉन्सरशिप में ज़बरदस्त पैसा आएगा। चौथे, बैटिंग में हम ज़बरदस्त मुनाफ़ा कमाएंगे।”

“हां, बड़े बदलाव तो जल्दी ही आएंगे,” यश ने भी सुर मिलाया।

जिस दिन से अरबाज़ ने सीएम को उसके पीछे से हटाने में मदद की थी, यश अरबाज़ का अहसानमंद हो गया था। पत्रकारिता की अपनी नौकरी छोड़कर वो फिर से फ़्लाइंग की दुनिया के अपने पुराने दोस्तों के साथ जुड़ गया था। उनमें से एक एयरलाइन का पाइलट था जिसका नाम राजीव गांधी था। तीन महीने बाद यश कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गया। उसके बाद यश ने अरबाज़ के साथ अपना रिश्ता बनाया और मज़बूत किया। जीत का जोश दबने के बाद, यश अरबाज़ को राज़ी करने में लग गया कि उसे भी कांग्रेस पार्टी में शामिल हो जाना चाहिए।

“इससे क्या हासिल होगा?” अरबाज़ ने पूछा।

“देश को ऐसे लोग चाहिएं जो काम करवा सकें, इससे फ़र्क़ नहीं पड़ता कि वो कैसे

करवाए जाते हैं," यश ने जवाब दिया। "देश बेक़ाबू होता जा रहा है। ख़बर ये है कि जरनैल सिंह भिंडरावाले बहुत जल्दी स्वर्ण मंदिर पर क़ब्ज़ा कर लेगा। पंजाब बदहाल है। सियासी तौर पर दक्षिण में भी हालात ख़राब हैं। एन. टी. रामाराव ने आंध्र प्रदेश में कांग्रेस को हरा दिया है और अब वहां एक ग़ैरकांग्रेसी राज्य सरकार है।"

"तुमने मेरा सवाल ग़लत समझा," अरबाज़ ने कहा। "मेरा मतलब था कि कांग्रेस में शामिल होने से मुझे क्या हासिल होगा?"

यश हंसा। "मेरे साथ दिल्ली चलो। पार्टी के बॉसों से मिलना। तुम्हें पता चल जाएगा।"



"तुमने ख़बर सुनी?" यश ने फ़ोन पर पूछा।

"कैसी ख़बर?" अरबाज़ ने पूछा।

"मिसेज़ गांधी की हत्या हो गई है," यश ने जवाब दिया।

"क्या?! किसने की? और क्यों?" अरबाज़ ने पूछा, उसका सिर घूम रहा था।

"वो सफ़दरजंग रोड के अपने निवास पर थीं। उनके दो सिख अंगरक्षकों ने अपने सर्विस हथियारों से उन्हें गोली मार दी," यश ने कहा। "बज़ाहिर, ये ऑपरेशन ब्लूस्टार का बदला था।"

पांच महीने पहले, भारतीय सेना जरनैल सिंह भिंडरावाले और उसके हथियारबंद अनुयायियों को अंदर से निकालने के लिए सिखों के पवित्रतम स्थल स्वर्ण मंदिर के हरमंदिर साहब में घुस गई थी। इस कार्रवाई ने सिखों के विशाल आंदोलनों और नाराज़गी को जन्म दिया। भारतीय सेना के सिख सैनिकों ने विद्रोह कर दिया, कुछ सिखों ने सरकारी नौकरियों से इस्तीफ़े दे दिए और बहुतों ने सरकार से प्राप्त अपने पुरस्कार, सम्मान और मैडल लौटा दिए थे।

"अब क्या होगा?" अरबाज़ ने पूछा।

"शव ऑल इंडिया इंस्टीटचूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेज़ में रखा है," यश ने कहा। "बहुत मुमकिन है कि राजीव को प्रधानमंत्री पद की शपथ दिलाई जाए और नए चुनाव करवाए जाएं। तुम्हें दिल्ली आना होगा... या शायद, मेरे फ़ोन करने तक इंतज़ार करो।"

"क्यों?"

"लूट और हिंसा की कुछ घटनाएं हुई हैं," यश ने कहा। "हालात ज़रा शांत होने दो, फिर मैं तुम्हें बुला लूंगा।"

"नहीं, यश, मुझे आ जाना चाहिए," अरबाज़ ने कहा। "मुझे अंत्येष्टि में नज़र आना चाहिए। मैं अपने बॉडीगार्ड्स के साथ आऊंगा।"



उन बहत्तर घंटों के दौरान दिल्ली सिखों के ख़ून से नहा गई थी।

जब उपद्रव शुरू हुआ तब अरबाज़ यश के महारानी बाग़ स्थित घर में ठहरा हुआ था। हालांकि त्रिलोकपुरी, कल्याणपुरी और मंगोलपुरी जैसी कॉलोनियों में हिंसा सबसे ज़्यादा थी, लेकिन जल्दी ही लूटमार कनॉट प्लेस, वसंत विहार, महारानी बाग़, न्यू फ़्रेंड्स कॉलोनी, लोधी कॉलोनी और हॉज़ ख़ास तक फैल गई।

सिख बहुल इलाकों में पहला लक्षय तो गुरुद्वारे थे। दंगाई गुरु ग्रंथ साहब पर पेशाब करके उन्हें अपवित्र करते और इसके बाद गुरुद्वारों को जला दिया जाता। अगला लक्षय प्रत्यक्ष नजर आते प्रतीकों—पगड़ी, बिना कटे बाल और दाढ़ी—से चुने जाते। हमलावर सिख घरों पर धावा बोलते और आदमियों को खींचकर बाहर निकाल लेते, उनकी दाढ़ियां नोचते, रॉडों से उन्हें पीटते और आख़िर में उनकी गर्दनों में जलते टायर डालकर उन्हें मार डालते। दिल्ली पुलिस सिरे से नदारद थी।

"अंदर ही रहो और इसे दबने दो," यश ने अरबाज़ से कहा।

"तुम कायरों की तरह बर्ताव क्यों कर रहे हो?" अरबाज़ ने तर्क किया। "दिनदहाड़े लोगों को मारा जा रहा है और तुम साला घर में दुबके बैठे हो!" मैं तुम्हें कैसे बताऊं कि बहुत से नेता खुलकर दंगाइयों का साथ दे रहे हैं? यश ने सोचा।

उस दोपहर एक भीड़ यश के घर पहुंची लेकिन उसे छुआ भी नहीं गया। दो ब्लॉक आगे सरदार हरपाल सिंह के घर को लक्षय बनाया गया। वो और उनका परिवार तो विदेश में थे लेकिन वहां एक मेहमान रुकी हुई थीं।

चीख़ने-चिल्लाने की आवाज़ें सुनकर अरबाज़ बाहर भागा तो उसने देखा कि नशे में धुत बदमाश एक स्त्री को बालों से घसीटते हुए सड़क पर ला रहे हैं। "ख़ून के बदले ख़ून, किसी सरदार को मत छोड़ो," भीड़ चिल्ला रही थी।

अरबाज़ का ख़ून खौल उठा। चौकीदार की लाठी लेकर वो कूद पड़ा। उसके दोनों बॉडीगार्ड भी उसके पीछे भागे। अरबाज़ को वो ट्रेनिंग याद आ गई जो तालीमख़ाने में इक़बाल ने उसे दी थी। उसे एक खाट पर खड़ा किया जाता था, जिसके नीचे इक़बाल एक मुग़री को छोड़ देता था। हवाईजहाज़ के प्रोपैलर की तरह अपने चारों ओर लाठी घुमाते हुए ये सब उसे याद हो आया, जिससे अपनी खोपड़ी खुलवाए बिना हमलावरों के लिए उस महिला तक पहुंच पाना नामुमकिन हो गया था।

कुछ मिनट बाद अनमना सा यश दौड़ता हुआ बाहर आया और उसने बदमाशों को आदेश दिया। "इन्हें कोई छुएगा भी नहीं। घर जाओ!"

सिख विरोधी दंगों में अंतत: 2,733 लोग मारे गए, और 1,300 औरतें विधवा हुईं, 4000 बच्चे अनाथ हुए। कुछ दिन बाद, राजीव गांधी ने दार्शनिक अंदाज़ में कहा कि जब भी कोई बड़ा पेड़ गिरता है, तो धरती थोड़ा हिलती है। अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने बुद्धिचातुर्य से राजीव के शब्दों का खंडन किया था। वाजपेयी ने कहा कि राजीव अभी इतने तजुर्बेकार नहीं हैं कि ये समझ सकें कि इसका उलटा होता है—जब

धरती हिलती है तो बड़े-बड़े पेड़ भी उखड़ जाते हैं।

"आप कौन हैं?" सरदारनी को यश के घर ले जाते हुए अरबाज़ ने पूछा।

"मेरा नाम अध्यापिका ज्योति है," उस महिला ने कहा।



"जिस घर में मैं ठहरी हुई हूं, वो सरदार हरपाल सिंह और उनकी पत्नी कमलजोत का है। हरपाल एक अमीर व्यापारी हैं जो अपना समय भारत और भूटान में बिताते हैं," अध्यापिका ज्योति ने कहा। "वो और उनका परिवार मेरे शिष्य हैं। जब भी मैं दिल्ली में होती हूं, उनके ही घर में ठहरती हूं। मैं जल्दी से नहाने आई थी कि तभी हंगामा शुरू हो गया।"

वो बिल्कुल शांत भाव से ये कह रही थीं। मानो अभी-अभी समाधि से निकली हों। ऐसा ज़रा भी आभास नहीं हो रहा था कि वो गुंडों से या उनके हमले से प्रभावित हुई हैं।

उन्होंने यश के नौकर द्वारा लाई चाय का घूंट लिया और अरबाज़ से बोलीं, "मेरा हमेशा से ये विश्वास रहा है कि अगर हमारा समय अभी नहीं आया है तो परमात्मा हमारी रक्षा करने का कोई न कोई उपाय कर ही देता है। तुम्हारे माध्यम से उसने मेरी रक्षा की, बेटे।"

अरबाज़ मुस्कुराया, अपनी तारीफ़ से वो कुछ सकुचा सा गया था। यहां एक माफ़िया डॉन जिसका अधिकांश बंबई पर नियंत्रण था, और वो इस गहन रूप से आध्यात्मिक महिला की मौजूदगी में किसी स्कूली बच्चे जैसा महसूस कर रहा था।

"तुम्हारा नाम क्या है, बेटे?" उन्होंने पूछा।

"अरबाज़," उसने जवाब दिया।

"और ये तुम्हारा घर है?" उन्होंने पूछा।

"नहीं, मैं बंबई में रहता हूं," उसने जवाब दिया। "ये मेरे दोस्त यश का घर है," उसने यश की ओर संकेत किया जो सोफ़े पर उसके पास ही बैठा था।

"अच्छा, अरबाज़, मुझे चलना चाहिए," उन्होंने कहा। "तुम पर मेरा बहुत आशीर्वाद रहेगा, हमेशा।"

"क्या आपको यक़ीन है कि आप उस घर में वापस जाना चाहेंगी?" अरबाज़ ने पूछा। "क्या आपकी सुरक्षा के लिए मैं अपने किसी आदमी को भेज दूं?"

"मैं उस घर में वापस नहीं जा रही हूं, अरबाज़," उन्होंने उत्तर दिया। "मैं तो घर-घर लोगों को दिलासा देने जाने का सोच रही हूं। सैकड़ों की जान गई है, बलात्कार हुआ है या अनाथ हो गए हैं। बहुत लोगों को मेरी ज़रूरत है।"

"आपके लिए इधर-उधर घूमना सुरक्षित नहीं है," अरबाज़ ने विरोध किया।

“वो क्या कर लेंगे? मुझे मार डालेंगे? वो केवल मेरे शरीर को मार सकते हैं, आत्मा को नहीं। मेरी आत्मा अमर है,” उन्होंने जाने के लिए खड़े होते हुए कहा।



“मुझे नहीं लगता कि मैं कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ना चाहता हूं,” अरबाज़ ने यश से कहा।

“क्यों?” यश ने पूछा। “सिख विरोधी दंगों में हुई हत्याओं की वजह से? बंबई के सबसे ताक़तवर डॉन के मुंह से ये कुछ ज़्यादा नहीं है?”

“मैं बिज़नेस के लिए जान लेता हूं, मज़े के लिए नहीं,” अरबाज़ ने कहा।

“ऐसा कोई वक़्त नहीं रहा जब हिंदुस्तान मज़हबी दंगों से आज़ाद रहा हो,” यश ने प्रतिवाद किया। “इस हमाम में सब नंगे हैं, अरबाज़, हर समुदाय अपराधी रहा है, चाहे वो हिंदू हो, या मुसलमान, ईसाई या सिख। प्राचीन भारत के सबसे महान सम्राट अशोक तक ने आजीविका मत के 18,000 अनुयायियों को मौत के घाट उतरवा दिया था।”

अरबाज़ ख़ामोश रहा।

“सबसे ज़्यादा उदार अकबर ने भी चित्तौड़ में आठ हज़ार हिंदुओं को मरवाने का आदेश दिया था,” यश ने कहा।

अरबाज़ ख़ामोश ही रहा।

“महान महाराजा रंजीत सिंह ने अपने गवर्नर को श्रीनगर की जामा मस्जिद गिराने और हज़ारों मुसलमान पश्तून क़बायलियों को मरवाने का आदेश दिया था,” यश ने कहना जारी रखा।

अरबाज़ सोच में डूबा रहा।

“महान टीपू सुल्तान ने श्रीरंगपट्टनम में सत्ताईस चर्च नष्ट कर दिए थे और साठ हज़ार से ज़्यादा सीरियाई ईसाइयों को पकड़ लिया था। बलपूर्वक निकाले गए मार्च के दौरान क़रीब बीस हज़ार लोग मारे गए थे,” यश ने बताया।

अरबाज़ सोचता ही रहा।

“पुर्तगाली कैथोलिकों ने एन्क्विज़िशन की स्थापना की थी जिसने गोआ में हज़ारों हिंदुओं को यातनाएं दीं और जान से मार डाला,” यश ने कहा।

अरबाज़ अपना मन बना चुका था।

अगले दिन, वो एक व्यक्ति से मिलने पहुंचा जिनसे वो बारह साल पहले हैदराबाद में मिला था। उस समय वो आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री थे और अरबाज़ उनसे मिलने के लिए एक बहुभाषी पियरे लैक्रॉइ को साथ ले गया था।

भूतपूर्व मुख्यमंत्री अब विदेश मंत्री थे। उनका नाम पी.वी. नरसिम्हा राव था।

उनकी दूसरी मुलाक़ात के अगले दिन अरबाज़ औपचारिक रूप से कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गया।

बंबई वापस आने पर अरबाज़ को फूलों का एक बुके मिला। वो शिव सेना के केशव गाडगिल ने भेजा था। उसके साथ लगे नोट पर लिखा था: "राजनीति के अखाड़े में स्वागत है। मैं हमारे मुक़ाबले का इंतज़ार करूंगा।"



14 नवंबर, 1984 को आम चुनावों की घोषणा कर दी गई।

अरबाज़ अंधाधुंध चुनाव प्रचार में जुट गया। उसके निर्वाचन क्षेत्र में 644,716 मतदाता दर्ज थे। उसका काम था एक-एक से संपर्क साधना। मुरली और राजू शुरू में थोड़े शंकालु थे मगर अरबाज़ का उत्साह देखकर उन्होंने झटपट अरबाज़ के वफ़ादार समर्थकों के साथ एक चुनावी दफ़्तर बना दिया।

अरबाज़ रोज़ाना कम से कम पांच जनसभाओं को संबोधित करता था। मुरली ने एक नई मारुति 800 ख़रीदी थी—जो पिछले साल ही भारत में लॉन्च हुई थी—ताकि अरबाज़ आमतौर से लगने वाले समय से बहुत कम समय में भीड़ भरे इलाक़ों में आ-जा सके। अरबाज़ कभी पहले से तैयार किया भाषण नहीं बोलता था, वो हमेशा पहले भीड़ के मूड को भांपता और फिर अपने अल्फ़ाज़ चुनता। एक मौक़े पर, मुरली उस दिन की सभाओं में अरबाज़ के साथ गया था, और अचंभित सा लौटा।

उस दिन की पहली सभा में उसने मुसलमान नौजवानों की एक भीड़ से कहा, "मैं ही तुम्हारा बाप हूं। मैं ही तुम्हारी मां हूं। क्या मैंने हमेशा मां-बाप की तरह तुम्हारा ध्यान नहीं रखा है?"

मध्याह्न की सभा में उसने राज-मिस्त्रियों के एक समूह से कहा, "ऐसे भी लोग हैं जो कहते हैं कि मैं बुरा हूं? हां, मैं बुरा आदमी हूं। मैं उन लोगों के लिए बुरा हूं जो ग़रीब-मज़लूमों को सताते हैं। क्या दो वक़्त की रोटी, तन पर कपड़ा और सर के ऊपर एक छत मांगना गुनाह है? लानत है उन नेताओं पर जिन्हें आपने वोट दिया था। मैं कोई एक विकल्प नहीं हूं। मैं आपका एकमात्र विकल्प हूं!"

दोपहर की सभा में उसने झोपड़पट्टी के एक समूह से कहा, "परवरदिगार ने एक बार मुझसे पूछा था कि वो मुझे और क्या दे सकता है। मैंने जवाब दिया, मुझे दूसरों की मदद करने की तौफ़ीक़ दे। उनकी सेवा करके मैं तेरी सेवा करना चाहता हूं। यहां ऐसे सैकड़ों लोग हैं जिनके आंसू मैंने ख़ुद पोंछे हैं। मैं बस और लोगों के आंसू पोंछने का मौक़ा पाना चाहता हूं। उम्मीद है, मैं उन आंसू भरे चेहरों पर मुस्कान भी ला सकूंगा।"

शाम को उसने एक लेबर यूनियन को संबोधित किया। उसने कहा, "आपको कोई मज़बूत शख़्स चाहिए। कोई ऐसा जो आपके लिए खड़ा हो सके। कोई जो आपकी ओर से इंसाफ़ और इज़्ज़त की मांग कर सके। एक मैं ही हूं जो आपके लिए ऐसा कर सकता है।"

रात में उसने एक युवा कॉन्फ़्रेंस को संबोधित किया। “मेरे विरोधी कमज़ोर हैं। कल, मैंने उन सबको चूड़ियों के डिब्बे भेजे थे। उनमें से किसी में इतनी हिम्मत नहीं है कि सड़क पर मेरा सामना कर सकें, तो वो बैलट-बॉक्स पर मेरा सामना कैसे करेंगे?”

मुरली को यक़ीन हो गया था कि अरबाज़ जीत जाएगा। मुसलमान तो पहले ही उसे वोट देने का इरादा कर चुके थे। उसकी जीत हिंदू वोटों के रुझान पर निर्भर करती थी। उसने अरबाज़ से इस बारे में बात की और अरबाज़ ने तुरंत ही मंदिरों में दर्शनों को भी अपने कार्यक्रम में शामिल कर लिया।

चुनाव प्रचार 23 दिसंबर 1984 को शाम पांच बजे ख़त्म हुआ। 5,301 उम्मीदवारों और छियालीस पार्टियों की क़िस्मत का फ़ैसला वोटों की गिनती के बाद तय होगा। कुल 38.9 करोड़ लोग मत डालने के योग्य थे और वो सभी वोट की ताक़त को जानते थे। ये वही वोट था जिसने मिसेज़ गांधी को निकाल बाहर किया था। ये वही वोट था जो उन्हें वापस ले आया था।

जैसा सामने आया, राजीव गांधी ने बहुत आसानी से चुनावों में भारी बहुमत से जीत हासिल की। ये अभूतपूर्व जीत थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने लोकसभा की 533 में से 404 सीटें जीती थीं, और पचास फ़ीसदी से ज़्यादा लोकप्रिय मत जुटाने में कामयाब रही थी। मिसेज़ गांधी की हत्या की त्रासदी ने इस शानदार पुरानी पार्टी के लिए वोटों को एकीकृत करने में अहम भूमिका निभाई थी।

अटल बिहारी वाजपेयी, जिन्होंने राजीव गांधी को उनके ‘पेड़ गिरने’ के बयान के लिए झिड़का था, ऐसी पार्टी के साथ रह गए थे जो नष्टप्राय हो गई थी। बीजेपी को उम्मीद थी कि मिसेज़ गांधी की हत्या के बाद हुई हिंसा से उसे लाभ होगा मगर ऐसा नहीं हुआ और 224 सीटों पर चुनाव लड़ने के बाद भी पार्टी मात्र दो सीटें ही जीत पाई थी। एन.टी. रामाराव की तेलुगु देशम पार्टी तीस सीटें जीतकर दूसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में सामने आई। भारत में पहली बार कोई क्षेत्रीय पार्टी सबसे बड़ा विपक्षी दल बनी थी।

अरबाज़ शेख़, बंबई दक्षिण का सांसद, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 403 अन्य सहयोगियों के साथ दनदनाता लोकसभा में पहुंचा था। उन्होंने एक मशहूर फ़िल्म स्टार अमिताभ बच्चन को भी शामिल किया था जो अड़सठ फ़ीसदी वोटों के साथ इलाहाबाद से जीते थे। अरबाज़ के पक्ष में 2,05,192 वोट पड़े थे। अगले सबसे बड़े उम्मीदवार—शिवसेना के केशव गाडगिल—को 1,96,313 मत हासिल हुए। अरबाज़ के 403 सहयोगियों में से एक यश धर था जिसने दिल्ली की चांदनी चौक सीट जीती थी।

चुनाव प्रचार और जीत के ख़ुमार की गहमागहमी में इस तथ्य की ओर बहुत कम ध्यान दिया गया था कि तीन हफ़्ते पहले, भोपाल में यूनियन कार्बाइड इंडिया के कीटनाशक संयंत्र में गैस रिसाव हो गया था। पांच लाख से ज़्यादा लोग घातक मिथाइल-आइसोसाइनेट गैस की चपेट में आ गए थे। मृत्यु के सरकारी आंकड़े 2,259 थे। जिन्हें बाद में सुधारकर 3,787 कर दिया गया, लेकिन ग़ैरसरकारी अनुमान के अनुसार आठ हज़ार लोगों की मौत हुई थी।

सोवियत तानाशाह जॉज़ेफ़ स्टालिन की एक मशहूर टिप्पणी है, "एक मौत त्रासदी है; दस लाख मौत एक आंकड़ा है।"



बीजेपी ने 224 सीटों पर चुनाव लड़ा था और केवल दो सीटें जीती थी। दो सीटें जो इसने जीती थीं, वो गुजरात के मेहसाणा, जहां से बीजेपी के डॉ. ए. के. पटेल संसद पहुंचे थे, और आंध्र प्रदेश के हनमकोंडा की थीं जहां से बीजेपी के पी. जे. रेड्डी जीते थे। हारने वाले उम्मीदवार कांग्रेस पार्टी के पी. वी. नरसिम्हा राव थे।



अरविंद ने बंगाल क्लब की अपनी मीटिंग के लिए निकलने से पहले हिल्डा को एक पत्र लिखवाया था।

31 अक्टूबर, *1984*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी

भारतीय जनता पार्टी

प्रिय अटलजी,

ये पत्र आपको याद दिलाने के लिए है कि भोर होने से पहले वाला घंटा सबसे ज़्यादा अंधकारमय होता है। मुझे विश्वास है आप शीघ्र ही भव्य सूर्योदय देखेंगे।

मेरी शुभकामनाएं,

अरविंद बागड़िया



अरविंद ठीक साढ़े बारह बजे यूनाइटेड फ़ेडरेशन बैंक के भूतपूर्व चेयरमैन देशमुख के साथ मीटिंग के लिए पहुंच गया था। ये बंगाल क्लब में लंच पर होनी थी।

अरविंद के पिता बृजमोहनलाल ने शुरू में क्लब की सदस्यता के लिए एप्लाई करने की कोशिश की थी। टॉली से लगभग सत्तर साल पहले स्थापित बंगाल क्लब अपनी परंपरा को एथेनियम, कार्लटन या रिफ़ॉर्म क्लब से कम नही कहता था। और टॉली के विपरीत, बंगाल क्लब खुद को किसी मुंहबोले नाम से नहीं बुलाने देता था। दुर्भाग्य से बंगाल क्लब की सदस्यता उपकमेटी के सत्रह सदस्यों में से एक ने बृजमोहनलाल के ख़िलाफ़ मत दिया। "हम यहां हर ऐरे-ग़ैरे को शामिल कर लेने के लिए इस उपकमेटी में नहीं बैठे हैं," विरोध में मत देने वाले सदस्य ने दंभपूर्वक किसी दूसरे सदस्य से कहा था। वो इकलौता मत बृजमोहनलाल को भूरे साहबों के गोरे क्लब से दूर रखने के लिए काफ़ी था। लेकिन टॉली बृजमोहनलाल के साथ सभ्य रहा था।

जिन हरामख़ोरों ने अरविंद के पिता को बंगाल क्लब में लेने से रोका था, वो अब

अरविंद को स्वीकार करने के लिए मजबूर हो गए थे। पैसा सब ठीक कर देता है, डाइनिंग रूम में घुसते हुए अरविंद ने सोचा, जो अपनी स्मोक्ड हिल्सा, हनी-ग्लेज़्ड हैम, लॉब्स्टर थर्मिडॉर और गसपाचो के लिए मशहूर था। अरविंद शाकाहारी था। सफ़ेद दस्ताने पहने वेटर जानते थे कि उसके खाने में उबले चावल, रसेदार सब्ज़ी और दही होगा। वो अपनी हमेशा वाली मेज़ पर बैठ गया और टॉनिक वाटर, नीबू और बर्फ़ का ऑर्डर दिया।

प्रबंध निदेशक और फिर चेयरमैन के अपने लंबे कार्यकाल के बाद देशमुख रिटायर हो चुका था, फिर उसने चैंबर्स ऑफ इंडियन कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के सेक्रेटरी-जनरल का पदभार संभाला था जिसे कारोबारी हलक़ों में सीआईसीआई के नाम से जाना जाता था।

जब कुछ हफ़्ते पहले देशमुख को उसके नए ओहदे की ख़बर दी गई थी, तो अरविंद ने उससे पूछा था, "सेक्रेटरी का अपमानजनक पद क्यों? ये तो टाइपिस्ट जैसा सुनाई देता है!"

देशमुख हंस पड़ा। "ये शब्द 'सेक्रेटरी' मध्ययुगीन लैटिन के सेक्रेतारियस से बना है जिसका अर्थ है एक ऐसा व्यक्ति जिसे राज़ सौंपे जाते हैं। इसीलिए अमेरिका में सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट है, इसीलिए कम्युनिस्ट पार्टी में जनरल-सेक्रेटरी होता है, और इसीलिए यूनाइटेड नेशंस में सेक्रेटरी-जनरल होता है।"

अरविंद ने अपने टॉनिक-वाटर का घूंट भरा और घड़ी पर नज़र डाली। 12:35। उसने देशमुख को एक और मेहमान के साथ आते देखा, जो लिनेन का टिपटॉप सूट पहने एक ख़ूबसूरत शख़्स था। अरविंद ने अपनी मेज़ से देशमुख को हाथ हिलाया, जबकि एक वेटर दोनों व्यक्तियों को अरविंद की मेज़ पर ले आया।

"मैं आपको खाद्य और नागरिक आपूर्ति के नए राज्य मंत्री यश धर से मिलवाता हूं," देशमुख ने कहा, दोनों व्यक्तियों ने हाथ मिलाए।

"राज्य मंत्री?" अरविंद ने पूछा।

"जूनियर मंत्री," यश ने बताया। "लेकिन अगली कैबिनेट का इंतज़ार करिए। तब मुझे कैबिनेट रैंक मिल जाएगा।"

"तो आज मैं आपसे क्या राज़ निकलवा सकता हूं?" जब देशमुख और यश बैठ गए तो अरविंद ने देशमुख से चुटकी ली।

"वो जिसे कोई राज़ रखना है," देशमुख ने कहा, "उसे हमेशा ये राज़ रखना चाहिए कि उसके पास राज़ रखने के लिए कुछ है!" तीनों व्यक्ति हंस पड़े।

उनके ऑर्डर देने के बाद अरविंद बोला। "मैं देशमुख जी का शुक्रगुज़ार हूं कि इन्होंने हमें मिलवाया," उसने यश से कहा। "मुझे यक़ीन है कि ऐसे क्षेत्र ज़रूर होंगे जो हमारी समान रुचि के हों।"

"समान रुचि के क्षेत्र?" यश ने पूछा। "पैसा कमाने के लिए अच्छा जुमला है। मुश्किल ये है कि हमारे प्रधानमंत्री को आम जनता ने 'मि. क्लीन' मान लिया है।

अब उन्हें इस नाम को जीना होगा।"

"सच तो ये है," अरविंद ने कहा, "कि तीन तरीक़े हैं जिनसे इस समय भारत में अच्छा पैसा कमाया जा रहा है। एक: किसी संसाधन को हासिल करना; दो: लाइसेंस हासिल करना; तीन: ज़मीन हासिल करना। चौथे के चक्कर में बहुत कम लोग पड़ते हैं।"

"चौथा क्या है?" उत्सुक यश ने पूछा।

"सूचना हासिल करना। काफ़ी पहले से सूचना हासिल करने की क्षमता। आप यहीं पर मेरी मदद कर सकते हैं।"



बंगाल क्लब में लंच के बाद बाहर आकर अरविंद अपनी मर्सिडीज़ बेंज़ 300टीडी वैगन की पिछली सीट पर बैठा और उसने ड्राइवर से वापस ऑफ़िस चलने को कहा जो कुछ ही मिनटों की दूरी पर चौरंगी रोड पर था।

चौरंगी रोड और सद्दर स्ट्रीट के चौराहे के नुक्कड़ पर उसकी कार कुछ पल को रुकी। अरविंद का ध्यान एक और कार पर गया जो पहचानी सी लगी। "दाहिनी ओर सद्दर स्ट्रीट पर ले लो," उसने अपने ड्राइवर से कहा। ड्राइवर ने दक्षता के साथ वही किया जैसा उसके मालिक ने कहा था।

वो सही था। ये जॉयदीप की नीली टोयोटा कॉरोना थी। वही जिसे जॉयदीप ने स्टेट ट्रेडिंग कॉरपोरेशन की नीलामी में लिया था। अरविंद ने जॉयदीप की कार को फ़ेयरलॉन होटल के ड्राइववे में जाते देखा।

वो उसके पीछे जाकर, पीठ पर धौल जमाते हुए कहने ही वाला था कि साथ बैठकर चाय पीते हैं कि तभी उसने एक और जानी-पहचानी कार, और एक और जाने-पहचाने चेहरे को देखा।



कल्याण सरकार जब ऑफ़ ड्यूटी होता था, तो सादे कपड़ों में रहता था। वैसे भी, पश्चिम बंगाल के पुलिस बल में उसका ओहदा उसकी शानदार कार्यकुशलता, बुद्धिमानी या अनुशासन की वजह से तो था नहीं।

1980 से ही पश्चिम बंगाल पर सीपीएम का शासन था। इसने राज्य में सफल भूमि सुधार किए थे और पार्टी ने खुद को मिली सियासी बढ़त का इस्तेमाल जल्दी ही एक ऐसे सिस्टम का निर्माण करने में किया जो सत्ता को संरक्षित रख सकता था। इसने संरक्षण का जो सिस्टम बनाया था वो इतना व्यापक था कि पॉलिटब्यूरो का आदेश राइटर्स बिल्डिंग्स से लेकर सुदूर गांवों की पंचायत तक चलता था। कल्याण सरकार बस इसी सिस्टम की पैदावार था। वो जानता था कि कौन से बटन दबाने हैं और किन क़ब्ज़ों में तेल डालना है।

नतीजा ये था कि हालांकि कल्याण सरकार सरकार से वेतन लेता था, मगर उसकी मुख्य आमदनी पुलिसवालों को निजी सेवाओं के लिए प्रदान करने से होती थी। ये फलता-फूलता कारोबार था। अरविंद कई बार उसकी सेवाएं ले चुका था और उसे हर महीने पैसा भी देता था। "ये मत पूछ़ना कि तुम्हारा पुलिस अफ़सर तुम्हारे लिए क्या कर सकता है, ये पूछो कि तुम अपने पुलिस अफ़सर के लिए क्या कर सकते हो," कल्याण सरकार और उसके आदमियों का यही स्वीकृत आदर्श वाक्य था।

अरविंद ने अपने ब्रीफ़केस से नोटों का एक बंडल निकाला और उसे मोटे काग़ज़ के लिफ़ाफ़े में रख दिया। उसे उसने सरकार को थमा दिया।

"अपने बेहतरीन बंदे को काम पर लगा दें," अरविंद ने उससे कहा।

"फ़िक्र न करें, बॉस," कल्याण ने खींसें निपोरते हुए कहा। "आपसे मिलने वाले कामों पर मैंने कभी भी बेहतरीन से कम किसी बंदे को नहीं लगाया है।"



जॉयदीप उत्साह के साथ अरविंद के दफ़्तर में घुसा। "मैंने पता लगा लिया है क्या हुआ था," उसने सामने पड़ी कुर्सियों में से एक पर बैठते हुए कहा।

"तुम कहां थे?" अरविंद ने पूछा।

"कुछ खोजबीन कर रहा था। हमारे चार्टर्ड अकाउंटेंट चंदर लखोटिया पर आयकर के चीफ़ कमिश्नर ने दबाव डाला था हमारी चुग़ली करे।"

"ये तो मुझे पता है," अरविंद ने बेख़्याली में अपनी मेज़ पर रखे चांदी के ठोस पेपरवेट से खेलते हुए कहा। ये पेपरवेट उसके पिछले जन्मदिन पर उसकी मां ने उसे भेंट किया था। ये क़रीब पांच सेंटीमीटर के व्यास और एक सेंटीमीटर की मोटाई वाली चांदी की डिस्क थी। डिस्क के चारों ओर बड़ी सुघड़ता से तांबे का कड़ा लिपटा हुआ था जिसे अरविंद सारी ज़िंदगी अपनी मां से मांगता रहा था। शकुंतला ने अपने सुनार से हाथ से इस पेपरवेट को गढ़वाया था, और ये शानदार दिखता था।

"हां," जॉयदीप ने कहा। "लेकिन तुम्हें ये नहीं पता है कि हमारे बैंक यूनाइटेड फ़ेडरेशन बैंक का बंबई में एक और क्लायंट है। जब हमने क़ुर्बानी होटल्स लिमिटेड के शेयर की क़ीमतों में गड़बड़ी की थी तो इस क्लायंट ने बहुत पैसा गंवा दिया था।"

"तुम्हारा मतलब धंधा होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड?" अरविंद ने पूछा।

"वही, धंधा होल्डिंग्स प्राइवेट लिमिटेड। उसका प्रबंध निदेशक मुरली अय्यर हमारी वार्षिक आम बैठक में आया था और उसने तुम्हारी बहुत तारीफ़ की थी।"

"मुझे याद है," अरविंद ने कहा। "उसका क्या है?"

"वो तो बस एक मुखौटा है। ये कंपनी तो बंबई के अंडरवर्ल्ड का ज़बरदस्त हवाला ऑपरेशन है," जॉयदीप ने कहा।

"कौन?" अरविंद ने पूछा।

“अरबाज़ शेख़,” जॉयदीप ने अरबाज़ की लोकसभा में जीत की अख़बारी ख़बर की कतरन अरविंद की मेज़ पर रखते हुए कहा। अरविंद को फ़्लाइट वाला वो आदमी याद था जिसकी उसने हैदराबाद में ख़ातिरदारी की थी।

“और हमने साला इसे ब्रेड में भी पैसा लगाने दिया था,” अरविंद ने कहा, अचानक वो चिढ़ गया कि परोमिता अरबाज़ की पत्नी है।

“इसमें तुम्हारी ग़लती नहीं है, अरविंद,” जॉयदीप ने कहा। “हम हमेशा लोगों को सही समझने की उम्मीद नहीं कर सकते।”

“ये तो सच है,” अरविंद ने जॉयदीप को घूरते हुए कहा।



1985 में, मौंट्रियल से लंदन जा रहे एयर इंडिया के एक विमान में सिख उग्रवादियों द्वारा रखा बम आइरिश तटीय रेखा से 31,000 फ़ुट की ऊंचाई पर फट गया था। विमान में सवार सभी 329 लोग—ज़्यादातर भारतीय मूल के—मारे गए थे। ये कायरतापूर्ण हरकत कथित रूप से इंदिरा गांधी के ऑपरेशन ब्लूस्टार का बदला लेने के लिए की गई थी।

उस बम विस्फोट में मरनेवाले यात्रियों में से एक शीला धर थीं। वो खाद्य और नागरिक आपूर्ति राज्य मंत्री यश धर की पत्नी थीं। टोरंटो में अपने अंकल, आंटियों और कज़िन्स के साथ कुछ हफ़्ते बिताने के लिए वो एक व्यक्तिगत यात्रा पर कनाडा गई हुई थीं। ये क़िस्मत का खेल ही था कि उनका पति और बेटा राजनीतिक प्रतिबद्धताओं और स्कूल की वजह से साथ नहीं जा पाए थे।

शीला एक वकील थीं जो दिलेरी से नारी अधिकारों के लिए संघर्ष करती थीं। एक केस जिस पर उन्होंने काम किया था शाह बानो बेगम नाम की एक मुस्लिम महिला के मामले से जुड़ा था। इंदौर की बासठ साल की पांच बच्चों की मां शाह बानो को 1978 में उनके शौहर ने तलाक़ दे दिया था। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में आपराधिक मुक़द्दमा दायर किया, जिसमें उन्होंने अपने शौहर से गुज़ारा-भत्ता पाने का हक़ जीता था। ये एक युगांतरकारी धर्मनिरपेक्ष फ़ैसला था जिसमें अदालत ने तय किया था कि गुज़ारा-भत्ता देय है भले ही ये मुस्लिम पर्सनल लॉ—शरिया—के विपरीत हो। भारत एक समान नागरिक संहिता की ओर बढ़ता मालूम दे रहा था, जो हिंदू, मुस्लिम, ईसाई या सिख में भेदभाव नहीं करता।

उस सुबह दिल्ली में यश के घर पर हुई प्रार्थना सभा में शक्तिशाली पदों पर आसीन अनेक लोगों ने शिरकत की थी। अंत्येष्टि नहीं हुई क्योंकि उनका शव मिल ही नहीं पाया था। उनके नाम के आगे एकमात्र टिप्पणी ‘समुद्र में लापता’ लिखी थी। शिरकत कर रहे लोगों में अरबाज़ शेख़ और अरविंद बागड़िया भी थे। देशमुख भी मौजूद था। पार्टी लाइन को भुलाकर अनेक नेता भी आए थे। राजीव गांधी का मित्र और मंत्री होने की वजह से यश के अनेक मित्र धर्मनिरपेक्ष वामपंथ के थे। कश्मीरी पंडित होने के कारण यश के अनेक राजनीतिक मित्र हिंदू दक्षिणपंथ के भी थे। यश के दोस्त अक्सर उससे पूछते थे कि राजनीतिक तौर पर उसका आधार असल में क्या है—

वामपंथ, दक्षिणपंथ, मध्यमार्गी, रूढ़िवादी, उदारवादी, लोकतांत्रिक या सोशलिस्ट? यश चतुरता भरा जवाब देता, "मैं सोशलिस्ट और सोश्यलाइट के बीच में कहीं हूं।"

आज वो चतुरता पूरी तरह से नदारद थी, जब प्राय: सफेद कपड़े पहने शोकाकुल लोग एक शामियाने के नीचे गंभीर स्त्री-पुरुषों के समूह के रूप में बैठे थे और ओऽम नम: शिवाय का जाप कर रहे थे। सामने की पंक्ति में यश का सहयोगी अरबाज़ शेख़ बैठा था। उससे दो पंक्ति पीछे बैंकर देशमुख के साथ अरविंद बागड़िया था। रात में अनेक शोकाकुल दिल्ली के आईटीसी मौर्य शेरेटन के डिस्कोथेक घुंघरू में नज़र आने वाले थे। सुबह के बाद शोक करते रहने का कोई मतलब नहीं था।

जब प्रार्थना सभा समाप्त हुई और आगंतुक बाहर बाग़ में बिखर गए, तो एक परिचित चेहरे ने अरविंद का अभिवादन किया। वो पान मसाला चबाने वाला चार्टर्ड अकाउंटेंट चंदर लखोटिया था। अरविंद ने दूर से ही उसे देख लिया था लेकिन नज़रअंदाज़ करने का निर्णय लिया था। अरविंद को पूरा यक़ीन था कि उस अहम जानकारी का खुलासा चंदर ने ही किया होगा जिसकी वजह से आयकर वालों ने उस पर छापा मारा था। लेकिन चंदर तो पूरी गर्मजोशी से मिला।

"आपको देखकर बहुत अच्छा लग रहा है, अरविंद बाबू," चंदर ने कहा। "आयकर वालों ने आपके साथ जैसा सुलूक किया, वो मुझे बहुत ख़राब लगा था। मैं आपको फ़ोन भी करना चाहता था लेकिन मुझे पता था कि अपने आदरणीय पिताजी के स्वर्ग सिधारने की वजह से आप बहुत व्यस्त होंगे।"

"यहां कैसे आना हुआ?" अरविंद ने उसकी गर्मजोशी का जवाब देने की ज़हमत न उठाते हुए पूछा।

"वहां उन लोगों को देख रहे हैं?" चंदर ने अपना सिर हिलाकर दिशा का संकेत करते हुए पूछा।

अरविंद ने शोकाकुलों को देखा। उनमें अटल बिहारी वाजपेयी और एल. के. आडवाणी भी थे। "तुम्हारा मतलब वाजपेयी जी और आडवाणी जी?" अरविंद ने पूछा।

"हां," चंदर ने जवाब दिया। "मैं बीजेपी का सदस्य हूं। मेरा मुख्य काम व्यापारियों से पैसा जमा करना है ताकि पार्टी अगले आम चुनावों में सत्ता में आने की तैयारी कर सके।"

"लेकिन चुनाव तो पिछले साल ही हुए हैं," अरविंद ने कहा। "1989 में तो अभी बहुत समय है।"

"ये सरकार तब तक नहीं चलने वाली," चंदर दबी आवाज़ में बोला। "राजीव गांधी शाह बानो के धर्मनिरपेक्ष फ़ैसले को बदलने के लिए एक क़ानून लाने की योजना बना रहे हैं। इसे मुस्लिम महिला बिल कहा जाएगा और ये उनके मुस्लिम निर्वाचन क्षेत्र को खुश करेगा। मगर उन्हें अभी ये पता नहीं है कि इससे उनके हिंदू समर्थन का आधार पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा।"

"समझा," अरविंद ने इस जानकारी को जज़्ब करने की कोशिश करते हुए कहा।

“अरविंद बाबू, मैं आपको पार्टी के दिग्गजों से मिलवाता हूं। कौन जानता है? शायद एक दिन आप भी राजनीति में आ जाएं?”

“क्यों नहीं,” अरविंद ने कहा, और वो बीजेपी के दिग्गजों की ओर चल दिए।

“तुमसे मिलकर बहुत ख़ुशी हुई, अरविंद,” उन्हें आते देखकर वाजपेयी ने कहा। अरविंद वाजपेयी के पैर छूने के लिए झुक गया। “तुम्हारे पिताजी के निधन के बारे में सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ।”

जब चंदर लखोटिया ने देखा कि अरविंद तो पहले से ही पार्टी के दिग्गजों को जानता है तो वो वहां से खिसक लिया।

“मैं तुम्हें सरदार हरपाल सिंह से मिलवाता हूं, मेरे प्रिय मित्र जो आजकल भारत से अधिक भूटान में अपना समय बिताते हैं,” वाजपेयी ने कहा।



खाद्य और नागरिक आपूर्ति राज्य मंत्री यश धर ने अरविंद को उन सब कामों की फ़हरिस्त मुहैया करा दी थी जो उसका मंत्रालय करता था। अरविंद ने फिर से फ़हरिस्त को देखा।

1. नागरिक और सैन्य आवश्यकताओं के लिए खाद्य-सामग्री की ख़रीद।
2. अंतरराष्ट्रीय गेहूं परिषद, अंतरराष्ट्रीय चीनी परिषद, विश्व खाद्य परिषद और आईएफ़पीआरआई के साथ तालमेल।
3. खाद्यान्नों और खाद्य-सामग्री के व्यापार और वाणिज्य के संदर्भ में बाहरी देशों के साथ संधि एवं समझौते।
4. भंडारण के लिए गोदामों का अधिग्रहण।
5. चीनी समेत खाद्यान्नों और खाद्य-सामग्री के संदर्भ में अंतरराज्यीय व्यापार।
6. फल एवं सब्ज़ी-प्रसंस्करण, चीनी एवं मिलों से जुड़े उद्योग।
7. केंद्रीय भंडारण निगम एवं राज्य भंडारण निगमों का प्रबंधन
8. खाद्यान्नों, खाद्य पदार्थों एवं चीनी का मूल्य नियंत्रण एवं पूर्वानुमान।
9. चीनी निदेशालय, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, चीनी उद्योग विकास परिषद और अन्य अधीनस्थ कार्यालयों से जुड़े मामले।

उसने दो बार फ़हरिस्त को पढ़ा और फिर सत्यपाल को देखा। “तुम्हें कोई मौक़ा दिखता है?” उसने पूछा।

सत्यपाल ने फिर से फ़हरिस्त को पढ़ा। “सरकारी जुमलों के सिवा मुझे तो कुछ नज़र नहीं आ रहा,” उसने कहा।

“आठवां बिंदु देखो,” अरविंद ने कहा। “खाद्यान्नों, खाद्य पदार्थों एवं चीनी का मूल्य

नियंत्रण एवं पूर्वानुमान।”

“ये पैसा कमाने का मौक़ा कैसे बन सकता है?” सत्यपाल ने पूछा।

“मंत्री को हमेशा पता होगा कि किसी ख़ास उत्पाद का संभावित उत्पादन और संभावित क़ीमत कितनी होगी,” अरविंद ने कहा।

“तो?” सत्यपाल ने पूछा।

“अगर वो ये जानकारी एडवांस में हमें दे दे, तो हम अच्छा मुनाफ़ा कमा सकते हैं,” अरविंद ने कहा।

“हमारे देश में कमोडिटी एक्सचेंज नहीं है,” सत्यपाल ने कहा। “फ़ॉरवर्ड कॉन्ट्रेक्ट्स रेगुलेशन एक्ट लगभग सभी उत्पादों में वादा कारोबार पर रोक लगाता है।”

“ये सच है, लेकिन पैसा कमाने के लिए उत्पादों में कारोबार करने की ज़रूरत नहीं है,” अरविंद ने कहा।

“फिर कैसे?” सत्यपाल ने पूछा।

“किसी उत्पाद की क़ीमत अक्सर किसी और चीज़ के लिए प्रॉक्सी होती है,” अरविंद ने कहा।

“आपको ये मुझे समझाना पड़ेगा,” सत्यपाल ने कहा।

“कुछ साल पहले कैलिफ़ोर्निया यूनिवर्सिटी ने एक दिलचस्प अध्ययन किया था,” अरविंद ने कहा। “फ़्रोज़न कंसन्ट्रेटेड ऑरेंज जूस में इस्तेमाल होने वाले नब्बे फ़ीसदी से ज़्यादा अमेरिकी संतरे फ़्लोरिडा में उगाए जाते हैं। इस तरह फ़्लोरिडा का मौसम उस क़ीमत पर असर डालने के लिए एक अहम फ़ैक्टर होता है जिस पर ऑरेंज जूस फ़्यूचर्स—या ओजेएफ़—का कारोबार होता है।”

“तो?” सत्यपाल ने पूछा।

“कैलिफ़ोर्निया यूनिवर्सिटी के अध्ययन ने पाया कि इसका उलट भी सच है। ओजेएफ़ की क़ीमतों में बदलाव भी समान रूप से फ़्लोरिडा के मौसम का पूर्वानुमान बताता है... अगर ओजेएफ़ का मूल्य बढ़ता है तो इसका मतलब है कि तापमान गिरने की संभावना है।”

“दिलचस्प है,” सत्यपाल हंसा।

“मैं ये कहना चाह रहा हूं कि यश धर से हमें एडवांस में जो जानकारी मिलेगी, उससे हमें दूसरी प्रभावित होने वाली वस्तुओं के बारे में पूर्वानुमान लगाने में मदद मिल सकती है,” अरविंद ने कहा।

“जैसे?”

“अगर गेहूं की फ़सल अच्छी होने की संभावना है, तो इसका मतलब है कि क़ीमतों में गिरावट आएगी। इसका मतलब है कि ब्रिटानिया जैसी कंपनी को जो गेहूं पर

काफ़ी ज़्यादा निर्भर करती है—अपने बिस्कुटों और ब्रेड के लिए—फ़ायदा होगा," अरविंद ने कहा।

"कहते रहिए," सत्यपाल ने नोट लिखते हुए कहा।

"अगर मूंगफली का उत्पादन कम होने की संभावना है, तो क़ीमतों में उछाल पोस्टमैन जैसे उत्पादकों के लिए नुक़सानदेह होगा। इसी तरह, अगर सूरजमुखी के बीज का उत्पादन अच्छा होगा तो क़ीमतों में नरमी आने से सफ़ोला को मदद मिलेगी।"

"बहुत ख़ूब," सत्यपाल ने कहा।

"अगर गन्ने की फ़सल इस साल बहुत अच्छी होती है तो इसका मतलब है कि पेराई का सह-उत्पाद शीरा भी बहुत अच्छी मात्रा में तैयार होगा। ये शॉ वॉलेस या मैकडॉवेल्स जैसी शराब की कंपनियों के लिए अच्छी ख़बर होगा।"

"मैं फ़ौरन इसे काम में लेता हूं," सत्यपाल ने कुर्सी से उठते हुए कहा।

अरविंद ने अपनी मेज़ पर पड़ी फ़ोर्ब्स पत्रिका उठा ली। पत्रिका ने दुनिया के अरबपतियों को खोजना शुरू किया था। 1987 की उस लिस्ट में केवल एक भारतीय आदित्य बिरला थे। एक दिन मैं भी इस लिस्ट में होऊंगा, अरविंद ने सोचा।

फ़ोर्ब्स के अंक के पास ही स्टेट्समैन पड़ा था। सुर्ख़ी कह रही थी कि प्लेबैक सिंगर किशोर कुमार की मृत्यु हो गई थी। अरविंद ने ये सोचने की ज़हमत नहीं की कि एक दिन वो भी मृत लोगों की लिस्ट में होगा।

अरविंद का फ़ोन बजा। उसने उठाकर सुना। सत्यपाल दरवाज़े पर इंतज़ार करता रहा।

फिर उसने कहा, "बंगाल परिवहन की बस ठीक रहेगी... मैं कैश दूंगा।"

सत्यपाल चला गया।



अभिलाषा लिविंग रूम में बैठी इतवार सुबह का प्राइमटाइम देख रही थी, रामानंद सागर द्वारा बनाया गया एक सीरियल रामायण जो बागड़िया परिवार का साप्ताहिक अनुष्ठान बन गया था—जैसा देश भर के लाखों परिवारों का बन गया था। उसके पास ही उसकी सास शकुंतला बैठी थीं। विनय और विनीत क़ालीन पर पसरे पड़े थे, उनका नाश्ता अनछुआ पड़ा था।

टेलीग्राफ़ का इतवार का संस्करण, कलकत्ता के अख़बारी विकल्पों में एक हालिया इज़ाफ़ा, कॉफ़ी टेबल पर पड़ा था। उसने उसे नज़रअंदाज़ कर दिया। आजकल ख़बरें बस बंदूक़ों और लड़ाइयों की ही होती हैं। दुनिया रामायण देखना और शांत रहना क्यों नहीं सीख सकती है? अभिलाषा को कौन याद दिलाता कि रामायण का अंत लंका में हुए विनाशकारी युद्ध के साथ हुआ था?

अख़बार के पास ही महान फ़िल्म निर्देशक सत्यजीत रे की लिखी द कंप्लीट एडवेंचर्स ऑफ़ फेलूदा की पन्ने मुड़ी प्रति रखी थी। उसने उसे भी नज़रअंदाज़ कर दिया। मौत के बारे में पढ़ने का उसका क़तई मूड नहीं था।

ये विडंबना ही थी कि लेटेस्ट लड़ाई भी लंका में ही हो रही थी। राजीव गांधी ने शांति स्थापित करने के लिए दसियों हज़ार सैनिकों को श्रीलंका भेजा था। बल को नाम दिया गया था इंडियन पीस कीपिंग फ़ोर्स—या आईपीकेएफ़। अपने चरम पर, आईपीकेएफ़ के एक लाख से ज़्यादा जवान श्रीलंका में तैनात थे। देश में, बंदूक़ों की कहानी ही एकमात्र सुनाने लायक़ कहानी लगती थी। स्वीडिश रेडियो ने आरोप लगाया था कि स्वीडिश अस्त्र निर्माता बोफ़ोर्स ने भारतीय राजनीतिज्ञों और रक्षा अधिकारियों को ज़बरदस्त रिश्वतें दी थीं। राजीव गांधी की सरकार लगातार डावांडोल होती दिख रही थी।

उस दिन की क़िस्त ख़त्म हुई और टेलीविज़न बंद कर दिया गया। अभिलाषा ने लड़कों से अपना होमवर्क निबटाने को कहा। वो जानती थी कि ये वीकएंड के आख़री मिनट तक भी पूरा नहीं होगा। वो अच्छे बच्चे थे मगर बारह साल के लड़कों के दिमाग़ों को स्कूल के काम के अलावा बाक़ी सब कुछ भाता है।

शकुंतला अपनी माला के मनके गिन रही थीं और ख़ामोशी से प्रार्थनाएं कर रही थीं। अभिलाषा ने बेमन से अख़बार उठा लिया। हैडलाइन हिंदी फ़िल्म लीजेंड राज कपूर के देहांत की ख़बर दे रही थी। फिर वो बेख़्याली में आईपीकेएफ़ और बोफ़ोर्स से भरे पन्ने उलटती रही जब तक कि अंदर के पन्नों में एक फ़ोटोग्राफ़ ने उसकी निगाह नहीं खींची। स्टाफ़ फ़ोटोग्राफ़र ने एक कार की पिक्चर ली थी जिसका बीते दिन भयानक हादसा हो गया था।

रिपोर्ट में लिखा था कि वो चौरंगी रोड पर जा रही थी कि तभी बंगाल परिवहन की एक बस ने नियंत्रण खो दिया और सीधे उसमें जा घुसी। कार के ड्राइवर की मौक़े पर ही मौत हो गई थी।

अभिलाषा जड़ हो गई। वो नीली टोयोटा कॉरोना थी।

“क्या बात है, बेटी?” ये देखकर कि उनकी बहू के हाथ कांप रहे हैं, शकुंतला ने पूछा था।

“कुछ नहीं, अम्मा,” अभिलाषा ने उठते हुए कहा। “मैं जाकर बच्चों को देखती हूं।”

उसी साल, एक भयानक घटना में, रूप कंवर नाम की एक राजपूत युवती अपने पति की जलती चिता पर बैठकर सती हो गई थी। अभिलाषा की आंखों में आंसू उमड़ने लगे तो उसका भी दिल हुआ कि उस एकमात्र शख़्स के लिए अपनी जान दे दे जो उसकी दुखी ज़िंदगी में सुख लाया था।



जॉयदीप चक्रवर्ती को नहलाकर सफ़ेद वस्त्र पहनाए गए। श्मशान घाट की अंतिम यात्रा शुरू करने से पहले एक काग़ज़ पर लाल रंग से उसके पैर की छाप ली गई।

फिर अंतिम संस्कार के लिए जॉयदीप को श्मशान घाट ले जाया गया। अर्थी को कंधा देनेवालों में अरविंद भी था।

जॉयदीप को चिता पर रखा गया। उसके पिता, कॉलेज के रिटायर्ड हैडमास्टर, बुरी तरह टूटे हुए दिख रहे थे। अपने इकलौते बेटे को अंतिम विदा देते हुए वो हतप्रभ से खड़े थे।

वृद्ध ने सात बार चिता की परिक्रमा की और फिर पिंड दान किया। फिर उन्होंने मंत्रों के बीच दाहसंस्कार किया। अरविंद ने अवशेष इकट्ठा करने के लिए वृद्ध व्यक्ति के साथ इंतज़ार किया। अस्थि विसर्जन के लिए उन्हें दूध-दही से शुद्ध करना था।

जब वो अकेले रह गए तो अरविंद ने जॉयदीप के पिता से कहा, "मैंने अपना सबसे क़रीबी दोस्त और आपने अपना इकलौता बेटा खो दिया है। आज से, आपके सारे ख़र्चे मैं उठाऊंगा। रात हो या दिन, आप मुझे किसी भी वक़्त फ़ोन कर सकते हैं। मैं आपके लिए मौजूद रहूंगा—हमेशा।"

वृद्ध ने आंसू भरी आंखों से अरविंद को देखा। उन्होंने अपना हाथ उठाया और मूक आशीर्वाद में अरविंद के सिर पर रख दिया।



अरविंद के बैठने पर चंदर लखोटिया ने उससे हाथ मिलाया।

"आपको देखकर अच्छा लगा, अरविंद बाबू," उसने गर्मजोशी से कहा।

"बीजेपी की क्या स्थिति है?" अरविंद ने फ़ालतू बातों को दरकिनार करते हुए पूछा।

"वो उस समय तक राजा बहादुर का समर्थन करेंगे जब तक कि वो खुद को तबाह नहीं कर लेते," चंदर ने बैठते हुए कहा।

मांडा के इकतालीसवें राजा बहादुर ने 2 दिसंबर, 1989 को भारत के आठवें प्रधानमंत्री की शपथ ली थी। उनका नाम विश्वनाथ प्रताप सिंह था। प्रधानमंत्री के रूप में उनके आगमन के वक़्त ही सलमान ख़ान नाम के नौजवान का आगमन हुआ था जिसकी फ़िल्म मैंने प्यार किया उस साल की सबसे बड़ी हिट रही थी। जैसा कि सामने आया, सलमान ख़ान में डटे रहने का दमख़म विश्वनाथ प्रताप सिंह से कहीं ज़्यादा था।

वी.पी. सिंह राजीव गांधी के लिए सबसे बड़ा कांटा था। पहले, राजीव ने उन्हें अपना वित्त मंत्री बनाया था। वी.पी. सिंह ने उन्हीं व्यापारियों पर टैक्स के छापे पड़वा दिए जिन्होंने कांग्रेस पार्टी का समर्थन किया था। राजीव के सामने उन्हें हटाकर रक्षा मंत्रालय दे देने के सिवा और कोई चारा न था। रक्षा मंत्री के रूप में, सिंह ने बोफ़ोर्स सौदे पर जांच बिठा दी, आख़िरकार राजीव को उन्हें पूरी तरह से हटाना पड़ा। ये वो मौक़ा था जिसका वो इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने अपनी नई पार्टी बना ली और कांग्रेस के नंबर काटने लगे।

“ये सरकार कब तक टिकेगी?” अरविंद ने पूछा।

“ये तो ‘एक दो तीन’ पर डांस करने वाली उस नई लड़की माधुरी दीक्षित की तरह है। ज़्यादा से ज़्यादा एक साल, मुमकिन है, मगर लगता नहीं—दो साल, लगभग नामुमकिन—तीन साल,” चंदर ने एक वेटर को अपने सामने सूप का बोल रखने देते हुए कहा।

“पांच साल क्यों नहीं?” अरविंद ने पूछा।

“वी.पी. सिंह पूरी तरह से बीजेपी और वामपंथी दलों के समर्थन पर निर्भर हैं। अंदरूनी तौर पर उनकी अपनी पार्टी के अंदर चंद्र शेखर जैसे लोग हैं जो खुद को उपेक्षित महसूस कर रहे हैं।”

“मेरी योजना क्या होनी चाहिए?” अरविंद ने भावहीन स्वर में पूछा।

“कांग्रेस के विपरीत, बीजेपी के पास बहुत ज़्यादा दानदाता नहीं हैं। अगर आप नियमित रूप से उनके कोश में योगदान करते रहेंगे, तो मुझे लगता है कि इससे पार्टी के सत्ता में आने तक आपके लिए कोई न कोई पद पक्का हो जाएगा। और वैसे भी, वाजपेयी जी के साथ तो आपके पुराने संबंध हैं ही,” चंदर ने जवाब दिया, बेस्वाद से सूप को अनछुआ छोड़कर वो आदतन अपने मुंह में भरे तेज़ महक वाले मसाले को चबाता जा रहा था। मन ही मन, वो चाह रहा था कि वो यहां के बजाय दिल्ली के चांदनी चौक में होता और परांठेवाली गली में खाना खाने का मज़ा ले रहा होता।

“मैं जानता हूं कि तुम्हें उस मक्कार सुशील तिवारी ने मेरे ख़िलाफ़ चुग़ली करने पर मजबूर किया था,” अपनी ब्रेडस्टिक को दो टुकड़ों में तोड़ते हुए अचानक अरविंद ने कहा। ये दबा-ढका सा इशारा था कि वो इतनी ही आसानी से चंदर को भी तोड़ सकता है।

चंदर का चेहरा उतर गया। “मैंने... मैंने नहीं...” वो कहने लगा। वो तेज़ी से सुगंधित मिश्रण को दांतों से कुचलने लगा था जिसने अब उसकी ज़बान को पूरी तरह रंग दिया था।

“मैं तुम्हें इल्ज़ाम नहीं देता,” अरविंद ने अपनी ब्रेडस्टिक पर मक्खन लगाते हुए कहा। “मैं बस तुम्हें ये बताना चाहता हूं कि इस ब्रेडस्टिक को पता नहीं था कि मैं इसे दो टुकड़ों में तोड़ने वाला हूं। ये ब्रेडस्टिक किसी दिन तुम भी हो सकते हो।”



“अलीशा का स्कूल में एडमीशन होना है,” परोमिता ने टेलीविज़न बंद करते हुए अरबाज़ से कहा।

“ये क्यों किया तुमने?” अरबाज़ ने जल्दी से टेलीविज़न वापस चलाते हुए पूछा।

सियालकोट में भारत-पाकिस्तान के बीच टैस्ट मैच चल रहा था। दूसरी पारी में चार विकेट पर अड़तीस के स्कोर पर सचिन तेंदुलकर नाम का एक सोलह साल का लड़का सिद्धु के साथ खेलने आया था। वकार यूनुस का एक बाउंसर सीधे सचिन की नाक पर

पड़ा था। गहरा घाव हो गया था और लड़के का ख़ून बहने लगा था। पवेलियन में वापस जाने के बजाय उसने चेहरे पर पानी छिड़का और अगली बॉल पर चौका जड़ दिया।

“वाह, मेरे शेर,” नौजवान को देखते हुए अरबाज़ ने कहा। जैसे ही उसने परोमिता के चिढ़े हुए चेहरे को देखा, उसने झट से टेलीविज़न की आवाज़ बंद कर दी। परोमिता को क्रिकेट से चिढ़ थी। उसका टीवी देखना केवल इतवार की सुबह को होता था, हालांकि अब रामानंद सागर की रामायण की जगह बी. आर. चोपड़ा की महाभारत ने ले ली थी।

“बंबई में सबसे अच्छा स्कूल कौन सा है?” अरबाज़ ने पूछा, उसे पता था कि जवाब क्या होगा।

“कैथेड्रल एंड जॉन कैनन,” परोमिता ने कहा।

उसने थोड़ा हिचकिचाते हुए ये कहा था, उसे पता था कि उस प्रतिष्ठित गेट के पार जाना कितना कठिन था। माता-पिता सालों प्रतीक्षा सूची में इंतज़ार करते, मगर फिर पता लगता कि उनका बच्चा तो रह गया। कुल दर्जन भर ख़ाली सीटों के लिए हज़ारों लोग आवेदन करते थे। बंबई के पुराने शहर में 1860 में एक ग्रामर स्कूल के तौर पर शुरू हुआ ये स्कूल 129 साल बाद भी बहुत मांग में था।

“मैं फ़ॉर्म ले आई हूं जिसे जमा करना है,” परोमिता ने कहा। “वो बहुत ज़्यादा जानकारी मांग रहे हैं।”

“फ़िक्र मत करो,” अरबाज़ ने कहा। “अलीशा का एडमीशन हो जाएगा।”

“कैसे?” परोमिता ने पूछा।

“स्कूल का बोर्ड ऑफ़ गवर्नर्स है। उसमें बारह सदस्य हैं,” अरबाज़ ने कहा। “उन्हें एंग्लो-स्कॉटिश एजुकेशन सोसाइटी नियुक्त करती है।”

“तो?” परोमिता ने पूछा।

“उनमें से एक, थॉमस कोशी, वो शख़्स हैं जिनकी पांच साल पहले एक चर्च से चोरी हुए पीतल के लैक्टर्न को वापस पाने में मैंने मदद की थी।”

“कितनी ख़ुशनसीबी है,” परोमिता ने कहा।

“ये ख़ुशनसीबी की बात नहीं है,” अरबाज़ ने कहा। “ये दूरदर्शिता है।”



“तो आख़िर उन्होंने अपनी कर ली,” अरविंद ने खिचड़ी दाढ़ीवाले चालाक नेता के बारे में बोलते हुए सत्यपाल से कहा। वो दोनों अरविंद की मर्सिडीज़ की पिछली सीट पर बैठे थे।

“क्या आप उन्हें इल्ज़ाम दे सकते हैं?” सत्यपाल ने पूछा। “1989 में चंद्र शेखर को धोखे से शीर्ष पद से अलग कर दिया गया था।”

वी. पी. सिंह और चंद्र शेखर प्रतिद्वंद्वी थे, दोनों ही प्रधानमंत्री पद के दावेदार थे। अंततः दोनों ने एक सर्वसम्मत उम्मीदवार—देवी लाल—पर राज़ी होने का फ़ैसला किया। इसके मुताबिक़ वी. पी.सिंह संसद के केंद्रीय कक्ष में खड़े हुए और उन्होंने देवी लाल के नाम का प्रस्ताव रखा। देवी लाल ने विनम्रता से ये कहते हुए नामांकन को ठुकरा दिया कि वो चाहेंगे वी. पी. सिंह प्रधानमंत्री बनें। चंद्रशेखर के चेहरे पर छाए विश्वासघात के अचंभे को टेलीविज़न कैमरों ने क़ैद कर लिया था।

अब बदला लेने का वक़्त था।

"मंडल कमीशन के विरोधों ने वी. पी. सिंह की क़िस्मत पर मुहर लगा दी थी," सत्यपाल ने कहा।

"नहीं, उनकी क़िस्मत पर मुहर तो समस्तीपुर में लग गई थी," अरविंद ने कहा। "ये एकदम साफ़ था।"

बीजेपी ने रामजन्मभूमि आंदोलन में अपना पूरा समर्थन झोंक दिया था। पार्टी अध्यक्ष एल. के. आडवाणी ने एक रथ—एक बस जिसे प्राचीन रथ का रूप दिया गया था—पर सवार होकर भारत के उत्तरी राज्यों का दौरा किया था। अरविंद ने खुले हाथ से बीजेपी को चंदा दिया था हालांकि रथ यात्रा के विचार से वो सहमत नहीं था।

चंदर लखोटिया ने, जो जोशोख़रोश से उस स्थल पर राम मंदिर बनाए जाने के पक्ष में था, एक बार अरविंद से पूछा था, "आपको नहीं लगता कि हमारे ऊपर ये भगवान का ऋण है?"

अरविंद ने जवाब दिया, "मुझे ये निश्चित नहीं है कि ईश्वर ने इंसान को बनाया है या इंसान ने ईश्वर को बनाया है। मैं ये जानता हूं कि कोई है जो हमें देख रहा है। आमतौर पर, वो आयकर विभाग होता है।"

"तो आप नास्तिक हैं? आप ईश्वर को नहीं मानते?" चंदर ने पूछा।

"मैं ईश्वर को मानता हूं लेकिन उसके ठेकेदारों पर भरोसा नहीं करता," अरविंद ने कहा। "वो लालची, नाकारा और ज़रूरत से ज़्यादा पेट भरे होते हैं। मुझे तो ये भी यक़ीन नहीं है कि वो कभी मेरा संदेश भी उस तक पहुंचाते होंगे।"

एल. के. आडवाणी अयोध्या की अपनी रथ यात्रा पूरी करते, इससे पहले ही समस्तीपुर में उन्हें शांति भंग करने और सांप्रदायिक तनाव पैदा करने के इल्ज़ाम में गिरफ़्तार कर लिया गया। बीजेपी ने जवाब में वी. पी. सिंह की सरकार से समर्थन वापस ले लिया। अविश्वास प्रस्ताव में सिंह 346 के मुक़ाबले 142 मतों से हार गए।

"लेकिन चंद्र शेखर ने अपने पक्ष में इतनी संख्या कैसे जुटा ली?" अरविंद ने पूछा।

"राजीव गांधी की कांग्रेस उनका समर्थन कर रही है," सत्यपाल ने कहा। "और सोचें ज़रा ये समर्थन किसने हासिल करवाया?"

"नहीं!" अरविंद ने अविश्वास से कहा।

"बिल्कुल," सत्यपाल ने ज़ोर से सिर हिलाते हुए कहा। "यश धर ने।"

“कांग्रेस क्या गेम खेल रही है?” अरविंद बड़बड़ाया।

“उन्हें लगता है कि दूसरे चुनावों के लिए अभी बहुत जल्दी है,” सत्यपाल ने कहा। “चंद्र शेखर के पांव के नीचे से चादर खींचने से पहले वो थोड़ा इंतज़ार करेंगे और फिर ये कहकर चुनाव के लिए जाएंगे कि केवल वही हैं जो स्थिरता की गारंटी दे सकते हैं। सवाल ये है, तब तक हम क्या करें?”

“रुपए के ख़िलाफ़ और डॉलर पर सट्टा लगाओ,” अरविंद ने कहा।

“क्यों?”

“अंदर की ख़बर है कि हम भुगतान के संतुलन के संकट की ओर बढ़ रहे हैं। भारत को मदद के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की ओर भागना पड़ेगा। मुमकिन है, हमें अपना सोना भी गिरवी रखना पड़े।”

“तो क्या?” सत्यपाल ने पूछा।

“अगर ऐसा होता है तो डॉलर के मुक़ाबले रुपया डूब जाएगा। हमें ऐसे कारोबार हासिल करने चाहिएं जिनमें आमदनी डॉलर में हो।”

“मसलन?”

“एक्सपोर्ट से जुड़े कारोबार। उनमें से ज़्यादातर साख पत्र पर कारोबार करते हैं जो डॉलर में आय की गारंटी देते हैं। फ़टाफ़ट अपने सौदे कर लो।”

“क्यों?” सत्यपाल ने पूछा।

“मुझे बताओ, सत्यपाल। अगर तुम्हारे सामने छप्पन भोग रखे जाएं और तुमसे कहा जाए कि एक घंटे में जितना खा सकते हो, खा लो और फिर तुम्हें हफ़्ते भर के लिए बिना कुछ खाए बंद कर दिया जाएगा, तो तुम क्या करोगे?”



अरबाज़ एक एसयूवी से बंबई से नासिक गया। उसके अपने दो बॉडीगार्ड्स के अलावा पुलिस एस्कोर्ट भी साथ था। अरबाज़ शेख़ अब सांसद था और इसलिए पद के साथ मिलने वाले सत्ता के साजो-सामान और सुरक्षा का हक़दार था।

उनके पहुंचने तक रात हो गई थी। वो सीधे प्रसाद के घर गया। परिवार शोक में था, उसी दोपहर प्रसाद ने अपनी पत्नी का दाहसंस्कार किया था।

अरबाज़ प्रसाद से मिला और भावात्मक सहारा देने के भाव में उसने उसके हाथ थाम लिए। “पहले अब्दुल दादा ने तुम्हारे दादा और पिता का ध्यान रखा था। अब ये मेरा काम है कि तुम्हारा ध्यान रखूं। तुम्हें जो भी चाहिए हो, मुझसे कहना,” अरबाज़ ने शुक्रगुज़ार प्रसाद से कहा।

“उसकी बीमारी ने मुझे पैसे की तंगी में डाल दिया है,” प्रसाद ने कहा। “भारत में अगर कोई ग़रीब है तो उसे बीमार ही नहीं पड़ना चाहिए। यहां केवल अमीरों को ही बीमार पड़ने का हक़ है।”

“पैसों की फ़िक्र मत करो,” अरबाज़ ने कहा। “जब तुम छोटे थे तो एक सूदख़ोर ने तुम्हें अग़वा कर लिया था। मैंने तुम्हें उससे बचाया था। बाद में, जब मैं जेल में था, तो मुझे रिहा करवाने में तुम्हारे दादा ने बहुत मदद की थी।”

अरबाज़ ने अख़बार में लिपटा एक बंडल प्रसाद को थमाया। “इसे रख लो,” उसने नरमी से कहा।

“मैं आपका अहसान कैसे चुकाऊंगा?” प्रसाद ने कहा।

“इसे चुकाने की कोई ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं कोई तरीक़ा निकाल लूंगा जिससे ये चुकाया जा सके,” अरबाज़ ने जवाब दिया।



“मैं चाहता हूं तुम नासिक की उस कंपनी की ख़रीद को पूरा कर लो।”

“वो बेकार पड़ी प्रिंटिंग प्रेस?” मुरली ने पूछा।

“मैं चाहता हूं कि हम उसे ख़रीद लें,” अरबाज़ ने हामी भरते हुए कहा।

“क्यों?” मुरली ने पूछा। “वो पुरानी है। ज़्यादातर मशीनें बेकार हो चुकी हैं। हम इस पर पैसा क्यों बर्बाद कर रहे हैं?”

“मैंने हमेशा लोगों की ज़िंदगी में ख़ुशियां लानी चाही हैं,” अरबाज़ ने कहा। “शादी के कार्ड या जन्मदिन के ऐलान से ज़्यादा ख़ुशी और किस चीज़ से मिलती है?”

मुरली ने गहरी सांस ली। अरबाज़ किसी बात का इरादा कर ले तो उसे बदलना नामुमकिन ही होता है।

“ख़रीद लो उसे,” अरबाज़ ने बेफ़िक्री से कहा। “वहां कितने कर्मचारी हैं?”

“बीस,” मुरली ने जवाब दिया।

“उनसे कहना कि उनकी नौकरियां सुरक्षित हैं,” अरबाज़ ने कहा। “राजू से कहना कि तुम्हें बीस लोग और दे।”

“क्यों?” मुरली ने पूछा। “ये तो घाटे का बिज़नेस है। फिर ज़्यादा लोग क्यों रखें?”

“मुझे दो शिफ़्ट चाहिएं,” अरबाज़ ने कहा। “एक दिन की और एक रात की शिफ़्ट।”



नासिक का घर बहुत कम ही इस्तेमाल होता था। रात को आनेवाले कुछेक ट्रकों के अलावा वहां बहुत कम ही गतिविधि दिखती थी। वो एक टेलीविज़न एक्टर का घर था जिसके पास पैसा नहीं रहा था। वो इसे बेचने को मजबूर हो गया था और अरबाज़ इसे ख़रीदकर ख़ुश था। ये बिल्कुल सही जगह थी। ये उस प्रिंटिंग प्रेस से कुछ गज़ ही दूर था जिसे उसने नासिक में ख़रीदा था।

अरबाज़ ने लाइट ऑन कर दी और ख़ाली कमरे में एक क्रेट पर बैठ गया। प्रसाद खड़ा ही रहा।

“तुमने अपनी प्रिंटिंग प्रेस में चैक किया?” अरबाज़ ने पूछा।

प्रसाद ने हामी भरी। “आईएसपी में प्रक्रिया ये है कि हर तीन साल में हम मशीनरी को और घिस चुकी डाइ प्लेटों को निकाल देते हैं। नियम कहते हैं कि जिन प्लेटों को निकाला जाए, उन्हें किसी मजिस्ट्रेट की मौजूदगी में नष्ट कर देना चाहिए।”

“तुम्हारे दादा मजिस्ट्रेट थे,” अरबाज़ ने कहा।

“हां,” प्रसाद ने कहा। “पारिवारिक संबंधों का इस्तेमाल करके मैंने एक मजिस्ट्रेट का पता लगाया है जो ख़ुशी-ख़ुशी उन काग़ज़ों पर दस्तख़त कर देगा जिन पर लिखा होगा कि प्लेटों को उसकी मौजूदगी में नष्ट किया जा रहा है।”

“देखा? मैंने तुमसे कहा था कि मैं कोई रास्ता निकाल लूंगा जिससे तुम मुझे बदला चुका सको,” अरबाज़ ने मज़ाक़ किया। “तो अब होगा ये। तुम तीन ख़ास प्लेटों को घिसा हुआ घोषित करोगे। फिर तुम उस मजिस्ट्रेट से प्रमाणित करवाओगे कि उन्हें उसकी मौजूदगी में नष्ट किया जा रहा है। तुम उन प्लेटों को मेरी प्रिंटिंग प्रेस में लाओगे। दिन में, नियमित शिफ़्ट शादी के कार्ड और स्टेशनरी छापेगी। रात में, राजू के आदमी तुम्हारी प्लेटों पर माल छापेंगे। रात में ही प्रिंट किया गया माल इस घर में लाया और स्टोर कर दिया जाएगा ताकि नियमित शिफ़्ट में कोई उसे न देखे।”

प्रसाद ने हामी भरी। जो किया जा रहा था, उसे लेकर वो पूरी तरह सहज नहीं था, लेकिन अरबाज़ के लिए उसकी वफ़ादारी प्रबल थी। ये वो आदमी था जिसने सूदख़ोर से उसे बचाने के लिए हथौड़े से उसके गट्टे कुचल डाले थे।

इंडिया सिक्योरिटी प्रेस—या आईएसपी—में जहां प्रसाद काम करता था, सिक्के ढालने, करेंसी और बैंक नोट, ग़ैर अदालती स्टांप पेपर, डाक टिकट, वीज़ा स्टिकर और पासपोर्ट छापने का काम होता था। ये वित्त मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग के तहत काम करती थी।



“मैं समझा नहीं,” राजू ने कहा। “यहां एक बंदा है जो हमें डिज़ाइनिंग, एन्ग्रेविंग, ऑफ़सेट और इंटैग्लयो प्रिंटिंग मशीनों तक पहुंचा सकता है। तो सीधे करेंसी ही क्यों न छापें?”

“सही कहते हो, राजू,” अरबाज़ ने कहा। “प्रसाद की पहुंच सुरक्षा प्रणालियों, ट्रीटमेंट फ़ैसिलिटीज़ के साथ ही नंबरिंग उपकरण तक है। बस एक चीज़ है जिस तक उसकी पहुंच नहीं है।”

“वो क्या है?” राजू ने पूछा।

“करेंसी पेपर,” अरबाज़ ने जवाब दिया। “सरकार इसे सीधे जापान और

ऑस्ट्रेलिया से आयात करती है। और इसीलिए स्टांप पेपर बेहतर दांव है।”

“क्यों?” राजू ने पूछा, और बड़ी सावधानी से हाथ में पकड़ी छोटी सी डिबिया से एक और पान निकाला और उसे अपने मुंह में रख लिया।

“स्टांप पेपरों में इस्तेमाल होने वाला पेपर यहां भारत में ही बनता है,” अरबाज़ ने कहा। “पेपर मिलों द्वारा बनाए जाने वाले सिक्योरिटी पेपरों के उत्पादन पर इंडिया सिक्योरिटी प्रेस का कोई नियंत्रण नहीं है, ये ज़्यादातर मिलें निजी क्षेत्र में हैं। वास्तव में, वाटरमार्क बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाला उपकरण डैंडी रोल तक आसानी से मिलता है।”

“तुम मुझसे क्या करवाना चाहते हो?” राजू ने पूछा।

“पिछले साल सरकार ने आईएसपी को स्टांप पेपर की 5,281 लाख शीट का ऑर्डर दिया था,” अरबाज़ ने कहा। “आईएसपी ने 1,424 लाख शीट सप्लाई की थीं। 3,857 लाख शीट की कमी थी।”

राजू ख़ामोशी से पान चबाता रहा।

“अगर हम ये भी मान लें कि हर स्टांप पेपर का औसत मूल्य सौ रुपए होता है, तो हर साल 3,857 करोड़ रुपए की कमी होती है। मैं चाहता हूं तुम देश भर में जाकर स्टांप पेपर वितरकों से मिले। हम इस कमी को पूरा करने में मदद कर सकते हैं।”

राजू हंस पड़ा। “अब्दुल दादा को तुम पर बहुत नाज़ होता।”

“कौन जानता है?” अरबाज़ ने मज़ाक़ किया। “वो एक दिन मेरे चेहरे पर ही कोई स्टांप चस्पां कर सकते हैं!

ओऽम त्रयम्बकं यजामहे

सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं।

1521, विजयनगर

उर्वारुकमिव बन्धनान्।

मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

अपने नियमानुसार, कृष्णदेवराय भोर से पहले उठ गए थे। उन्होंने तिल का तेल पिया और एक तिहाई लीटर तेल से अपने शरीर की मालिश की। एक छोटा सा लंगोट बांधकर उन्होंने मिट्टी के वज़ानों से व्यायाम किया और फिर अपनी तलवार से अभ्यास किया जब तक कि पसीने ने उनके पोरों से सारा तेल बाहर नहीं निकाल दिया।

भीगे बदन के साथ ही महाराज एक राजकीय अंगरक्षक के साथ अखाड़े में उतर गए जिसे अधीश्वर का स्पष्ट निर्देश था कि उनके साथ कभी कोई रिआयत न बरते। कुश्ती के बाद कृष्णदेवराय अपने अश्व पर सवार हुए और उसे सरपट भगाते हुए गांवों की ओर चलते चले गए जब तक कि सूरज की पहली किरण दिखाई नहीं दी। ये उनके लिए लौटने का संकेत था।

अब, स्नान से निवृत्त होकर और स्वच्छ-निर्मल वस्त्र धारण कर, विजयनगर साम्राज्य के स्वामी, आंध्र के विजेता, तीन राजाओं के राजा कृष्णदेवराय ने रत्न किरीटम् का निरीक्षण किया जिसे महामंत्री तिम्मरूसु ने उनके अनुमोदन के लिए उनके सामने रखा था।

वो भव्य था। उस रत्नजड़ित मुकुट का वज़न 8.27 किलोग्राम था और उसमें 2,822 रक्तमणि, 160 पन्ने, 423 माणिक, तीन नीलम, दस लहसुनिया और 1,339 मोती जड़े थे।

“असाधारण है,” महाराज ने प्रशंसा की। “वो तलवार कहां है जो इससे मेल खाती है?”

कुछ हड़बड़ी फैली और एक घबराया सा स्वर्णकार आगे बढ़ा और उसने एक मख़मली गद्दी राजा के सामने पेश की जिस पर हीरेजड़ित मूठ वाली एक तलवार रखी थी। “ये महाराज की शान में जंचेंगी,” नादान स्वर्णकार ने कहा जिसे दोनों वस्तुएं बनाने का काम सौंपा गया था।

“मूर्ख!” अधीर महाराज ने झिड़का। “ये वस्तुएं मुझ जैसे तुच्छ मनुष्य के लिए नहीं हैं।” महामंत्री तिम्मरूसु मुस्कुराए। वो जानते थे ये वस्तुएं कहां जानी हैं। भगवान वेंकटेश्वर को।

“क्या मंदिर के प्रवेशद्वार पर तीनों प्रतिमाएं स्थापित हो गई हैं?” महाराज ने तिम्मरूसु से पूछा।

“जी, महाराज,” विश्वासपात्र महामंत्री ने उत्तर दिया। “तीनों—आपकी, रानी तिरुमलादेवी और रानी चिन्नादेवी की—प्रतिमाएं मुख्य मूर्ति के सामने प्रतिमा मंडपम् में स्थापित कर दी गई हैं।”

“आपने उन आकृतियों को देख लिया है?” राजा ने पूछा।

“अवश्य। तीनों के हाथ प्रार्थना में जुड़े हैं। बहुत ही वास्तविक और कलात्मक हैं। आप उन्हें देखकर प्रसन्न होंगे, महाराज,” तिम्मरूसु ने कहा।

तिरुमला वेंकटेश्वर मंदिर के लिए राजा का दान प्रचुर रहा हो सकता है किंतु वो इसे इस तरह से नहीं देखते थे। कुछ साल पहले, प्रख्यात संत वल्लभाचार्य उनसे भेंट

करने आए थे। कृष्णदेवराय ने कनकाभिषेकम् करके उनका सम्मान किया था। संत को एक सिंहासन पर बिठाया गया और 30,000 सोने के सिक्कों से भरे कलशों को भेंटस्वरूप संत के ऊपर उड़ेला गया।

मंदिरों, दान-पुण्य और साधु-संतों के प्रति कृष्णदेवराय की उदारता में कभी कोई कमी नहीं रहती थी। वो सात बार वेंकटेश्वर मंदिर गए थे और हर अवसर प्रभु के प्रति किसी अनमोल भेंट से स्मरणीय रहा था—शुद्ध सोने की विदुधारा, भुजाकीर्तियों के अनेक जोड़े, म्यान समेत तीन तलवारें, शुद्ध सोने की चेन वाले दो जोड़े अद्दीगलपेट, नवरत्न, एक जोड़ा कडियम, हज़ारों सोने के सिक्के, और क़ीमती नवरत्नों से सजा पीतांबर।

“नीलकंठ सोमयाजी कहां हैं?” राजा ने पूछा।

“वो तिरुमला से आ रहे हैं, महाराज,” तिम्मरूसू ने उत्तर दिया।

“मुझे उन्हें धन्यवाद देने का स्मरण कराना,” राजा ने कहा। “उनके बिना तिरुमला के भगवान वेंकटेश्वर के प्रति इनमें से कोई भेंट संभव नहीं हो पाती।”

सोमयाजी विजयनगर के सबसे प्रख्यात गणितज्ञ और खगोलशास्त्री थे। उन्होंने तंत्रसंग्रह और आर्यभट्टीय भाष्य समेत अनेक विद्वतापूर्ण ग्रंथ लिखे थे।

लेकिन सोमयाजी का एक गुप्त पक्ष और भी था। महाराज के अलावा और कोई उन रहस्यमय मंत्रों के बारे में नहीं जानता था जो सोमयाजी के लिखित संग्रह में थे। एक वैरागी साधु के निर्देशन में सोमयाजी ने अनेक वर्षों में उनमें महारत हासिल की थी।

महाराज जानते थे कि अगर भगवान वेंकटेश्वर की कृपा न रही होती तो वे अपने असंख्य युद्धों में कभी विजयी नहीं हो पाते। इन्हीं कृपाओं ने उन्हें बीजापुर, गोलकुंडा, ओडीशा की बहमानी सल्तनत पर विजय प्रदान की थी।

किंतु सोमयाजी और उनकी लाल आवरण में लिपटी पोथी के बिना, जिस पर मत्स्य का प्रतीक बना हुआ था, क्या वो कृपाएं फलीभूत हो सकती थीं?

पुस्तक पांच
1990–2000

“अरबाज़, उठो,” परोमिता ने कहा।

“क्या हुआ?” अरबाज़ ने पूछा। “अलीशा तो ठीक है?”

“वो सो रही है,” परोमिता ने कहा। “मैं उठ गई थी और रेडियो चल रहा था। बीबीसी रेडियो ने अभी बताया है कि राजीव गांधी मारे गए।”

“क्या?” अरबाज़ ने बिस्तर से निकलते हुए कहा। “तुम्हें यक़ीन है कि तुमने ग़लत नहीं सुना?”

“मुझे पूरा यक़ीन है,” परोमिता ने कहा।

अरबाज़ ने जल्दी से कपड़े पहने। “कहां जा रहे हो?” परोमिता ने पूछा।

“एयरपोर्ट,” अरबाज़ ने कहा। “मुझे दिल्ली पहुंचना होगा।”



विस्तार में ख़बर बाद में सामने आई।

1991 के चुनाव में राजनीतिक वापसी करने की उम्मीद में राजीव प्रचार अभियान पर थे। विशाखापट्टनम में सफल सभाओं के बाद उनका अगला पड़ाव तमिलनाडु का श्रीपेरंबदूर था। जब वो श्रीपेरंबदूर के रैली स्थल पर पहुंचे, तो अपनी कार से निकलकर मंच की ओर जाने लगे। अनेक समर्थकों, पार्टी कार्यकर्ताओं और स्कूली बच्चों ने उनके गले में माला डालने के लिए उन्हें रोका।

ठीक 10.21 पर, धनु नाम की एक युवती उनकी ओर बढ़ी और उसने उनका अभिवादन किया। वह उनके पैर छूने झुकी और आरडीएक्स विस्फोटक से भरी बैल्ट में विस्फोट कर दिया जो उसके कपड़ों के नीचे बंधी हुई थी। राजीव, धनु और चौदह अन्य लोग उस विस्फोट में मारे गए। धनु ‘लिबरेशन टाइगर्स ऑफ़ तमिल ईलम’ की सदस्य थी। भारत ने तभी श्रीलंका के गृहयुद्ध से भारतीय शांति सेना को वापस बुलाया था किंतु हिंसा ख़त्म नहीं हुई थी।

“वो कहां हैं?” दिल्ली में यश से मिलते ही अरबाज़ ने पूछा।

“विस्फोट की तीव्रता से उनका शरीर बुरी तरह क्षत-विक्षत हो गया है,” यश ने कहा। “अवशेष हवाईजहाज़ से दिल्ली लाए गए हैं। पालम एयरपोर्ट से उनका शव पुनर्निर्माण के लिए एम्स ले जाया जाएगा। पार्टी से आए फ़ैक्स संदेश में यही कहा गया है।”

तीन दिन का मतदान तो हो चुका था। और तीन दिन बाद ही राजकीय अंतिम संस्कार किया जा सका था।



यमुना के पश्चिमी तट तक की छह मील की शवयात्रा में लाखों शोकाकुल लोग

उमड़ पड़े थे। अरबाज़ अपने दूसरे अनेक सहकर्मियों के साथ एक ट्रक में खड़ा था जो उस तोपगाड़ी के पीछे था जिसमें राजीव गांधी का शव था। दो बजे शुरू होने के बाद इतनी कम दूरी पार करने में भी तीन घंटे लग गए थे। राजीव गांधी के शव को दर्शनार्थ दो दिन तीन मूर्ति भवन में रखा गया था।

सबके दिमाग़ में सुरक्षा की चिंता सबसे ऊपर थी। राजीव की मां की हत्या के नतीजे में भीषण हिंसा हुई थी। शव के चारों ओर जीप में सवार ब्लैक कैट कमांडो चल रहे थे, जिनके साथ तैंतीस सैनिकों की पलटनें थीं, जबकि एक हेलीकॉप्टर शवयात्रा की निगरानी कर रहा था, साथ ही बीच-बीच में तोपगाड़ी पर लाल गुलाब की पंखुड़ियां भी बिखेरता जा रहा था।

भीड़ लगातार उस कार की खिड़कियों पर ढुली जा रही थी जिसमें राजीव की पत्नी सोनिया चल रही थीं, और ज़ोरदारी से उनसे कांग्रेस पार्टी की कमान अपने हाथ में लेने की गुज़ारिश कर रही थी। सैकड़ों लोग राजीव के फूलों से ढके कास्केट को छूने की कोशिश कर रहे थे, जबकि "राजीव गांधी अमर रहें" के नारों से आकाश गूंज रहा था। जब भी भीड़ सुरक्षा रेखा को पार करने की कोशिश करती, उसे लाठियों से पीछे धकेल दिया जाता।

लाल तुर्रे वाली गहरी हरी पगड़ियों वाला सलामी दस्ता सोनिया, और राजीव के बच्चों—राहुल और प्रियंका—को शक्ति स्थल के ईंटों के चबूतरे तक ले गया। खादी में लिपटा राजीव का शव चंदन की चिता पर रखा गया था, उनका सिर दक्षिण की ओर था, और हिंदू एवं पारसी धर्मग्रंथों से मंत्रोच्चार किया जा रहा था।

यमुना के किनारे चिता को अग्नि देने से पहले राहुल ने उस पर गंगाजल छिड़का। साठ देशों के विदेशी राजनयिक देखते रहे जबकि तुरहियों की आवाज़ के साथ काला धुएं का गुबार उठा। पहले उनके भाई, फिर उनकी मां, अब राजीव... जैसे पूरे गांधी परिवार पर कोई शाप हो। अरबाज़ सम्मानजनक दूरी से अंत्येष्टि देखता रहा।

उसके पास खड़े यश ने कहा, "अब ये इलेक्शन बीजेपी के राम मंदिर बनाम नेशनल फ़्रंट के मंडल कार्ड का नहीं रहा।"

अरबाज़ यश को देखने के लिए मुड़ा।

"तुम खुशकिस्मत इंसान हो, अरबाज़ शेख़," यश बुदबुदाया।

"कैसे?" अरबाज़ ने पूछा।

"क्योंकि महाराष्ट्र में अभी मतदान नहीं हुआ है," यश ने कहा। "राजीव गांधी की हत्या से ज़बरदस्त सिंपैथी वेव पैदा होगी। देखते जाओ। तुम्हारी अपनी कॉन्स्टीटुएंसी में, तुम्हें पार जाने के लिए बस नन्हा सा तिनका चाहिए होगा।"

"राजीव गांधी की राख पर जीतने के बजाय मैं बुरी तरह हारना पसंद करूंगा," अरबाज़ ने यश से कहा।



1984 के चुनाव में जब कांग्रेस के लगभग बाक़ी सभी उम्मीदवार जीते थे तब अपनी शर्मनाक हार के बाद पामुलपर्ती वेंकट नरसिम्हा राव राजनीति से लगभग रिटायर हो गए थे। मगर अचानक, 1991 में हुई राजीव गांधी की हत्या उन्हें रिटायरमेंट से वापस राजनीति में खींच लाई थी। नेहरू-गांधी परिवार के बाहर पांच साल का कार्यकाल पूरा करने वाले एकमात्र व्यक्ति, राव दक्षिण भारत के पहले प्रधानमंत्री भी थे। ये देखते हुए कि उन्होंने आम चुनाव नहीं लड़ा था, उन्होंने संसद में पहुंचने के लिए नांदयाल के उपचुनाव में हिस्सा लिया। वो पांच लाख से ज़्यादा मतों के रिकॉर्ड मार्जन से विजयी हुए और गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में उनका नाम दर्ज हुआ।

ये इस तथ्य के बावजूद था कि ये राजनीतिक अस्थिरता का दौर था। गत वर्ष, दो नवागंतुक हिंदी हार्टलैंड की राजनीति पर एकाधिकार जमाने आ पहुंचे थे: उत्तरप्रदेश में मुलायम सिंह यादव और बिहार में लालू प्रसाद यादव। कोई भी ज़्यादा से ज़्यादा यही कह सकता था कि भारतीय राजनीति अप्रत्याशित है।

लेकिन पी.वी. नरसिम्हा राव भारत के अब तक के सबसे ज़्यादा समझदार प्रशासक के रूप में सामने आ रहे थे। वो प्रशासन से राजनीति को दूर रखते प्रतीत होते थे। या संभव है, वो इतनी चतुराई से राजनीतिक खेल खेलते थे कि किसी को अहसास ही नहीं होता था कि वो राजनीति खेल रहे हैं।

उन्होंने परिपाटी को तोड़ते हुए एक ग़ैर-राजनीतिक अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह को अपना वित्त मंत्री बनाया जो अब एक नई औद्योगिक नीति का ऐलान करके लाइसेंस राज को छिन्न-भिन्न करने में व्यस्त थे। प्रधानमंत्री ने विपक्ष के सदस्य सुब्रह्मण्यम स्वामी को श्रम मानक एवं अंतरराष्ट्रीय व्यापार आयोग में नियुक्त किया, उस पद पर जो कैबिनेट रैंक के समकक्ष था। अटलबिहारी वाजपेयी के साथ उनका समीकरण कमाल का था। वो नियमित रूप से वाजपेयी को भारत की ओर से संयुक्त राष्ट्र की मीटिंगों में भेजते थे। वो तो एक क़दम और आगे निकल गए और प्रधानमंत्री के पद के सबसे प्रमुख दावेदारों में से एक शरद पवार को रक्षा मंत्री के ओहदे पर बिठा दिया।

कैबिनेट की विभिन्न नियुक्तियों में दो और महत्वपूर्ण थीं। नागरिक उड्डयन मंत्री के रूप में यश धर और कपड़ा राज्य मंत्री के रूप में अरबाज़ शेख़। अपने निर्वाचन क्षेत्र से अरबाज़ शेख की लगातार जीत ने उसके प्रतिद्वंद्वी शिव सेना के केशव गाडगिल को अपना निर्वाचन क्षेत्र बदलने पर मजबूर कर दिया। इसके बाद दोनों व्यक्ति ड्रिंक के लिए मिले और एक दूसरे के नाम से टोस्ट किया।

अरबाज़ की नियुक्ति पर बहुत हुज्जत हुई क्योंकि उसकी अंडरवर्ल्ड की पृष्ठभूमि सबको पता थी, लेकिन पी.वी.नरसिम्हा राव बहुत ज़्यादा व्यावहारिक व्यक्ति थे। वो जानते थे कि कपड़ा उद्योग की मोर्चाबंद यूनियनों को संभालने के लिए उन्हें कोई बदमाश क़िस्म का व्यक्ति चाहिए था।

नागरिक उड्डयन मंत्री के रूप में यश धर की नियुक्ति एक सुखद समाचार थी। सबसे ज़्यादा ख़ुश अरविंद बागड़िया था। उसने तुरंत ही आदरणीय मंत्री के सामने अमेरिकन एयरलाइंस, टीडब्ल्यूए और यूनाइटेड के लिए मार्ग बढ़ाने का निजी निवेदन

रख दिया। साथ ही वो एयर फ़्रांस के लिए भी मार्ग बढ़वाना चाहता था। यश को उचित प्रकार से उपकृत किया जाता।

"मैं ईमानदार नेता हूं, अरविंद जी," यश ने परिहास किया। "आप मुझे रिश्वत देने की कोशिश कर रहे हैं?"

"ईमानदार नेता शब्द अपने आप में विरोधाभासी है," अरविंद ने जवाब दिया। "आप या तो ईमानदार हो सकते हैं या नेता हो सकते हैं।"

ये कहकर अरविंद शिकागो और टूलूज़ के सफ़र पर निकल पड़ा।



अध्यापिका ज्योति अपने साधारण से कमरे में बैठी ध्यान लगा रही थीं। एक घंटे बाद जब उन्होंने अपनी आंखें खोलीं तो पाया कि उनका सहायक बड़े सब्र से इंतज़ार कर रहा है।

"प्रधानमंत्री आपसे बात करना चाह रहे थे," उसने कहा। "मैंने उनकी सेक्रेटरी से कह दिया था कि आप फ़ोन कर लेंगी।"

"जानती हूं उन्होंने क्यों फ़ोन किया है," अध्यापिका ज्योति ने कहा।

पी.वी. नरसिम्हा राव की सरकार को सुरसा के मुंह सी फैली अर्थव्यवस्था विरासत में मिली थी। भुगतान संतुलन के रूबरू खड़ी सरकार क़र्ज़ चुकाने के लिए अपने भंडार में से सोना भेजने पर विचार कर रही थी।

"मैं सेक्रेटरी से क्या कहूं?" सहायक ने पूछा।

"कि प्रधानमंत्री मुझसे मिलें," अध्यापिका ने कहा।



उनहत्तर वर्षीय बुज़ुर्ग स्पष्ट रूप से आनंद ले रहे थे। वो ग्रैंड कैन्यॉन घूमने गए थे और वहां से डिज़्नीलैंड रुक गए थे। डिज़्नीलैंड में लंबी-लंबी क़तारों में लगकर वो लगभग सारी राइड्स पर बैठे।

न्यूयॉर्क में वो अपने दोस्तों से मिले थे और वो उन्हें उनके मनपसंद मैक्सिकी रेस्तरां ले गए थे। उन्होंने ब्रॉडवे के कई शो देखे, और अपने सफ़र के साथियों के लिए आइसक्रीम ख़रीदी। फिर वो श्वार्ट्ज़ पर रुक गए, अपनी दत्तक नातिन के लिए ढेरों खिलौने ख़रीदने के लिए।

श्वार्ट्ज़ में उन्होंने एक परिचित व्यक्ति को हाथ जोड़कर ये कहते हुए अपनी ओर आते देखा, "नमस्ते, अटल जी।"

अटल बिहारी वाजपेयी तुरंत उसे पहचान गए। "कैसे हो, अरविंद?" दसवीं लोकसभा में विपक्ष के नेता ने पूछा।

“मैंने सड़क से आपको देखा था लेकिन बाधा डालने में हिचक गया। आप खिलौनों को देखने में इतना मज़ा ले रहे थे... तो मैं पीछे-पीछे आ गया!”

अटल जी हंसे। “आदमी हमेशा बच्चे रहते हैं... हमें अपने खिलौने हमेशा पसंद होते हैं। मगर ये चक्कर मेरी नातिन की ख़ातिर है।”

शेष दुनिया से अज्ञात, कूटनीतिज्ञ नेता की निजी शख़्सियत उनकी सार्वजनिक शख़्सियत से बहुत भिन्न थी। हिंदी कविता पढ़ने और लिखने के अलावा उन्हें अपने कुत्तों को लंबी टहल के लिए ले जाना और जॉन ग्रीशम की किताबें पढ़ना पसंद था। उन्हें यात्राएं करना पसंद था और ऐसे दौरों पर उनका सामान्य धोती-कुर्ते का पहनावा पैंट और चैक की बुश्शर्ट में तब्दील हो जाता था।

“आपका न्यूयॉर्क कैसे आना हुआ?” अरविंद ने पूछा।

“प्रधानमंत्री ने फिर से मुझे संयुक्त राष्ट्र में भेजा है,” वाजपेयी ने कहा। “और तुम्हारा?”

“मैं बोइंग कंपनी के साथ समझौते पर दस्तख़त करने आया हूं। अभी शिकागो से पहुंचा हूं और कल पेरिस होते हुए इंडिया लौट रहा हूं।”

“पेरिस क्यों?” वाजपेयी ने पूछा।

“टूलूज़ में एयरबस के हैडक्वार्टर्स में मेरी मीटिंग है।”



यश धर ने अपनी मेज़ पर रखे दस्तावेज़ों को देखा। फिर उसने नज़र उठाकर अरविंद को देखा। “अच्छा सौदा लगता है,” उसने कहा।

“ये ज़िंदगी का बेहतरीन सौदा है,” अरविंद ने कहा। “ऐसा जो आपको और मुझे इतना अमीर बना देगा जो हमारी कल्पना से भी परे है।”

“इस सौदे का बेहतरीन भाग तो ये है कि दोनों ही कंपनियां बेईमानी का आरोप नहीं लगा पाएंगी,” यश ने कहा।

“दुनिया भर की एयरलाइंस एक साल में तीस से चालीस अरब डॉलर के, क़रीब चार सौ विमानों का ऑर्डर दे रही हैं,” अरविंद ने कहा। “एयरबस और बोइंग के बीच इस बिज़नेस को लेकर गलाकाट दौड़ है। जिस कंपनी को ऑर्डर नहीं मिलते, वही शिकायत करने लगती है कि रिश्वत दी गई है। जो हल मैंने निकाला है, उसमें इस सबका ध्यान रखा गया है।”

“और रिआयतों और परफ़ॉर्मेंस की गारंटी का क्या?” यश ने पूछा।

“सब तय हो गया है।”

“और टेक्नीकल परफ़ॉर्मेंस?” यश ने पूछा।

“मैंने सत्यपाल को लगाया है कि मद्रास जाकर डॉ. अरविंदा मुथु से मिले, जो

मंत्रालय में आपके प्रमुख टेक्नीकल सलाहकार हैं। सत्यपाल ये सुनिश्चित करेंगे कि डॉ. मुथु एयरबस और बोइंग दोनों की मशीनों को स्वीकृति दें।"

"तो नेशनल कैरियर्स अनुबंध पर किसके साथ दस्तख़त करेगा?"

"हमने सिविल एविएशन लीज़ एंड फ़ाइनेंस इन बरमूडा नाम की एक कंपनी को शामिल किया है। आप और मैं हमारे नामांकितों के ज़रिए पचास फ़ीसदी के शेयरहोल्डर हैं। ये अकेली कंपनी ही बोइंग और एयरबस दोनों के साथ कारोबार करेगी, दोनों में से किसी का भी प्रतिनिधित्व किए बग़ैर," अरविंद ने कहा। "ये विमान ख़रीदेगी और फिर उन्हें नेशनल कैरियर्स को लीज़ पर देगी।"

"विमान निर्माताओं को इससे कोई परेशानी नहीं है?" यश ने पूछा।

"वास्तव में, वो तो इससे ख़ुश ही हैं," अरविंद ने कहा। "यूएस कांग्रेस ने कई साल पहले फ़ॉरेन करप्ट प्रैक्टिसेज़ एक्ट— एफ़सीपीए—पास किया था। ये अमेरिकी कंपनियों, उनके अधिकारियों या उनके प्रतिनिधियों को विदेशी अधिकारियों को रिश्वत देने से रोकता है। फ़ायदे की बात ये है कि हमारी बरमूडा कंपनी न तो अधिकारी और न ही प्रतिनिधि। बोइंग सुरक्षित है।"

"और एयरबस?" यश ने पूछा।

"उनके ऊपर ऐसे प्रतिबंध नहीं हैं। ओईसीडी कोशिश कर रहा है कि फ़्रांस विदेशी सरकारी अधिकारियों को रिश्वत देने को ग़ैरक़ानूनी बनाने वाले समझौते को मंज़ूरी दे दे लेकिन फ़्रांस ने ऐसा नहीं किया है," अरविंद ने कहा। "अरे, सरकार तो फ़्रांसीसी कंपनियों को रिश्वत देने के लिए कर में छूट लेने की भी इजाज़त देती है!"

"तो केवल एयरबस से ही डील क्यों न की जाए?" यश ने पूछा।

"क्योंकि बोइंग शिकायत कर देगा। हम पर सीबीआई की जांच हो जाएगी," अरविंद ने समझाया।

"लोग पूछेंगे तो हैं ही कि हम इन दोनों कंपनियों के बीच ऑर्डर को बांटकर बेड़े में घालमेल क्यों कर रहे हैं," यश ने कहा।

"यही तो हालात की ख़ूबसूरती है," अरविंद ने कहा। "हमारे यहां दो नेशनल कैरियर्स हैं, इंडियन एयरलाइंस और एयर इंडिया। इंडियन एयरलाइंस को केवल एयरबस विमान मिलेंगे और एयर इंडिया को केवल बोइंग विमान। विमान बेड़े में कोई घालमेल नहीं होना।"

"विमान ख़रीदने का पैसा कहां से आएगा?" यश ने पूछा। "मेरा अनुमान है कि बरमूडा कंपनी के पास तो कुछ नहीं होगा।"

"नेशनल कैरियर्स लीज़ का किराया एडवांस में देंगी और साथ में भारी-भरकम डिपॉज़िट जमा करेंगी," अरविंद ने जवाब दिया। "बरमूडा कंपनी उस पैसे से विमान ख़रीदेगी। बरमूडा कंपनी को चलाने का ख़र्च एयरबस और बोइंग उठाएंगे।"

"क्या लीज़ के इंतज़ामों पर सवाल उठाया जा सकता है?" यश ने पूछा।

“मुश्किल है,” अरविंद ने जवाब दिया। “निस्संदेह, कुछ विमान पारंपरिक तरीक़े से ख़रीदे और बेचे जाते हैं लेकिन ज़्यादातर नहीं। दुनिया भर में अनेक एयरलाइंस सरकारों के पास हैं। कमीशन भुगतान पूंजीगत लागत को बढ़ा ही देते हैं। बढ़ी हुई लागत का मतलब है उच्चतर अवमूल्यन और उच्चतर अवमूल्यन का अर्थ है एयरलाइन के नुक़सानों में और ज़्यादा लाल स्याही लगना। लीज़ ख़ूबसूरती से इस तरह के कमीशनों पर मुलम्मा चढ़ाती है।”

“तो हम इसे खेलेंगे कैसे?” यश ने ये समझते हुए पूछा कि अरविंद का तरीक़ा ही सही तरीक़ा है।

“सबसे पहले, हम दोनों कंपनियों से दोनों नेशनल कैरियर्स द्वारा सीधी ख़रीदों के लिए टेंडर देने को कहेंगे। दोनों कंपनियां जो मूल्य देंगी वो बहुत ज़्यादा होंगे। उन्हें निरस्त कर दिया जाएगा।”

“फिर?”

“सिविल एविएशन लीज़ एंड फ़ाइनेंस इन बरमूडा नेशनल कैरियर्स को विमान लीज़ पर देने की पेशकश करेगी,” अरविंद ने कहा। “उन्हीं विमानों को जिन्हें वो वैसे ख़रीद लेते। पहले की बढ़ी हुई क़ीमतों को देखते हुए, बरमूडा का प्रस्ताव काफ़ी किफ़ायती लगेगा।”

“जब दूसरे देश की कंपनी को ऑर्डर मिलेगा तो अमेरिका और फ़्रांस की सरकारें नाराज़ होंगी,” यश ने आंकलन किया।

“इसीलिए तो मुआवज़े के तौर पर आप उनके नेशनल कैरियर्स के लिए अतिरिक्त मार्ग प्रदान कर रहे हैं,” अरविंद ने कहा। “ये एकदम परफ़ेक्ट सौदा है—जिसमें सब ख़ुश रहेंगे।”



“तुम उस हरामज़ादे की मदद क्यों कर रहे हो?” अरबाज़ ने पूछा।

“अरबाज़, हम नेता हैं,” यश ने कहा। “हमारे कोई स्थायी दोस्त या स्थायी दुश्मन नहीं होते।”

“वो मेरा दुश्मन है,” अरबाज़ ने कहा। “उसने उस क़ुर्बानी डील में मुझे बहुत बड़ा चूना लगाया था।”

“और तुमने इंकम टैक्स छापे और चोरी के साथ उससे बदला ले लिया था। जहां तक मुझे याद है, तुमने जो गंवाया था, उससे भारी मुनाफ़ा कमाया था। हिसाब बराबर। बल्कि तुमने तो बराबर से भी ज़्यादा कमाया है।”

“ये इस तरह नहीं होता है,” अरबाज़ ने कहा। “एक बार दुश्मन तो हमेशा के लिए दुश्मन। मैं चाहता हूं तुम विमानों का वो सौदा रद्द कर दो जिसमें वो शामिल है।”

“मैं ऐसा नहीं कर सकता,” यश ने जवाब दिया। “ये बहुत संदेहास्पद लगेगा। फिर सीबीआई मेरे सिर पर सवार हो जाएगी।”

“तुम ऐसा नहीं कर सकते?” अरबाज़ ने कहा, ग़ुस्से से उसकी आवाज ऊंची हो गई थी। “जब तुम मुश्किल में थे, तब मैं ही था जिसने तुम्हारी मदद की थी। तुमने मुझसे कहा था कि तुम हमेशा मेरे क़र्ज़दार रहोगे। मैं उसी क़र्ज़ को वापस मांग रहा हूं।”

“समझदारी से काम लो, अरबाज़,” यश ने कहा। “और वैसे भी, ये सौदा तुम्हें तो किसी तरह से नुक़सान नहीं पहुंचा रहा है। वादा करता हूं बागड़िया के साथ और कोई सौदा नहीं करूंगा। ये कैसा लग रहा है?”

“उतना ही झूठा जितना वो वक़्त था जब तुमने मुझसे कहा था कि तुम हमेशा मेरे क़र्ज़दार रहोगे।”

24 जून 1991 को राव एंटरप्राइज़ेज़ का विजय राव मद्रास यूनिवर्सिटी सैंटीनरी ऑडिटोरियम की पहली पंक्ति में बैठा था जब तमिलनाडु की नई मुख्यमंत्री ने पद की शपथ ली थी। उन्होंने बुद्धिमानी से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ गठबंधन कर लिया था और सहानुभूति की लहर ने सुनिश्चित कर दिया था कि उनका गठबंधन 234 निर्वाचन क्षेत्रों में से 225 पर विजय हासिल करे। तैंतालीस वर्षीय जयललिता जयराम राज्य की अब तक की सबसे कमउम्र मुख्यमंत्री थीं। वो एक प्रतिभाशाली अभिनेत्री थीं, और एक सौ बीस से ज़्यादा तमिल, तेलुगु और कन्नड़ फ़िल्मों में अभिनय कर चुकी थीं। लेकिन ये सबसे बड़ी भूमिका थी जो उन्हें निभानी थी।

राव ने अक़्लमंदी से ‘अम्मा’ की पार्टी का समर्थन किया था और अब वो एआईएडीएमके की सरकार के साथ अपनी राजनीतिक नज़दीकी का फ़ायदा पाने की आशा कर रहा था। जब सत्ताईस साल की उम्र में उसने बिज़नेस शुरू किया ही था तब उसे विरासत में मिले साम्राज्य में कपड़ा मिलें, होटल, चाय और तंबाकू शामिल थे। सैंतीस साल की उम्र तक वो कपड़ा उद्योग से बाहर निकल लिया और होटल उद्योग पर अपनी पकड़ मज़बूत की। सैंतालीस की उम्र तक उसने चाय उद्योग को भी तिलांजलि दे दी और अपना रियल एस्टेट का बिज़नेस जमाया। और अब, सत्तावन साल की उम्र में, वो तंबाकू उद्योग से भी निकलकर वित्तीय सेवाओं में क़दम रख चुका था। इकलौती बात जो उसको मथती रहती थी, वो ये थी कि किस तरह अरविंद बागड़िया ने उसे फंसाकर सोने की बेकार खदानें ख़रीदवा दी थीं।

उससे दो पंक्ति पीछे नागरिक विमानन मंत्रालय के मुख्य तकनीकी सलाहकार डॉ. अरविंदा मुथु बैठे थे। उनके बग़ल में कलकत्ता से आया एक व्यक्ति था। उसका नाम सत्यपाल मित्तल था। डॉ. मुथु ने राव को देखकर हाथ हिलाया और विजय ने भी जवाब में हाथ हिला दिया। शपथ ग्रहण संपन्न होने के बाद आगंतुक जलपान के लिए पहुंचे।

“आप कैसे हैं, डॉ. मुथु?” विजय राव ने पूछा।

“बहुत बढ़िया, मि. राव,” वैज्ञानिक ने जवाब दिया। “हां, मुझे कलकत्ता से आए मि. सत्यपाल मित्तल से मिलवाने की इजाज़त दें।”

“कलकत्ता? आप किसके लिए काम करते हैं?” विजय राव ने पूछा।

“अरविंद बागड़िया,” सत्यपाल ने जवाब दिया।



अरविंद होटल दे बरे से निकला और लेक जेनेवा को क्रॉस कर रहे पौंट द्यु मौं ब्लां को पार किया। सर्दियां थीं और अरविंद ने अपने मैरिनो वूल के सूट पर मोटा ऊनी ओवरकोट और मफ़लर पहन रखा था। अपनी मंज़िल रु दे ला सी पर पहुंचने तक वो क्वे द्यु ज़ेनरेल-गुसियां पर चलता रहा।

बिल्डिंग साधारण सी थी जिसके बाहर एक साधारण पीतल की प्लेट लगी हुई थी जिस पर लिखा था *56* रु दे ला सी। उसने धकेलकर ठोस बलूत का बना दरवाज़ा खोला जो उसे एक कक्ष में ले गया। आगे एक और दरवाज़ा था, इस बार कांच का। उसने साइड में लगे पीतल के बटन को दबाया और गहरे नीले रंग का सूट पहने एक आदमी ने उसे खोल दिया। अंदर क़दम रखने के बाद ही अरविंद नाम देख पाया, एलेनबाक एंड सी, जो उम्दा पॉलिश वाली लकड़ी की दीवार पर सुनहरे अक्षरों में ख़ूबसूरती से उकेरा गया था।

"मि. फ़ैरमान, प्लीज़," अरविंद ने नीले सूटधारी से कहा। मि. नीले सूट ने एक फ़ोन उठाया और किसी से बात की। मिनट भर में, भली-भांति संवरे बालों और ब्रॉच से सजी ग्रे ड्रेस पहने एक अधेड़ उम्र की सेक्रेटरी एलिवेटर से निकली और अरविंद की ओर आई।

"वो आपका इंतज़ार कर रहे हैं, मि. बागड़िया," सेक्रेटरी ने कहा। "मेरे साथ आइए, प्लीज़।"

अरविंद एलिवेटर में घुसा और सेक्रेटरी ने एक बटन दबाया जो उन्हें तीसरी मंज़िल पर ले गया। वो कई ग़लीचेदार गलियारों से गुज़रे, सबमें निजी कॉन्फ़्रेंस कक्षों के दरवाज़े थे। आख़िरकार सेक्रेटरी ने उनमें से एक खोला और अरविंद को एक छोटे से कमरे में ले गई जहां एक कॉन्फ़्रेंस टेबल और चार कुर्सियां पड़ी थीं।

"आपके लिए कुछ लाऊं?" उसने पूछा जबकि अरविंद ने अपना कोट उतारा और उसे थमा दिया। "चाय, कॉफ़ी, पानी?"

"बस पानी, प्लीज़," अरविंद ने बैठते हुए कहा।

"स्टिल या स्पारक्लिंग?" उसने पूछा।

"स्टिल," अरविंद ने कहा, तभी दरवाज़ा खुला और फ़ैरमान अंदर आया।

सेक्रेटरी उन्हें अकेला छोड़ गई और फ़ैरमान ने अपने साथ लाई फ़ाइल खोल ली। उसने एक पतले तार के फ़्रेम का चश्मा निकाला और उसे पहन लिया। फिर उसने एक स्टेटमेंट निकाला और अरविंद को दिखाया। अंतिम रकम 66,105,213.06 स्विस फ़्रैंक थी।

"हमें सिविल एविएशन लीज़ एंड फ़ाइनेंस इन बरमुडा से नियमित रूप से कमीशन मिल रहे हैं," फ़ैरमान ने कहा। "अंतिम ट्रांसफ़र एक महीने पहले हुआ था।"

"स्विस फ़्रैंक में बक़ाया राशि भारतीय रुपए में कितनी होगी?" अरविंद ने एवियन

पानी के घूंट भरते हुए कहा जो सेक्रेटरी उसके लिए लाई थी।

फ़ैरमान ने कॉन्फ़्रेंस टेबल की एक दराज़ से एक छोटा सा कैलकुलेटर निकाला। "कल, एक स्विस फ़्रैंक का मूल्य 30.2548 भारतीय रुपए था। इसका मतलब है कि हमारे बैंक में आपके खाते की राशि लगभग दो अरब रुपए है। आप क्या चाहते हैं हम इसका क्या करें?"

"मैं चाहता हूं कि आप अपने बैंक में कुछ और खाते खोलें," अरविंद ने कहा।

"एक और संख्यांकित खाता?" फ़ैरमान ने पूछा।

"नहीं," अरविंद ने कहा। "ये मेरी उन कंपनियों के लिए करंट खाते होंगे जो मॉरीशस में हैं।"

"नाम?" फ़ैरमान ने पूछा।

अरविंद ने अपने सूट की अंदरूनी जेब में हाथ डाला और एक छोटी सी प्रार्थना पुस्तिका अष्टोत्तर शतनामावाली निकाली। उसे उसने फ़ैरमान को थमा दिया।

"इस पुस्तक में विनाश के देवता शिव के 108 नाम हैं। मैंने इन 108 कंपनियों को मॉरीशस में शुरू किया है।"

"तो आपको 108 खाते चाहिए?" फ़ैरमान ने बिना झिझके कहा। अपने लंबे कैरियर में उसे अनेक क्लायंटों के ऐसे निवेदन मिले थे जो अजीबोग़रीब थे। "इन कंपनियों के पते क्या हैं?"

"सबके पते समान हैं," अरविंद ने जवाब दिया। "सी/ओ ब्लैकहोल मैनेजमेंट सर्विसेज़ लि, सुईट 2045, लैंकेस्टर कोर्ट, लैवोक्वेर स्ट्रीट, पोर्ट लुइस। एलेनबाक एंड सी में खाते खोलने के लिए मॉरीशस से मेरे वकील हरेक कंपनी के मैमोरैंडम एंड आर्टिकिल्स ऑफ़ एसोसिएशन के साथ ही डाइरेक्टर्स की सूची और बोर्ड के समुचित प्रस्ताव भी आपको भेज देंगे।"

"ये हो जाएगा," फ़ैरमान ने अपनी फ़ाइल बंद करते हुए कहा।

"जब खाते खुल जाएं, तो कृपया मेरे खाते से पांच लाख स्विस फ़्रैंक इन 108 खातों में ट्रांसफ़र कर दें," अरविंद ने अपनी कुर्सी से उठते और कोने में रखे रैक पर से अपना ओवरकोट उठाते हुएकहा।

"अगर मैं टांग नहीं अड़ा रहा हूं, मि. बागड़िया, तो आप ये किसलिए कर रहे हैं?" फ़ैरमान ने अपना चश्मा उतारकर उसे वापस अपनी जेब में रखते हुए पूछा।

"पुराने समय में राजा लोग खुद को बचाने के लिए क़िले बनवाते थे और अपने शहरों के चारों ओर खाइयां खुदवाते थे। ये महज़ मेरा क़िला है।"



विजय राव दोनों आदमियों को देख रहा था जो अपनी सीटों पर कसमसा रहे थे। ये साफ़ था कि वो उस तरीक़े पर बात करने में असहज हो रहे थे जिससे बागड़िया ने उन्हें

धोखा दिया था। वो समझ सकता था। उसे पता था कि खुद उसने खुद को कितना मूर्ख महसूस किया था जब उसे पता लगा कि सोने की खदानों का सारा प्रोजेक्ट ही एक बड़ा घोटाला है।

"ये अरविंद बागड़िया से हिसाब चुकाने का एक मौक़ा है लेकिन आपको साफ़-साफ़ बताना होगा," विजय राव ने कहा। "अगर उसने आपको भी धोखा दिया है—जैसे मुझे दिया था—तो ये हमारा फ़र्ज़ है कि उसे सबक़ सिखाएं।"

घनश्याम दास और राम लाल खेतान ने एक दूसरे को देखा। उन्हें अभी भी वो पल याद था जब वो टॉलीगंज क्लब में एक कार के आने का इंतज़ार कर रहे थे और उसकी जगह एक बैलगाड़ी ने आकर उन्हें मुंह चिढ़ाया था। कितना शर्मिंदगी भरा था ये। और नकारात्मक ख़बरों की कुछ आदत ही होती है तेज़ी से दुनिया भर में फैल जाने की। अपनी खोई साख को वापस पाने में उन्हें कई महीने सब्र से काम करना पड़ा था।

"वो धोखेबाज़ है," घनश्याम दास ने कहा। "समय आ गया है कि कोई उसे उसकी औक़ात बताए। क्या आपके पास कोई योजना है?"

"हां," विजय राव ने कहा। "मद्रास में हाल ही में मैं उसके एक आदमी से मिला था। हमारी अच्छी पटरी बैठ गई थी। उसका नाम सत्यपाल मित्तल है।"



ओबरॉय ग्रैंड होटल की चौथी मंज़िल पर, पूल की ओर रुख़ वाले एक अंधेरे कमरे में एक बैड पर दो लोग थे। वहां से हल्की-हल्की सिसकारियां उठ रही थीं, जबकि वो जोड़ा अपनी ही लय में लीन था।

बिस्तर के चारों ओर कपड़े बिखरे पड़े थे। उसकी साड़ी, उसकी पैंट और जूते, टाई। अरविंद ऊपर था और किसी जानवर की तरह उस पर सवार अनथक आघात किए जा रहा था। उन्होंने पोज़ीशन बदलीं और अरविंद ऊपर की ओर उठ गया ताकि और गहराई से उसमें समा सके। दोनों पसीने की महीन चादर से ढके हुए थे और जब उसने क्लाइमेक्स को आते महसूस किया तो वो पूरी तरह उसमें समा गई। कुछ ही पल बाद अरविंद के हाथ उसके वक्ष पर थे और वो ज़िंदगी के परमानंद में डूब गया।

कुछ मिनट वो चादर में गुथे पड़े रहे, फिर अरविंद ने खुद को अलग किया। काम निबटने के बाद औरतें लिपटी क्यों पड़ी रहना चाहती हैं? वो निबट चुका था।

जब वो कमरे में आया था, तो वो बेड पर उसका इंतज़ार कर रही थी, अपनी नग्नता में दमकती। उसे तुरंत ही अपनी टांगों के बीच कुछ उभरता सा महसूस हुआ, उसने झटपट अपने कपड़े उतार फेंके और उस पर चढ़ गया। लेकिन अब वो निबट चुका था और काम पर वापस लगना चाहता था।

उसने गिनने की कोशिश की कि वो कितनी औरतों के साथ हमबिस्तर हो चुका था। बॉम्बे की मॉडल, कलकत्ता की लेखिका, अहमदाबाद की बदनाम औरत, लखनऊ की गायिका, पाकिस्तान की पेंटर और केरल की डांसर... बीच में ही कहीं वो गिनती भूल गया।

उसने जाते हुए कहने के लिए कोई सही सी बात सोचते-सोचते जल्दी से कपड़े पहने। मन में कहीं वो अपने सबसे अच्छे दोस्त के साथ अफ़ेयर करने के लिए अभिलाषा से बदला ले रहा था। उसका एक और अंश उससे कहता था कि दोषी वही है कि वो इतने साल अपनी पत्नी को नज़रअंदाज़ करता रहा था।

अरविंद के अंदर कहीं उसकी अंतरात्मा उससे कह रही थी कि परफ़ेक्ट प्रेम का आनंद लेने की जगह वो परफ़ेक्ट प्रेमिका ढूंढ़ने में अपना वक़्त बर्बाद कर रहा है।



अरबाज़ खुले कॉलर की कैज़ुअल शर्ट पहने अपने बैलार्ड एस्टेट के ऑफ़िस में बैठा था। उसके सामने अनछुई कॉफ़ी का कप रखा था। आगंतुक की कुर्सी पर बैठा व्यक्ति मसाला चाय पी रहा था।

“आने के लिए शुक्रिया, मि. लखोटिया,” अरबाज़ ने चंदर लखोटिया से कहा।

“मेरी खुशनसीबी है, अरबाज़ भाई,” चंदर ने कहा। “आपके बारे में मैंने बहुत कुछ सुन रखा है।”

“उसमें कुछ अच्छी बातें भी होंगी, मुझे उम्मीद है!” अरबाज़ ने मुस्कुराते हुए कहा।

“सब अच्छी ही हैं,” चंदर ने झूठ बोला। “अब बताइए मैं आपके क्या काम आ सकता हूं।”

“आप मि. अरविंद बागड़िया के परिचित हैं। उनके मित्र हैं?” अरबाज़ ने कहा।

“मैं समझता तो था कि वो दोस्त है, अरबाज़ भाई,” चंदर ने कहना शुरू किया। “बदक़िस्मती से वो अब मुझे दोस्त नहीं समझता है, हालांकि मैंने आउट ऑफ़ माइ वे जाकर उसकी मदद की थी।”

अरबाज़ चंदर को घूरता रहा, इस कोशिश में कि शायद चेहरे की कोई शिकन पकड़ में आ जाए जिससे पता चल जाए कि वो झूठ बोल रहा है। कोई नहीं मिली।

“आपको थोड़ा पैसा कमाना कैसा लगेगा?” अरबाज़ ने पूछा।

“कितना?” चंदर ने पूछा। अरबाज़ हंस दिया।

“जैसा कि आप जानते हैं, मैं आजकल कपड़ा राज्य मंत्री हूं,” अरबाज़ ने कहा।

“जी, सर, मैं अच्छी तरह जानता हूं कि पीएम ने आपको कितना अहम पोर्टफ़ोलियो सौंपा है,” चंदर ने चापलूसी की।

“भारत में तक़रीबन 1900 कपड़ा मिलें हैं,” अरबाज़ ने कहा।

“उनमें लगभग नौ लाख कर्मचारी काम करते हैं। उनमें से 546 बंद पड़ी हैं।”

“दत्ता सामंत ने उद्योग को ख़त्म कर दिया,” चंदर ने ज़ोर से चाय सुड़कते हुए कहा।

“सही है। 546 बंद मिलों में से 167 को पहले ही बोर्ड फ़ॉर इंडस्ट्रियल एंड फ़ाइनेंशियल रीकंस्ट्रक्शन—बीआईएफ़आर—को सौंप दिया गया है, मगर ये कुछ ख़ास नहीं कर पा रहा है। समस्या का पैमाना बहुत बड़ा है।”

“ये तो आम मज़ाक़ बन चुका है कि बीआईएफ़आर का मतलब है ‘बोर्ड फ़ॉर इंडस्ट्रियल फ़्यूनरल राइट्स,’” चंदर ने कहा।

“बिल्कुल सही,” एक डनहिल सिगरेट सुलगाते हुए अरबाज़ हंसा।

“बंबई में मुझे एक टैक्सटाइल यूनिट का पता लगा है जो अभी तक बीआईएफ़आर के पास नहीं गई है,” उसने कहना जारी रखा, “हालांकि ये नुक़सान में जा रही है। इसके पास बीस एकड़ मौक़े की ज़मीन है।”

“आप एल्बर्ट मिल्स की बात कर रहे हैं?” चंदर ने पूछा।

“हां, वही। ये बीआईएफ़आर की ख़ास उम्मीदवार है और, आम तरीक़े से, उनके विचारार्थ ही भेज दी जाती...”

“मगर?” चंदर ने पूछा।

“मगर मैंने फ़ाइल रोक ली है,” अरबाज़ ने कहा।

“क्यों?” चंदर ने पूछा।

“क्योंकि मैंने देखा कि उसकी सबसे बड़ी शेयरहोल्डर ब्रेड इंवेस्टमेंट्स लिमिटेड है।”

“अरविंद बागड़िया की कंपनी,” चंदर ने सीटी बजाई।

“बिल्कुल,” अरबाज़ ने कहा। “एल्बर्ट मिल्स के अस्सी प्रतिशत से ज़्यादा शेयर ब्रेड इंवेस्टमेंट्स के पास हैं। बज़ाहिर, वो विजय राव ने अरविंद बागड़िया को दिए थे।”

“आपकी उस मिल में दिलचस्पी क्यों है?” चंदर ने पूछा।

“क्योंकि ये बंबई की बेहतरीन रियल एस्टेट पर बनी है,” अरबाज़ ने जवाब दिया। “दूसरी ज़्यादातर निष्क्रिय कंपनियां विरासत के क़र्ज़ों में फंसी हैं जिन्हें चुकाया नहीं जा सकता भले ही कोई ज़मीन को रीडैवलप कर ले। एल्बर्ट मिल्स का मामला भिन्न है। अगर कोई रीडैवलप करे, तो अच्छा पैसा कमा सकता है।”

“आप चाहते हैं कि मैं अरविंद बागड़िया से बात करूं कि वो एल्बर्ट मिल्स के अपने शेयर बेच दे?” चंदर ने पूछा।

“नहीं,” अरबाज़ ने कहा। “मैं तो जबरन हथियाने की बात सोच रहा हूं।”

“एक और तरीक़ा हो सकता है,” चंदर बड़बड़ाया।

“क्या?” अरबाज़ ने पूछा।

“मैं आपसे फिर बात करूंगा,” चंदर ने कहा। “मुझे अपनी फ़ाइलें देखनी होंगी।”



“अगर हम एल्बर्ट मिल्स को रीडैवलप करना चाहते हैं तो हमें तीन अड़चनों को पार करना होगा,” अरबाज़ ने कहा।

मुरली सुन रहा था।

“एक: हमें कोई ऐसा रास्ता खोजना होगा कि मिल के अधिकांश शेयर हमें मिल जाएं। दो: हमें नगरनिगम से रीडैवलपमेंट योजना पास करवानी होगी। तीन: हमें लेबर को स्थापित करना होगा ताकि डैवलपमेंट आगे बढ़ सके।”

“ये हम कैसे करेंगे?” मुरली ने पूछा।

“क़दम-ब-क़दम,” अरबाज़ ने जवाब दिया।



चंदर ने कंपनी एक्ट 1956 पर नज़र डाली जो उसके सामने खुला पड़ा था। शेयरों के हस्तांतरण की आवश्यकताएं इस तरह थीं:

1. मूल शेयर प्रमाणपत्र।
2. शेयर प्रमाणपत्र की प्रतिलिपि अगर उपरिलिखित (1) खो या गुम हो गए हैं।
3. हस्तांतरणकर्ता या उपयुक्त रूप से अधिकृत अटॉर्नी द्वारा हस्ताक्षरित शेयर हस्तांतरण फ़ॉर्म जिसके साथ भारतीय स्टांप अधिनियम की धारा 12 के तहत उपयुक्त मूल्य की स्टांप संलग्न हों।
4. अगर उपरिलिखित (3) पर हस्तांतरणकर्ता के स्थान पर अधिकृत अटॉर्नी ने हस्ताक्षर किए हों तो उस स्थिति में अभिप्रमाणित पॉवर ऑफ़ अटॉर्नी।

वो मन ही मन हंसा। अरविंद बाबू, तुम्हारी क़ुर्बानी बेकार नहीं गई। अब तुम बहुत बड़ी क़ुर्बानी दोगे।



“एल्बर्ट मिल्स का कंपनी सेक्रेटरी देवेंद्र दीक्षित है,” चंदर ने कहा।

“कहां रहता है वो?” अरबाज़ ने पूछा।

“अंधेरी में,” चंदर ने पता लिखे काग़ज़ का एक पुरज़ा अरबाज़ को देते हुए कहा।

“आपको यक़ीन है आपका आइडिया कारगर रहेगा?” अरबाज़ ने पूछा।

“मैंने फ़ाइलें देखी थीं,” चंदर ने कहा। “जो दस्तावेज़ मैं ढूंढ़ रहा था वो उसमें थे। मुझे बस बागड़िया से एक पत्र चाहिए जिसमें लिखा हो कि उसके शेयर खो गए हैं। मैं अपने एक जानकार के ज़रिए इसे बनवा रहा हूं। जो मसला रहता है वो है दीक्षित।

इसमें आपको मेरी मदद करनी होगी।"

"ये हो जाएगा," अरबाज़ ने राजू को बुलाते हुए कहा।



"मैं पिछले कुछ दिन से दीक्षित का पीछा करवा रहा हूं," राजू ने अरबाज़ से कहा। "उसका एक छोटा सा गंदा राज़ है। मैंने फ़ोटो खिंचवा ली हैं।"

"राज़ क्या है?" अरबाज़ ने पूछा।

"वो शादीशुदा है और उसके दो बच्चे हैं लेकिन उसका तगड़ा अफ़ेयर चल रहा है," राजू ने कहा।

"इसमें क्या है?" अरबाज़ ने कहा।

"बहुत कुछ है," राजू ने कहा।

"क्यों?"

"क्योंकि जिससे उसका अफ़ेयर है, वो एक मर्द है।"



चंदर कालबादेवी में उस आदमी को अरविंद के मूल दस्तख़त पर ट्रेसिंग पेपर के एक टुकड़े को रखते देखता रहा। उसने देखा वो आदमी एक पेंसिल से सधे मगर बहुत हल्के हाथ से धीमे-धीमे दस्तख़त को ट्रेस कर रहा है। ये साफ़ था कि उसने पहले भी कई बार ये किया था क्योंकि उसका हाथ ज़रा भी नहीं कांप रहा था।

"इस बिज़नेस के बाहर के लोग ये नहीं जानते हैं कि ये बस गोलाइयों, बिंदियों और लाइनों को ही ठीक से पकड़ना नहीं है। दस्तख़त के विभिन्न हिस्सों पर पड़ा दबाव अलग होता है," माहिर जालसाज़ ने ट्रेसिंग पेपर हटाते हुए कहा। "ये दस्तख़त तो तुलनात्मक तौर पर आसान हैं क्योंकि ये स्वाभाविक रूप से दाहिनी ओर को झुके हैं, लेकिन कभी-कभी बारीकी पर दिया गया ध्यान ही अच्छी जालसाज़ी और आसानी से नक़ली पता लगने वाली जालसाज़ी के बीच का फ़र्क़ होता है।"

उसने ट्रेसिंग पेपर को उलटा किया और एक मोटी स्कैचिंग पेंसिल से उसके ऊपर लैड की एक परत लगा दी। फिर उसने उस ट्रेसिंग पेपर को चंदर द्वारा टाइप किए गए पत्र पर अरविंद के नाम के ऊपर रखा। उसने ट्रेसिंग पेपर को हल्का सा तिरछा जमाया। "ऐसा दिखाना बहुत जरूरी है जैसे कि बहुत ही स्वाभाविक तरीक़े से इस पर दस्तख़त किए गए हैं। ये बंदा सीधी लाइन में दस्तख़त नहीं करता है, इसलिए हमें पक्का करना होगा कि थोड़ा सा कोण रहे।"

जालसाज़ ने ट्रेस किए दस्तख़त पर दबाव डालने के लिए एक नुकीली पेंसिल ली और साठ सैकंड से भी कम समय में पत्र पर अरविंद के दस्तख़त की हल्की सी पेंसिल की छाप उभर आई थी। उसने इस बात का ध्यान रखा था कि बहुत ज़ोर से दबाव न

डाले क्योंकि गहरी छाप पोल खोल देती।

फिर वो एक अलमारी की ओर गया जिसमें सैकड़ों फ़ाउंटेन पैन, मार्कर, बॉलपॉइंट पैन, होल्डर, निब और स्याहियां थीं। उसने ये जानने के लिए मूल दस्तख़त को देखा कि किस तरह का पैन इस्तेमाल किया गया होगा। फ़ैसला करने से पहले उसने एक ख़ाली काग़ज़ पर एक-दो पैन चलाकर देखे। फिर एक को चुनकर, उसने बिना हाथ उठाए पेंसिल की छाप पर पैन चला दिया।

उसने दोबारा उस पर नज़र डालने की ज़हमत भी नहीं की। उसने जो किया था उसमें वो उस्ताद था। उसने वो पत्र चंदर को थमा दिया।

इज़्ज़त से नाकाम रहने से कहीं बेहतर है जालसाज़ी से सफल होना, एकदम सटीक दस्तख़त को देखते हुए चंदर ने मन ही मन सोचा।



चंदर ने एक बार फिर क़ुर्बानी फ़ाइल में रखे काग़ज़ों को देखा। जब अरविंद ने उससे क़ुर्बानी के शेयर ख़रीदने और बाद में बेच देने को कहा था, तो चंदर ने उससे कहा था कि उसकी ओर से लेनदेन करने के लिए वो उसे एक लिखित मुख़्तारनामा—पॉवर ऑफ़ अटार्नी—दे दे। उसने नोटरीकृत दस्तावेज़ के पहले पन्ने को देखा:

हम मैसर्स ब्रेड इंवेस्टमेंट्स लि., कंपनी अधिनियम *1956* के तहत पंजीकृत कंपनी जिसका पंजीकृत कार्यालय चौरंगी रोड, कलकत्ता *700016* पर स्थित है, आपका अभिवादन करते हैं जिनके सामने ये दस्तावेज़ प्रस्तुत किया गया है।

आप सभी और जो इसके साक्षी हैं जान लें कि हम एतद्द्वारा श्री चंदर लखोटिया, निवासी कालबादेवी रोड, बॉम्बे *400002 (*इसके पश्चात इन्हें *'*उक्त अटॉर्नी*'* कहा जाएगा*)* को हमारी ओर से कार्य करने के लिए, और हमारे नाम एवं हमारे हित में निम्नांकित सभी या किसी भी गतिविधि, कार्रवाई, मामले और कार्य को कार्यान्वित एवं निष्पादित करने के लिए अपना वास्तविक और वैध अटॉर्नी नियुक्त, स्थापित एवं नामांकित करते हैं, जो कि इस प्रकार हैं*:*

1. हमारे लिए और हमारी ओर से शेयरों को ख़रीदना, बेचना या कोई अन्य लेनदेन करना।

2. उक्त शेयरों के संदर्भ में हमारे नाम और हमारी ओर से ऐसे दस्तावेज़ों या हस्तांतरण प्रपत्रों पर हस्ताक्षर, निष्पादन और पंजीकरण करना।

3. शेयरों को ख़रीदने, बेचने, या बंधक रखने के उद्देश्य से सभी प्रार्थनापत्रों, हस्तांतरण प्रपत्रों एवं अन्य लिखित दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करना।

और सामान्यतया उक्त शेयरों से संबंधित सभी दृष्टिकोणों से ऐसी सभी कार्रवाइयों, दस्तावेज़, गतिविधियों और कार्यों को करना एवं निष्पादित करना, जिन्हें उक्त अटॉर्नी उचित एवं उपयुक्त समझें, जिन्हें अगर हम व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होते तो स्वयं करते।

चंदर मन ही मन हंसा। इस काम के लिए ये बहुत था। जब वो क़ुर्बानी का लेनदेन करने में लगे थे तो चंदर ने विशिष्ट पॉवर ऑफ़ अटॉर्नी की जगह सामान्य पॉवर ऑफ़ अटॉर्नी देने के लिए कहा था। इससे वो अरविंद के सभी निर्देशों को प्रभावी तरीक़े से

निभाने में समर्थ हो जाता।

च्च, च्च, अरविंद बाबू। क्या किसी ने तुमको ये नहीं सिखाया कि पॉवर ऑफ़ अटॉर्नी जहां तक हो सके हमेशा विशिष्ट और सीमित होनी चाहिए। पॉवर ऑफ़ अटॉर्नी को जाली दस्तावेज़ के साथ एक प्लास्टिक के फ़ोल्डर में रखते हुए उसने सोचा।



एल्बर्ट मिल्स का कंपनी सेक्रेटरी देवेंद्र दीक्षित छोटे डीलडौल और घुंघराले बालों वाला विनम्र आदमी था। वो एल्बर्ट मिल्स के साथ इसलिए जुड़ा रहा था क्योंकि दूसरे काम ढूंढ़ना मुश्किल था। इसका मतलब अपनी पत्नी के साथ होने वाली निरंतर झड़पें था जो कि हावी होने और हमेशा नाराज़ रहने वाली औरत थी। एल्बर्ट मिल्स ने सालों से तन्ख़ाह नहीं दी थी।

देवेंद्र अपने ऑफ़िस से निकला और पार्किंग में पहुंचा। अपना स्कूटर ढूंढ़ने में उसे कुछेक मिनट लगे। पार्क्ड दोपहियों की लाइन से उसे बाहर निकालकर उसने किक मारकर उसे स्टार्ट किया और सवार हो गया। इससे पहले कि वो स्कूटर को पार्किंग से बाहर निकालता, उसकी दुनिया में अंधेरा छा गया।

उसके चेहरे पर एक काला थैला पहना दिया गया। उसके हाथ पीछे बंधे थे और लहसुन से महकती सांसों वाली एक आवाज़ ने फुसफुसाकर कहा, "अगर तमीज़ से रहोगे तो तुम्हें कुछ नहीं होगा।" उसे एक कार में ठूंस दिया गया जो अगले एक घंटे तक अनेक चक्करों और मोड़ों से होकर गुज़रती रही।

जब उसके चेहरे से थैला खींचा गया, तो गोदाम की तेज़ रोशनी में उसकी आंखें चौंधिया गईं। शेड परित्यक्त सा लग रहा था, सिर के ऊपर लगी विशाल बीमों पर लोहे से ज़्यादा ज़ंग दिख रहा था। वो एक लकड़ी की कुर्सी पर बैठा था और कई लोग उसे घेरे खड़े थे। उनमें से एक आदमी सबसे अलग-थलग सा था। वो बदमाश नहीं, बल्कि कोई वकील या अकाउंटेंट ज़्यादा लग रहा था।

वो अलग-थलग सा आदमी आगे आया। "मैं तुम्हें शेयर प्रमाणपत्रों के नंबर दे रहा हूं," चंदर ने कहा। "तुम्हें हमें डुप्लीकेट शेयर प्रमाणपत्र जारी करने होंगे।"

"तुमने बस इसके लिए मुझे अग़वा किया है?" दीक्षित ने पूछा। एक बदमाश का झनझनाता थप्पड़ उसके गाल पर पड़ा। "नरक भोगना चाहता है?" बदमाश ने उससे पूछा। "तेरे लिए हम उसका भी इंतज़ाम कर देंगे, गांडू। या ये पसंद करेगा कि तेरी बीवी को उस सैक्सी आर्किटेक्ट के बारे में बता दें जिसके साथ तू छिप-छिपकर रंगरेलियां मना रहा है?"

चंदर ने बिना एक शब्द कहे दीक्षित की गोद में बड़ा सा फ़ोटोग्राफ़ डाल दिया। दीक्षित ने उसे देखा और एकदम चुप हो गया। मिनट भर बाद, उसके गालों पर आंसू लुढ़कने लगे और फ़ोटोग्राफ़ को भिगोने लगे।

चंदर ने फ़ोटोग्राफ़ उठाया। "किसी को तुम्हारी बाइसैक्सुअलिटी से कोई दिक़्क़त नहीं है, लेकिन शायद तुम्हारी बीवी इतनी समझदार न हो।"

“तुम क्या चाहते हो?” टूटे हुए दीक्षित ने पूछा।

“एल्बर्ट मिल्स के शेयर जो अरविंद बागड़िया के हैं,” चंदर ने कहा। “उनके द्वारा हस्ताक्षर की हुई लिखित एप्लीकेशन मिलने पर तुम डुप्लीकेट सर्टिफ़िकेट जारी करोगे। फिर तुम उन डुप्लीकेट सर्टिफ़िकेट्स को उस पते पर भेजोगे जो मैं तुम्हें दूंगा।”

“बागड़िया साहब मुझे निकाल देंगे,” दीक्षित गिड़गिड़ाया। “मैं बेरोज़गार हो जाऊंगा।”

“मरने से तो अच्छा है बेरोज़गार होना,” चंदर ने कहा। “जब हमें तुमसे डुप्लीकेट सर्टिफ़िकेट मिल जाएंगे तो हम उनके ट्रांसफ़र के लिए याचिका देंगे।”

“उसके लिए तो आपको पॉवर ऑफ़ अटॉर्नी चाहिए होगी,” दीक्षित ने कहा।

“मेरे पास है,” चंदर ने कहा। “तुम्हारा और तुम्हारे परिवार का ध्यान रख लिया जाएगा। तुम्हें इतना पैसा मिलेगा कि ज़िंदगी भर ख़त्म नहीं होगा। बस जैसा मैं कहता हूं वैसा करो तो सब ठीक हो जाएगा।”



अरबाज़ उस आदमी को आर्किटेक्चरल डिज़ाइन पर काम करते देखता रहा।

पहले उसने लिनेन के मोटे कैनवस पर पोटैशियम फ़ैरीसायनायड और फ़ैरिक अमोनियम का पीला सॉल्युशन लगाया और उसे सूखने दिया। फिर उसने इस कोटेड लिनेन को एक पारदर्शी ड्रॉइंग के नीचे रखा, कांच की एक शीट से दबा दिया और उसे अल्ट्रावॉयलेट रोशनी में रख दिया। संतुष्ट होकर कि एक्सपोज़र पर्याप्त है, उसने कांच और पारदर्शी ड्रॉइंग हटा दी और लिनेन को धो दिया। जो बचा रहा वो थी एक गहरी नीली पृष्ठभूमि पर सफ़ेद रेखाओं की इमेज।

“हम इसे पुराने तरीक़े से क्यों कर रहे हैं?” अरबाज़ ने पूछा।

“क्योंकि एल्बर्ट मिल्स का मौलिक ढांचा 1940 से पहले बनाया गया था,” उस आदमी ने जवाब दिया। “1940 के दशक तक, डायज़ो प्रिंट्स सायनोटाइप ब्लूप्रिंट्स की जगह लेने लगे थे जिसमें सफ़ेद पृष्ठभूमि पर नीली रेखाएं होती हैं। अगर आप इसे ऐसा दिखाना चाहते हैं जैसे कि ये 1870—उस साल जब ये मिल स्थापित की गई थी—में स्वीकृत हुआ था तो इसे उस तरह प्रिंट करना होगा जैसे कि इसे तब प्रिंट किया गया हो।”

“अब क्या करना है?” अरबाज़ ने पूछा, जबकि वो आदमी मैग्नीफ़ाइंग ग्लास से ब्लूप्रिंट का निरीक्षण करने लगा था।

“हमें उस ऑफ़िसर के लिए रबड़ की मोहर बनानी होगी जिसने तब नक़्शे को स्वीकृत किया होगा,” उस आदमी ने कहा।

“ये कैसे करोगे?” अरबाज़ ने पूछा।

“मैंने बॉम्बे म्युनिसिपल कॉरपोरेशन के रिकॉर्ड्स में 1870 की फ़ाइलों को देखा है,”

उस आदमी ने कहा। “उस समय के ज़्यादातर नक़्शों पर पहले म्युनिसिपल कमिश्नर आर्थर क्रॉफ़र्ड ने दस्तख़त किए हैं, जो 1865 में कॉरपोरेशन में शामिल हुआ था। ये देखें?”

अरबाज़ ने उस आदमी के कंधे के ऊपर से झांका। एक नक़्शे के ऊपर उसने रबड़ की मोहर लगी देखी। वो हल्की सी फैल गई थी।

उल्लिखित शर्तों के तहत स्वीकृत

देखें पत्र संख्या…..… दिनांकित

हस्ताक्षरकर्ता आर्थर क्रॉफर्ड, कमिश्नर

बॉम्बे म्युनिसिपैलिटी

बॉम्बे म्युनिसिपल एक्ट *1865* के प्रावधानों के तहत

“फ़ॉन्ट देखें,” आदमी ने कहा। “बोडोनी, लेकिन पुराने ज़माने का। अपनी रबड़ की मोहर पर हमें इसकी नक़ल बनानी होगी। इसके बाद आपका काम पूरा हो जाना चाहिए।”

“लेकिन अगर कोई फ़ॉरेंसिक तरीक़े से इसकी जांच करेगा तो वो जान जाएगा कि ये पुराना ब्लूप्रिंट नहीं है?” अरबाज़ ने पूछा।

“हां,” उस आदमी ने जवाब दिया। “हम भले ही इसे पुराना रूप दे लें लेकिन उम्र के संदर्भ में ये जांच नहीं झेल पाएगा। ये इस पर निर्भर करता है कि आपका मक़सद क्या है।”

“मुझे ये दिखाना है कि ऐसी कई इमारतें थीं जो 1870 में बीस एकड़ ज़मीन पर बनाई गई थीं,” अरबाज़ ने कहा। “तब मैं नई अनुमतियां लेने की जगह उन इमारतों की मरम्मत करवाने की इजाज़त के लिए एप्लाइ कर सकूंगा। इससे लाल फ़ीताशाही की प्रक्रिया बहुत छोटी हो जाएगी।”

“आह,” उस आदमी ने कहा। “लेकिन म्युनिसिपल कॉरपोरेशन की फ़ाइलों में पहले से कोई नक़्शा मौजूद नहीं होगा?”

“मैंने फ़ाइलिंग क्लर्क से बात कर ली है,” अरबाज़ ने जवाब दिया। “वो पुराने नक़्शे को हटाकर उसकी जगह हमारा नक़्शा रख देगा।”

“एक बार पुनरुद्धार बोर्ड से इजाज़त मिलने के बाद आपकी चिंता ये है कि बाद में नक़्शे को देखने वाला कोई व्यक्ति इस सच को पहचान सकता है कि ये नक़्शा बाद में बनाया गया है। क्या ऐसा ही है?” उस आदमी ने पूछा।

“हां,” अरबाज़ ने उत्तर दिया। “लेकिन मेरे ख़्याल से मैं इसका हल भी सोच चुका हूं।”



बॉम्बे म्युनिसिपल कॉरपोरेशन का 1893 में बना मुख्यालय दादाभाई नौरोजी रोड और महापालिका मार्ग के जंक्शन पर विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन के सामने स्थित था। उस साइनबोर्ड के ऊपर जिस पर इसका नाम लिखा था, एक राजचिह्न लगा था जिस पर संस्कृत में एक आलेख लिखा था—यतो धर्मस्ततो जय। अनुवाद करने पर इसका अर्थ होता है जहां नैतिकता होगी, वहीं विजय होगी। बदक़िस्मती से बीएमसी में नैतिकता की भारी कमी थी और विजय का मतलब आमतौर पर निजी लाभ होता था—जो अरबाज़ के लिए ठीक ही था।

कुछ महीने पहले, मुख्यमंत्री इस बात को लेकर दुविधा में थे कि म्युनिसिपल कमिश्नर किसे बनाएं। "ये तो यह तय करने जैसा है कि कौन सा शराबी बार में ड्रिंक सर्व करे," अरबाज़ ने मुरली से मज़ाक़ किया था।

"बल्कि ये कि कौन सा पागल पागलख़ाने को चलाएगा," मुरली ने राय दी।

अरबाज़ और मुरली अंदर गए और तुरंत ही उन्हें म्युनिसिपल कमिश्नर के बड़े से आलीशान ऑफ़िस में ले जाया गया। वो पचास के दशक में था और कई राजनीतिक बदलावों के बावजूद अपनी कुर्सी बचाए रखने में कामयाब रहा था। ये कमिश्नर के लचीलेपन और दृढ़ता का साफ़ संकेत था।

"आपसे मिलकर खुशी हुई, अरबाज़ भाई," कमिश्नर ने अरबाज़ और मुरली के स्वागत में अपनी कुर्सी से उठते हुए कहा। उसने जल्दी से अर्दली से चाय और बिस्कुट लाने को कहा। "मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

"मैं यहां अपनी सेवा करवाने नहीं आया। मैं आपकी सेवा करने आया हूं," अरबाज़ ने कहा।

"वाकई?" कमिश्नर ने पूछा। "कैसे?"

अरबाज़ ने काग़ज की एक स्लिप उसे थमा दी जिस पर एक फ़ाइल नंबर लिखा हुआ था। "इस फ़ाइल में लगे नक़्शे साफ़-साफ़ दिखाते हैं कि उस ज़मीन पर कई इमारतें हैं, जिसे हम एल्बर्ट मिल्स कहते हैं। मैं चाहता हूं आप तुरंत मरम्मत के परमिट जारी कर दें।"

"और अगर नक़्शे जाली हुए तो?" कमिश्नर ने पूछा, उसके चेहरे पर मुस्कुराहट तैर रही थी।

"मरम्मत के आदेश जारी करने के बाद, आप फ़ाइल को रिकॉर्ड्स विभाग में भेजने को कहेंगे," अरबाज़ ने कमिश्नर की मेज़ पर एक ब्रीफ़केस रखते हुए कहा।

"और फिर?" कमिश्नर ने पूछा।

"जब शॉर्ट सर्किट की वजह से रिकॉर्ड्स विभाग में आग लग जाएगी तो आप फ़ायर ब्रिगेड को बुलाएंगे," अरबाज़ ने कहा, जबकि कमिश्नर ने ब्रीफ़केस को खोला, अंदर रखी चीज़ को देखा, बंद किया, और सम्मानपूर्वक अपनी डेस्क के नीचे रख लिया।

"अजीब बात है, वाक़ई," अरबाज़ ने कहा।

"क्या?" कमिश्नर ने पूछा।

“आप सभी अहम ओहदों पर बैठे लोगों को कमिश्नर कहा जाता है। म्युनिसिपल कमिश्नर, पुलिस कमिश्नर, इंकम टैक्स कमिश्नर।”

“इसमें अजीब क्या है?” म्युनिसिपल कमिश्नर ने पूछा।

“अजीब ये है कि सरकार चाहती है आप कमीशन करें। हम महज़ ये चाहते हैं कि आप ओमिशन करें। जिसके लिए हम आपको कमीशन देते हैं।”



“अब?” मुरली ने पूछा।

“हमें रीडैवलपमेंट के लिए कर्मचारियों की सहमति चाहिए होगी,” अरबाज़ ने कहा। “यूनियन लीडर कौन है?”

“विद्याधर,” मुरली ने जवाब दिया।

“महाराष्ट्र मज़दूर यूनियन वाला?”

“हां।”

“शिट!” अरबाज़ ने कहा। “वो कभी समझौते के पक्ष में नहीं होता। एक दूसरे केस में तो उसने मिल मालिकों से कहा था कि ज़मीन के मुनाफ़े को कर्मचारियों के साथ बांटें।”

“एल्बर्ट मिल्स में अभी पांच सौ कर्मचारी हैं,” मुरली ने कहा।

“तुम्हें उन्हें हटाने का कोई रास्ता निकालना होगा। ऐसा किए बग़ैर तुम ज़मीन को रीडैवलप नहीं कर पाओगे।”

“इसके उलट, मैं और कर्मचारियों को रखना चाहता हूं,” अरबाज़ ने कहा।

“वास्तव में मेरी योजना 1,167 नए कर्मचारियों को रखने की है।”

“क्या?” मुरली ने पूछा। “हमारा वेतन का बिल तो तिगुना हो जाएगा!”

“1,167 नए लोगों को रखो, मुरली,” अरबाज़ ने कहा। “उन्हें पूरे छह महीने कुछ न करने की तन्ख़ाह मिलेगी।”

“फ़ायदा क्या है?” मुरली ने पूछा।

“उन्हें एक दूसरी यूनियन का सदस्य बनना होगा,” अरबाज़ ने कहा।

“और फिर?” मुरली ने पूछा।

“उनके इस्तीफ़े एडवांस में ले लेना। इस्तीफ़ों पर छह महीने बाद की तारीख़ रहेगी,” अरबाज़ ने कहा।

“लेकिन 1,167 अतिरिक्त कर्मचारी ही क्यों?” मुरली ने पूछा।

“तुमसे पढ़ा-लिखा होने की उम्मीद की जाती है, मुरली,” अरबाज़ ने नक़ली ग़ुस्से से कहा। “महाराष्ट्र ट्रेड यूनियनों की मान्यता एवं अनुचित श्रम आचरण निवारण

अधिनियम, 1971 की धारा 13 (1) (दो) पढ़ो।”



अरबाज़ महाराष्ट्र मज़दूर यूनियन के नेता विद्याधर से अपने ऑफ़िस में मिला। वो आदमी पूरा गंजा था और यक़ीनन पांच फ़ुट से ज़्यादा लंबा नहीं था। लेकिन जब वो मज़दूरों को हड़ताल करने के लिए प्रेरित करता था तो ज़बरदस्त प्रभाव पैदा करता था।

“शेख़,” उसने ढिठाई से अरबाज़ से कहा। “एल्बर्ट मिल्स के कर्मचारी आपकी ज़िम्मेदारी हैं। पांच सौ से ज़्यादा परिवारों की रोज़ी-रोटी मिल पर टिकी है। आपको न केवल उन सबको मुआवज़ा देना चाहिए, बल्कि भूमि रीडैवलपमेंट का मुनाफ़ा भी उनके साथ बांटना चाहिए।”

“मेरी ऐसी कोई योजना नहीं है,” अरबाज़ ने कहा।

“उस स्थिति में, मिल की ज़मीन को बेचने या रीडैवलप करने से आपको रोकने के लिए हम अदालत से निषेधाज्ञा लेंगे,” विद्याधर ने कहा।

“आप ऐसा कुछ नहीं करेंगे,” अरबाज़ ने कहा।

ट्रेड यूनियन लीडर उलझ सा गया था।

“आपने कभी वो टेलीविज़न गेम शो देखे हैं जिनमें एक प्रतियोगी अनेक दरवाज़ों में से बस एक को चुन सकता है?” अरबाज़ ने पूछा।

“वो कौन सा दरवाज़ा चुनता है, इसके मुताबिक़ वो कोई पुरस्कार जीत सकता है। मैं भी आपको चुनने के लिए दो दरवाज़े दे रहा हूं।”

विद्याधर ने कुछ बोलने के लिए मुंह खोला लेकिन अरबाज़ के चेहरे के भाव ने उसे ख़ामोश कर दिया।

“अब मुझे यक़ीन है आप सोच रहे होंगे कि दरवाज़े कहां हैं,” अरबाज़ ने कहा। “वो ख़्याली हैं; इन दोनों ख़्याली दरवाज़ों में से एक के पीछे एक बैग रखा है जिसमें बीस लाख कैश है।”

“मैं आपकी रिश्वतों में आने वाला नहीं हूं, शेख़,” विद्याधर ने थूका। “मार्क्सवाद मेरा मज़हब है। मेरा इकलौता प्यार केवल श्रमिक वर्ग के लिए है।”

“मैं प्रभावित हूं,” अरबाज़ ने कहा। “लेकिन आपको जान लेना चाहिए कि दूसरे दरवाज़े के पीछे क्या है।”

“आप मुझे डरा नहीं सकते,” विद्याधर ने अवज्ञा से कहा।

“दूसरे ख़्याली दरवाज़े के पीछे यूनियन की मान्यता रद्द करने का नोटिस है,” अरबाज़ ने कहा।

“आप यूनियन की मान्यता रद्द नहीं कर सकते,” विद्याधर ने कहा। “एल्बर्ट मिल्स

के सारे कर्मचारी मेरे साथ हैं।"

"ऐसा नहीं है," अरबाज़ ने कहा। "देखिए, हमने 1,167 अतिरिक्त कर्मचारियों को रखा था। अब हम ऐसी स्थिति में हैं कि महाराष्ट्र ट्रेड यूनियनों की मान्यता एवं अनुचित श्रम आचरण निवारण अधिनियम, 1971 की धारा 13 (1) (दो) के तहत औद्योगिक अदालत में एप्लीकेशन दे सकें।"

"किसलिए?"

"इस आधार पर महाराष्ट्र मज़दूर यूनियन की मान्यता रद्द करने के लिए कि एल्बर्ट मिल्स में आपकी यूनियन की सदस्यता कुल कर्मचारियों की संख्या के तीस प्रतिशत से कम रह गई है। ठीक-ठीक कहूं तो आपका प्रतिनिधित्व 29.99 प्रतिशत है।"

दस मिनट बाद विद्याधर ने पहले ख़्याली दरवाज़े को चुन लिया।

एक मिनट बाद वो असली दरवाज़े से बाहर निकल गया।



"मैं उस हरामज़ादे को गिरफ़्तार करवाना चाहता हूं," अरविंद सत्यपाल पर उबल पड़ा। "अरविंद बागड़िया की कोई ले नहीं सकता।"

बंबई से आई मॉडल, कलकत्ता से आई लेखिका, अहमदाबाद से आई बदनाम औरत, लखनऊ की गायिका, पाकिस्तान की पेंटर और केरल की डांसर के अलावा।

"मैंने डैरियस दस्तूर से कहा है कि अरबाज़ के ख़िलाफ़ निषेधाज्ञा लेने के लिए तुरंत कलकत्ता हाई कोर्ट में याचिका दायर करें," सत्यपाल ने कहा।

"इसका कोई फ़ायदा नहीं होगा," अरविंद ने कहा। "अब तक, वो एल्बर्ट मिल्स के शेयर कई बार ट्रांसफ़र कर चुका होगा। वो शेयर तो सोनागाछी की किसी रंडी से ज़्यादा हाथ बदल चुके होंगे। कोई अंतरिम राहत या स्टे बेकार होगा। घड़ी की सुइयों को पीछे नहीं ले जा सकते।"

"अंडे की भुर्जी," सत्यपाल ने कहा। "अंडे की भुर्जी बनने के बाद उन्हें वापस अंडा नहीं बनाया जा सकता। आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?"

"समस्या ये है कि हम चंदर लखोटिया को भी नहीं पकड़ सकते क्योंकि उसने मेरे द्वारा दस्तख़त की जायज़ पॉवर ऑफ़ अटॉर्नी का इस्तेमाल किया था। तो अब हम किसे पकड़ें?"



"मुझे फ़िक्र हो रही है, मां," अलीशा ने अपनी मां से कहा। "पिछले साल स्टैनफ़ोर्ड में 38,828 आवेदक थे और केवल 2,210 को लिया गया था। यानी सत्रह में से एक!" मोटे से एप्लीकेशन फ़ॉर्म को देखते हुए वो अपनी पेंसिल चबा रही थी। चेहरे पर बिखरे बालों के साथ वो बेहद हसीन लग रही थी।

अलीशा बहुत खूबसूरत थी, उसने अधिकांश नैन-नक़्श परोमिता से पाए थे। कैथेड्रल स्कूल में वो कई दिलों के टूटने की वजह बन चुकी थी। मगर उसका फ़ोकस पढ़ाई में अच्छे अंक लाने और अतिरिक्त गतिविधियों में अच्छा प्रदर्शन करने पर ही था। नतीजा ये था कि उस साल उसे स्कूल की हैड गर्ल बनाया गया था।

“तुम्हारे पिता तो तुम्हें अमेरिका भेजने के एकदम ख़िलाफ़ हैं,” परोमिता ने कहा। “इस बात पर हमारा झगड़ा भी हो चुका है मगर मेरा इरादा पक्का है कि तुम जाओगी। प्रवेश प्रक्रिया की चिंता मत करो। सब हो जाएगा। तुम्हारा स्कूल रिकॉर्ड बहुत शानदार है।”

“ये उतना आसान नहीं है जितना आप सोच रही हैं, मां,” अलीशा ने कहा। “एक एप्लीकेशन की सामान्य समीक्षा के लिए समीक्षक को केवल पंद्रह मिनट मिलते हैं। जिन आवेदकों के माता-पिता स्टैनफ़ोर्ड में पढ़े थे, उनको तीस मिनट मिलते हैं। आपमें से कोई वहां नहीं गया। मैं तो पंद्रह मिनट की समीक्षा में अटक गई हूं!”

“मुझे बहुत दुख है कि हम तुम्हारी ज़रूरतों पर पूरे नहीं उतर पा रहे, डियर,” परोमिता ने तीखेपन से कहा।

“मेरा ये मतलब नहीं था!” अलीशा ने उठकर अपनी मां से लिपटते हुए कहा। “आप दोनों तो बहुत अच्छे माता-पिता हो। मैं तो बस आपको ये सच समझाने की कोशिश कर रही हूं कि वहां घुसना मुश्किल है।”

“तुम्हारा एसएटी स्कोर 2100 है,” परोमिता ने कहा। “इसके कुछ तो मायने होंगे।”

“पिछले साल, 2400 के परफ़ेक्ट स्कोर वाले आवेदकों को दूसरी वजहों से नहीं लिया गया था। काश मुझे वो मोटा लिफ़ाफ़ा पाने का फ़ॉर्मूला पता होता,” अलीशा ने कहा।

“मोटा लिफ़ाफ़ा?” परोमिता ने पूछा।

“अपनी एप्लीकेशन के जवाब में आपको या तो मोटा लिफ़ाफ़ा मिलता है या पतला,” अलीशा ने बताया। “मोटे का मतलब है आपको दाख़िला मिल गया। पतला नामंज़ूरी का होता है।”

“बेचारी बच्ची,” परोमिता ने कहा। “काश मैं ये पक्का करने का कोई तरीक़ा निकाल सकती कि तुम्हें मोटा लिफ़ाफ़ा ही मिले। कल मैं दुर्गा मंदिर जाकर तुम्हारे लिए प्रार्थना करूंगी।”



देवेंद्र दीक्षित क्लांत और थका-हारा दिख रहा था। बीती शाम पुलिस ने उसे उठा लिया था और घंटों गर्म और उमस भरी कोठरी में बिठाए रखा, फिर उसके फ़ोटो खींचे, उंगलियों के निशान लिए और फिर एक भीड़ भरी कोठरी में डाल दिया जहां पेशाब की बदबू भरी हुई थी।

आधे घंटे में ही उसे वहां से निकालना पड़ा क्योंकि एक क़ैदी ने उसके मुंह में अपना

लिंग डालने की कोशिश की थी। दीक्षित डर गया था। मैंने अपनी बीवी को सब कुछ क्यों नहीं बता दिया था? मैंने क्यों ख़ुद को ब्लैकमेल किया जाने दिया? मैंने ऐसी बेवक़ूफ़ी क्यों की?

गिरफ़्तार किए जाने के बाद उसने चंदर लखोटिया से बात करने की कोशिश की थी। पुलिसवालों ने उसे बताया था कि उसे किसी वकील या दोस्त को एक फ़ोन करने का अधिकार है। जब चंदर आख़िरकार लाइन पर आया, तो दीक्षित ने कहा, "मुझे आपकी मदद चाहिए, लखोटिया जी। मुझे गिरफ़्तार कर लिया है।"

"कौन बोल रहा है?" चंदर ने पूछा।

"देवेंद्र दीक्षित," डरे-सहमे आदमी ने जवाब दिया।

"मुझे तो ये नाम याद नहीं आ रहा," चंदर ने कहा।

"क्या मतलब साला आपका कि आपको नाम याद नहीं आ रहा?" दीक्षित चीख़ा, उसके होंठों से बरसकर थूक टेलीफ़ोन के माउथपीस में जा रहा था। "मैंने साला आपके लिए सब कुछ किया..."

क्लिक। चंदर ने फ़ोन काट दिया।



"तुमसे कोई मिलने आया है," सब-इंस्पेक्टर ने दीक्षित से कहा, डैरियस दस्तूर के साथ अरविंद अंदर आ रहा था।

दीक्षित और अरविंद के बीच विरोधाभास इससे ज़्यादा मुखर नहीं हो सकता था। दीक्षित वही गंदे कपड़े पहने हुए था जिनमें उसे गिरफ़्तार किया गया था और उसके बदन से बदबू फूट रही थी। उसके बाल बेतरतीब थे और आवाज़ में स्पष्ट कपकपाहट थी। अरविंद डबल कफ़ वाली झक्क सफ़ेद सूती शर्ट पहने हुए था और उसके बदन से जो महक उठ रही थी वो केवल टैल्कम पाउडर और यू डी कॉलोन की थी।

"तुम भटक गए थे, दीक्षित," अरविंद ने कहा। वो और डैरियस दस्तूर उसके सामने पड़ी कुर्सियों पर जम गए थे। "तुम्हारे धोखे से मुझे बहुत दुख पहुंचा है।"

"अरविंद बाबू, मुझे ब्लैकमेल किया गया था। प्लीज़, मेरा यक़ीन करिए, मैं ऐसा कुछ नहीं करना चाहता था जिससे आपको दुख पहुंचे..." दीक्षित बड़बड़ाया।

"श्श," अरविंद ने कहा। "मैं यहां तुम्हारी कमियां निकालने नहीं आया हूं। मैं जानता हूं तुमने जो किया, उसे करने के पीछे तुम्हारी अपनी मजबूरियां रही होंगी। जिन लोगों ने ये किया है, वो बदमाश हैं। इन्हीं लोगों को मुझे ठीक करना है।"

"मुझे यहां से निकालिए, अरविंद बाबू," दीक्षित गिड़गिड़ाया। "आप जो कहेंगे मैं वो सब करूंगा लेकिन मैं वापस उस कोठरी में नहीं जाना चाहता। वो आदमी तो मुझे अपनी रंडी बुलाने लगे हैं।"

"मैं अपने साथ अपने वकील डैरियस दस्तूर को लाया हूं। ये तुम्हें छुड़ाने में मदद

करेंगे," अरविंद ने कहा। "लेकिन पहले तुम्हें मेरी मदद करनी होगी।"

"कुछ भी," दीक्षित ने ज़ोरदारी से कहा। "आप जो चाहते हैं मैं वो सब करूंगा।"

डैरियस दस्तूर ने दीक्षित के सामने हरे क़ानूनी काग़ज़ के कई पन्ने रख दिए। "शुरू से आख़िर तक जो हुआ था, तुम्हें वो सब कुछ लिखना होगा। छोटी से छोटी बात भी मत छोड़ना।"

"क्यों?" दीक्षित ने पूछा।

"यही एक तरीक़ा है जिससे हम अरबाज़ शेख़ और चंदर लखोटिया के पीछे पड़ सकते हैं," दस्तूर ने कहा।

"और फिर आप मुझे निकाल लेंगे?" दीक्षित ने पूछा।

"मजिस्ट्रेट हमारी पहचान का है," अरविंद ने कहा। "तुम आरोपों को स्वीकार कर लोगे। मजिस्ट्रेट तुम्हें छह महीने की क़ैद सुनाएगा।"

"लेकिन मैं वापस नहीं जा सकता," दीक्षित ने कहा। "मेरा बलात्कार हो जाएगा!"

"मजिस्ट्रेट सज़ा को सामुदायिक सेवा में बदल देगा," अरविंद ने कहा। "तुम्हें एक भी और रात क़ैद में नहीं गुज़ारनी होगी।"



एस्प्लेनेड पर आठवीं अदालत के प्रबुद्ध अतिरिक्त चीफ़ मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट ख़ामोशी से हवा ख़ारिज करने के लिए एक ओर को झुके जो उनके तैलीय लंच की वजह से बन रही थी। इस संतुष्टि के साथ कि अदालत में किसी का ध्यान इस ओर नहीं गया और इस राहत के साथ कि ख़ारिज की गई हवा गंधरहित थी, वो सीधे हुए और अगले केस के लिए कहा। क़ारिंदे ने आवाज़ लगाई, "केस नंबर 984/1993।"

देवेंद्र दीक्षित के साथ डैरियस दस्तूर खड़ा हो गया। "योअर ऑनर, मेरे मुवक्किल उन परिस्थितियों का विस्तृत ब्योरा प्रदान कर चुके हैं जिनके तहत उन्होंने कार्य किया था। वो खुद को अदालत के रहमोकरम पर छोड़ते हैं और उम्मीद करते हैं कि आपकी क्षमाशील उदार भावना प्रबल रहेगी।"

मजिस्ट्रेट ने अपने सामने रखे काग़ज़ात को देखा और फिर दीक्षित को संबोधित किया। "आप जानते हैं कि ये सम्मानित अदालत आपके, मुल्ज़िम के, ख़िलाफ़ भारतीय दंड संहिता की धारा 420 के तहत कार्रवाई करेगी?"

"जी, योअर एक्सीलेंसी," दीक्षित ने कहा, इससे अनजान कि मजिस्ट्रेट राजदूत नहीं होता।

"आप ये जानते हैं कि इस सम्मानित अदालत को आपको, मुल्ज़िम को, क़ानून के प्रावधानों के तहत दंड देना होगा।"

"जी, योअर ऑनर," दीक्षित के कोई और ग़लती करने से पहले ही दस्तूर ने कह दिया।

“धारा 420 के अनुसार जो भी व्यक्ति किसी संपत्ति को, बिना पर्याप्त सोच-विचार के, बेईमानी या धोखाधड़ी से हटाता, छिपाता या किसी व्यक्ति को प्रदान करता है, या किसी व्यक्ति को हस्तांतरित करता या हस्तांतरित करने का कारण बनता है… उसे दोनों में से किसी भी प्रकार की क़ैद जिसकी अवधि बढ़कर दो वर्ष तक हो सकती है, या जुर्माना, या दोनों सज़ाएं दी जाएंगी। तदनुसार, मैं मुल्ज़िम को दो साल की क़ैद और 25,000 रुपए के जुर्माने का दंड देता हूं।”

दीक्षित ने मजिस्ट्रेट को और फिर डैरियस दस्तूर को देखा।

“मुझे तो छह महीने की सज़ा मिलनी थी जो कि बाद में रद्द हो जाती,” उसने फुसफुसाकर दस्तूर से कहा।

दस्तूर ख़ामोश रहा और अपने मैनीक्योर किए हाथों से अपने काग़ज़ात अपने ब्रीफ़केस में रखता रहा।

“हरामज़ादे; तूने मुझे फंसाया!” जब दो पुलिसवालों ने दीक्षित की बांहें पकड़ीं तो वो चिल्लाया।

“ख़ामोश!” मजिस्ट्रेट ने कहा। “अगर तुम ऐसे ही हंगामा करते रहोगे तो मैं तुम्हारी सज़ा बढ़ा दूंगा।”

दीक्षित ने किसी तरह पुलिसवालों से अपनी बांहें छुड़ाईं और दस्तूर की ओर लपका लेकिन तब तक सीनियर वकील उसकी पहुंच से दूर निकल चुका था।



“अच्छी ख़बर है,” मुरली ने कहा। “संसद ने बैंकिंग विनियमन अधिनियम में संशोधन किया है।”

“ये अच्छी ख़बर क्योंकर है?” अरबाज़ ने पूछा।

“भारतीय अर्थव्यवस्था नीति ने चक्र पूरा कर लिया है,” मुरली ने कहा। “उन्होंने 1969 में बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया था। अब—1993 में—वो नए प्राइवेट सैक्टर के बैंकों को अपनी दुकान खोलने का न्योता दे रहे हैं। अविश्वसनीय!”

“कोई दिलचस्पी ले रहा है?” अरबाज़ ने पूछा।

“यूटीआई बैंक शुरू करने की योजना बना रहा है,” मुरली ने कहा। “एचडीएफ़सी भी। मुझे बताया गया है कि हिंदुजा और ट्वेंटीएथ सैंचुरी फ़ाइनेंस ग्रुप भी संभावनाएं तौल रहे हैं। बैनेट, कोलमैन एंड कं. भी।”

“तुम्हारा क्या विचार है?” अरबाज़ ने पूछा।

“हमारे दोस्त किशोर देशमुख चैंबर ऑफ़ इंडियन कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के सेक्रेटरी-जनरल के रूप में समय काट रहे हैं। क्यों न एक बैंक शुरू करने के लिए उन्हें मोहरा बनाया जाए?”

“इसमें कितनी लागत लगेगी?” अरबाज़ ने पूछा।

“भारतीय रिज़र्व बैंक की मांग है कि बैंक की निवल संपत्ति दो सौ करोड़ हो और कि प्रमोटरों के पास पूंजी का कम से कम पच्चीस प्रतिशत हो।”

“तुम्हारा क्या कहना है?” अरबाज़ ने पूछा। “क्या ये ऐसा कुछ है जिसमें हमें हाथ डालना चाहिए?”

“बिल्कुल,” मुरली ने कहा। “धंधा होल्डिंग्स में अतिरिक्त पैसा पड़ा है। राजू कंपनी में अपने ग़लत कामों से जमा किया पैसा डालता रहता है। ”

अरबाज़ ने एक दिन सोचा। अगले दिन उसने मुरली को अपने ऑफ़िस में बुलाया। “हम बैंक का क्या नाम रखेंगे?”

“धंधा बैंक,” मुरली ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।



यूनाइटेड फ़ेडरेशन बैंक के मैनेजर ने अरविंद के देखने के लिए उसके हाथ में दो स्लिप पकड़ा दीं।

“ये क्या हैं?” अरविंद ने पूछा।

“बैंक की रसीदें—या बीआर,” मैनेजर ने जवाब दिया।

“खोलकर बताएं,” अरविंद ने कहा।

“इन्हें बैंकों के बीच वादा सौदों के लिए इस्तेमाल किया जाता है,” मैनेजर ने कहा।

“वो क्या होते हैं?” अरविंद ने पूछा।

“एक बैंक दूसरे बैंक को ब्रोकर के माध्यम से शेयर बेचता है। बेचने वाला बैंक दो हफ़्ते बाद उन्हें ज़्यादा दामों पर वापस ख़रीद लेता है। ख़रीदने और बेचने के मूल्य के बीच का फ़र्क़ ब्याज दर होती है।”

“तो?” अरविंद ने पूछा।

“शेयरों का लेनदेन नहीं होता। लेनदेन होता है इस बीआर का। ये प्रमाणित करता है कि बेचने वाले बैंक के पास शेयर हैं और जब उससे कहा जाएगा तो वो उन्हें प्रदान कर देगा।”

“तो समस्या क्या है?” अरविंद ने पूछा।

“बाज़ार में सैकड़ों बीआर भरी पड़ी हैं,” मैनेजर ने कहा। “सबकी सब तीन छोटे बैंकों से निकली हैं—बैंक ऑफ़ कराड, मेट्रोपॉलिटन कोऑपरेटिव बैंक और...”

“और?”

“धंधा बैंक। कुछ तो गड़बड़ हो रही है।”

“आप मुझे ये क्यों बता रहे हैं?” अरविंद ने पूछा।

“क्योंकि ऐसा लगता है कि आपका भूतपूर्व चार्टर्ड अकाउंटेंट चंदर लखोटिया

बिचौलिये के रूप में ज़्यादातर सौदे करवा रहा है। वो इन बीआर पर उधार लिए कैश के ढेर पर बैठा है।"

"उसे पैसा क्यों चाहिए?" अरविंद हैरान था।

"वो हर्षद मेहता नाम के बाज़ार के एक बड़े खिलाड़ी की ओर से काम कर रहा है। हर्षद मेहता एसीसी शेयरों के दाम बढ़ाने के लिए इस पैसे का इस्तेमाल कर रहा है। बाज़ार में फैली अफ़वाहें ऐसा कह रही हैं।"

"और कुछ?" अरविंद ने पूछा।

"बज़ाहिर डील ये है कि हर्षद मेहता एसीसी की क़ीमतें बढ़ाने पर ध्यान लगाएगा जबकि चंदर आपकी कंपनी—ब्रेड इंवेस्टमेंट्स—की क़ीमतें गिराने पर ध्यान देगा।"

"वो बज़ाहिर अरबाज़ शेख़ की ओर से काम कर रहा है," अरविंद ने कहा। "वो अभी ये नहीं जानता है कि इस खेल को मैं उसके मुक़ाबले कहीं बेहतर खेल सकता हूं।"



"महेश्वर ट्रेडर्स मॉरीशस लि. की ओर से ब्रेड के शेयर ख़रीदो," अरविंद ने फ़ोन रखते हुए कहा।

वो फिर बजा। उसने फ़ोन उठाया, बताई जा रही क़ीमत सुनी और कहा, "श्रीकंठ ट्रेडर्स मॉरीशस लि. की ओर से ब्रेड के शेयर ख़रीद लो।"

मंदड़िये ब्रेड के शेयरों का मूल्य गिराते जा रहे थे। ये बंबई के ऑपरेटरों का संघ था जो उन लोगों के साथ मिलकर काम करते प्रतीत होते थे जिनके पास बेहिसाब पैसा होता था।

फ़ोन फिर से बजा। "शंभू ट्रेडर्स मॉरीशस लि. की ओर से शेयर ख़रीदो," अरविंद ने कहा। मैं शिव के सभी *108* नामों से शेयर ख़रीदवाऊंगा, जब तक कि शिव चंदर लखोटिया और अरबाज़ शेख़ को नष्ट नहीं कर देते, अरविंद ने सोचा।

उसने फ़ोन नीचे रखा और सत्यपाल को देखा।

"अरबाज़ शेख़ की कंपनी—धंधा होल्डिंग्स—के पास ब्रेड के तीस प्रतिशत शेयर हैं। इसका मतलब तीन लाख शेयर हुए। पिछले दो दिनों में हमने कितनों की ख़रीद का कारोबार किया है?" अरविंद ने पूछा।

"पिछली गिनती तक, 2,95,133 थे," सत्यपाल ने कहा, नींद की कमी से उसकी आखें सुर्ख़ हो रही थीं।

"उन विभिन्न नामों से ख़रीदते रहना जो मैं बताऊंगा," अरविंद ने कहा।

"कब तक?" सत्यपाल ने पूछा।

"शुक्रवार तक," अरविंद ने कहा।



“हम कितने शेयर ख़रीद चुके हैं?” अरविंद ने पूछा।

“तीन लाख शेयर,” रात भर के जगे थके-हारे सत्यपाल ने जवाब दिया। “मेरा अनुमान है कि अरबाज़ शेख़ अब ब्रेड के अपने सारे शेयर बेच चुका है।”

“शुक्रवार तक ख़रीदते रहो,” अरविंद ने कहा। “वो क़ीमतों को और गिराना चाहेंगे। ऐसा करने का एकमात्र तरीक़ा मंदड़िया बिक्री है।”

मंदड़िया बिक्री उन शेयरों को बेचने की प्रक्रिया है जो आपके पास तब तक होते नहीं हैं। ऐसा इस उम्मीद में किया जाता है कि क़ीमतें गिरेंगी, इस तरह से विक्रेता भविष्य में कम दाम में शेयर उठाने और बाद की किसी तारीख़ पर उन्हें सौंपने में सक्षम हो जाता है।

“हमारी ओर से काम कर रहे दलालों को चिंता है कि हम कंगाल हो जाएंगे,” सत्यपाल ने कहा।

“उनसे कहना कि वो बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज के इतिहास में अब तक का सबसे ज़बरदस्त मुनाफ़ा कमाने वाले हैं,” अरविंद ने कहा।



“हम कितने शेयर ख़रीद चुके हैं?” अरविंद ने पूछा।

“छह लाख शेयर,” सत्यपाल ने जवाब दिया।

“अच्छा है,” अरविंद ने कहा। “आज क्या दिन है?”

“शुक्रवार।”

“महीने का दूसरा शुक्रवार?”

“हां।”

“अब हमारे दलालों से कहो कि वो उन सारे शेयरों की डिलीवरी मांगें जो हमारी 108 कंपनियों को बेचे गए हैं,” अरविंद ने कहा।

बीएसई में शेयरों का निपटारा हर दूसरे शुक्रवार को होता था। जिन दलालों ने ब्रेड के शेयर बेचे थे, उन्हें या तो वो शेयर देने होंगे या अंधा बदला चुकाना होगा, जो डिलीवरी में एक पखवाड़े की देरी के लिए ख़रीदार द्वारा मांगा गया बदला शुल्क होता है।

“अगर हम डिलीवरी मांगेंगे तो हमें भी कैश देना होगा,” सत्यपाल ने कहा।

“ख़रीदने वाली सभी कंपनियों के पास कैश है,” अरविंद ने कहा। “डिलीवरी की मांग करो।”

“और अगर उन्होंने डिलीवरी को अगली निपटारा तिथि तक ले जाना चाहा तो?” सत्यपाल ने पूछा।

“अगले पखवाड़े तक डिलीवरी पोस्टपोन करने के लिए दो सौ रुपए प्रति शेयर अंधा बदला मांगना,” अरविंद ने कहा।



पहले तीन लाख शेयर तो बिना किसी परेशानी के अरविंद के एनआरआई निवेशकों को दे दिए गए। तुम सालों के लिए ये तो आसान हिस्सा था, अरविंद ने सोचा। तुमने वो शेयर तो दे दिए जिन पर धंधा पहले से बैठा हुआ था। अब देखूंगा कि बचे हुए शेयर तुम कहां से निकालोगे!

“बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में अफ़रातफ़री मची हुई है,” सत्यपाल ने कहा, उसकी आवाज़ तनाव से बेज़ार थी। “सट्टा कारोबारियों को उम्मीद नहीं थी कि हम डिलीवरी की मांग करेंगे। उनके बीच ब्रेड शेयरों को ख़रीदने की हबड़-धबड़ मच गई है।”

“किसी भी क़ीमत पर मत बेचना,” अरविंद ने निर्देश दिया। “उन हरामियों को थोड़ा और सूखने दो।”

“वो कह रहे हैं कि इस कंफ़्यूज़न की वजह से बाज़ार थोड़ी देर को बंद करना पड़ सकता है,” सत्यपाल ने कहा।

“इस समय ब्रेड शेयरों की क्या क़ीमत है?” अरविंद ने पूछा।

“क़रीब 400 रुपए प्रति शेयर,” सत्यपाल ने कहा। वो ढहने को तैयार दिख रहा था।

“हमने अपने शेयर किस अधिकतम क़ीमत पर ख़रीदे थे?” अरविंद ने पूछा।

“तीन सौ,” सत्यपाल ने जवाब दिया।

“पांच सौ की दर पर शेयरों के छोटे-छोटे पार्सल बेचने की पेशकश शुरू करो,” अरविंद ने कहा।

“क्यों?” सत्यपाल ने पूछा।

“हमने छह लाख शेयर ख़रीदे थे। इनमे से तीन लाख अरबाज़ शेख़ के थे। बक़ाया तीन लाख विक्रेताओं के पास कभी थे ही नहीं,” अरविंद ने कहा।

“सही है,” सत्यपाल ने कहा। “वो मंदड़िया बिक्री के थे।”

“असल में, जिन दलालों ने ये शेयर बेचे थे, उन्होंने कभी उम्मीद ही नहीं की होगी कि ख़रीदार डिलीवरी मांगेंगे। अब वो खुद को ऐसी हालत में पा रहे हैं जहां उन्होंने शेयर बेचे तो 300 में थे लेकिन अब उन्हें वो 500 में ख़रीदने पड़ेंगे।”

“अगर उन्होंने डिलीवरी अगले पखवाड़े तक बढ़वा ली तो?” सत्यपाल ने पूछा।

“उससे कुछ फ़ायदा नहीं होगा,” अरविंद ने कहा। “उन्होंने 300 में ख़रीदे हैं और बढ़वाने के लिए उन्हें अंधा बदला के 200 और देने पड़ेंगे। इससे अच्छा तो 500 में

ख़रीदो और काम ख़त्म करो।"

"इससे तो वो सभी दलाल तबाह हो जाएंगे जो हमारे शेयरों की मंदड़िया बिक्री में लगे थे," सत्यपाल ने कहा।

"शिव हमेशा विनाश करते हैं," अरविंद ने बिना किसी जज़्बात के कहा।



सत्यपाल ने अरविंद के शुक्रिया कहने का इंतज़ार किया लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

सत्यपाल कृतज्ञता के लंबे-चौड़े पुलों की उम्मीद भी नहीं कर रहा था। बस तारीफ़ के कुछ बोल भी काफ़ी होते।

सत्यपाल, तुम जिस तरह मेरे साथ खड़े रहे हो, उसे मैं सराहता हूं...

मैं बस ये कहना चाहता हूं कि मुझे पता है तुमने कितना काम किया है...

हर अच्छे-बुरे में मेरा साथ देने के लिए शुक्रिया...

मेरे निर्देशों को इतनी सटीकता से अंजाम देने के लिए मैं तुम्हारा आभारी हूं...

लेकिन अरविंद के मुंह से एक शब्द नहीं फूटा।

आभार जताना अरविंद की स्टाइल में ही नहीं था। हमेशा यही कहानी होती थी। काम घोड़ा करे और इनाम मिले घुड़सवार को।

हरामी।



मुरली ने फिर से वित्तीय स्टेटमेंट को देखा। वो फ़िक्रमंद था। ब्रेड के शेयरों के दाम गिराने का अरबाज़ का फ़ैसला ग़लत निकला था। उन्होंने जिस क़ीमत पर शेयर बेचे थे, उससे ऊंचे दामों पर उन्हें ख़रीदने में उन्होंने बहुत बड़ी रक़म गंवा दी थी। और इतना ही नहीं, उसने किशोर देशमुख की कप्तानी में धंधा बैंक में भी दो सौ करोड़ झोंक दिए थे।

चंदर लखोटिया ने अरबाज़ को बहकाकर ऐसा आभास दिया था जैसे वो अरविंद को धूल में मिला सकता है। मुरली को ये मानना बुरा तो लगता था, मगर ये सच था कि अरविंद बागड़िया वित्त गुरु था जिसने उनकी नाक काट दी थी।

उसने स्टेटमेंट अरबाज़ की ओर बढ़ाया। "अकेले इस प्रोजेक्ट में हमें लगभग सौ करोड़ का चूना लग गया है," मुरली ने कहा।

"फ़िक्र मत करो, मुरली, अल्लाह कभी देता है तो कभी ले लेता है," अरबाज़ ने कहा। "और याद रखो, नासिक में हमारी स्टांप पेपर प्रिंटिंग मशीन में ओवरटाइम काम हो रहा है।"

“शायद तुम सही कहते हो,” मुरली ने कहा। “ये बस पैसा ही तो है।”

“नहीं, नहीं, ये बस पैसा ही नहीं है। पैसा खुदा तो नहीं पर, खुदा की कसम, खुदा से कम भी नहीं,” अरबाज़ ने सुधारा।



अरबाज़ ने उनके कमरे में झांका। वो नवी मुंबई के जीवन प्रकाश गेस्टहाउस में ठहरी हुई थीं। वो अपने ट्रेडमार्का सफ़ेद परिधान में थीं और एक सादा से सोफ़े पर पालथी मारे बैठी थीं। “आ जाओ, बेटा,” अरबाज़ ने खुले दरवाज़े पर हल्के से दस्तक दी तो उन्होंने कहा।

“मुझे दस मिनट दें,” अध्यापिका ज्योति ने अपने दूसरे शिष्यों से कहा जो तुरंत ही उठ खड़े हुए और उन्हें अरबाज़ के साथ अकेला छोड़ गए।

वो सोफ़े के पास पहुंचा और पल भर ठहरकर उनके पैर छूने के लिए झुक गया, हालांकि मुसलमानों में पैर छूने को पसंद नहीं किया जाता। वो मुस्कुराईं और उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया। सोफ़े के सामने उनके शिष्यों के लिए मोटा क़ालीन बिछा था। सोफ़े के दोनों ओर कुर्सियां थीं। अरबाज़ कुर्सियों को नज़रअंदाज़ करके उनके सामने क़ालीन पर बैठ गया।

“मैं नहीं जानता क्या बात मुझे यहां खींच लाई है,” उसने उनसे कहा। “दिल्ली के उन भयानक सिख विरोधी दंगों में, जब मैं आपसे मिला था, तभी से दिन गिनता रहा हूं।”

“दिन क्यों गिने? कभी भी चले जाते,” अध्यापिका ज्योति ने कहा। “शायद पैसा गिनना बीच में आ गया होगा?”

ये भली सी झिड़की अरबाज़ से छिपी न रही।

“आप बिल्कुल सही कहती हैं,” उसने कहा। “और मैं उसकी क़ीमत चुका रहा हूं। हाल ही में अपनी बेवक़ूफ़ी की वजह से मैंने बहुत बड़ी रक़म गंवाई है। और अब मेरी पत्नी और बेटी ने मेरे ख़िलाफ़ मोर्चा खोल दिया है, वो चाहती हैं कि अलीशा अमेरिका की एक यूनिवर्सिटी में जाए।”

“तूफ़ान के बाद चिड़ियां चहचहाती हैं,” अध्यापिका ज्योति ने कहा। “वो इसलिए चहचहाती हैं क्योंकि वो आज़ाद होती हैं। अपनी बेटी को आज़ाद करो। उसे जाने दो। वो तुम्हें प्यार करती है और वो हमेशा तुम्हारी बेटी रहेगी।”

अरबाज़ को गले में कुछ फंसता सा लगा। वो अपने आंसुओं से जूझता रहा। पहले कभी किसी ने उससे इतने भले और समझाने वाले अंदाज़ में बात नहीं की थी।

“तुम आनंद हो। तुम समर्पण हो। तुम कोमलता हो। तुम स्वतंत्रता हो,” अध्यापिका ज्योति ने उससे कहा।

कुछ कह पाने में नाकाम अरबाज़ ने हामी भरी।

“अपना थोड़ा सा हिस्सा अपनी बेटी के साथ बांटो। इंसान को ये याद रखना चाहिए कि इंसान होना कम, और उदार होना अधिक महत्वपूर्ण है,” अध्यापिका ने कहा।



“मेरे एक शिष्य को तुम्हारी मदद चाहिए,” अध्यापिका ज्योति ने अरबाज़ से कहा। “क्या तुम दिल्ली जाकर उनसे मिल सकते हो?”

“आप बस हुक्म करें,” अरबाज़ ने कहा।

मुलाक़ात महारानी बाग़ में सरदार हरपाल सिंह के घर में हुई।

ये वही जगह थी जहां सिख विरोधी दंगों के दौरान अध्यापिका ज्योति ठहरी थीं। वो एक विशाल बाग़ में हल्के भूरे रंग के एक छाते के नीचे बैठे थे और नौकर उनके लिए एक ट्रे में चाय और स्नैक्स लेकर आया था।

सरदार हरपाल सिंह नीली आंखों वाले ख़ूबसूरत सरदार थे। वो लकदक करता कड़क सफ़ेद कुर्ता, चूड़ीदार और काले जूते पहने हुए थे। उनके सिर पर एकदम सटीक बंधी सफ़ेद पगड़ी थी। उनकी स्लेटी दाढ़ी और मूंछें ऐसी लग रही थीं जैसे उन्हें बहुत सावधानीपूर्वक संवारा गया हो। उनके बदन पर इंच भर भी चर्बी नहीं थी और उनकी त्वचा से शांति और स्वास्थ्य की आभा फूटी पड़ रही थी।

“मुझसे मिलने के लिए यहां आने का शुक्रिया,” हरपाल सिंह ने एक कप में चाय उड़ेलते और एक प्लेट में चटनी के साथ दो समोसे अरबाज़ के सामने रखते हुए कहा।

“जब अध्यापिका ज्योति ने आदेश दिया है, तो मैं न कह ही नहीं सकता,” अरबाज़ ने विनम्रता से चाय का कप पकड़ते मगर समोसों के लिए इंकार करते हुए कहा।

“इस अहसास को मैं समझता हूं,” हरपाल सिंह हंस दिए। “मैं तो उनका सबसे पहला शिष्य था।”

“उन्होंने कहा था कि आपको मेरी मदद की ज़रूरत है,” अरबाज़ ने कहा।

“अपने लिए नहीं,” हरपाल ने कहा। “मैं बंबई में एक धर्मार्थ संस्था चलाता हूं। उसके पास मलाड में एक बड़ी ज़मीन है। बदक़िस्मती से कुछ लोग उस पर नाजायज़ क़ब्ज़ा किए बैठे हैं।”

“और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है,” अरबाज़ ने कहा। “मैं उन्हें हटवा दूंगा।”

“अरे नहीं, बेटे,” हरपाल सिंह ने कहा। “मैं बस ये चाहता हूं कि उन्हें रहने के लिए कोई और जगह दे दी जाए ताकि उस ख़ाली हुई ज़मीन पर हम एक धर्मार्थ अस्पताल बनवाना शुरू कर सकें।”

“लेकिन वो नाजायज़ क़ब्ज़ेदार हैं!” अरबाज़ ने तर्क दिया। “मैं आपके लिए उन्हें वहां से हटवा दूंगा। आप उन्हें रहने की कोई दूसरी जगह क्यों देना चाहते हैं?”

“मैं नहीं चाहूंगा कि किसी के सर से छत छीनी जाए,” हरपाल सिंह ने कहा। “ऐसी

जगह पर धर्मार्थ अस्पताल कैसे बनवाया जा सकता है जहां दूसरों की आहें लगी हों?"

"फिर आपको मेरी ज़रूरत क्यों है?" अरबाज़ ने पूछा।

"उनमें से एक क़ब्ज़ेदार बदमाश है," हरपाल ने कहा। "वो दूसरों को हमारी वैकल्पिक आवास की पेशकश नहीं लेने दे रहा है। मुझे बताया गया है कि आपके पास समझाने-बुझाने की ताक़त है।"

"आप फ़िक्र न करें," अरबाज़ ने कहा।

"आप ये करेंगे?" हरपाल ने पूछा।

"आपका कहना ही काफ़ी है," अरबाज़ ने कहा।



"काम हो गया है," अरबाज़ ने फ़ोन पर कहा।

"आपने उसे कैसे आश्वस्त किया?" सरदार हरपाल सिंह ने पूछा।

"क्या आपने कभी गॉडफ़ादर फ़िल्म देखी है?" अरबाज़ ने पूछा।

"70 के दशक की मार्लन ब्रैंडो वाली? हां, देखी है," हरपाल ने जवाब दिया।

"तब तो आपको ये डायलॉग पता होगा: मैंने उसे ऐसी पेशकश दी कि वो मना नहीं कर पाया।"



अरबाज़ ने अपने दफ़्तर में आते उस आदमी को देखा। वो अपने बॉडीगार्डों को पूरी तरह सावधान रखता था। कब क्या हो जाए, कुछ पता नहीं।

"अस्सलाम-अलैकुम, अरबाज़ भाई," उस आदमी ने कहा। वो सफ़ेद पठानी सूट और कढ़ाईदार टोपी पहने हुए था। उसके गले में एक तावीज़ बंधा हुआ था।

"वालैकुम-अस्सलाम," अरबाज़ ने सावधानीपूर्वक कहा।

"दाऊद भाई ने आपको सलाम भेजा है," उस आदमी ने कहा।

"उन्हें मेरा भी सलाम कहिएगा," अरबाज़ ने कहा।

"अरबाज़ भाई," उस आदमी ने कहना शुरू किया। "दाऊद भाई को लगता है कि हिंदुस्तान में इस्लाम पर हमला हो रहा है। देखिए, हिंदुओं ने कैसे बाबरी मस्जिद को गिरा दिया। उसके बाद हिंदुस्तान भर में हुए दंगों को देखें। अब बहुत हो चुका। ये वक़्त अपने छोटे-मोटे मनमुटावों को भुला देने का है। सारे सच्चे मुसलमानों को एक साथ खड़े हो जाना चाहिए।"

"आप क्या कहना चाहते हैं?" अरबाज़ ने अपनी सांसों पर क़ाबू पाते हुए कहा।

"दाऊद भाई ने एक टीम बनाई है। टाइगर मेमन, याक़ूब मेमन, हाजी अहमद, हाजी

उमर, तौफ़ीक़ जलियावाला, और दाऊद जाट। मक़सद, इंशाल्लाह, हिंदुस्तान के मुसलमानों की बेइज़्ज़ती का बदला लेना है।"

"आप ये कैसे करना चाह रहे हैं?" अरबाज़ ने पूछा।

"दुश्मन को ऐसा सबक़ सिखाकर जिसे वो कभी नहीं भूलेगा।"

"आप मुझसे क्या चाहते हैं?" अरबाज़ ने पूछा।



एक ठंडे, धूपदार दिन अरविंद, अभिलाषा, शकुंतला, विनय और विनीत बंबई पहुंचे। उन्होंने जेट एयरवेज़ नाम की एक नई प्राइवेट एयरलाइन की फ़्लाइट ली थी। इंडियन एयरलाइंस की तुलना में, अपने बेदाग़ इंटीरियर, सुप्रशिक्षित स्टाफ़ और चाक-चौबंद सेवा के साथ जेट ताज़ा हवा के झोंके की तरह था। अरविंद सोच रहा था कि क्या उसे भी इस कंपनी में निवेश करने के बारे में सोचना चाहिए।

वो कार से आल्टामाउंट रोड स्थित बागड़िया गेस्टहाउस पहुंचे और अपने कमरों में चले गए।

विनय और विनीत कलकत्ता में सर्दियों की छुट्टियां बिताकर पैलो आल्टो वापस जा रहे थे। दोनों ने पिछले साल अंडरग्रेजुएट प्रोग्राम में दाख़िला लिया था। ये देखते हुए कि सिंगापुर होते हुए लॉस एंजिलेस जाने वाली उनकी फ़्लाइट तीन दिन बाद है, अरविंद ने तय किया कि वो कुछ दिन एक साथ बंबई में गुज़ारेंगे।

जुड़वां होते हुए भी विनय और विनीत एकदम जुदा थे। विनय की दिलचस्पी अंकों में थी तो विनीत की शब्दों में। विनय मस्तमौला था तो विनीत अंतर्मुखी। विनय ने कॉलेज में ज़्यादातर बिज़नेस और परिमाणात्मक विषय लिए थे, लेकिन विनीत ने ह्यूमैनिटीज़ और आर्ट्स के कोर्स चुने।

अरविंद अपने जज़्बात ज़ाहिर करने वालों में से नहीं था लेकिन जब बेटे अमेरिका चले गए तो उनकी ग़ैरमौजूदगी ने उसे बहुत ज़्यादा प्रभावित किया। कलकत्ता में अपनी छुट्टियों के दौरान उसने घंटों युवा वयस्कों की तरह उनसे बातें की, हालांकि जब वो बच्चे थे तब उसके पास उनके लिए कभी समय नहीं होता था। विनीत ने जो अच्छा कवि निकल रहा था, अपने पिता को सिमबॉर्स्का की नथिंग द्वाइस की कुछ पंक्तियां भी सुनाईं।

क्यूं हम लेते हैं भागते दिन को
इतने बेमानी डर और दुख के साथ?
न ठहरना ही तो है इसका मिजाज़
आज जो होता है बस आनेवाला कल।



अरविंद ने उन दलालों के साथ एक मीटिंग रखी थी जिन्होंने दलालों के उस दल को मात देने में उसकी मदद की थी जो उसकी कंपनी के शेयरों की क़ीमतें गिराने की कोशिश कर रहे थे। मगर अंत में बाज़ी अरविंद के ही हाथ लगी थी। तीन सौ की औसत दर पर ख़रीदकर उसने उन्हीं शेयरों को पांच सौ रुपए में बेचकर सौ करोड़ से कुछ ज़्यादा का ही मुनाफ़ा कमाया था। इसमें से ज़्यादातर पैसा उसकी मॉरीशस की निवेश कंपनियों के शिवा जाल ने कमाया था। अरविंद और उसके जुड़वां बेटे मीटिंग के लिए बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज की ओर जा रहे थे।

स्टॉक एक्सचेंज की मीटिंग में विनय और विनीत को अपने आज़ू-बाज़ू बिठाकर अरविंद बीस स्टॉकब्रोकर्स से मुख़ातिब था। “हम आपके अहसानमंद हैं, बागड़िया साहब,” एक स्टॉकब्रोकर ने कहा जिसने अरविंद के निर्देशों पर चलकर अच्छा मुनाफ़ा कमाया था। “आगे बढ़ने में हमारा ग्रुप आपके लिए कुछ भी करेगा।” विनय और विनीत अपने पिता को मिल रही तारीफ़ें सुनकर गर्व से मुस्कुरा उठे।

“ज़िंदगी का सफ़र तो अड़चनों से भरा हुआ है,” अरविंद ने दलालों से कहा। “अगर आपके पास दोस्त हैं तो ये अड़चनें उड़नछू हो जाती हैं। आप में से हर कोई वफ़ादार दोस्त रहा है और अरविंद बागड़िया इसे कभी नहीं भूलेगा।”

दलालों ने तालियां बजाईं। उनमें से एक सवाल पूछने को उठ खड़ा हुआ। जब अरविंद उसका जवाब दे रहा था तो विनीत खड़ा हो गया। “मैं नीचे जा रहा हूं,” वो विनय के कान में फुसफुसाया।

“जब तुम्हारा और डैड का काम पूरा हो जाए तो कार पर आ जाना।”

“जा कहां रहे हो?” विनय ने पूछा।

“एक दलाल मुझे ट्रेडिंग फ़्लोर दिखाने को राज़ी हो गया है।

मैं उस श्लोक को पढ़ना चाहता हूं जो उस पर उकेरा गया है,” विनीत ने जवाब दिया, और ख़ामोशी से मीटिंग से खिसक लिया।

दलाल फ़टाफ़ट विनीत को ट्रेडिंग फ़्लोर पर ले गया जो कारोबारियों की सुनगुन से भरी थी। अंदर कोई हज़ार लोग भरे हुए थे। बुरी तरह से एक दूसरे पर चिल्लाते हुए। विकट हंगामा था, अधेड़ उम्र के लोग हाथों की विभिन्न भंगिमाओं के साथ चिल्ला-चिल्लाकर ख़रीदने और बेचने के ऑर्डर दे रहे थे।

“एक्सचेंज का कारोबारी वक़्त क्या है?” ट्रेडिंग फ़्लोर के शोर में विनीत चीख़कर बोला।

“दोपहर में 12 से 2.30 तक,” दलाल ने भी चीख़कर जवाब दिया।

“केवल ढाई घंटे ही क्यों?” विनीत चीखा।

“क्या आप इससे ज़्यादा देर चिल्ला सकते हैं?” दलाल ने मुस्कुराते हुए पूछा।

इससे पहले कि विनीत अगला सवाल पूछ पाता, कहर टूट पड़ा।



शकुंतला और अभिलाषा लड़कों को रक्षात्मक श्रीनाथजी पेंडेंट देने के लिए बहुत उत्सुक थीं जिन्हें अमेरिका की 'बड़ी और बुरी दुनिया' में पुनः वापसी पर वो अपने गले में पहन सकें। उनका पहला पड़ाव था ज़वेरी बाज़ार की सबसे बड़ी और सबसे मशहूर आभूषण की दुकान त्रिभुवनदास भीमजी ज़वेरी। दुकान के सबसे पुराने सेल्समैन भागूभाई ने शकुंतला को अंदर आते देखा और तुरंत सुनिश्चित किया कि उन्हें और अभिलाषा को पूरा ध्यान मिले। पुराना ही खरा होता है।

उसने उन्हें विलासितापूर्ण सोफ़े पर बिठाया, उनके लिए पानी, चाय और मेवों का इंतज़ाम किया, और फिर उन्हें ऐसे पेंडेंटों की भारी वेरायटी दिखानी शुरू की जो नौजवानों के लिए उपयुक्त होते।

शकुंतला और अभिलाषा ने अनेक पेंडेंट देखे, लेकिन कोई ऐसा डिज़ाइन नहीं पा सकीं जो सादा और सुंदर हो। अब तक जितने उन्होंने देखे थे, सभी भड़कीले से थे। लड़के ऐसी कोई चीज़ नहीं पहनकर देंगे जो इतनी भड़कीली हो।

"सोने के बजाय चांदी में देखते हैं," अभिलाषा ने भागूभाई से कहा। "चांदी में निर्मित छोटे से श्रीनाथजी शायद हमारी पसंद के मुताबिक़ रहेंगे।"

सेल्समैन ने आदर के साथ सिर हिलाया और अपने पीछे वाली कांच की कैबिनेट के पास चला गया। काउंटर से उठाई ट्रे को वापस रखते हुए उसने एक और ट्रे निकाली जिसमें चांदी के पेंडेंट रखे थे।



आवाज़ कानफोड़ू थी। स्टॉक एक्सचेंज बिल्डिंग की खिड़कियां किरच-किरच बिखर गई थीं। अपने पिता को बचाने के लिए विनय अपनी कुर्सी से लपका। फ़र्श पर किरचें बिखरी हुई थीं, और अरविंद और विनय उन दूसरे दलालों के साथ फ़र्श पर लेट गए थे जिनके साथ उनकी मीटिंग चल रही थी।

अरविंद उठा, भौचक्का सा। "विनीत कहां है?" उसने खुद को झाड़ते हुए चिंता से पूछा।

"नीचे ट्रेडिंग फ़्लोर पर गया था," विनय ने कहा, उसकी भंगिमा गंभीर थी। "ये क्या हुआ था?"

"बम फटा है," एक दलाल ने कहा।

अरविंद बेसाख़्ता भागा, विनय उसके पीछे था। स्टॉक एक्सचेंज बिल्डिंग में अफ़रातफ़री फैली हुई थी, लोगों के हुजूम के हुजूम बाहर निकलने की कोशिश में थे। लिफ़्ट बंद हो गई थीं और सीढ़ियों से उतरते हज़ारों लोग एक दूसरे के ऊपर गिरे पड़ रहे थे। अरविंद और विनय भीड़ में क़ैद हो गए थे।

भीड़ में किसी ने कहा कि बेसमेंट में बम फटा था। वो वहां पार्क की हुई किसी कार में

रखा गया था। जान-माल का सबसे ज़्यादा नुक़सान नीचे की मंज़िलों में हुआ था।

भयंकर संभावना के अंदेशे में अरविंद का चेहरा आंसुओं से भीग गया।



लड़कों के लिए दो ठीकठाक से पेंडेंट और उनके मुताबिक़ चेन ख़रीदने के बाद अभिलाषा ने नोटों का एक बंडल भागूभाई को थमा दिया। ये आपसी समझ की बात थी कि ये लेनदेन खातों से परे रहने वाला था।

"बम फटे हैं," एक सेल्समैन दौड़ता हुआ अंदर आया। "फ़ोन लाइन डैड हो गई हैं। बहुत लोग मारे गए हैं!"

"कहां पर?" भागूभाई ने पूछा।

"स्टॉक एक्सचेंज बिल्डिंग और एयर इंडिया बिल्डिंग में," बदहवास आदमी ने कहा।

शकुंतला के होश उड़ गए। उनका बेटा कहां है? उनके पोते कहां हैं? वो सुरक्षित तो हैं?

अभिलाषा को पीछे आने को कहती वो तेज़ी से त्रिभुवनदास भीमजी ज़वेरी से बाहर निकलीं। "मैं वहां जा रही हूं। हमें पता लगाना होगा कि सब लोग ठीक हैं," उन्होंने अभिलाषा को निर्देश दिया जो दोनों छोटे से डिब्बों को ले रही थी।

ठीक तभी एक भीषण विस्फोट हुआ और धरती दहल उठी।



जब तक अरविंद और विनय नीचे पहुंचे, बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज की ट्रेडिंग फ़्लोर लाशों से पट गई थी। चारों ओर ख़ून बिखरा था——फ़र्श पर और दीवारों पर। बिखरे कांच के साथ ही शरीर से अलग हुए अंग छितरे हुए थे। वहां धुएं की तीखी गंध के साथ विस्फोट से फैले मलबे और इंसानी लोथड़ों का दलदल सा बन गया था।

"विनीत!" अरविंद चिल्लाया। उसने और विनय ने पागलों की तरह ढूंढ़ना शुरू कर दिया था, लेकिन ये तो भूसे के ढेर में सूई ढूंढ़ने जैसा लग रहा था। उस समय स्टॉक एक्सचेंज के अंदर तीन हज़ार से भी ज़्यादा लोग थे।

अरविंद बुरी तरह से ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि उसका बेटा बच गया हो।



जब अरविंद बंबई आया था तो उसने ये देखा था। बंबई आमतौर की बनिस्बत ज़्यादा बुझा सा लगा था। 6 दिसंबर, 1992 को हिंदू कारसेवकों की एक विशाल भीड़ ने अयोध्या में बाबरी मस्जिद को नष्ट कर दिया था। इसकी वजह से बंबई में सांप्रदायिक दंगे छिड़ गए जिनमें नौ सौ से ज़्यादा लोग मारे गए थे। तीन महीने बाद भी हिंदुओं और मुसलमानों के बीच तनाव शांत नहीं हुआ था।

12 मार्च, 1993 को शहर के विभिन्न हिस्सों में हुए तेरह बम धमाकों से मुंबई हिल गई थी। बाद में आए रिकॉर्डों ने दर्शाया कि 257 लोग मारे गए और सात सौ से ज़्यादा लोग घायल हुए थे। भारत में हुआ ये पहला संगठित आतंकी हमला था जिसमें विस्फोटक के तौर पर आरडीएक्स का इस्तेमाल हुआ था।

डेढ़ बजे, बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज के बेसमेंट में पहला कार बम फटा। अठाईस मज़िलों को नुक़सान पहुंचा, मगर सबसे ज़्यादा तबाही निचली मंज़िलों में आई। लगभग पचास लोग मारे गए। अगले दो घंटों में, माहिम कॉज़वे में फिशरमैन्स कॉलोनी, ज़वेरी बाजार, प्लाज़ा सिनेमा, सैंचुरी बाज़ार, कथा बाज़ार, एयर इंडिया बिल्डिंग और पासपोर्ट ऑफ़िस में कार और स्कूटर बम फटे। सहार एयरपोर्ट पर ग्रेनेड फेंके गए जबकि होटल सी रॉक और जुहू सैंटूर होटल में सूटकेस बम फटे।

उस दिन मरने वाले सैकड़ों लोगों में ज़वेरी बाजार में एक उनहत्तर साल की महिला थीं जो अपनी कार में बैठ रही थीं। उनका नाम शकुंतला बागड़िया था, बिज़नेस के नवोढ़े बादशाह अरविंद बागड़िया की मां।

उस दिन एक और व्यक्ति मारा गया था और वो था अठारह साल का एक लड़का जो अपने पिता और भाई के साथ बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज देखने आया था। उसका नाम विनीत बागड़िया था।



“मैंने तो साला आपको चेतावनी दी थी कि दाऊद और उसके आदमी कुछ भयानक योजना बना रहे हैं,” अरबाज़ ने कहा। “मैंने तो आपको गुल्लू के बारे में टिप भी दी थी।”

“हमने गुल्लू के भाइयों को पकड़ा था,” एडीशनल पुलिस कमिश्नर ने कहा। “इससे उस पर दबाव पड़ा कि वो हमारे पास आकर आत्मसमर्पण कर दे।”

“लेकिन जानकारी का आपने क्या किया?” अरबाज़ ने कहा। “कुछ नहीं!”

अरबाज़ ने उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया था जो दाऊद के आदमी के ज़रिए उसे मिला था। वो आदमी चाहता था कि वो ग़ुल नूर मोहम्मद उर्फ़ गुल्लू को कोई सुरक्षित स्थान मुहैया करवा दे। उसे महज़ सुरक्षित स्थान मुहैया करवाने की बजाय अरबाज़ ने एडीशनल पुलिस कमिश्नर को इसकी ख़बर दे दी थी।

गुल्लू उन उन्नीस लोगों में से था जिन्हें टाइगर मेमन ने ख़ुद चुना था और हथियारों और बम बनाने की ट्रेनिंग लेने के लिए दुबई के रास्ते पाकिस्तान भेजा था। वो मुंबई के दंगों के मामले में भी आरोपी था। अपनी ट्रेनिंग पूरी होने के बाद गुल्लू दुबई होते हुए बंबई आया तो उसे पता लगा कि पुलिस ने उसके भाइयों को गिरफ़्तार कर लिया है। गुल्लू ने अपने भाइयों की रिहाई सुनिश्चित करने की नाकाम कोशिश में पुलिस के सामने समर्पण किया था। उसने दंगों में, पाकिस्तान में अपनी ट्रेनिंग, और स्टॉक एक्सचेंज, सहार इंटरनेशनल एयरपोर्ट और शिव सेना भवन समेत शहर की ख़ास-ख़ास जगहों पर बम लगाने की साज़िश में अपनी भूमिका को कुबूल किया था।

“गुल्लू की बात सुनने की बजाय आपके सुपर इंटेलीजेंट तफ़्तीशकारों ने उसके दावों को महज़ झांसा मानकर दरकिनार करने का फ़ैसला किया!” अरबाज़ दहाड़ा। “आप सबके—एक-एक के—हाथ ख़ून से सने हैं!”



सौभाग्य से बलार्ड एस्टेट बम धमाकों से अछूता रहा था। अरबाज़, राजू, और मुरली हालात का जायज़ा लेने के लिए मिले थे।

“जैसा सामने आ गया है, मैं दाऊद के बारे में सही था,” अरबाज़ ने कहा। “मैं हमेशा से जानता था कि वो बंदा गड़बड़ है। बस काश मैं सही साबित न होता।”

“तुम्हारा दूसरा दुश्मन अरविंद बागड़िया भी शहर में है,” मुरली ने कहा। “बम विस्फोटों में उसने अपनी मां और एक बेटे को गंवा दिया।”

“क्या?” अरबाज़ ने पूछा। “उफ़! बेचारा वो तो ख़त्म हो गया!”

“उसकी बीवी अस्पताल में है,” मुरली ने कहा। “वो इसलिए बच गई क्योंकि वो ज़वेरी की दुकान के अंदर थी। सास बाहर कार के पास थीं और धमाके में मारी गईं।”

“और कोई ऐसा प्रभावित हुआ है जिसे हम जानते हों?” अरबाज़ ने नरम स्वर में पूछा।

“चंदर लखोटिया मारा गया,” मुरली ने कहा। “उसका ऑफ़िस ज़वेरी बाज़ार में था। जब बम फटा तो वो लंच के बाद पैदल अपने ऑफ़िस की ओर जा रहा था।”



वो एक सादा सा सफ़ेद कुर्ता-पाजामा पहने हुए था, उसके कंधों पर एक हल्की सी शॉल पड़ी थी। उसने कई दिनों से दाढ़ी नहीं बनाई थी। तेरह दिन में अरविंद तेरह साल बूढ़ा दिखने लगा था। अभिलाषा उसके पास खड़ी थी, उसका चेहरा अभी भी ज़वेरी बाज़ार की दुकान की खिड़कियों के कांच से घायल था। वो कमज़ोर और किसी भी वक़्त गिर पड़ने को तैयार दिख रही थी।

अंतिम संस्कार से पहले शव को नहलाकर कपड़े पहनाना सामान्य परंपरा थी। जब उसने अपने बेटे के बचे-खुचे शरीर को देखा तो वो दहाड़ें मार उठी। अरविंद ने कोमलता से उसे पकड़ा और विनीत से दूर ले गया। हर पिता को उम्मीद होती है कि उसका बेटा उसकी चिता को अग्नि देगा, लेकिन ईश्वर ने इस पिता के लिए ये ज़रूरी बना दिया था वो अपने बेटे को आग दे। दोनों अंतिम संस्कार बंबई में किए गए।

शकुंतला कार में बैठने की प्रक्रिया में ही थीं कि तभी नज़दीक ही खड़ी किसी दूसरी कार में रखा बम फट गया। कार से उड़कर आई किसी चीज़ ने उनका सिर फाड़ दिया। वहीं के वहीं उनके प्राण निकल गए थे, मगर उनकी लाश को ढूंढ़ने में मुश्किल नहीं हुई।

विनीत की लाश के साथ मामला भिन्न था। उन्हें पूरा शव तो मिला ही नहीं। उसके

शरीर का जो कुछ भी भाग वो ढूंढ़ सके, डॉक्टरों ने उसे जोड़ा था। उसका सिर और धड़ बाकी अंगों से एकदम अलग हो गए थे। अरविंद और विनय स्टॉक एक्सचेंज की ट्रेडिंग फ़्लोर पर घंटों ढूंढ़ते रहे थे तब जाकर थोड़ा-बहुत कुछ मिला था।

बंबई के श्मशानघाट के लिए रवाना होने से पहले शकुंतला और विनीत दोनों के शवों को उत्तर दिशा में सिर रखकर लिटाया गया। उनके माथे पर चंदन का लेप किया गया और दोनों को तुलसी के मनकों और फूलों की मालाएं पहनाई गईं। सूखी हाथी घास से उनके शवों पर गंगाजल छिड़का गया। फिर शकुंतला और उनके पोते की अंतिम यात्रा शुरू होने से पहले दोनों के मुंह में एक-एक तुलसीदल रखा गया। अंतिम संस्कार के तीन दिन बाद अरविंद, अभिलाषा और विनय ने अस्थि संचय किया। मिट्टी के पात्रों में उन्होंने राख और अस्थियां जमा कीं और उन्हें हरिद्वार में सिराने निकल गए।

तेरहवें दिन, कलकत्ता में एक प्रार्थना सभा आयोजित की गई। उसमें शहर का हर छोटा-बड़ा शख़्स शामिल हुआ। एक चबूतरे पर फूलों और अगरबत्तियों के साथ शकुंतला और विनीत की बड़ी-बड़ी तस्वीरें रखी गई थीं। अरविंद, अभिलाषा और विनय एक पंक्ति में खड़े थे, और गंभीरतापूर्वक उन लोगों की शोक-संवेदनाएं स्वीकार कर रहे थे जो एक पंक्ति में वहां से गुज़र रहे थे।

अचानक, अरविंद जड़ हो गया।

"मैंने बंबई में भी आपसे मिलने की कोशिश की थी, अरविंद जी, लेकिन आप हरिद्वार के लिए निकल चुके थे," अरबाज़ ने अरविंद के हाथों को पकड़ते हुए कहा। "मैं एक पिता के नाते कलकत्ता आया हूं। पिता के नाते मैं समझ सकता हूं कि बच्चे को खोना कैसा लगता होगा। हमारे कारोबारी मतभेद कुछ भी रहे हों, दुख की इस घड़ी में मैं आपके साथ हूं।"

अरविंद के गालों पर आंसू लुढ़क पड़े, मौन स्वीकृति में बस वो अपना सिर हिला सका। उसे अपने मृत बेटे का कविता सुनाना याद हो आया:

क्यूं हम लेते हैं भागते दिन को
इतने बेमानी डर और दुख के साथ?
न ठहरना ही तो है इसका मिजाज
आज जो होता है बस आनेवाला कल।



अरविंद और अभिलाषा अपने सामान्य तरीक़े से बिस्तर पर लेटे हुए थे—अपनी-अपनी साइड मगर कमरे के विपरीत सिरों को तकते हुए। हमेशा से ऐसा ही रहा था। एक ही बिस्तर को शेयर करते दो लोग मगर और कुछ नहीं।

अभिलाषा का तकिया उसके आंसुओं से भीग गया था। उसे विनीत की याद आ रही थी। उसे उसे बांहों में लेना, गले से लगाना, चूमना और दूध पिलाना याद आ रहा था।

उसे तो विनय की भी याद आ रही थी हालांकि वो ज़िंदा था। अपने जुड़वां भाई की मौत ने उसे बहुत बुरी तरह प्रभावित किया था और वो पहले जैसा नहीं रह गया था। उसे जॉयदीप की भी याद आ रही थी, वो एकमात्र आदमी जिसने उसे सच्चा प्यार किया था और उसकी परवाह की थी। उसे शकुंतला की भी याद आ रही थी जिन्होंने उसे तब सहारा और स्नेह दिया था जब अरविंद की ओर से कुछ नहीं रहा था।

उसे अपने कंधे पर हाथ महसूस हुआ। उसने हल्के से सिर घुमाया तो अरविंद का चेहरा देखा। वो कोहनी के बल झुका हुआ था, उसका आज़ाद हाथ उसके कंधे पर था। अभिलाषा उसके रूबरू होने को पलट गई। बिना कुछ कहे दोनों आलिंगन में बंध गए। अरविंद ने उसे अपनी बांहों में समेट लिया और अपने आंसुओं को बहने दिया।

"मैंने तुम्हारे साथ जैसा बर्ताव किया है, उसके लिए मुझे अफ़सोस है, अभिलाषा," उसे बांहों में लिए-लिए ही उसने धीरे से अभिलाषा से कहा। "मुझे अपना बेटा याद आता है। मुझे अपनी मां याद आती हैं। ईश्वर मुझे इस तरह सज़ा क्यों दे रहा है?"

अभिलाषा ने अरविंद की बांहों में सुरक्षा महसूस की। वो धीरे-धीरे सुबकती रही, मगर ये शुद्धीकारक था। अभिलाषा और अरविंद रात भर एक दूसरे को थामे रहे। मैं फिर कभी तुम्हें निराश नहीं करूंगा, अरविंद ने मन ही मन सोचा। मैं फिर कभी तुम्हें दुखी नहीं करूंगा।

दो घंटे बाद, विनय अंदर आया। उसके पिता का आग्रह था कि वह अमेरिका जाए और अपनी क्लासेज़ जॉइन करे। वो अपने पिता को कैसे समझाता कि उसे ऐसा महसूस हो रहा है जैसे उसका आधा हिस्सा काट डाला गया हो? विनय जानता था कि विनीत के बिना कुछ भी पहले जैसा नहीं हो पाएगा। उन्होंने सब कुछ साथ किया था, एक दूसरे के लिए कॉलेज के निबंध लिखने से लेकर गर्लफ्रेंड की समस्याओं में मदद करने तक।

अरविंद अपने बिस्तर से उठा और उसने वो पेपरवेट उठाया जो वो अपने ऑफ़िस से लेकर आया था। उसे विनय को थमाते हुए उसने कहा, "इसे अपने साथ रखना। ये मुझे तुम्हारी दादी ने दिया था और अब मैं तुम्हें सौंप रहा हूं।"

विनय ने अपने पिता से डिस्क की सी आकृति वाले पेपरवेट को ले लिया और झुककर उनके पैर छुए। अरविंद ने अपने अकेले रह गए बेटे को गले से लगाया और उसके आंसू फिर फूट पड़े।

विनय अपने माता-पिता के पास लेट गया और उन्हें कसकर अपनी बांहों में ले लिया, मन ही मन वो प्रार्थना कर रहा था कि विनीत की मौत के बाद उसके अंदर समा गया ख़ालीपन ख़त्म हो जाए।



अरविंद अपनी स्टडी में अपनी मेज़ पर बैठा था। एक छोटे से टेलीविज़न पर सीएनएन लगा हुआ था, लेकिन उसे म्यूट किया हुआ था। पिछले साल, देश में सैटेलाइट टेलीविज़न आ गया था। पांच नए चैनल—स्टार टीवी, ज़ी, ईएसपीएन,

सीएनएन और एमटीवी—अब केबल ऑपरेटरों के ज़रिए भारतीयों के लिए उपलब्ध थे जिन्होंने घरों के बीच केबलों का जाल सा बना डाला था। अरविंद ने टेलीविज़न को नज़रअंदाज़ कर दिया। उसका ध्यान अपनी मेज़ पर था। एक बार फिर उसने लिफ़ाफ़े को देखा। वो साधारण सा था, जिस पर प्रेरक का पता नहीं था।

फिर उसने उन फ़ोटोग्राफ़ों को देखा जो उसमें रखे हुए थे। वो ब्लैक एंड व्हाइट फ़ोटो थे जिन्हें किसी पेशेवर ने खींचा था। उनमें अरविंद एक आदमी को नोटों का बंडल थमाते दिख रहा था जो एक बस के सामने खड़ा हुआ था जिसके साइड पर बंगाल ट्रांसपोर्ट पेंट था।

उसकी मेज़ पर रखा फ़ोन बजा।

"मि. अरविंद बागड़िया?" फ़ोन पर आ रही आवाज़ ने पूछा। आवाज़ घुटी-घुटी सी थी मानो दूसरे छोर पर मौजूद शख़्स ने माउथपीस पर रूमाल रखा हुआ हो।

"कहिए?" अरविंद ने जवाब दिया।

"उम्मीद है आपने फ़ोटो देख लिए होंगे?" आवाज़ ने पूछा। "आप चाहें तो मेरे पास और भी सुबूत हैं।"

"कौन बोल रहा है?" अरविंद ने पूछा। "और किस बात के सुबूत?"

"मैं कौन हूं ये बेमानी है," आवाज़ ने कहा। "इस सच के सुबूत कि आपने अपने दोस्त जॉयदीप चक्रवर्ती का क़त्ल करवाने की साज़िश रची थी।"

"क्या? तुम ज़रूर मज़ाक़ कर रहे हो!" अरविंद फ़ोन पर चिल्लाया।

क्लिक। उस शख़्स ने फ़ोन काट दिया था।



जैसे ही फ़ोन बजा, अरविंद ने तुरंत उसे उठा लिया।

"हैलो," उसने कहा।

"संजय दत्त को महज़ अबू सलेम से हथियार लेने के लिए गिरफ़्तार कर लिया गया है," उस आवाज़ ने कहा। "मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि क़त्ल की साज़िश रचने के लिए आपको कितने साल की सज़ा होगी?"

"हरामज़ादे!" अरविंद चीख़ा। "इतना कायर क्यों बन रहा है? सामने आकर मिलता क्यों नहीं मुझसे? मैं तुझे हमेशा के लिए ठीक कर दूंगा!"

"च्च। च्च। इतना ग़ुस्सा," आवाज़ ने कहा। "आपकी सेहत के लिए अच्छा नहीं है, मि. बागड़िया। समझ से काम लीजिए। आपने ख़ुद अंडों की भुर्जी बनाई है। उसे वापस अंडे बनाने की उम्मीद करना नासमझी है।"

"मैं तुझ जैसे कमीनों के साथ बिज़नेस नहीं करता," अरविंद ने कहा।

क्लिक। उस शख़्स ने फ़ोन काट दिया।



फ़ोन फिर से बजा। अरविंद जानता था कि वही आवाज़ होगी। उसने फ़ोन उठा लिया।

"हैलो?" उसने पूछा।

"अगर आप चाहते हैं कि मैं ये फ़ोटोग्राफ़ आपकी पत्नी को भेज दूं तो मैं ऐसा भी कर सकता हूं," उस आवाज़ ने कहा। "ये जानकर वो बिखर जाएंगी कि उनके आशिक को आपने मरवाया था।"

"मैंने जॉयदीप को नहीं मरवाया," अरविंद ने कहा। "कलकत्ता में मेरे विदेशी मेहमान आए हुए थे और वो पैसा जो मैं दे रहा था, वो बस का किराया था। मुझे कैसे पता होता कि कोई और बंगाल ट्रांसपोर्ट की बस मेरे दोस्त को मार डालेगी?"

"दिल भर आया," आवाज़ ने कहा। "लेकिन कोई भी अगर फ़ोटो देखेगा तो उसे ऐसा नहीं लगेगा। साथ ही पश्चिम बंगाल के सबसे बेईमान पुलिसवाले कल्याण सरकार से आपका कनेक्शन भी है।"

"मैंने उसे केवल जॉयदीप का पीछा करने के लिए रखा था," अरविंद बड़बड़ाया। "उसे मारने के लिए नहीं!"

अरविंद की आवाज़ नरम पड़ गई। "मैं बहुत बुरे दौर से निकला हूं," अरविंद ने कहा। "हाल ही में मैंने अपने एक बेटे और अपनी मां को खोया है। प्लीज़..."

"मुझे हमदर्दी है। मगर बिज़नेस तो बिज़नेस है।"

"क्या चाहते हो तुम?" अरविंद ने नरमी से कहा।



विजय राव ने फ़ोन रखते सत्यपाल मित्तल को देखा।

"उस आदमी के साथ ऐसा करना दुखद है जिसने अभी-अभी इतना बड़ा आघात झेला हो," राव ने कहा। "बदक़िस्मती से वो सोने की खान बेकार निकली जो बागड़िया ने मुझे बेची थी। उसने मुझे चूना लगाया।"

बाक़ी दो लोगों ने भी हामी भरी। घनश्याम दास और राम लाल खेतान भी ऐसे निवेश में बेवक़ूफ़ बनाए जाने के बाद बदला लेने के लिए मचल रहे थे जो बैलगाड़ी से ज़्यादा कुछ न निकला।

"तुम्हें यक़ीन है ये कारगर रहेगा?" राव ने पूछा।

"वो सारा पैसा जो ब्रेड इंवेस्टमेंट्स के शेयरों को उठाने के लिए लगाया गया था, वो मॉरीशस की गुप्त कंपनियों के एक नेटवर्क ने हासिल करवाया था," सत्यपाल ने कहा। "अरविंद बागड़िया ये कभी नहीं चाहेगा कि इंकम टैक्स अधिकारियों को उनकी भनक भी लगे।"

“वहां कितनी कंपनियां हैं?” राव ने पूछा।

“108,” सत्यपाल ने जवाब दिया। “हरेक का नाम शिव के विभिन्न नामों पर है—जैसे महेश्वर, श्रीकंठ, शंभू, परमेश्वर, महादेव, वग़ैरा, वग़ैरा।”

“तो अधिकारियों को उसकी रिपोर्ट ही क्यों न कर दें?” घनश्याम दास ने पूछा।

“इससे हमें क्या फ़ायदा होगा,” सत्यपाल ने पूछा। “उसे ब्लैकमेल करके उससे मॉरीशस की उसकी कंपनियों के शेयर्स निकलवाने से न केवल उसे यातना होगी, बल्कि हम अमीर भी हो जाएंगे।”

विजय राव, घनश्याम दास और राम लाल खेतान मुस्कुरा पड़े। सत्यपाल मित्तल को अपने पक्ष में मिला लेना मास्टर स्ट्रोक रहा था। वो तो शताब्दी की खोज था। कुछ-कुछ शाहरुख़ ख़ान नाम के बॉलीवुड के उस नौजवान अभिनेता की तरह जो बाज़ीगर और डर नाम की दो फ़िल्मों की वजह से अचानक मशहूर हो गया था।

“तो ये तय रहा,” राव ने कहा। “बागड़िया से जो भी मिलेगा उसे हम इस अनुपात में बांट लेंगे: एक तिहाई मेरा, एक तिहाई सत्यपाल का और बाक़ी में से मि. दास और मि. खेतान शेयर करेंगे।” दूसरे लोगों ने हामी भरी।

“मि. सत्यपाल मित्तल, मुझे बताया गया है कि आप शुद्ध शाकाहारी हैं, मगर आपके काम किसी ऐसे शख़्स के से हैं जिसने ख़ून चखा हुआ हो,” घनश्याम दास ने मज़ाक़ में कहा।

सत्यपाल ने खींसें निपोर दीं। “मुझे बताया गया है कि अमेरिका के बर्गर बादशाह मैकडॉनल्ड ने हाल ही में ऐलान किया है कि वो भारत में आ रहा है। जानते हैं उसका पार्टनर कौन है?”

“कौन?” घनश्याम दास ने पूछा।

“अमित जटिया नाम का एक बंदा,” सत्यपाल ने कहा। “वो चौदह साल का था जब वो पहली बार मैकडॉनल्ड गया था—जापान में। वो बस मिल्कशेक पी पाया था क्योंकि वो शाकाहारी था। समझ रहे हैं मेरा मतलब?”



अरविंद ने जब विकल्पों पर विचार किया तो उसे अपने पैरों तले ज़मीन खिसकती महसूस हुई। कोई 1,627 किलोमीटर दूर ज़मीन वाक़ई खिसकी थी। महाराष्ट्र के मराठवाड़ क्षेत्र में आए विनाशकारी भूकंप ने लातूर और उस्मानाबाद ज़िलों में दस हज़ार लोगों की जान ले ली थी।

अरविंद ने विकल्पों पर विचार किया। अगर उसने सहयोग नहीं किया, तो बस के ड्राइवर को पैसा देते हुए उसके फ़ोटो अभिलाषा तक पहुंच जाएंगे। उसने जॉयदीप से उसके प्रेम संबंध की बात कभी नहीं उठाई थी। न कभी अपने प्रेम संबंधों की बात की थी। वो इस सबको अपनी याददाश्त से मिटा देना चाहता था। वो बस अपनी पत्नी और जीवित बचे बेटे से प्यार करना चाहता था। वो नहीं चाहता था कि अब

उनके बीच कुछ और आए।

अगर उसने सख़्त रुख़ अपनाया तो मुमकिन था कि मॉरीशस स्थित उसकी शिवा कंपनियों के जाल का पर्दाफ़ाश हो जाए। इससे एन्फ़ोर्समेंट डाइरेक्टरेट के साथ समस्याएं खड़ी हो जाएंगी।

उस अजनबी के साथ टेलीफ़ोन पर हुई बातचीत के बारे में सोचते हुए वो सिर खुजाने लगा। कुछ तो था जो उसकी पकड़ में नहीं आ पा रहा था। क्या कोई बात थी जो उस आदमी ने कही थी? उसने बेतहाशा याद करने की कोशिश की कि वो क्या था।

"च्च। च्च। इतना गुस्सा..." आवाज़ ने कहा। "आपकी सेहत के लिए अच्छा नहीं है, मि. बागड़िया। समझ से काम लीजिए। आपने ख़ुद अंडों की भुर्जी बनाई है। उसे वापस अंडे बनाने की उम्मीद करना नासमझी है।"

उसकी जानकारी में एक आदमी था जिसे अंडों की भुर्जी के रूपक में बात करना पसंद था।

सत्यपाल मित्तल।



सत्यपाल मित्तल जैसे ही अपने घर में दाख़िल हुआ, उसकी नज़र दरवाज़े के दाहिनी तरफ फ़र्श पर रखे डिब्बे पर पड़ी।

वो अपनी पत्नी के साथ नई रिलीज़ हुई फ़िल्म दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे देखने गया था। उसकी पत्नी डिनर के लिए अपनी मां के घर चली गई और सत्यपाल घर की ओर चल दिया।

सत्यपाल ने डिब्बे को देखा। वो प्लाइवुड का था, दो फ़ुट से कुछ ज़्यादा लंबा और एक फ़ुट से कुछ चौड़ा। उस पर काले रंग के मोटे फ़ैल्ट मार्कर से साफ़-साफ़ उसका नाम और घर का पता लिखा हुआ था।

"ये कौन लाया?" उसने नौकर से पूछा।

"एक डिलीवरी मैन आया था, साहब," नौकर ने कहा। "उसने कहा कि आप इसका इंतज़ार कर रहे हैं और कि मैं ये पक्का करूं कि आपको ये मिल जाए।"

"इसे लिविंग रूम में ले आओ।" सत्यपाल ने नौकर से कहा। नौकर ने वैसा ही किया जैसा उसे निर्देश दिया गया था और डिब्बे को सोफ़े के सामने पड़ी कॉफ़ी टेबल पर रख दिया।

सत्यपाल ने किचन नाइफ़ से डिब्बे के लकड़ी के ढक्कन को खोला। सबसे ऊपर सफ़ेद थर्माकोल की मोटी परत थी।

उसने थर्माकोल को खींचकर उखाड़ा और अभी वो देख भी नही पाया था कि अंदर क्या चीज़ है कि दरवाज़े की घंटी बज उठी।



“आप मि. सत्यपाल मित्तल हैं?” पुलिस सुपरिंटेंडेंट कल्याण सरकार ने पूछा।

“जी, मैं ही हूं,” सत्यपाल ने जवाब दिया, उसके माथे पर पसीना झिलमिलाने लगा था। जब नौकर ने उसे बताया कि दरवाज़े पर पुलिस है, तो उसने जल्दी से उस कार्टन को नज़रों से दूर सोफ़े के नीचे सरका दिया।

कल्याण सरकार ने शक भरी नज़र से सत्यपाल मित्तल को देखा। पुलिस कांस्टेबल से हैड कांस्टेबल और असिस्टेंट पुलिस सब-इंस्पेक्टर तक प्रमोशनों से भरा ये अदभुत कैरियर रहा था उसका। उसके पुलिस सब-इंस्पेक्टर, इंस्पेक्टर, असिस्टेंट पुलिस सुपरिंटेंडेंट और, आख़िरकार, पुलिस सुपरिंटेंडेंट बनने के बीच में छोटे-छोटे अंतराल आए थे।

“हमारे पास आपके घर की तलाशी लेने का वारंट है,” सरकार ने कहा, मन ही मन वो घर को तहस-नहस कर डालने के विचार का मज़ा ले रहा था। उसने सर्च वारंट सत्यपाल को थमा दिया और उंगलियां चटकाने लगा। दस पुलिसवाले मुस्तैदी से अंदर आए, और घर के विभिन्न कोनों में फैल गए।

“आप कुछ घबराए से लग रहे हैं, मि. मित्तल,” कल्याण सरकार ने कहा। “आपके माथे पर पसीना है। पक्का आपकी तबीयत ठीक है? उम्मीद है आपको कोई संक्रमण नहीं लगा होगा। जानते हैं न पिछले साल ब्युबॉनिक प्लेग से 693 लोग मारे गए थे?”

“मुझे साला कोई प्लेग नहीं हुआ है,” सत्यपाल ने कहा। “मुझे बस बैठना है,” वो जल्दी से सोफ़े पर बैठ गया, अपनी उंगलियां क्रॉस करके कि उसके सोफ़े के नीचे रखा डिब्बा न खोजा जाए।

“हां,” सरकार ने कहा। “ये सोचना मेरी बेवक़ूफ़ी है कि आपको प्लेग होगा।”

“क्यों?” सत्यपाल ने पूछा।

“क्योंकि चूहे तो केवल बीमारी फैलाते हैं,” सरकार ने कहा।



“ये आपको किसने दी?” सरकार ने डिब्बे के अंदर रखी एके-47 मशीन गन को देखते हुए पूछा।

“मुझे कुछ पता नहीं है,” सत्यपाल ने कहा। “मैं घर आया तो नौकर ने मुझे बताया कि कोई डिलीवरी मैन मेरी ग़ैरमौजूदगी में इसे मेरे लिए छोड़ गया है।”

“नौकर को बुलाओ,” सरकार ने अपने एक आदमी को निर्देश दिया।

“तुमने देखा था ये डिब्बा कौन लाया?” नौकर को सरकार के सामने पेश किया गया, तो उसने उससे पूछा।

“नहीं, साहब,” नौकर ने कहा। “मैंने सोचा कि सत्यपाल साहब खुद इसे लाए

होंगे।”

“झूठ क्यों बोल रहा है?” सत्यपाल चिल्लाया। “तूने साफ़-साफ़ मुझसे कहा था कि इसे कोई देकर गया है!”

“माफ़ी मांगता हूं, साहब,” नौकर ने कहा। “मैं झूठ नहीं बोल सकता। मुझे नहीं पता आप मुझसे क्या चाहते हैं कि पुलिस को क्या कहानी सुनाऊं। सच तो ये है कि कोई डिलीवरी बॉय था ही नहीं। कल रात मैंने ये डिब्बा आपके बेडरूम में देखा था और सोचा कि आप इसे अपने साथ लाए होंगे।”



“मेरे पास आपको हिरासत में लेने के अलावा कोई चारा नहीं है, मि. मित्तल,” ये कहते हुए सरकार के होंठों पर मुस्कुराहट नाच रही थी।

“मुझे फंसाया जा रहा है,” सत्यपाल ने कहा। “और आपकी साख को देखते हुए, अगर आपने ही ये किया हो तो मुझे कोई हैरानी नहीं होगी।”

“आप मुझे उससे ज़्यादा श्रेय दे रहे हैं जिसका मैं हक़दार हूं, मि. मित्तल,” सरकार ने कहा। “मुझे बस इतना पता है कि कल पुरुलिया ज़िले में एक एंटोनोव एएन-26 विमान से कुछ नाजायज़ हथियार गिराए गए थे। मुख्य आरोपी—किम डेवी—अब हमारी हिरासत में है। हम तो महज़ एक ख़बर पर काम कर रहे हैं जिसमें बताया गया था कि वो हथियार आपके लिए थे। बंबई में संजय दत्त को भी ऐसे ही आरोप में गिरफ़्तार किया गया है, तो आप कैसे बच सकते हैं?”

“अरे, मुझे भला हथियारों की क्या ज़रूरत है?” सत्यपाल ने पूछा। “मैं तो सीधा-सादा कारोबारी आदमी हूं।”

“हथियारों की ज़रूरत तो सबको होती है,” सरकार ने ताना कसा। “शोले के ठाकुर से पूछें। अब, भले ही मुझे इस बातचीत में मज़ा आ रहा है मगर मुझे आपसे मेरे साथ चलने को कहना होगा।”

“मगर मैं बेगुनाह हूं,” सत्यपाल ने बहस की।

“उस स्थिति में दूध पी लो,” सरकार ने कहा।

“क्या?” सत्यपाल चकरा गया।

“बमुश्किल चार हफ़्ते पहले, सारे देश में गणेश की मूर्तियों को लेकर पागलपन सवार हो गया था जो दूध पी रही थीं। ये चमत्कार था; और जेल से बाहर आने के लिए तुम्हें इसी की ज़रूरत पड़ने वाली है!”



अरविंद ने हैदराबाद की सुबह-सवेरे की फ़्लाइट ली। अध्यापिका ज्योति दक्षिणी राज्यों के आश्रमों का दौरा कर रही थीं और उनसे मिलने का यही एक तरीक़ा था।

उसने फ़ोर्ब्स पत्रिका के पन्ने पलटे जो उसे कुछ दिन पहले मिली थी। दुनिया के अरबपतियों की वार्षिक सूची प्रकाशित हो गई थी। उसे ये देखकर खुशी हुई कि अब उस सूची में दो भारतीय थे—आदित्य बिरला और धीरूभाई अंबानी। इस सूची में मेरा नाम कब आएगा? उसने खुद से पूछा, कुछ क्षण को वो बाक़ी सब कुछ भूल गया था।

उसने सीट की पॉकेट में रखे टाइम्स ऑफ इंडिया को नज़रअंदाज़ कर दिया जिसमें जेआरडी टाटा के देहांत की ख़बर छपी थी। जेआरडी फ़ोर्ब्स की लिस्ट तक कभी नहीं पहुंच पाए क्योंकि टाटा कंपनियों के शेयर टाटा संस के पास थे, जिस पर अधिकांशतया चैरिटेबल ट्रस्टों का अधिकार था। जेआरडी को शायद फ़ोर्ब्स सूची में खुद को शामिल करवाने की जद्दोजहद बेमानी लगी होगी।

अध्यापिका ज्योति एक सफ़ेद शामियाने में सफ़ेदी के समंदर में बैठी थीं। जीवन प्रकाश अब भारत के कोने-कोने में पहुंच गया था। संस्था के क़दम 103 से 114 देशों में पहुंचने के साथ इसकी वैश्विक उपस्थिति भी बढ़ गई थी।

अरविंद और विनय को टैंट के अंदर ले जाया गया। वो एक तख़्त पर पालथी मारे बैठी थीं। अरविंद ने तुरंत उनके पैर छुए। उन्होंने स्नेह से उसके सिर पर हाथ रखा और उसे आशीर्वाद दिया। ऐसा ही उन्होंने विनय के साथ भी किया। वो उनके तख़्त के पास ज़मीन पर बैठ गए। वो मुस्कुराईं।

"कैसे हो, बेटे?" उन्होंने अरविंद से पूछा।

"बम विस्फोट में मेरी मां और मेरा बेटा मारे गए। अब मैंने अपना विश्वासपात्र साथी सत्यपाल भी गंवा दिया है," अरविंद ने कहा, उसकी आंखें आंसुओं से भर आई थीं।

"लेकिन तुम्हारी पत्नी तो साथ हैं जो तुम्हें अभी भी बहुत प्रेम करती हैं," अध्यापिका ज्योति ने कोमलता से कहा। पत्नी जो मेरे सबसे अच्छे दोस्त के साथ अफ़ेयर रखने को इच्छुक थी, और वो भी अब मारा गया है, अरविंद ने सोचा।

"और तुम्हारा एक बेटा है जो तुम्हारा प्यार पाने को उत्सुक है," अध्यापिका ने विनय की ओर नज़र घुमाते हुए कहा।

"मगर मैं इतना खोखला क्यों महसूस कर रहा हूं," अरविंद ने पूछा। "सत्यपाल ने ही तो मुझे सबसे पहले जीवन प्रकाश के बारे में बताया था। अब वो मेरी वजह से जेल में है।"

"इंच भर सोने के टुकड़े से समय का एक पल नहीं ख़रीदा जा सकता, बेटे," अध्यापिका ज्योति ने कहा। "अपनी ज़िंदगी के किसी मोड़ पर तुम सोने के पीछे भागना बंद कर दोगे। उस दिन तुम्हें अपने सभी सवालों का जवाब मिल जाएगा।"



अलीशा की हथेलियां पसीने से भीग गई थीं और दिल ज़ोरों से धड़क रहा था। ये स्टैनफ़ोर्ड में जाने का दिन था। पिछले तीन महीने से वो इस दिन की कल्पना करती

रही थी, लेकिन असल हक़ीक़त के लिए उसे कोई चीज़ तैयार नहीं कर पाई थी।

बंबई में, अरबाज़ दिल टूटे बच्चे की तरह बर्ताव कर रहा था, जब भी वो अपनी नन्ही शहज़ादी के खुद से दूर जाने की बात सोचता, उसके आंसू बह निकलते। "मैं रोज़ तुम्हें फ़ोन करूंगा," उसने कहा था। "ठीक से खाना। लड़कों को पास मत फटकने देना। देर रात तक बाहर मत रहना। सुरक्षित रहना..."

फ़हरिस्त अंतहीन थी। अलीशा को तो बस अपने पिता के सीने से लिपट जाना आसान लगा था क्योंकि इससे फ़िक्रें काफ़ूर होती महसूस होती थीं। एयरपोर्ट पर, उसके जाने वाले दिन, अरबाज़ ने उसे एक छोटा सा डिब्बा दिया। "ये क्या है?" उसने पूछा।

"ये एक तांबे का कड़ा है," अरबाज़ ने कहा। "ये मुझे मेरी मां ने दिया था ताकि ये मुझ पर कोई आंच न आने दे। इसी वजह से मैं ये तुम्हें दे रहा हूं।" अलीशा ने डिब्बे को खोला और अंदर देखा। इसे हाल ही में पॉलिश करवाया गया था। उस पर किसी भाषा में कुछ खुदा हुआ था जिसे वो समझ नहीं सकी।

उसने अपने पिता के गले में बांहें डाल दीं, उससे लिपट गई और उसके कान में बोली, "मैं भले ही स्टैनफ़ोर्ड जा रही हूं लेकिन मैं आपकी नन्ही बेटी हूं और हमेशा रहूंगी।"

बंबई से सिंगापुर और वहां से लॉस एंजिलेस के पूरे सफ़र में अलीशा परोमिता से खिंची रही। एल.ए. से स्टैनफ़ोर्ड की चार घंटे की लंबी ड्राइव में भी वो उसी तरह ख़ामोश बनी रही। परोमिता ने अपनी बेटी को बुलवाने की बहुत कोशिश की लेकिन वो जड़ बनी रही।

जब वो रॉबल हॉल पहुंचे तब जाकर वो पिघली। हर जगह, छात्र बोर्ड उठाए और अजीब से हॉर्न बजाते मौजूद थे। अलीशा की घबराहट घुलने लगी। हर कोई मददगार दिख रहा था। कुछेक छात्रों ने उसका सामान उठाने में मदद करने की पेशकश की। एक और ने उसका नाम पूछा ताकि डीजे उसके नाम का ऐलान ज़ोरों से बजते इनर सर्किल गाने 'स्वैट-ए-ला-ला-ला-ला-लांग' के साथ कर सके।

अलीशा और परोमिता रॉबल हॉल की भूलभुलैया में बढ़ने लगे। अचानक गले में एक वीडियो कैमरा डाले एक दोस्ताना सा हिंदुस्तानी लड़का उनके पास आया। "तुम अलीशा हो?" उसने पूछा।

अलीशा ने हामी भरी। "मैं ही हूं।"

"हाइ अलीशा, मैं तुम्हारा आरए हूं," उसने कहा।

"आरए?" अलीशा ने पूछा।

"रेज़ीडेंट असिस्टेंट," उसने समझाया। "मैं यहां हर चीज़ में तुम्हारी मदद करूंगा। तुम्हारे कमरे, सामान, यहां रहने, डॉर्म के नियम... किसी भी चीज़ में; मेरे साथ आओ।"

एलिवेटर से एक मंज़िल ऊपर और सीढ़ियों से सैकंड फ़्लोर पर पहुंचकर उन्हें एक

कमरे में ले जाया गया। उसमें सामान था। बहुत सारा। चार लड़कियों के लायक़ सामान। परिचय के लेनदेन के बाद लड़कियां ऐसे बात करने लगीं मानो दसियों साल से एक दूसरे को जानती हों।

परोमिता जानती थी कि अब विदा लेने का समय आ गया है। वो अपने आंसुओं को छिपाने की कोशिश कर रही थी लेकिन ये नामुमकिन था। वो रॉबल हॉल के लॉन की ओर चली गई जहां बेशुमार माता-पिता ऐसे ही जज़्बात से जूझ रहे थे। उसने कसकर अलीशा को गले से लगा लिया और धीरे से बोली, "मैं तुम्हें बहुत प्यार करती हूं, स्वीटहार्ट। मैं तुम्हें हर हफ़्ते फ़ोन करूंगी।"

वो जाने के लिए मुड़ी लेकिन अलीशा कुछ देर और अपनी मां के गले लगी रहना चाहती थी।

परोमिता की कार चली गई तो अलीशा अपने डॉर्म की ओर वापस चल दी। "पहला दिन हमेशा तरह-तरह के जज़्बात से भरा होता है," प्रवेशद्वार पर खड़े उसके आरए ने कहा।

वो मुस्कुरा दी। "मदद के लिए शुक्रिया। मैं तुम्हें क्या बुलाऊं? आरए?"

वो हंस दिया। "मैं सोफ़ोमोर यानी दूसरे वर्ष में हूं। मेरा नाम विनय बागड़िया है," उसने कहा।



शुरू-शुरू में अलीशा को पढ़ाई के नए स्टाइल में रमने में मुश्किल लगी। वो तो इसे लेकर भी उलझन में पड़ गई थी कि उसे कितनी क्लासें लेनी हैं। विनय ने ही मदद की थी। "ये क्लासों, काम के बोझ, और तुम्हारी दूसरी ज़िम्मेदारियों पर निर्भर करता है। तुम क्लासें शुरू होने तक इंतज़ार करो और जितनी क्लासों में जा सको, जाओ। पहला हफ़्ता ख़त्म होने तक तुम ये बता सकोगी कि किन क्लासों का सैट तुम्हारे लिए सबसे अच्छा रहेगा। क्लासों के पहले दिन के अंत तक तुम्हें कम से कम बारह यूनिटों में साइन अप करना होगा लेकिन अधिकृत जोड़ने-घटाने की डैडलाइन तीसरे हफ़्ते के अंत तक होती है।"

आख़िर में उसने चार मुख्य शैक्षिक क्लासें—गणित, स्पेनिश, कैमिस्ट्री और इतिहास—चुनीं। वो तो और भी लेना चाहती थी मगर स्टैनफ़ोर्ड नए छात्रों को पहले क्वार्टर में बारह यूनिट से ज़्यादा लेने की इजाज़त नहीं देता। "स्टैनफ़ोर्ड और कॉलेज की ज़िंदगी में ढलना ही कम से कम तीन यूनिट के कोर्स के बराबर है," उसके शैक्षिक परामर्श निदेशक ने उससे कहा था।

अलीशा ने उसकी बात मान ली।



स्टैनफ़ोर्ड सिलीकॉन वैली के उत्तरपश्चिमी हिस्से में 8,180 एकड़ के ख़ूबसूरत कैंपस में

फैला हुआ था। इस सबको जज़्ब करने की कशमकश से गुज़रती अलीशा की हालत कैंडी शॉप में पहुंच गए बच्चे जैसी थी। वो मेन क्वाड और मेमोरियल चर्च देखने गई; फिर कैंटर सैंटर फ़ॉर विज़ुअल आर्ट्स, स्टैनफ़ोर्ड म्यूज़ियम और एंजेल ऑफ़ ग्रीफ़ देखने गई; एक दूसरे मौक़े पर हूवर टॉवर, रॉडिन स्कल्प्चर गार्डन और पापुआ न्यू गिनी स्कल्प्चर गार्डन गई... इंसान सालों लगा दे, फिर भी सब कुछ नहीं देख सकता।

अपने तीसरे हफ़्ते में वो एरिज़ोना कैक्टस गार्डन में थी, जो स्टैनफ़ोर्ड कैंपस में 30,000 वर्ग फ़ुट में फैला बॉटेनिकल गार्डन है, जब उसे एक जाना-पहचाना चेहरा दिखा।

"हाइ," विनय ने कहा। वो स्टैनफ़ोर्ड की मैरून टीशर्ट और चैक के शॉर्ट्स पहने हुए था। आंखों पर ओकली सनग्लासेज़ लगे थे। उसके पैर हाथ से सिले आरामदेह टिंबरलैंड बूट्स में बंद थे।

"हाइ," अलीशा ने जवाब दिया। "यहां कैसे?"

"अरे, मेरा भूटानी रूममेट," विनय ने कहा। "इसे पौधों में बहुत दिलचस्पी है—ख़ासकर कैक्टस और गूदेदार पौधों में। मैं साथ चला आया।"

अलीशा ने युवा भूटानी को देखा जो एक डायरी में नोट लिख रहा था। "ये तो काफ़ी सीरियस दिखता है," उसने कहा। "क्या नाम है इसका?"

"कर्मा त्शेरिंग," विनय ने जवाब दिया। "और हां, ये बहुत सीरियस है।"

"ये क्या कर रहा है?"

"बॉटनी, कैमिस्ट्री, गणित, इतिहास, भाषाएं... फ़हरिस्त तो बहुत लंबी है। और ये साला सबमें अच्छा है। लेकिन इसकी बातें बहुत हो गईं। आइसक्रीम खाओगी?"



विनय पागलों की तरह रैकेटबॉल कोर्ट के एक छोर से दूसरे तक दौड़ रहा था, हांफता हुआ, उसका दिल पूरी क्षमता के साथ काम कर रहा था। उसने अपनी पूरी ताक़त से बॉल को मारा, और उसे किसी रॉकेट की तरह सनसनाते हुए कंक्रीट की दीवार की ओर भेज दिया।

"यार, तुम बॉल की जान लेने पर क्यों तुले हो?" कर्मा ने मज़ाक़ किया, उसने बॉल को अपनी ओर आते देखा और शॉट छोड़ दिया। ये तोप के गोले जैसा था।

"सही कह रहे हो," विनय ने कहा जबकि बॉल घुमाव खाती उसकी ओर वापस आ रही थी। उसने एक और पागलपन भरा स्विंग लिया और बॉल को फिर से दीवार पर दे मारा। "मुझे शांत होना है।"

कर्मा उलझ सा गया था। उसने अपने दोस्त को कभी इतना उत्तेजित नहीं देखा था। उसने पूरी ताक़त से अपने रैकेट को घुमाया और बॉल तेज़ी से विनय के पास से निकलती हुई सामने की दीवार पर चली गई। वो विनय को देखकर विजयी भाव से मुस्कुराया लेकिन विनय इतनी आसानी से हार मानने वाला नहीं था। उसने रैकेट पर

अपनी पकड़ मज़बूत की और फिर से बॉल को धुन दिया, और उसे अजीब टेढ़े-मेढ़े तरीक़े से घूमते हुए कोर्ट में भेज दिया। कर्मा ने इसे नज़रअंदाज़ कर दिया और चीख़ा, "गेम!"

विनय अपनी सांस दुरुस्त करने को झुक गया। "इतनी जल्दी?" उसने पूछा।

"मुझे चिंता है कि अगर तुम ऐसे ही खेलते रहे तो दीवार को ही तोड़ डालोगे," कर्मा ने कहा। "मामला क्या है?"

"शायद मुझे प्यार हो गया है," विनय ने कहा। "और मुझे पता नहीं है कि वो मुझे पसंद करती है या नहीं। और ये बात मेरी जान लिए जा रही है!"



स्टैनफ़ोर्ड में अलीशा का फ़्रैशमैन ईयर पलक झपकते गुज़र गया। उसे दुनिया भर के बेहतरीन स्पीकर्स, परफ़ॉर्मर्स और स्कॉलर्स को सुनने का मौक़ा मिला; एक कैपेला कंसर्ट में उसने गाया भी; स्टैनफ़ोर्ड बास्केटबॉल में चीयर किया; और कैंटर आर्ट्स सैंटर में एक नई प्रदर्शनी के उद्घाटन में शामिल हुई। इन सब गतिविधियों में जो अचल रहा, वो था एक नौजवान। उसका नाम था विनय बागड़िया।

एक दिन वो लंच के लिए एन्स कॉफ़ी शॉप गए थे जो 1946 से मैन्लो पार्क में सेंटा क्रूज़ एवेन्यु पर मौजूद था। तब से रेस्तरां में न के बराबर बदलाव आया था। वो अभी भी पैनकेक की ओरीजिनल रेसिपी ही इस्तेमाल करते थे और इसके मिल्कशेक असली होते थे। फिर दोनों फ़ोर वैडिंग्स एंड ए फ़्यूनरल देखने गए।

"ह्यू ग्रांट मुझे बहुत पसंद है," सिनेमा के अंधकार भरे हॉल से बाहर निकलते हुए अलीशा ने कहा।

"काश एंडी मैकडॉवेल के लिए मैं भी यही कह पाता," विनय ने कहा। "उसके बहुत बड़े दांत हैं।"

"मुझे पता नहीं था कि आदमी दांतों में भी दिलचस्पी लेते हैं," अलीशा ने चुटकी ली। "मैं सोचती थी कि वो तो बस सीने पर फ़िदा रहते हैं।"

"और अगर मैं कहूं कि मैं तुम पर फ़िदा हूं तो?" विनय ने गंभीरता से पूछा।

"मैं तो सोचती थी कि वो टेलीविज़न वाली वो औरतें हैं," अलीशा ने चंचलता से कहा। "मिस यूनीवर्स सुष्मिता सेन और मिस वर्ल्ड ऐश्वर्या राय। उन दोनों के शो तुमने शुरू से आख़िर तक देखे थे।"

"तुम्हारे सामने तो वो फीकी हैं," विनय ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसे अपनी कार की ओर ले जाते हुए कहा।



अरविंद ने हिल्डा को पत्र लिखवाया। "ड्राफ़्ट मेरे पास लेकर आना," उसने निर्देश

दिया। "मैं इसे ठीक कर दूंगा, उसके बाद इसे मेरे लैटरहैड पर प्रिंट कर लेना।"

उसकी मेज़ के एक कोने में एक अनछुआ पैंटियम कंप्यूटर रखा था। सप्लायर ने दो प्रोग्राम इंस्टॉल कर दिए थे, एक था नैटस्केप नैविगेटर, और सीसी: मेल, जिन्होंने अरविंद को इंटरनेट और ईमेल नाम की टैक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने में समर्थ बना दिया था। मशीन एक मॉडेम और फ़ोन लाइन से जुड़ी थी जिसे कनेक्शन स्थापित करने में किकियाहट और चीत्कारों के साथ कई मिनट लगते थे।

नहीं, शुक्रिया। अरविंद अभी भी क़लम-काग़ज़ के अहसास को ही तरजीह देता था। हिल्डा ने जैसे ही उसके सामने पत्र रखा, उसने तुरंत उसे देखा।

16 मई *1996*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी

भारत के माननीय प्रधानमंत्री

नई दिल्ली।

माननीय प्रधानमंत्री जी,

कृपया देश के सबसे बड़े पद पर आसीन होने पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें। मेरा हृदय आनंद से भर गया है कि भारत के लोगों ने नियति के साथ अपनी भेंट को पूरा करने में सहायता करने के लिए आपको चुना है।

बालपन में कश्मीर में आपसे मिलने और आपातकालीन दिनों में आपके संघर्ष और बाद के वर्षों में आपकी उपलब्धियों को देखने के बाद मुझे कोई संदेह नहीं है कि राष्ट्र ने आपको बुद्धिमानी से चुना है।

अगर मैं कभी भी आपकी या राष्ट्र की किसी सेवा के उपयुक्त होऊं तो कृपया मुझे बुलाने में तनिक भी नहीं हिचकिचाइएगा।

आदर और सम्मान के साथ,

आपका,

अरविंद बागड़िया

उसने मोटी निब के फ़ाउंटेन पैन से पत्र पर दस्तख़त किए, उसे हिल्डा को लौटा दिया और फिर फ़ोर्ब्स का नवीनतम अंक उठा लिया। फ़ोर्ब्स की फ़हरिस्त में भारतीय अरबपति अब चार हो गए थे: कुमार मंगलम बिरला, मुकेश अंबानी, अनिल अंबानी और इस्पात उद्यमी लक्ष्मी मित्तल। फिक्र मत करो, तुम्हारा समय भी क़रीब ही है, एक अंदरूनी आवाज़ ने अरविंद से कहा।



"उनकी सरकार गिर गिई," यश ने कहा। "बस तेरह दिन ही चली।"

यश धर अरविंद के ऑफ़िस में था। अर्दली दोनों आदमियों के सामने दो कप चाय

और बिस्कुटों की एक छोटी सी चांदी की प्लेट रख गया था।

"दुख की बात है," अरविंद ने कहा। "वो अच्छे प्रधानमंत्री साबित होते। अब क्या होगा?"

"एच. डी. देवगौड़ा के आने की संभावना है," यश ने कहा। "देखा तुमने, हालांकि हम कांग्रेसी अविवादित रूप से हार गए हैं, मगर कोई दूसरी पार्टी भी अविवादित रूप से नहीं जीती है। और हमारे आसपास सभी अपनी-अपनी परेशानियों से जूझ रहे हैं। बिहार के ताक़तवर नेता लालू प्रसाद यादव अचानक चारा घोटाले में फंस गए हैं। कल्पना कर सकते हो? चारा!"

"ईंधन के लिए और चारा," अरविंद ने टिप्पणी की। "लेकिन यूनाइटेड फ़्रंट का भानुमती का पिटारा बहुत देर नहीं चल सकता। उन्हें कांग्रेस का समर्थन चाहिए। देव गौड़ा को चरण सिंह और चंद्र शेखर से सीखना चाहिए। दोनों ही मामलों में कांग्रेस ने समय से पहले उनके पांव के नीचे से दरी खींच ली थी।"

यश हंस पड़ा। "ये सच है। हमारी पार्टी को ऐसा करना पसंद है। सच तो ये है, प्रधानमंत्रियों के बस नाम बदलते हैं। राजनीति नहीं बदलती।"

"अगर शिव सेना बंबई का नाम बदलकर मुंबई कर सकती है और डीएमके मद्रास को चेन्नई कर सकती है तो क्या प्रधानमंत्रियों के नाम बहुत पीछे रह सकते हैं?" अरविंद ने चाय का घूंट भरते हुए कहा।

उसकी मेज़ पर रखा फ़ोन बजा। "हां, हिल्डा?" उसने कहा। "हां, उनका फ़ोन दे दो।"

"हां, डार्लिंग, मैं पहुंच जाऊंगा," उसने अभिलाषा से कहा। "कितने बजे? साढ़े पांच? ठीक है।"

यश मुस्कुराया। "देख रहा हूं आजकल तुम घरेलू बन गए हो," उसने कहा।

"तुम्हें तो पता होना चाहिए," अरविंद ने कहा, "मुझे बताया गया है कि लोकसभा में तुम्हारी उपस्थिति का रिकॉर्ड ज़बरदस्त है।"

"इसका शादी से क्या लेना-देना है?" दूसरा बिस्कुट ले या न ले, ये सोचते हुए यश ने पूछा।

"लोग कहते हैं कि संसद में कोई आदमी तब तक नियमित रूप से मौजूद नहीं रहता जब तक कि शादीशुदा न हो!"



"तुम्हारे कांग्रेसी साथी का क्या हाल है?" अरविंद ने पूछा।

"तुम्हारा मतलब अरबाज़?" यश ने पूछा। "तुमने तो शेयर बाज़ार के उस झगड़े में उसकी नाक ही तोड़ दी थी।"

"वो उसने ही शुरू किया था," अरविंद ने कहा। "वो मेरे शेयरों की मंदड़िया बिक्री करना चाहता था।"

“लेकिन उस क़ुर्बानी वाले मामले में तो तुमने ही उसे उल्लू बनाया था,” यश ने तर्क दिया।

“जिसके लिए उसने मेरे यहां इंकम टैक्स का छापा पड़वा दिया था,” अरविंद ने विरोध किया। “उसके बाद उस बदमाश चंदर लखोटिया के दिए नक़ली काग़ज़ात के बल पर एल्बर्ट मिल्स चुराकर तो उसने हद ही कर दी थी।”

“ये जैसे को तैसा का खेल कब ख़त्म होगा?” यश ने पूछा। “जब मैंने सीएम को नाराज़ कर दिया था और अरबाज़ ने उस मुसीबत से निकलने में मेरी मदद की थी, तब से मैं उसे जानता हूं। वो मेरा दोस्त बन गया है। मैं तुम्हें भी एक दोस्त के तौर पर जानता हूं…”

“और हमारी एविएशन डील में बिज़नेस पार्टनर भी,” अरविंद ने उसे याद दिलाया।

“बिल्कुल,” यश ने कहा। “क्या अब समय नहीं आ गया है कि तुम दोनों बीती बातों को भुला दो और साथ मिल जाओ? ज़रा सोचो अगर तुम दोनों साथ काम करते तो क्या नहीं कर सकते थे? ये करिश्मा होता!”

“ये तो अटल बिहारी वाजपेयी और सोनिया गांधी से एक ही पार्टी से चुनाव लड़ने को कहने जैसा है,” अरविंद ने कहा। कुछ दिन पहले ही सोनिया ने श्रीपेरुम्बुदुर की एक रैली में अपना पहला सियासी भाषण दिया था, वो शहर जहां उनके पति मारे गए थे। “जो भी हो, अरबाज़ शेख़ ने मेरी प्रेमिका को चुराया था।”

“उसने उन्हें चुराया नहीं था,” यश ने कहा। “परोमिता बंबई—सॉरी मुंबई—शिफ़्ट हो गई थीं और अरबाज़ की उनसे मुलाकात हो गई थी। वो तो जानता भी नहीं था कि उसके ऊपर तमग़ा लगा है जिस पर लिखा है ‘अरविंद बागड़िया!’”

“मुझे वो पसंद ही नहीं है,” तर्क ख़त्म हो गए तो अरविंद ने कहा।

“वो अंत्येष्टि में आया था,” यश ने कहा। “वो तुम्हारी ओर हाथ बढ़ाने की कोशिश कर रहा था। इस बारे में सोचना।”

“मेरे पास एक आइडिया है,” अरविंद ने कहा। “इसका नाम है मदर टेरेसा फ़ॉर्मूला।”

“वो क्या है?” यश ने पूछा।

“जब सौंदर्य प्रतियोगिताओं की प्रतियोगियों से पूछा जाता है कि वो सबसे ज़्यादा सम्मान किसका करती हैं, तो मुझे बताया गया है कि सबसे ज़्यादा प्रचलित जवाब होता है, ‘मदर टेरेसा,’” अरविंद ने कहा। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे, अरविंद ने सोचा। वो पिछले साल 1997 में ही गुज़री थीं।

“तो?” यश ने पूछा।

“किसी ऐसी चीज़ में पैसा लगाते हैं जो आजकल प्रचलित हो।”



“तुमने इंटरनेट के बारे में सुना है?” अरविंद ने पूछा।

“बिल्कुल,” यश ने कहा। “अख़बार इससे भरे पड़े हैं। ऐसा लगता है, कुछ बच्चे इससे लाखों कमा रहे हैं।”

“ये बबल है,” अरविंद ने कहा। “इसे और कुछ समझने की ग़लती मत करना। चाहे ये 1637 का ट्युलिप मेनिया हो, 1720 का साउथ सी बबल हो, 1840 का रेलवे उन्माद हो या 1929 की महामंदी हो… ये बस श्रृंखला की एक और कड़ी भर है।”

“मैं इनमें से ज़्यादातर कंपनियों के बिज़नेस मॉडल को वाक़ई समझ नहीं पा रहा हूं,” यश ने कहा। “टैक्नोलॉजी में मैं कभी माहिर नहीं रहा।”

“तुम्हें टैक्नोलॉजी समझने की ज़रूरत नहीं है,” अरविंद ने कहा। “तुम्हें बस ये समझना है कि बबल के दौरान क्या होता है।”

“बताओ मुझे,” यश ने कहा।

“बबल एक ऐसी स्थिति है जब किसी ख़ास संपत्ति का कारोबार उस मूल्य श्रेणी पर होता है जो उसके वास्तविक मूल्य से बहुत ज़्यादा दूर होता है,” अरविंद ने समझाया।

“लेकिन ऐसा क्यों होता है?” यश ने पूछा।

“क्योंकि वास्तविक मूल्यों का पालन कर पाना लगभग नामुमकिन होता है,” अरविंद ने जवाब दिया। “बबल्स को अक्सर पुनरावलोकन में पहचाना जाता है। मूल्यों में अचानक गिरावट आती है, जो बूम काल के बाद होता है। चालाकी पहले से ही मूल्यांकन और मूल्य के असंतुलन को पहचानने में समर्थ होने में है।”

“तुम इंटरनेट की नई कंपनियों में निवेश करना चाहते हो?” यश ने पूछा।

“हां,” अरविंद ने सावधानीपूर्वक जवाब दिया। “लेकिन इस गेम को खेलने के लिए मुझे एक पार्टनर चाहिए। तुम अरबाज़ से बात करो न!”



अरविंद और अरबाज़ की मुलाकात अटपटी सी रही। यश ने उनके दिल्ली में मिलने का इंतज़ाम किया था, जो कि तटस्थ क्षेत्र था। मुंबई में अरविंद अपमानित महसूस करता और कोलकाता से अरबाज़ चिढ़ता। जगह चुनी गई थी ओबरॉय के विशिष्ट बिज़नेस क्लब, बैल्विडीयर का प्राइवेट मीटिंग कक्ष।

“ये परिवर्तन का पल है,” यश ने घोषणा की, मानो वो किसी कॉन्फ़्रेंस में भाषण दे रहा हो। “देव गौड़ा जा चुके हैं और अब इंद्र कुमार गुजराल हमारे सम्मानीय प्रधानमंत्री हैं। ऐसे संकेत हैं कि अपने पूर्ववर्ती के विपरीत जो बस नौ माह पद पर रहे, वो एक साल तो निकाल ही लेंगे।”

“और अगर वो इससे ज़्यादा बने रहे, तो वो इसलिए होगा कि कांग्रेस के तख़्ता-पलटू सो रहे होंगे,” अरविंद ने चुटकी ली।

इस टिप्पणी पर अरबाज़ और यश हंस पड़े क्योंकि ये सच था। सफ़ेद दस्ताने पहने

वेटर ने मेज़ पर ड्रिंक्स और स्नैक्स रखे और ख़ामोशी से चला गया।

“तुम दोनों के अपने मतभेद रहे हैं,” यश ने कहा। “मगर मुझे विश्वास है कि अगर तुम अपने विरोध अलग रखकर एक टीम के रूप में साथ जुड़ो तो बहुत शानदार काम करोगे।”

“एक ख़ानदान के भाई साथ काम नहीं कर पाते, और तुम चाहते हो कि दो ऐसे अजनबी टीम की तरह साथ जुड़ें जो एक दूसरे की ख़ूबियों से खार खाते हैं? तुम्हारी बात में दम नहीं है!” अरबाज़ ने कहा।

“तुम दोनों ही हारे भी हो और जीते भी हो,” यश ने कहा। “जहां तक मैं समझता हूं, अरबाज़ मुंबई में पैसा छापने में मसरूफ़ है। और तुम, अरविंद, भारतीय स्टॉक मार्केट में सबसे बड़े संस्थानात्मक निवेशक हो। कैसी अविश्वसनीय शक्ति है!”

“विज्ञापन के लिए शुक्रिया,” अरविंद ने तारीफ़ के पुल बांधते यश को टोका।

व्यंग्य को नज़रअंदाज़ करते हुए यश अपनी ही रौ में कहता रहा। “क़ुर्बानी की डील अरविंद के पक्ष में गई... 1-0। जवाब में, इंकम टैक्स का छापा पड़ा... 1-1। फिर अरबाज़ ने किसी तरह एल्बर्ट मिल्स का पुनर्निर्माण कर लिया... 1-2। लेकिन अरविंद स्टॉक मार्केट में सफ़ाया करने में कामयाब रहे... 2-2। क्या काफ़ी ख़ून बहाया नहीं जा चुका है?”

अरविंद ने टोका। अरबाज़ की ओर मुड़कर वो बोला, “बम हमलों में मैंने अपने एक बेटे को गंवा दिया। मैं जो करता हूं, उसकी अर्थहीनता को मैंने देख लिया है। भले ही हम साथ में काम करें या नहीं, और भले ही हम दोस्त न हो पाएं, लेकिन अब हम दुश्मन न रहें।”

“मैं इसके नाम जाम उठाऊंगा,” अरबाज़ ने अपना गिलास उठाते हुए कहा।

“अब कारोबारी प्रस्ताव पर बात करते हैं,” यश ने कहा।

“ये सीधा सा है,” अरविंद ने कहा। “दुनिया भर में निवेशक एकदम बेवक़ूफ़ी भरे विचार लेकर आ रहे हैं। बू.कॉम नाम की एक कंपनी एक ऑनलाइन फ़ैशन स्टोर बनाने के लिए 18.8 करोड़ डॉलर ख़र्च कर रही है। इसके लिए क्या वाक़ई उन्हें 18.8 करोड़ डॉलर चाहिए? एक और कंपनी बुक्स-ए-मिलियन के शेयरों की क़ीमत में एक हफ़्ते में एक हज़ार प्रतिशत का उछाल आ गया; क्योंकि उन्होंने बस एक अपडेटेड वैबसाइट की घोषणा की थी।”

“घोर पागलपन है,” अरबाज़ ने कहा।

“पैट्स.कॉम नाम की एक बेनाम सी कंपनी का इरादा रीटेल ग्राहकों को पालतू जानवरों का सामान बेचने का है,” अरविंद ने कहना जारी रखा। “ये आगामी मेसी’ज़ थैंक्सगिविंग डे परेड और सुपर बोल में विज्ञापन पर लाखों खर्च कर रही है। ऐसा लग रहा है जैसे लोगों को पैसा लुटाने के तरीक़े न मिल रहे हों।”

“तो आपके दिमाग़ में असल में है क्या?” अरबाज़ ने पूछा।

“आप और मैं दोनों यहां भारत में डॉटकॉम्स में पैसा लगाएंगे,” अरविंद ने कहा।

“आपकी ये योजना है?” अरबाज़ ने अविश्वास से पूछा। “डॉटकॉम्स में पैसा लगाना?”

“ये तो पार्ट वन है,” अरविंद ने कहा। “मज़ा पार्ट टू में है।”

“पार्ट टू में क्या होता है?” अरबाज़ ने पूछा।

“आपने वो कहावत तो सुनी ही होगी, तुम मुझे अपनी दिखाओगे तो मैं तुम्हें अपनी दिखाऊंगा? ये कहावत कुछ यूं है, अगर आप मेरी में निवेश करेंगे तो मैं आपकी में करूंगा!”



सोमवार को इकॉनोमिक टाइम्स ने अपने पहले पन्ने पर लेख छापा था।

ब्रेड इंवेस्टमेंट्स ने बाबाबोलो के इक्विटी शेयर लिए

कोलकाता स्थित ब्रेड इंवेस्टमेंट्स ने बाबाबोलो में गोपनीय राशि का निवेश किया है। बाबाबोलो इस राशि का प्रयोग बी2बी क्षेत्र में नवीन उत्पादों को आज़माने में करेगा। ब्रेड बाबाबोलो के बोर्ड में स्थान ग्रहण नहीं करेगा। अनधिकृत स्रोतों ने पुष्टि की है कि बाबाबोलो में *1025* करोड़ के उद्यम मूल्यांकन पर निवेश किया गया है। “बाबाबोलो ने स्वयं को एक शानदार प्रवर्तक साबित किया है और, टैक्नोलॉजी के अपने ज़बरदस्त प्रयोग के साथ, ये व्यापार-से-व्यापार के क्षेत्र में एकत्रीकरण के अवसर उत्पन्न कर रहा है,” ब्रेड इंवेस्टमेंट्स के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक अरविंद बागड़िया ने कहा। “हमें उम्मीद है कि धन के इस नवीनतम प्रवाह से बाबाबोलो इस क्षेत्र में अपने अग्रणी स्थान को मज़बूत कर पाएगा।”

“अब क्या होगा?” अरबाज़ ने फ़ोन पर पूछा।

“मेरी कंपनी ब्रेड बाबाबोलो में दो सौ करोड़ ट्रांसफ़र करने की प्रक्रिया में है,” अरविंद ने कहा। “ये देखते हुए कि बाबाबोलो पर आपका नियंत्रण है, आप उस पैसे को यूनाइटेड फ़ेडरेशन बैंक में फ़िक्स्ड डिपॉज़िट कर देंगे। उस डिपॉज़िट को ज़मानत की तरह मानते हुए बैंक आपकी कंपनी धंधा होल्डिंग्स को पैसा उपलब्ध करवाएगा। धंधा उस पैसे को देशविदेश में निवेश करने में इस्तेमाल करेगा।”



मंगलवार को फ़ाइनेंशियल टाइम्स ने पहले पन्ने पर एक और कंपनी के बारे में एक लेख छापा।

देशविदेश ने *200* करोड़ की राशि प्राप्त की

मुंबई के बड़े निवेशक धंधा होल्डिंग्स ने देशविदेश में पच्चीस प्रतिशत इक्विटी शेयर प्राप्त किए हैं। फ़ाइनेंशियल एक्सप्रेस को जानकारी मिली है कि बंगलौर स्थित देशविदेश ने *800* करोड़ के पूर्व-मुद्रा मूल्यांकन पर *200* करोड़ की नई राशि प्राप्त की है। सूत्रों के अनुसार, देशविदेश के दो साल में लागत निकाल लेने की संभावना है। इसके पेज का अवलोकन प्रति माह *67* प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है, जो उद्योग में सर्वाधिकों में है। देशविदेश के एक प्रतिनिधि का कहना है कि कंपनी अपने स्वामित्व वाले कारोबारी प्लेटफ़ॉर्म में अन्य

अंतरराष्ट्रीय कारोबारों को लाने के लक्ष्य को पूरा करने की ओर अग्रसर है। निवेश के बारे में बताते हुए धंधा के मुख्य निवेश अधिकारी श्री मुरली अय्यर ने कहा, "देशविदेश द्वारा प्रस्तावित अभूतपूर्व वृद्धि के अवसरों को लेकर हम उत्साहित हैं। हमें उम्मीद है कि हमारा निवेश देशविदेश के लिए सकारात्मक एबिटा की राह में गति लाएगा।"

"अब?" अरबाज़ ने पूछा।

"वो पैसा जो मैंने आपको दिया था, प्रभावी तौर पर मेरे पास वापस आ गया है क्योंकि देशविदेश में मेरी नियंत्रणात्मक हिस्सेदारी है। अब हमें दोनों कंपनियों में आय दिखानी होगी।"

"कैसे?" अरबाज़ ने पूछा। "वो दोनों ही कुछ नहीं करती हैं!"

"आप विभिन्न सेवाएं प्रदान करने के लिए देशविदेश के पास बिल भेजेंगे," अरविंद ने कहा। "हम उन सेवाओं के लिए आपको सौ करोड़ का भुगतान करेंगे।"

"फिर?" अरबाज़ ने पूछा।

"देशविदेश भी बाबाबोलो को समान राशि के बिल भेजेगी," अरविंद ने कहा। "बाबाबोलो वापस भुगतान कर देगी।"

"लेकिन इसका मतलब तो न-लाभ-न-हानि होगा। दोनों कंपनियों के पास सौ करोड़ की आय और सौ करोड़ का व्यय होगा," अरबाज़ ने कहा।

"सही है, लेकिन बाज़ार आधार रेखा को नहीं, बस शीर्ष रेखा को देख रहा है," अरविंद ने कहा। "इसे विंडो-ड्रैसिंग कहते हैं!"



"ये ऐसी कंपनियां हैं जिनका न कोई ट्रैक रिकॉर्ड है, न आय है, न कुशल प्रबंधन है और निश्चय ही कभी मुनाफ़ाबख़्श होने की कोई उम्मीद भी नहीं है," अरविंद ने कहा। "फिर भी मार्केट इन्हें पसंद करता है।"

"तुमने मार्केट से इन्हें पसंद करवा दिया है," यश ने कहा, जब एक महीने बाद वो फिर से बंगलौर में मिल रहे थे, फिर से तटस्थ क्षेत्र में।

"मैंने वो नहीं किया," अरविंद ने स्वीकार किया। "हमने तो बस ये सुनिश्चित करने के लिए एक बहुत महंगी पीआर एजेंसी को रखा था कि बाहर निकलने वाली हर चीज़ को सही घुमाव दिया जाए। दूसरा हिस्सा रोबोट था।"

"रोबोट?" अरबाज़ ने पूछा।

"मैंने आईआईटी के एक टैकी को रखा था," अरविंद ने कहा।

"उसने एक प्रोग्राम बनाया था जो बार-बार वैबसाइट्स पर जाता था और महत्वपूर्ण लिंक्स पर क्लिक करता था।"

"इससे क्या हासिल हुआ?" यश ने पूछा।

“डॉटकॉम्स पर परफ़ॉर्मेंस के मूल्यांकन के अहम पैमानों में से क विज़िटर सैशन और पेज अवलोकन है,” अरविंद ने कहा।

“वो क्या होता है?” अरबाज़ ने पूछा।

“सरल शब्दों में कहें तो, उन लोगों की संख्या जो रोज़ाना वैबसाइट र जाते हैं और उन पेजों की संख्या जिन्हें वो देखते हैं,” अरविंद बताया। “बाज़ार इस बात को पसंद कर रहा है कि हमारा ट्रैफ़िक विस्फोटक है।”

“अब आगे?” अरबाज़ ने मुस्कुराते हुए पूछा।

“पार्ट तीन,” अरविंद ने जवाब दिया। “ब्रेड सौ प्रतिशत की वृद्धि र देशविदेश के धंधा के शेयर ख़रीदेगी। धंधा बाबाबोलो में ब्रेड शेयर ख़रीदेगी, वो भी सौ प्रतिशत की वृद्धि पर।”

“लेकिन ये तो बेतुका है,” अरबाज़ ने कहा। “उन होल्डिंग्स की मत में सौ फ़ीसदी के इज़ाफ़े को जायज़ ठहराने के लिए कुछ भी नहीं बदला है।”

“डॉटकाम मूल्यांकन की दुनिया में स्वागत है,” अरविंद ने कहा।



बृहस्पतिवार को बिज़नेस स्टैंडर्ड ने अख़बार के पहले पन्ने पर एक लेख प्रकाशित किया।

देशविदेश का मूल्यांकन *1600* करोड़ पर पहुंचा

मुंबई के बड़े निवेशक धंधा होल्डिंग्स ने देशविदेश के अपने क्विटी शेयर के कुछ अंश को विनिहित किया है। धंधा ने *800* रोड़ के पूर्व-मुद्रा मूल्यांकन पर बंगलौर स्थित देशविदेश में *200* रोड़ का निवेश किया था। नवीनतम विकासों की जानकारी रखने ली पार्टियों ने उजागर किया है कि अपने प्रवेश मूल्य पर भारी वृद्धि के साथ धंधा के बाहर निकलने की बातचीत अपने अंतिम चरण र है। “देशविदेश के अकल्पनीय बिज़नेस मॉडल को लेकर हम अभी भी बहुत उत्साहित हैं लेकिन हम यह भी समझते हैं कि अब समय है कि प्रारंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव से पहले कंपनी में अतिरिक्त राशि आने दिया जाए। हमारा इरादा देशविदेश में, वित्तीय और कूटनीतिक स्तर पर, निवेशित रहने का है क्योंकि हमें उत्कृष्ट प्रबंधन दल की क्षमताओं में पूरा विश्वास है।”

“अब?” अरबाज़ ने पूछा।

“ब्रेड से शेयरों की बिक्री का पैसा धंधा में आ जाएगा,” अरविंद कहा। “उस पैसे को धंधा बाबाबोलो में हमारे शेयर ख़रीदने में गाएगी। इस बातचीत के दौरान मैंने आपको एक फ़ैक्स भेजा है। उसमें वो लेख है जो एक दिन बाद हिंदू बिज़नेस लाइन में आएगा।”

ब्रेड ज़बरदस्त मूल्यांकन के साथ बाबाबोलो से बाहर निकला

कोलकाता स्थित ब्रेड इंवेस्टमेंट्स ने बाबाबोलो में अज्ञात राशि का निवेश किया था। हमें

बताया गया है कि ये *200* करोड़ में अधिग्रहीत *19.5* प्रतिशत शेयर थे। गोपनीयता की शर्त पर भीतरी सूत्रों ने बताया है कि ब्रेड ने अपने शेयरों के एक बड़े हिस्से को *400* करोड़ में बेचने का निर्णय लिया है। निवेश की अवधि दो महीने से भी कम थी। अभी तक यह ज्ञात नहीं हुआ है कि प्राप्तकर्ता कौन है किंतु ये स्पष्ट है कि बाबाबोलो का मूल्यांकन *1,025* से एकदम दोगुना होकर *2,050* हो गया है। "बाबाबोलो का शानदार ट्रैक रिकॉर्ड है और कुछ टैक्नोलॉजीज़ जिनमें इसने निवेश किया है, इसे व्यापार-से-व्यापार के क्षेत्र में नेतृत्व की दिशा में ले जाएंगी," ब्रेड इंवेस्टमेंट्स के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक अरविंद बागड़िया ने कहा। "हमारा मानना है कि अब समय आ गया है कि आईपीओ की ओर बढ़ने से पहले बाबाबोलो धन के नए स्रोतों का निर्माण करे। आईपीओ आने तक हम अपना छोटा सा हिस्सा क़ायम रखेंगे।"



अगली मुलाक़ात चेन्नई में हुई। हमेशा की तरह, मुंबई और कोलकाता नज़रअंदाज़ कर दिया गया।

"तो हमारे पास दो कंपनियां हैं जो कुछ नहीं करतीं, कुछ नहीं कमातीं, और फिर भी ध्यान खींचती हैं," यश ने कहा।

"क्या तुमने बड़ा मूर्ख थ्योरी नहीं सुनी?" अरविंद ने पूछा।

"वो क्या है?" यश ने पूछा।

"बड़ा मूर्ख थ्योरी कहती है कि किसी वस्तु की क़ीमत उसकी वास्तविक क़ीमत से नहीं बल्कि बाज़ार के भागीदारों के बेतुके विश्वासों और अपेक्षाओं से तय होती है। जब तक आसपास कोई बड़ा मूर्ख ज़्यादा क़ीमत देने को तैयार है, मूल्य बढ़ते ही रहेंगे," अरविंद ने समझाया।

"तो अब क्या होना है?" अरबाज़ ने पूछा।

"पार्ट चार," अरविंद ने कहा। "हम ज़्यादा बड़े मूर्ख को ढूंढ़ेंगे। आज की तारीख़ में, हमारे निवेशी बैंकों ने दोनों कंपनियों के लिए पांच संभाव्य निवेशकों की पहचान की है।"

"और?" अरबाज़ ने पूछा।

"हम सावधानी से इनमें से दो को चुनेंगे," अरविंद ने कहा।

"बाबाबोलो एक से बातचीत करेगी मगर आख़री वक़्त में उसे छोड़कर दूसरे को चुन लेगी।"

"फिर?" अरबाज़ ने पूछा।

"इससे छोड़ी गई पार्टी किसी भी क़ीमत पर देशविदेश का सौदा तय करने पर आमादा हो जाएगी," यश ने कहा।

"बिल्कुल," अरविंद ने कहा। "हमें सबसे बड़ा मूर्ख मिल जाएगा।"

अरबाज़ की ओर मुड़कर उसने कहा, "वो आख़री सौदा जिसमें हमने आपको 400

करोड़ दिए थे, वो हमारे पास वापस आने हैं।”

अरबाज़ ने हामी भरी। “बैंकरों ने बताया है कि वो निकल चुका है।”



“उस हरामज़ादे ने फिर से मुझे धोखा दिया है!” अरविंद दहाड़ा। और यश उसके ऑफ़िस में थे।

“हो सकता है बैंक से ही देरी हुई हो,” यश ने कहा। “तुम उतावले नहीं हो रहे हो?”

“बकवास!” अरविंद ने कहा। “मैं पिछले दो हफ़्ते से उसे याद दिलाता आ रहा हूं। वो हर तरह के बहाने निकाल रहा है कि पैसा क्यों रुक गया है।”

“शायद वो साइकिल को पूरी तरह समझा नहीं होगा,” यश ने राय दी।

“इसमें समझने को क्या है? मैं उसकी कंपनी में 200 करोड़ निवेश करता हूं, वो उन्हें मेरी कंपनी में वापस निवेश करता है। मैं उसकी कंपनी को राजस्व आय के तौर पर 100 करोड़ का भुगतान करता हूं, वो मेरी कंपनी को राजस्व के तौर पर 100 करोड़ देता है। मैं 400 करोड़ में उसके शेयर ख़रीदता हूं, वो 400 करोड़ में मेरे शेयर ख़रीदता है। पांच साल का बच्चा तक ये समझ सकता है!”

“मैं बात करता हूं उससे,” यश ने कहा, और इससे पहले कि अरविंद उस पर कुछ फेंकता, वो जल्दी से उठ गया। हिंसा उसे नापसंद थी।

उसने टीवी पर सीआईडी नाम का एक नया शो देखा था जिसे हाल ही में सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न ने शुरू किया था और क़सम खाई थी कि दोबारा उसे नहीं देखेगा।



अरबाज़ और यश ओबरॉय के शानदार बेलविडीयर क्लब में मिले थे। उन्होंने एक प्राइवेट मीटिंग कक्ष, कॉरबेट, बुक किया था ताकि उन्हें कोई परेशान न करे।

“तुम्हें दिल्ली में क्यों रोक लिया गया था?” अरबाज़ ने पूछा।

“जब मनु शर्मा ने जैसिका लाल को गोली मारी थी, उस समय मैं टैमरिंड कोर्ट में एक पार्टी में था,” यश ने कहा। “दुनिया साली पागल हो गई है। एक ड्रिंक देने से मना करने पर लोगों को गोली मारी जा रही है! पुलिस को कुछ बयान-वयान चाहिए थे।”

बातचीत में ज़रा ठहराव आया। “मैंने कहा था न अगर हम बस थोड़ा सब्र से काम लें तो उससे हिसाब चुका लेंगे,” आख़िरकार यश ने कहा। “लेकिन उसे ये कभी पता न चले कि उसका बैंड बजाने में मैं तुम्हारे साथ मिल गया था। अगर उसने उस एविएशन सौदे के बारे में कुछ बक दिया तो मैं बुरी तरह फंस जाऊंगा।”

“मेरे होंठ बंद रहेंगे,” अरबाज़ ने कहा।

“ये अरविंद बागड़िया के नाम,” अरबाज़ ने अपना गिलास उठाते हुए कहा।

“दुनिया का सबसे बड़ा मूर्ख,” यश ने घूंट भरते हुए कहा।

“मुझे तो लगने लगा था कि तुम बागड़िया की ओर हो गए हो,” अरबाज़ ने कहा। “जब तुमने उसके साथ विमान का सौदा करने का फ़ैसला किया तब तो मुझे इसका यक़ीन ही हो गया था। फिर जब तुमने राय दी कि मैं उसके यहां शोक प्रकट करने जाऊं, तो मुझे लगा कि तुम्हारा सिर फिर गया है।”

वो तो मास्टरस्ट्रोक था,” यश ने कहा।

“सच तो ये है कि उस वक़्त मुझे वाक़ई उसके लिए दुख हो हा था,” अरबाज़ ने कहा। “जब भी मेरे अंदर अच्छाई के जज़्बात मड़ने लगते हैं, मैं बस बैठ जाता हूं और इंतज़ार करता हूं।”

“फिर क्या होता है?” यश ने पूछा।

“वो जज़्बा आख़िरकार गुज़र जाता है,” अरबाज़ ने कहा।



अरविंद ने फ़ोर्ब्स का अंक रख दिया। अभी भाग्य नहीं चमका था। दुनिया के सबसे अमीरों की सूची में वही हमेशा वाले भारतीय थे। नई प्रविष्टियों में बस विप्रो के अज़ीम प्रेमजी और एचसीएल के शिव नडार थे। सब्र करो, अरविंद ने सोचा, तुम्हारा वक़्त भी आएगा।

अरविंद ने पत्रिका रख दी और हिल्डा का फ़ोन किया। उसने उसे एक और पत्र लिखवाया। जब वो ड्राफ़्ट लाई तो उसने कुछेक छोटे-छोटे बदलाव किए और फिर अंतिम प्रारूप पर अपने मोटी निब वाले मौं ब्लां फ़ाउंटेन पैन से दस्तख़त कर दिए।

13 अक्टूबर 1999

श्री अटल बिहारी वाजपेयी

भारत के माननीय प्रधानमंत्री

नई दिल्ली

माननीय प्रधानमंत्री जी,

मैं यह देखकर बहुत प्रसन्न हूं कि आपने प्रधानमंत्री का पदभार संभाल लिया है। आपका पहला कार्यकाल तेरह दिन रहा। अगला तेरह महीने चला। मुझे विश्वास है कि यह कार्यकाल तेरह वर्ष जारी रहेगा। मैं इसकी प्रार्थना कर रहा हूं।

तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद पोखरण में परमाणु परीक्षण करवाने में दर्शाए आपके व्यक्तिगत साहस ने लाखों भारतीयों के मन में आशा का संचार किया है कि आख़िरकार उनका नेतृत्व एक निडर मगर दयालु नेता कर रहा है। लाहौर की आपकी बस यात्रा को दुनिया भारत द्वारा पाकिस्तान की ओर बढ़ाए शांति और

मित्रता के क़दम के रूप में देख रही है। तत्पश्चात कारगिल में पाकिस्तान की घुसपैठ को रोकने में सामने आया आपका साहस और दृढ़संकल्प इतिहास में आपके निर्णायक पल के रूप में दर्ज होगा।

अगर मैं कभी भी आपकी या देश की सेवा में कुछ कर सकूं तो कृपया मुझे बुलाने में हिचकिचाइएगा नहीं।

ससम्मान,

आपका,

अरविंद बागड़िया

अरविंद ने फिर से पत्र को देखा। संतुष्ट होकर कि उसमें वही लिखा गया है जो वो चाहता था, उसने उस लैदर फ़ोल्डर को बंद कर दिया जिसमें वो था और अर्दली को बुलाने के लिए घंटी बजा दी जो उसे हिल्डा को दे देता।

अब पारंपरिक युद्ध के तौर-तरीक़ों को छोड़ने का वक़्त आ गया था। परमाणु विकल्प कहीं ज़्यादा प्रभावी है, अरविंद ने सोचा। अरबाज़ शेख़, अभी तुम्हें मेरा आखरी जवाब कहां मिला है।

ओऽम त्रयम्बकं यजामहे

सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं।

1750, तिरुअनंतपुरम

उर्वारुकमिव बन्धनान्।

मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

तिरुअनंतपुरम की सड़कें शांत पड़ी थीं। संकरी, भीड़ भरी, और सामान्यतया लोगों और सामानों से अटी पड़ी गलियों में दिन के समय चलना भी मुश्किल होता था। मगर रात में वो बिल्कुल ही अलग दिख रही थीं।

सारी सड़कें अंततः घूम-फिरकर नगर के मुख्य आकर्षण पद्मनाभस्वामी मंदिर की ओर जाती थीं। वो सांप की कुंडली के समान थीं। शायद उचित भी था, ये देखते हुए कि नगर का नाम भगवान विष्णु के शेषनाग अनंत के नाम पर पड़ा था।

पद्मनाभस्वामी मंदिर के पश्चिम में नंबूदरी ब्राह्मणों के घर थे। उनमें से एक राजसी आवास था जिसमें अनेक कमरे थे जो लकड़ी के शानदार जंगलों और ऊंची चिकनी नक़्क़ाशीदार लकड़ी की छतों के बरामदों से जुड़े थे। इन अनेक कमरों में से एक गृहस्वामी के सिवा सबकी पहुंच से बाहर था। पीतल के विशाल क़ब्ज़े, ज़ंजीरें और द्वार की ठोस मूठ कमरे के महत्व को दर्शाते थे। उसके अंदर जयंतन नाम का एक व्यक्ति तेल के दो बड़े दीपकों के प्रकाश में पांडुलिपियों का अध्ययन करने में जुटा हुआ था। हरेक पांडुलिपि के आवरण के बीचोबीच एक छोटा सा मत्स्य चिह्न उभरा हुआ था।

"स्वेदन... मर्दन... मूर्च्छन... उत्थापन... पतन... रोधन... नियमन...संदीपन..."

वो भोर से पहले की सभा के लिए ख़ुद को तैयार कर रहा था। वो उठा, दीपकों को बुझाया, बाहर निकला और द्वार को बंद कर दिया। जयंतन ने गहरी सांस ली। ये कैसी गंध थी? फिर वो मुस्कुरा दिया। चंदन और कालीमिर्च। कभी-कभी पवन बंदरगाह की गंध बहा लाता था। राजा सुलेमान के व्यापारिक पोत पांच शताब्दी पहले आए थे और तब से नगर मसालों और हाथी दांत का समृद्ध व्यापार कर रहा था।

प्रतीक्षारत पालकी में चढ़कर जयंतन आसन पर बैठा और उन चार हृष्ट-पुष्ट आदमियों को आदेश दिया जो उसे कुछ घंटे की दूरी पर स्थित पद्मनाभपुरम की सीमा पर बने एक साधारण से घर की ओर ले जाने वाले थे। कहारों को हमेशा हैरानी होती थी कि उनके स्वामी हर माह इस ख़ास घर में क्यों जाते हैं। मगर उन्होंने पूछने की जुर्रत नहीं की।

वो आवास एक अत्यंत रूपमती स्त्री का था। वो उत्कृष्ट वस्त्र पहनती थी और अत्युत्तम सुगंधियां लगाती थी। उसका उत्तेजक सौंदर्य, चमकती आंखें और रसीले होंठ किसी भी पुरुष को कामातुर कर सकते थे। वो जयंतन की ही प्रतीक्षा कर रही थी और उसे आते देखकर मुस्कुरा उठी। वो उसे कहारों की जिज्ञासु निगाहों से दूर एक सुसज्जित कक्ष में ले गई। अंदर पहुंचने के बाद उस स्त्री और जयंतन के बीच एक शब्द का भी आदान-प्रदान नहीं हुआ। उस स्त्री ने दीपक से एक मशाल जलाई और ख़ामोशी से उसे थमा दी। कक्ष के बीचोबीच एक आकर्षक गद्दा बिछा था, जिस पर रेशमी वस्त्र बिछा था और वो गुलाबजल से महक रहा था। उस पर अनेक कुशन बिखरे पड़े थे।

जयंतन ने उसे देखा और वो मुस्कुरा दी। वो गद्दे के पास झुकी और सुघड़ता से उसे खींच दिया, एक गुप्तद्वार दिखने लगा। जयंतन ने उसकी ओर हाथ बढ़ाया, रस्सी के हत्थे को पकड़ा और उसे खींचकर खोल दिया। "वापस आने पर मैं दो बार दस्तक

दूंगा,"

उसने कहा और जलती हुई मशाल हाथ में लिए सीढ़ियां उतरने लगा। सुरंग सतर सीधी रेखा में थी और जयंतन को एक घंटे से भी कम चलना पड़ा था।

दूसरे छोर पर वो एक नक़्क़ाशीदार दरवाज़े से बाहर निकला जो एक खड़ी सीढ़ियों पर खुलता था। सीढ़ियों पर चढ़कर जयंतन एक भव्य कक्ष में पहुंचा जिसका फ़र्श शीशे जैसा चमक रहा था। मज़दूरों ने इस प्रभाव को लाने के लिए नारियल के जले हुए खोपरों, मखराला मिट्टी, चूने और रेत के मिश्रण का प्रयोग किया था। फ़र्श अलंकृत नक़्क़ाशीदार छत की छवियों को प्रतिबिंबित कर रहा था जिस पर नब्बे प्रकार के फूल दर्शाए गए थे।

जयंतन महाराज के आवास, उप्परिका मालिका, में आ गया था। ये भवन-समूह के मध्य में बना चार मंज़िला भवन था, इसमें राजा का कोषागार, उनके शयनकक्ष, अध्ययन कक्ष और पूजागृह थे। यद्यपि लकड़ी की पट्टियां बंद थीं जिनसे तापमान को नियंत्रित करने के लिए ठंडी हवा आती थी, मगर ये स्पष्ट था कि बाहर अभी भी अंधेरा था और कि पद्मनाभपुरम महल के आवासी अभी तक सोए हुए थे—सबसे महत्वपूर्ण के अलावा।

अपने महल के अध्ययन कक्ष में राजा मार्तंड वर्मा अभी भी कार्यरत थे। खंभों पर लगे तेल के दीपक अलंकृत कक्ष को प्रकाशित कर रहे थे। मगर महाराज युद्ध से क्लांत दिख रहे थे। क्या डचों को पराजित करने वाला इतिहास का एकमात्र भारतीय शासक होने का कोई मोल भी था?

जयंतन ने प्रणाम किया तो राजा ने उसे देखा। "आपको देखकर प्रसन्नता हुई, जयंतन," राजा ने कहा। "मैंने आपको यहां इसलिए बुलाया है क्योंकि मुझे एक महत्वपूर्ण विचार पर आपसे चर्चा करनी है।" जयंतन महाराज द्वारा पेश की गई कुर्सी पर बैठ गया।

"जैसा कि आप जानते हैं, हमारा त्रावणकोर राज्य मातृवंशीय उत्तराधिकार की परंपरा से बंधा हुआ है," राजा ने कहना शुरू किया। "मेरी मृत्यु पर, मेरे अपने सबसे बड़े पुत्र की जगह मेरी सबसे बड़ी बहन का पुत्र मेरा उत्तराधिकारी होगा।" जयंतन ने सिर हिलाकर हामी भरी।

"इस प्रणाली में समस्या ये है कि इससे दो प्रतिद्वंद्वी गुट बन जाते हैं—पुत्र और भानजे। इससे मुझे चिंता होती है कि आने वाले वर्षों में सिंहासन के लिए संघर्ष सारे राज्य में अव्यवस्था फैला सकता है।"

"महाराज," जयंतन ने कहा, "आपके उत्तम प्रशासन में नई सड़कें और सराय, नई सैनिक चौकियां, आंतरिक जल परिवहन प्रणाली, सिंचाई के लिए नई नहरें और जल भंडारण के लिए नए बांध बने हैं। राज्य इस समय सबसे अधिक सशक्त स्थिति में है। आप इतनी ता क्यों करते हैं?"

महाराज मुस्कुराए। "जब मेरी मृत्यु होगी, तो मेरे भानजे कार्तिक तिरुमल राम वर्मा मेरे उत्तराधिकारी होंगे। मैं नहीं चाहता कि वो या भविष्य में कोई भी राजा इस राज्य

का उत्तराधिकारी हो," उन्होंने कहा।

"मैं समझ नहीं पा रहा हूं," जयंतन ने स्वीकार किया।

"मैंने त्रावणकोर राज्य को राजपरिवार के कुलदेवता श्री पद्मनाभस्वामी को समर्पित करने का निर्णय लिया है। इस राज्य का सब कुछ देवता की संपत्ति होगा।"

"किंतु किसी को तो राज्य का संचालन करना होगा," चकराए हुए जयंतन ने कहा।

"मैं—और मेरे बाद मेरे उत्तराधिकारी—राज्य का संचालन करते रहेंगे, किंतु सेवक के रूप में। हम राजा नहीं कहलाएंगे। हम पद्मनाभदास होंगे।"

"आप मुझसे क्या चाहते हैं?" जयंतन ने पूछा।

"हमें ये सुनिश्चित करना होगा कि श्री पद्मनाभस्वामी की संपत्ति इतनी विशाल और प्रचुर हो कि इस राज्य की भावी पीढ़ियों को कभी चिंता न करनी पड़े। फिर वे पूरे मन से स्वयं को प्रभु और प्रजा की सेवा में अर्पित कर सकेंगे। और इसे कोई सुनिश्चित कर सकता है तो वो केवल आप हैं।"

जयंतन ने इस जानकारी को आत्मसात किया, जबकि महाराज ने कहना जारी रखा।

"स्वर्ण को अग्नि द्वारा परखा जाता है और लोगों को ईश्वर परखता है," राजा ने कहा। "आप अग्नि को संभाल लें तो मैं ईश्वर की सेवा कर लूंगा।"

पुस्तक छह
2000–2010

वो भगवा अंगवस्त्रम् लपेटे, ललाट पर सिंदूर का तिलक लगाए, गले में मोटे मनकों की माला डाले और दाएं हाथ में एक दंड लिए अरबाज़ के ऑफ़िस पहुंचे। राजू उन्हें अंदर लेकर आया तो अरबाज़ अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ।

रुद्रगुरु सोफ़े पर बैठे, उन्होंने अपने स्लिपर उतारे और अपनी चमकदार पीली लुंगी को ठीक करने के बाद पांव ऊपर कर पालथी मारकर बैठ गए। अरबाज़ ने हाथ जोड़कर नमस्ते की और रुद्रगुरु ने आशीर्वाद दिया।

तांत्रिक गुरु की शोहरत उनसे पहले पहुंच गई थी। उन्होंने सबसे पहले अपनी अविश्वसनीय भविष्यवाणियों से शोहरत पाई थी। तब तो वो और भी ज़्यादा मशहूर हो गए जब वो प्रधानमंत्रियों, राष्ट्रपतियों, राजाओं और रानियों से मिले और उनके बारे में भविष्यवाणियां कीं।

“मैं ये जानने को उत्सुक था कि आप मुझसे क्यों मिलना चाहते हैं,” अरबाज़ ने कहा, वो अभी तक खड़ा ही था।

“अब और हैरान न हो,” रुद्रगुरु ने गंभीरता से कहा। “रुद्रगुरु सब उजागर कर देगा।”

अरबाज़ सोफ़े के सामने रखी कुर्सी पर बैठ गया। “आपके लिए कुछ लाऊं? चाय, कॉफ़ी, पानी?”

स्वामी ने एक गिलास पानी मंगवाया जिसमें रंगहीन पाउडर का एक छोटा सा सैशे उड़ेला। तुरंत ही वो सुर्ख़ लाल हो गया। उन्होंने उसे पी लिया और फिर अपने कंधों पर पड़े सूती अंगवस्त्रम् से अपना मुंह पोंछ लिया।

“रुद्रगुरु केवल आध्यात्मिक गुरु नहीं है, वो अपने शुभचिंतकों का मित्र भी है,” उन्होंने अन्य पुरुष में अपने बारे में बोलते हुए कहा।

अरबाज़ सब्र से इंतज़ार करता रहा।

“रुद्रगुरु के शुभचिंतकों में एक पोलैंड के व्यापारी लैशेक कूलज़िक हैं। वो अरबपति हैं जिनका व्यापार तेल, शिपिंग, निर्माण, परिवहन और अस्त्रों में है। वो अपने रक्षा सौदों के लिए भारत में तुझे अपना एजेंट बनाना चाहते हैं।”

“मुझे ही क्यों?” अरबाज़ ने पूछा।

“क्योंकि रुद्रगुरु ने तेरा नाम सुझाया था,” तांत्रिक ने कहा। “रुद्रगुरु हाल ही में अमेरिका में तेरे सहयोगी यश धर से मिला था और तूने जो कुछ हासिल किया है, उससे रुद्रगुरु बहुत प्रभावित हुआ।”

“झोल क्या है?” अरबाज़ ने पूछा।

“कोई झोल नहीं है,” रुद्रगुरु ने कहा। “रुद्रगुरु अपने मित्रों की सहायता करता है। उसके मित्र उसकी सहायता करते हैं। रुद्रगुरु बस तेरी मित्रता चाहता है।”

“और उस मित्रता की क्या क़ीमत है?” अरबाज़ ने मुस्कुराते हुए पूछा।

“दस प्रतिशत,” रुद्रगुरु ने कहा।



एकता कपूर के धारावाहिक क्योंकि सास भी कभी बहू थी ने लाखों गृहिणियों को बुद्धू बक्से से जोड़ दिया था। जब अरविंद अंदर आया तो अभिलाषा उसकी लेटेस्ट कड़ी देख रही थी। “तुम इस बकवास को कैसे बर्दाश्त कर लेती हो?” उसने चंचलता से पूछा।

“क्या मैंने कभी तुमसे कौन बनेगा करोड़पति देखने के बारे में पूछा है?” अभिलाषा ने मुस्कुराते हुए पूछा। हू वांट्स टू बी ए मिलियनेयर के भारतीय संस्करण कौन बनेगा करोड़पति में प्रस्तोता के रूप में अमिताभ बच्चन को लिया गया था जिसने इसमें चार चांद लगा दिए थे। अरविंद जो शायद ही टेलीविज़न देखता हो, इस पर लट्टू हो गया था।

“कम से कम वो सामान्य ज्ञान के बारे में तो है,” अरविंद ने तर्क दिया।

“आइंस्टीन ने कहा था कि कल्पना ज्ञान से ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है,” अभिलाषा ने कहा। “तुम ज्ञान के बारे में अपना कार्यक्रम देखो। मैं कल्पना से जुड़ा अपना कार्यक्रम देखूंगी।”

अरविंद व्हिस्की का पैग बनाने के लिए बार कैबिनेट की ओर चला गया, तभी उसका मोबाइल फ़ोन बज उठा। उसने फ़ोन उठाया।

“जी, सरदार हरपाल जी,” उसने नरमी से कहा। फिर ख़ामोशी रही।

“जी, मैं गोपनीयता की ज़रूरत समझता हूं,” अरविंद ने कहा। “निश्चय ही, मैं बृहस्पतिवार को दिल्ली की फ़्लाइट ले रहा हूं।”

चेहरे पर मुस्कुराहट लिए वो अभिलाषा की ओर मुड़ा।

“क्या हुआ?” उसने पूछा।

“सरदार हरपाल सिंह थे, बड़े उद्योगपति जो अब सरकार के आर्थिक सलाहकार हैं,” उसने कहा।

“वो क्या चाहते थे?” अभिलाषा ने पूछा।

“बीजेपी-एनडीए की सरकार एक आर्थिक विचार मंच बना रही है जो सरकार को सलाह देगा कि भारत की अर्थव्यवस्था को कैसे उदार बनाया जाए,” अरविंद ने कहा। “वो चाहते हैं कि मैं चेयरमैन बनूं।”



शिव सेना का केशव गाडगिल बारीक सी मूंछों वाला पतला-दुबला आदमी था। उसका वायरफ्रेम वाला चश्मा उसके दुर्बल शरीर के अनुरूप था। अपनी एसिडिटी से निबटने के लिए उसने एक गिलास लस्सी का ऑर्डर दिया था। वो अरबाज़ के साथ मैरीन

प्लाज़ा होटल के एक कमरे में था। दोनों व्यक्ति अलग-अलग होटल में आए थे और पांच मिनट के अंतराल से कमरे में पहुंचे थे। अरबाज़ ने ग्रीन टी के लिए कहा था। रूम सर्विस के वेटर ने उन्हें उनका ऑर्डर पेश किया और ख़ामोशी से चला गया।

अरबाज़ को अपने गुरु अब्दुल दादा की बात याद आई। राजनीति रंगमंच की तरह है। हरेक नेता उसे दी गई पंक्तियों के मुताबिक़ अपना रोल अदा करता है। लेकिन परदे के पीछे हीरो और विलेन साथ बैठकर अपनी ड्रिंक का मज़ा लेते हैं।

बात जब पैसे की आती है तो सबका मज़हब एक होता है।

"विपक्ष में होना कैसा लग रहा है?" गाडगिल ने पूछा।

"सवाल तो वही हैं," अरबाज़ ने कहा। "बस पूछनेवाले अब हम हैं।"

"और सरकार को उनका जवाब देने से बचने के तरीक़े तलाशने हैं," गाडगिल ने कहा। दोनों आदमी हंस पड़े।

"एक बात तो मैं कहूंगा कि इस प्रधानमंत्री में सूझबूझ तो है," गाडगिल ने कहा। "उम्मीद करूंगा कि वाजपेयी अपना कार्यकाल पूरा कर पाएंगे।"

"तुम्हें इसमें शक है?" अरबाज़ ने पूछा।

"कौन जानता है?" गाडगिल ने कहा। "वो तेरह दिन रहे, फिर तेरह महीने। उनके साथ अठारह गठबंधन सहयोगी जुड़े हैं। कहना मुश्किल है... अक्सर पाशविक प्रवृत्तियां जीत जाती हैं।"

"ये तो मैं भी मानता हूं," अरबाज़ ने कहा। "एक दिन पहले ही मैं संसद में था और मैंने पाशविक प्रवृत्तियों को काम में जुटे देखा था।"

गाडगिल दिल खोलकर हंसा। फिर वो गंभीर हो गया। "तुम्हें क्यों लगता है कि मैं मदद कर सकता हूं?" केशव गाडगिल ने पूछा।

"क्योंकि संसद में तुम्हारी पार्टी की छह सीटें हैं," अरबाज़ ने कहा। "अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार को सत्ता में बने रहने के लिए गठबंधन की हर सीट चाहिए।"

"तुम असल में चाहते क्या हो?" गाडगिल ने पूछा।

"असल में बहुत सादा सी बात है," अरबाज़ ने कहा। "सेनाएं जल्दी ही सर्व-क्षेत्रीय ट्रक ख़रीदने वाली हैं। पूरा ब्योरा रक्षा मंत्रालय तय करेगा। मैं तो बस ये चाहता हूं कि तुम रक्षा सचिव से मेरी मुलाक़ात का इंतज़ाम करवा दो।"

"इसमें शिव सेना का क्या फ़ायदा है?" गाडगिल ने पूछा।

"हमेशा के लिए कृतज्ञता," अरबाज़ ने कहा।

"तुम ये मुलाक़ात किसलिए चाहते हो?" गाडगिल ने पूछा।

"अपने सवाल पर सावधानी से सोचो, केशव," अरबाज़ ने कहा। "क्या तुम वाक़ई जानना चाहोगे? कभी-कभी क्या न जानना बेहतर नहीं होता? कभी वो जासूसी फ़िल्में देखी हैं जिनमें हीरो को थर्ड डिग्री देकर पूछताछ की जाती है?"

“आतंकवादियों द्वारा?” गाडगिल ने पूछा।

“एनडीटीवी के अर्नब गोस्वामी द्वारा ज़्यादा,” अरबाज़ ने मज़ाक़ किया।



आख़िरकार सारी सुरक्षा क़वायद निबटने पर राहत पाकर, अरविंद कलकत्ता-दिल्ली सैक्टर की फ़्लाइट में अपनी बिज़नेस क्लास सीट पर बैठ गया। सुरक्षा जांच में घंटों लग गए थे।

बस दो हफ़्ते पहले ही, काठमांडू से दिल्ली आ रही फ़्लाइट आईसी-814 को पाकिस्तान स्थित इस्लामिक उग्रवादी संगठन हरकत-उल-मुजाहिदीन ने हाईजैक कर लिया था। अमृतसर, लाहौर और दुबई में रुकते हुए अपहर्ता आख़िरकार विमान को बलपूर्वक तालिबानी नियंत्रण वाले कांधार ले गए। ये संकट सात दिन चला और तभी टला जब भारत तीन ख़तरनाक उग्रवादियों को रिहा करने के लिए तैयार हो गया। उस हाइजैकिंग के बाद से सभी भारतीय हवाईअड्डों पर सुरक्षा प्रक्रियाएं बेहद सख़्त हो गई थीं।

अरविंद ने अपने नरम लैदर के ब्रीफ़केस से एक फ़ोल्डर निकाला। उसे खोलकर उसने वो अधिसूचना निकाली जिसे प्रधानमंत्री के ऑफ़िस ने जारी किया था।

सं. *260/31/*सी*/25/2000-*ई एवं एस *1*

भारत सरकार

प्रधानमंत्री कार्यालय

नई दिल्ली

16 जनवरी *2000*

अधिसूचना

विषय*:* व्यापार एवं उद्योग समिति की नियुक्ति

सरकार ने प्रधानमंत्री के लिए व्यापार एवं उद्योग समिति का निर्माण करने का निर्णय लिया है जिसकी संरचना इस प्रकार होगी*:*

सदस्य*:* श्री अरविंद बागड़िया, श्री रतन टाटा, श्री मुकेश अंबानी, श्री कुमार मंगलम बिरला, श्री अज़ीम प्रेमजी, श्री नुस्ली वाडिया, श्री राहुल बजाज, श्री शशि रुइया।

श्री अरविंद बागड़िया अध्यक्ष होंगे।

प्रधानमंत्री के आर्थिक परामर्शदाता पदेन सदस्य होंगे। वर्तमान में, इस पद पर सरदार हरपाल सिंह आसीन हैं।

व्यापार एवं उद्योग समिति प्रधानमंत्री एवं समिति के सदस्यों के बीच व्यापार एवं उद्योगों से जुड़े महत्वपूर्ण आर्थिक मसलों पर नीतिगत संवाद का अवसर प्रदान करेगी।

अपने किसी भी सत्र में विशेष अतिथि(यों) के रूप में भाग लेने के लिए समिति ऐसे व्यक्ति(यों) को सहयोजित या आमंत्रित कर सकती है जिन्हें वह उचित समझेगी।

सामान्यत: समिति दो महीने में एक बार सभा करेगी।

समिति को कैबिनेट सचिवालय के ज्ञापन संख्या *105/1/1/75* सीएफ़, दिनांक *20.11.75* के अनुसार उच्च स्तरीय आयोगों/समितियों की परिभाषा/स्पष्टीकरण के भीतर कवर किया जाएगा।

संयुक्त सचिव से लेकर प्रधानमंत्री

सूचनार्थ प्रति:

कैबिनेट सचिव

सचिव, योजना आयोग

वित्त सचिव

अरविंद ने इस बारे में सोचा। समितियों ने कभी कुछ नहीं किया। किसी ने टिप्पणी की थी कि समिति आमतौर पर अनावश्यक काम करने के लिए अयोग्यों में से चुने अनिच्छुकों का संगठन होता है। मगर ये मामला भिन्न था। ये देश के लिए कुछ सार्थक करने का मौक़ा था।

अरविंद मन ही मन मुस्कुराया। वो लड़का जिसने लोगों को धोखा देने से शुरुआत की थी अब एक सम्मानित बिज़नेसमैन बन गया था जो अब प्रधानमंत्री की व्यापार एवं उद्योग समिति की अध्यक्षता करेगा।

उसकी भंगिमा गंभीर हो गई। कभी-कभी वो खुद को धोखेबाज़ जैसा महसूस करता था। जैसे वो किसी सम्मानित व्यक्ति का बहुरूप धर रहा हो। फिर उसे एक लाइन याद आती जो उसने ऑनोरे दे बाल्जैक की एक किताब में पढ़ी थी। हर दौलत के पीछे जुर्म का हाथ होता है।

अमीर सम्मानीय व्यक्ति कोई नहीं होता।



रक्षा सचिव ने उस काग़ज़ को देखा जो अरबाज़ ने उसे थमाया था। उस पर कुछ विनिर्देश लिखे हुए थे।

8×8 हाई-मोबिलिटी हैवी-ड्यूटी यूनिवर्सल के लिए विनिर्देश

माल/सैनिक वाहन

सस्पैंशन: स्वतंत्र

पेलोड: 21,200 किग्रा

ड्राइव: 8×8

पॉवर: 300 केडब्ल्यु

इंजन: 2,200 एनएम/1,000 एमएम

वाहन का सकल भार (अधिकतम): 37,000 किग्रा

पेलोड: 21,000 किग्रा

उच्चतम गति: 110 किमी/घंटा

सुपरस्ट्रक्चर: तिरपाल के साथ मालवाहक बॉडी, 24 सैनिकों के लिए फ़ोल्डेबल बेंचें।

“ये विनिर्देश तो बिल्कुल वैसे ही हैं जैसे पहले से हमारे पास हैं,” सचिव ने कहा। “हम इन्हें क्यों बदलना चाहेंगे?”

“क्योंकि ज़िंदगी में बदलाव ही एकमात्र स्थिरता है,” अरबाज़ ने कहा और इसी के साथ सचिव को एक पर्ची थमा दी जिस पर एक स्विस अकाउंट का नंबर लिखा था।



मैनहटन शहर में ईस्ट 56वीं स्ट्रीट के कोने में 725 फ़िफ़्थ एवेन्यु पर स्थित ट्रंप टॉवर में बने ऑफ़िस को पेस्टल रंगों में सुरुचिपूर्ण ढंग से सजाया गया था। पीसीएम-ब्रेड इंश्योरेंस का न्यूयॉर्क ऑफ़िस इस साल के शुरू में, हार्वर्ड बिज़नेस स्कूल से विनय के एमबीए पूरा करने पर स्थापित किया गया था।

स्टैनफ़ोर्ड से अपना बैचलर कोर्स पूरा करने के बाद विनय ने दो साल मैककिन्सी एंड कंपनी में काम किया था। उसने क्लायंट-सर्विस टीम के भाग के रूप में बिज़नेस विश्लेषक के तौर पर इस कंसल्टिंग फ़र्म को जॉइन किया था।

“भारत में तकनीकी-जानकारी की अहमियत कम है,” अरविंद ने अपने बेटे को सलाह दी थी। “यहां तो व्यक्ति की जानकारी ज़्यादा काम की है। तुम अमेरिका में इतना समय क्यों ख़राब कर रहे हो? वापस आ जाओ।”

विनय अपने पिता को कैसे बताता कि वो अलीशा नाम की एक बहुत प्यारी लड़की के साथ रह रहा है जिसके पिता कोई अरबाज़ शेख़ हैं? कहर बरपा हो जाता। विनय ने अपरिहार्य को टालने के तरीक़े निकाले, साथ ही उन कारणों पर भी सोचता रहा जो अरक्षणीय को बचाने में मदद कर सकें।

मैककिन्सी की नौकरी के लिए एप्लाई करते वक़्त उसने कहा था, “मुझे हॉर्वर्ड में जाने के लिए क्रॉस-सैक्टोरल अनुभव चाहिए।”

हॉर्वर्ड में एमबीए के लिए एप्लाई करते वक़्त उसने कहा, “मुझे ग्लोबल स्वीकार्यता चाहिए, और हॉर्वर्ड का एमबीए यही देता है।”

उसके बाद, उसके बहाने ख़त्म हो गए।

फिर नौजवान ने एक और योजना बनाई। उसने राय दी कि ब्रेड को न्यूयॉर्क में ऑफ़िस खोल लेना चाहिए और वो उसे चलाएगा। इससे वो अरविंद के बिज़नेस

साम्राज्य का हिस्सा भी बन सकेगा, साथ ही ग्लोबल दृष्टिकोण हासिल करना भी जारी रख पाएगा।

उसके पिता संतुष्ट नहीं हो पाए।

विनय ने हॉर्वर्ड की सभी दस एकेडेमिक यूनिटों में अच्छा प्रदर्शन किया था। इनमें अकाउंटिंग, फ़ाइनेंस, मार्केटिंग, ऑर्गेनाइज़ेशनल बिहेवियर, जनरल मैनेजमेंट, ऑपरेशंस मैनेजमेंट, इंटरनेशनल इकोनॉमी, आंट्रप्रनरियल मैनेजमेंट, नैगोशिएशन एंड स्ट्रेटेजी थे। मगर उसने सबसे अच्छा प्रदर्शन किया था अकाउंटिंग में, वो विषय जो मारवाड़ियों को माएं घुट्टी में पिलाती हैं।

वो अपने अकाउंटिंग के प्रोफ़ेसर के पास गया, साठ साल के पोल्का डॉट की बो-टाई पहनने वाले जीनियस जो उसे बहुत मानते थे, और उन्हें अपनी मुश्किल बताई। उसके प्रोफ़ेसर ने दिन भर इस बारे में सोचा और फिर विनय को बुलाया।

"यहां यूनाइटेड स्टेट्स में एक बीमा कंपनी है जिसका नाम प्राइम म्युचुअल कॉन्सोलिडेटेड, या पीएमसी है," उन्होंने कहा। "मैं उनके लिए परामर्श का काफ़ी काम करता हूं। सीईओ मेरा एक पुराना छात्र है।"

विनय समझ नहीं पा रहा था कि इस बातचीत का रुख़ किधर को जाएगा।

"भारतीय व्यापार एवं उद्योग समिति ने इस साल निजी कंपनियों के लिए बीमा क्षेत्र को खोल दिया है और 26 प्रतिशत विदेशी शेयर की भी अनुमति दे दी है," उसके प्रोफ़ेसर ने कहा। "उन्हें तुम्हारे परिवार के साथ बीमा उपक्रम स्थापित करने में साझेदारी करके खुशी होगी, बशर्ते तुम इस डील को पूरा करने के लिए न्यूयॉर्क में ही रहो।"

विनय ने अपने पिता से बात की। इस बार अरविंद मान गया।

"मेरे मित्र सरदार हरपाल सिंह से बात करो," अरविंद ने विनय से कहा। "वो पीएम के आर्थिक सलाहकार हैं। सारी क्लीयरेंस दिलवाने में वो तुम्हारी मदद कर देंगे।"

दो महीने बाद डील फ़ाइनल हो गई।

क्लीयरेंस में मदद करने के लिए सरदार हरपाल सिंह को इस बात ने लुभाया था कि इससे बीमा क्षेत्र में सुधारों को बल मिलेगा जिन्हें सरकार ने आरंभ किया था।

अरविंद को इस बात ने लुभाया था कि विनय को हर महीने एक हफ़्ते के लिए कलकत्ता—हाल में नाम बदलने के बाद कोलकाता-आना होगा।

विनय को इस बात ने लुभाया था कि वो हर महीने बचे तीन हफ़्ते तो न्यूयॉर्क में अलीशा के साथ बिता पाएगा।

ये महज़ दोहरी जीत नहीं थी। ये चहुं ओर जीत थी।



बिल और हिलेरी क्लिंटन के सम्मान में आयोजित राजकीय भोज में प्रधानमंत्री के मेहमानों की सूची केवल 150 नाम तक सीमित थी। इसमें शामिल होने के लिए बड़ी धकापेल थी। बहुत से शक्तिशाली लोग शक्तिशाली होने के बावजूद इस सूची में जगह नहीं पा सके थे। शामिल न किए जाने से वो नाराज़ थे। अरबाज़ भी उनमें से था।

अरविंद अभिलाषा के साथ डिनर में गया था। जब अरविंद को औपचारिक रूप से भारत के तेज़ी से बढ़ते बिज़नेस समूहों में से एक के चेयरमैन के रूप में बिल क्लिंटन से मिलवाया गया तो अमेरिकी राष्ट्रपति ने गर्मजोशी से हाथ मिलाया और कहा, "मुझे उम्मीद है कि भारत और अमेरिका के कारोबारी हित एक स्थायी शांति का समझौता कर सकेंगे।"

"शांति दोस्तों के साथ क़ायम नहीं की जाती, मि. प्रेज़ीडेंट,"अरविंद ने जवाब दिया। "और समझौते तो केवल दुश्मनों के साथ किए जाते हैं। अमेरिका तो हमारा दोस्त है।"

एक दिन बाद, 22 मार्च 2000 को प्रेज़ीडेंट क्लिंटन ने संसद के दोनों सदनों के संयुक्त सत्र को संबोधित किया।

"मि. वाइस प्रेज़ीडेंट, मि. प्राइम मिनिस्टर, मि. स्पीकर, लोकसभा और राज्य सभा के सदस्यों, ये मेरा सौभाग्य है कि मैं आपसे, और आपके माध्यम से, भारत के लोगों से मुखातिब हूं। मैं अनुग्रहीत हूं कि आज मेरे साथ मेरी कैबिनेट और व्हाइट हाउस के मेरे स्टाफ़ के सदस्य, और हमारी यूनाइटेड स्टेट्स कांग्रेस के दोनों राजनीतिक दलों के सदस्यों का बहुत बड़ा प्रतिनिधित्व मौजूद है। हम यहां आकर अनुग्रहीत हुए हैं और आपके गर्मजोशी भरे स्वागत के लिए आपके आभारी हैं," क्लिंटन ने कहना शुरू किया।

सांसदों ने तालियां बजाईं। फिर क्लिंटन भारत-पाकिस्तान के संबंधों के मुद्दे पर आ गए।

"पाकिस्तान जो मार्ग अपना रहा है, उसके विषय में आपकी सरकार की अनेक चिंताओं में मैं शरीक हूं; आपकी निराशा कि पिछले प्रयासों में हमेशा सफलता हासिल नहीं हुई; हाल की हिंसा पर आपकी नाराज़गी। लेकिन मेरा ये भी विश्वास है कि भारत के पास, एक लोकतंत्र के रूप में, अपने पड़ोसियों को ये दिखाने का विशेष अवसर है कि लोकतंत्र का अर्थ संवाद है। इसका अर्थ मित्रता ही नहीं है, बल्कि उन लोगों के बीच क्रियाशील संबंध बनाना है जो असहमत होते हैं। एक सबसे बुद्धिमानी की बात जो मुझसे किसी ने कभी भी कही है वो ये कि आप मित्रों के बीच शांति क़ायम नहीं करते हैं।"



प्रधानमंत्री के कार्यालय 7 रेसकोर्स रोड पर व्यापार और उद्योग समिति की मीटिंग हुई। सरदार हरपाल सिंह और अरविंद दोनों राष्ट्रपति भवन के सामने वाले मेन गेट से दाख़िल हुए और शानदार ज़ीने की ओर बढ़ गए। चलते हुए वो बातें भी कर रहे थे।

“मेरे ध्यान में एक बात आई है जिसमें आपको दख़ल देना चाहिए,” अरविंद ने कहा।

“क्या?” हरपाल ने पूछा।

“प्रधानमंत्री देश में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए उत्सुक हैं, मगर मेरे पास ऐसे उदाहरण हैं जहां घरेलू उत्पादकों को बर्बाद करने की कोशिशें की जा रही हैं,” अरविंद ने कहा।

“उम्मीद है आप अपने दावे की पुष्टि भी कर सकेंगे,” हरपाल ने कहा।

अरविंद ने हरपाल को एक ए4 साइज़ का पेपर पकड़ाया।

“ये उन विनिर्देशों का सैट है जो रक्षा मंत्रालय ने नए सर्व-क्षेत्रीय ट्रकों के लिए छपवाया था जिनके लिए सेना जल्दी ही ऑर्डर देने वाली है। निविदा देने की प्रक्रिया दो हफ़्ते में शुरू होगी।”

हरपाल ने काग़ज़ को पढ़ा। “ये तो काफ़ी स्पष्ट दिखाई देता है। समस्या क्या है?”

“सेना नियमित रूप से कर्नाटक की एक भारतीय कंपनी को अपने ऑर्डर देती आई है,” अरविंद ने कहा। “ये ट्रक आदर्श तौर पर भारतीय परिस्थितियों को सूट करते हैं। नए विनिर्देश इस तरह से लिखे गए हैं जो उन्हें निविदा देने से रोकता है।”

“क्या मतलब है आपका?”

“वर्तमान में सेना द्वारा प्रयोग किए जा रहे ट्रकों का पेलोड 21,100 किग्रा है,” अरविंद ने कहा। “अब विनिर्देश 21,200 किग्रा आवश्यक कहते हैं।”

“ये तो साधारण दफ़्तरी ग़लती हो सकती है,” हरपाल ने कहा।

“वर्तमान इंजन 2,100 एनएम/1000 आरपीएम प्रदान करते हैं। अब विनिर्देश 2,200 एनएम/1,000 आरपीएम मांगते हैं,” अरविंद ने कहा।

“हम्म।”

“वर्तमान व्हीलबेस 1,950-2,860-1,450 है। विनिर्देश अब 1,955-2,865-1,455 की मांग करते हैं,” अरविंद ने कहा। “ये मुख्य खिलाड़ी को बाहर करने की सोची-समझी कोशिश है ताकि कोई और अंदर आ सके। आपको दख़ल देना चाहिए।”



अरबाज़ की मेज़ पर एक अख़बार था जिसमें कहा गया था कि बरेली की एक अठारह वर्षीय युवती ने मिस वर्ल्ड 2000 की उपाधि जीती है। उसका नाम प्रियंका चोपड़ा-या ऐसा ही कुछ था।

लेकिन अरबाज़ हारा हुआ महसूस कर रहा था। “उस हरामज़ादे बागड़िया ने मेरी डील को बर्बाद कर दिया,” अरबाज़ ने मुरली से कहा।

मुरली शांत रहा। आख़िर तुमने भी तो डॉटकॉम डील में उसे धोखादिया था, मुरली ने मन ही मन सोचा। तुम्हें उससे अमर प्रेम की अपेक्षा क्यों हो?

“मुझे इसे ठीक करना होगा,” अरबाज़ ने फ़ोन उठाते हुए कहा। उसने दिल्ली का एक नंबर मिलाया।

“क्या मैं सरदार हरपाल सिंह जी से बात कर सकता हूं?” उसने पूछा।



“मुझे मानना होगा कि उन तकनीकी विनिर्देशों को मूल रूप में वापस बदलवाने के लिए मैंने रक्षा सचिव को नरमी से कोंचा था,” सरदार हरपाल सिंह ने कहा। “मुझे पता नहीं था कि तुम इसमें दिलचस्पी ले रहे थे, अरबाज़।”

“कोई संभावना कि आप अपने निर्देशों को रद्द कर सकें?” अरबाज़ ने पूछा।

“ये तो बहुत ही ग़लत होगा, बेटे,” हरपाल ने कहा। “वैसे भी, मुझे यक़ीन है तुम भी ये मानोगे कि हमें उन उपकरणों पर कोई समझौता नहीं करना चाहिए जिन्हें हमारे जवान इस्तेमाल करते हैं।”

“ओह, बिल्कुल,” अरबाज़ ने कहा। यहां मुंबई में तुम्हारे नाजायज़ क़ब्ज़ेदारों को भगाने में मैंने तुम्हारी मदद की थी, और इस तरह करोड़ों की संपत्ति पर तुम्हें हक़ मिल गया था, बदला कहां हैं?

“मुझे यक़ीन है तुम सोच रहे होगे कि बदले का क्या हुआ,” हरपाल ने कहा।

“ये तो मेरे दिमाग़ में भी नहीं आया था,” अरबाज़ ने झूठ बोला।

“मैंने आपके लिए जो किया उसका ट्रकों के इस ऑर्डर से कोई वास्ता नहीं है।”

“मुझे बहुत बुरा लग रहा है कि मेरे दख़ल देने से तुम्हें नुक़सान हो गया, अरबाज़,” सरदार हरपाल सिंह ने कहा। “अगली बार जब तुम दिल्ली आओ तो मुझसे मिलना। मैं तुम्हें एक छोटा सा प्रस्ताव दूंगा जो इसकी भरपाई कर देगा।”



2001 का कुंभ मेला कोई साधारण कुंभ मेला नहीं था। कुंभ हर बारह साल बाद इलाहाबाद में होता है, लेकिन ये केवल हमेशा वाले 12 साल के चक्र का आख़री ही नहीं था, ये बारह चक्रों में भी आख़री था—144 साल के चक्र का समापन, इस तरह ये महाकुंभ मेला बन गया था।

उन चौवालीस दिनों में कुंभ में आने वाला एक व्यक्ति विनय था। स्टैनफ़ोर्ड से विनय के दोस्त कर्मा त्शेरिंग ने भी साथ आने का फ़ैसला किया था। कर्मा अब येल स्कूल ऑफ़ मैडिसन से आल्टरनेटिव मैडिसन में पीएचडी कर रहा था। साथ ही, उसने एक कंपनी अनयसार रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड भी स्थापित कर ली थी। इसका फ़ोकस पूरी तरह उपचारात्मक और दीर्घायु रिसर्च पर था।

विनय और कर्मा इलाहाबाद पहुंचे तो विनय का मूड अच्छा हो गया। “कहते हैं गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर स्नान करने से शरीर और आत्मा शुद्ध

होते हैं और आपको अपने कर्मों से मुक्ति मिल जाती है। लेकिन मैं तो अपने साथ अपने कर्मा को लाया हूं!" उसने चुटकी ली।

कुंभ मेला उस कुंभ या पात्र का उत्सव होता है जिससे अमृत पाया जा सकता था। स्नान के सबसे शुभ दिनों पर आने वाले लाखों तीर्थयात्रियों को ठहराने के लिए एक विशाल अस्थायी शहर बसा दिया गया था। ये एक विशाल योगी समागम जैसा था, जिसमें दुनिया भर से आए योगी, साधु, तीर्थयात्री और पर्यटक एकत्र होते हैं। उनमें से अनेक तो सुदूर जंगलों और हिमालय की कंदराओं से आते थे। उनमें सबसे ज़्यादा प्रभावशाली नागा बाबा होते थे, जो अपनी सारी ज़िंदगी नग्नावस्था में रहते थे। वो अपने बदन पर केवल पवित्र भस्म मलते थे और बालों को मोटी-मोटी जटाओं में रखते थे—बॉब मार्ली की तरह। मुख्य स्नान का दिन—शाही स्नान—24 जनवरी को था। उस दिन मौनी अमावस्या थी। उस दिन डेढ़ करोड़ लोग स्नान करने वाले थे।

उस दिन सबसे पहले स्नान करने वाले कुछ लोगों में महाशिव बाबा, उनके बाद अध्यापिका ज्योति थीं। जब वो अपने शिविर में जा रही थीं तब विनय ने दूर से ही उन्हें देख लिया था। अब वो महाशिव बाबा के सामने ज़मीन पर बैठी थीं, उस व्यक्ति को देखकर लगता था जैसे उसने अपनी ज़्यादातर ज़िंदगी किसी जिम में बिताई हो। उन्हें शिष्यों ने घेर रखा था। जब विनय ने शिविर में झांका तो अध्यापिका ज्योति ने तुरंत उसे पहचान लिया और अंदर बुला लिया।

"तुम्हारे पिता कैसे हैं?" स्नेह से विनय के सिर को थपथपाते हुए अध्यापिका ज्योति ने पूछा।

"अमेरिका में ही रहने के बहाने ढूंढ़ने के लिए वो मुझसे नाराज़ थे," विनय ने कहा।

"अपने प्यार और स्नेह को उनकी ओर प्रवाहित होते रहने देना, बेटे," उन्होंने कहा। "शक्तिशाली पहाड़ भी बहती हुई नदी की चोटों को नहीं सह पाते हैं।"

अध्यापिका ज्योति ने उसे महाशिव बाबा से मिलवाया। "ये महाशिव बाबा हैं," उन्होंने अपने शिविर में मौजूद बलिष्ठ व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा। "ये मेरे गुरु हैं।"

विनय ने पवित्रात्मा के पैर छुए। "जब तुम छोटे थे तब मैंने तुम्हें आशीर्वाद दिया था," महाशिव बाबा ने कहा, उनका उभरा हुआ जबड़ा मुस्कुराहट में फैल गया। "तुम्हारे माता-पिता कुरुक्षेत्र शिविर में तुम्हें लाए थे।"

इस आदमी की याददाश्त इतनी धारदार कैसे है? विनय ने मन ही मन सोचा। लेकिन इससे पहले कि वो इस पर और सोचता, महाशिव बाबा ने पूछा, "और तुम्हारा मित्र? क्या वो इस यात्रा का आनंद ले रहा है?"

कर्मा मुस्कुराया। "ये अद्भुत अनुभव है," उसने कहा। "मगर कुंभ मेला ख़ासकर इन्हीं महीनों में क्यों होता है?"

"कुंभ मेले का समय बृहस्पति और सूर्य की नक्षत्रीय स्थितियों से तय होता है। प्रयाग में ये तब होता है जब बृहस्पति वृष राशि में और सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है," महाशिव बाबा ने जवाब दिया।

“और अमृत?” कर्मा ने पूछा।

“अमृत तो सबके लिए उपलब्ध है,” महाशिव बाबा ने कर्मा की ओर काग़ज़ का एक छोटा गुड़ीमुड़ी सा गोला बढ़ाते हुए कहा। “बात बस ये है कि बहुत से लोग देख नहीं पाते कि ये क्या है। हम अपनी लड़ाइयों को लड़ने में इतना फंसे रहते हैं कि ये छिपा रह जाता है हालांकि ये एकदम सामने होता है।”

“क्या ये हिंदू दर्शन है?” कर्मा ने गुड़ीमुड़ी से गोले को लेते हुए पूछा।

“नहीं, ये हिंदू धर्म है,” महाशिव बाबा ने कहा।

“अंतर क्या है?” कर्मा ने पूछा।

“दर्शन में ऐसे प्रश्न होते हैं जिनका कभी उत्तर नहीं दिया जा सकता,” बाबा ने कहा।

“और धर्म?” कर्मा ने पूछा।

“इसमें वो जवाब होते हैं जिनके प्रश्नों को कभी पूछा नहीं जाता।”



अलीशा ने सुबह आठ बजे अपनी डेस्क पर ही कॉफ़ी पी। अगले तीस मिनट में रिपोर्ट पूरी करनी थी और इतना समय नहीं था कि वो नीचे न्यूयॉर्क कॉफ़ी स्टेशन में जा पाती। एक ग्राहक के कला संग्रह की समीक्षा के लिए उसे जल्दी से ऑफ़िस से निकलना था।

वो कड़क सफ़ेद ब्लाउज़ और गहरा स्लेटी बिज़नेस सूट पहने हुए थी जो स्त्रियोचित भी था और साथ ही मार्श एवं मैकलेनन के पुरातनपंथी पुरुष निर्वाचन क्षेत्र के लिए दिलासा भरा भी था। उसने काले बेसिक पंप शूज़ और एक सुंदर से नेकलेस से अपने पहनावे को पूर्णता दी थी। बस एक ही शब्द अलीशा को बयान कर सकता था। आकर्षक। अनेक पुरुष सहयोगियों ने उसके सामने बाहर चलने का प्रस्ताव रखने की कोशिश की थी, मगर उसने विनम्रता से सबको ठुकरा दिया था। उसे तो अपना साथी मिल चुका था।

स्टैनफ़ोर्ड से ग्रेजुएशन करने के बाद ही अलीशा ने इस कंपनी में जॉइन कर लिया था, अब उसे काम करते हुए तीन साल से ज़्यादा हो चुके थे। न्यूयॉर्क सिटी में शिफ़्ट करने का फ़ैसला मुश्किल रहा था। वो सैन फ्रैंसिस्को या सिएटल में रहना ही पसंद करती, मगर हॉर्वर्ड से एमबीए करने के विनय के फ़ैसले की वजह से उसे ये फ़ैसला लेना पड़ा। कैंब्रिज से साढ़े तीन घंटे ड्राइव करके न्यूयॉर्क सिटी आना और वीकएंड्स उसके साथ बिताना ज़्यादा आसान था। बेशक ये देखते हुए कि वो दोनों ही बिग एपल में काम करते थे, ये अब कहीं ज़्यादा आसान हो गया था।

मार्श एंड मैकलेनन बीमा दलाल थे, लेकिन अलीशा वहां अपनी गणितीय महारत की वजह से नहीं थी। बल्कि वो तो इसके बिल्कुल ही उलट वजह से वहां थी। अलीशा ने स्टैनफ़ोर्ड से आर्ट हिस्ट्री में मेजर किया था। आर्ट हिस्ट्री ऐसा विषय था जो

कलाकृतियों को अनेक दृष्टिकोणों से समझने की कोशिश करता है जिसमें उनके निर्माण का मूल संदर्भ और स्वीकृति के साथ-साथ उनका उत्तरवर्ती वितरण, संग्रह, संरक्षण और प्रदर्शन शामिल होता था।

बेशक़ीमती धरोहरों, जैसे कि फ़ाइन आर्ट या प्राचीन कृतियों, को गृहस्वामियों के बीमे के तहत केवल सीमित वित्तीय सुरक्षा ही प्राप्त होती थी। मार्श ने अतिरिक्त सुरक्षा प्रदान करने के लिए गृहस्वामियों के बीमे में बेशक़ीमती वस्तुओं की पॉलिसी को जोड़ने की पहल की थी। अलीशा कला विश्लेषण, मूल्यांकन और कवरेज पर मार्श के लिए इन-हाउस साधन थी।

अलीशा ने अपने बॉस के लिए फ़ाइनल रिपोर्ट को अटैच करने के बाद अपने कंप्यूटर पर सैंड के बटन को क्लिक किया। फिर उसने अपना पर्स उठाया, अपना कंप्यूटर बंद किया और लिफ़्ट के वर्ल्ड ट्रेड सैंटर की नॉर्थ टॉवर की 96वीं मंज़िल से नीचे जाने का इंतज़ार करने लगी।



विनय अपने ट्रंप टॉवर्स के ऑफ़िस में टेलीविज़न देख रहा था, उसके पेट में हौल सा उठा।

उसी वक़्त एक विमान वर्ल्ड ट्रेड सैंटर की नॉर्थ टॉवर में जा घुसा था। उसने अलीशा का मोबाइल नंबर लगाने की बेतहाशा कोशिश की—मगर नाकाम रहा। मोबाइल ट्रैफ़िक में ज़बरदस्त बढ़ोतरी और सैल्युलर इंफ़्रास्ट्रक्चर को हुए नुक़सान की वजह से ज़्यादातर मोबाइल फ़ोन पहुंच से बाहर हो गए थे।

अलीशा, अगर तुम्हें कुछ हुआ तो मैं अपनी जान ले लूंगा, उसने मन ही मन सोचा और ऑफ़िस से बाहर भागकर अपनी कार से वर्ल्ड ट्रेड सैंटर की ओर चल पड़ा।

विनय को एक अहम बात पता नहीं थी। सुबह 8:46 पर, अमेरिकन एयरलाइंस की फ़्लाइट 11, मार्श एंड मैकलेनन के ऑफ़िस से, जहां अलीशा 96वीं मंज़िल पर काम करती थी, सीधे टकराई थी।

"तुम क्या हमेशा मुझे प्यार करोगे?" अलीशा ने उससे पूछा था। वो वर्ल्ड ट्रेड सैंटर की *106*वीं मंज़िल पर स्थित रेस्तरां विंडोज़ ऑन द वर्ल्ड में डिनर कर रहे थे।

"तुम्हें मुझसे कोई चीज़ नहीं छीन सकती," विनय ने उससे कहा था। "मैं तो तुम्हारे लिए दीवाना हूं। और जहां दीवानापन हो केवल वहीं प्यार हो सकता है।"

"और हमारे माता-पिता?" अलीशा ने पूछा था। "हम दोनों के पिता पुराने दुश्मन हैं। साथ ही, मज़हब का मसला भी है। वो कभी राज़ी नहीं होंगे।"

"प्यार सबको जीत लेता है," विनय ने उसका हाथ थामते हुए कहा था। "वो मान जाएंगे।"

विनय ने खुद को जड़ पाया। उसकी कार हिल नहीं रही थी। न्यूयॉर्क लगभग पूरी तरह ठप्प पड़ गया था, पुलों और सुरंगों को बस इमर्जेंसी वाहनों के लिए खुला रखा गया था। पब्लिक यातायात बंद था और ट्रैफ़िक जाम जो मीलों लंबा था, उसे सभी

मुख्य रास्तों पर देखा जा सकता था। उसने एक बार फिर अपने मोबाइल से अलीशा का नंबर लगाने की कोशिश की। मगर बेकार।



नॉर्थ टॉवर में, अलीशा अपने क्लायंट से मिलने के लिए लिफ़्ट से 55वीं मंज़िल पर गई थी। मीटिंग सुबह साढ़े आठ बजे शुरू हुई थी। 8:46 पर जब अलीशा अपने प्रेज़ंटेशन फ़ोल्डर के पेपर पलट रही थी, तभी सारी बिल्डिंग झूलने लगी थी। अलीशा को बाहर ज़ोर का धमाका सुनाई दिया।

"भूकंप!" कोई चिल्लाया।

"सब लोग बाहर भागो," कोई और चिल्लाया।

अलीशा ने अपना पर्स उठाया और भीड़ के साथ सीढ़ियों की ओर दौड़ गई।

नॉर्थ टॉवर विशाल इमारत थी, लेकिन तुलनात्मक रूप से उसकी सीढ़ियां छोटी थीं। सीढ़ियां बस इतनी चौड़ी थीं कि एक साथ दो लोग ही खड़े हो सकें। अब ये मछलियों के डिब्बे की तरह पैक थीं। नीचे उतरना भयानक रूप से धीमा था। एक क़दम लो और इंतज़ार करो। एक क़दम लो और इंतज़ार करो।

अलीशा ने अपने फ़ोन को देखा। उसने विनय को फ़ोन करने की कोशिश की, लेकिन सिग्नल ही नहीं था। उसके पास खड़े आदमी का फ़ोन बजा। "तुम्हारी बिल्डिंग से एक प्लेन टकरा गया है," उस आवाज़ ने उसे बताया। सीढ़ियों पर मौजूद भीड़ ने अनुमान लगाया कि कोई छोटा निजी विमान मार्ग भटक गया होगा। लोग धुएं को लेकर फ़िक्रमंद होने लगे थे। जब भी सीढ़ियों का दरवाज़ा खुलता, धुआं अंदर आ जाता।

लेकिन एनवाईसी की ठप्प पड़ी सड़कों पर विनय बुरी तरह घबराया हुआ था। उस दिन वो सैकड़ों बार अलीशा का नंबर मिला चुका था। उसे उसका वॉयस मेल मिल रहा था।

जब अलीशा 20वीं मंज़िल पर पहुंची तो उनके साथ ऊपर की मंज़िलों से बुरी तरह घायल लोगों को लाते लोग आ जुड़े। अलीशा और दूसरे लोगों ने एक ओर हटकर उन्हें निकलने दिया। एक महिला के बाल पिघलकर उसके चेहरे में घुलमिल गए थे। उसकी त्वचा भी पिघल गई थी। वो औरत रो रही थी। "मैं कितनी बुरी दिख रही हूं?" उसने पूछा।

अलीशा ने झूठ बोल दिया। "आप बिल्कुल बुरी नहीं दिख रहीं, चिंता न करें।"

फिर उन्होंने एक और धमाका सुना। सीढ़ियों पर एकदम ख़ामोशी छा गई। वहां जमा लोग अब समझ गए थे कि ये कोई हादसा नहीं था। एक और विमान टकराया था —इस बार साउथ टॉवर से। सुबह के 9:03 बजे थे।

सीढ़ियों पर अब फ़ोकस पूरी तरह एक-एक क़दम करके आगे बढ़ने पर था। कई लोग अपने इनहेलर्स से दूसरों की मदद कर रहे थे। ऊपर की मंज़िलों पर अपनी खुद की मौत की ओर बढ़ते, पीठ पर एयर टैंक लिए फ़ायर फ़ाइटर अलीशा के पास से गुज़रे।

लोग चेन में पानी की बोतलें और पेपर टॉवल्स के रोल पास कर रहे थे। अलीशा ने एक टॉवल पर पानी छिड़का और अपने मुंह और नाक को ढक लिया। उसका जी घबरा रहा था और बुरी तरह गर्मी लग रही थी। पसीना उसके चेहरे पर बह रहा था और उसकी थकी हुई टांगें कांप रही थीं। उसे डर था कि कहीं वो बेहोश न हो जाए। अचानक उसे अपने पैरों में गीलापन महसूस हुआ। पाइप फट गए थे और तेज़ बहाव के साथ पानी सीढ़ियों पर आ गया था। उतरना और भी ज़्यादा मुश्किल हो गया था। खुशक़िस्मती से उसके पंप शूज़ में रबर के फ़्लैट सोल थे।

नीचे पहुंचने पर अलीशा ने खुद को घुटनों तक पानी में पाया। उसने सूनी नज़रों से अपने आसपास मची घोर तबाही को देखा। लिफ़्ट क्रैश कर गई थीं। दीवारों पर लगे नक़्क़ाशीदार संगमरमर बिखर गए थे। खिड़कियों के शीशे चूर-चूर हो गए थे।

बचावकर्मी उन्हें दालान के ठीक नीचे एक निचले मॉल एरिया में ले गए। अलीशा दालान को जा रहे एक रुके पड़े एस्केलेटर की ओर भागी, तभी एक पुलिसवाला चिल्लाया, "भागो! भागो! ऊपर मत देखो!"

ऊपर मौजूद ख़तरे से बेख़बर अलीशा अपने फ़ोन पर बिल्डिंग का फ़ोटो लेने को मुड़ी। उसी पल भयानक गड़गड़ाहट हुई और साउथ टॉवर धड़धड़ाती हुई ढह गई।



अलीशा ने भागने का रास्ता तलाशा। सबवे का प्रवेशद्वार केवल बीस फ़ुट दूर था। अलीशा अंदर भागी और बस दौड़ती रही। ऑक्सीजन लेने के लिए हांफते हुए उसे अपने दिल की धाड़-धाड़ सुनाई दे रही थी। वो पसीने से तरबतर थी। लेकिन ज़िंदा थी।

उसे किसी तरह विनय से संपर्क करना था। फिर अपने माता-पिता से। सबवे का कोई पेफ़ोन काम नहीं कर रहा था। वो जगह भयानक रूप से सुनसान पड़ी थी। उसे वहां से बाहर निकलना था। नॉर्थ टॉवर भी गिर चुकी थी। कालिख और धूल की मोटी परतों से ढके सैकड़ों लोग लक्षयहीन से भटक रहे थे।

अलीशा ने एक औरत से उसका चालू फ़ोन इस्तेमाल करने देने की गुज़ारिश की मगर उसने दृढ़ता से मना कर दिया। वो चलने लगी क्योंकि कहीं कोई टैक्सी, बस या कार नहीं थी। एक आदमी ने उसके हाथ में न्यूयॉर्क सिटी रैस्क्यु मिशन का परचा थमा दिया। वहां फ़ोन, खाना और पानी दिया जा रहा था। वो थकान से चूर वहां पहुंची। फ़ोन करने के लिए लगी लाइन में उसने अंतहीन समय तक इंतज़ार किया।

उसने विनय का नंबर मिलाया तो उसका वॉयस मेल मिला। उसने फिर फ़ोन किया। इस बार नंबर मिल गया।

विनय को मिली राहत उसकी आवाज़ से छलकी पड़ रही थी। मैं फिर कभी तुम्हें मुझे छोड़कर नहीं जाने दूंगा, उसने मन ही मनसोचा।

"तुम्हें चोट लगी है?" उसने पूछा, उसकी फ़िक्र टपकी पड़ रही थी।

“मैं ठीक हूं, बेबी,” वो बोली। “प्लीज़ मेरी मां को फ़ोन कर दो। उनसे कहना मैं ठीक हूं। बस ये कह देना कि तुम मेरे ऑफ़िस के कलीग हो।”

“अलीशा,” विनय ने कहा। “मुझे...”

“क्या?” अलीशा ने पूछा। उसके पीछे लगी लाइन में लोग बेचैन होने लगे थे।

“मुझे तुमसे शादी करनी है, स्वीटहार्ट,” विनय ने कहा। “मुझे अभी अहसास हुआ है कि तुम्हारे बिना जीना क्या होगा और मैं फिर कभी उस हालत में नहीं होना चाहता।”



“न कोई ब्लड टैस्ट, न इंतज़ार, न बखेड़ा। बस चटपट शादी, मैम,” होटल के केयरटेकर ने विनय और अलीशा से कहा। “क्लार्क काउंटी—जहां लास वेगस स्थित है—हर साल 80,000 से ज़्यादा शादी के लाइसेंस जारी करता है। मैं सब इंतज़ाम कर दूंगा, फ़िक्र न करें।”

उस दिन बाद में वो मैरिज लाइसेंस ब्यूरो के क्लर्क के सामने हाज़िर हुए। बाहर लगा नोटिस स्पष्ट था:

आपके प्रस्तावित संबंध में दो व्यक्ति शामिल होने चाहिए जो संबंधी न हों और दोनों कम से कम अठारह वर्ष की आयु के हों। नाम और उम्र के प्रमाण होना आवश्यक हैं। ख़ून की जांच की अनिवार्यता नहीं है। आपके पास वैध ड्राइविंग लाइसेंस, पासपोर्ट, सैनिक पहचानपत्र या सरकार द्वारा जारी कोई अन्य पहचानपत्र होना चाहिए। यूनाइटेड स्टेट्स के बाहर के व्यक्ति भी लास वेगस में विवाह कर सकते हैं। आपको अपने विवाह प्रमाणपत्र की एक प्रमाणित प्रति और नेवाडा के राज्य सचिव से एक एपॉसिल लेना होगा ताकि आपके विवाह को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल सके।

“बधाई हो,” उकताए हुए क्लर्क ने कहा। “अब मैं आपको पति-पत्नी घोषित करता हूं। साठ डॉलर हुए, प्लीज़।”

केयरटेकर ने मज़ाक़ किया, जो उदारतापूर्वक उनके साथ आने को राज़ी हो गया था, “आगे चलकर शादीशुदा होने में आपके पैसे, आज़ादी और दिमाग़ी सेहत ज़ाया होंगे। लेकिन फ़िलहाल बस साठ डॉलर लगेंगे।”

विनय ने उसका दोगुना ख़र्च किया। एक सौ बीस डॉलर।

साठ डॉलर के लाइसेंस के अलावा, प्रमाणित मैरिज सर्टिफ़िकेट दस डॉलर का पड़ा और नेवाडा राज्य सचिव से मिला एपॉसिल बीस डॉलर का। ओह, और क्रेडिट कार्ड से भुगतान करने पर पांच डॉलर का अतिरिक्त सर्विस चार्ज भी था।

और पच्चीस डॉलर केयरटेकर को टिप।



“तुमने क्या किया?” अपनी व्हिस्की को सामने रखी फ़ाइल पर छलकाते हुए अरविंद

चिल्लाया।

"मैंने शादी कर ली है," विनय ने कहा। "और मुझे अफ़सोस है कि वो अरबाज़ शेख़ की बेटी है। मैं आपसे और मम्मी से वाक़ई बहुत प्यार करता हूं। मुझे उम्मीद है कि आप दोनों मुझे माफ़ कर सकेंगे।" इजाज़त की जगह माफ़ी मांगना ज़्यादा आसान होगा, विनय ने तय किया था।

विनय जानता था कि वो अर्थहीन बातें बोल रहा है। वो कभी इतना नर्वस नहीं हुआ था। उसने कोलकाता आने के लिए दुर्गा पूजा का समय चुना था ताकि उसके माता-पिता अच्छे मूड में हों।

वो ग़लत था।

"तुम हमें प्यार करते हो?" अरविंद ने पूछा। "तो फिर यही लड़की क्यों? तुमने उस आदमी की बेटी से शादी करके मुझे, अपने पिता को नीचा दिखाया है!"

अभिलाषा ने व्याकुलता से देखा। उसका एक हिस्सा तो बस चाहता था कि जाकर अपने बेटे को गले लगा ले और उससे कहे कि उसने जो भी लड़की चुनी है, वो उसे स्वीकार है। और उसका दूसरा हिस्सा चाहता था कि अपने पति को दिलासा दे।

"आपके पिताजी, मेरे दादाजी ने भी अपनी पत्नी ख़ुद चुनी थीं और इसके लिए उनका परिवार उनसे नफ़रत करता था," विनय ने तर्क दिया। "मुझे उम्मीद है कि आप ज़िंदगी भर मुझसे नफ़रत नहीं करेंगे।"

अरविंद मुड़ा और लिविंग रूम से बाहर निकल गया। "आज से मेरा कोई बेटा नहीं है," उसने कहा।

विनय की ओर हमदर्दी भरी निगाह डालते हुए अभिलाषा अरविंद के पीछे दौड़ी। "मैं उन्हें मना लूंगी," उसने धीरे से विनय से कहा। "तुम चिंता मत करो।"

विनय पूरे हफ़्ते कोलकाता में इंतज़ार करता रहा मगर उसके पिता उससे मिलने को तैयार नहीं हुए। उसकी मां ने व्याकुलता से उसे बताया कि उसके पिता उसे अपने कारोबार से पूरी तरह से अलग कर देने की सोच रहे हैं।

विनय ने न्यूयॉर्क की वीकएंड की फ़्लाइट ले ली।



"यही होता है जब हम लड़कियों को अमेरिका जाकर पढ़ने की आज़ादी देते हैं," अरबाज़ फ़ोन पर चिल्लाया। "वो अपने बापों को धोखा देती हैं!"

अलीशा ने इस पर बहुत सोच-विचार किया था। विनय के विपरीत, उसने तय किया कि अपने माता-पिता को फ़ोन पर ये ख़बर देगी। बहुत मुमकिन था कि अगर वो मुंबई वापस जाती तो उसके पिता उसे कमरे में बंद कर देते।

"प्लीज़, डैडी," अलीशा ने फ़ोन पर इल्तिजा की। "ये बस हो गया। मुझे बस इतना पता है कि मैं उसे प्यार करती हूं।"

“और अपने बाप से?” भड़के हुए अरबाज़ ने पूछा। “अपने बाप से तुम्हें ज़रा प्यार नहीं है?”

“बेशक वो तुमसे प्यार करती है,” परोमिता ने बीच में कहा जो पैरेलल एक्सटेंशन पर सुन रही थी। अरबाज़ ने अपनी पत्नी से निबटने के लिए पल भर को फ़ोन छोड़ा।

“तुम इससे बाहर ही रहो!” अरबाज़ चीखा। “उसे अकेले विदेश भेजने के लिए मैं तो कभी तैयार ही नहीं था।”

वो वापस लाइन पर आ गया। “फ़ौरन उसे तलाक़ दे दो! ये मेरा हुक्म है।”

“मैं ऐसा नहीं कर सकती, डैडी,” अलीशा ने कहा।

“तो फिर बात करने को और कुछ नहीं है,” अरबाज़ ने कहा।

“वर्ल्ड ट्रेड सैंटर पर हुए हमले में मैं मर सकती थी,” अलीशा ने कहा। “क्या ये चमत्कार नहीं है कि मैं ज़िंदा हूं और ऐसे इंसान के साथ घर बसा पा रही हूं जिससे मैं प्यार करती हूं?”

“मेरी बला से तो तुम मर गई होतीं,” अरबाज़ ने लाइन काटते हुए कहा।



विनय प्राइम कंसॉलिडेटेड म्युचुअल के कॉन्फ़्रेंस रूम में बैठा था। अब वो पीसीएम की ओर से भारतीय उपक्रमों का प्रबंध संभालने के लिए सीधे ज़िम्मेदार था। जब से उन्होंने संयुक्त उद्यम स्थापित किया था, कंपनी भारत में संस्थागत कारोबार को खींचने की कोशिश कर रही थी।

पिछले महीने ख़ासकर मुश्किल रहे थे। अपने पिता के ग़ुस्से से अलीशा जज़्बाती तौर पर बिखर गई थी। विनय के पिता अभी भी उससे बात नहीं कर रहे थे। विनय को प्राइम कंसॉलिडेटेड म्युचुअल की ओर से नौकरी की पेशकश हुई ताकि वो न्यूयॉर्क में रह सके। उसने कृतज्ञता के साथ उसे स्वीकार कर लिया। भोजन अपने संबंधियों के साथ करो लेकिन कारोबार अजनबियों के साथ करो, एक बुद्धिमानी भरा नियम था जिसे अधिकांश मारवाड़ी तोड़ते रहते थे, कभी-कभी बेहयाई से। लेकिन अब जाकर विनय इन शब्दों की अहमियत समझ पा रहा था।

प्राइम का मैनेजिंग डाइरेक्टर गुलाबी गालों वाला टैक्सन था उसका नाम बिल पर्डी था। हल्के से टैक्सन उच्चारण और सिगारों के प्रेम के अलावा उसमें टैक्सन जैसा कुछ था नहीं। उसने अपनी ज़्यादातर ज़िंदगी लंदन और न्यूयॉर्क में गुज़ारी थी।

“गुजरात में हाल में आए भूकंप ने सरकार को पर्याप्त बीमा करवाने की आवश्यकता का अहसास करवाया है,” बिल ने कहा। “मुझे बताया गया है कि राज्य सरकारों के कर्मचारियों का भी बीमा कम है। भारत के हमारे मैनेजिंग डाइरेक्टर का कहना है कि दो राज्य सरकारी कर्मचारियों की ग्रेच्युटी, पेंशन और लाइफ़ कवरेज का प्रबंध निजी बीमाकर्ताओं को सौंपने के विचार के प्रति उदार हैं।”

“कौन से?” विनय ने पूछा।

“गू-जय-रात और मैड-यह परडे-श,” बिल ने गुजरात और मध्य प्रदेश दोनों के उच्चारणों को ज़बरदस्त ढंग से बिगाड़ते हुए कहा।

“उनसे कहें कि दोनों राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ मीटिंग तय करें और मैं उनके साथ जाऊंगा,” विनय ने राय दी।

“क्या जाना सुरक्षित होगा?” बिल ने पूछा। ये कोई ग़लत सवाल भी नहीं था। भारत सभी ग़लत वजहों से ख़बरों में बना रहा था। वर्ष 2001 की शुरुआत गुजरात में आए विनाशकारी भूकंप से हुई थी जिसमें 20,000 लोग मारे गए थे। साल के मध्य में पाकिस्तान के राष्ट्रपति और भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के बीच बहु-प्रचारित आगरा संगोष्ठी हुई थी जो शुरू तो बहुत ज़ोर-शोर से हुई थी मगर ख़त्म रिरियाते हुए हुई। साल का अंत हुआ था भारत की संसद पर पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित हमले से।

“अरे, बिल्कुल सुरक्षित है,” विनय ने कहा जिसने अपने पिता के साथ चल रहे शीत युद्ध के कारण अपने मासिक दौरे करना बंद कर दिया था। “अधिकारिक रूप से कोई खंडन नहीं हुआ है। जब भारत की बात हो, तो अधिकारिक रूप से खंडन होने तक आपको किसी बात पर यक़ीन नहीं करना चाहिए।”



वो फिर से सरदार हरपाल सिंह के महारानी बाग़ के मकान के विशाल बाग़ में भूरे छाते के नीचे बैठे थे। जब भी अरबाज़ उन्हें देखता था, हरपाल उसे पहले से कमउम्र नज़र आते थे। कुछ देर उन्होंने दस्यु सुंदरी फूलन देवी को उसके पुराने दुश्मनों द्वारा मार गिराए जाने की सुबह की ख़बर पर बात की। फिर हरपाल काम की बातों पर आ गए।

“ट्रक के उन विनिर्देशों पर तुम्हारी मदद न कर पाने को लेकर मुझे बहुत बुरा महसूस हुआ,” हरपाल ने कहा।

“अब इस बारे में ज़्यादा न सोचें, सर,” अरबाज़ ने कहा। “मैं तो ख़ुश हूं कि मुझे आपको जान पाने का सम्मान हासिल हुआ।”

“ये तो तुम्हारी उदारता है,” हरपाल ने कहा। “लेकिन वो वजह कुछ और है जिसके लिए मैं तुमसे मिलना चाहता था।”

अरबाज़ आगे को झुक आया। “कहिए?”

“जैसा कि तुम जानते होगे, मैं अपना समय भारत और भूटान के बीच बिताता हूं,” हरपाल ने कहा। “मैंने भूटान की एक नई कंपनी में निवेश किया है। मुझे लगा इस प्रस्ताव में तुम्हें दिलचस्पी होगी। मैं वाक़ई चाहता हूं कि किसी तरह तुम्हारा अहसान चुका सकूं, अरबाज़।”

“आप तो मुझे शर्मिंदा कर रहे हैं, सर,” अरबाज़ ने कहा, हालांकि वो आतुरता से इंतज़ार कर रहा था कि सरदार अपना प्रस्ताव बताएं।

“कंपनी भारत में निगमित है, और अभी तक असूचीबद्ध है। इसे एक युवा भूटानी

रिसर्चर ने शुरू किया है। मुख्य रिसर्च संस्थान भूटान में है, कंपनी का नाम अनयसार रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड है, और वो मानव दीर्घजीविता पर महत्वपूर्ण प्रयोग कर रहे हैं।"

अरबाज़ चुप रहा और सुनता रहा।

"अभी मेरे पास कंपनी के चालीस फ़ीसदी शेयर हैं," हरपाल ने कहा। "शेष साठ फ़ीसदी संस्थापक कर्मा त्शेरिंग के पास हैं।"

"आप इसमें कैसे और क्यों शामिल हो गए?" अरबाज़ ने पूछा।

"भूटान की रानी माननीया आशी दोरजी वांगमो वांगचुक ने राय दी थी कि मैं निवेश करूं।"

"क्या आपको मुनाफ़ाबख़्श मौक़ा दिखा था?" अरबाज़ ने पूछा।

"भूटान के वर्तमान राजा को देश में कई आधुनिक सुधार करने का श्रेय जाता है," हरपाल ने कहा। "ये वो व्यक्ति हैं जिन्होंने कहा है कि उन्हें सकल राष्ट्रीय उत्पाद की फ़िक्र कम और सकल राष्ट्रीय खुशहाली की फ़िक्र ज़्यादा है। पर्यावरण, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे मुद्दे उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता हैं। इसी कारण लोग राजपरिवार से प्रेम करते हैं। वो और उनकी रानी इस तरह की रिसर्च को अपनी प्रजा की भावी खुशहाली के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं।"

"आह," अरबाज़ ने कहा, वो समझ नहीं पा रहा था कि हरपाल उसे क्या पेशकश दे रहे हैं।

"मैं तुम्हें अपना चालीस फ़ीसदी हिस्सा लेने का मौक़ा दे रहा हूं," हरपाल ने कहा। "कंपनी में मेरा कोई हिस्सा नहीं रह जाएगा।"

"मुझे नहीं लगता कि मैं निवेश करना चाहूंगा," अरबाज़ ने कहा।

ये सारा प्रोजेक्ट ही अरबाज़ को कुछ काल्पनिक सा लग रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे हरपाल उसे झांसा देकर निवेश करवाना चाह रहे हों।

"मैं तुमसे निवेश करने को नहीं कह रहा हूं," हरपाल ने कहा। "मैं तो बस वो शेयर तुम्हें गिफ़्ट कर रहा हूं।"

"क्यों?" अरबाज़ ने पूछा।

"क्योंकि हर अच्छे काम का बदला चुकाना चाहिए," सरदार ने कहा। "तुमने मुंबई की मेरी करोड़ों की ज़मीन साफ़ करवा दी। मैं इस क़र्ज़ की भरपाई किए बिना नहीं रह सकता।"



विनय सकारात्मक ऊर्जा महसूस करते हुए मुख्यमंत्री के गांधीनगर स्थित ऑफ़िस से निकला था। बावन साल के मुख्यमंत्री, नरेंद्र मोदी नामक व्यक्ति, सोए पड़े प्रशासन को झिंझोड़ रहे थे। ऐसी अफ़वाह थी कि उन्होंने प्रगति को मॉनीटर करने

के लिए विभागीय सचिवों से पॉवरपॉइंट प्रेज़ेंटेशन देने की मांग की थी। वो अपने मोबाइल फ़ोन पर हर वक़्त उपलब्ध रहते थे और अपने मंत्रियों से भी यही अपेक्षा करते थे। वो नियमित रूप से परियोजना स्थलों पर पहुंच जाते थे ताकि ख़ुद कार्य की प्रगति को जांच सकें।

जिस वक़्त विनय मुख्यमंत्री के ऑफ़िस में पहुंचा, सरकार के सभी प्रमुख निर्णयकर्ता जमा हो चुके थे और चर्चा कर रहे थे कि वो किस तरह प्राइम कंसॉलिडेटेड म्युचुअल के साथ साझेदारी में काम कर सकते हैं। विनय ने भारतीय नौकरशाही में इतनी व्यावसायिक मीटिंग कभी नहीं देखी थी। उन्होंने झटपट बुलेटेड कार्रवाई बिंदुओं की श्रृंखला में आगे बढ़ने की योजना बना ली।

विनय ख़ानपुर रोड स्थित कामा होटल पहुंचा, अपने कमरे में गया, जूते उतारे और बिस्तर पर लेट गया। फिर उसने अलीशा को फ़ोन किया ये पता करने के लिए कि वो कैसी है। उन्होंने दस मिनट बात की। फिर वो सो गया।

अगली सुबह, विनय को नीचे हंगामा सुनाई दिया। वो उठा और उसने खिड़की से बाहर झांका। एक विशाल भीड़ नीचे सड़क पर जमा हो रही थी। वो अपने सामने आ रही कारों और खिड़कियों पर पत्थर बरसा रही थी। विनय ने जल्दी से जूते पहने और लॉबी की ओर भागा लेकिन मैनेजर ने उसे रोक दिया।

"अपने कमरे में वापस जाएं, सर," उस डरे हुए व्यक्ति ने कहा।

"क्या हो रहा है?" विनय ने पूछा। "सड़क पर भीड़ क्यों है?"

"कल, अयोध्या से अहमदाबाद लौट रही साबरमती एक्सप्रेस को गोधरा स्टेशन पर रोक लिया गया था," मैनेजर ने कहा। "बहुत से यात्री हिंदू थे। ट्रेन में आग लगा दी गई। कोई उनसठ लोग मारे गए थे। गुजरात के हिंदू बहुत नाराज़ हैं। सारे शहर में और राज्य के दूसरे हिस्सों में दंगे भड़क गए हैं।"

"मैं यहां से कैसे निकल सकता हूं?" विनय ने पूछा।

"आप गुजरात की सबसे सुरक्षित जगह पर हैं," मैनेजर ने कहा।

"ख़ानपुर रोड पर कुछ असर नहीं पड़ा है। हां, भीड़ जमा है, लेकिन उसे पुलिस ने घेर रखा है। दूसरे बहुत से इलाक़ों में पुलिस है ही नहीं। लेकिन हमारे मालिक ने अपने रसूख़ से ये पक्का किया है कि पुलिस इस इलाक़े में पर्याप्त सुरक्षा उपलब्ध करवाए।"

"यानी मैं यहां फंसा रहूंगा?" विनय ने पूछा।

"अहमदाबाद में छह बड़े होटल हैं," मैनेजर ने कहा। "उनमें से दो ही सुरक्षित हैं— ये और ली मेरेडियन। बाकी शहर में क़हर मचा हुआ है। आपके लिए सबसे सुरक्षित होगा कि अपने कमरे में रहें। मैं कोशिश करूंगा कि आपके रहने को ज़्यादा से ज़्यादा आरामदेह बना सकूं।"



"विनय अहमदाबाद में है," अभिलाषा ने कहा। "मुझे चिंता हो रही है।"

गोधरा हादसे के बाद गुजरात अव्यवस्था और घोर हिंसा के भंवर में डूब गया था। राज्य भर के सत्ताईस क़स्बों और शहरों में कर्फ़्यू लगा दिया गया था। भारत प्रकटतः एक के बाद एक सांप्रदायिक दंगों के दौर से गुज़रता रहा है। 1905 में बंगाल, 1921 में केरल, 1947 में पंजाब, 1984 में दिल्ली, 1989 में कश्मीर... और अब 2002 में अहमदाबाद हिंसा के अकथनीय कृत्यों से दाग़दार हुआ था। बस भूगोल और संप्रदाय बदले थे।

गुजरात में, मुसलमानों के घरों और दुकानों को नष्ट करने के लिए तलवारों, बम और गैस सिलेंडरों का इस्तेमाल किया जा रहा था। ये हिंसा का नंगा नाच था—क़त्ल, आगज़नी, लूट, बलात्कार, तेज़ाब के हमले... यहां तक कि बच्चों, गर्भवती माओं और उनके भ्रूणों तक को नहीं छोड़ा गया।

"तुम्हें कैसे पता?" अरविंद ने पूछा।

"उसने अमेरिका से चलने से पहले मुझसे बात की थी," अभिलाषा ने कहा। "मुझे अफ़सोस है मगर वो मेरा बेटा है। तुम भले ही उसे बेदख़ल कर दो, लेकिन वो हमेशा मेरा बेटा रहेगा। मैं एक बेटे को पहले ही खो चुकी हूं। अब दूसरे बेटे को नहीं खो सकती, और खोऊंगी भी नहीं।"

फिर अभिलाषा ख़ुद को रोक नहीं पाई और बिलख-बिलखकर रोने लगी।



अरविंद ने फ़ोन उठाया और पुलिस सुपरिंटेंडेंट कल्याण सरकार का नंबर मिलाया। "मुझे आपकी मदद चाहिए," उसने कहा। "आप गुजरात पुलिस में किसी को जानते हैं? मेरा बेटा विनय एक बिज़नेस ट्रिप पर अहमदाबाद गया था और कामा होटल में फंसा हुआ है। क्या आप किसी को वहां भेजकर उसे निकलवा सकते हैं?"

अरविंद ने फ़ोन रख दिया। दस मिनट बाद फ़ोन बजा तो उसने उठाया। "थैंक्स, कल्याण, मैं शुक्रगुज़ार हूं। हां, आप उनसे उसे मुंबई लाने को कह दें। सड़क मार्ग से कितने घंटे लगेंगे? ये जोखिम भरा नहीं है? कहीं उसकी कार पर हमला हो गया तो?"

अभिलाषा व्याकुलता से अरविंद की ओर की बातचीत सुन रही थी, उसके गालों पर आंसू बहे जा रहे थे।

"आह, ये अच्छा विचार है," अरविंद ने कहा और फ़ोन रख दिया।

"मेरे बेटे को बचा लो," अभिलाषा ने अरविंद से कहा। "वो मेरा सब कुछ है।"

"वो मेरा भी बेटा है," अरविंद ने कहा। "आओ, हमें एयरपोर्ट चलना है।"

"क्यों?" अभिलाषा ने पूछा।

"हम मुंबई जा रहे हैं," अरविंद ने कहा। "कल्याण ने गुजरात पुलिस से बात की है। उन्होंने एक एंबुलैंस का इंतज़ाम किया है जो विनय को मुंबई लेकर आएगी।"

"एंबुलैंस? मेरे बेटे को क्या हुआ?" अभिलाषा बुरी तरह चीख़ पड़ी।

“उसे कुछ नहीं हुआ है, अभिलाषा,” अरविंद ने उठते और नरमी से उसके गिर्द बांहें डालते हुए कहा। “आम कार की जगह एंबुलैंस में यात्रा करना उसके लिए ज़्यादा सुरक्षित होगा। भीड़ के हमला करने की संभावना कम रहेगी।”



जब तक विनय मुंबई के आल्टामाउंट रोड स्थित बागड़िया गेस्टहाउस पहुंचा, तब तक उसके माता-पिता पहले से वहां पहुंचकर उसका इंतज़ार कर रहे थे।

जैसे ही वो एंबुलैंस से बाहर निकला, अभिलाषा उसे गले लगाने को बाहर दौड़ गई। वो थका और चिंतित दिख रहा था लेकिन ठीक था। “मैंने मन ही मन मन्नत मांगी थी कि अगर तिरुपति बालाजी तुझे ठीक-ठाक मेरे पास वापस भेज देंगे तो मैं दर्शन करने और दान देने जाऊंगी,” वो उसके कान में फुसफुसाई। “उन्होंने मुझे निराश नहीं किया।” उसके आंसू उसके चेहरे पर लुढ़कते और विनय की शर्ट को भिगोते रहे।

मां के गले लगे-लगे ही विनय ने उनके कंधे के ऊपर देखा। सीढ़ियों पर उसके पिता खड़े थे।

उनके चेहरे पर भी आंसू थे।



“हां, स्वीटहार्ट, मैं ठीक हूं,” विनय ने फ़ोन पर अलीशा से कहा।

“मैं मुंबई पहुंच गया हूं। सॉरी, तुमसे पहले बात नहीं कर पाया, लेकिन लाइनें जाम पड़ी थीं।”

विनय ने फ़ोन काट दिया। वो गेस्टहाउस की डाइनिंग टेबल पर बैठा था। उसने सिर उठाया तो डाइनिंग रूम के दरवाज़े पर अपने पिता को देखा। उसके पिता साठ साल से ज़्यादा बूढ़े दिखने लगे थे। विनय पर उनके ग़ुस्से ने उन पर असर डाला था।

“मैंने ज़बरदस्ती तुम्हारी मां को नींद की गोली दे दी है,” अरविंद ने मेज़ पर बैठते हुए कहा। “वो बहुत ज़्यादा उत्तेजित हो गई थीं। इन दिनों उनकी तबीयत भी ठीक नहीं रहती।”

“उन्होंने मुझे बताया क्यों नहीं?”

“उन्हें पता था कि तुम मेरी वजह से पहले ही बहुत तनाव से गुज़र रहे हो,” अरविंद ने कहा। “उनके पेट में लगातार दर्द रहता है। जब भी हम डॉक्टरों के पास जाते हैं तो वो कह देते हैं कि ये पेट का वायरस, गैस या एसिडिटी है। हम तो एक बार उन्हें अस्पताल भी ले गए थे, ये सोचकर कि शायद उन्हें अपेंडिसाइटिस है।”

“बेचारी मां,” विनय ने कहा। “आपके और मेरे इस चक्कर में वो पिस गईं।”

“ग़लती मेरी है,” अरविंद ने कहा। “मैंने बहुत ग़लतियां की हैं।”

“मुझे अफ़सोस है, पापा,” विनय ने कहा। “मैं जानता हूं आप मुझसे नाराज़ हैं।”

“श्श,” अरविंद ने कहा। उसने नौकर से एक कप चाय लाने को कहा।

“जब मैंने सुना कि तुम अहमदाबाद में हो, तो मुझे अहसास हुआ कि मैं कितनी मूर्खता करता रहा हूं,” अरविंद ने हिचकिचाते हुए कहा। “मुझे उम्मीद है कि हम इसे भुला सकेंगे, बेटा।”

विनय अपनी कुर्सी से उठा, अपने पिता के पास गया और उसने अपने पिता के कंधों पर हाथ रख दिए। और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं थी।



कुछ महीने बाद अरविंद धीरूभाई अंबानी को श्रद्धांजलि देने मुंबई वापस आया था। कोलकाता लौटने पर उसने हिल्डा को एक पत्र लिखवाया। जब वो तैयार हो गया तो उसने पत्र को देखा जिसे हिल्डा ने उसके मोटे वाटरमार्क्ड रॉयल एक्ज़ीक्यूटिव बौंड के लैटरहैड पर प्रिंट किया था और हमेशा की तरह अलंकृत अंदाज़ में उस पर दस्तख़त कर दिए।

25 जुलाई *2002*

भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री एपीजे अब्दुल कलाम,

देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर चुने जाने पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएं स्वीकार करें। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि कोई अन्य व्यक्ति इस सम्मान के लिए इतना योग्य हो सकता है।

आपको राष्ट्रपति भवन में आसीन देखकर भारत और प्रत्येक भारतीय को गर्व हो रहा है।

ससम्मान,

भवदीय,

अरविंद बागड़िया



हिंदुस्तान टाइम्स में प्रकाशित लेख पर 24 दिसंबर 2002 की तिथि पड़ी थी।

प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कहा है कि दिल्ली मेट्रो का आरंभ राजधानी में ट्रैफ़िक की भीड़भाड़ को कम करने में मदद करेगा और प्रदूषण को भी नियंत्रित करेगा। दिल्ली मेट्रो का उद्घाटन करते हुए वाजपेयी ने कहा कि भूमिगत रेल को चलाना लोगों का बहुत समय से संजोया सपना है, जो अब पूरा हो रहा है। वाजपेयी ने डायस से बटन दबाया और मेट्रो के उद्घाटन को चिह्नित करते हुए एक प्लाक का अनावरण किया।

उप-प्रधानमंत्री लाल कृष्ण आडवाणी, शहरी विकास मंत्री अनंत कुमार, लेफ़्टिनेंट गवर्नर विजय कपूर, मुख्यमंत्री शीला दीक्षित और दिल्ली मेट्रो के चेयरमैन मदन लाल खुराना ने भी इस अवसर पर भाषण दिए।

मेट्रो का उद्घाटन करने से पहले, आडवाणी के साथ वाजपेयी ने अन्य वीआईपी अतिथियों के साथ ट्रेन में यात्रा भी की जिनमें सरकार के आर्थिक सलाहकार सरदार हरपाल सिंह, और अरविंद बागड़िया जैसे दिग्गज व्यापारी भी शामिल थे।



"वो मुझसे बात करेंगे?" अलीशा ने पूछा।

"मैंने सब करके देख लिया, अलीशा," परोमिता ने कहा। "तुम्हारे पिता तो अड़ियल बैल हो रहे हैं। मुझे पता है वो तुम्हें याद करते हैं। लेकिन उनका ईगो आड़े आ रहा है।"

"क्या मैं मुंबई आ जाऊं?" अलीशा ने पूछा।

"जब सही समय होगा, मैं तुम्हें बता दूंगी," परोमिता ने कहा।

"तीन साल हो गए हैं," अलीशा ने कहा। "मुझे आपकी और उनकी याद आती है।"

"वो अचानक बहुत मसरूफ़ हो गए हैं," परोमिता ने कहा। "हाल में हुए चुनावों से सोनिया गांधी सत्ता में आ गई हैं। तुम्हारे पिता को सरकार में कैबिनेट रैंक का मंत्री बनाए जाने की ख़बर है। वो यश धर के साथ दिल्ली गए हैं।"

बेचारे अटल बिहारी वाजपेयी को सलाह दी गई थी कि 2004 में समय पूर्व चुनाव करा लें क्योंकि चुनाव सर्वेक्षक एनडीए के लिए आसान बहुमत की भविष्यवाणी कर रहे थे। प्रचार का फलक इंडिया शाइनिंग था। बीजेपी को पता लगा कि ज़्यादातर भारत महसूस करता था कि इंडिया केवल कुछ चुने हुए लोगों के लिए ही शाइन कर रहा था। वाजपेयी की पार्टी को चुनावों में ज़बरदस्त हार मिली। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जिसने आज़ादी के बाद भारत पर सबसे ज़्यादा वर्ष शासन किया था, आठ साल के निष्कासन के बाद सत्ता में वापस आई। राजीव गांधी के पुत्र राहुल ने भी अपने पारिवारिक चुनाव क्षेत्र अमेठी से अपना पहला चुनाव जीत लिया था।

"तो सोनिया गांधी पीएम बनेंगी?" अलीशा ने पूछा।

"उन्होंने तो कल ज़बरदस्त राजनीतिक दांव खेला," परोमिता ने कहा। "उन्होंने नया प्रधानमंत्री बनने से इंकार कर दिया। उन्होंने नरसिम्हा राव के पूर्व वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह से नई सरकार का प्रमुख बनने को कहा है।"

परोमिता ठहरी। "विनय कैसा है?" उसने पूछा।

"ठीक है," अलीशा ने कहा। "वो किसी काम से अपने पिता के साथ भूटान गया हुआ है।"

"उनकी ठीक निभ रही है?" परोमिता ने पूछा।

"शुक्र है, एक पिता-बच्चे का संबंध तो वापस पटरी पर आया," अलीशा ने कहा। "मेरा नंबर कब आएगा?"



2004 में फ़ोर्ब्स की अंतरराष्ट्रीय सूची में बस नौ भारतीय स्थान पा सके थे, लेकिन उस साल पत्रिका ने फ़ोर्ब्स के भारतीय समृद्धों की सूची भी शुरू की थी, जो इस तथ्य को दर्शाता था कि भारत की आर्थिक मज़बूती बढ़ रही है। पहली बार, पत्रिका ने चालीस सबसे ज़्यादा अमीर भारतीयों की सूची एकत्र की थी।

1. लक्ष्मी एन. मित्तल, मित्तल स्टील
2. अज़ीम प्रेमजी, विप्रो
3. मुकेश एवं अनिल अंबानी, रिलायंस
4. कुमार मंगलम बिड़ला, ए.वी. बिरला
5. पालोनजी मिस्त्री, टाटा संस
6. सुनील मित्तल, भारती ग्रुप
7. शिव नाडार, एचसीएल
8. आदि गोदरेज, गोदरेज इंडस्ट्रीज़
9. मलविंदर एवं शिविंदर सिंह, रैनबैक्सी
10. दिलीप संघवी, सन फ़ार्मा

अरविंद को ये देखकर बहुत निराशा हुई कि वो भारत के सर्वोच्च दस में नहीं पहुंच पाया था। उसने सूची को और आगे देखा।

11. अनिल अग्रवाल, स्टरलाइट
12. शशि एवं रवि रुइअ, एस्सार
13. ओम प्रकाश जिंदल, जिंदल ग्रुप
14. राहुल बजाज, बजाज ऑटो
15. एन. आर. नारायण मूर्ति, इंफ़ोसिस
16. सुभाष चंद्रा, ज़ी टेलीफ़िल्म्स
17. यूसुफ़ हामिद, सिप्ला
18. बृजमोहन लाल मुंजल, हीरो ग्रुप
19. हबील खोराकीवाला, वॉकहार्ट
20. विवेक बर्मन, डाबर

शीर्ष बीस में भी क़िस्मत ने साथ नहीं दिया। कोई बात नहीं, अगली बार देखेंगे। उसने बाक़ी सूची पढ़ी।

21. नंदन नीलेकनी, इंफ़ोसिस
22. एस. गोपालकृष्णन, इंफ़ोसिस

23. एन. एस. राघवन, इंफ़ोसिस

24. नरेंद्र पटनी, पटनी कॉम्प

25. अजय पीरामल, निकोलस पीरामल

26. विजय माल्या, यूबी ग्रुप

27. अरविंद बागड़िया, ब्रेड

नंबर सत्ताईस। बुरा नहीं है, अरविंद ने सोचा। अगर वो अपने बिज़नेस को बढ़ाता रहे तो आसानी से एक-दो साल में शीर्ष दस में पहुंच सकता है। उसने आम जानकारी के तौर पर बाक़ी सूची को देखा।

28. बाबा कल्याणी, कल्याणी ग्रुप

29. बी. रामलिंगा राजू, सत्यम

30. किरण मज़ूमदार-शॉ, बायोकॉम

31. कर्सनभाई पटेल, निरमा

32. अरबाज़ शेख़, धंधा

33. उदय कोटक, कोटक महिंद्रा

34. एस. डी. शिबुलाल, इंफ़ोसिस

35. के. एंजी रेड्डी, डॉ. रेड्डीज़

36. नरोत्तम सेक्सरिया, गुजरात अंबुजा

37. जयप्रकाश गौड़, जयप्रकाश इंड्स

38. श्याम एवं हरि भरतिया, जुबिलैंट ऑर्गानो

39. केशव महिंद्रा, एम एंड एम

40. देश बंधु गुप्ता, लुपिन

उसका ध्यान खींचा था 32 नंबर ने। अरबाज़ शेख़ 32 पर! वो हरामज़ादा एक निवेश कंपनी और बैंक खोलकर ख़ुद को माफ़िया डॉन से इज़्ज़तदार बिज़नेसमैन में बदलने में कामयाब हो गया, अरविंद ने सोचा। बैंकिंग में घुसने के लिए मैंने देशमुख को इस्तेमाल करने का क्यों नहीं सोचा था?

अरविंद ने मन ही मन तय किया कि वो जल्द से जल्द फ़ोर्ब्स सूची की रूपरेखा को बदल डालेगा।



अरविंद और विनय कलकत्ता-दिल्ली की फ़्लाइट में अपनी बिज़नेस क्लास की सीटों पर बैठ गए। दिल्ली में उन्हें कुछ देर रुकना पड़ा, और फिर उन्होंने भूटान में पारो

शहर की फ़्लाइट ले ली। पारो में एक कार उन्हें कर्मा के रिसर्च सैंटर ले जाने वाली थी।

कर्मा का फ़ोन ईश्वर का भेजा मौक़ा था। वो अपनी कंपनी में नए निवेशकों को लाने के लिए तैयार था। "तुम और तुम्हारे पिता भूटान क्यों नहीं आते?" उसने फ़ोन पर कहा था।

भूटान का राज्य भू-आवेष्टित देश था जिसके उत्तर में चीन और दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में भारत की सीमाएं थीं। 1907 से वहां वांगचुक राजपरिवार का शासन था।

"तुम्हें लगता है वो वाक़ई कुछ कर रहे होंगे?" अरविंद ने उस रिपोर्ट को देखते हुए पूछा जो विनय ने उसकी जानकारी के लिए बनाई थी।

"मुझे तो विश्वास है," विनय ने कहा। "कर्मा की कंपनी, अनयसार रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड, अत्याधुनिक प्रयोग कर रही है। बात बस ये है कि अभी तक कोई समझ नहीं पाया है।"

"ये एक और पागलपन भरा बबल होगा," अरविंद ने कहा। "देखो डॉटकॉम मूल्यांकनों का क्या हुआ। और देखो एनरॉन का क्या हुआ?"

"अनयसार बबल नहीं है," विनय ने कहा। "वास्तव में, इस कंपनी के बारे में शायद ही कोई जानता है। इसे कर्मा त्शेरिंग मैनेज करता है, वो ज़हीन वैज्ञानिक है जिसने येल मैडिकल स्कूल में पीएचडी छात्र के रूप में दूरदर्शिता भरी रिसर्च की थी। वो स्टैनफ़ोर्ड में मेरा रूममेट था। कंपनी निजी स्वामित्व में ही है।"

"उसे पैसा कौन दे रहा है?" अरविंद ने पूछा।

"सरदार हरपाल सिंह," विनय ने जवाब दिया। "उनके पास चालीस फ़ीसदी शेयर हैं। उन्होंने कर्मा को शुरुआती पैसा देने के लिए ऊंची क़ीमत पर शेयर ख़रीदे थे।"

अरविंद ने फ़्लाइट अटेंडेंट को अपनी चाय में दूध डालने दिया। एक घूंट लेकर उसने पूछा, "अगर यही बात है, तो कर्मा अपने साठ फ़ीसदी पर नियंत्रण रखना चाहेगा।"

"ये सच है कि मैनेजमेंट नियंत्रण पूरी तरह से कर्मा के पास हैं। वो जो चाहता है, उसे करने के लिए स्वतंत्र है और इसमें नए निवेशकों को लाना भी है। अभी उसके पास साठ फ़ीसदी शेयर हैं, सही है, लेकिन वो मित्रवत निवेशकों को इनमें से कुछ बेचने की भी सोच सकता है क्योंकि उसे अतिरिक्त पैसा चाहिए।"

"वो कामयाबी के कितना क़रीब है?" अरविंद ने पूछा।

"कहना मुश्किल है," विनय ने जवाब दिया। "पांच साल, हो सकता है पंद्रह। अहम तो ये सच है कि वही एक है जो इंसान की लंबी आयु के मसले पर पूरी तरह ग़ैरपश्चिमी नज़रिए से काम कर रहा है।"



कर्मा त्शेरिंग की लैबोरेटरी किसी भी दूसरी लैबोरेटरी से भिन्न थी। बाहर से ये किसी

मठ जैसी दिखती थी—लेकिन बहुत ही खूबसूरत। पारो के उत्तर में स्थित ये समुद्र के स्तर से करीब 10,000 फ़ुट ऊपर एक खड़ी पहाड़ी पर बनी थी। इमारत चट्टान के रुख़ पर बनी थी और उस तक केवल ख़च्चरों के रास्ते से पहुंचा जा सकता था जो चीड़ के घने जंगल से होकर जाता था। आमतौर पर वो आंशिक रूप से बादलों से ढका रहता था जो केवल इसकी दूरी को बढ़ाता ही था।

मगर, अंदर एक मॉडर्न, नवीनतम तकनीक से भरपूर लैबोरेटरी थी जिसे पुरानी इमारत में इस्पात और कांच का अंदरूनी ढांचा बनाकर बनाया गया था। 11,000 वर्ग फ़ुट में बनी लैब एक के बाद एक पंक्तियों में चमचमाती मेज़ें और उपकरण लगे थे जहां लैब के सफेद कोट पहने पच्चीस रिसर्चर विस्मयकारी भिन्नता वाले प्रयोग करते थे।

कर्मा स्टैनफोर्ड के अपने रूममेट को देखकर बहुत उत्साहित था। कुंभ मेले को तीन साल हो चुके थे। उन्होंने एक-दूसरे की पीठें थपथपाईं जैसे वो अभी भी कॉलेज के छात्र हों। विनय ने अपने पिता को कर्मा से मिलवाया और फिर तीनों व्यक्ति कैंटीलिवर पर बने एक छोटे से कॉन्फ़्रेंस रूम की ओर बढ़ गए जहां से वादी का और नीचे स्थित झरने का खूबसूरत नजारा दिखता था। वो बैठ गए और एक युवती उनके लिए लैमन टी और ताजे सेब ले आई।

“ये बताओ कि तुमने अपनी लैब के लिए इस जगह को चुनने का फ़ैसला क्यों किया, कर्मा,” अरविंद ने कहा।

“भूटान के ज़्यादातर मठों तक पहुंचने के रास्ते को जानबूझकर मुश्किल रखा जाता था,” कर्मा ने जवाब दिया। “ये सबसे पुराने मठों में से एक है, और सातवीं शताब्दी के आसपास बना था। 1864 में जब अंग्रेजों ने हमला किया था तो दुआर की लड़ाई में ये लगभग पूरी तरह नष्ट हो गया था। बहुत सालों तक ये परित्यक्त पड़ा रहा—ढहता, सुदूर और पहुंच से बाहर। जब मैं भूटान लौटा और मैंने एक लैबोरेटरी स्थापित करने की इच्छा जताई तो महारानी आशी दौरजी वांग्मो वांगचुक ने राय दी कि हम इस जगह का पुनरोद्धार करें और इसे काम में लाएं।”

“अब मुझे अपने प्रोजेक्ट के बारे में बताओ,” अरविंद ने कहा।

“ये बहुत सीधा-सादा, फिर भी जटिल है,” कर्मा ने बताया।

“आप अशोक के बारे में कितना जानते हैं?”

“मौर्य सम्राट?” अरविंद ने पूछा।

“हां,” कर्मा ने कहा। “कहा जाता है कि अशोक के राज्य के दौरान, मौर्य साम्राज्य ने दीर्घजीविता के विज्ञान पर काफी खोज की थी। उनकी खोज अमरत्व के अमृत की तलाश थी।”

“क्यों? क्या कोई फ़ौरी ज़रूरत थी?” अरविंद ने पूछा।

“कलिंग युद्ध,” कर्मा ने जवाब दिया। “उस खूनी लड़ाई में लगभग तीन लाख लोग मारे गए थे और अशोक इतने खूनख़राबे को लेकर पछतावे में था। शायद उसका कोई

अंश मृतकों को फिर से ज़िंदा कर देना चाहता था। उसने अनुसंधानकर्ताओं का एक दल बनाया था जिन्हें नौ अज्ञात कहा जाता था।"

"निश्चय ही ये कोरी कल्पना है," विनय ने मज़ाक़ उड़ाया। 1923 में प्रकाशित अमेरिकी लेखक टाल्बट मंडी के उपन्यास द नाइन अननोन ने इस धारणा को प्रचलित किया था कि अशोक ने वैज्ञानिक शोध के लिए समर्पित एक गुप्त समाज की स्थापना की थी।

"साज़िश के सिद्धांत के तर्क की बातों में मत आओ," कर्मा ने कहा। "मंडी ने अनुमान लगाया था कि नौ व्यक्ति भिन्न विषयों जैसे प्रोपैगैंडा, फ़िज़ियोलॉजी, माइक्रोबायोलॉजी, अल्कैमी, संचार, गुरुत्वाकर्षण, खगोल शास्त्र, प्रकाश और समाजविज्ञान में शोधरत थे। ये बकवास है। बेशक नौ व्यक्ति थे मगर वो पूरी तरह से अठारह मुख्य प्रक्रियाओं को विकसित करने में लगे थे।"

"कैसी प्रक्रियाएं?" अरविंद ने पूछा।

"मानव दीर्घजीविता को पाने की प्रक्रियाएं।"



कर्मा उन्हें कॉन्फ़्रेंस रूम से लैब में ले गया। सुदूर छोर पर हज़ारों जैलीफ़िश से भरा एक विशाल टैंक था। फिर कर्मा ने अरविंद और विनय को विशेष चश्मे दिए जिनसे उनकी दृष्टि में इज़ाफ़ा हो गया था।

जैलीफ़िश घंटी के आकार के क़रीब ढाई सेमी चौड़े प्राणी होते हैं। शीर्ष पर थोड़ी सी मोटाई के अलावा उनके पेट की दीवारों में मौजूद जैली समान रूप से पतली होती है। उनके शरीर की सबसे ख़ास बात उनके चमकीले लाल रंग, और क्रॉस के आकार का बड़ा सा पेट था। कमउम्र नमूनों में क़रीब आठ स्पर्शक होते हैं लेकिन बड़ों में कोई दस होंगे।

"इन्हें टचुरिटॉपसिस दोहणी कहते हैं," कर्मा ने प्राणियों की ओर इशारा करते हुए कहा। "ये केवल दो इलाक़ों में पाई जाती है—मैडिटेरेनियन सी और जापान के समुद्र।"

"इनके बारे में इतना ख़ास क्या है?" विनय ने पूछा।

"यही एक प्रजाति है जिसे हम अमर मानते हैं," कर्मा ने जवाब दिया।



"अमर?" विनय ने अविश्वास से पूछा।

"तुमने एपिक ऑफ़ गिलगमेश पढ़ी है?" कर्मा ने जवाब में पूछा।

"वो प्रलय की कहानी?" अरविंद ने पूछा, हालांकि उसने वो पढ़ी नहीं थी। कर्मा ने हामी भरी।

“पढ़ने की ज़रूरत ही नहीं है,” अरविंद ने कहा। “मैंने इसी साल मुंबई की बाढ़ झेली है जब मैं वहां एक मीटिंग के लिए गया हुआ था। मैं पांच दिन फंसा रहा; और वो कोई कहानी नहीं है!”

कर्मा और विनय हंस पड़े। किसी घटना के निबटने के बाद उस पर हंसना आसान होता है। सच तो ये था कि 26 जुलाई 2005 को आई ज़बरदस्त भारी बारिश की वजह से आई बाढ़ में हज़ारों लोगों ने अपने घर गंवा दिए थे।

“एपिक ऑफ़ गिलगमेश प्राचीन मेसोपोटैमिया का एक काव्य है,” कर्मा ने प्राचीन प्रलय के मिथक पर वापस आते हुए कहा। “इसका काल उर का तीसरा वंश है- लगभग 2100 ईसा पूर्व। उस कहानी में, उत्नापिश्तिम गिलगमेश से कहता है कि अमरता का रहस्य समुद्र के तल में पाए जाने वाले एक मूंगे में है। और पता चलता है कि वो ग़लत नहीं था।”

विनय का सिर चकरा रहा था। “कैसे? प्लीज़ समझाओ, कर्मा।”

“ये खोज 1988 में अनजाने में एक जर्मन समुद्र-जीवविज्ञान के छात्र क्रिश्चियन सॉमर ने की थी। उसने सारी गर्मियां इटैलियन रिविएरा पर एक छोटे से शहर रापाल्लो में बिताई थीं,” कर्मा ने कहा। “वो हाइड्रोज़ोअन्स पर रिसर्च कर रहा था। वो छोटे अकशेरुकी होते हैं जो अपने जीवनचक्र के चरण के अनुसार जैलीफ़िश या नर्म मूंगे जैसे दिख सकते हैं।”

“उसे क्या पता लगा?” अरविंद ने पूछा।

“उसने जो सैकड़ों जीव जमा किए थे, उनमें ट्युरिटॉपसिस डॉर्नी यानी अमर जैलीफ़िश नाम की एक अज्ञात प्रजाति थी। सॉमर ने उन्हें पैट्री डिशेज़ में रखा और उनकी प्रजनन प्रवृत्तियों को देखा,” कर्मा ने उत्तर दिया। “उसने देखा कि उसकी अमर जैलीफ़िश मरने को तैयार ही नहीं थीं। उनकी उम्र पीछे लौटती प्रतीत होती थी, वो युवा और युवा होती जातीं जब तक विकास के शुरुआती चरणों में नहीं पहुंच जातीं, उस बिंदु पर ये अपने जीवनचक्र को नए सिरे से शुरू करती हैं।”

“और इसकी क्या वजह हो सकती है?” अरविंद ने पूछा।

“अगर कोई जैलीफ़िश पर्यावरणीय दबाव या शारीरिक हमले की ज़द में आती है, या बीमार या बूढ़ी हो जाती है, तो ये पॉलिप चरण में लौट सकती है,” कर्मा ने जवाब दिया। “ये एक प्रक्रिया के जरिए जिसे ट्रांस-डिफ़रेंशिएशन कहते हैं, कोशिकाओं की विभेदक स्थिति को बदलते ओर उन्हें नए प्रकार की कोशिकाओं में रूपांतरित करते हुए ऐसा करती है, मूल कोशिकाओं की तरह।”

“उम्र को पलटना,” विनय बड़बड़ाया।

“ये एक ऐसे जीव का एकमात्र स्थापित केस है जो एक एकाकी इकाई के रूप में यौन परिपक्वता को पाने के बाद पूरी तरह से यौन अपरिपक्वता, उपनिवेशी चरण में लौटने में सक्षम हैं,” कर्मा ने कहा। “सैद्धांतिक रूप से, ये प्रक्रिया प्रभावी रूप से जैलीफ़िश को जैविक रूप से अमर बनाते हुए अनंतकाल तक जारी रह सकती है।”



“अशोक तुम्हारी इस जैलीफ़िश रिसर्च में कहां फ़िट होता है?” विनय ने पूछा। कर्मा ने इस सवाल का जवाब नहीं दिया। इसके बजाय वो उन्हें एक दीवार के पास ले गया जिस पर एक बड़ा सा पोस्टर लगा था। उसे वनस्पतीय रंगों के प्रयोग से एक बहुत पुराने काग़ज़ पर छापा गया था और फिर कांच की एक विशाल प्लेट से बंद कर दिया गया था।

“पढ़ो इसे,” कर्मा ने कहा। अरविंद और विनय ने पढ़ना शुरू किया।

रसायन के अठारह चरण

1. स्वेदन: अनेक पौधों के सत, कुछ खनिजों, क्षारों और लवणों के साथ पारद को वाष्प में पकाएं।
2. मर्दन: वाष्पित पारद को पौधों और क्षारीय सामग्रियों के साथ ओखली में मलें।
3. मूर्च्छन: ओखली में पौधों के सत्व के साथ पारद का तब तक महीन चूर्ण बनाएं जब तक कि ये अपना स्वरूप और आकार न खो दे।
4. उत्थापन: पारद को क्षारों, लवणों, त्रिफला-हरण, बहेड़ा और आंवला और फ़िटकरी के साथ वाष्प में पकाएं। फिर उसे धूप में मलें ताकि अशुद्धियों से मुक्त होकर पारद की विशिष्टताएं पुन: प्राप्त हो सकें।
5. पतन: तीनों विधियों, उध्व, अधः एवं त्रियक का प्रयोग करके क्षारों और लवणों के साथ पारद को पीसें और प्राप्त उत्पाद का आसवन करें।
6. रोधन: आसवित पारद को लवणीय जल के साथ एक बंद पात्र में रखें ताकि इसकी शक्ति और बल बना रहे।
7. नियमन: परिवर्तनशीलता को रोकने के लिए पारद को तीन दिन तक वनस्पति उत्पादों, फ़िटकरी, सुहागा और लौह सल्फ़ेट के साथ वाष्प में पकाकर प्रक्रिया को जारी रखें।
8. संदीपन: उत्पाद को फ़िटकरी, काली मिर्च, खट्टे मांड के साथ एक हफ़्ते तक उबालें ताकि अभ्रक पूरी तरह घुल जाए।
9. गगनग्रास: अभ्रक, गगन के सत्व को अभीष्ट मात्रा में मिलाएं और ठीक करें।
10. कारण: उत्पाद को खट्टे मांड, विशिष्ट वनस्पतियों के पत्ते और फ़िटकरी के साथ एक हफ़्ते तक उबालें ताकि अभ्रक पूरी तरह घुलमिल जाए।
11. गर्भद्रुति: पारद को धातुओं के साथ गर्म और संसाधित करें जिससे पारद का सत तरलीकृत हो जाए और उत्पाद को किसी वस्त्र से छाना जा सके।
12. बाह्यद्रुति: खनिजों के सत या धात्वीय तत्वों को बाहरी रूप से प्राप्त करें।
13. जारण: पारदीय उत्पाद को अभीष्ट खनिजों या धातुओं, क्षारों एवं लवणों के साथ गर्म करें ताकि वो पूरी तरह घुलमिल जाएं।

14. रंजन: पारद को गंधक, स्वर्ण, चांदी और तांबे के साथ-साथ लवणों से इस प्रकार संसाधित करें कि पारद रंगत प्राप्त कर ले।

15. सारण: रूपांतरण में तेज़ी लाने के लिए पारद को स्वर्ण या चांदी के साथ किसी तैल-आधार में अवशोषित करें।

16. क्रमण: पारद पर पौधों के रस, खनिजों और दूध का लेप करें, और फिर इसकी परिवर्तनकारी शक्तियों को सक्रिय करने के लिए इसे गर्म करें।

17. वेधन: परिणामस्वरूप प्राप्त पारद को तैल सहित कुछ चयनित तत्वों के साथ मलें ताकि इसे परिवर्तनकारी शक्तियां प्राप्त हो सकें।

18. भक्षण: पुनर्यौवन, दीर्घजीविता और अमरत्व के लिए उपरोक्त सत्रह प्रक्रियाओं से संसाधित हुए इस पारदीय उत्पाद की नियत गुणवत्ता और मात्रा का उपभोग करें।

"मैं अभी भी नहीं समझ पाया," विनय ने सभी सत्रहों चरणों को पढ़ने के बाद कहा। "अमरता या जैलीफ़िश से अशोक के शोध का क्या संबंध है?"

"जैलीफ़िश कहां रहती हैं?" कर्मा ने पूछा।

"समुद्र में," विनय ने जवाब दिया।

"समुद्रों के खारे पानी की मछलियां, जैसे टचूना, मैकरेल और शार्क कभी-कभी उन इंसानों के लिए समस्या पैदा कर देती हैं जो उन्हें खाते हैं," कर्मा ने कहा। "याद है वो क्या समस्या होती है?"

"पारे की विषाक्तता?" विनय ने सुझाया।

"सही, पारे की विषक्तता," कर्मा ने कहा। "तुम देखोगे कि अशोक के अठारह चरण पारद पर फ़ोकस करते हैं। ये मेरी अवधारणा है कि वही पारा जो हमारी जान ले सकता है, अमरता भी प्रदान कर सकता है। जैलीफ़िश के लिए इसने यही किया होगा।"



"तो अमरता की रेसिपी वास्तव में है क्या?" विनय ने पूछा।

"ये हम अभी नहीं बता सकते," कर्मा ने जवाब दिया। "चीनियों का विश्वास है कि लिन्शी मशरूम अमरता का मशरूम है। कहा जाता है कि फ़ैंगशी नाम से ज्ञात कीमियागरों को पेंगलाइ पर्वत के उन गुप्त स्थानों का पता था जहां लिन्शी उगते थे। हम अब तक एक भी नहीं ढूंढ़ पाए हैं।"

"कोई और संभावना?" विनय ने पूछा।

"फिर अमृत-या सोम-है जिसे कहते हैं कि क्षीरसागर को मथकर निकाला गया था। कुछ साल पहले, एक पुरातत्ववेत्ता विक्टर सैरियानिडी को अफ़ग़ानिस्तान के एक स्थल पर ऐसे पात्र मिले थे जिन्हें कथित तौर पर सोम बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। उनमें सोमलता, अफ़ीम और भांग के अंश मौजूद थे। ये चीज़ें निश्चय ही भ्रांतिकारी प्रभाव तो उत्पन्न करती हैं, मगर नश्वरता से लड़ने में नाकाम होती हैं।"

“इसमें पारा कहां फ़िट होता है?” विनय ने पूछा।

“दीर्घजीविता के लिए तरल धातुओं के सेवन की धारणा हमेशा से रही है,” कर्मा ने कहा। ये बहुत पुरानी है। मिस्रवासी, यूनानी, रोमवासी, चीनी और भारतीय धातुओं को मज़बूत और प्रकटत: अविनाशी मानते थे। ये माना जाता था कि जो भी इन धातुओं को खाएगा, वो इन विशेषताओं को हासिल कर लेगा। इन प्रयोगों की वजह से अमर होने की जगह मौत का अनुभव करने वाले लोगों की संख्या बहुत ज़्यादा थी; लेकिन अब हमें ऐसा पता लगता मालूम हो रहा है कि पारे में वाक़ई कुछ दिलचस्प गुण हैं।”

“और पश्चिम?” विनय ने पूछा। “क्या वो भी हमेशा से अमरता की खोज में शामिल नहीं रहे थे?”

“बिल्कुल रहे थे,” कर्मा ने कहा। “फिलॉसफ़’र्स स्टोन और एलिक्ज़िर ऑफ़ लाइफ़ के लिए यूरोपीय खोज होती रही थी। पत्थर पूर्णता, ज्ञान और आनंद का प्रतीक था। थ्योरी ये थी कि पृथ्वी, वायु, अग्नि और जल मूल तत्व से उत्पन्न हुए थे। मूल तत्व की प्राप्ति अमरता का मार्ग था!”

“क्या अशोक के नौ अज्ञात व्यक्तियों ने अमरता के रहस्य को खोज लिया था?” अरविंद ने पूछा। “क्या हमें पता है कि क्या हुआ था?”

“अशोक की राजाज्ञाएं स्तंभों, चट्टानों और गुफाओं पर लिखे पैंतीस शिलालेखों में पाई जाती हैं। ये शिलालेख आज के बांग्लादेश, भारत, नेपाल और पाकिस्तान के क्षेत्रों में बिखरे हुए हैं। इनमें से किसी भी शिलालेख में नौ व्यक्तियों या उनकी रिसर्च का कोई ज़िक्र नहीं है। वो कोई गुप्त प्रोजेक्ट रहा होगा। ये भी मुमकिन है कि टीम को भंग कर दिया गया हो,” कर्मा ने कहा।

“यानी कोई सीधा सुबूत नहीं है?” विनय ने पूछा।

“कोई सुबूत नहीं है,” कर्मा ने उत्तर दिया। “लेकिन अप्रत्यक्ष साक्षय हैं।”

“क्या?” विनय ने पूछा।

“सोना,” कर्मा ने जवाब दिया।



“सोना?” अरविंद ने पूछा। “क्या मतलब?”

“ग्यारहवीं सदी के फ़ारसी रसायनशास्त्री और चिकित्सक अबु रेहान बरूनी हमें बताते हैं कि प्राचीन भारत में रसायन नाम की विद्या प्रयोग में थी,” कर्मा ने उत्तर दिया। “इसका लक्षय उन लोगों को सेहत वापस प्रदान करना था जिन्हें लाइलाज बीमारियां होती थीं। ये बुज़ुर्गों को युवावस्था वापस लौटाने के लिए थी। प्रभावी रूप में, ये मानव शरीर को नश्वर से अनश्वर में परिवर्तित करने से जुड़ी थी।”

“लेकिन इसका सोने से क्या संबंध है?” अरविंद ने पूछा।

“अगर कोई पारे पर किए—सेवन करने के अठारहवें चरण से पहले के—सत्रहों चरणों को करता तो वह पारे को सोने में बदल सकता था, अतिरिक्त उपचारात्मक शक्तियों के साथ,” कर्मा ने कहा।

“वो अप्रत्यक्ष साक्षय क्या है जिसके बारे में तुम कह रहे थे?” अरविंद ने पूछा।

“भारतीय इतिहास,” कर्मा ने कहा।



“भारतीय इतिहास?” चकराए हुए अरविंद ने पूछा।

“भारतीय इतिहास में ऐसे कई काल रहे हैं जब कुछ पूजास्थल ज़बरदस्त दौलतमंद हो गए थे,” कर्मा ने जवाब दिया। “ज़्यादातर ये शासकों द्वारा दिया गया दान था।”

“मेरा अनुमान है कि शासकों का मंदिरों में सोना या रत्न दान करना आम रहा होगा,” विनय ने कहा।

“सच है,” कर्मा ने उत्तर दिया। “लेकिन बहुत से उदाहरणों में योगदान राजा की सामान्य क्षमता से कहीं ज़्यादा था। समुद्रगुप्त, हर्ष, नागभट्ट, कृष्णदेवराय, मार्तंड वर्मा और यहां तक कि महाराजा रंजीत सिंह कुछ ऐसे शासक थे जिन्होंने अपने स्पष्ट स्रोतों से कहीं ज़्यादा दौलत बांटी थी।”

“आज की दुनिया में आयकर वालों को स्रोत बताने में उन्हें मुश्किलें पेश आतीं,” अरविंद ने चुटकी ली।

“तुम वही कह रहे हो जो मैं सोच रहा हूं कि तुम कह रहे हो?” विनय ने कर्मा से पूछा।

“मैं वाक़ई यही कह रहा हूं,” कर्मा ने कहा। “बहुत मुमकिन है कि सोना बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाला रसायन का फ़ॉर्मूला एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंपा गया हो।”

“जैसे राजा से युवराज को?” विनय ने पूछा।

“नहीं,” कर्मा ने कहा। “अगर ऐसा होता तो हम सोने का सारा भंडार उपमहाद्वीप के एक ही भौगोलिक क्षेत्र में सीमित पाते। ऐसा लगता है जैसे प्राचीन राज्यों की सीमाएं पार करके वो फ़ॉर्मूला आड़े-तिरछे रास्तों से भारत भर में गया हो। ये हमें इस निष्कर्ष पर लाता है कि उस फ़ॉर्मूले को एक अभ्यासी से दूसरे को सौंपा गया होगा—ज़रूरी नहीं है कि वो रक्त संबंधी ही रहे हों।”

“अगर ऐसा था तो भारत के सारे मृत राजा ज़िंदा क्यों नहीं हैं?” विनय ने पूछा। “अगर रसायन अमरता पाने में मदद कर सकता था, तो जो इसका अभ्यास करते थे, उन्हें इस कहानी को सुनाने के लिए जीवित होना चाहिए था।”

“बिल्कुल सही कहते हो,” कर्मा ने कहा। “मेरा अनुमान है कि अशोक की रिसर्च पूरी नहीं हुई थी। ये भी मुमकिन है कि कुछ जानकारी इतने युगों में धुंधला गई हो।”

“तुम्हें लगता है तुम इसे ढूंढ़ सकते हो?” अरविंद ने पूछा।

“यही तो मैं पता लगाने की कोशिश कर रहा हूं,” कर्मा ने कहा।

“कैसे?”

“उस प्रजाति से पीछे जाकर जो हमें पता है कि अमर है,” कर्मा ने जवाब दिया। “इसीलिए मेरी कंपनी का नाम रसायन का उलटा है—अनयसार।”

“तुम्हें कितना पैसा चाहिए?” अरविंद ने पूछा।

“लगभग सौ करोड़,” कर्मा ने कहा। “मुश्किल ये है कि हमें दूसरे देशों में लैब बनानी पड़ेंगी ताकि दुनिया भर के बेहतरीन रिसर्चर टीम बनाकर इस चुनौती को पूरा कर सकें। इसीलिए हमने वास्तविक लागत निकाली है। मैं कंपनी का अपना चालीस प्रतिशत हिस्सा बेचने और अपने पास केवल बीस प्रतिशत रखने को तैयार हूं।”



खेल और युवा मामलों के माननीय मंत्री नई दिल्ली के शास्त्री भवन के 401 नंबर कमरे के अपने ऑफ़िस में बैठे थे। प्रधानमंत्री ने मुझे यही मंत्रालय क्यों दिया? उसने मन ही मन सोचा। क्या ये मुझे पैसा कमाने से रोकने की इच्छा है? सच तो ये था कि नागरिक उड्डयन मंत्रालय में यश धर का कार्यकाल भ्रष्ट सौदों के लिए बदनाम रहा था। कोई भी प्रधानमंत्री ग़लती को दोहराना नहीं चाहता।

टीकवुड की विशाल मेज़ के दूसरी ओर सचिवों की क़तार बैठी थी—खेल सचिव, अतिरिक्त सचिव, संयुक्त सचिव, उप सचिव और एक अवर सचिव। इतने सारे सचिवों के होते कोई हैरानी नहीं कि सरकार शायद ही कभी कुछ कर पाती है, यश धर ने मन ही मन सोचा।

यश को ये बात ज़रा अखरी थी कि उसके दोस्त अरबाज़ शेख़ को रेलवे दे दिया गया था। वो मोटी कमाई की, पैसा बनाने की जगह थी। पिछले साल रेलवे का वार्षिक व्यय 33,000 करोड़ रहा था। उस नांद में तो कोई भी अपना मुंह डाल सकता था!

“आज का एजेंडा क्या है?” यश ने पूछा।

सचिव ने अपना गला साफ़ किया। “मैंने आपके लिए पॉइंट्स की सूची बना ली है, मंत्री जी,” उसने उसे थमाते हुए कहा। यश ने उस पर नज़र डाली।

1. नेहरू युवा केंद्रों का सुधार।
2. नेशनल सर्विस स्कीम (एनएसएस) की समीक्षा।
3. राष्ट्रीय खेल महासंघों और क्षेत्रीय खेल संगठनों के चुनाव।
4. भारतीय खेल प्राधिकरण (एसएआई) का पुनर्गठन।
5. लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय (एलएनआईपीई) का सुधार।
6. राजीव गांधी राष्ट्रीय युवा विकास संस्थान (आरजीएनआई वाईडी)

7. खेलों के बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए अनुदान।
8. खेल उपकरणों और खेल के मैदान के लिए ग्रामीण स्कूलों को अनुदान।
9. खेलने के लिए सिंथेटिक सतहें लगाने के लिए अनुदान।
10. विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में खेलों के उत्थान के लिए अनुदान।
11. खेल छात्रवृत्ति योजना।
12. अर्जुन पुरस्कार सूची।
13. राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार सूची
14. मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ट्रॉफ़ी
15. इंडियन प्रीमियर लीग

आख़री बिंदु पर तुरंत उसकी नज़र अटक गई। "ये इंडियन प्रीमियर लीग क्या है? मैंने सुना था कि ज़ी एंटरटेनमेंट इंडियन क्रिकेट लीग शुरू करने वाला है," उसने कहा।

"भारत में क्रिकेट का बोर्ड ऑफ़ कंट्रोल—बीसीसीआई—और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल आईसीएल को मान्यता नहीं देते," सचिव ने कहा। "खिलाड़ियों को आईसीएल में जाने से रोकने के लिए बीसीसीआई अपना खुद का मंच लॉन्च करने का सोच रही है।"

"बीसीसीआई में मेरी किस हद तक चलती है?" यश ने पूछा।

"ये भारत का सबसे अमीर खेल प्राधिकरण है और दुनिया का सबसे अमीर क्रिकेट बोर्ड है," सचिव ने कहा। "बीसीसीआई का संविधान इसकी वार्षिक जनरल मीटिंग में वार्षिक चुनावों का प्रावधान करता है। बीसीसीआई धन के लिए सरकार पर निर्भर नहीं है। बोर्ड दिसंबर 1928 में तमिलनाडु सोसाइटीज़ रजिस्ट्रेशन एक्ट के तहत रजिस्टर्ड एक सोसाइटी के रूप में बनाया गया था। इस मायने में, आपका कोई प्रभाव नहीं है।"

"लेकिन?" यश ने पूछा।

"बीसीसीआई का कोई भी पदेन सदस्य इसे सूचना अधिकार अधिनियम—आरटीआई—के तहत नहीं लाना चाहता। सबकी थाली में ढेरों छेद हैं। आप उन्हें धमका सकते हैं, ये कहकर कि आप बीसीसीआई को आरटीआई के तहत लाने की योजना बना रहे हैं।"



मेमोरियल स्लोन कैटरिंग कैंसर सैंटर मैनहटन की 67वीं और 68वीं स्ट्रीट के बीच 1275 यॉर्क एवेन्यु में स्थित था। विनय अपने माता-पिता को नवीं मंजिल पर रजिस्ट्रेशन डेस्क पर ले गया। डेस्क पर मौजूद अटेंडेंट ने अभिलाषा को दिन के

शेडयुल के प्रिंटआउट के साथ एक ब्रेसलेट पहनने को दिया। शेडयुल में डॉक्टर्स के अपॉइंटमेंट्स के साथ ही खून का और दूसरे टैस्ट भी लिखे थे।

एक हफ़्ते पहले, अभिलाषा अरविंद के साथ परिवार की एक शादी में गई थी। अभिलाषा के पेट में उठे तेज़ दर्द की वजह से उन्हें दस मिनट में ही वापस लौटना पड़ा। जब तक वो अस्पताल पहुंचे, अभिलाषा दर्द से दोहरी हो गई थी। अस्पताल में, नौजवान डॉक्टर ने सलाह दी कि वो बिना देर किए अभिलाषा की अपेंडिक्स निकाल दें। तब तक उनके पारिवारिक फ़िज़ीशियन डॉ. सिकदर भी आ गए। "इन्हें न बुख़ार है न उल्टी हो रही है," डॉ. सिकदर ने कहा। "बिना स्कैन किए कोई ऑपरेशन नहीं होगा।"

अभिलाषा को डायग्नॉस्टिक्स खंड में ले जाया गया। कंट्रोल रूम में खड़ा अरविंद बारीकी से टेक्नीशियन के चेहरे को देख रहा था। उसकी भंगिमा गंभीर थी। जब अरविंद ने उससे फ़ीडबैक मांगा, तो वो थोड़ा व्याकुल सा लगा और बोला कि उसे पहले चीफ़ जीपी से बात करनी होगी। अरविंद अपने मन में कहीं जान रहा था कि ये अच्छा लक्षण नहीं है।

अरविंद डॉक्टर के केबिन में गया जहां डॉ. सिकदर टेक्नीशियन और चीफ़ जीपी से बात कर रहे थे। जब वो अंदर आया तो वो चुप हो गए। "भगवान के लिए मुझे बताएं क्या बात है!" अरविंद दहाड़ा।

डॉ. सिकदर अरविंद की ओर मुड़े और बोले, "सॉरी, अरविंद जी, आपकी पत्नी को टयूमर है।" अरविंद ने पूछा कि क्या वो जानलेवा है। जवाब हां में था। अरविंद भारी मन से केबिन में पड़ी कुर्सियों में से एक पर बैठ गया और उसने अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया। वो टूट गया था। तुम मेरी राह में कितनी चुनौतियां डालोगे, भगवन? उसने हताशा से आसमान में बैठे बूढ़े बाबा से पूछा। अरविंद थक गया था। उसका एक अंश चाहता था कि वो लेट जाए और रोते-रोते मर जाए।

अगले दिन अरविंद ने खुद को डिप्रेशन से निकाला और कैंसर विशेषज्ञ के पास गया। उसे पता लगा कि अभिलाषा को चौथी स्टेज का विल्म्स टयूमर है और कि टयूमर फट गया था। ये ऐसी स्थिति थी जिसमें कैंसर की कोशिकाएं एक या दोनों किडनियों में फैल जाती हैं। चौथे स्टेज के टयूमर वो होते हैं जो किडनियों के पार दूसरे अंगों में भी फैल जाते हैं। अब ये स्पष्ट था कि पिछली बार तेज़ पेट दर्द इसलिए हुआ था कि फट गए टयूमर से अभिलाषा के पेट में रक्तस्राव हो रहा था। डॉ. सिकदर आगे की कार्रवाई को लेकर स्पष्ट थे। उन्हें अभिलाषा को अमेरिका के स्लोन कैटरिंग ले जाना था।

विनय अपनी मां की हालत सुनकर सन्न रह गया। वो जानता था कि पिछले कुछ दौरों से वो उसे बीमार सी तो दिखी थीं लेकिन उसने ये कल्पना भी नहीं की थी कि उन्हें कैंसर हो सकता है। न्यूयॉर्क में वो तुरंत सक्रिय हो गया, उसने स्लोन कैटरिंग में प्रमुख डॉक्टरों से मुलाकात की और कलकत्ता से अपने माता-पिता के आने की प्रत्याशा में सारे ज़रूरी इंतज़ाम कर लिए। उसने भूटान में कर्मा से भी बात की जो बहुत मददगार रहा, उसने विनय का संपर्क अपने सभी संबद्ध मेडिकल संपर्कों से करवा

दिया। अलीशा लगातार विनय के साथ रही। वो जानती थी कि वो केवल उसके ही कंधे पर सिर रखकर रो सकता है।

जिस दिन अरविंद और अभिलाषा न्यूयॉर्क आए, विनय और अलीशा जेएफ़के एयरपोर्ट पहुंच गए थे और आतुरता से उनसे मिलने का इंतज़ार कर रहे थे। तीस मिनट के इंतज़ार के बाद डॉ. सिकंदर के साथ अरविंद के माता-पिता बाहर आए। विनय अपने पिता से मिलने के लिए तेज़ी से आगे बढ़ा और उसने उनके पैर छुए। अपनी कमज़ोर हालत में भी अभिलाषा ने अलीशा को आगे आने का इशारा किया। उसने हल्के से अपनी बहू के दोनों गालों को चूमा और उसे गले से लगा लिया। "मुझे हमेशा एक बेटी की कमी खलती रही है। तुमने मेरी वो मुश्किल हल कर दी है," जब अलीशा उसे प्रतीक्षारत कार की ओर ले जा रही थी तब उसने कहा था।



उन्होंने 61वीं स्ट्रीट और फ़िफ़्थ एवेन्यु पर पियर में चैक इन किया और तुरंत ही अभिलाषा के पहले परामर्श के लिए यॉर्क एवेन्यु की ओर चल दिए। अगले दिन, स्लोन कैटरिंग के एक सर्जन ने प्रारंभिक सर्जरी की। फटने की वजह से ट्यूमर सारे पेट में बिखर गया था। ये काग़ज़ के पन्ने की तरह था और इसे आसानी से नहीं निकाला जा सकता था। एक टिश्यु सैंपल लिया गया और अरविंद, विनय और डॉ. सिकदर को परिणामों के लिए अड़तालीस घंटे इंतज़ार करना पड़ा।

दो दिन बाद, वो ये बताए जाने के लिए डॉक्टर के ऑफ़िस के बाहर इंतज़ार कर रहे थे कि अभिलाषा के ट्यूमर की हिस्टोलॉजी अनुकूल है या प्रतिकूल। रिपोर्ट अच्छी थी। अभिलाषा का ट्यूमर इलाज पर सकारात्मक प्रतिक्रिया करता। डॉक्टरों ने तुरंत ट्यूमर को ऑपरेशन से निकालने से पहले कीमोथेरेपी से सुखाने का फ़ैसला किया।

दो हफ़्ते बाद जब सर्जरी हुई, तब कर्मा न्यूयॉर्क आ गया था। उसके द्वारा बताया गया सर्जन कंसल्टिंग हेपेटोलॉजिस्ट भी था। ऑपरेशन के दौरान डॉक्टरों को अभिलाषा के लिवर, डायफ़्राम और गुर्दों का कुछ हिस्सा भी निकालना पड़ा।

ऑपरेशन के एक हफ़्ते बाद, ट्यूमर की बची-खुची कोशिकाओं को ख़त्म करने के लिए स्लोन कैटरिंग के रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट की देखरेख में अभिलाषा की रेडिएशन थेरेपी शुरू हुई।

इसके साथ ही कर्मा की बताई एक वैकल्पिक थेरेपी भी चल रही थी।



"अनयसार रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड के स्वामित्व का रूप इस समय क्या है?" अरविंद ने पूछा। बाप-बेटे उनके अलीपुर रोड वाले घर में थे। अभिलाषा लॉन में टहल रही थी।

"चालीस फ़ीसदी हमारे पास है, कर्मा के पास बीस फ़ीसदी है। बक़ाया चालीस

फ़ीसदी सरदार हरपाल सिंह के हाथ में है।"

"क्यों न हम सरदार हरपाल सिंह से बात करें और पता करें क्या वो अपने कुछ शेयर हमें बेचना चाहेंगे?" अरविंद ने पूछा। "कर्मा जो शानदार काम कर रहा है, उसे लेकर मैं बहुत उत्साहित हूं।"

"आप ऐसा कर सकते हैं," विनय ने कहा। "आज रात मैं अमेरिका वापस जा रहा हूं क्योंकि अलीशा को मेरी ज़रूरत है। साथ ही, कर्मा भी कुछेक दिन में न्यूयॉर्क से जा रहा है। उसके भूटान वापस जाने से पहले मुझे उससे मिलना है।"

डॉक्टरों ने बागड़िया परिवार को कलकत्ता वापस भेज दिया था। अरविंद शुरू में तो हिचकिचा रहा था मगर स्लोन कैटरिंग के डॉक्टरों और कर्मा ने उसे ये क़दम उठाने के लिए प्रेरित किया। उन्हें विश्वास था कि अभिलाषा अपने जाने-पहचाने माहौल में वापस जाएगी तो उसकी हालत में बहुत सुधार आएगा। इलाज के अंग के रूप में उसे कर्मा की थेरेपी भी जारी रखनी थी।

जब कर्मा ने कीमो के साथ अपनी औषधि देने का विचार रखा, तो अरविंद को थोड़ी शंका थी मगर कर्मा के तर्कों ने उसे जीत लिया।

"पांच हज़ार साल पहले, आयुर्वेद के डॉक्टर ट्यूमर वाले मरीज़ों का इलाज कर रहे थे। चरक संहिता, सुश्रुत संहिता साथ ही अष्टांग हृदयम् में इलाजों का विस्तृत ब्योरा दिया गया है," कर्मा ने अरविंद को समझाया।

"वो वैकल्पिक थेरेपी क्या है जो तुम देना चाहते हो?" अरविंद ने पूछा।

"सेलाजिनेला ब्रायोप्टेरिस," कर्मा ने कहा।

"वो क्या होता है," अरविंद ने पूछा।

"मेरे रिसर्चरों द्वारा किए गए एक अध्ययन में पता लगा है कि सेलाजिनेला ब्रायोप्टेरिस से विकसित कंपाउंडों ने लैबोरेटरी में कैंसर की कोशिकाओं का विकास रोक दिया था। ये एक पारंपरिक भारतीय जड़ी है," कर्मा ने कहा।

"क्या इसका कोई आम नाम भी है?" अरविंद ने पूछा।

"इसे संजीवनी भी कहते हैं।"



"तुम संजीवनी पर ही कैसे पहुंचे?" अरविंद ने पूछा।

"आपको वो जैलीफ़िश याद है जो मैंने आपको अपनी लैबोरेटरी में दिखाई थी?" कर्मा ने पूछा। "क्या आपने ध्यान दिया था कि जैलीफ़िश अंधेरे में चमकती है? इस गुण को जीवदीप्ति कहते हैं-किसी जीवधारी द्वारा रोशनी पैदा करने की क्षमता।"

"तो?" अरविंद ने पूछा।

"रामायण में इसका वर्णन उस जड़ी के रूप में किया गया है जिसे रावण के बेटे

इंद्रजीत के साथ युद्ध में घायल लक्ष्मण को पुनर्जीवित करने के लिए हनुमान लेकर आए थे। वाल्मीकि रामायण में जामवंत हनुमान से कहते हैं: हे हनुमान, केवल तुम ही हो जो दोनों भाइयों के साथ-साथ सारे वानरों की जान भी बचा सकते हो। हिमालय पर, कैलाश और ऋषभ पर्वतों के बीच जीवनदायी जड़ी-बूटियों का एक पर्वत है। तुरंत हिमवन नाम के पर्वत की सुनहरी चोटी पर जाओ, जो कि जड़ी-बूटियों से समृद्ध है, और चार चमत्कारिक जड़ी लेकर आओ। संजीवनी नाम की जड़ी मरते हुओं को जिला देती है... इससे हमेशा प्रकाश निकलता है।"

कर्मा ने जो कहा था, उस पर विचार करते हुए अरविंद ख़ामोश रहा।

"ये स्पष्ट है कि जैलीफ़िश और संजीवनी दोनों में ही कोई विशेष चीज़ है जो प्रकाश उत्पन्न करती है और स्वस्थ करती है," कर्मा ने कहा।



रेलवे के माननीय मंत्री अपने टेलीविज़न स्क्रीन पर मची अस्तव्यस्तता को देख रहे थे। उस दिन, 11 जुलाई 2006 को मुंबई सबर्बन रेलवे नेटवर्क पर ग्यारह मिनट के अंदर सात बम विस्फोट हुए थे।

"क्या पता लगा है?" अरबाज़ ने रेलवे सचिव से पूछा।

"ऐसा लगता है कि पश्चिमी लाइन पर चल रही रेलगाड़ियों में प्रेशर कुकर बम रखे गए थे," सचिव ने कहा। "क्या आप मुंबई जाने का सोच रहे हैं?"

"नहीं," अरबाज़ ने कहा। "मेरी मौजूदगी स्थानीय प्रशासन के लिए और ज़्यादा परेशानी खड़ी कर देगी। हम ऐसी चीज़ों पर फ़ोकस करते हैं जिन्हें हमें करना है और उन्हें करवाते हैं। आपके पास उन रेलगाड़ियों की सूची है जिन्हें उड़ाया गया है?"

सचिव ने उसे अरबाज़ की ओर बढ़ा दिया।

1. चर्चगेट से उत्तर की ओर जाने वाली लोकल, खार रोड-सांताक्रूज़ पर विस्फोट, फ़र्स्ट क्लास डिब्बा, समय *18:24*
2. चर्चगेट-बोरीवली की फ़ास्ट लोकल, बांद्रा-खार रोड पर विस्फोट, फ़र्स्ट क्लास डिब्बा, समय *18:24*
3. चर्चगेट-बोरीवली की स्लो लोकल, जोगेश्वरी पर विस्फोट, फ़र्स्ट क्लास डिब्बा, समय *18:25*
4. चर्चगेट-बोरीवली की फ़ास्ट लोकल, माहिम जंक्शन पर विस्फोट, फ़र्स्ट क्लास डिब्बा, समय *18:26*
5. चर्चगेट से उत्तर को जाने वाली, मीरा रोड-भयंदर पर विस्फोट, फ़र्स्ट क्लास डिब्बा, समय *18:29*
6. चर्चगेट-विरार की फ़ास्ट लोकल, माटुंगा रोड-माहिम जंक्शन पर विस्फोट, फ़र्स्ट क्लास डिब्बा, समय *18:30*

7. चर्चगेट-विरार की फ़ास्ट लोकल, बोरीवली पर विस्फोट, फ़र्स्ट क्लास डिब्बा, समय *18:35*

"ये साज़िश बड़ी सोच-समझकर बनाई गई थी," अरबाज़ ने कहा। "सारे बम चर्चगेट पर रखे गए थे और टाइमर से सैट किए गए थे ताकि वो ख़ास स्टेशनों पर ही फटें। ये कोई आम हमला नहीं है। हरामज़ादों ने बाद में जलने के घावों को बढ़ाने के लिए प्रेशर कुकरों तक का इस्तेमाल किया।"

"क्या हम मुआवज़े का ऐलान कर दें?" सचिव ने पूछा।

अरबाज़ ग़ुस्से से भड़क उठा। "आपको लगता है मुआवज़े से सब ठीक हो जाएगा? क्या हम यही सोचते हैं कि पैसा घर के किसी मेंबर की कमी को पूरा कर सकता है? मौजूदा समस्या पर बात करें। मुआवज़े पर सबसे बाद में सोचेंगे।"

सचिव और कमरे में मौजूद दूसरे लोग ख़ामोश रहे। ये ऐसा मंत्री नहीं था जिसके साथ खेल खेले जाएं। "मुझे बचाव प्रयासों का अपडेट दें," अरबाज़ ने कहा।

"हमारे शुरुआती प्रयासों में भारी बारिश और मानसूनी पानी के जमाव से बाधा पड़ी थी," डांट खाए सचिव ने कहा। "ख़ुशक़िस्मती से साथी यात्रियों और वहां मौजूद लोगों ने लोगों को इंतज़ार करती एंबुलैंसों तक पहुंचाने में मदद की।"

"मैं चाहता हूं विस्फोट की हरेक जगह पर फ़र्स्ट एड देनेवालों की टीमें हों। ये तुरंत करवाएं," अरबाज़ ने कहा।

फिर अरबाज़ ने फ़ोन उठाया और ख़ुद मुंबई के सबसे बड़े प्राइवेट अस्पतालों के प्रबंधकों से बात की। "आपको घायलों की भीड़ का सामना नहीं करना पड़ेगा," उसने उनसे कहा। "ज़्यादातर को सरकारी अस्पतालों में ले जाया जा रहा है। मैं चाहता हूं कि आप स्टेशनों पर टीमें नियुक्त करें ताकि घायलों को फ़र्स्ट एड मिल सके। सारा ख़र्च सरकार उठाएगी।"

टेलीविज़न तस्वीरें दिखा रहा था, उनमें से एक अपनी नन्ही बेटी की लाश उठाए एक पिता की थी। वो बुरी तरह रो रहा था।

"रेलवे लाइनों की क्या स्थिति है?" अरबाज़ ने ज़बरदस्ती ख़ुद को सामने मौजूद अहम मसलों की ओर मोड़ते हुए पूछा।

"पश्चिमी लाइन को कुछ समय के लिए बंद कर दिया गया है," सचिव ने कहा।

"सेवाएं फिर से शुरू होने दें," अरबाज़ ने कहा। "पक्का करें कि सख़्त सुरक्षा इंतज़ाम हों, यात्रियों की टटोलकर जांच करने और तलाशी लेने समेत।"

एक बार फिर अरबाज़ ने फ़ोन उठा लिया। ये कॉल मुंबई में मुरली को थी। "मुरली, तुम बेस्ट के चीफ़ को जानते हो? उनसे बात करो। पता करो क्या वो अतिरिक्त बसें चलवा सकते हैं ताकि असहाय यात्री सुरक्षित घर पहुंच सकें।"

"और मोबाइल टॉवर्स? वो काम कर रही हैं?" अरबाज़ ने पूछा।

"फ़िलहाल जाम हैं," सचिव ने जवाब दिया।

“टीवी चैनलों से बात करें। पता करें क्या वो उन लोगों के लिए एसएमएस संदेश चला सकते हैं जो अपने परिवारों से संपर्क करना चाहते हों। मोबाइल सेवाओं को फिर से शुरू होने में कुछ घंटे लग सकते हैं और ये न जानते हुए कि आपका क़रीबी जन ज़िंदा है या नहीं, घर पर इंतज़ार करने से ज़्यादा भयानक कुछ नहीं हो सकता।”

सचिव ने नोट्स बनाए और उन्हें अतिरिक्त सचिव को सौंप दिया।

“अब मुआवज़े की बात करते हैं,” अरबाज़ ने कहा। “सीरियल धमाकों में मारे जानेवाले लोगों के लिए पांच लाख रुपए के मुआवज़े और निकटतम रिश्तेदार के लिए सरकारी नौकरी का ऐलान कर दें।”

“जी, सर,” सचिव ने कहा।

“अब मेरी गुज़ारिश है मुझे अकेला छोड़ दिया जाए क्योंकि मुझे एक निजी फ़ोन करना है,” अरबाज़ ने कहा।



अलीशा ने तुरंत उसकी आवाज़ पहचान ली। ये वही आवाज़ थी जो जब वो बच्ची थी तब उसे दुलारती थी। ये वही आवाज़ थी जो जब वो स्कूल में थी तब उसके साथ वर्ड गेम खेलती थी। ये वही आवाज़ थी जिसने उसकी सारी बचकानी ज़िदों को पूरा किया था।

“अलीशा?” उसने पूछा।

उसकी बेटी ख़ामोश रही। उसकी आंखों में आंसू उबले पड़ रहे थे।

“अलीशा?” अरबाज़ ने फिर से पूछा।

“हां, डैडी,” उसने कहा, और बांध टूट गए थे।

“आई लव यू, स्वीटहार्ट,” उसने कहा। “मैं बस तुम्हारी आवाज़ सुनना चाहता था।”

“आई लव यू टू, डैडी,” अलीशा ने कहा। “मैंने आपको बहुत याद किया है।”

“इतना कठोर होने के लिए मुझे अफ़सोस है,” उसने कहा। “हम सब ग़लतियां करते हैं। क्या तुम्हारे दिल में मुझे माफ़ करने की गुंजाइश होगी?”

“मैं तो बस ये जानती हूं कि मुझे मेरे डैडी वापस मिल गए हैं,” अलीशा ने कहा। “आज, मैं बीते कल की वजह से अपना आने वाला कल नहीं बिगाड़ूंगी।”



2006 के लिए भारत के अमीरों की फ़ोर्ब्स सूची में चालीस नाम थे। उस साल की सूची में शीर्ष बीस नाम थे:

1. लक्ष्मी मित्तल (स्टील)

2. मुकेश अंबानी (विविध)
3. अनिल अंबानी (विविध)
4. अज़ीम प्रेमजी (सॉफ़्टवेयर)
5. कुशल पाल सिंह (रियल एस्टेट)
6. सुनील मित्तल (टेलीकॉम)
7. कुमार मंगलम बिड़ला (कमोडिटीज़)
8. तुलसी तांती (पवन ऊर्जा)
9. रमेश चंद्रा (रियल एस्टेट)
10. पालोनजी मिस्त्री (भवननिर्माण)
11. अनिल अग्रवाल (खनन)
12. शशि एवं रवि रुइअ (विविध)
13. आदि गोदरेज (विविध)
14. शिव नाडार (टेक्नोलॉजी)
15. इंदु जैन (मीडिया)
16. दिलीप संघवी (फ़ार्मा)
17. राहुल बजाज (उत्पादन)
18. अरविंद बागड़िया (निवेश)
19. बाबा कल्याणी (उत्पादन)
20. अरबाज़ शेख़ (निवेश)

अरविंद खुश था कि वो शीर्ष बीस में आ गया था मगर ये देखकर नाखुश भी था कि अरबाज़ शेख़ का नाम भी सूची में था।



उस शाम के5 की एक बोतल लिए कर्मा विनय और अलीशा के घर में दाख़िल हुआ। के5 भूटानी व्हिस्की थी।

“मेरा ख़्याल था भिक्षु अलग तरह के आध्यात्मिक काम करते हैं,” कर्मा ने गाल पर किस करते हुए अलीशा को बोतल थमाई तो विनय ने चुटकी ली। अलीशा फ़ेडेड जींस और काली कुर्ती पहने थी, इसकी स्मार्टनेस पीतल के एक भारी से नेकलेस से और बढ़ रही थी। वो बहुत खुश नज़र आ रही थी। इसकी वजह वो एक घंटे की बातचीत थी जो उसकी अपने पिता से हुई थी।

कर्मा मुस्कुराया। “सौ साल तक गुम रहने के बाद, इस प्राचीन रेसिपी को हिमालय के पर्वतों में एक प्राचीन डिस्टिलरी में खोजा गया था,” उसने कहा। “इस व्हिस्की को दक्षिण भूटान की गेलेफ़ू डिस्टिलरी में कुशल डिस्टिलर्स ने हाथों से संशोधित किया है।”

“विज्ञापन के ब्रेक के लिए शुक्रिया,” विनय ने फिर चुटकी ली। कर्मा लैदर के रिक्लाइनर पर बैठ गया और अलीशा पालथी मारकर सोफ़े पर बैठ गई। विनय ड्रिंक्स बनाने बार कैबिनेट की ओर चला गया।

“उस संजीवनी ने तो मेरे पिता को बहुत जोश दिला दिया है,” विनय ने कर्मा की लाई हुई के5 का घूंट भरते हुए कहा। “मैं समझता था कि ये बस काल्पनिक कहानी है!” विनय को आख़िरकार याद आ गया था कि ये वही जड़ी थी जो हनुमान लक्ष्मण के लिए लाए थे जब वो रणक्षेत्र में मरणासन्न पड़े थे।

“पश्चिमी शिक्षा पाए दिमाग़ों के साथ यही तो दिक़्क़त है,” कर्मा ने कहा, वो आराम से ये भूल गया था कि उसने भी पश्चिम में ही शिक्षा पाई थी। “ऐसी बहुत सी प्राचीन दवाएं हैं जिन्हें हमें फिर से खोजना है। फ़िलहाल हम संजीवनी, अश्वगंधा, गुग्गुल, मैंगोस्टीन और अनार पर रिसर्च कर रहे हैं। इन सभी में अविश्वसनीय कैंसररोधी गुण हैं।”

“वाक़ई?” विनय ने पूछा।

“अश्वगंधा आयुर्वेदीय पौधा है,” कर्मा ने कहा। “लैबोरेटरी में, हमने पाया कि इस जड़ी के एक कंपाउंड ने कुछ क़िस्मों के ब्रैस्ट कैंसर की कोशिकाओं के विकास को रोक दिया। इसी तरह, मेरी टीम ने गुग्गुल के गोंद से निकाले एसिटिल-11-कीटो-बेटा-बॉस्वेलिक एसिड की भी जांच की। हम वास्तव में चूहों में पेट के कैंसर की वृद्धि को धीमा कर पाए थे।”

“अविश्वसनीय,” विनय बड़बड़ाया। “क्या मेरी मां ऑपरेशन और कीमोथेरेपी के बिना ठीक हो सकती थीं, कर्मा?”

“हम अभी वहां तक नहीं पहुंचे हैं,” कर्मा ने कहा। “याद रखो, विनय, हमारी खोज दीर्घजीविता के लिए है, विशिष्ट इलाज खोजने की नहीं। ये तो बस इस खोज के दौरान हमें नई-नई चीज़ें पता लग रही हैं। उदाहरण के लिए चीनी और आयुर्वेदीय दवाओं में मैंगोस्टीन फल के प्रयोग का लंबा इतिहास है। हम फल की बाहरी परत से निकाले एल्फ़ा मैंगोस्टीन कंपाउंड की जांच कर रहे थे, जब जापान में हमारी टीम ने पाया कि ये लसिका ग्रंथियों के कैंसर की गति को धीमा कर सकता है।”

“तुमने अनार का भी ज़िक्र किया था,” विनय ने कहा।

“उसे कई धर्मों में पवित्र फल माना जाता है,” कर्मा ने कहा। “प्रतीत होता है कि अनार के जूस में कैंसररोधी गुण होते हैं जो प्रॉस्टेट, पेट और लिवर के कैंसर के लिए कारगर होते हैं।”

“यानी अमरता असंभव नहीं है?” अलीशा ने पूछा।

"ऋग्वेद के अनुसार, अमृत यक़ीनन वो ड्रिंक है जो अमरता प्रदान करती है," कर्मा ने उत्तर दिया। "ऋग्वेद में, इंद्र और अग्नि देव कहते हैं: हमने सोम पी लिया है और अमर हो गए हैं; हमने उस प्रकाश को पा लिया है जिसे देवताओं ने खोजा था। अब, शत्रु का द्वेष हमें क्या नुक़सान पहुंचा सकता है? और क्या, हे अनश्वर, नश्वर मनुष्य का कपट? क्यों न हम इस कथन को फ़ेस वैल्यु पर लें और मान लें कि प्राचीन लोगों को हल मिल गया था?"

"मेरा तो ख़्याल था कि अमृत केवल सोम है, भ्रांति पैदा करने वाला तत्व," अलीशा ने कहा।

"हिंदू, पारसी और दूसरे इंडीक आलेखों में अमृत और सोम के अनेक संदर्भ हैं," कर्मा ने बताया। "यूनानियों का अमरत्व का खाद्य एंब्रोशिया अमृत के समान ही है। दोनों शब्द एक ही इंडो-यूरोपीय मूल से निकले हैं जिसका मोटा-मोटा अर्थ है अ-मृत्यु।"



दोनों व्यक्ति लोधी गार्डन में साथ टहल रहे थे। सुबहों में ये जगह जीवंत हो उठती है, पेड़ों पर चिड़ियों की चहचहाहट के साथ झील में बत्तख़ें ज़ोर-ज़ोर से कैं, कैं कर रही थीं।

अरविंद बीती रात ही कोलकाता से दिल्ली पहुंचा था। हरपाल सिंह नियमित रूप से सुबह टहला करते थे और उन्होंने राय दी कि अरविंद भी उनके साथ शामिल हो जाए। मुलाक़ात करने का ये बेहतरीन तरीक़ा था।

कुछ देर तो दोनों इधर-उधर की बातें करते रहे। उन्होंने पाकिस्तान में बेनज़ीर भुट्टो की हत्या पर बात की। फिर उन्होंने मुंबई में अपने ही भाई के हाथों हुई बीजेपी के ताक़तवर नेता प्रमोद महाजन की हत्या पर बात की। उन्होंने भारत की अगली राष्ट्रपति के रूप में प्रतिभा पाटिल के चयन पर और जॉर्ज डब्ल्यु. बुश की भारत यात्रा पर भी चर्चा की। अंत में उन्होंने मौसम पर बात की। बात करने के लिए और कोई विषय न बचने पर वो मुद्दे की बात पर आए।

"मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं, अरविंद?" हरपाल ने पूछा।

"आपके पास अनयसार रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड नाम की कंपनी के शेयर हैं," अरविंद ने कहा। "उस कंपनी का संस्थापक कर्मा त्शेरिंग स्टैनफ़ोर्ड में विनय का रूममेट था। हमने भी कंपनी में निवेश किया है। अब हमारे पास चालीस फ़ीसदी शेयर हैं।"

"वो लड़का जीनियस है," हरपाल ने कहा। दोनों व्यक्ति बात करते और टहलते हुए सरसरी निगाह से मुहम्मद शाह के मक़बरे, सिंकदर लोधी के मक़बरे, शीश गुंबद और बड़े गुंबद पर भी नज़र डाल लेते थे।

"मैं सहमत हूं," अरविंद ने कहा। "अभिलाषा जब ऑपरेशन के बाद ठीक हो रही थी तब उसने उसे जो थेरेपी दी थी, उसने स्लोन कैटरिंग के किसी भी दूसरे मरीज़ के मुक़ाबले अभिलाषा को जल्दी ठीक कर दिया था। मुझे तो विश्वास है कि वो कुछ बड़ा

काम करने वाला है।”

नब्बे एकड़ के बाग़ को—जिसे मूल रूप से लेडी वैलिंग्टन पार्क कहा जाता था—1936 में बनाया गया था, मगर 1968 में अमेरिकी लैंडस्केप आर्किटेक्ट जॉज़ेफ़ एलन स्टीन और गैरेट एकबो ने इसे फिर से बनाया था। ये अलस्सुबह आने वाले जॉगर्स और टहलनेवालों से भरा हुआ था।

“आप मुझसे असल में क्या चाहते हैं?” हरपाल ने पूछा।

“मैं सोच रहा था कि क्या आप अपने शेयर मुझे बेचने के इच्छुक होंगे?” अरविंद ने पूछा। “शेयरों का मूल्यांकन करते हुए हम कंपनी की भावी संभावनाओं को देखेंगे।”

“मुझे अफ़सोस है मैं आपकी मदद नहीं कर सकता,” हरपाल ने कहा। “असल में, कुछ समय पहले मैंने अपने शेयर किसी को दे दिए थे।”

“सदस्यों के रजिस्टर में तो आपको अभी भी शेयरहोल्डर दिखाया जा रहा है,” अरविंद ने कहा।

“मुमकिन है,” हरपाल ने कहा। “एकाधिकार वाली कंपनी होने की वजह से ये मुमकिन है कि शेयरों का ट्रांसफ़र रजिस्टर करने में कुछ देरी लग गई हो, लेकिन मेरे चालीस फ़ीसदी शेयर अब अरबाज़ शेख़ के पास हैं।”

“अरबाज़?” अरविंद ने पूछा। “वर्तमान रेल मंत्री?”

“और आपका कारोबारी प्रतिद्वंद्वी,” हरपाल ने जोड़ा। “सच तो ये है कि भले ही आप दोनों मुख़्तलिफ़ वजहों से एक दूसरे से नफ़रत करते हों, मगर मैं आप दोनों को ही अपना दोस्त मानता हूं।”

“वो अंडरवर्ल्ड का खिलाड़ी है!” अरविंद बड़बड़ाया। “माफ़िया का!”

“हम सभी मुजरिम हैं,” हरपाल ने कहा। “और याद रखें, ज़िंदगी में फ़रिश्ते दाग़दार और शैतान ख़ूबसूरती लिए होते हैं।”



“हमें धंधा के पोर्टफ़ोलियो को थोड़ा ठीकठाक करना होगा,” मुरली ने अरबाज़ से कहा। दोनों आदमी अरबाज़ के ऑफ़िस में थे।

“क्यों?” अरबाज़ ने पूछा।

“हमने टैक्नोलॉजी कंपनियों में बहुत ज़्यादा निवेश किया हुआ है,” मुरली ने कहा। “मैं हमारे एक्सपोज़र को कम करने की सोच रहा हूं।”

“अच्छा विचार है,” अरबाज़ ने कहा। “मैं यश धर के संपर्क में था। उसका अनॉफ़िशियल टिप है कि सत्यम कंप्यूटर सर्विसेज़ एक-दो साल में औंधे मुंह गिरेगी।”

“क्यों?” मुरली ने पूछा। “उनके वित्तीय परिणाम तो बहुत बढ़िया हैं।”

“अक्सर, बैलेंस शीट बस ये बता रही होती हैं कि बैलेंस शिट है। कल ही उस कंपनी

से बाहर निकल लो।”



“वो क्या है?” कर्मा ने पूछा।

“क्या?” अलीशा ने पूछा।

कर्मा ने अलीशा की कलाई की ओर इशारा किया। “वो क्या है?”

अलीशा की छोटी सी क़द-काठी और पतले हाथों पर कोई भी चीज़ फब सकती थी। उसने वो छोटा सा तांबे का कड़ा पहन रखा था जो बहुत साल पहले एयरपोर्ट पर उसके पिता ने उसे दिया था।

“ये तो बस तांबे का कड़ा है, कर्मा,” अलीशा ने कहा। “ये मेरे डैड ने मुझे दिया था। इसकी कुछ एंटीक और जज़्बाती क़ीमत है। मगर मुझे कभी समझ नहीं आया कि इस पर लिखा क्या है।”

“मैं देख सकता हूं?” कर्मा ने पूछा।

“ज़रूर,” अलीशा ने उसे अपनी कलाई से उतारा और सोफ़े से उठकर उसे थमाते हुए कहा।

कर्मा ने उसे बड़ी सावधानी से अपने हाथों में पकड़ा और धीमे से घुमाया। वो मंत्रमुग्ध, लगभग स्तंभित सा लग रहा था।

“लिपि गुरुमुखी है,” कर्मा ने कहा। “ये कड़ा पंजाब से है। बहुत कुछ उस पेपरवेट की तरह जिसे मैंने विनय के ऑफ़िस में देखा था।”

“वाक़ई?” अलीशा ने पूछा। “मुझे तो कोई समानता नहीं दिखी।

“क्या कल हम वो पेपरवेट देख सकते हैं?” कर्मा ने पूछा। “मैं तुम्हारे ऑफ़िस आ जाऊंगा।”

“ज़रूर,” विनय ने अपनी के5 व्हिस्की का घूंट भरते हुए कहा।



कर्मा ने विनय की डेस्क पर रखे पेपरवेट को देखा। उसने उसे उठा लिया।

“मैंने तुमसे कहा था कि ये वैसा ही है जैसा मैंने अलीशा को हाथ मे पहने देखा था,” कर्मा ने कहा। उसने चांदी की प्लेट को खिसकाया और वो कड़े से बाहर निकल आई। उसने धीरे से कड़ा अपने हाथ में घुमाया।

“लेकिन ये समान नहीं हैं,” उसने सोचते हुए कहा।

“वाक़ई?” विनय ने पूछा। “क्या तुम्हें यक़ीन है?”

“ये समान नहीं हैं। ये अभिन्न हैं,” कर्मा ने कहा। “ये कड़े तुम्हारे पास कैसे आए?”

“मेरा वाला तो मुझे मेरे पिता ने दिया था,” विनय ने कहा। “शायद मेरी दादी ने ये उन्हें दिया था।”

“और अलीशा वाला?”

“उसके पिता ने उसे दिया था,” विनय ने कहा। “क्या ये किसी सीरीज़ का हिस्सा हैं?”

“मुमकिन नहीं है,” कर्मा ने कहा। “ये दो अभिन्न कड़े दिखते हैं। एक पर गुरुमुखी में मंजीत लिखा है। दूसरे पर गुरुमुखी में दलजीत नाम लिखा है। उस तरह के कड़े जैसे कोई अपने दो बेटों की बांह में पहनाता है। दोनों पर नाम के अलावा ‘पूरन दा खू’ लिखा है।”

“तुम्हारा क्या ख़्याल है?” विनय ने पूछा, अब उसकी आवाज़ से गहन उत्सुकता फूट रही थी।

“मेरा ख़्याल है तुम दोनों को अपने-अपने पिताओं से पूछना चाहिए,” कर्मा ने कहा।



“क्या?” अलीशा ने पूछा। “तुम्हारा दिमाग़ ख़राब हो गया है?”

“मैं तुमसे सहमत हूं, स्वीटहार्ट, लेकिन और क्या हल है?” विनय ने कहा।

“क्या तुम अपने पिता से पूछने की कल्पना कर सकते हो कि उनके पास वो तांबे का कड़ा क्यों है जो बिल्कुल वैसा ही है जैसा मेरे पास है?”

विनय ख़ामोश था। कुछ मिनट वो गहरी सोच में डूबा रहा।

“ये मुमकिन है कि वो दोनों ऐसे किसी को जानते थे जिसने उन दोनों को अलग-अलग ये कड़े दिए थे,” विनय ने कहा। “लेकिन ये देखते हुए कि कड़ों पर नाम खुदे हुए हैं, ये मुमकिन नहीं लगता।”

“ये भी मुमकिन है कि वो दोनों उस जगह, पूरन दा खू, पर एक ही वक़्त में किसी आयोजन में भाग लेने गए हों,” अलीशा ने कहा।

दोनों ख़ामोश हो गए। शब्द तो अनकहे रहे मगर संभावनाएं दिमाग़ में उथल-पुथल मचाए हुए थीं।

“और अगर किसी तरह से हमारे पिता संबंधी हों?” विनय ने पूछा, “इसका हमारी शादी पर क्या असर होगा? हम क्या करते हैं, इसपे ध्यान दिए बिना क्या हम एक ब्लड टैस्ट करवा लें?”

“अब बहुत देर हो चुकी है,” अलीशा ने कहा। “मैं प्रेग्नेंट हूं।”

“अगर हमारी शादी झूठ निकली तो?” विनय ने पूछा।

“सच तो ये है कि एक छोटा सा झूठ एक छोटी सी प्रेग्नेंसी की तरह होता है।

सबको इसका पता लगते देर नहीं लगती।"



विनय ने जज़्बात की एक रौ सी महसूस की। वो ख़ुश था कि जल्दी ही वो पिता बनने वाला है। लेकिन ये कड़े मनहूस दिख रहे थे।

फ़ोन बजा। विनय ने उसे उठाया और सुना।

फ़ोन रखते हुए उसने कहा। "कर्मा तो जीनियस है। उसने जान लिया है कि पूरन दा खू एक कूआं है।"

"कहां?" अलीशा ने पूछा।

"पाकिस्तान में सियालकोट के पास।"

"पाकिस्तान में तो हज़ारों कुएं होंगे। इस वाले के बारे में इतना अहम क्या है?" अलीशा ने पूछा।

"इस जगह का ऐतिहासिक महत्व है," विनय ने जवाब दिया। "दो हज़ार साल पहले, राजा शालिवाहन से राजज्योतिषियों ने अपने पुत्र पूरन को बारह साल के लिए एकांतवास में छोड़ने को कहा था। बारह साल गुज़रने के बाद पूरन आख़िरकार अपने पिता से मिल पाया।"

"फिर क्या हुआ?" अलीशा ने पूछा।

"पूरन की सौतेली मां लूना ने पूरन पर अपने साथ बदसुलूकी करने का आरोप लगाया। ग़ुस्से में आकर शालिवाहन ने आदेश दिया कि उसके पुत्र को पकड़ लिया जाए और उसके हाथ-पैर काट दिए जाएं। इसके बाद उसके शरीर को एक कुएं में फेंक दिया गया।"

अलीशा सिहर उठी। हमारे पास तांबे के वो कड़े क्यों हैं जो ऐसी निर्मम जगह से जुड़े हैं? उसने मन ही मन सोचा।

"चमत्कारिक ढंग से पूरन कुएं के अंदर बारह साल ज़िंदा रहा जब तक कि महागुरु गोरखनाथ वहां नहीं पहुंचे। गुरु ने उसे बाहर निकाला और उसके शरीर और स्वास्थ्य को फिर से ठीक कर दिया। राजकुमार खुद भी एक मशहूर योगी हुआ। उस दिन से कूआं अपनी उपचारात्मक शक्तियों के लिए मशहूर हो गया," विनय ने कहानी को सुखद अंत देते हुए कहा।

"लेकिन हमारे पिताओं के पास ये तांबे के कड़े क्यों हैं जो इस जगह से जुड़े हुए हैं," अलीशा ने पूछा।

"मुझे कुछ भी पता नहीं है," विनय ने कंधे उचकाए। "कर्मा पता लगाने की कोशिश कर रहा है।"



अरबाज़ ने एक बार फिर नोटिस को देखा। अरविंद ने कब अपने डैने अनयसार के गिर्द लपेट लिए थे? क्या दुनिया में ऐसा कुछ नहीं था जिसे बागड़िया से लड़े बिना पाया जा सकता था? इसकी सबसे ख़राब बात ये थी कि अब वो संबंधी थे। जो कुछ भी वो कहते या करते, वो अब उनके बच्चों को प्रभावित करता।

एतद्द्वारा सूचना दी जाती है कि निम्नलिखित कार्यों को पूरा करने के लिए अनयसार रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड की *7*वीं वार्षिक बैठक *26* नबंबर *2008* को सायं *7* बजे ताज चैंबर्स , ताज महल होटल , मुंबई में आयोजित की जाएगी*:*

सामान्य कार्य

1. कंपनी के गत वित्तीय वर्ष के लेखापरीक्षित वित्तीय विवरणों *(*समेकित वित्तीय विवरणों समेत*)*, और निदेशकों और लेखापरीक्षकों की रिपोर्टों पर विचार और पालन करना।
2. किसी भी डिविडेंड या अंतरिम डिविडेंड का भुगतान न होने की पुष्टि।
3. श्री त्शेरिंग की पुनर्नियुक्ति जो इस सभा से आवर्तन से रिटायर हो रहे हैं, और, योग्य होने के कारण पुनर्नियुक्ति के लिए स्वयं को प्रस्तुत कर रहे हैं।
4. लेखापरीक्षकों की नियुक्ति और इस संबंध में विचार और, अगर उचित समझें तो, सुधारों के साथ या उनके बिना इस प्रभाव का समुचित प्रस्ताव पास करना।

विशेष कार्य

5. कंपनी के पूर्ण-कालिक निदेशक के रूप में श्री अरविंद बागड़िया की नियुक्ति।
6. कंपनी के पूर्णकालिक निदेशक के रूप में श्री अरबाज़ शेख़ की नियुक्ति।



फ़ोर्ब्स की भारत के समृद्धतम व्यक्तियों की 2008 की सूची में चालीस नाम थे। अरविंद ने जल्दी-जल्दी पहले दस नामों पर नज़र डाली।

1. मुकेश अंबानी
2. लक्ष्मी मित्तल
3. अनिल अंबानी
4. सुनील मित्तल
5. कुशल पाल सिंह
6. शशि एवं रवि रुइअ
7. अज़ीम प्रेमजी
8. अरविंद बागड़िया
9. अरबाज़ शेख़

10. कुमार मंगलम बिड़ला

अरविंद समृद्धतम भारतीयों की फ़ोर्ब्स सूची के शीर्ष दस में आ गया था। उसे खुशी से झूम उठना चाहिए था, लेकिन ऐसा नहीं हो रहा था। ये सच उसे चुभ रहा था कि अरबाज़ शेख़ बस उसके बिल्कुल नीचे है।

अरविंद का लक्षय साफ़ था। उस लड़के अभिनव बिंद्रा की तरह जिसने एक महीने पहले ही बीजिंग ओलंपिक में भारत के लिए शूटिंग में गोल्ड मैडल जीता था, वो भी नंबर एक बनना चाहता था।

अपनी-अपनी रैंकिंग सुधारने के लिए अरविंद और अरबाज़ दोनों की ही रणनीतियां चालू थीं। एक को उम्मीद थी कि अनयसार उसे बड़ा बनने में मदद करेगा। दूसरा क्रिकेट को अपनाने का सोच रहा था।



“मैं तुम्हारे ही फ़ोन का इंतज़ार कर रहा था,” यश ने कहा। अरबाज़ हंस पड़ा।

“बीसीसीआई ने आठ फ़्रेंचाइज़ी के लिए निविदाएं मांगी हैं,” अरबाज़ ने कहा। “मैं भी नीलामी में हिस्सा चाहता हूं।”

“तुम किसी टीम के लिए बोली लगाना चाहते हो?” यश ने पूछा। “मुझे संदेह है तुम ऐसा कर सकते हो। तुम मंत्री हो। और मैं भी।”

“बिज़नेस करने के लिए फ़्रेंचाइज़ी ख़रीदना मूर्खता है,” अरबाज़ ने कहा। “ये तो उन लोगों के लिए है जिन्हें प्रचार चाहिए। न तुम्हें ये चाहिए, न मुझे। हमें तो बस पैसा चाहिए।”

“तुम मुझसे क्या चाहते हो?”

“उनसे बात करो,” अरबाज़ ने कहा। “उनसे हमारी नामित कंपनियों में से एक को टेलीविज़न और मीडिया अधिकार देने को कहो।”

“हमारे पास ब्रॉडकास्टिंग के लिए कोई इंफ़्रास्ट्रक्चर नहीं है,” यश ने कहा।

“किसने कहा कि हम कुछ ब्रॉडकास्ट करेंगे?” अरबाज़ ने कहा।



विनय और अलीशा 12 ईस्ट 65वीं स्ट्रीट पर स्थित बिल्डिंग पर पहुंचे। दूसरे दरवाज़े पर पाकिस्तान का झंडा लटका हुआ था। नंबर बारह के दरवाज़े के बाहर लगी पीतल की प्लेट बता रही थी कि ये पाकिस्तान कॉन्सुलेट है। वो अंदर गए और जिस डेस्क पर ‘पूछताछ’ लिखा था, उसके पीछे बैठे व्यक्ति के पास गए।

“जी?” उस व्यक्ति ने कंप्यूटर टर्मिनल से ऊपर देखते हुए कहा।

“हमें जानना है कि पाकिस्तान जाने का वीज़ा लेने के लिए भारत के लोगों को क्या

करना होता है?”



“हफ़्तों बीत गए हैं,” विनय ने फ़ोन पर कहा। “किसी वीज़ा एप्लीकेशन में इतना समय कैसे लग सकता है?”

दूसरे सिरे पर मौजूद अधिकारी ने प्रक्रियाओं और क्लीयरेंस के बारे में कुछ अगड़म-बगड़म बोला। “इस पर सक्रियता से विचार किया जा रहा है,” अधिकारी ने फ़ोन रखते हुए कहा।

विनय सारी क़वायद जानता था। उसके पिता अक्सर मज़ाक़ में कहते थे कि दक्षिण एशिया में अगर कोई अधिकारी कहे कि फ़ाइल ‘विचाराधीन’ है तो अक्सर इसका मतलब होता है कि उसने फ़ाइल खो दी है, जबकि ‘सक्रियता से विचार किया जा रहा है’का मतलब था कि वो उसे ढूंढ़ने की कोशिश कर रहा है।

विनय ने असहज सा महसूस करते हुए फ़ोन रख दिया। सामान्य चैनलों से वीज़ा नहीं मिलने वाला था। इसके लिए तिकड़म लगानी होगी।

उसने नई दिल्ली एक फ़ोन किया। उसने लाइन पर इंतज़ार किया जबकि सेक्रेटरी सरदार हरपाल सिंह को ढूंढ़ने की कोशिश कर रहा था।



“मैं ठीक से समझा नहीं,” सरदार हरपाल सिंह ने कहा। “तुम कहते हो कि तुम टूरिस्ट वीज़ा पर पाकिस्तान जाना चाहते हो और पाकिस्तानी विदेश मंत्रालय से इसे आगे बढ़वाने के लिए तुम्हें मेरी मदद चाहिए?”

“जी,” विनय ने कहा।

“और तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे पिता को इस बारे में पता चले?” हरपाल ने पूछा।

“जी,” विनय ने कहा।

“बेटे, तुम्हें मुझे इस राज़दारी की वजह बतानी होगी,” हरपाल ने कहा। “और मैं कोई झूठ नहीं सुनना चाहता।”

फ़ोन पर बोलते हुए विनय ने असहजता से पहलू बदला। “जैसा शायद आप जानते होंगे कि मेरे पिता मुझसे नाराज़ थे कि मैंने उनकी इजाज़त के बिना एक लड़की से शादी कर ली थी।”

“उन्होंने मुझे ये बताया था,” हरपाल ने कहा।

“क्या उन्होंने आपको ये भी बताया था कि वो मेरी शादी के ख़िलाफ़ क्यों थे?” विनय ने पूछा।

“उन्होंने बस ये कहा था कि वो सही परिवार की नहीं थी,” हरपाल ने कहा। “उन्होंने

तफ़्सील नहीं बताई थी।"

"मैंने अपने पिता के घोर प्रतिद्वंद्वी — अरबाज़ शेख़ — की बेटी से शादी की है ," विनय ने कहा।

"हम्म, समझा," हरपाल ने विचारपूर्ण मुद्रा में अपनी दाढ़ी को सहलाते हुए कहा। "मैं दोनों आदमियों को जानता हूं। तुम्हारे पिता को भी और तुम्हारे ससुर को भी। दोनों ही मुझे पसंद हैं। दुख की बात है कि उनकी बनती नहीं है। लेकिन इससे अभी भी ये पता नहीं लगा कि तुम पाकिस्तान क्यों जाना चाहते हो।"



अरबाज़ अपनी कार में था, वो ताज महल होटल जा रहा था। उसका मोबाइल फ़ोन बजने लगा था। यश धर था।

"बीसीसीआई के बंदों से बात की थी," यश ने कहा। "वो हमारी नामित कंपनी को मीडिया अधिकार देने पर विचार करने के लिए तैयार हैं बशर्ते हम उन्हें आश्वासन दें कि बीसीसीआई को सूचना के अधिकार अधिनियम के दायरे में नहीं लाया जाएगा।"

"वाह," अरबाज़ ने कहा। "ठीक है, अनुबंध पर दस्तख़त कर दो। उसमें ऐसा प्रावधान भी रखना कि मीडिया अधिकारों को अगर किसी और को देना हो तो अधिकार छोड़ने के लिए 500 करोड़ का भुगतान आवश्यक हो।"

"आह," यश ने कहा, वो समझ गया था कि अरबाज़ की योजना क्या है।

उसकी योजना तो अधिकार छोड़ने की थी, सीधे-सरल ढंग से।



ताज के 'केवल आमंत्रण पर' वाले चैंबर्स क्लब में एक सुइट, एक बार, लाइब्रेरी और डाइनिंग रूम थे। ये व्यापारियों के लिए ऐसा छोटा सा स्वर्ग था जहां वो एक ऐसी जगह पर अपने सौदों को अंजाम दे सकते थे, जिसके बारे में कभी होटल के किसी ब्रोशर में ज़िक्र नहीं होता था। वार्षिक सदस्यता शुल्क भी बेहद पोशीदा राज़ था। अगर आप पूछें कि कितना है, तो स्पष्ट रूप से आपकी क़िस्मत में सदस्यता पाना नहीं है। चैंबर्स जैसे स्वर्गों का एकमात्र उद्देश्य अपने अरबपति सदस्यों को प्रशिक्षित, होशियार स्टाफ़ के साथ, जाने-पहचाने होटलों में गुप्त जगहों पर आरामदेह महसूस करवाना था।

सभा कक्षों में से एक में अनयसार रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड की वार्षिक आम बैठक एक घंटा देरी से शुरू हुई। दोनों ही मुख्य शेयरहोल्डरों को जानबूझ कर 'दूसरे ज़रूरी काम' थे। सच तो ये था कि दोनों में से कोई भी वहां पहले नहीं पहुंचना चाहता था।

अनयसार की वार्षिक बैठक शायद अब तक की सबसे छोटी थी। वहां बस तीन शेयरहोल्डर थे-अरविंद, अरबाज़ और कर्मा। मीटिंग में मौजूद चौथा व्यक्ति कंपनी सेक्रेटरी मि. कपूर थे। ये बहुत ही असुविधाजनक मीटिंग थी, जिसमें लंबी-लंबी

ख़ामोशियों के दौर आते रहे थे।

दोनों प्रतिद्वंद्वी एक दूसरे को घूर रहे थे हालांकि उन्होंने आत्मीयता का मुलम्मा चढ़ा रखा था। दोनों आदमी जानते थे कि अनयसार सोने की खान है—शाब्दिक रूप से। अगर कर्मा को अमरता का सत मिल गया तो ये मेडिकल इतिहास में सबसे बड़ी क्रांति होगी। अगर नहीं भी मिला तो ये संभावना तो हमेशा थी कि वो दूसरी धातुओं से सोना बनाने का फ़ॉर्मूला खोज लेगा।

कर्मा के लिए अजीब सी हालत थी। वो छोटा सा शेयरहोल्डर था—मात्र बीस प्रतिशत का—और अब दो ऐसे शेयरहोल्डरों के बीच फंसा था जो एक दूसरे से नफ़रत करते थे, और दोनों के पास चालीस फ़ीसदी शेयर थे। उसने आश्वासन के लिए अरविंद को देखा, जिसके साथ उसका ज़्यादा क़रीबी रिश्ता था। कुछ हासिल नहीं हुआ। कर्मा समझ गया कि ये गतिरोध की स्थिति है, जबकि दोनों आदमी अपनी-अपनी तलवारें भांजे बैठे हैं।

एजेंडा के पहले कुछ आइटम तो निर्विवाद थे और एकमत से पास हो गए, लेकिन आख़री दो अरविंद और अरबाज़ की पूर्णकालिक निदेशक के रूप में नियुक्ति को लेकर थे।

“मैं इस प्रस्ताव का समर्थन नहीं कर सकता,” जब अरविंद के नाम का प्रस्ताव रखा गया तो अरबाज़ ने कहा।

“मैं ऐसे किसी प्रस्ताव का समर्थन नहीं कर सकता,” जब अरबाज़ के नाम का प्रस्ताव रखा गया तो अरविंद ने कहा।

कर्मा के दोनों व्यक्तियों के पक्ष में वोट देने से दोनों ही प्रस्ताव 60-40 से पास हो गए। “आप दोनों समझौता क्यों नहीं कर सकते?” कर्मा ने पूछा।

“समझौता? दोनों पार्टियों को यही तो मिल रहा है जबकि दोनों ही ये नहीं चाहतीं!” अरविंद ने कहा।

फिर तो सारे मुलम्मे उतर गए।

“तुमने वो क़ुर्बानी वाला घोटाला करके मेरा करोड़ों का नुक़सान करवा दिया था…”

“तुमने मेरे यहां इंकम टैक्स का छापा पड़वाया और चोरी…”

“तुमने एल्बर्ट मिल्स को चुराकर मुझे धोखा दिया…”

“तुमने मेरी कंपनी के शेयरों की क़ीमत गिराकर मुझे बर्बाद करने की कोशिश की…”

“तुमने डॉटकॉम डील का पैसा ट्रांसफ़र न करके मुझे धोखा दिया…”

“तुमने नए विनिर्देशों को कैंसल करवाकर मेरे रक्षा सौदे को ख़राब किया…”

“तुम्हारे बेटे ने मेरी बेटी को फंसाया…”

“तुम्हारी बेटी ने मेरे बेटे को गुमराह किया…”

“अनयसार के शेयर पहले मुझे मिले थे; तुम्हें हट जाना चाहिए…”

“कर्मा मेरे बेटे का क्लासमेट है; तुम्हें हटना चाहिए…”

दोनों आदमियों ने कर्मा को उठते और कॉन्फ़्रेंस रूम से जाते हुए भी नहीं देखा। वो ख़ुद को जिस दुर्दशा में पा रहा था, उससे एकदम नाख़ुश था। कंपनी सेक्रेटरी तो पहले ही जा चुका था।



सरदार हरपाल सिंह जड़ हो गए थे। विनय की बातें सुनकर उनके चेहरे से जैसे ख़ून निचुड़ गया था। ऐसा नहीं हो सकता। इसके परिणामों के बारे में तो सोचना भी भयानक है, उन्होंने सोचा।

विनय ने उन्हें उन दो कड़ों के बारे में बताया था जिन पर मंजीत और दलजीत नाम खुदे हुए थे और ये सच भी कि दोनों कड़े मूल रूप से अरबाज़ और अरविंद के थे।

“क्या कड़े तांबे के बने हैं?” हरपाल ने पूछा, उनका दिल ज़ोरों से धड़क रहा था।

“हां,” विनय ने जवाब दिया।

“नामों के अलावा उन पर और भी कुछ लिखा है?” हरपाल ने पूछा। उनके सीने में हो रही धाड़-धाड़ तकलीफ़देह थी।

“दोनों पर पूरन दा खू का संदर्भ है, बज़ाहिर सियालकोट के पास के किसी कुएं का,” विनय ने कहा। “इसीलिए हम वहां जाना चाहते हैं।”

“अरविंद और अरबाज़ कहां हैं?” हरपाल ने व्याकुलता से पूछा। मैंने इतनी जल्दी खोज क्यों छोड़ दी थी? मैंने उसकी बात सुनी क्यों नहीं?

“मुंबई के ताज चैंबर्स में अनयसार की एजीएम चल रही है,” विनय ने कहा। “दोनों वहीं होने चाहिएं।”



दोनों जन उस वक़्त भी बहस में लगे थे जब उन्हें कोई आवाज़ सुनाई दी। धांय, धांय, धांय।

“ये तो गोलियों की आवाज़ है,” अरबाज़ ने कहा।

“बकवास,” अरविंद ने कहा।

धांय, धांय, धांय। इस बार अरविंद समझ गया कि अरबाज़ सही था। ये तो यक़ीनन गोलियों की ही आवाज़ थी। धमाके अंदर से आ रहे थे और गोलियों की आवाज़ होटल भर में गूंज रही थी।

फिर उन्होंने एक ज़बरदस्त विस्फोट सुना। ऐसा लगा मानो ये आवाज़ मेन लॉबी से आई हो। वो चैंबर्स के रिसेप्शन एरिया की ओर भागे जहां दूसरे कई सदस्य भी आ चुके

थे। क्लब सैकड़ों लोगों से भरता जा रहा था जिन्हें होटल के दूसरे हिस्सों से वहां भेजा जा रहा था।

"हो क्या रहा है?" अरबाज़ ने पूछा।

"नीचे कुछ बंदूक़धारी हैं," एक डरी हुई औरत ने टूटे-फूटे शब्दों में बताया। "उनमें से एक ने मेरे दोस्त को गोली मार दी।" वो रो रही थी। एक और महिला ने उसे दिलासा देने की कोशिश की। और लोग अंदर आ गए। अरविंद ने देखा कि उनमें अनेक बड़े बिज़नेसमैन, सांसद, एक हाई कोर्ट का जज, अमेरिकी निवेश बैंकर और दो पत्रकार थे।

ठीक तभी एक और धमाके ने ज़मीन हिला दी और लाइट चली गई। फिर उनके आसपास घोर अंधकार छा गया।

जैसे ही चैंबर्स के अंदर से गोलियों की आवाज़ आई, अरविंद, अरबाज़ और पचास दूसरे लोगों ने खुद को लैवेंडर रूम में बैरिकेड कर लिया।

लैवेंडर रूम कॉरीडोर के सुदूर छोर पर था, जहां अनेक मुलाक़ात कक्षों के दरवाज़े थे। अरबाज़ ने एक कुर्सी की टांग तोड़ी और उसे दरवाज़े के हैंडल में अड़ा दिया। फिर उसने एक टेबल को धकेलकर दरवाज़े पर लगा दिया।

उसने राजू से बात करने के लिए अपने फ़ोन पर एक स्पीड डायल नंबर मिलाया। "बाहर क्या हो रहा है?" उसने धीमे से बोलते हुए पूछा।

"कुछ आतंकवादी मुंबई में क़हर बरपा रहे हैं," राजू ने कहा "उन्होंने लियोपॉल्ड कैफ़े और रेलवे स्टेशन सीएसटी पर हमला किया है। तुम टीवी देख सकते हो? तुम महफ़ूज़ तो हो?"

"मैं ठीक हूं," अरबाज़ ने कहा। "और नहीं, बिजली नहीं है। अगर ये हरामज़ादे सोचते हैं कि ये ऐसा करके बच जाएंगे तो उन्हें अपने दिमाग़ की जांच करवानी चाहिए। कोई आइडिया कि ये कौन हैं?"

"मच्छीमार नगर के लोग कह रहे हैं कि वो बड़े-बड़े बैग लिए एक नाव से आए थे," राजू ने कहा। "पुलिस कुछ नहीं कह रही है लेकिन मेरे सूत्र बता रहे हैं कि वो पाकिस्तानी हैं। मैं कुछ कर सकता हूं तुम्हारे लिए?"

"परोमिता को फ़ोन करके बता देना मैं ठीक हूं," अरबाज़ ने कहा। "मेरे फ़ोन की बैटरी ख़त्म हो रही है। पुलिस से बात करो। उनसे कहो कि उन्हें कोई भी ज़रूरत हो तो हमारे लड़के पूरी मदद करेंगे। पुलिस कितनी व्यवस्थित है?"

"वो तो बिना सिर के चूज़ों की तरह इधर-उधर भाग रहे हैं। नेशनल सिक्योरिटी गार्ड्स को बुलाया गया है," राजू ने कहा। "ओह शिट!"

"क्या हुआ?" अरबाज़ ने पूछा।

"अपने टेलीविज़न पर मैं देख रहा हूं कि ताज महल होटल की ऊपरी मंज़िल पर आग लगी है। उन्होंने गुंबद के अंदर धमाका किया है।"

अरबाज़ का फ़ोन डैड हो गया। उसने कराहने की आवाज सुनी। होटल के मेंटीनेंस कर्मचारियों में से एक को कॉरीडोर में गोली लग गई थी।

एक गोली उसकी पीठ में घुसी, और पेट को फाड़ते हुए निकल गई थी। अरविंद ने दरवाज़ा बंद करते-करते किसी तरह उसे अंदर खींच लिया था।

मेंटीनेंस कर्मी की सफ़ेद वर्दी ख़ून से तर हो गई थी। अरविंद ने एक तौलिए से उस आदमी की आंतों को वापस पेट में धकेलने की कोशिश की। एक और व्यक्ति ने किसी दूसरे से लेकर उसे पेनकिलर दिया।

अरबाज़ ने एक फ़ोन की घंटी सुनी। वो उनके साथ मौजूद एक सांसद का था। वो बेवक़ूफ़ किसी समचार प्रसारण से सीधी बात कर रहा था। अरबाज़ ये सुनकर हक्का-बक्का रह गया कि वो बंदा सारी दुनिया को बता रहा है कि सैकड़ों लोग—अनेक सीईओ, विदेशियों, एक मंत्री और सरकारी अधिकारियों समेत—चैंबर्स के अंदर सुरक्षित हैं। अरबाज़ उस आदमी का फ़ोन तोड़ने के लिए उठा मगर बहुत देर हो चुकी थी। नुक़सान तो हो चुका था।

अरबाज़ ने अरविंद को संकेत किया। अब उन्हें मामला अपने हाथ में लेना था।



दोनों आदमी कॉरीडोर में अकेले थे। चैंबर्स के अंदर दो सौ से ज़्यादा लोग थे लेकिन कॉरीडोर में मौत का सा सन्नाटा था। सबने ख़ुद को मुलाक़ात कक्षों में बंद कर लिया था।

अरविंद और अरबाज़ लाइब्रेरी से होते हुए चैंबर्स की छत की ओर बढ़े। होटल में लगी आग लपलपा रही थी और अगर वो छत से नीचे उतरने का रास्ता ढूंढ़ सके तो वो फंसे हुए लोगों को नीचे मेन रोड तक निकालने में कामयाब हो जाएंगे। अचानक फ़ायरिंग का एक राउंड और सुनाई दिया।

दोनों ख़ून के प्यासे बंदूक़धारियों से बस कुछ फ़ुट दूर एक मेज़ के पीछे घुस गए। बंदूकें ख़ामोश हो गईं। दोनों आदमियों की रगों में ख़ून तेज़ी से दौड़ रहा था। ये अतिसावधानी की स्थिति थी जिसमें हर छोटी से छोटी आवाज़ या चीज़ बहुत बड़ी लगती है और तुरंत ही उसका विश्लेषण और उस पर कार्रवाई हो जाती है।

ये सोचते हुए कि उसकी मौत कैसी होगी, अरविंद को अपने सीने में धौंकनी सी महसूस हो रही थी। तभी ज़ोरों से उसका फ़ोन बज उठा। दोनों आदमी जड़ हो गए। अभिलाषा उसे फ़ोन करने की कोशिश कर रही थी। बंदूकधारियों ने तुरंत ही फ़ोन की जगह ढूंढ़ ली।

गोलियों की एक बौछार उनकी ओर आई। फ़ायरिंग की आवाज़ बहरा कर देने वाली थी। चारों ओर छर्रे उड़ रहे थे और जल्दी ही वो जगह टूटे कांच, छर्रों, मांस के लोथड़ों और ख़ून से अट गई थी।

एक बार फिर ख़ामोशी छा गई थी।



एक हफ़्ते बाद जब ये उपद्रव शांत हुआ तो प्रशासन ने सारी घटनाओं के सिरों को जोड़ा। लश्कर-ए-तैयबा के दस पाकिस्तानी सदस्यों ने गोलीबारी और बमबारी के बारह संयुक्त हमलों को अंजाम दिया था जो पूरी मुंबई में चार दिन जारी रहे थे।

केवल एक हमलावर को ज़िंदा पकड़ा जा सका था। उसका नाम अजमल क़साब था। बाद में पूछताछ के दौरान उसने स्वीकार किया कि ये हमले पाकिस्तान की खुफ़िया एजेंसी, इंटर सर्विसेज़ इंटैलीजेंस, के सक्रिय सहयोग और मार्गदर्शन में हुए थे।

जिन जगहों पर हमले हुए थे, वो थीं छत्रपति शिवाजी टर्मिनस, ताज महल पैलेस और टॉवर, ओबरॉय ट्राइडेंट, लियोपॉल्ड कैफ़े, कामा अस्पताल, नरीमन हाउस यहूदी सामुदायिक केंद्र, मेट्रो सिनेमा, टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप बिल्डिंग के पीछे वाली गली, सेंट ज़ेवियर कॉलेज, मझगांव और विले पार्ले।

हमले बुधवार 26 नवंबर 2008 को शुरू हुए थे और शनिवार 29 नवंबर 2008 तक जारी रहे। अनुमान लगाया गया कि 164 लोग मारे गए थे। 308 से ज़्यादा घायल हुए थे।



अरविंद बागड़िया और अरबाज़ शेख़ के अंतिम संस्कार एक दिन के अंतर से किए गए ताकि उन शोकाकुल लोगों को एक शहर से दूसरे शहर पहुंचने का समय मिल सके जो दोनों व्यक्तियों के अंतिम संस्कार में शामिल होना चाहते थे।

मुंबई में हुए अरबाज़ के दफ़्न में उसकी पत्नी परोमिता, बेटी अलीशा, दामाद विनय और उसके भरोसेमंद साथी राजू और मुरली शामिल हुए थे। बिज़नेस और सरकार के दूसरे सैकड़ों महत्वपूर्ण लोगों के बीच कई अन्य जाने-पहचाने चेहरे भी थे जिनमें कर्मा त्शेरिंग, सरदार हरपाल सिंह और अध्यापिका ज्योति शामिल थे। यश धर भी शामिल हुआ था, अंत्येष्टि के लिए आते वक़्त उसने सतर्कतापूर्वक आईपीएल के लिए नामितों की निविदा की सारी योजनाओं को रद्द कर दिया था। वहां सैकड़ों ग़रीब और पददलित लोग भी मौजूद थे जिनकी इतने बरसों से अरबाज़ अनेक तरीक़ों से मदद करता रहा था। इस्लाम में ज़ोर-ज़ोर से रोने और दुख का खुला प्रदर्शन करने की मनाही है लेकिन कोई भी मज़हबी कानून परोमिता और अलीशा के आंसुओं को नहीं रोक सकता था।

एक और औरत धीमे-धीमे रो रही थी।

अरबाज़ के शव को रस्मी ग़ुस्ल से पाक किया गया और फिर सिर से पांव तक एक सफ़ेद चादर में लपेट दिया गया। उसके जनाज़े को मैरीन लाइंस स्थित क़ब्रिस्तान पहुंचने में कई घंटे लग गए। मक्का की ओर सिर करके शव को क़ब्र में उतारने से पहले उसमें सुगंधित जल का छिड़काव किया गया। उसे लकड़ी के तख़्तों से ढक दिया गया और मातमियों ने उसके ऊपर मुट्ठी भर मिट्टी डाली जबकि मौलवी इन्ना

लिल्लाहि वइन्ना इलयहि राजिऊन का उच्चारण कर रहे थे। हम अल्लाह के पास से आए हैं और उसी के पास लौट जाएंगे। अरबाज़ छियासठ साल का था।

कोलकाता में अरविंद की अंत्येष्टि में उसकी पत्नी अभिलाषा, बेटा विनय और बहू अलीशा शामिल हुए थे। वहां एकत्र हुए सैकड़ों वीआईपी लोगों में अनेक पहचाने चेहरे थे जिनमें कल्याण सरकार, किशोर देशमुख, यश धर, कर्मा त्शेरिंग, सरदार हरपाल सिंह, डैरियस दस्तूर और अध्यापिका ज्योति भी थे। कलकत्ता की जेल की एक कोठरी में बैठे सत्यपाल मित्तल ने जब ये ख़बर पढ़ी तो दुनिया को एक बदमाश से निजात दिलाने के लिए ईश्वर को धन्यवाद दिया। मुंबई की एक और जेल में एक और आदमी देवेंद्र दीक्षित भी ईश्वर की दया के लिए उसे धन्यवाद दे रहा था। अभिलाषा को उम्मीद थी कि वो पहले मरेगी, उसे उसके पति ने आख़री वक़्त में मात दे दी थी। टूटी हुई और सदमे में डूबी अभिलाषा ने पाया कि कई दिनों तक रोते रहने के बाद उसके आंसू भी सूख गए हैं।

उस समूह में एक और औरत उनके दुख में भागीदार थी।

अरविंद के शव को नहलाया गया, कपड़े पहनाए गए और फूलों की मालाओं से सजाकर श्मशान घाट ले जाया गया। विनय ने अपने पिता के सात शुभ अंगों पर घी लगाया और माथे पर सिक्के रखे। पंडितों की निगरानी में उसने अपने पिता के मुंह में चावल के दाने रखे। अरविंद के शव के चारों तरफ़ चंदन की लकड़ी लगाई गई और खुले हाथ से घी छिड़का गया। विनय ने जल से भरी मटकी लेकर शव की सात बार परिक्रमा की और फिर अपने मृत पिता के पैरों के पास उस मटकी को गिराकर तोड़ दिया। फिर पंडितों के मंत्रोच्चार के बीच उसने छियासठ साल के अरविंद के शव को अग्नि दी।

न अरविंद और न ही अरबाज़ कभी फ़ोर्ब्स की सबसे समृद्ध भारतीयों की सूची में नंबर एक पर पहुंच पाए।

अगर नश्वरता उनके आड़े न आई होती तो शायद वो पहुंच जाते।

ओऽम त्रयम्बकं यजामहे

सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं।

1833, लाहौर

उर्वारुकमिव बन्धनान्।

मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

लाल शिविरों को सोने और चांदी के खंभों ने संभाल रखा था। बेशक़ीमती कश्मीरी शॉलों से अंदरूनी दीवारों को ढका गया था जबकि फ़र्श शानदार ऊनी और रेशमी क़ालीनों से ढके थे। लेकिन शिविर के अंदर कम और साधारण से कपड़ों में महाराज एक साधारण सी कुर्सी पर बैठे थे जो उनके व्यक्तित्व की कहानी ख़ुद बयान कर रहा था। इस राजा विशेष ने सिंहासन पर बैठने से मना कर दिया था, मुकुट पहनने से मना कर दिया था और अपने नाम पर सिक्के ढलवाने से भी मना कर दिया था। इन्हें महाराज रंजीत सिंह के रूप में जाना जाता था।

महाराज ने अपनी इकलौती आंख से वास्तुकार के रेखाचित्र को देखा। बचपन में उन्हें चेचक हो गई थी और उस संक्रमण ने उनकी त्वचा पर गड्ढे डालने के साथ ही एक आंख की रोशनी छीन ली थी। इकलौती आंख और चेहरे के निशान भी उन्हें एक विशाल और समृद्ध साम्राज्य का निर्माण करने से रोक नहीं पाए थे।

जब राजा के विदेश मंत्री ने भारत के ब्रिटिश गवर्नर-जनरल से मुलाकात की तो उस अंग्रेज़ ने पूछा कि महाराज की कौन सी आंख में रोशनी नहीं है। मंत्री ने उत्तर दिया, "महाराज तो सूर्य की तरह हैं और सूर्य की बस एक आंख होती है। उनकी एक आंख की चमक और रोशनी इतनी ज़्यादा है कि मैं कभी दूसरी को देखने की हिम्मत ही नहीं कर पाया!"

"इसे सूरज की तरह चमकना होगा," महाराज ने शिल्पकार से कहा। "इस प्रांत की शुद्धता का प्रतीक जिसे हम पंज-आब, या पांच नदियों की भूमि कहते हैं। मैं ब्यास, रावी, सतलज, चेनाब और झेलम की क़सम खाता हूं कि हरमिंदर साहब शानदार ढंग से चमकेंगे-सूरज की तरह।"

"हो जाएगा, सरकार," शिल्पकार ने उत्तर दिया। "जैसा कि आप जानते हैं, हरमिंदर साहब सरोवर-अमरता के अमृत के तालाब-के भीतर स्थित हैं जिसे हम अमृतसर कहते हैं। हरमिंदर साहब की सारी चमकती सतह सरोवर के पानी में प्रतिबिंबित होगी।"

पंजाब के शेर ने फिर से नक़्शे को देखा। वो संतुष्ट नहीं थे। आख़िर, ये वो इंसान था जिसने लाहौर पर घेरा डाला था और उन्नीस साल की उम्र में उसे अपनी राजधानी बना लिया था। फिर वो सतलज से लेकर झेलम तक का क्षेत्र अपने अधीन लाने के लिए चले गए। ये ऐसे राजा थे जो काम करवाने के आदी थे।

"दीवान दीनानाथ, आपका क्या ख़्याल है?" महाराज ने पूछा।

"ऐसे मामलों में आपकी उदारता का कोई सानी नहीं है, प्रभु," वित्त मंत्री ने मोमज़ामे से ढकी उस पोथी को कसकर पकड़े हुए कहा जो कभी उनके हाथों से अलग नहीं दिखती थी। आवरण पर एक मत्स्य का प्रतीक था। "ऐसे उद्यम के लिए जितनी भी मात्रा में सोने की ज़रूरत होगी, उसे बिना सवाल किए उपलब्ध करवाया जाएगा।"

दीवान दीनानाथ एक कश्मीरी पंडित बख़्त मल के बेटे थे। वादी में अफ़ग़ान गवर्नरों के अत्याचारी शासन के दौरान 1815 में उनका परिवार दिल्ली आ गया था। दीनानाथ ऐसे व्यक्ति थे जो योग्यता, ईमानदारी, वफ़ादारी और मज़बूती की मिसाल थे।

“क्या आप पर्याप्त सोने का प्रबंध कर पाएंगे?” महाराज ने पूछा। “मैं पहले ही वाराणसी के विश्वनाथ मंदिर पर स्वर्णपत्र के लिए छह मन सोना दे चुका हूं।”

“बात जब धर्म की आती है, सरकार, तो आप कभी पीछे नहीं रहे हैं,” दीवान दीनानाथ ने जवाब दिया। “आपने ज्वालामुखी मंदिर में भी काफी चढ़ावा दिया है। शालीमार बाग़ के निकट इस्माइल उर्फ वड्डा के मक़बरे की मदद के लिए आपने अस्सी बीघा ज़मीन भी दान की है। लाहौर की मस्जिदों की मरम्मत पर पंद्रह हज़ार व्यय किए गए हैं।”

“धन का सदुपयोग,” महाराज ने रेखाचित्रों पर एक बड़ा सा पेपरवेट रखते हुए कहा। पेपरवेट 186 कैरेट का हीरा था जिसे 1739 में नादिर शाह मुग़लों से लूट ले गया था। इसका नाम कोहेनूर था।

नादिर शाह की हत्या के बाद ये हीरा उसके सेनापति अहमद शाह दुर्रानी के हाथ आ गया। अहमद शाह का एक वंशज शाह शुजा दुर्रानी हीरा लेकर भाग गया मगर महाराज रंजीत सिंह ने एक शांति संधि के बदले उसे ये हीरा सौंपने पर मजबूर कर दिया।

“इसके अलावा, मैंने शाह शुजा दुर्रानी के साथ संधि पर हस्ताक्षर भी तो किए हैं,” महाराज ने आगे कहा।

“वो तो ग़ज़ब का पैंतरा था, सरकार। अब पेशावर पर हमारा नियंत्रण है।”

“हां, लेकिन इससे भी अहम ये है कि शाह शुजा ने मुझसे वादा किया है कि चंदन के द्वार—जिन्हें महमूद ग़ज़नी 800 साल पहले सोमनाथ के मंदिर से ले गया था—हमें वापस दे दिए जाएंगे,” महाराज ने कहा। संधि का वो भाग उनके लिए और किसी भी चीज़ से ज़्यादा मायने रखता था। ये अपना खोया सम्मान वापस पाने जैसा था।

“मैं आप पर निर्भर कर रहा हूं, दीवान दीनानाथ,” महाराज रंजीत सिंह ने कहा। “उम्मीद है आप हरमिंदर साहब के मेरे सपने को साकार कर सकेंगे।”

“ये हो जाएगा, महाराज,” दीवान ने जवाब दिया।

अपने मन में दीवान दीनानाथ ने प्राचीन शब्दों का उच्चारण करना शुरू कर दिया था। वो शब्द जिन्हें उस समय से उत्तराधिकार की श्रृंखला में दिया जा रहा था जिसे अब याद भी नहीं किया जा सकता।

“स्वेदन… मर्दन… मूर्च्छन… उत्थापन… पतन… रोधन…नियमन…संदीपन…“

दीवान दीनानाथ ने राजा के सामने मेज़ पर रखे चित्रों को देखा और मन ही मन उच्चारण करते रहे।

“गगनग्रास… करण… गर्भद्रुति… बाह्यद्रुति… जारण… रंजन…सारण… क्रमण… वेधन… भक्षण”

दीवान दीनानाथ भी बूढ़े हो रहे थे। उन्हें ख़ुशी थी कि सियालकोट में उन्हें एक योग्य उत्तराधिकारी मिल गया था। जगत सिंह में वो सब गुण थे जो उनकी धरोहर को आगे ले जाने के लिए आवश्यक थे।

पुस्तक सात
2010

कर्मा त्शेरिंग की बेतहाशा खूबसूरत मठ-लैबोरेटरी गतिविधियों से गुंजायमान थी। चीड़ का घना जंगल जिसमें ये स्थित थी पहाड़ियों से उठते बादलों से घिरा था। नीचे मौजूद वादी का दिलकश नज़ारा पेश करने वाले कॉन्फ्रेंस कक्ष के अंदर कई व्यक्ति जमा थे। संस्थापक कर्मा त्शेरिंग मेज़ के मुख्य सिरे पर बैठा था। उसके सामने मेज़ के दूसरे छोर पर अध्यापिका ज्योति बैठी थीं। इन दोनों सिरों के बीच विनय, अलीशा, अभिलाषा, परोमिता और सरदार हरपाल सिंह थे।

अलीशा की गोद में एक चुलबुला सा लड़का था, दो साल का। उसका नाम सिद्धार्थ था। ये नाम इसलिए चुना गया था क्योंकि ये गौतम बुद्ध का वास्तविक नाम था। इस वक़्त गौतम बुद्ध पर रखे गए नाम वाले इस बच्चे के एकमात्र आध्यात्मिक विचार अलीशा के सामने रखे पानी के गिलास को लुढ़का देने से जुड़े थे।

"अनयसार रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड की दसवीं वार्षिक आम बैठक आरंभ की जाती है," कर्मा ने कहा। "मेरा मानना है कि कंपनी के सौ फीसदी शेयरधारक यहां मौजूद हैं।"

"अध्यक्ष की अनुमति से मैं कुछ कहना चाहूंगी," एक आवाज़ ने कहा। सब लोग अध्यापिका ज्योति की ओर मुड़े। "मैं विनय और अलीशा का आभार व्यक्त करना चाहूंगी कि उन्होंने अपने पिताओं के शेयर जीवन प्रकाश को दान कर दिए हैं," उन्होंने कहा। "मुझे विश्वास है कि हमारे पास मौजूद अस्सी फ़ीसदी शेयरों को सारी मानवता के कल्याण के लिए प्रयोग किया जाएगा।"

"मैं भी कुछ कहना चाहूंगी," अभिलाषा ने कहा। कर्मा ने अपनी स्वीकृति दी।

"मैं बस ये कहना चाहती हूं इन्होंने जो ये फ़ैसला लिया है, इसके लिए मुझे इन पर गर्व है," अभिलाषा ने कहा।

"मैं इसका समर्थन करती हूं," परोमिता ने कहा। "मुझे विनय और अलीशा से ऐसी ही उम्मीद थी। ईश्वर तुम दोनों पर कृपा करे।"

कर्मा खड़ा हुआ, कॉन्फ्रेंस कक्ष से बाहर गया और एक बेहतरीन पॉलिश की गई लकड़ी के बेस वाला कांच का बॉक्स लेकर आया। उसे उसने कॉन्फ्रेंस मेज़ पर रख दिया। बॉक्स के अंदर दो कड़े थे, एक के ऊपर एक रखे हुए। दोनों कड़ों पर एक-एक नाम था—मंजीत और दलजीत। लेकिन ये तांबे के कड़े नहीं थे।

ये सोने के थे।



कर्मा ने कांच के बॉक्स को उठाया और दोनों कड़े बाहर निकाले। जैसे ही उसने उन्हें अलग किया वो तांबे के हो गए। अध्यापिका ज्योति मुस्कुरा दीं रहस्य के संरक्षक के लिए ये उपयुक्त व्यक्ति है, उन्होंने सोचा।

उसने उन्हें वापस केस में रख दिया, एक दूसरे को छूते हुए, और कड़े एक बार फिर सोने की तरह चमकने लगे।

“ये कड़े जो आप देख रहे हैं, ये क्रियाशील रसायन हैं,” कर्मा ने कहा। “ये चीज़ों की परस्पर संबद्धता पर बल देते हैं। हम जिन्हें वस्तुओं की तरह देखते हैं, वो वास्तव में जटिल संबंध होते हैं—तत्वों के बीच परस्पर क्रिया। ये इस तथ्य का प्रमाण हैं कि कोई भी तत्व कुछ और बन सकता है। मुझे खुशी है कि जीवन प्रकाश और अनयसार अब मिलकर मात्र सोने से ज़्यादा बड़े लक्षयों को पाने के लिए काम करेंगे।”

“ये कड़े तांबे से सोने के और सोने से तांबे के क्यों हो जाते हैं?” विनय ने पूछा।

“क्वांटम फ़िज़िक्स ब्रह्मांड की बुनियादी अखंडता को उजागर करती है,” कर्मा ने कहा। “साथ ही, फ़िज़िक्स अब कहती है कि हम ब्रह्मांड को स्वतंत्र रूप से विद्यमान मूलभूत अंगों में विखंडित नहीं कर सकते। जब हम तत्व को गहराई से देखते हैं तो हमें पता लगता है कि हमारे पास वास्तव में जो है वो संपूर्ण के विभिन्न भागों के बीच संबंधों का जटिल जाल है। हरेक तत्व एक तत्व नहीं है बल्कि एक संबंध है, परस्पर क्रिया है।”

“लेकिन साइंस हमें बताती है कि तत्व अणुओं और परमाणुओं से बनता है,” विनय ने कहा। “इसमें अखंडता कहां है?”

“वास्तव में, साइंस हमें जो अब बता रही है, उसे युगों पहले पूर्व के रहस्यवादियों ने बता दिया था। ऋषियों का फ़ोकस पूरी तरह से सभी वस्तुओं और घटनाओं की एकात्मकता और आपसी अंतर्संबंधों की जानकारी पर था। सभी चीज़ों को परस्पर आश्रित और ब्रह्मांडीय इकाई के अभिन्न अंगों के रूप में देखा जाता था।”

अध्यापिका ज्योति ने हामी भरी। “हमें ब्रह्मांड की अखंडता को समझना होगा,” उन्होंने कहा। “चेतन और जड़ के बीच या प्राण और तत्व के बीच कोई भेद नहीं है। ब्रह्मांड एक अविभाज्य और अभिन्न वास्तविकता है जो निरंतर गतिमान रहता है। उपनिषद हमें बताते हैं: जो ध्वनिहीन, स्पर्शहीन, आकारहीन, अविनाशी है; उसी प्रकार स्वादहीन, अचल, गंधहीन, अनादि, अनंत, उच्च से भी उच्चतर, अटल है; उसे जान लेने वाला मृत्यु के मुख से मुक्त हो जाता है।”

“यानी दुनिया वास्तव में एक भ्रम है, माया है?” विनय ने पूछा।

“नहीं,” अध्यापिका ने कहा। “माया का मतलब ये नहीं है कि संसार भ्रम है। भ्रम तो हमारे दृष्टिकोण में होता है। अगर हम सोचते हैं कि हमारे आसपास मौजूद आकार और संरचनाएं प्रकृति की वास्तविकताएं हैं, बजाय इस बात को सराहने के कि वो हमारे आकलन और वर्गीकरण करने वाले मस्तिष्कों का उत्पाद हैं, तो वो माया है। ये उसी तरह है जैसे आप किसी मानचित्र को देखें और कहें कि आप पूरे क्षेत्र को जानते हैं। मानचित्र कभी भी क्षेत्र नहीं हो सकता है; आपको वो तीसरा नेत्र चाहिए जो मानचित्र और क्षेत्र के बीच अंतर कर सके।”

“और ये तीसरा नेत्र किस तरह सक्रिय होता है?” विनय ने पूछा।

“ध्यान के द्वारा। ध्यान के लिए संस्कृत का शब्द समाधि है। लेकिन इस शब्द का क्या अर्थ है?” अध्यापिका ने पूछा। “इसका मतलब है मानसिक संतुलन। ये मस्तिष्क की संतुलित और शांत अवस्था को बताता है जिसमें ब्रह्मांड की मूलभूत इकाई का

अनुभव किया जाता है।"

"अगर मैं इसका अनुभव नहीं कर सकता, तो इसका अनुसरण करने की कोशिश तो कर सकता हूं," विनय ने कहा।

"लेकिन अनुसरणकर्ता प्रक्रिया का भाग है, उससे अलग नहीं है," कर्मा ने कहा। "हाइज़ेनबर्ग का अनिश्चितता का सिद्धांत हमें बताता है कि हम किसी कण की पोज़ीशन के बारे में या तो ठीक-ठीक जानकारी पा सकते हैं और इसके वेग से अनजान रह सकते हैं या उलट हो सकता है। अनुसरणकर्ता अनासक्त अनुसरणकर्ता की भूमिका नहीं निभा सकता। वास्तव में, वो दृश्यमान वस्तुओं के गुणों को प्रभावित करता है।"

"तो हल क्या है?"

"हल संतुलन है," कर्मा ने कहा। "तुमने यिन और यैंग की चीनी अवधारणा के बारे में सुना है?"

"बिल्कुल," विनय ने जवाब दिया।

"वो आदमी जो पूर्व में आगे और आगे तक चलते जाना चाहता है, अंतत: पश्चिम में पहुंच जाता है। और जो आदमी पश्चिम में आगे ही आगे चलते जाना चाहता है, वो पूर्व में पहुंच जाता है। असल में, यैंग अपने चरम पर पहुंचने के बाद यिन की ओर वापस लौटता है; और यिन अपने चरम को पाने के बाद यैंग की ओर वापस आती है।"

"मैं अभी भी नहीं समझ पा रहा," विनय ने कहा।

"रसायन अमरत्व के लिए आवश्यक तीन तत्वों में से एक है। लेकिन बाक़ी दोनों को भी संतुलन में होना चाहिए," अध्यापिका ने कहा।

वो रुकीं।

कमरे में सम्मानपूर्ण मौन छा गया था, अलावा नन्हे सिद्धार्थ की गुड़गुड़ाहट के।

अध्यापिका ज्योति बोलीं। "सब सोचते हैं कि अमरत्व को उसी तरह पाया जा सकता है जैसे धातुओं को बदला जा सकता है," उन्होंने ज़ोर देकर कहा। "रसायन हमें बताता है कि सत्रहवें चरण में आप पारे को सोने में बदल सकते हैं और अठारहवें चरण तक हम इसका सेवन कर सकते हैं और अमर हो सकते हैं। कोई इस तथ्य पर विचार करने की परेशानी मोल नहीं लेता कि कोई तो वजह है कि सोना सत्रहवें चरण में ही बन सकता है।"

"क्यों?" विनय ने पूछा।

"ये मनुष्य की परम परीक्षा है," उन्होंने समझाया। "अधिकांश धराशायी हो जाते हैं। एक बार सोना पा लेने के बाद वो और अधिक पाना चाहते हैं। फिर और। उसके बाद और। अब जीवन का लक्षय सोना जमा करना बन जाता है। अमरत्व की खोज लुप्त हो जाती है।"

कर्मा ने सहमति में सिर हिलाया।

"रसायन फ़ॉर्मूले को इतनी सतर्कता से सुरक्षित रखने की वजह ही यह थी कि

अशोक और उनके लोग नहीं चाहते थे कि सोने का प्रयोग कभी भी युद्ध के लिए किया जाए। इसे मानवता के कल्याण के लिए प्रयोग किया जाना था," अध्यापिका ज्योति ने कहा। "और मैंने यही किया है। इस फ़ॉर्मूले के माध्यम से मैंने जितने भी सोने का निर्माण किया है, उसका प्रयोग मैंने डेढ़ सौ देशों में दो हज़ार जीवन प्रकाश आश्रम स्थापित करने में किया है। इनमें से प्रत्येक से स्कूल, अस्पताल, अनाथालय, वृद्धाश्रम और विश्वविद्यालय संबद्ध हैं। दस करोड़ से ज़्यादा लोग इस कार्यक्रम के अनुयायी हैं। मैंने कभी भी ये नियम नहीं तोड़ा है-सिवा एक बार 1991 के।"

"किसलिए?" विनय ने पूछा।

"सरकार घोर संकट में थी। देश में पैसा नहीं था और इस संकट से उबरने का एकमात्र तरीक़ा सोने को गिरवी रखना था।"

"आपका मतलब है कि... आपने... आपने...?" विनय ने अचंभित होते हुए पूछा।

अध्यापिका ज्योति मुस्कुराईं। "मुझे भरपूर प्रतिदान मिला है कि तुम दोनों मेरे जीवन में आए," उन्होंने विनय और अलीशा को देखते हुए कहा।

विनय और अलीशा मुस्कुरा दिए। ये भावना सबकी ओर से समान थी।

"लेकिन अमरत्व का क्या?" विनय ने अपना कारोबारी चोला वापस ओढ़ते हुए पूछा।

"मुझे विश्वास है कि जैलीफ़िश और संजीवनी—दोनों ही जीवदीप्ति उत्पन्न करते हैं—के अध्ययन के द्वारा हम रसायन के अठारहवें चरण को प्राप्त कर सकते हैं। यद्यपि संजीवनी ने लक्ष्मण को ठीक किया था, लेकिन लगता है कि अब इसमें वैसी उपचारक शक्ति नहीं रही है। हो सकता है इसकी वजह उन मनुष्यों में हो जिनका हम उपचार करने की कोशिश कर रहे हैं। हो सकता है रामायण युग के लोगों में ऐसे गुण होते थे जो इन जड़ी-बूटियों को काम करने देते थे?"

"जीवन प्रकाश के माध्यम से हम यही सिखाने की कोशिश कर रहे हैं," अध्यापिका ने कहा। "वैकल्पिक मानवीय गुणों का निर्माण करना जो अमरत्व के लिए अनुकूल हों। क्या मैं इस सभा का समापन एक छोटी सी प्रार्थना से करने की राय दे सकती हूं?"

उन्होंने शिव के प्रति मन ही मन नमन करते हुए अपने हाथ जोड़ दिए और संस्कृत में मंत्रोच्चार करने लगीं।

"ओऽम त्रयम्बकं यजामहे

हम त्रिनेत्रधारी प्रभु की पूजा करते हैं

सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं,

जो सुगंध फैलाते हैं और सभी जीवों का पोषण करते हैं

उर्वारुकमिव बन्धनान्

जिस प्रकार माली पकी हुई ककड़ी को लता के बंधन से मुक्त करता है

मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्!”

उसी प्रकार वह भी अमरता के लिए हमें मृत्यु से मुक्त करें।”

उपसंहार

कांस्टेबल सुखबीर सिंह ने अपने सहयोगियों को मदद के लिए पुकारते हुए अमृतसर में मौत की ट्रेन में प्रवेश किया। उसने ज़िंदा बच गए लोगों की तलाश की प्रक्रिया शुरू की, हालांकि उसका अंदाज़ा था कि कोईज़िंदा नहीं बचा होगा।

सौभाग्य से, सुखबीर सिंह का अंदाज़ा अक्सर ग़लत होता था।

कुछ ही मिनटों में, उसके हाथ ख़ज़ाना लग गया। ये आवाज़ कैसी थी? क्या कोई सिसक रहा था? सुखबीर पागलों की तरह लाशों को हटाने लगा। अगर इस ट्रेन पर एक भी व्यक्ति बचा था, तो सुखबीर उसे ढूंढ़कर रहेगा।

कुछ मिनट बाद उसने एक छोटे से, बुरी तरह डरे हुए बच्चे को एक सीट के नीचे से निकाल लिया। लड़के का कुर्ता उस पर गिर पड़ी लाश की वजह से ख़ून से सन गया था। उसके गाल आंसुओं और कालिख से गंदे हो रहे थे। सुखबीर ने लड़के की ओर हाथ बढ़ाया, तो वो कांपने लगा।

"श्श्श, बच्चे, मैं तुम्हें मारूंगा नहीं," उसने ठिनकते बच्चे को अपनी गोद में उठाते हुए कहा। उसने ये कोशिश करते हुए उसे प्यार के साथ सीने से लगाया कि बच्चे के दिमाग़ से उन भयानक राक्षसों की यादें चली जाएं जिन्हें उसने देखा था और जो उसकी यादों से चिपककर रह गए थे।

दुर्भाग्य से, वो जानता था कि ये राक्षस उसकी बाक़ी सारीज़िंदगी उसे सताते रहेंगे।

पसीने और ख़ून से सना सुखबीर बच्चे को लेकर ट्रेन से निकलने ही वाला था कि उसे एक कराह सुनाई दी। क्या उसके कान बज रहे थे? क्या ये एक और इंसानी आवाज़ थी? और फिर वो आवाज़ दोबारा सुनाई दी।

सुखबीर ने अपने सहयोगी चांदप्रकाश को आवाज़ दी। "चांद, इस लड़के को रिटायरिंग रूम में ले जाओ। इसे खाने-पीने को कुछ देना। मुझे दूसरी आवाज़ को ढूंढ़ना है।"

ट्रेन जब सियालकोट से निकली तो डिब्बे लोगों से खचाखच भरे हुए थे। किसी भी तरह हिंदुस्तान पहुंचने के लिए सैकड़ों लोग छतों पर चढ़े हुए थे। अनेक अपनी जान बचाने के लिए ख़तरनाक तरीक़े से ट्रेन के दरवाज़ों और खिड़कियों से लटके हुए थे।

एक चौबीस-पच्चीस साल की सरदारनी अपने दो छोटे लड़कों के साथ, अपना घर-बार, खेत, सामान और वो सब कुछ जो उसके परिवार का था, छोड़कर ट्रेन में चढ़ने की कोशिश कर रही थी। उसे अपने पति को भी छोड़ना पड़ा था—जो शायद अब तक तो लाश ही बन चुका होगा।

उसके परिवार को धमकियां मिल रही थीं कि अगर उन्होंने नए बने पाकिस्तान को नहीं छोड़ा तो उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाएगा। ये सच है, जब पास की एक मस्जिद में लंबी बैठकों के लिए मुसलमान इकट्ठा होने लगे थे तो उसके पति को ख़तरे का अंदाज़ा हो गया था। और अंत में, आसपास के इलाक़ों के मुसलमानों ने एकजुट

होकर सिख गांव पर हमला कर दिया।

हालांकि, वे बहुत थे, परंतु सिखों ने कुछ घंटे अपनी पुरानी राइफ़लों और ज़ंग लगी तलवारों से हमलावरों का सामना किया। जब अंत में मुसलमान सुरक्षा घेरे को तोड़ने में सफल रहे तो उन्होंने कोई रहम नहीं दिखाया। सरदारनी ने अपनी आंखों के सामने एक तेरह साल की लड़की का बलात्कार होते देखा। एक बुज़ुर्ग के कुल्हाड़ी से टुकड़े होते देखे। उसने कई औरतों को गांव के कुएं में कूदते देखा, ताकि वो दरिंदगी से खुद को बचा सकें। उसने वो कई चीज़ें देखीं जो वो कभी नहीं देखना चाहती थी।

उन्होंने ये जानते हुए उसके पति को पकड़ लिया था कि वो बहुत प्रभावशाली व्यक्ति है। उसने बहादुरी से अपना बचाव किया पर वो किसी काम का नहीं रहा। दंगाइयों ने हंसते हुए उसके हाथ काट दिए और उसे विवश बना दिया।

लातों और घूंसों की बौछारों के बीच उसने अपनी पत्नी से कहा कि इससे पहले कि वो लुटेरे उसके साथ कुछ बदसुलूकी करें, वो बच्चों को लेकर वहां से भाग जाए। "याद रखना ये कड़े पहने रहें," उसने अपनी पत्नी से कहा। "अपनी विरासत बचाने का और कोई तरीक़ा नहीं है।"

उसने घबराहट में अपने पति के निर्देशों का पालन किया। अपने लड़कों को लेकर वो सीमावर्ती गांवों के खेतों में भाग गई। पति को मरता छोड़कर भागने पर वो अपने आप पर शर्मिंदा थी।

उसने सोचा था कि वो कुछ खेतों से होते हुए एक छोटी नदी पार कर स्टेशन पहुंच जाएंगे, इससे मेन रोड से बचा जा सकता था। पर इससे पहले कि वो लोग पहला खेत पार करते, उसने खुद को उस बदबूदार दंगाई के वहशी चंगुल में फंसा पाया, जो गांव से ही उन लोगों का पीछा कर रहा था। लड़के लाचार से सब कुछ देख रहे थे, उस आदमी ने अपनी हवस शांत करने के लिए सरदारनी को ज़मीन पर गिरा दिया, वो आदमी उसके ऊपर लेटा और मर्दानगी दिखाने के लिए अपनी पैंट के बटन टटोलने लगा।

लड़कों ने उसे हटाने की कोशिश की, पर पांच साल के बच्चों के लिए वो बहुत ताक़तवर था, अचानक ही बच्चों ने उसका निर्जीव शरीर देखा। यह तो चमत्कार था! सरदारनी ने खुद को उस दरिंदे के नीचे से निकला, उसका कुर्ता खून से सना हुआ था। वो लाश पर झुकी, उसे घुमाया और उसके पेट से अपनी कृपाण निकाल ली। वो जानती थी कि उसे दोबारा इसकी ज़रूरत पड़ सकती है। अपनी रक्षा से ज़्यादा उसके लिए अपने बच्चों की ज़िंदगी बचाना ज़रूरी है।

सियालकोट जंक्शन पर हताशा भरे पागलपन का मंज़र था। हज़ारों लाचार लोग पागलों की तरह ट्रेन के हर हिस्से पर चिपके हुए थे। वो दोनों लड़कों को ट्रेन में चढ़ाने के लिए दृढ़ थी। उसने दोनों बच्चों को डिब्बे में घुसा दिया, वो पसीने की बदबू और रोते बच्चों से भरा बदबूदार नर्क था। वो जानती थी कि दोनों इतने छोटे और चुस्त हैं कि ठसाठस भरे डिब्बे में जगह बना ही लेंगे। पर इससे पहले कि वो खुद उस डिब्बे में घुस पाती, गाड़ी धुएं का ग़ुबार छोड़ती और छुकछुक करती चल दी।

गाड़ी को छूटते देख, जो लोग चढ़ नहीं पाए थे, वो घबराहट और बेचैनी में चीख़ने-

चिल्लाने लगे। ये आख़री ट्रेन थी जो भारत की ओर रवाना हुई थी। सरदारनी गाड़ी के साथ-साथ भागते हुए हैंडल पकड़ने की कोशिश करने लगी। वो हैंडल तक पहुंच गई थी पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी। प्लेटफ़ॉर्म ख़त्म हो गया था और गाड़ी ने गति पकड़ ली थी।

"नहीं," वो तड़पकर चिल्लाई। उसके आंसू बह रहे थे क्योंकि वो जानती थी कि उसके बच्चे उसके बिना ही अमृतसर जाने वाली गाड़ी में सवार हैं। वो प्लेटफ़ॉर्म पर ही बेहोश हो गई क्योंकि अब उसके पास जीने के लिए कुछ भी नहीं बचा था।



रेलवे कांस्टेबल चांदप्रकाश कैंटीन से जल्दी-जल्दी लोगों से भरे रिटायरिंग रूम की ओर बढ़ा। उसने बच्चे को एक युवती के पास छोड़ा था जिसने गाजरी बॉर्डरवाली बेज रंग की साड़ी पहनी हुई थी। उसके एक हाथ में मीठी चाय का गिलास था और दूसरे हाथ में एक परांठा। कैंटीन मैनेजर को रिश्वत देने के बावजूद वो बस यही जुटा पाया था।

स्टेशन पर चारों तरफ़ तबाही और अराजकता का मंज़र था। धुएं की तीखी गंध हवा में फैली हुई थी। फ़रीद चौक पर जूते की एक दुकान में लगी आग से ये शुरू हुई थी। हिंसा चौक पराग दास तक फैल गई थी जहां पच्चीस मुसलमानों को बेरहमी से मार दिया गया था। इसके बाद दंगे और मारकाट का नंगा नाच शुरू हो गया। अकेले अमृतसर में ही दस हज़ार घर जला दिए गए थे। क़िस्मत से अमृतसर जंक्शन सेना के नियंत्रण में था, पर शहर के मुसलमान सड़कों पर घूमते, लूटमार करते हिंदू और सिख गुटों से किसी तरह बचने के रास्ते तलाश रहे थे।

जब सुखबीर ने बच्चे को चांदप्रकाश को सौंपा तब बच्चा डरा-सहमा हुआ था। अपनी पूरी कोशिशों के बावजूद चांद उस बच्चे को शांत कर पाने में नाकाम रहा था। भीड़ भरे रिटायरिंग रूम में एक युवती आगे आई, जिसने गाजरी बॉर्डरवाली बेज रंग की साड़ी पहनी थी, और जो बिना पंजाबी पुट के अच्छी हिंदी बोल रही थी। उसने प्यार से बच्चे के कान में कुछ कहा और उसे गले लगा लिया, इससे वो कुछ हद तक बच्चे को शांत करने में सफल रही। उसी ने बच्चे के हाथ में पड़ा तांबे का कड़ा देखा। उस पर एक नाम लिखा था—दलजीत।



चांद को समझ नहीं आ रहा था कि क्यों उसके प्यारे पंजाब के इतनी बेरहमी से टुकड़े किए जा रहे हैं। उसने लोगों से भरे प्लेटफ़ॉर्म, जो कैंटीन को रिटायरिंग रूम से अलग करता था, को पार करते हुए अपनी गति बढ़ाई। वो रिटायरिंग रूम में घुसा और चारों तरफ़ गाजरी बॉर्डरवाली बेज रंग की साड़ी पहनी युवती को ढूंढ़ने लगा।

कमरा लोगों और शोरशराबे से भरा था। एक युवक एक कॉमरेड से अपने हाथ पर पट्टी बंधवा रहा था; एक बुढ़िया रोते हुए बच्चे को चुप करने की कोशिश कर रही थी; एक बुज़ुर्ग जोड़ा अपना ट्रंक ठीक कर रहा था; सेना का एक कैप्टन कोने में बैठा कुछ

सोच रहा था; एक साधु प्रार्थना बुदबुदा रहा था; पोनीटेल वाली एक छोटी लड़की अपनी मां की गोद में सिर रखकर सो रही थी। एक पंखा दृढ़ता से बदबू को हटाने का प्रयास कर रहा था, किंतु मौत की वो गंध अभेद्य थी।

चांद ने पूरा कमरा छान लिया, पर न तो वो युवती और न ही वो लड़का उसे कहीं दिखाई दिए। वो कमरे से बाहर निकला और दूर तक प्लेटफ़ॉर्म पर नज़र दौड़ाई। उस युवती ने गाजरी बॉर्डरवाली बेज रंग की साड़ी पहनी थी। अगर वो प्लेटफ़ॉर्म पर होती, तो वो ज़रूर पहचान जाता। चांद क़रीब एक घंटे तक ढूंढ़ता रहा, पर बाद में उसने उम्मीद छोड़ दी।

एक दुखद सच ये भी था कि उस दिन अमृतसर में इतने लाचार लोग थे कि एक खोया बच्चा कोई मायने नहीं रखता था।



सरदारनी, जिसने सियालकोट से जाती ट्रेन में अपने दो लड़के छोड़ दिए थे, स्टेशन के प्लेटफ़ॉर्म पर बेसुध बैठी हुई थी। उसके पास जीने के लिए अब क्या बचा था? उसका पति अब तक मर चुका होगा। उसके अनमोल बच्चे एक ऐसी ट्रेन में थे जो अजनबियों से भरी थी और उस ज़मीन की ओर जा रही थी जो इस मुल्क के लिए हमेशा के लिए बंद हो जाने वाली थी, जहां वो भटक रही थी।

"मैं आपकी मदद करूंगा," एक आवाज़ आई। वो नम्र, पर दृढ़ थी।

उसने सिर उठाया तो नीली आंखों वाले एक सुंदर सरदार को देखा। वो सत्ताईस-अट्ठाईस साल का लग रहा था। "गुरुद्वारा जलकर ख़ाक हो गया है," उसने कहा। "हमारे पास ज़्यादा वक़्त नहीं है। मेरा परिवार एक क़ाफ़िले में यहां से निकल रहा है। आप साथ चलना चाहेंगी?"

सरदारनी ने कृतज्ञतापूर्वक उसका हाथ पकड़ा और खड़ी हो गई।

"आपका नाम क्या है?" उसने पूछा।

"परमीत," वो बोली। "और आपका?"

"हरपाल," उसने जवाब दिया।

"मुझे अपने पति को देखने गांव जाना है। क्या आप मेरे साथ चलेंगे?" उसने पूछा।

हरपाल ने अपने कंधे के पीछे देखा। क़ाफ़िले के लोग बेचैन हो रहे थे। उन्हें जल्द से जल्द वहां से निकलना था। वो उनके पास गया और उनसे आगे बढ़ने को कहा। वो और महिला जल्दी ही उनके साथ आ मिलेंगे।

उन्होंने खेत और नदी पार किए और उसके गांव पहुंच गए पर वहां बमुश्किल ही कुछ बचा था। घरों को जला दिया गया था और सड़कों पर हर तरफ़ लाशें बिखरी पड़ी थीं। लुटेरे क़ीमती चीज़ें लेकर जा चुके थे। वो पागलों की तरह उस लुटी-पिटी जगह को देखने लगी, जो कभी उसका घर हुआ करती थी, उसे घावों और ख़ून में लिथड़ा अपना पति मिला, उसके हाथ काट दिए गए थे। वो उसकी लाश से लिपटकर प्रार्थना

करने लगी कि कोई चमत्कार हो और वो उसके प्यार से फिरज़िंदा हो जाए, पर ऐसा नहीं हो सकता था।

हरपाल ने धीरे से उसके कंधे पर हाथ रखा, "हमें जाना होगा," उसने उससे कहा।

उसने बेमन से अपने पति को छोड़ा और खड़ी हो गई। "आप जाएं," उसने हरपाल से कहा, "मुझे एक और जगह जाना है।"

"यहां सुरक्षित नहीं है," हरपाल ने कहा। "ख़ून के प्यासे दंगाई चारों तरफ़ घूम रहे हैं। हमें पहले ही देर हो चुकी है।"

"अब जब मेरे पति नहीं रहे हैं, तो मैं पूरन दा खू—पूरन भगत के कुएं पर—जाए बिना नहीं जा सकती।" उसने कहा।

"क्यों?" हरपाल ने पूछा, वो उसे अकेले छोड़कर नहीं जाना चाहता था।

"उसमें मेरे पति की आख़री निशानी है, जिसके लिए वो जीते थे," परमीत ने जवाब दिया।

"चलो," हरपाल जल्दी से बोला। "चलो उसे लेते हैं और यहां से निकलते हैं।"

बहुत देर चलने के बाद वो लोग कुएं तक पहुंचे। कुएं के आसपास भी लाशें बिखरी पड़ी थीं। परमीत ने इधर-उधर बिखरे अंगों को नज़रअंदाज़ करते हुए कुएं में झांका। उसने घड़ी की सूई की दिशा में कुछ क़दम चलकर एक बार फिर कुएं में झांका। और इस बार वो दिखाई दिया। कुएं की क़रीब आधी गहराई में एक अलग रंगों के पत्थरों का झुंड था। उसने कुएं से बाल्टी बाहर निकाली, और उसकी रस्सी खोलकर अपनी कमर में बांध ली। उसने दूसरा छोर हरपाल को पकड़ा दिया। "आपको मेरा भार उठाना पड़ेगा, क्या आप कर पाएंगे?"

जब वो बाहर आई तो उसने अपने हाथ में मोमज़ामे में लिपटा एक पैकेट पकड़ा हुआ था जिस पर जेलीफ़िश की टेढ़ी-मेढ़ी सी आकृति बनी हुई थी। क़रीब घंटे भर बाद वो लोग पसरूर के रास्ते पर थे जहां उन्हें अपने क़ाफ़िले से मिलना था।



आने वाले कुछ हफ़्ते वो लोग रात में खेतों में छिपते रहे, बिछौने के नाम पर केवल उनके तन के कपड़े ही थे, और बेतहाशा गर्म दिनों में भूखे-प्यासे घिसटते रहे। एक अकेली पूंजी जिसे हर वक़्त परमीत अपने से चिपकाए रखती थी, वो थी वो पोटली जिसे वो कुएं से निकालकर लाई थी। वो उसे अपनी नज़रों से दूर नहीं होने देती थी।

उस क़ाफ़िले के साथ पंजाब रेजीमेंट के सिख सिपाहियों का रक्षक दस्ता चल रहा था। जगहों के वो नाम जो कभी जाने-पहचाने थे, आज बेगाने लग रहे थे—हुंडल, चाविंडा, नारोवाल। जब वो लोग नारोवाल पहुंचे, तो उन्हें घुटनों तक भरी कीचड़ को पार करना पड़ा। जब वो लोग वहां से निकल रहे थे, तो हरपाल ने देखा कि कोई अपने छज्जे पर से उन्हें पानी दे रहा था। उसने अपनी आंखें छोटी कर ऊपर देखा। जो औरत उन्हें पीने को पानी दे रही थी वो अपनी जान जोखिम में डाल कर ये सब कर रही थी

और एक परदे के पीछे छिपी हुई थी। ये इंसानियत की मिसाल ही थी, पलायन करते राहगीरों की प्यास बुझाना।

"इसे मत पीना," क़ाफ़िले के कुछ लोगों ने कहा। "ये ज़हर भी हो सकता है!"

हरपाल ने उन्हें अनसुना कर दिया। वो आभार मानते हुए अंजुली बनाकर पानी पीने लगा।

सियालकोट छोड़ने के अठारह दिन बाद क़ाफ़िला भारत के डेरा बाबा नानक पहुंचा। भूख से बेहाल यात्रियों को तुरंत गुरुद्वारे ले जाया गया और खूब सारे पीले चावल खाने को दिए गए। खाना कभी इतना लज़ीज़ नहीं लगा था जितना उस दिन लग रहा था। उस रात वो लोग गुरुद्वारे में ही सोए, वो निढाल ज़रूर थे पर इस बात की उम्मीद भी थी कि वो अगले दिन का सूरज ज़रूर देखेंगे।



रेलवे कॉन्स्टेबल सुखबीर सिंह को लाशें खंगालते हुए एक घंटा हो गया था। वो उस दूसरी आवाज़ को तलाश रहा था। वो धीमी होती जा रही थी पर इसमें कोई शक नहीं था कि वो रोना किसी बच्चे का था। आख़िरकार उसकी मेहनत रंग लाई।

बमुश्किल पांच साल का एक बच्चा बेहोशी की हालात में दो हट्टे-कट्टे आदमियों की लाशों के बीच दबा हुआ था। उसका मुंह और नाक एक लाश के धड़ से दबे हुए थे, जिससे उसका सांस लेना मुश्किल हो रहा था। बच्चे के रोने की सी जो आवाज़ सुखबीर ने सुनी थी, वो दरअसल सांस लेने की पुरज़ोर कोशिश की आवाज़ थी।

सुखबीर ने बहुत संभालकर उस भयानक गंदगी से बच्चे को निकाला और अपनी मज़बूत बाज़ुओं में उठा लिया। "डॉक्टर साहब," वो चिल्लाया। "मुझे इस बच्चे के लिए आपकी ज़रूरत है! हमें शायद इसे अस्पताल ले जाना होगा।"

"ज़रूर, सुखबीर, मुझे देखने दो," सेना के एक अधेड़ डॉक्टर ने कहा, उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था मानो थकान की वजह से वो खुद ही अभी गिर जाएंगे। उनका नाम था डॉक्टर मुर्शिद ख़ान। हालांकि अमृतसर में उनका अपना परिवार हमलावरों के निशाने पर था परंतु वो हज़ारों हिंदू शरणार्थियों की सेवा में जुटे हुए थे। क्या सिर्फ़ मुसलमान होने की वजह से उन्हें अपना बोरिया-बिस्तर बांधकर पाकिस्तान चला जाना चाहिए? डॉक्टर मुर्शिद ख़ान का भागने का कोई इरादा नहीं था।

डॉक्टर ने तुरंत ही बच्चे की नब्ज़ जांची। अपना आला बच्चे के सीने पर रख उसकी सांसों का जायज़ा लिया। "ये ठीक लग रहा है," थोड़ी देर बाद उन्होंने कहा। "पर हमें कोई जोखिम नहीं उठाना चाहिए। इसमें पानी की कमी हो गई है और तेज़ बुख़ार भी है। हमें इसे तुरंत ही विक्टोरिया जुबली अस्पताल में भरती कराके निगरानी में रखना होगा।"



गाजरी बॉर्डरवाली बेज रंग की साड़ी पहने उस औरत ने अपनी गोद में सिर छिपाकर सोते हुए बच्चे को देखा। और फिर उसने अपने पति की ओर नज़र घुमाई। "क्या आप मुझसे नाराज़ हैं?" उसने घबराते हुए पूछा।

उनकी शादी को पांच साल हो गए थे, और तमाम कोशिशों और बेतुकी दवाएं खाने के बावजूद उनकी कोई संतान नहीं हुई थी। इसी ख़्वाहिश में वो तीर्थयात्रा पर निकले थे कि शायद ईश्वर प्रसन्न होकर उन पर अपनी रहमत बरसा दे। अमृतसर का स्वर्ण मंदिर उनका आख़री पड़ाव था।

वो हरमिंदर साहब में दर्शन कर स्टेशन पर अंबाला जाने वाली ट्रेन का इंतज़ार कर रहे थे कि उन्हें बच्चे का हाथ थामे चांदप्रकाश दिखा। मानो ईश्वर ने उनकी प्रार्थना सुन ली थी।

उसके पति ने पहले उसे और फिर सोते हुए बच्चे को देखा। पिछले कुछ साल उसकीज़िंदगी के सबसे चुनौतीपूर्ण साल रहे थे। उसके पिता जिस दार्जीलिंग टी एस्टेट में काम करते थे, उसने वहां के मैनेजर के पद को ठुकराकर उनकी नाफ़रमानी की थी। उसके बाद कलकत्ता आकर खुद का जूट का व्यवसाय शुरू करना भी बहुत थकाने वाला रहा। अंत में शकुंतला से शादी ने बाप-बेटे के बिगड़े रिश्ते में अंतिम आहूति का काम किया। शकुंतला बागड़िया परिवार से नीची जाति की थी और बृजमोहन लाल के रूढ़िवादी समाज ने इस शादी का विरोध किया। हालांकि हर तरह का पारिवारिक समर्थन ख़त्म हो रहा था पर फिर भी बृजमोहन ने शादी कर ली।

"मैं तुमसे बहुत प्रेम करता हूं, शकुंतला," उसने धीरे से उससे कहा। "हां, जो तुमने किया वो ग़लत हो सकता है, पर उस ख़ौफ़नाक ट्रेन में कोईज़िंदा नहीं बचा था। तुमने शायद इस लड़के कीज़िंदगी को एक नई शुरुआत दी है।"

शकुंतला मुस्कुराई। "आपकी बात सुनकर मुझे बहुत सुकून मिला है," उसने कहा। "मुझे लग रहा था कि इस बच्चे को चुराने के कारण आप मुझसे नाराज़ हैं। मुझे लग रहा था आप मुझे इसे पुलिस को लौटाने को कहेंगे।"

"और ऐसा करने से क्या हासिल होता?" बृजमोहन ने पूछा। "इसे किसी अनाथाश्रम में भेज दिया जाता जहां ये बिना प्यार और देखभाल की ज़िंदगी बिताता। इसकी भी कोई वजह होगी कि ये बच्चा तुम्हें सौंपा गया।"

"मुझे दलजीत नाम बहुत अच्छा लगा," शकुंतला ने कोमलता से बच्चे का हाथ थामा जिसमें तांबे का कड़ा पड़ा हुआ था।

"मगर मेरा ख़्याल है कि तुम ये कड़ा उतारकर अपने पास रख लो," बृजमोहन ने कहा। "हम इसे किसी और नाम से बुलाएं, इसी में भलाई है। जितनी जल्दी ये हमारे रहन-सहन को अपना लेगा, उतनी ही जल्दी अपने साथ हुए इस भयानक वाक़ये को भूल पाएगा।"

"हम इसे क्या बुलाएं?" शकुंतला ने कोमलता से पूछा।

"कमल का फूल कहां खिलता है? कीचड़ में! ये बच्चा हमारा कमल है—वो कमल जिसे हमने कीचड़ से निकाला है। हम इसे 'अरविंद' बुलाएंगे।"



विक्टोरिया अस्पताल मरीज़ों से अटा पड़ा था। दंगों ने सैकड़ों जानें ली थीं पर उससे भी कहीं ज़्यादा घायल थे।

"इसके मां-बाप कहां हैं?" डॉक्टर ने बच्चा नर्स को दिया तो उसने पूछा।

"इसका कोई नहीं है। शायद इसके मां-बाप दोनों मर चुके हैं," डॉक्टर ने कहा। "इसे बुख़ार है। इसे तब तक थोड़ी देखभाल की ज़रूरत है जब तक इसे किसी अनाथाश्रम न भेज दिया जाए।"

"डॉक्टर साहब, ज़रा आसपास देखिए," नर्स ने कहा। "हम गंभीर रूप से घायल सैकड़ों मरीज़ों की तो ठीक से देखभाल कर नहीं पा रहे हैं, क्यों न आप इसे किसी के घर ले जाएं?"

"मेरा घर जलकर ख़ाक हो चुका है," डॉक्टर ने खिन्न मन से कहा।

"मैं अपने परिवार के साथ आज ही अमृतसर से निकल रहा हूं।"

"पाकिस्तान के लिए?" उदास होते हुए नर्स ने पूछा।

"नहीं," इस अनुमान पर थोड़ा खीजते हुए डॉक्टर ने कहा। "मैं अपने परिवार को बंबई ले जा रहा हूं। इस देश ने अभी तो अपना मानसिक संतुलन खो रखा है, पर मुझे यक़ीन है कि ये साढ़े चौंतीस करोड़ लोग समय के साथ इन ज़ख़्मों को भरने का रास्ता निकाल ही लेंगे।"

"इस बच्चे का क्या होगा?" नर्स ने पूछा।

"मैं इसे साथ ले जाता हूं। मुझे यक़ीन है कि मैं किसी न किसी को तो ढूंढ़ ही लूंगा जो इसे इसके हिस्से का प्यार दे सके।"

"इसके कड़े पर क्या लिखा है?" तांबे के कड़े को देखते हुए नर्स ने पूछा।

"शायद इसका नाम—मनजीत," डॉक्टर ख़ान ने बच्चे को गोद में लिए अस्पताल से बाहर जाते हुए कहा।



जब उनका ट्रक बंबई में दाख़िल हुआ तो डॉक्टर मुर्शिद ख़ान ने राहत की सांस ली। यह ख़ौफ़नाक सफ़र रहा था और वो सोच भी नहीं सकते थे कि ट्रक ड्राइवर की मदद के बिना वो लोग इतनी दूर कैसे आते। रास्ते में कई दफ़ा लूट और बेरहम दंगों के वाक़ये पेश आए, और ये सफ़र जो बमुश्किल कुछ दिनों का था, दो हफ़्ते में पूरा हो पाया था।

वो ट्रक बंबई की एक कपड़ा मिल के लिए कपास लेकर जा रहा था और डॉक्टर ख़ान, उनकी पत्नी, बेटी, बेटे, और छोटे मनजीत ने पंद्रह दिन कपास की गठरियों पर उछलते-कूदते काटे थे।

“कोई ख़ास जगह, जहां मैं आप लोगों को उतार दूं?” ड्राइवर ने पूछा।

“मेरा रिश्ते का भाई डोंगरी में रहता है,” डॉक्टर ख़ान ने जवाब दिया। “वो भी डॉक्टर ही है।”

“अरे वाह,” ड्राइवर ने जवाब दिया। “मुझे ये माल नवरोजी मिल में पहुंचाना है। उसी जगह। मैं आपको मझगांव गोदी के पास ही उतार दूंगा।”

जब वो गोदी के पास पहुंच ही रहे थे, अचानक एक टैंकर तेज़ी से ट्रक के आगे आ निकला। वो बाल-बाल बचे थे।

“पागल!” ड्राइवर बड़बड़ाया। “इसकी जल्दबाज़ी किसी की जान ले लेगी...”

अचानक ज़बरदस्त धमाका हुआ। धमाके की आवाज़ मीलों तक सुनाई पड़ी और धुएं ने सड़क की सारी गाड़ियां ढक दी थीं।

अय्यूब ख़ान तुरंत बैंच से उठा। वो गोदी के कमरतोड़ काम से विश्राम ले बीड़ी पी रहा था, जब उसने तेल से भरे टैंकर को सड़क किनारे मौजूद बिजली के सब-स्टेशन से टकराते हुए देखा। उसके बाद बम के धमाके जैसा ही धमाका हुआ। टैंकर फट गया जिससे आसपास की खिड़कियां टूट गईं और उसके पास की कारें और ट्रक धू-धू कर जलने लगे।

अय्यूब और उसका दोस्त दुर्घटना स्थल की ओर दौड़े और नंगे हाथों से ही जलती गाड़ियों सेज़िंदा और मुर्दा लोगों को निकालने लगे।

ट्रक जल रहा था। ड्राइवर उसी क्षण मर गया था, विंडस्क्रीन के टुकड़े भाले की तरह उसकी छाती में घुस गए थे। कपास में भी आग लग चुकी थी और अय्यूब जलते कपास से आती कुछ लोगों की चीख़ें भी सुन पा रहा था। उनकी चीख़ें रूह कंपा देने वाली थीं।

उसी समय उसने सड़क पर किसी को पड़ा देखा, उसकी छोटी सी कलाई में एक कड़ा था।



वो छोटा बच्चा जिसने हाथ में कड़ा पहना था धमाके से ट्रक के बाहर एक कूड़े के ढेर पर जा गिरा। कूड़े के उस ढेर ने उस बच्चे को किसी बड़ी चोट से बचा लिया था।

अय्यूब ने अंदाज़ा लगाया कि बच्चे का पूरा परिवार उस ट्रक में ही ख़ाक हो गया है। अब ये बच्चा यतीम है।

“शुक्रन अल्लाह वलहम्दुलिल्लाह,” लड़के को उठाकर अपनी बांहों में भरते हुए अय्यूब धीरे से बुदबुदाया।

अय्यूब और उसकी बीवी ने कुछ साल पहले एक निर्माण कार्य में हुए हादसे में अपने इकलौते बेटे को खो दिया था। तब से उन्होंने और बच्चे के लिए कोशिशें बंद कर दी थीं। उस नुक़सान ने उनकीज़िंदगी में आए ख़ालीपन की भरपाई करने की चाह ही

ख़त्म कर दी थी।

पर उस वक़्त, अय्यूब ने अपना मन बना लिया। अय्यूब की तन्ख़ाह तीस रुपए महीना थी, जिसमें बमुश्किल उसका और उसकी बीवी का ही ख़र्च निकल पाता था। पर उस नन्हे बच्चे को अपनाने में ये वजह अय्यूब के लिए रुकावट नहीं बन सकती थी।

"तुमने मौत को हराया है, बच्चे," उसने धीरे से बच्चे के कान में कहा। "जब ट्रक ने आग पकड़ी, तुम हवा में उड़ गए। तुम किसी ताक़तवर बाज़ से कम नहीं हो। मैं तुम्हें 'अरबाज़' बुलाऊंगा।"

घर पहुंचकर अय्यूब ने चुपचाप अरबाज़ को शबाना को दे दिया। "इस लड़के को परिवार की ज़रूरत है। मुझे अपने से ज़्यादा सही और कोई परिवार नहीं लगा," उसने अपनी बीवी से कहा। उसने उस प्यारे बच्चे की ओर देखा, धमाके की कालिख से उसका चेहरा ढका हुआ था। अय्यूब ने इन दो सालों में पहली बार अपनी बीवी के चेहरे पर मुस्कुराहट देखी थी।

"इसने तो कड़ा पहना हुआ है," उसने ग़ौर किया। "ये ज़रूर सरदार है। अब हम क्या करें?"

"ये तांबे का है। इसे अपने पानी के मटके में डाल दो," अय्यूब ने कहा। "और सब कुछ भूलकर बस ये याद रखो कि ये हमारा बेटा है।"



अमृतसर पहुंचे क़ाफ़िले को ख़ालसा कॉलेज में बने शरणार्थी शिविर में भेज दिया गया। ये लोगों के विशाल समुद्र सा था, क़रीब पच्चीस हज़ार लोग थे वहां। शिविर का रसोईघर इस जनसैलाब से निबटने की पुरज़ोर कोशिश कर रहा था और स्थानीय गुरुद्वारे भी इन कोशिशों में सहयोग दे रहे थे। शिविर बूढ़ों, कमज़ोरों, कंगालों और अनाथों से भरा हुआ था। ये मानव त्रासदी का एक समूह था।

परमीत ने परोसी गई सूखी रोटी खाई। उसकी आंखें नम थीं। सूखी रोटी नम आंखें। वो अपने इतने बड़े नुक़सान—दलजीत और मनजीत के खोने—का सामना कैसे करेगी? वो कैसे ख़ुद को पति को मरता छोड़कर भागने के लिए माफ़ कर पाएगी? उसने अपने हाथ पर किसी का हाथ महसूस किया। हरपाल था।

"मैं पुलिस के दारोग़ा से मिला था," हरपाल ने कहा। "उसने कहा कि हज़ारों औरतें और बच्चे खोए हुए हैं। उनके पास कोई ऐसा साधन नहीं है जिससे किन्हीं ख़ास बच्चों को ढूंढ़ा जा सके।"

"इस स्थिति में हमें रेलवे स्टेशन चलना चाहिए," परमीत ने कहा।

"हो सकता है वहां किसी ने उन्हें देखा या सुना हो। दोनों बच्चों ने एक जैसे तांबे के कड़े पहने हुए थे।"

"उन कड़ों में ऐसी क्या ख़ासियत है?" हरपाल ने पूछा।

"दोनों कड़े एक जैसे थे, जिन्हें मेरे पति ने धातु से बनाया था," परमीत ने कहा।

“दोनों कड़ों पर एक-एक नाम—‘दलजीत’ और ‘मनजीत’ लिखा हुआ था। और दोनों पर पूरन भगत कुएं का स्थान भी खुदा हुआ था।”

“पर क्यों?” हरपाल ने पूछा।

“ताकि अगर कोई ऐसी घटना हो जिसमें कोई बड़ा न बचे, तब भी बच्चे मेरे पति के शोध कार्य तक पहुंच सकें,” परमीत ने बताया।

“ये तो भूसे के ढेर में सूई ढूंढ़ने जैसा है, परमीत,” हरपाल ने जवाब दिया। “क़रीब पंद्रह करोड़ लोग अपने घर छोड़कर आए हैं। लड़कों को किसी ने देखा हो, इस बात की उम्मीद बहुत कम है।”

“मुझे नहीं पता,” परमीत ने विरोध किया। “आप मेरे साथ आ रहे हैं या नहीं?”

हरपाल मुस्कुराया। उसे पता था कि इस सबसे कुछ नहीं होगा। पर वो ये भी जानता था कि ये करने के बाद ही परमीत को शांति मिलेगी। “मैं तुम्हारे साथ हूं,” उसने उससे कहा।



अमृतसर जंक्शन पर ज़बरदस्त भीड़ थी। ये कोई हैरानी की बात नहीं थी क्योंकि क़रीब पचास लाख लोग अपने नए घरों—वो भारत में हो या फिर पाकिस्तान में—के लिए ट्रेन पकड़ रहे थे।

स्टेशन पर अफ़रातफ़री का माहौल था। सर सीरिल रैडक्लिफ़ द्वारा बनाए गए मानचित्र के अनुसार क़रीब आठ हज़ार किलोमीटर का उत्तरी फ्रंटियर रेलवे पाकिस्तान के पास चला गया था। विभाजन ने दरअसल कई रेलवे लाइनों को काट दिया था। यहां की सभी सेवाएं या तो बाधित थीं या रद्द कर दी गई थीं। एक तरफ़ नरसंहार और जातिसंहार चल रहा था, तो दूसरी तरफ़ रेलवे अधिकारियों को अपना माल, ट्रैक, उपकरण, संपत्ति, इंजन तथा डिब्बे और श्रमशक्ति सबका बंटवारा करना था।

परमीत और हरपाल इस उम्मीद से स्टेशन मास्टर के ऑफ़िस की ओर बढ़े कि शायद वो कोई दिशा दिखा दे जिससे दलजीत और मनजीत का कुछ पता चल सके। स्टेशन मास्टर हट्टा-कट्टा, घुमावदार मूंछोंवाला जाट था। सैकड़ों लोग इस उम्मीद में उसके ऑफ़िस के बाहर बैठे थे कि वो कोई जादू की छड़ी घुमाएगा और उनकी समस्याएं हल हो जाएंगी। परमीत की आंखों में फिर से आंसू भर आए।

स्टेशन मास्टर के ऑफ़िस के बाहर बैठे सहायक ने परमीत को देखा और बुलाया। “तुम क्यों रो रही हो?” उसने पूछा।

“मेरे लड़के लापता हैं,” परमीत ने बताया। “वो सियालकोट से ट्रेन में बैठे थे पर मैं नहीं चढ़ पाई। वो क़रीब बीस दिन पहले यहां पहुंचे होंगे।”

सहायक चुप रहा। वो जानता था कि वो औरत कौन सी ट्रेन की बात कर रही है। ये वो आख़री ट्रेन थी जो तीन हफ़्ते पहले सियालकोट से अमृतसर के लिए रवाना हुई

थी। मौत की ट्रेन।

"आप चुप क्यों हैं?" परमीत ने घबराकर पूछा। "क्या आपने मेरे बेटों को देखा था?" उसने भोलेपन से पूछा।

"उसमें मुश्किल से कुछ ही लोग ज़िंदा बचे थे," सहायक ने विनम्रता से कहा। "आपको कांस्टेबल सुखबीर सिंह से मिलना चाहिए। उन्होंने ही ज़्यादातर लोगों को निकाला था।"

"हम उनसे कहां मिल सकते हैं?" हरपाल ने पूछा।

"आज वो छुट्टी पर हैं," सहायक ने उत्तर दिया। "मैं आपको उनके घर का पता दे देता हूं। वो अच्छे इंसान हैं और हो सकेगा तो आपकी मदद भी ज़रूर करेंगे।"



अमृतसर की हिंसा थम चुकी थी पर मौत की ख़ौफ़नाक हवा और तबाही चारों तरफ़ फैली हुई थी।

महज़ बत्तीस मील अमृतसर को लाहौर से अलग करते थे, पर इन्हीं बत्तीस मील ने अब एक अलग ही दुनिया रच दी थी।

विभाजन से पहले, क़रीब ढाई लाख हिंदू और सिख लाहौर शहर की आबादी का एक तिहाई हिस्सा थे। विभाजन के बाद वहां लगभग कोई हिंदू या सिख नहीं बचा था।

दूसरी तरफ़, अमृतसर के मुसलमान शहर की कुल चार लाख की आबादी का लगभग पचास प्रतिशत थे। पर अब, अमृतसर में भी लगभग कोई मुसलमान नहीं बचा था।

सनकी उपद्रवियों ने लाहौर में चार हज़ार और अमृतसर में दस हज़ार घर फूंक दिए थे। पंजाब को काट दिया गया था और यदि ये ज़ख़्म कभी भरे भी तो इसमें काफ़ी समय लगने वाला था। परमीत और हरपाल सहायक द्वारा दिए गए पते पर पहुंचे, पर वहां केवल एक जला हुआ घर था।

हे रब्बा, वो जल्दी-जल्दी जाप करने लगी। मुझे मेरे बेटे लौटा दे।

हरपाल ने राह चलते एक आदमी को रोका। "क्या ये कांस्टेबल सुखबीर सिंह का घर है?" उसने पूछा।

"वो मर गया," अजनबी ने जवाब दिया। "बुरी तरह जल गया था।"

"पर ये तो हिंदू मुहल्ला है," हरपाल ने जल्दी से पूछा। "मेरा ख़्याल था अमृतसर में मुसलमानों के घर निशाने पर थे।"

"और ग़द्दारों के घर भी," उस आदमी ने जवाब दिया। "पड़ोसियों को पता चला कि सुखबीर सिंह ने एक मुस्लिम परिवार को पनाह दी हुई है, उसका सहयोगी चांदप्रकाश, जो यहां आता रहता था, वो भी इसमें शामिल था। घर को आग लगा दी गई और जब वो लोग बाहर निकलने की कोशिश करने लगे तो भीड़ ने उन पर पत्थरों से हमला कर दिया। सब मर गए, उनमें दो बच्चे भी थे।"

“वो बच्चे कितने साल के थे?” व्याकुल होकर परमीत ने पूछा।

उस आदमी ने शक्की नज़रों से उसकी ओर देखा।

“कितने साल के थे वो बच्चे?” उसने कांपती आवाज में फिर से पूछा।

“क़रीब पांच-छह साल के, मैंने उन्हें देखा तो नहीं, पर सुना था।”

हरपाल ने उसका हाथ थामने की कोशिश की, पर इससे पहले ही परमीत रोती हुई ज़मीन पर ढह गई थी।



हफ़्ते भर बाद हरपाल और परमीत बसों और ट्रकों में धक्के खाते हुए कुरुक्षेत्र शिविर पहुंचे। माना जाता था कि ये शिविर—जो सेना और महाशिव बाबा के सहयोग से चलाया जा रहा था—सबसे बड़े शिविरों में से एक था। जब वो शिविर में पहुंचे तो उन्होंने वहां काम का पहाड़ देखा जिसका सामना सहायकों को करना पड़ रहा था। सैकड़ों शरणार्थियों की देखभाल करनी थी। परमीत सकते में थी। इस सच ने उसके जीने की चाह ही ख़त्म कर दी थी कि उसने अपना वो सब कुछ—अपना पति और बच्चे—खो दिया था जो उसके लिए बेशक़ीमती हुआ करता था। एक हरपाल ही था जो उसमें उत्साह जगाने की कोशिश करता रहता था। इसके साथ ही एक और सरदारनी, जिसका नाम कमलजोत था, उसकी दोस्त बन गई।

फिर एक दिन उसने महाशिव बाबा को देखा। उन्होंने इशारे से उसे अपने पास बुलाया। “कभी-कभी दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम लगाने से अपने ज़ख़्म भी भर जाते हैं,” उन्होंने उससे कहा। इन शब्दों ने उसमें एक नया उत्साह जगा दिया। उसने खुद को शरणार्थी के रूप में देखना बंद कर दिया और ज़ोरशोर से शिविर के लोगों की सेवा में जुट गई। वो खाना बनाती, पाख़ाने साफ़ करती, ज़ख़्मों पर पट्टी करती और चादरें धोती। वो बिना थके काम में जुटी रहती। वो परिश्रमी थी। रात को कमलजोत के पास सोने से पहले वह जे. आर. आर. टॉल्कीन की लॉर्ड आफ़ द रिंग्स के कुछ पन्ने पढ़ती थी। कुरुक्षेत्र के इतने विशाल शिविर में वो बस यही एक किताब ढूंढ़ पाई थी।

उस शिविर में वो हरपाल और उसके परिवार के साथ 14 दिसंबर 1950—सरदार वल्लभ भाई पटेल की मृत्यु से एक दिन पहले—तक रही। उस दिन हरपाल ने उसके सामने शादी का प्रस्ताव रखा था।

“मुझे लगता है तुम इसे ग़ालत नहीं समझोगी, पर तुम्हें अपने परिवार को खोए तीन साल हो चुके हैं, परमीत,” उसने सकुचाते हुए कहा। “मैं तुमसे बेहद प्यार करने लगा हूं। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?”

“हरपाल, मैं भी...” उसने अभी बोलना शुरू ही किया था कि न जाने कहां से महाशिव बाबा वहां प्रकट हो गए।

“क्या दूसरों की सहायता करने से तुम्हें सुकून मिला?” उन्होंने उससे पूछा, हरपाल देखता रहा।

“हां, बाबा, ऐसा हुआ,” उसने कहा।

“पूरे विश्व की सहायता करना तुम्हें कैसा लगेगा? ये परमात्मा तक पहुंचने का तुम्हारा मार्ग हो सकता है,” उन्होंने कहा।

“हां, बाबा, मैं ऐसा करना चाहूंगी,” परमीत ने कहा।

“क्या तुम मानवता के कल्याण के लिए अपना सब कुछ त्यागने के लिए तैयार हो?” महाशिव बाबा ने पूछा।

दो आकर्षक संभावनाओं के बीच फंसी परमीत ने हरपाल को देखा। फिर उसने महाशिव बाबा की ओर देखा। वो अपने गुरु के समक्ष घुटने टेक कर बैठ गई।

“आज से तुम अध्यापिका ज्योति के नाम से जानी जाओगी,” महाशिव बाबा ने आशीर्वाद देते हुए कहा।



परमीत ने हरपाल को सामान बांधते देखा, वो शिविर छोड़कर जा रहा था। उसने पाया कि उसकी आंखें आंसुओं से भर आई हैं क्योंकि वो इंसान जिससे वो प्यार करने लगी थी, उसे छोड़कर जाने की तैयारी कर रहा था।

वो विश्व के प्रति अपने कर्तव्य और अपने प्रेम के बीच फंसी थी। उसका रोम-रोम चाह रहा था कि वो रुक जाए पर वो जानती थी कि अब उसके पास उसे रोकने का अधिकार नहीं रहा।

“तुम कहां जाओगे?” उसने उससे पूछा, उसका गला रुंध गया था।

“थिम्पू में मेरे एक चाचा की दुकान है,” उसने कहा। “मैं पहले उनके लिए काम करूंगा और फिर अपना काम शुरू करूंगा।”

“थिम्पू?” उसने पूछा।

“भूटान,” उसने जवाब दिया।

“मुझे याद करोगे?” उसने पूछा।

“क्या सच में तुम्हें इसका जवाब चाहिए?” हरपाल ने पूछा।

“क्या तुम्हें नहीं पता मेरा जवाब क्या होगा?”

“तुमने मेरे लिए अपने कर्तव्य से कहीं ज्यादा किया है,” परमीत बोली। “क्या एक आख़री काम कर सकते हो?”

“मैं तुम्हें कभी न नहीं कर सकता, परमीत,” उसने कहा।

“कमलजोत से शादी कर लो,” परमीत बोली। “वो बहुत अच्छी पत्नी साबित होगी।”



परमीत—जो अब अध्यापिका ज्योति थी—महाशिव बाबा के शिविर में बैठी थी। उसके सामने मोमज़ामे का पैकेट रखा था। उसने उसे खोला और बाबा के सामने सब उजागर कर दिया।

"ये तो वो रसायन फ़ॉर्मूला है जिस पर अशोक की टीम काम कर रही थी," बाबा ने धीरे से कहा। उन्होंने आहिस्ता से पन्ने पलटे जो समय के साथ पीले पड़ गए थे। "ये काग़ज़ तो काफ़ी नए लगते हैं," बाबा ने कहा।

"शृंखला के प्रत्येक उत्तराधिकारी को पिछले पन्नों की नए पन्नों पर नक़ल करने और फिर पुरानी प्रति को नष्ट करने का काम सौंपा जाता था," परमीत ने जवाब दिया। "मेरे पति इस शृंखला में अंतिम कड़ी थे। उन्हें जगत सिंह द्वारा उत्तराधिकारी के रूप में चुना गया था जिन्हें दीवान दीनानाथ द्वारा चुना गया था जो महाराज रंजीत सिंह के वित्त मंत्री थे। जगत सिंह की जल्दी ही मृत्यु हो गई थी और इसलिए मेरे पति को कमउम्र में ही ये ज़िम्मेदारी उठानी पड़ी।"

"लेकिन रहस्य का दायित्व लेने और उसकी रक्षा करने के लिए तुम्हारे पति किसी को तो तैयार कर रहे होंगे?" बाबा ने पूछा।

"हमारा बेटा मनजीत चंचल स्वभाव का था," परमीत ने कहा। "मेरे पति जानते थे कि वो रहस्य की सुरक्षा के लिए आदर्श व्यक्ति नहीं होगा। सौभाग्य से, नियमों में उत्तराधिकारी का रक्त संबंधी होना आवश्यक नहीं कहा गया था। जगत सिंह की शीघ्र मृत्यु के बाद मेरे पति और मैंने उनके बेटे को अपना लिया था। उसका नाम दलजीत था। मेरे पति ने उस बालक को रहस्य के अगले रक्षक के रूप में चिह्नित किया था।"

"यानी वो दोनों बच्चे जो सियालकोट में तुमसे बिछुड़ गए थे, भाई नहीं हैं?" बाबा ने पूछा।

"नहीं, मनजीत मेरा बेटा था, दलजीत नहीं," परमीत ने कहा।

"पर मेरे लिए दोनों एक से थे। जहां तक मेरे लाड़-प्यार का सवाल है, तो मैंने दोनों में कभी कोई फ़र्क़ नहीं किया।"

"अब ये ज़रूरी है कि तुम तब तक इस रहस्य की संरक्षक बनी रहो जब तक कोई सही उत्तराधिकारी न मिल जाए," बाबा ने कहा। "इस कड़ी को बचाना बेहद ज़रूरी है।"

"क्यों?" अध्यापिका ज्योति ने पूछा।

"मनुष्य मानता है कि मृत्यु एक प्राकृतिक क्रिया है," बाबा ने कहा। "पर ऐसा नहीं है। अनश्वरता हमारी प्राकृतिक अवस्था है। हमने प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर उसकी प्राकृतिक अवस्था को ख़राब किया है। हमें उसे बचाने के लिए किसी की ज़रूरत है।"

“आपका क्या मतलब है?” अध्यापिका ने पूछा।

“नश्वरता उन विशेषताओं में से एक है जो मनुष्य को ईश्वर से अलग करती है,” बाबा बोले। “अमर बनने के लिए ईश्वर के साथ एकाकार होना होगा। तुम्हें ईश्वर बनना होगा। हम सब ईश्वर हैं। हम शक्ति हैं और ईश्वर भी शक्ति है। हम एक ही चीज़ से निर्मित हैं। ये उसी तरह है जैसे हम महासागरों, नदियों, झीलों और झरनों की तुलना करते हैं। भिन्न रूप, पर एक ही पदार्थ। जिस दिन अपने रूपाकार को भुलाकर तुम अपने स्व—वो पदार्थ जिससे तुम बने हो—को पहचानोगे, तुम ईश्वर बन जाओगे।”

“क्या आप ईश्वर हैं?” अध्यापिका ने पूछा।

“हां,” बाबा ने उत्तर दिया।



“फिर ये रसायन मेरे किस काम का?” अध्यापिका ने पूछा। “मुझे तो आपका अनुसरण करना चाहिए, बाबा। लोग कहते हैं आप तीन सौ से भी अधिक वर्ष से जीवित हैं!”

“ये सच है,” हल्की मुस्कुराहट उनके चेहरे पर फैल गई।

“आप तीन सौ वर्ष से जीवित हैं?” अध्यापिका ज्योति ने पूछा।

“ये असत्य है,” बाबा ने कहा।

अध्यापिका ज्योति चकरा गई। महाशिव बाबा ने उसकी सहायता की। “मैं अवश्य ही तीन सौ वर्ष से जीवित हूं किंतु तीन सौ वर्षों से ही जीवित नहीं हूं।”

“आप कहना क्या चाह रहे हैं?” अध्यापिका ज्योति ने पूछा।

“मैं केवल तीन सौ वर्ष से नहीं, बल्कि तीन हज़ार वर्ष से जीवित हूं। और चार हज़ार, पांच हज़ार, छह हज़ार और सात हज़ार वर्ष से भी!”

अध्यापिका ज्योति घबरा गई थी। “आप कौन हैं?” वो फुसफुसाई।

“मैं हनुमान हूं,” महाशिव बाबा बोले, उनकी मांसपेशियां तन गईं और बाहर को निकले मुख पर मुस्कुराहट फैल गई। अध्यापिका ज्योति अपना अगला प्रश्न करते हुए कांप रही थी। “रामायण की घटना तो हज़ारों वर्ष पूर्व हुई थी न?”

“हां,” महाशिव बाबा ने कहा। “भगवान राम के जन्म के समय सूर्य मेष राशि में था, शनि तुला राशि में, बृहस्पति कर्क राशि में, शुक्र मीन राशि में और मंगल मकर राशि में था। वो चैत्र मास था, शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि थी और चंद्रमा पुनर्वसु नक्षत्र के पास था। कर्क लगन था और बृहस्पति क्षितिज के ऊपर था।”

“इसका क्या मतलब है?” अध्यापिका ज्योति ने पूछा।

“इसका अर्थ है कि राम का जन्म 10 जनवरी 5114 ईसा पूर्व, दोपहर ठीक 12:30 बजे हुआ था।”

“और आप जीवित रहे?” अध्यापिका ने पूछा।

“प्रभु राम मुझे मोक्ष—जीवन, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति—प्रदान करना चाहते थे पर मैंने उसे नहीं लिया,” बाबा ने उत्तर दिया। “मैंने प्रार्थना की कि वो मुझे ये आशीर्वाद दें कि मैं उस समय तक इस पृथ्वी पर वास करूँ जब तक प्रभु राम की पूजा हो। मैं चिरंजीवी हूं।”

“चिरंजीवी?” अध्यापिका ने पूछा।

“चिरंजीवी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है, चिरम्-जिसका अर्थ है सदैव स्थायी-और जीवी-जिसका अर्थ है प्राणी। वास्तव में, इसका अर्थ है अनश्वर।”

“तब तो आपने सब कुछ देखा होगा,” अध्यापिका ज्योति बुदबुदाई।

“निस्संदेह। और हां, मैंने अशोक को कालपाशिक को ये रसायन विधि सुरक्षित रखने को देते हुए भी देखा था।”

“आप वहां थे?” अध्यापिका ज्योति ने अविश्वास से पूछा।

“अशोक के नौ लोग कौन थे?” महाशिव बाबा ने पूछा।

“वैज्ञानिक और शोधकर्ता?” अध्यापिका ने अंदाज़ा लगाते हुए पूछा।

“उनमें से एक—रहस्य का पहला संरक्षक—कालपाशिक ही वैज्ञानिक था। शेष आठ नहीं।”

“वो कौन थे?” अध्यापिका ने पूछा।

“अष्ट चिरंजीवी,” महाशिव बाबा ने उत्तर दिया। “आठ अनश्वर, जिनमें मैं भी एक हूं।”

अध्यापिका ज्योति का सर चकरा रहा था। वो नहीं जानती थी कि आगे कितना विश्वास करना चाहिए।

“वो आठ अनश्वर कौन थे?” अध्यापिका ने पूछा।

“एक है अश्वत्थामा, गुरु द्रोण का पुत्र। उसे अमरता आशीर्वादस्वरूप नहीं बल्कि अपने कुकृत्यों के कारण श्रापस्वरूप मिली थी। फिर व्यास हैं, जिन्होंने महाभारत लिखी थी। उनका जन्म त्रेता युग में हुआ था किंतु वो द्वापर और कलयुग में भी रहे। इनमें असुर सम्राट बाली भी है जिसे पृथ्वी पर किए पवित्र कृत्यों के कारण वरदान मिला कि वो वर्ष में एक बार ओणम के दिन अपनी प्रजा से मिल सकता है।”

“ये तो सिर्फ़ तीन ही हुए,” अध्यापिका बोली।

“चौथे विभीषण हैं, रावण के भाई। उन्हें लंका में धर्म और सत्य बनाए रखने के लिए अमरत्व प्राप्त हुआ। पांचवें कृपा हैं, कुरुओं के कुलगुरु। अपने सभी शिष्यों के प्रति निष्पक्ष भाव रखने ने उन्हें अमरता का वरदान दिलाया। छठे थे परशुराम, अस्त्र, शास्त्र और ब्रह्मास्त्रों के स्वामी। अब वो विष्णु के अंतिम अवतार कल्कि की प्रतीक्षा में हैं, ताकि वे उन्हें युद्ध के लिए प्रशिक्षित कर सकें। सातवें हैं शिव भक्त

मार्कण्डेय, जिन्हें जब शिव और यम के मध्य युद्ध हुआ था तब स्वयं शिव ने अमरता का वरदान प्रदान किया था। और आख़िर में मैं, आठवां।"

"पर आप सब अशोक के राज्य में एक ही समय में कैसे थे?"

"कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने अपने राज्य के ज़्यादातर संसाधन हमें ढूंढ़ने में लगा दिए थे। अशोक ने कई जगह अपने धर्म-प्रचारकों को भेजा था। इन यात्रियों को दूर-दूर तक भेजने का एक कारण हमारी खोज भी था। फिर उसे हम सबको ये विश्वास दिलाना पड़ा कि ये शोध कार्य मानव जाति के कल्याण के लिए है, उसके निजी लाभ के लिए नहीं।"

"अगर ऐसा था तो उसने ये रहस्य कालपाशिक को क्यों दिया?" अध्यापिका ने पूछा। "उसने ये रसायन विधि इन आठ अनश्वर व्यक्तियों को क्यों नहीं दी?"

"क्योंकि कालपाशिक का शोध कार्य चल रहा था," महाशिव बाबा ने कहा। "हम अनश्वर हैं पर कालपाशिक नहीं। उसने अपनी खोज की विषयवस्तु के रूप में हम आठों का—जेलीफ़िश और संजीवनी जैसे दूसरे उत्पादों के साथ—प्रयोग किया। वो रसायन के अंतिम से एक पहले वाले चरण—पारद को सोने में परिवर्तित करने—को हासिल करने में सफल रहा परंतु नश्वर को अनश्वर बनाने में सफल नहीं हुआ। ये माना गया कि भविष्य में कभी न कभी तो इसका फल मिलेगा इसलिए शोधकर्ताओं की एक कड़ी की ज़रूरत थी जो इस कार्य को जारी रखे।"

"पर आप आठों तो बिना रसायन के ही अनश्वर हैं," अध्यापिका ज्योति ने कहा।

"विज्ञान ने ये पता लगा लिया है कि विभिन्न यौगिक क्रियाओं द्वारा गहरी साधना के दौरान पीयूष ग्रंथि से अमृत निकल सकता है। मेरे साथ ऐसा ही हुआ था। इसे प्राप्त करने के लिए रसायन ही आवश्यक नहीं है।"

"पर ये रसायन विधि अब काम क्यों नहीं कर रही?" उसने पूछा। "इस रहस्य के संरक्षक नश्वर क्यों साबित हो रहे हैं? ये रसायन केवल उन राजाओं के लिए सोना बनाने की रसायन विधि ही क्यों बन गया जिसे बाद में पूजा स्थलों को दान दे दिया जाता था?"

"उस तीसरे नेत्र के अभाव में।" बाबा ने कहा।



"तीसरा नेत्र-शिव के मस्तक पर स्थित नेत्र की तरह-आध्यात्मिक नेत्र, या अंजन चक्र है। ये उच्चतम चेतना का प्रतीक है और ये समझने में सहायता करता है कि हम मात्र एक मानचित्र ही देख रहे हैं। मानचित्र किसी भू-भाग का वर्णन करता है किंतु मानचित्र को देखना और भू-भाग को देखना समान नहीं है। सभी मनुष्यों के पास तीसरा नेत्र होता है किंतु वो वर्षों की तपस्या से ही जागृत होता है। इसी कारण हम शिव की पूजा करते हैं ताकि हमें अनश्वरता का वरदान प्राप्त हो। ओऽम त्रयम्बकं यजामहे सुगंधिम् पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बंधनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात! समस्त संसार के पालनहार, विश्व में सुरभि फैलाने वाले, तीन नेत्रों वाले शिव की हम आराधना करते

हैं। जिस प्रकार माली एक ककड़ी को सही समय पर बेल से अलग कर देता है, उसी प्रकार वो हमें मोक्ष प्रदान करने के लिए मृत्यु से मुक्ति दिलाएं।

बाबा ने उस मोमजामे को एक बार फिर खोला और अंतिम पृष्ठ पर पहुंचे। उन्होंने प्राकृत में लिखी पंक्तियां पढ़ीं:

सब कुछ जो सोना है चमकता नहीं है,

हर भटका शख़्स गुमराह नहीं है।

खाना जो मीठा है कड़वा भी हो सकता है,

आंखें जो देखती हैं, धुंधला भी सकती हैं।

देखने वाली आंखें बालक हैं दो,

मगर ज्ञानी दृष्टि तो मां है।

औषधि और मंत्र, सत्य ही,

पूरक हैं एक-दूसरे के।

"समस्त ब्रह्मांड में तीन प्रक्रियाओं के द्वारा सब कुछ पाया जा सकता है," बाबा ने कहा। "मंत्र, तंत्र और यंत्र। ये तीनों प्रक्रियाएं ताओ धर्म के तीन सर्वश्रेष्ठ अंगों-चिंग, ची और शेन-के समान हैं।"

अध्यापिका ज्योति शांत रही।

"मोक्ष प्राप्ति के लिए ये तीनों सही अनुपात में आवश्यक हैं। मंत्र में मन का प्रयोग होता है। कहा जाता है कि जो ऋषि हज़ारों वर्षों तक साधना में लीन रहते हैं, वो मंत्र का प्रयोग करते हैं। महामृत्युंजय मंत्र का जाप प्रथम तत्व है।"

"और दूसरा?" अध्यापिका ज्योति ने पूछा।

"दूसरा तत्व तंत्र है," बाबा ने कहा। "इसमें व्यक्ति के तन का प्रयोग कुछ पाने के लिए होता है। उदाहरण के लिए, योगासन तंत्र हैं। रसायनिक औषधियां भी तंत्र हैं।"

"तीसरा तत्व है यंत्र," बाबा बोले। "ये तीसरे नेत्र से संबंधित है—वो जो वास्तविकताओं को भ्रम से अलग करता है। इसमें अपनी चेतना, अपने भाव, अपनी आत्मा का प्रयोग करना पड़ता है। इन तीन तत्वों—मंत्र, तंत्र और यंत्र—का अभिप्राय मन, शरीर और चेतना के मध्य संतुलन है। नेत्र दो बालक हैं, किंतु सूक्ष्मदृष्टि मां है! औषधि और मंत्र, सत्य है, एक-दूसरे के पूरक हैं।"

महाशिव बाबा ने काग़ज का एक गुचड़ा-मुचड़ा गोला अध्यापिका ज्योति को दिया। "ये क्या है?" उसने पूछा।

"संजीवनी," बाबा बोले। "वही जो मैं लक्ष्मण के लिए लाया था। ये निस्संदेह काम करेगी परंतु इसके लिए तत्वों में संतुलन आवश्यक है। मंत्र और तंत्र का स्वामी होना आसान है किंतु उस तीसरे नेत्र को जागृत कर पाने में कुछ ही लोग सफल हो

पाते हैं।"

"और यदि तीनों संतुलित हों तो?" अध्यापिका ने पूछा।

"तो आप अमर हो जाएंगे," बाबा बोले।

"पर जब हम सामान्य धातु को सोने में परिवर्तित कर सकते हैं, तो नश्वर को अनश्वर में क्यों नहीं?"

"बृहदारण्यक उपनिषद में क्या कहा गया है?" बाबा ने पूछा।

"असतो मा सद गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय। मुझे असत्य से सत्य की ओर, अंधेरे से उजाले की ओर, मृत्यु से मोक्ष की ओर अग्रसर करिए।"

"हां," हिचकिचाते हुए अध्यापिका ने कहा। "और?"

"मृत्यु से मोक्ष की ओर जाने से पहले, आपको सत्य और असत्य के बीच अंतर पता होना चाहिए। स्वामी होने के लिए किसी को सोने या किसी ताज की ज़रूरत नहीं है। उस तीसरे नेत्र की ज़रूरत है।"

अध्यापिका ज्योति ने बाबा को साष्टांग प्रणाम किया। अपने मन में वो लॉर्ड ऑफ द रिंग्स के प्रथम अंक के अंश को याद कर रही थी:

सब कुछ जो सोना है चमकता नहीं है,

हर भटका शख़्स गुमराह नहीं है।

मज़बूत दिल कभी कमज़ोर नहीं पड़ते,

पाले भी गहरी जड़ों तक पहुंच नहीं सकते।

राख से भी चिंगारी भड़केगी,

अंधेरे से रोशनी की किरण फूटेगी;

टूटी हुई तलवारें फिर धार चढ़ेंगी

छिना ताज फिर मस्तक पर सजेगा।

ग्रंथ-सूची

मैंने हमेशा इस मत का समर्थन किया है कि एक पुस्तक विषय के गहन अध्यन का प्रारंभिक बिंदु होनी चाहिए। अपने पिछले उपन्यासों की तरह ही मैंने इसमें भी वही परंपरा अपनाई है, यहां उन पुस्तकों की सूची है जिन्हें मैंने इस उपन्यास को लिखने के लिए पढ़ा। आप भी इन अद्भुत पुस्तकों में से कुछ को पढ़ सकते हैं।

एजलेस बॉडी, टाइमलेस माइंडः द क्वांटम ऑल्टरनेटिव टू ग्रोइंग ओल्ड, दीपक चोपड़ा, हार्मनी

ऑल्केमी एंड ऑल्कैमिस्ट्स, सी. जे. एस. थॉम्पसन, डोवर पब्लिकेशंस

ऐन्शिएंट इंडियन सिस्टम ऑफ़ रसायन सुवर्णतंत्रः या ट्रीटिस ऑन ऑल्केमी रसायन, चित्रब्रत पलित एंड नूपुर दासगुप्ता

बॉम्बे टू मुंबईः चेंजिंग पर्सपेक्टिव्ज़स, पी. रोहतगी, फ़ेरोज़ा जे. गोदरेज, आर. मेहरोत्रा, मार्ग फाउंडेशन

ब्रेन, माइंड, कॉस्मॉसः द नेचर ऑफ़ अवर एक्जिस्टेंस एंड द यूनीवर्स, संपा. दीपक चोपड़ा, किंडल संपादन

बिज़नेस लीजेंड्स, गीता पीरामल, पेंगुइन इंडिया

बिज़नेस महाराजाज़, गीता पीरामल, पेंगुइन इंडिया

डोंगरी टू दुबईः सिक्स डेकेड्स ऑफ़ मुंबई माफ़िया, हुसैन ज़ैदी, रोली बुक्स

आइंस्टीन फ़ॉर एवरीवन, रॉबर्ट एल. पिच्योनी, जैको पब्लिशिंग

इंडिया आफ़्टर गांधीः द हिस्ट्री ऑफ़ द वर्ल्ड'स लार्जेस्ट डेमोक्रेसी, रामचंद्र गुहा, हार्पर पैरेनियल

इंडिया आफ़्टर इंडिपेंडेंस *1947-2000*, बिपन चंद्र, पेंगुइन

इंडिया'ज़ ऐन्शिएंट पास्ट, आर. एस. शर्मा, ऑक्सफ़ोर्ड

रामायण, सी. राजगोपालाचारी, भारतीय विद्या भवन

रसायन एंड एजिंग, डॉ सुजाता यादव, दिल्ली चौखंभा ओरिएंटेलिया

द ऑल्केमिकल बॉडीः सिद्ध ट्रेडिशंस इन मीडियेवल इंडिया, डेविड गॉर्डन व्हाइट, यूनीवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस

द बुक ऑफ़ इमॉर्टेलिटीः द साइंस, बिलीफ़ एंड मैजिक बिहाइंड लिविंग फ़ॉरएवर, एडम लेथ गॉलनर, स्क्रिब्नर

द डांसिंग वू ली मास्टर्सः एन ओवरव्यू ऑफ़ द न्यू फ़िजिक्स, गैरी ज़ुकाव, हार्पर वन

द अर्ली हिस्ट्री एंड ग्रोथ ऑफ़ कैलकटा, बिनय कृष्ण देब, नाबू प्रेस

द एलिक्सिर ऑफ़ इमॉर्टेलिटीः ए मॉडर्न-डे ऑल्केमिस्ट्स डिस्कवरी ऑफ़ द फ़िलॉसफ़'र्स

स्टोन, रॉबर्ट ई.कॉक्स, इनर ट्रेडीशंस

द ग्रेट पार्टीशनः द मेकिंग ऑफ़ इंडिया एंड पाकिस्तान, यास्मीन ख़ान, पेंगुइन बुक्स इंडिया

द मारवाड़ीज़ः फ़्रॉम जगत सेठ टू बिरलाज़, थॉमस ए. टिम्बर्ग, पेंगुइन

द माउस मर्चेंटः मनी इन ऐन्शिएंट इंडिया, अर्शिया सत्तार

द नाइन अननोन, टॉल्बट मुंडी, वाइल्डसाइड प्रेस

द सेवन इंमॉर्टल्स ऑफ़ इंडियन माइथोलॉजी, सुनीता पुरुषोत्तमन, प्रायोरिटी पब्लिकेशंस

द सिल्क रोड जर्नी विद ज़ुआनज़ैंग, सैली रिगिन्स, वेस्टव्यू प्रेस

द ताओ ऑफ़ फ़िज़िक्सः एन एक्सप्लोरेशन ऑफ़ द पैरेलल्स बिटवीन मॉडर्न फ़िज़िक्स एंड ईस्टर्न मिस्टिसिज़्म, फ़्रित्ज़्योफ़ कापरा, शंभल प्रेस

द वंडर दैट वॉज़ इंडिया, ए.एल. बाशम, पिकाडोर

द वंडर दैट वॉज़ इंडिया खंड-2, एस. रिज़वी, पिकाडोर